कोटा जँहँ पल्ली स्व करि, कौटिके नाम किरांत ॥
रहतो सो भजिगो दरित, गहन दुरावन गात ॥४०॥
संभरके भट तीनसत३००, खंड खंड हुव खेत ॥
पुर्बुंदिय इम समर१८१७पहु, आयो बिजय उपेत ॥४१॥
बुंदिय सप्तम७बरस वय, प्रथित पितासन पाइ ॥
समर१८१७ समर मारे समर, अतिधृति१९समबय आय॥४२॥
किन्न कुमर हरपाल १८२२ हित, पुरजज्जाउर१ पेस ॥
जैत्रसिंह१८२३ हित जयथल२हिं, लग्गो दैन इलेस ॥४३॥
जैत्र१८२१ कहिय तुमसौं जनक, जहँ भिल्लन किय जंग ॥
तँहँ मैं चम्मलि पारतट, दब्बौं खल रचि द्रंगं ॥४४॥
सुपहु किन्न स्वीकार सुहि, जैत्र १८२३ तबहि तँहँ जाइ ॥
मारि भिल्ल कौटिक प्रमुख, बलि कोटा२ बसवाइ ॥४५॥
वय निज लहि सोलह१६ बरस, पाइ सु भोग्य प्रदेस ॥
भिल्लन खिलन भजाइ भट, अडर रह्यो तँहँ एस ॥४६॥
॥ युग्मम् ॥
सुत लघु डुंगरसिंह १८२४ हित, अधिप खजूरिय३ अप्पि ॥
सत्रुनासिर प्रतप्यो समर १८१७,महि इम सुतन समप्पि ॥ ४७ ॥
॥ सचरणगद्यम् ॥
बुंदीके अधीस हड्डाधिराज समरसिंह १८१७ को दूजो पुत्र

जहां अब कोटा है तहां अपनी १ पाल (कोश में छोटे ग्राम को तथा लौकिक में भीलों की बस्ती को पाल कहते हैं) बसाकर २ कोट्या नामक ३भील रहता था सो डरकर वन में छिपने के लिये भग गया ॥ ४०-४१ ॥ सात वर्ष की अवस्था में ४ प्रसिद्ध पिता से बुंदी पाकर उन्नीस वर्ष की अवस्था में ५ समरसिंह ने ६ युद्ध में ७ भीलों को मारे ॥ ४२ ॥ ८भूपति देने लगा ॥ ४३ ॥ जैत्रसिंह ने कहा कि ९ हे पिता! जहां पर तुमसे भीलों ने युद्ध किया है तहां चम्बल नदी के परले किनारे १० नगर रच कर दुष्टों को दबाऊं ॥ ४४ ॥ कोट्या ११ आदि भीलों को मारकर उस कोट्या भील के नाम पर १२फिर कोटा बसाया ॥४५-४६-४७॥

पहिली दिल्लीराअधीस एकादसमाँ ११ पातसाह खलजी अला वुद्दीन ११ रा समयरैसमीप मेहवनगर राष्ट्रकूट राजा सळखरै म ल्लिनाथ १ जैतमल्ल २ बीरमदेव ३ ए तीन ३ पुत्र हुवा ॥

तिकाँमैं जैत्रमल्ल १ नूँ सुमियाणाँ २ बीरमदेव १ नूं खेड़ २ नामक स्थान बैठणानैं देर दोहीछोटा कुमाराँनूँ कीधा जुंवा ॥

सळखरै अनंतर बडोकुमार मल्लिनाथ मेहवानगररो महीपथियो॥ अर जिकणरै बीराधिबीर उधाराआँटाँरो लेणहार जगमालनो मकुमार जन्मलियो ॥ २ ॥

जिकण कुमार पहिलै बिबाह बुंदीरा अधीस हड्डाधिराज हम्मीर १८३।१ री चंद्रकुमरिनाम पुत्रीरो पाणिग्रहणकीधो ॥

अर कुमरपणाँहीं अनेक आहव जीति केहीबैरियाँरा ब्रात दक्षिणदिसारालोकपाळरी पुरीरै पंथ लगाइ धरारोधन धूँपटतै आंड-वाहरूहुवो तिकोही मारिदीधो ॥

एकणसमय दिल्लीरा प्रतीप गुजरातरा जवनेस मुहुम्मदबेगड़ साहरै आश्रित पंजाबरा सिंधुदेसमैं भाडंगनैररा जोइया मुसलमान हूँता जिको हरामखोरहोइ प्रमादरा औसरमैं साहरीघोड़ी १ समाधि१ तरवारि विजयनाल २ समेत केहीसुबर्णरा पात्रादिक संभार लूटि आपरा देसनूँ प्रयाणकियो ॥

अर पाछली बाहररो जोरजाणि दलै नाम जोइयाँरैमालिक लूटरी सामग्रीसमेत दाहिणी मारगटाळि राठोड़ाँनूँ सहायकजाणि आधो बित्त बाँटणोंकरि मल्लीनाथ महीपरै मेहवैनगर आइ बिश्रामलियो॥३॥

माल बीरमदेव ये तीन पुत्र हुए ॥ १ ॥ १ जुदे २ हुआ ३ वैर (जिनसे पहले कभी वैर नहीं होवे उनसे अकारण वैर कियाजावे तिसको उधारावैर लेना कहते हैं) ॥ २ ॥ ४विवाह. कई शत्रुओं के ५ समूहों को ६ यमराज की पुरी के मार्ग लगाकर ७ उडातेहुए ने ८ हद से बाहिर; अथवा अपने को रोकने वाला [बाहर (मदत) को रोकनेवाला आडवाहरू कहलाता है] ९ शत्रु १० थे ११ समाधि नामक घोड़ी १२ सामग्री ॥ ३ ॥

जठै घोड़ी १ तरवारि २ दोरूंही रत्न दुर्लभजाणि स्वामीराहरा मखरे दंडरैउचित कहि कुमार जगमाल वंटथी बिसेस लैणरी विचारी ॥

सो जाणि राउळ मल्लीनाथ पुत्ररैछानैं जोइयाँनूँ काढिदीधा तिकाँहू वित्तरो विभाग लैणरीभी न धारी ॥

बाहरूबणिया जगमालनूँ पीठिलागोजाणि जोइये दलै बीरमदेवकनैं खेड़ जाइ तिकणरो सहाय पायो ॥

अर पोठिलागे जगमाल खेड़रै घेरोलगाइ आपरा काकाहूँ दलानूँ पकड़ाइदेणरो हुकम लगायो ॥ ४ ॥

साहसरैसाथ जगमालरो जोरजाणि घोड़ीसमाधि बीरमदेवनूँ देरं तिकणरै सहाय छानैंकढि लूटरीसामग्रीसमेत दलो भाडंगनै रपूगो ॥

इण अपराधरैऊपर काकानूँ काढि खेड़में आपरो अमल करि दिसादिसारा दोयणाँरी मही दाबिलीधी जिकणसमय कुमाररो प्रताप अर्करे आभास ऊगो ॥

बीरमदेव आपरी जोड़ायत चावोड़ीसमेत देवराज१ गोगराज२ जयसिंह३ विजयराज४ च्यारि४ ही बाळकाँनूँ सेत्रावाग्रामरा ठाकुर माँगळियारजपूत राणिगदेवरै आश्रित राखि तिकणरी पुत्रीरोपाणिग्रहणकरि नवोढानूँ लेर भाडंगनैंरगयो ॥

अर जोइयो दलो आपरा उपकारकरै अर्थ आधाग्राम अर्पण करि बडासत्काररैसाथ बिश्रामदेर जिम जिम ताणियो तिमतिम ही नैयो ॥ ५ ॥

दोहा ॥

तठै जनम चूंडातणाँ, हुवो घणाँ मैहहोइ ॥

---

१ पटसे ॥ ४ ॥ २ देकर ३ शत्रुओं की ४ सूर्य के ५ समान (प्रतिबिम्ब) ६ स्त्री ७ विवाह ८ नवीन स्त्री को ९ उपकार करनेवाले के अर्थ १० झुका ॥ ५ ॥ ११ उत्सव

उद्धतपणा वीरम उठै, वह्लियो हेत छुडाइ ॥ ६ ॥
आठी कुमर जगमाल ऊ, वरियो अपर[2] विवाह ॥
पूरवभव[3] भइ प्रेतरी, रुचिर सुता कुळराह ॥ ७ ॥

सचरणागद्यम् ॥ पहली एक धाड़ैवी[4] रजपूत धारातीर्थमैं[5] पड़ियो तोभी कोईक कारणारै प्रभाव आपरा साथसमेत प्रेत हुवो जिकणारै पाछैं प्रजामैं एक१ पुत्री रही ॥

तिकणानूँ जगमालरैअर्थ देर कन्यादानरो सुकृत आपरे उपदा[6] करणारी पूर्वजन्मरी पत्नीरा स्वप्नमैं कही ॥

तिकणभी आपरो बारहठ भेजि प्रेतनूँ पुत्रीरो पुणयमिलणरी जणांइ विवाहणारैकाज जगमालनूँ बुलायो ॥

अर सप्तपदीरै[8] अनंतर दानरो उदक[9] जामाता[10] पाणिमैं[11] लेर पिसाचराजरैकाज स्वर्गरोद्वार खुलायो ॥ ८ ॥

तिकणारै अनंतर कुमार जगमाल पूर्वानुरागजाणि[12] अहमदाबादराअधीस मरुवाणीमैं[13] बांच्य इसड़ी[14] वेगड़ा मुहम्मदसाह १५ री अंगजा[15] क्रीड़ारैव्याजे[16] आरामसैं[17] आई तिकणानूँलेर रजपूतांरैउफाणा मेहवैआइ आपरो दुर्ग संगररैकाज सज्जकीधो ॥

अर जवनजातीय जाया आपरै उचित न हूँती तोभी पातसाहरीपुत्रीजाणि स्वकीय[19] साहसनूँ सफळहोणारो अवसरदीधो ॥

१ निरंकुश होकर. स्नेह को २छुवोकर ।६। प्रेत*होने से ३पहिलेजन्मीहुई किसी वीर की सुंदर पुत्री से ॥७॥ ४धाड़ा डालनेवाला ५तरवार की धारा से मरा तो भी ६ भेट करने की ७स्त्री से ८ सात फेरा फिरे पीछे ९ पानी १० जमाई ने अपने ११हाथ में लेकर ॥८॥ १२मिलने से पहले रूप अथवा गुण के श्रवण करने से स्नेह उत्पन्नहोवे उसको पूर्वानुराग कहते हैं. १३ मरुभाषा में बोलाजानेवाला १४ ऐसा १५ पुत्री.खेलने के १६ मिस से १७ बाग में आई. १८ स्त्री १९अपने

*राजपूताने में ऐसी कथा प्रसिद्ध है कि कोई वीर राजपूत युद्ध में काम आकर अपनी पुत्री में अधिक स्नेह होने के कारण प्रेत होगया था सो जगमाल ने उस कन्या से विवाह करके उसके कन्यादान के पुण्य से उस प्रेत का प्रेतपन छुड़ाया इसके बदले में उसने यवनों के युद्ध में जगमाल को विजय दी.

राजामल्लिनाथतो पहलीही पुत्रनूँ जुवराजभावदेर प्रपंचेंहूँ[1] उदासीन एकांतमैं रहियो ॥

अर जगमाल मस्तकराभारनूँ महागरिष्ठ[2] मानि अद्रिरैऊपर[3] दव[4] लगाइ धारातीर्थरैउछाह इसड़ी अनेकवातांरो अवलंब गहियो।९।

जिणरीति वंवावदारैअधीस हड्डाधिराज हालू१८२ सूरसज्जा सोवणारो साधन संपादनकरतै[5] बाणवै९२ वर्षरो वय वाँसै[6] वाँळियो[7] र[8] अनेक आँटाँरा[9] अवंमर्द[10] ओसंगिया[11] तोभी प्रधनमैं[12] पुद्गळरै[13] पैलारो प्रहारभी न पायो ॥

अर सामोरवारहठ लोहठरी पाघरै[14] आँटै मंडोउररा नरेस पड़िहार हम्मीर१नूँ गंजि[15] राणाँ लाखा२रो पण बिगड़ाइ जठैतठै जिम तिम मरणमंडियो परंतु आपरै आगारही[16] अवसाण[17] आयो ॥

इणरीति अनेक धूँकळ[18]करि भुजाँरी कंडूयाँ[19] भागी न जाणि जगमालकुमार अहमदाबादराअधीसनूँ पाँहुणाँ नूँतियो ॥

[20]जरैं साहभी सैंतीसहजार३७००० सेनाभेजी जिकणारा समुद्रमैं मेहवारो मान वहित्र[21]रै विधान वूँतियो ॥१०॥

॥ प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

ही धियै[22] गुज्जरसाहकी, पै[23] रठोर प्रवीर ॥
जाहि आनि बुल्ले[24] जवन, धारा चक्खन धीर ॥११॥

॥ षट्पात् ॥

---

१ संसार से २ भारी ३ पर्वत के ऊपर ४ आग्नि लगाकर "पर्वत के ऊपर की लगीहुई अग्नि बुझाने से बुझती नहीं है इस कारण से मिटाने से नहीं मिटनेवाले द्वेष आदि के अर्थ यह उपमा दीजाती है" ॥ ९ ॥ ५ इकट्ठा ६ पीछे ७ रक्खा; अर्थात् बानवे वर्ष की अवस्था बिताई ८ और ९ वैरों के १० युद्ध ११ अपने अधिकार में किये १२ युद्ध में १३ शरीर के पगड़ी के १४बदले में "यह कथा आगे आवेगी" १५ जीतकर. अपने १६ घर में ही १७ मरा १८ युद्ध करके १९ खाज (खुजली) २० जब २१ नाव ॥ १० ॥ गुजरात के बादशाह की२२बेटी यवन थी २३ परन्तु वीर राठोड़ ने तरवार की धारा चखने के लिये यवनों को २४ बुलाये ॥ ११ ॥

सेन सहँस सैंतीस३७००० लुब्भि[1] मेहव पुर लग्गिय ॥
सावन आगम समय[2], ज्वाल तोपन घन जग्गिय ॥
कुमरी चन्द्रकुमारि हुती बुंदिय निज पिउहर ॥
तँहँ आवन दिन तीज३ वचन सेहसौँहँ[2] दयो वर ॥
जिम पक्ख असित[3] वित्तत सजव[4] तक्कत सोक कुमार तिम ॥
विजुगयँ प्रिया पावक्क[5] विसंत[6] कँलह[7] गयँ सुधरैसु किम ॥१२॥
भटन नर्म्म[8]जुत भनिय सोक आरूढ स्वामिसन ॥
अद्रि[9]गिरत सिर ओडि[10] दबे पुब्बँहि[11] किम दुर्मन ॥
कुमर विहसि तब कहिय मरन मन्नौं न अमंगल ॥
पै[12] मैं रहत१ प्रिया न२ जात१ जातहि धँर[13]जंगल२॥
बुंदिय पठातभो यह वचन मृतजानहु तीज३ न मिलन ॥
सुमिरि[15] सु चउत्थि४हड्डिय सतिय[16] काय हाय रक्खहिँ किलँ[17] न॥१३॥
दाधिम१ भट्टिय२ दंभिक[18]३ कुम्म४ संभर५ जावल[19]६ कुल ॥

१ झुककर; अथवा मेहवापुर लेने के लोभ से २सौगन सहित. ज्यों ज्यों ३कृष्ण पक्ष ४शीघ्र बीतता था त्यों त्यों कुमार शोक करता था कि गये बिना तो प्रिया ५ अग्नि में ६प्रवेश करती है और मैं जाता हूं तो ७युद्ध बिगड़ता ॥१२॥ शोक पर चढ़ेहुए स्वामिसे उमरावों ने ८ हँसी (मस्करी) सहित कहा कि गिरते हुए ९ पर्वत को मस्तक पर १० झेलकर दबने से ११ पहले ही कैसे उदास हो १२ परंतु, मैं रहता हूं तो प्रिया नहीं रहती अर्थात् मरती है और मैं जाता हूं तो १३ मारवाड़ हाथ से जाता है, मैं पहिले बुन्दी यह वचन भेजचुका हूं, कि तीज पर नहीं मिलूं तो मुझको १४ मराहुआ जानना १५ वह स्मरण करके श्रावण सुदि चौथ के दिन सती (पतिव्रता) हाडी खेद की बात है कि १७ निश्चय ही १६ शरीर नहीं रक्खेगी ॥ १३ ॥ १८ * दहिया १९ जावल्या

* यहां क्षत्रियों की बहुत शाखाओं के नाम एकत्र देखने से प्रकरणवशात् लिखाजाता है कि क्षत्रियों के प्राचीन और आधुनिक सब मिलाकर छत्तीस वंश प्रसिद्ध हैं, जिनके विषय में यह कहाजाता है कि १० सूर्यवंशी, १० चन्द्रवंशी, १२ ऋषिवंशी और ४ अग्निवंशी, ये सब मिलाकर छत्तीस वंश हैं, इनके लिये नवीन बहुत करके किसीने यह दोहा भी बनादिया है.

(दोहा) दश रवितैं दश चन्दतैं, द्वादस रिसी प्रमाण ॥ च्यार सु अग्निहोत्रतैं, यह छत्तीस वखान॥१॥

इन छत्तीस वंशों के जुदे जुदे नाम कहीं नहीं मिलते, पृथ्वीराजरासे में इनके भिन्न भिन्न नाम लिखे हैं परंतु वे मिथ्या हैं; क्योंकि उसमें एक एक वंश की अनेक शाखाओं को जुदे वंश मान लिये हैं सो मनु

डव्भिय१७ सोढे२१८ डोड३१९चउ४हि मामार स संखुल४२०॥
संकुवान११ मांगलिक१२ गौड़१३ सैंगर१४ तिम गोहिल१५ ॥
वग्गरि१६ बारर१७ विंद१८ हल्ल१९ सीसोद२० समोहिल२१ ॥
इंदे१।२२सगोत्रकुक्खर३।२३उभयरचापोत्कट२४ चालुक२५चतुर॥
गज्जिय२६ कवंध२७ बडगुज्जर२८हु धारक इकइक जुद्धधुर॥१४॥
इत्यादिक भट अडर सुनि सु जगमाल उक्त सब ॥
बुल्लिय हम इत बहुत अप्प इत्थहिं सव्वहु अब ॥
पटा अप्पि वसु प्रथुल लाड जिहिं लोभ लडाये ॥
दैन सु बदला देव निट्ठि ए दिन निरखाये ॥
पहु जाहु निकसि बुंदिय पिहितें पीछैं हम रन भीमपन ॥
जगमाल आन पामर जवन गंजि भुजन ठिल्लैं गजन॥१५॥
इक्क तुरग आरूढ़ कुमर पहसुनि निसीथैं कढि ॥
जल्ल थल्ल लंघत जात बट्टरोकिय बनास बढि ॥
जेरबंध रचि रहित अंस थप्पलि हय हंकिय ॥
तरत बारतट तरून साख लग्गत पय संकिय ॥
निजकर सम्हारि रोधक निंयत द्रुमसिर बंधि रुमाल दिय ॥
तिहिं टारिनै सु इक१कोस तरि बुंदिय निट्ठि निसीथ लिय॥१६॥
दोहा—उपवन विष्णुविलास अव, रुचिर जत्थ नृपरामै ॥

१डाभी २ झाला ३ कोखर ४ चावड़ा ॥ १४ ॥ ५ निर्भय ६ देकर ७ धन ८ बहुत ९ दिखाये हैं १० हे प्रभु! ११ छिपकर १२ नीच ॥१५॥ १३आधीरात को १४मार्ग रोका १५बनास नदी ने १६ कन्धा थापकर. उरले किनारे के १७वृक्षों को १८ रोकनेवाले को १९ निश्चय २० वृक्ष के मस्तक पर २१ आधी रात को ॥१६॥ जहां अब विष्णुविलास सुन्दर२२बाग है तहां २३ हे राजा रामसिंह!

चित है, इसी पृथ्वीराजरासे के आधार पर कर्नल टॉड ने विदेशी होने के कारण भ्रमकर अपने ग्रन्थ 'टॉड राजस्थान' में लिखदिये हैं सो भी असत्य है; इसके पीछे राजस्थान के इतिहासकर्ताओं में सबसे बड़े दो पुरुष हुए; अर्थात् प्रथम तो इसी ग्रन्थ के कर्ता मिश्रण शाखा के चारण सूर्यमल्ल और द्वितीय उदयपुर के कविराज दधिवाड़िया शाखा के चारण श्यामलदास, इन दोनों ने इस प्रकरण को ही छोडदिया, किन्तु श्यामलदास ने तो अपने ग्रंथ 'वीरविनोद' में लिख भी दिया है कि क्षत्रियों के छत्तीस वंशों के भिन्न भिन्न सत्य नाम कहीं नहीं मिलते, इसकारण हम भी इस प्रकरण को छोडते हैं नहीं तो यहां इनके नाम लिखने को स्थान था.

आत तत्थ जगमाल इक, किय धनु दुष्कर[1] काम ॥१७॥

पट्पात्—दोलादिक[2] कौतुकन इतसु बुंदिय बिताइ[3] अंह ॥
कुमरी चंद्रकुमारि मंडि शृंगार वडेमहँ[4] ॥
जामिनि[5] जावत जाम१[6] विमन[7] पतिपंथ बिलोकन ॥
गैंडागढके[8] गोख रही तक्कत हित रोकन ॥
लहि नियतिजोग[9] निद्रा लगत जन दासिन प्रासाद जँहँ ॥
सिर निज लगाइ प्रग्रीव[10] सिर तंद्रीवसहुव[11] सोहु तँहँ ॥१८॥
कछुकारन गिरि कटक[12] वरन[13] सौधन सक्यो न बनि ॥
अटतं[14] सिंह तँह आइ तौंहि[15] गहिगो सु झंप तानि ॥
उंघत जामिक[16] अधम हम्म १८३१ तनुजा[17] सु लभ्यहुव ॥
लहँगेकरि अवलंब[18] भिदी दड्ढा न छुई भुव ॥
द्विरदारि[19] लंघि मंडूकँदर[20] भ्रमत[21] अग्ग सम्मुह कुमर ॥
जगमाल आत सिंजित[22] सुनि सु आनिय चित्त अचिंज[23] अरं[24]॥१९॥
तत मेघन संतमस[25] निविड़ सावन निसीथ[26] लहि ॥
तँह कबंध मगटारि रुक्कि हय विटपि[27] ओट रहि ॥
आत निकट हनि ऐंचि पर्दर[28] श्रुति[29] पिट्ठि पहारिय ॥

धनुषका १कठिन काम किया॥१७॥२हींदा आदि ३दिन बिताकरबडे ४उत्सवसे ५रात्रि का एक ६प्रहर जानेपर ७उदास ८गैंडा नामक गढके झरोखेमें ९भाग्यके योग से १० झरोखेके ऊपर अपना मस्तक लगाकर वह चन्द्रकुमरी भी ११निद्राके वशहुई; अथवा ऊंघनेलगी॥१८॥किसी कारणसे पर्वत के १२शिखर पर महलों के आवा १३कोट नहीं बनसका थावहां १४फिरताहुआ सिंह आया और झम्प लगाकर १५ उस चन्द्रकुमरी को पकड़कर लेगया. नीच १६ पहरायतों के ऊंघने से हम्मीरसिंह की १७पुत्री सिंहके लेने योग्य हुई परन्तु लहँगेके कारण १८देह में दाढें नहीं भिदीं; अथवा लहंगा लगा रहने से दाढें नहीं भिदीं और सिंह के उठा लेने से भूमि का भी स्पर्श नहीं हुआ. वह १९सिंह २०मण्डूकदरा (स्थान विशेष)को लांघकर २१चलतेहुए २२आभूषण का शब्द सुनकर २३आश्चर्य २४शीघ्र ॥ १९ ॥ वहां श्रावण के मेघ से अत्यन्त २५ अन्धकार में २६आधी रात में २७ वृक्ष की ओट में रहकर २८ बाण २९ कान तक खींचकर

कढत पार करि गज्ज डाव कुमरी भुव डारिय ॥
उडि कछुक उर्द्ध[2] दिय छोरि असु[3] हड्डी इत ठड्डी[4] सु हुव ॥
पुच्छिय कुमार ढिगजाइ पटु[5] तत्थ्य[6] कहहु इम कौन तुव॥२०॥
पतिस्वर[7] संसयपरत कहिय पहिलैं स्ववृत्त[8] कहि ॥
जंपिय[9] जब जगमाल लाभ प्रिय तव कुमार लहि ॥
अप्पन कहिय उदंत[10] पंथ प्रभुकौं निस पिक्खन ॥
गिरिनितंब[11] गृह गोख आत निद्रा लगि इक्खन[12] ॥
मृगराज झंपि लै मोहि मुख आयो तुम लिय तास असु[13]॥
धव[14] मुदित सुनिसु हय पिट्ठिधरि बिकस्यो हिय जिम रंक बसु[15]॥२१॥
दोहा—कुमरी मग आई कहत, सुनि मेहव दल साह ॥
दये न आवन मैं त्रि ३ दल, नहि किम मन्नैं नाह ॥ २२ ॥
जंपिय कुमरहु नर्मजुत[16], लौन[17]मुह मुहलाई[18] ॥
दलपठयैं किम देखते, अद्रिमहल सिर आइ ॥ २३ ॥
उभय २ करत संलाप[19] इम, पतनिय ढंक पधारि ॥
धात्रीगृह[20] प्रच्छन्न धरि, कहि यह तुम्ह कुमारि ॥ २४ ॥
बपु कछु केसरि[21] रद[22] बिसे, उनको कहि उपचार[23] ॥
कहि रजनी प्रकट न करन, द्रुत आयउ नृपद्वार॥२५॥युग्मम् ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनत हरख बढि सहर जग्गि परिकर[24] नृपजग्गिय ॥

---

१ मुख से. कुछ २ऊपर उडकर ३प्राण छोडदिये ४ खड़ीहुई ५चतुर ने ६ सत्य कह ॥ २० ॥ ७ पति की बोली का ८ अपना वृत्तान्त कहो ९ कहा. अपना १० वृत्तान्त कहा. पर्वत के ११ शिखर पर के महल के झरोखे में १२ नेत्र मिच गये १३ प्राण. यह सुनकर १४ पति ने प्रसन्न होकर. रङ्क को १५ धन मिलने के समान ॥ २१ ॥ मेहवा नगर पर बादशाह की सेना सुनकर मार्ग में कुमरी कहती आई कि हे पति! तीज के दिन नहीं आने के लिये मैंने तीन पत्र दिये सो क्यों नहीं माने ॥ २२ ॥ कुमर ने भी १६ हसी पूर्वक १७ सुंदर (कोमल) मुख में मुख १८ लगाकर कहा कि पत्र भेजता तो पर्वत के ऊपर के महल में तुझको कैसे देखता? ॥ २३ ॥ दोनों इस प्रकार १९ वार्तालाप करते हुए स्त्री को ढककर २० धायके घर में छाने धरकर कहा कि यह तुम्हारी कुमरी है २४ ॥ २१ सिंह के २२ दांत घुसे थे २३ इलाज ॥ २५ २४परगह

सह कुमार बरसिंह १८४।१ लाड जनजन मन लग्गिय ॥
सुनि अंतहपुर सखिन जानि गैंडागढ जाकँहँ ॥
नंगतट चढ़ि नाजरन जनसु सब सुप्त लखे जँहँ ॥
तिनकों जगाइ अक्खिय तरजि लगि नृजान डोढिय रह्यो ॥
कुमरिहिं जगाइ लेकैं चलहु आयउ कुमरहु उम्मह्यो ॥२६॥

दोहा—जाइ झरोखा दासिजन, बिछोनाँहि खिल बिक्खि ॥
कुछे सब नहिंनहिं कहि रु, सिर१उर२कुट्टन सिक्खि॥२७॥

॥ षट्पात् ॥

प्रासादन यँहँ पहुँचि बत्त अति सोक बढारिय ॥
हुव घरघर हाकार रुवत कुन्नाहि नर १ नारिय २ ॥
अप्प जाइ नृप अद्रिसौध परिसर सब सोधिय ॥
अल्लीसुव लखि अंघ्रि सबन हेतु सु संबोधिय ॥
जानिक जितेक हे तत्थ जिन काटि नक्क कट्टन कहिय ॥
कहि तब उदंत अखिलहि कुमर गूढ कहुँक यह हठ गहिय॥२८॥

॥ दोहा ॥

तिय धावरांपिय सैनकिय, जाइ बिदितकरि जाहि ॥
धात्रीसहित नृजानधरि, आनी महल उमाहि ॥ २९ ॥
कछुदिन उचित पंयोगकरि, आयँ पाटव एह ॥
तूर्गी २ आवत तीज ३ दिन, मिले उभय २ रसमेह ॥ ३० ॥
मिलन रत्ति प्रातहि मगन, कुमरी सुनि करजोरि ॥
सुत्रीं निस सोलह१६ बसे, बसहु इतीं १६हि बहोरि ॥ ३१ ॥
कुमर कहिय निस पंच५कहि, आगो स्त्रभटन अत्थ ॥

१पर्वत के शिखर पर ॥ २६ ॥ बिछोना हीर खाली देखकर ॥ २७ ॥३ पहाड़ के ऊपर के महल के आसपास ४ गोखि जमीन में सिंह के ५ पैर देखकर ६ नाक काटकर काढ देने की कही ॥ २८ ॥ स्त्री ने अपने पति ७ धाऊ को इशारे से कहा उसने जाकर उस कुमरी को ८ प्रसिद्ध ९ धाय सहित ॥ २९ ॥ १० इलाज ११ नैरोग्यता होने पर ॥ ३० ॥ ३१ ॥

पैहु आतहि तुम पावतो, तिम रहिजातो तत्थ ॥ ३२ ॥
पै आप्पन नामिलें पिया, अब तुम हुव उल्लाघ[2] ॥
यातैं मिलि करनौं उतहु, अरिनकोहु अति आघ ॥ ३३ ॥
कुमरि कहिय जे स्वसुरजन, किम ते अरि कुमरेस ॥
रक्खहु तिन महिमानि रचि, बांधव जानि बिसेस ॥ ३४ ॥
कह्यो कुमर तव किंकरी, बरनन लालन चाहि ॥
जोग्यानीं जवनेंदजा[3] इहिंमिस मरन उमाहि ॥ ३५ ॥
मरनहि जो दृढ स्वामिमत, ज्वलन[4] हमहिं दैजाहु ॥
तनकरि१ सो विधिवस तदपि, मनकरि२जदपि उमाहु ॥३६॥
इम उत्तर१ पृच्छाँ२ उचित, कुमरिहिं बोधि[6] कुमार ॥
रक्खि तहँ रु पुनि त्रि३निस रहि, इक्कल१हुव असवार ॥३७॥
संग दये रच्छक स्वसुर, जगबनास तिन्ह लाइ ॥
बंध्यो तरुसिर जो बसन, दकै सीमा सु दिखाइ ॥ ३८ ॥
तिनहिं मोरि पहुँच्यो तिमहिं, मेहवपुर जगमाल ॥
बर्द्धापन तोपन बन्यौं, विस्मय विपुल बिसाल ॥ ३९ ॥
कारन पुच्छि बिचारकिय, अँज्जहु[11] निधनक अज्ज ॥
अन्नादिक रोके अखिल, करि घनजतन कुकज्ज ॥ ४० ॥
बहुत हुतो सब बस्तुबल, कुमर तदपि किय मंत्र ॥
तोप तुपक काढि अब करैं, संगर असिनै[12] स्वतंत्र ॥ ४१ ॥
षट्पात्—इमबिचारि निस इक्क अरर खुलवाइ अचानक ॥
सहँसपंच५००००भट सहित निकसि असि तुमुल[13] भतानक ॥

यहां आते ही तुमको १नैरोग्य पाता तो ॥३२॥ २ रोग रहित ॥ ३३ ॥ कुमरी ने कहा कि हे कुमर! जो तुम्हारे श्वशुर लोक हैं वे क्या शत्रु हैं, इसलिये उनको बांधवों के (सम्बन्धी) समझकर मेहमानी देकर रक्खो ॥ ३४ ॥ ३ बादशाह की पुत्री को ॥ ३५ ॥ ४ अग्नि ॥ ३६ ॥ ५ प्रश्न ६ समझाकर ॥ ३७ ॥ ७बनास नदी तक वृक्ष के शिर पर जो ८रूमाल बांधा था वहां तक ९पानी चढने की सीमा दिखाकर ॥३८-३९॥ १०आर्यलोक भी ११आज (अब) भी रहित हैं ॥४०॥ १२तरवारों से ॥४१॥ १३भयंकर युद्ध को १४फैलानेवाले

हरपाल १८२।२ जज्जाउरपुर १ को स्वामीभयो ताके संतानतो स मस्तही हड्डनमें पंचम ५ भेद पाइ हरपालपोते २।५ कहाये ॥

अरु कोटा२के अधीस जैत्रसिंह १८२।३ के कुलके हड्डनमें छठो ६ भेदपाइ जैताउत्त २।६ भये तिनमैंहीं पीछैं तीन ३ पीढी के अनंतर खंधिल १८५ हू सूरता १ उदारता२मैं बिसेसहू बढ्यो जाने बुंदीके संगरमैं मंडूके पातसाहके सोलह १६ सामंत मारि सूरसज्जापैं सयनकरि आपुनों नाम उबारयो॥* तासौं एही जैताउत्त २।६खंधिलोत्त २।६ ऐसोहू उपटंक पाइ ठाये ॥

डूंगरसिंह १८२।४ के अन्वयके खजूरी ३ खेटके निवासकरि हड्डनमैं सप्तम७ भेद पाइ खजूरीके२।७ ऐसो उपटंक कहावत भये ॥

अरु सर्वही सूर हितैरनमैं सत्रुनको सोक सहावत वितरनमैं वित्तकी वाहिनी वहावत स्वकीय सविता संभर संतान सविताकौं सम्मद गहावत भये ॥ ४८ ॥

इतकौं यवनेंद्र अलाउद्दीन रनस्तंभको बिजयकरि चंडासिराज हम्मीर १८२ के पुत्र रत्नसिंह १८३ को रानाँलक्ष्मनके सरनग- योजानि पीछो दिल्लीजाइ दूतनकौं चित्रकूट पठाइ संभरराजके सूनुकौं गहाइदेवेकी कहाई ॥

तामैं रानाँकौं प्रतिकूल जानि बिजयके लोभलगि मेदपाटदे- शको लैबो बिचारि सीसोदराज के सन्मुह वर्षाकालकी वाहिनी की विडंबक बडे बिस्तारकी वाहिनी वहाई ॥

तहाँ कितनोंक कटकतो पातसाहके प्रस्थानके पहिलैंही पहुँ-

*अमर किया. १खिताब पाकर२ प्रसिद्ध हुए. डूंगरसिंहके ३वंशके खजूरी नामक ४खेड़ा में रहने के कारण. ५ वीरता में. ६दान में. ७धन की ८ नदी बहाते हुए अपने ९ पिता को चहुवाण की संतान होने का. युद्ध के रसिक १०सूर्य को ११ हर्ष कराया ॥ ४८ ॥ १२ चीतोड़ को दूत भेज कर चहुवाण राजा हम्मीर के १३ पुत्र रत्नसिंह को पकड़ा देने की कहलाई. १४मेवाड़. १५ नदी की १६अनुकरण (नकल) करनेवाला १७ सेना चलाई. कितनी ही १८सेना तो बादशाह के

जुट्टि कुमर जगमाल जुट्टि खल घान खलन किय ॥
बनिजकार व्यापार श्रोनि गोनिन जनु संचिय ॥
कटकेस उमयर हाजी१ कुतमरजिय बिछोरि किन्नों बिजय ॥
पंचहिसहँस५००००सिच्छहु पगिग सजिग खिल४ अज सिंह भय ॥४२॥
परभग्गत गहिपिछि चल्यो कुमरहु तिन्ह चट्टत ॥
हड्डु बजत असि मनहु कूरै खत्तिय तरकट्टत ॥
साँदिनबिनु हय सतन सतन बिनुहय पय सादिन ॥
लिय गहाइ जसलोभ बीर अप्पन प्रतिवादिन ॥
छिति पैंडपैंड सोनित छछक चलत लुत्थिलुत्थिन चढिग ॥
जगमाल अग्ग आकुल जवन भंडव११ अति तहिन पढिग ॥४३॥
तरुन१२ पग्घ रहि कतिन कतिन सूथन१३ फटि कंटन ॥
चिबुक१४ लोम अति उरझि घनै रुक्कत गिरि घंटन ॥
करजोरत थक्कि कतिक पयन इक्क कतिक जात परि ॥
पूरत बैसल१५ अपूत१६ कतिक मूरत तोबाकरि ॥
तुरकान सग्त१थायन परत२सब छब्बीससहँस२६००० त्रिसत३००
साहको कटक अहमद सहर बनि फग्गुनतरु हुव बिसत ॥४४॥
दोहा—सिसिर रहे उपकार सह, जुरि तब जुट्टि कुमार ॥
पुग्गोहम मर्द्दव प्रतिम, दक्खियो तजनय मसार ॥ ४५ ॥

१बनजारों के व्यापार के बोरों को मानों रुधिर का संचय किया २सेनापति ४पा की के ५सिंह के भय से जैसे गर डरते हैं ॥४२॥ जिसनकार६कूर्म खाती कूर्म को काट जिस प्रकार हड्डियों पर तलवारें बजीं७सवारों के बिना८कितने ही घोड़े और घोड़ों के बिना कितने ही सवारों के ९ दहूर होगये, यश के लोभ से उस वीर ने अपने १० प्रतिवादी शत्रुओं को पकड़ा लिये, उस दिन ११ यवनों की लीले ॥४३॥ कितनों ही की तो पगड़ियाँ १२वृक्षों में रहगईं और कितनों के १३ पाजामे कांटों में फट गये और कितने ही लोग पर्वतों की चाटियों में१४ दाढ़ी के बाल उलझजाने से रुकने लगे १५ पखों को मल मूत्र करके १६ अपवित्र करने लगे. निर्लज्ज होकर१७हुले ॥४४॥१दोरों में२ ... इन्द्र के २१ सदृश ॥ ४५ ॥

कैनी साहकी कतिकहत, यह पहिलैं इहआंनि ॥
प्रेत पुव्वभव पुत्रिको, परन्यों बचन प्रमानि ॥ ४६ ॥
जिनप्रेतन किन्नौं सु जय, इम अनेकमत ऐन ॥
जिम संभव तिम जानिये, कवि हठ कबहु करैन ॥ ४७ ॥
सोवन जु चहैं रनसयन, सु न लै इतर सहाय ॥
सूरनकी अद्भुत सरनि, क्रमैं पथिक अर्क काय ॥ ४८ ॥
मैधन अनंतर निजप्रिया, बुंदियपुरसन बुच्छि ॥
बय बिलास बिलसे बिबिध, खेलायित हितलुच्छि ॥४९॥
जुंव २ सुव हुव जगमालकैं, निजकुल धर्मनिधान ॥
पट्टप तहँ हड्डामसव, भारमल्ल १ अभिधान ॥ ५० ॥
निधान १ भिधान २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
अनुजनाम रनमल्ल २ यह, गुन रनरचन गहीर ॥
प्रेत प्रथमभव पुत्रिका, औरसहुव अधिवीर ॥ ५१ ॥
ज्ञाति प्रेतनी प्रेतजा, कतिजड़ याहि कहंत ॥
असमय आयो याहिनैं, हन्यौं कंत इम हंत ॥ ५२ ॥
हल्लू १ बंबावद महिप, मेहव नृप जगमाल ॥
रनसोवन चहतहु घरहि, काय तजिय लहि काल ॥ ५३ ॥
इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम ५ राशौ बीति-होत्रचरडासि१ वंशवर्णननिमित्तहड्डाधिराडस्थिपाल २५५ बीज्या-नुबीज्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीशनरेशहम्मीर १८३ ।२

कितने ही कहते हैं कि बादशाह की १ कन्या को पहिले घर लाकर प्रेत की पहले २ जन्म की पुत्री को पीछे परना ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ जो युद्ध में काम आना चाहता है सो दूसरों की सहायता नहीं लेता क्योंकि वीरों का ३मार्ग एक अद्भुत ही है जिसमें ४अकेला ही चलता है॥४८॥ ५युद्धके पीछे६ क्रीड़ाकरनेवाले उसमित्र ई.ने॥४९॥७जुग(दो)८पुत्र॥५०॥॥१॥९स्वे ·है।५०-५३।
इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पू के पुर्वायण के पञ्चम राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपालके वंश और अनुवंश की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेश हम्मीर के समय के समान है

समयसमानाऽधिकरणाकराष्ट्रकूटराजकुमारजगमालचरित्रेदिल्ली
शाऽलाउद्दीन ११ समयसमकालीनमेहवपुरमहीपराष्ट्रकूटराजसल
खौरसमल्लिनाथ १ जैत्रमल्ल २ वीरमदेव ३ तनुजत्रयो ३ द्भवन
१ स्वानुजद्वयाऽर्थविभक्तसुमियाणा १ खेड २ विभागप्राप्तपितृपट्ट
मल्लिनाथजातकुमारबुन्दीशहम्मीर १८३।१ पुत्रीपाणिग्रहणासूचन
२ दिल्लीशपरिपन्थिगौर्जरदेशाधिकारियवनाश्रितसिन्धुदेशीयसप-
रिकरलुण्टितवडवा १ऽसि २ रत्नसहितस्वामिवैभवप्रतिभीपलायि
तदलाख्ययवनान्तरमेहवपुरमहीपमालवदेवाऽपरनाममल्लिनाथ-
सहायविश्रमण ३ स्वपुत्रशृगालीशङ्कितमल्लिनाथसहवित्तनिभृत-
निष्कासितस्वसहायीभूतवीरमदेवार्थदत्तसमाधिवडवकतदुत्सारित-
दलाख्ययवनस्वस्थानगमन ४ तन्मन्तुमत्तत्पराजितपलायितपितृव्यक
कुमारजगमालखेडनामतत्स्थानसमाक्रमण ५ सेत्रावाख्यसंवसथ-
स्थापितसूनुचतुष्क ४ स्वपत्नीचापोत्कटीकपरिणीतसेत्रावेशमा.
ङ्गलिकराणाङ्गदेवपुत्रीकसनवोढवीरमदेवदलाख्ययवनस्थानभाडङ्ग

अधिकरण जिसका ऐसे राठोड़ कुमार जगमाल के चरित्र में दिल्ली के बाद
शाह अलाउद्दीन के समय में होनेवाले मेहवापुर के पति राठोड़ों के राजा
सलखा के मल्लीनाथ १ जैत्रमल्ल २ और वीरमदेव ३ इन तीन औरस पुत्रों का
होना, दोनों छोटे भाइयों के अर्थ सुमियाणा १ और खेड़ २ बांट देकर पिता का
पाट लेकर मल्लीनाथ के कुमर का बुन्दी के पति हम्मीर की पुत्री से विवाह
करने की सूचना करना, दिल्ली के बादशाह के शत्रु ऐसे गुजरात देश के
अधिकारी यवन के आश्रित, और सिन्धुदेश में रहनेवाले, परगह युक्त, घोड़ी
और खड्ग रूप रत्न सहित स्वामी के वैभव को लूटकर भय से भगेहुए ऐसे
दला नामक दूसरे यवन का मेहवपुर के राजा मालदेव दूसरे नाम से मल्लीनाथ
की सहाय में विश्राम करना, अपने पुत्र की शंका से मल्लीनाथ का उस भय
से भगेहुए दला को धन सहित गुप्त निकालना और अपने सहायक वीरम
देव के अर्थ समाधि नामक घोड़ी देकर निकालेहुए दला नामक यवन का अपने
स्थान जाना, उसका अपराध करने से उससे हारकर भागेहुए काका के खेड़ नाम
के स्थान को कुमर जगमाल का लेना, सेत्रावा नामक ग्राम में चार पुत्र और चा
वड़ी स्त्री को रखकर सेत्रावा के पति सांगलिया राणाङ्गदेव की पुत्री नवीन
दुलहिन सहित वीरमदेव का दला नामक यवन के भाड़ङ्गनगर स्थान को जाना,

नगरगमन ६ यवनसमर्पितसोपायनस्वसीमार्द्धसादरसहवासितप्र-
त्युपकृतप्रतीपवीरमदेव १ साङ्कलिक्यो २रसर्वाऽनुजचूंडाख्य-
पञ्चम ५ कुमारसमुद्भवन ७ परिणीतप्रेतीभूतक्षत्रियान्तरपूर्वभव-
पुत्रीककुमारजगमालस्वगुणगणग्लहसमादेयपूर्वानुरक्तवेलविहार
व्याजबहिरागतयवनेन्द्रतुगलक ३ मुहम्मद १५ सुताहरण ८ त-
त्प्रेषितसप्तविंशतिसहस्र २७००० सैन्यवेष्टितमेहवपुरमध्यस्थनिर्भय
योत्स्यमानकुमारजगमालप्राक्कालप्रस्थानप्रियाप्रस्थापनकृतश्राव-
णतृतीया ३ सम्मिलनसमयसन्धाभ्रंशभाविहाड्डीहेतिस्नानसम्भा
वनादुर्मनीभवन ९ स्वीकृतस्वसमानसंयोधनभटवर्गनिशीथनिस्सा
रबुन्दीप्रस्थापिततुरङ्गजोर्णवाशिष्टीवहवस्त्रबन्धबुभूषिततद्वारिवेला-
मर्यादनिशीथसमयसप्रसभप्राप्तप्राप्यपुरीपरिसरकुमारजगमालसिंह
संहतितद्ग्रस्तस्वसहधर्मिणीसंरक्षण १० मिथःप्रत्यभिज्ञातपुरप्र
विष्टकुमारपिहितप्रियाधात्रीधामस्थापन ११ कुमारपरिमार्गणाप्राप्त

अपकार करने पर भी उपकार करनेवाले ऐसे यवन को नजराने सहित अपनी आधी सीमादेकर आदर सहित पास रखतेहुए वीरमदेव के मांगलियाणी के पेटसे सब से छोटे चूंडा नामक पांचवें कुमार का जन्म होना, किसी क्षत्रिय के प्रेत होने से पहले जन्मीहुई पुत्री से विवाह करके कुमर जगमाल का अपने गुणगण से पण रूप से ग्रहण कीहुई पूर्वानुराग से बाग में विहार करने के मिष से बाहर आईहुई बादशाह तुगलक मुहम्मद की सुता को हरना, उसकी भेजीहुई *सत्ताईस हजार सेना से घिरेहुए मेहवापुर में निर्भय युद्ध करतेहुए कुमर जगमाल का पहले समय में गईहुई और बुन्दी में ठहरी हुई प्रिया से श्रावण की तीज के समय मिलने की प्रतिज्ञाभंग होने से हाडी के अग्नि में जलजाने की सम्भावना से उदास होना, अपने समान युद्धकरना उमरावों के स्वीकार करने पर आधी रात को निकलकर बुन्दी को प्रस्थान करके घोड़े के बल से वशिष्ठवाहिनी (बनास) नदी के प्रवाह की जल की लहर की सीमा के बोध कराने के लिये वस्त्र बांध

---

* इसी मयूख के दश के छन्द में पैंतीस हजार यवन सेना का आना लिखकर इनमें से ४२ के छन्द में पांच हजार का माराजाना लिखा है और ४४ के छन्द में छबीस हजार तीनसौ सेना का अहमद नगर में पीछा जाना लिखा है और यहां पर सत्ताईस हजार सेना भेजना लिखा है सो पूर्वापर के विरोध से ग्रन्थकर्त्ता के मद्य के नशे के कारण उपरोक्त गणना की असंगति पाईजाती है.

कुमारीकसंतप्तश्वशुरपारिजनप्राप्यस्ववीर्यत्रातप्रियाशुद्धिप्रकाशन १२ पक्षो१ ह्लाघमिलितपत्नीपतिनानानर्मप्रश्नो१ त्तर २ परस्परप्रबोधन १३ विशेषातिवाहितत्रि ३ रात्रप्रतिगच्छत्कुमारश्वाशुर्यसार्थकौतुकार्थबाशिर्घीतटविटपिबद्धवस्त्रस्वलीयावारिवेलाविबोधन १४ प्रतिप्रस्थापितबुन्दीशवीरवृन्दप्रच्छन्नपुरप्रविष्टसाध्यावसरनिस्सृत कुमारसौप्तिकसमरसेनापतिद्वय २ समेतविध्वस्तवैरिवाहिनीशेषविद्रावण १५ लुण्ठितशत्रुशिविरोपकारप्रातप्रविष्टस्वसद्मसमाहूतप्रियपत्नीकजगमालजातमारमल्ल १ रणमल्ल २ पुत्रद्वय २ प्रसूप्रविवेचन १६ शूरशय्याशिशयिषुहड्डहल्लू १ राष्ट्रकूटजगमाल २ स्वस्वसद्मसमयमरणसूचनमष्टमोऽमयूखः ॥८॥ आदितः पञ्चपञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥ १५५ ॥

कर आधी रात के समय हठपूर्वक प्राप्त होनेवाली (बुन्दी) पुरी के समीप प्राप्त होकर जगमाल का सिंह को मारकर उससे ग्रहण कीहुई अपनी विवाहिता स्त्री की रक्षा करना, परस्पर पहचान करके पुर में प्रवेश कियेहुए कुमर का अपनी प्रिया को धाय के घर पर छिपाके रखना, कुमर के मांगने पर कुमरी के नहीं मिलने से श्वसुर के अनुचरों को तपाने पर अपने पराक्रम से रक्षा कीहुई प्रिया की खबर प्रकट करना एक पक्ष में नैरोग्य होने पर स्त्री और पति का अनेक हंसी पूर्वक प्रश्नोत्तर करके परस्पर समझाना, तीन रात्रि विशेष रहकर पीछे जातेहुए कुमर का सुसराल(सासेर)के लोकों के साथ का तमाशा दिखाने के लिये बनास के किनारे पर वृक्ष के ऊपर बांधेहुए वस्त्र से अपनी गिरीहुई जल की लहर का बोध कराना, बुन्दीश के वीरों को पीछे भेजकर अपने पुर में छानें प्रवेश करके समय साधकर बाहर निकलकर रतिवाह के युद्ध में दो सेनापतियों सहित शत्रुसेना का नाश करके बाकी की सेना को भगाना, शत्रुओं के डेरों की सामग्री लूटकर अपने घर में पीछा प्रवेश करके अपनी प्यारी स्त्री को बुलाना और जगमाल के मारमल्ल और रणमल्ल दो पुत्रों के जन्म की सूचना करना, शूरशय्या में शयन करने की इच्छावाले हाडा हल्लू और राठोड़ जगमाल दोनों का समय आने पर अपने अपने घर में ही मरने की सूचना करने का आठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और आदि से १५५ मयूख हुए ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

बरनहिं अब हल्लू १८२।१ बिहित, इच्छन स्तुति रन एक ॥
सुपहुंगाम २०३ धारतु श्रवन, टरैं जिम न कुलटेक ॥ १ ॥
सक निधि ससि गुन भू १३१९ समय, भोहन होवन भीर ॥
हुव हल्लू १८२।१ हरराज १८२।२ के, व नौं धारक वीर ॥२॥
पिता १ पितृव्यंक २ रनपरत, सक रंद्र गुन ससि १३३२ माहिं॥
पावत हुव अधिराजपद, दे डोहिन देर डाहि ॥ ३ ॥

॥ पद्धपात ॥

जनक पट्ट लहि जुगल २ सिंह उक १ रु पंत्रक५ सिरत्त२॥
ऊँर्यो अग्निसिर कुपि बेस्यौ आसु कि वासुकि दिख्त ॥
जननि तीन ३ जब जरिय येर्वालान तब तुल्लिय ॥
सत्यकरन तिहिं सिसुहि त्वरित चल्लिय चढि तुल्लिय ॥
जवनो निवारि परिकर जनन लख्यि गति मोरयो कठन ॥

॥ दोहा ॥

इम निलय निहि डेयन उभयर रह्यो सु चिंतित बेर१ रन२ ॥४॥
भाखिय हल्लू१८२।१ निजभटन, सु नो समय गुनसेन ॥
जवतो स्त्रगलन परजई, हे पर प्रविसे हेन ॥५॥
सिसुलखि मो हाहा समय, छिप तुम डारि दुराप ॥
बेट अंकुर जिम अहिनवहि, अबसुब जटिल आलाप ॥६॥

१ मैं प्रभु बालसिंह ॥ ? ॥ २ ॥ ३ आया ३ मन ॥ ३ ॥ हिंदुवान और ४ पांच ५ सिसोदियों [illegible] ने दोनों [illegible] [illegible] करके ६ [illegible] ७ तिरछी वासुकि सर्प ने [illegible] ८ [illegible] ९ [illegible] लेने [illegible] घर में [illegible] १० पधि [illegible] ॥४॥५॥११ [illegible] अंकुर [illegible] [illegible] [illegible] भाला

॥ षट्पात् ॥

निजवीरन इम नृपति उपालंभत पछितावत ॥
पुर बिंझोलिय१ प्रथम आइ रजगुन उफनावत ॥
सुर्जन१८२।१ तँहँ हत्थ१८१।२ सुत पिक्खि अंवहित किल्लापति ॥
तिहिं तुरंग१ गज२ ग्राम३ अप्पि सादर किय उन्नति ॥
रतनगढआइ मातुल रतन बहु सन्निय पुव्वव बितरि ॥
पुनि आइ नृपति सिंहोलि पुर कछुदिन रहिय मुकामकरि ॥७॥

॥ दोहा ॥

किल्लापति सुहु तुष्टकिय, हल्लू१८२।१ नरपुरुहूत ॥
गत निजदुर्गन गंजिबे, देखन पठये दूत ॥८॥
जीरनपति नृप जैत्रको, प्रथम प्रमाद सु पाइ ॥
हिंगुलाजगढ१ लेतहुव, महापघात मचाइ ॥९॥
इमहि भानुपुरईसकौं, तृनगिनि दब्बत देस ॥
खेड़ीपुर१ संहरि खलन, निजबस किन्न नरेस ॥१०॥
दसपुर नृपको दब्बयो, जिम पत्तन जिन्नोद३ ॥
दुर्ग त्रितय३ रहि अब्ददुव२, किय संकित चहुँकोद ॥११॥
पहुँच्यो लरि खिल गढन पैं, मिले न विधिवल मूर ॥
बंबावद आयो बहुरि, सलह१७ सम वय सूर ॥१२॥

॥ षट्पात् ॥

हल्लू१८२।१ नृपति विवाह प्रथम१ सद्दन गय सोपुर ॥
रक्खिय गृह रखवार भ्रात सुर्जन१८२।१ असंकउर ॥

बढता है इस प्रकार बढकर शत्रुओं ने अब अमाप भूमि जड़ दी(अवकाश रहित करदी) है ॥६॥ १उपालम्भ देताहुआ २ अपने अङ्गों को बचायेहुए (सावधान) ॥ ७ ॥ ३ नरेन्द्र ने ४ गयेहुए ॥ ८ ॥ ५ आलस्य अथवा भूल ॥९ ॥ १० ॥ ६ मन्दसोर के राजा का ७ पुर ८ दिशा ॥ ११ ॥ सत्रह ६ वर्ष की अवस्था में

सो काका हत्थ१८२१२ सुत समा छ६ वडो हल्ल१८२१सन ॥
लल्ल१८२१२ पुनि तिम लोहराज१८२१३ जुग२ अनुज महामन ॥
जीरन अधीस प्रामार जो जैत्र२ जुरिग लखि छिद्र जव ॥
भानुपुरभूप खिच्चिय परत२ तकि विरोध हुव संग तव ॥१३॥
इन वंवावद आइ ताप तोपन दोउ रन दिय ॥
पहु हल्लुव१८२११ द्रुत परनि कुंच सुनत हि सम्मुहकिय ॥
सुर्जन१ लल्लुव२ सज्जि उभय२ झेल्ले जोलौं अरि ॥
भ्रात जैत्र १८२१३ के भवन धनसु ऊढा कोटा धरि ॥
सादिनि सहस्रपंचक५००० सहित सजव आइ रजनी समय ॥
पविरूप भूप हल्लुव१८२११ परयो अरि गिरि भेदन हंकि हय ॥१४॥

॥ दोहा ॥

रहे सहँस दुव२००० खेत रन, मिलि खिच्ची१ रु प्रमार२॥
भरतसेन१ अरु जैत्र२ भजि, गय सहिधाय अगार ॥१५॥

॥ षट्पात् ॥

वलि कोटासन वुल्लि गौड़ि१ दुलही अंचलगहि ॥
महिला सह जयमत्त दुर्ग प्रविस्यो अहितन दहि ॥
कंकन मोचि सक्यो न बहुरि जीरनपति दुर्वल ॥
रान अनुगवनि रंक द्रुतहि लायो तदीयँ दल ॥
संभरनरेस कंकनसहित अभिमुख झेलि धपाइ असि ॥
हम्मीरकटक जैत्रहिं हनि रु किय प्रद्रुत विरुदन विकासि ॥१६॥

दोहा

प्रधन चक्र२ किय चढिप्रथम१, हुव जदपिन तँहँ हारि ॥
तदपि लह्यो दुर्ग न तिकउहि, यह स्वादिष्ट अनुसारि ॥ १७॥

हल्लू से छः १ वर्ष वड़ा था ॥ १३ ॥ २ विवाही हुई स्त्री को पांच हजार सवारों ३ सहित शत्रुओं रूपी ५ पर्वतों को काटने के लिये ४ वज्र रूप से ॥१४॥ महाराना का ६ सेवक बनकर ७ उनकी सेना को अपनी सहाय पर लाया ८ सामने झेलकर ॥ १६ ॥ १ अपने भाग्य के ॥ १७॥

परनि आत नवम ९ सु प्रधन, जित्यो द्वि २ नृप भजाइ ॥
अब दसम १० हु यह अंगम्यों, खल जीरनपति खाइ ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

ब्याह त्रितय ३ किय बहुरि हड्डहल्लुव १८२।२ जसजोरन ॥
तँहँ तृतीय ३ तोमरिय बैर बुंदियमहि मोरन ॥
नृप बुंदियपति नप्प १८२।१ भार चढि पुनि प्रबीरपथ ॥
खिच्चि पहारहि खंडि पुरसु लिय जित्ति पल्हायथ १ ॥
जित्तिय महेस१हरराज२जुग२हल्लुव१८२।१पहु रन बार१२हम
तेरहम१३सीसवालिय २सहर किय बुंदियबस जित्तिक्रम ॥१९॥

॥ दोहा ॥

जीरननृप इत जैत्र सुव, सुंदरदास सनाम ॥
पुनिहु रान हम्मीर प्रति, किय बिन्नति जयकाम ॥ २० ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि हल्लुव १८२।१ तिन्ह संधि पत्र चित्तोर पठायउ ॥
मंडनगढ नृप नागपाल पहिलैं छलिपायउ ॥
तबहि रैन १७५ इन आइ बिरचि बैठन बंबावद ॥
लियउ अठानाँ १ लरत जिमहि तुमरोगढ जावद २ ॥
लिय बंगदेव१७९।१सुहि बैरलखि पुरमंडल १ केथोलिपुर २
तुमसौं छुटे न तबके गये लये जवन पृतना प्रचुर ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

तिनकौं बिलसन लोभताकि, सुंदरको किय संग ॥
सुन रक्खहु अप्पहु समुझि, उँरग डंक जिम अंग ॥ २२ ॥
दसपुर १ जीरन २ भानुपुर ३, चोथो ४ गढचित्तोर ४ ॥

१युद्ध में ॥ १९ ॥ जैत्रसिंह का २पुत्र ॥२०॥ उनका ३मेल सुनकर ४ सेना ५ ६ भोगने को जिस प्रकार ७सर्प का ८ डंक अंग पर नहीं रखते हैं तिस

मंडनगढ इक १ दै मही, इन ४की लिय हम ओर ॥ २३ ॥
मिच्छन रन हरराज १८३।१ मृत, जावद मुख ४ गत जत्थ ॥
तुमरे ए ४ गढ हे न तब, तुट्टिय तुम कुल तत्थ ॥ २४ ॥
मंडनगढ १ तुम मूलसौं, लाभ अधिक गिनिलेहु ॥
साहहिँ दिय काका समर १८३।७, इतकी रक्खन एहु ॥२५॥
गढ चउ ४ पीछे गहनकी, हो पुनि रक्खत हौंस ॥
क्यौं जीरनपति मेलकरि, दुरित भरहु निस १ द्यौंस ॥२६॥
अजयसिंह चित्तोर यह, तुमहिँ दयो बलतानि ॥
तस जामाताकी हि तुम, करहु हमहिंतजि कानि ॥ २७ ॥
मंडनगढ यौतक मिसहि, दाय उचितहो दैन ॥
अरु नदयो तो रहहु वह, रंच मँदीय रहैन ॥ २८ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम हल्लुव १८३।१ दल इक्खि रान अतिमान रिसायउ॥
सुंदरनृपके संग पुनिहु बल प्रचुर पठायउ ॥
भ्रात १ पितृव्यकतनुज विंझ १ सिंहरन उभै २ रु बलि ॥
अनुज सु खित्तल १ त्रय ३हि करे बलपति जित्तन कलि॥
...ने भरतसेन खिच्चिय पहु जु सुहु प्रबोधि पठयो सहित ॥
...हम्म१८३।१सुनतसु सबल आयउ हल्लुव१८३।१भीरइत२९

दोहा

...१८३।१ की नृप भीरकरि, हुव नासीरैं सु हम्म१८३।१।

...को मत रक्खो॥२२॥२३॥ जावद१आदि ॥२४॥२५॥२चाहना रखते ...इकट्ठ करते हो ॥२६॥ सेना के विस्तार से अजयसिंह ने तुमको यह ...आ है सो हमको छोड़कर कर४उस अजयसिंह के५जमाई की ही ...था ॥२७॥मांडलगढ६दहेज के मिससे ही देना चाहिये था सो न दि...सो तुम्हारे ही रहा परन्तु७मेरी भूमि रञ्चमात्र भी न रहेगी ॥२८॥ ८ ...१० बहुत ११ युद्ध जीतने के लिये ॥२९॥ १२अग्रणी(सब से आगे)

चि मेवारमैं[1] डमर मचावत भयो ॥

याही अवसरमैं अचानक जाइ निश्रेनीनकी श्रेनी[2] लगाइ हड्डाधिराज समरसिंह १८१।७ आपुनैं अन्वयके[3] परपुरुष मंडन१६८के रचे मंडनगढनाम[4] दुर्गमैं पैठि आपुनौं अमल रचावतभयो ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

पहिलैं यह गढ करि कपट, नागपाल नरनाह ॥
रान लयो नृप रैंन[5] १७५ सौं, रक्खी रंच न राह ॥ ५० ॥
सु अब रान लक्खन समय, संभर नृप समरेस१८१।७॥
गिनि स्वकीय[6] पच्छो गहिय, बलि कछु प्रांत बिसेस ॥ ५१ ॥
धर गत[7] लक्खन पट्टधर, सुनि कुमार अरिसीह ॥
पठई कहि अैसे परब[8], लुप्पी तुम हित लीह ॥ ५२ ॥
हड्ड कहिय तुमलौं न हम, लयो कपटरचि लेस ॥
पैठि दुग्ग खग्गन प्रहरि, अपनायउ नय[9] एस ॥ ५३ ॥
सुनि चिंतिय अरिसिंह तब, इत रन करन प्रयान ॥
जानि नियंत[10] आवत जवन, रोक्यो कुमरहिं रान ॥ ५४ ॥
इक१हि अलावुद्दीन११ इत, कहुँ गत[11] बिपिन[12] सिकार ॥
तत्थहि पहुँचि भतीज तस, सुलैमान गहि सार[13] ॥ ५५ ॥
दे प्रहार मूर्छितदसा, जिहिं काका मृत[14] जानि ॥

निकलने से पहिले ही मेवाड़ में पहुंच कर १उपद्रव मचाया. निसरनियों की २ पंक्ति लगाई. अपने ३ वंश के. ४ मांडलगढ ॥ ४९ ॥ ५ रत्नसिंह से ॥५०॥ मांडलगढ को ६अपना जान कर कुछ अधिक प्रांत के साथ पीछा लिया ॥५१॥ भूमि ७ को गईहुई जान कर महाराणा गढलक्ष्मणसिंह के पाटवी कुँवर अरिसिंह ने कहला भेजा कि ऐसे ८ समय में तुमने स्नेह की सीमा का उल्लंघन किया है ॥ ५२ ॥ यह ९ नीति है ॥ ५३ ॥ यह सुन कर अरिसिंह ने युद्ध के लिये इधर आना चाहा परंतु महाराणा ने बादशाह का १०निश्चय ही आना जान कर कुमर को रोक दिया ॥ ५४ ॥ इधर अकेला अलाउद्दीन १२वन में कहीं शिकार खेलने को ११गया था तहां उसके भतीज सुलैमान ने १३तरवार लेकर ॥ ५५ ॥ प्रहार करके मूर्छित दशा में काका को १४ मराहुआ जान,

जदपि रान बरज्यो बहुत, करन तदपि कुल *कम्म ॥ ३० ॥

पट्पात्

वाहवाह कहि उभय २ ×कटक मिलतहि हय हंकिय ॥
ख बढि मेहजिम खेह किरन +बिकिरन रवि ढंकिय ॥
सहसा चलि संकुलित बान १ असि २ ÷कुंत ३ बरच्छिय ४
अंग छिन्न उच्छलत मनहु बिनुदंक[1] अंक[2] मच्छिय ॥
गिरिजा[3]१गिरीस[4]२बिहरत सगन[5] गगन मगन अच्छरि३गहिय॥
इभमुखी१प्रमुख[6] चँउसट्ठि[7]६४इम अति अभीष्ट[8] गिनि उम्माहिय३१
बाजि[9] दपटि[10] बुंदीस गंजि बिंभ१ रु सिंहन२ गय ॥
कासू[11] भहरि कराल हनिय खित्तल कुमार हय ॥
भरतसेन भूपाल हम्म १८३।१ भुज खग्गप्रहारिय ॥
बाहुल[12] कटि कछु बिसंत[13] झपटि हड्डहु असिझारिय ॥
भानुपुर पहु सु खिच्चिय भरत१ पुहवि खंड दुव२हुव परयो ॥
हयचढि द्वितीय२आयो हनन कुमर१सु पै घायलकरयो ॥३२॥
बडगुज्जर बलराम१ रानभट बान कानरहि ॥
छुट्टयो न्रपपर छुधित[14] गयो गलभेदि त्वँरागहि[15] ॥
इहिंछंत[16] लखि अलसात हनत जीरनबल हल्लुव१८२।१ ॥

---

* कर्म ॥ ३० ॥ दोनों × सेनाओं के मिलते ही घोड़े उठाये, आकाश में मेघ के समान खेह (रज) बढकर सूर्य की किरणों के + फैलाव को ढकलिया ÷ भाला. कटेहुए अङ्ग मानों बिना १ पानी की २ दुखी मछली के समान उछलते हैं ३ पार्वती और ४ महादेव ५ गणों सहित विहार करते हैं और आकाश में अप्सराओं ने आनन्द ग्रहण किया है और इभमुखी को ६ आदि लेकर ७ चौसठ योगिनियें इस युद्ध को अत्यन्त ८ प्रिय मानकर हर्ष युक्त हुईं ॥३१॥ ९ घोड़ा १० दौड़ाकर ११ बर्छी का प्रहार करके १२बाहुत्राण (दस्ताना) कटकर कुछ १३घुसने पर ॥३२॥ राना के उमराव बलराम का बाण कान तक रहकर प्राण का १४ भूखा राजा पर छूटा सो १५ शीघ्रता से लगा भेदकर निकल गया इस १६घाव से

आयउ वग्गउठाय सहित सोदर लघु लल्लुव१८२१२ ॥
सुरजन१८२१९पुरोगे त्रिक३हत्थ१८२१२सुत जीरनदल अटक्योजुरत
हल्लुव१८२१भतीज१८३१३अवलंबहुव इत मेवारन आहुरत ॥३३॥
खित्तल१हम्म१८३१९दुरखिन्न गये सिबिरन सिबिकागत ॥
वेधक वह बलराम हन्यौ लल्लुव१८२१२ खग्गाहत ॥
सिंहन तिहिं सीसोद रानकाका इन्ह२रोकिय ॥
दपट्यो तुरग अदभ्भ अभ्भ अच्छरि अवलोकिय ॥
हरराज१८२१९तनयहम्मीर१८२१४अरुलोहराज१८२१३करिलोहछक
हल्लू१८२१९नरिंद उप्पर हठियआयउ आसि चक्खन चसक ॥३४॥
सिंहन१आसि नृप१८२१९सीस टोप तिरछीपरि तुट्टिय ॥
नृपके खग्गनिपात छिन्न तससिर बपुछुट्टिय ॥
वेग सुनत यह बिंझ१ अंसे नृपकै झारिय असि ॥
टरिकरि बाहुल टूक सोहु तुट्टिय बिधिबस बसि १॥
हल्लुव१८२१९वनात कौतुक बिहसि सहज कट्टिलिय बिंझ२सिर॥
बुंदीस अनुज नवरंग१८३१२बलि हनिय हूल कलिकर्ण१किर ॥३५॥
बिंझ१रु सिंहन२बीर परत खित्तल३ छतपावत ॥
मेवारन दल मुरिग छिप्प हड्डनभय छावत ॥
बिनुनृप खिच्चियबलहु भीत अबलग रहि भज्जिग ॥
इम हल्लू१८२१९करवाल व्याल पीवत असु बज्जिग ॥
सुर्जन१८२१९हुभ्रातगज१८२१२भीम१८२१३सहजीरनदलहनिकिन्नजय
मेवार द्रवत ग्रामारमुरि सबन अग्ग भग्ग सु सभय ॥३६॥

---

१ अग्रणी (आगे चलनेवाला) २ आधार हुआ मेवाड़वालों के रेलड़ते समय ॥ ३३ ॥ ४ घायल होकर ५ खड्ग के प्रहार से. घोड़े को ६ अत्यन्त दौड़ाकर ७ आकाश में ८ अत्यन्त घायल करके. तरवार का ९ स्वाद चखने के लिये ॥३४॥ १० खड्ग के प्रहार से. राजा के ११कन्धे पर १२ बाहुत्राण (सुगुन सिलह) के टुकड़े करके १३ हूलवंश के कलिकर्ण नामक क्षत्रिय को गिराकर ॥३५॥ १४ घाव पाकर १५ शीघ्र १६ खड्ग रूपी सर्प १७प्राणों को मेवाड़ के १८ भगते ही "यहां लक्षण से मेवाड़वालों का भगना समझना चाहिये"

॥ दोहा ॥

हल्लू१८२।१ जिति चउद्दहम१४, रन लगि पिक्खि रिसात ॥
पुरमंडल१ विच कुद्दिं पहु, अमलकिन्न उफनात ॥ ३७ ॥
निजथाँनाँ धरि तँहँ निडर, पंद्रहम१५ सु जयपाइ ॥
कतिदिन रक्खिय हम्म१८३।१कँहँ, इम बंबावद आइ ॥ ३८ ॥
करि साधन *बैद्यनकथित, हुव ×नीरुज हम्मीर१८३।१ ॥
पहु भतीज तब +प्रेसयो, बुंदीपत्तन बीर ॥ ३९ ॥

॥ षट्पात् ॥

महिप रान हम्मीर स्वबल हल्लन जित्यो१सुनि ॥
कृत घायल२ निजकुमर परे रन दुव२काका३ पुनि ॥
बडगुज्जर बलराम१ हूल कलिकर्णा२ प्रानहरि३ ॥
पुरमंडल गय पैठि ५ कछु न चित्तोर कानंकरि ॥
इत्यादि मंतु पिक्खि सु असह अँहिमेचक गति ऊसासिय ॥
हल्लू१८२।१हि हेतु सबको समुझ्झिचढनचाहि कँटिपट कसिय॥४०॥
दसपुर १ जीरन २ स्वदल दे रु तिनकेहु बुल्लि दलँ ॥
बाहिर सिबिर बनाइ मिजल किय इक्क १ महाबल ॥
सेना त्रेपनसहँस ५३००० सज्जि हंकत सीसोदहिँ ॥
सुनि बुंदियपति सजव बिरचि संबंधि बिनोदहिँ ॥
पंचम ५ मुकाम हम्म १८३।१ सु पहुंचि कहि मैं खित्तल खिंन्नकिय
औरको नत्थि अपराधयह हनहु मोहि धकि बैरकिय ॥ ४१ ॥

॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥* वैद्यों के कहने के अनुसार × नैरोग्य + बुन्दी पुर को भेजा ॥ ३९ ॥ १ शंका (भय) नहीं करके २ अपराध ३ काले सर्प के समान ४ कारण ५ कमरबन्धा ॥ ४० ॥ अपने नाम का ६ पत्र देकर उनकी ७सेना बुलाकर. बाहर ८डेरे किये ९ शीघ्र. कुमर क्षेत्रसिंह को मैंने १० घायल किया है ११ नहीं ॥ ४१ ॥

इम जंपत[1] नृप इक्क१ पत्त[2] जब रान पटालय[3] ॥
सोहु सुनत द्रुत दोरि गिनत अद्भुत सम्मुहगय ॥
मिलि वत्थन हितमानि आनि बैठिय इक१आसन ॥
उपालंभन[4] दुहुँ२ ओर भयउ निर्मित[5] संभासन ॥
सीसोद कहिय लिय साहसन[6] जावदआदि प्रदेस जब ॥
कोनसो बैर हल्लू १८२।१ कहत इनकौं चहत छुटान अब॥४२॥
बुंदियपति तब बदिय मोलि खिच्चिय १ प्रामारन ॥
अप्पहु भेजि अनीक[7] कियउ अनुचित बिनुकारन ॥
कारि कटकेस[8] कुमार १ बिंभ २ सिंहन ३ काका बलि[9] ॥
हल्लू १८२।१ सन अरिहोइ कियउ हितमैंहु अहित कलि[10] ॥
जिहिं नप्प१८३।१भीरकारि त्रि३रन जय किय बुंदियबस दुर्गदुव२॥
इहिं लाज मैंहु सज्जित उतहि हितवस काका भीरहुव ॥४३॥

॥ दोहा ॥

मोहि जदपि बरज्यो तुमहु, आयो तदपि उनैंहिं ॥
कछु छत[11] लग्गिय कुमरकैं, सो पै मम सयसैंहि[12] ॥ ४४ ॥
रानकहिय तुम १ खित्तल २ रु, बडगुज्जर १ तुम २ विद्ध ॥
सो दोउन लिन्नीं समुझि, समता नय रन सिद्ध ॥ ४५ ॥
हल्लू १८२।१ ममकाका हनैं१, बिंभ १ रु सिंहन २ बीर ॥
पुरमंडल किय अमल २ पुनि, सु किम बनैं समसीर[13] ॥ ४६ ॥
जैत्र १ भरत२ सुत२ एहु जिम, बिन्नति रचत बहोरि ॥
बालन[14] निजनिज वैरकौं, सो पायन[15] सयजोरि[16] ॥ ४७ ॥

इस प्रकार १कहता हुआ राजा अकेला महाराणा के२डेरों में३गया ४उपालंभों से५रचाहुआ संभाषण हुआ इसने जावदआदि प्रदेश वादशाह६से लिये हैं ॥४२॥ ७सेना ८सेनापति९ फिर१०हित में अहित होकर युद्ध किया ॥४३॥ ११घाव [illegible] १२हाथ से ही ॥४४॥४५॥ १३बराबर का सिझारा (मिलाप) ॥४६॥ अपना अपना वैर१४पीछा लेने को १५ पैरों में१६हाथ जोड़कर बिनती की ॥

॥ षट्पात् ॥

पहु अक्खिय रानप्रति सुनहु जिम मिटत बैर सब ॥
सुतमम लाल १८४।२ सुता सु अप्पँकुमरहिँ दिन्नीँ अब ॥
बैर १ सु इम बीसरहु मन्नि सुलभहि पुरमंडल ॥
हम रोकत हल्लू १८२।१ हि बेग लेहु सु पठाइ बल ॥
रोचक तुम्हैंहु यहरीति तो करहु मेल बाधंक कवन ॥
मिलि माँहिँमाँहिँ अप्पन मरत जत्थँ तत्थ हसिहैँ जवन ॥४८॥
सुनि प्रसन्न सीसोद लाभ नृप कथित मन्निलिय ॥
नव कुंकुमकरि नृपहु कुमर खिँतल तिलकित किय ॥
समय सु ब्याहहु बंदि रु मुरत आयउ पुरमंडल ॥
हल्लू १८२।१ कँहँ कछुकज्ज बोधि लैगो स्वसंग बल ॥
लखि यह बिलंब पुरमंडलहु रान अमल्ल तोलौँ रचिय ॥
दसपुरचमू १ रु जीरनदल २ सुहुर्मन निलय पठाइदिय।४९।

॥ दोहा ॥

बुंदिय रहि कतिअब्दँ बलि, हडनृप सु हम्मीर १८३।१ ॥
बिरत भयो व्यवहारसौं, वसुमति भुग्गत बीर ॥ ५० ॥
बयबिताइ पैंसठि ६५ बरस, बिधिजुत उदित बिबेक ॥
कासीबास बिचारकरि, किय खिल उचित अनेक ॥ ५१ ॥
निज भद्रासन कुमरनिज, बरसिंह१८४।१हिँ बैठारि ॥
नियत बस्यो बारानसी, ध्रुवस्वरूप दृढधारि ॥ ५२ ॥
बरसपच्चासी ८५ भुग्गि बय, पीछैँ अवसिति पाइ ॥

मेरे पुत्र लालसिंह की पुत्री अब १आपके कुमर को दी २रोकनेवाला कौन है ३ जहां तहां यवन हसैंगे ॥४८॥ ४राजा के कहने को ५चेत्रसिंह को तिलकयुक्त किया ६ कहकर. कुछ ७कार्य के लिये समझाकर ८ मन्दसोर की सेना और जीरन की ९सेना को १० उदास करके ११ घर भेजदी ॥ ४९ ॥ १२ वर्ष १३ विरक्त ॥ ५० ॥ १४ ज्ञान उत्पन्न होकर १५ बाकी के कार्य ॥५१॥ १६ काशी में १७ निश्चल रूप को ॥ ५२ ॥ १८ अन्तसमय

कासीही तनु त्यागकिय, सत्यस्वरूप समाइ ॥ ५३ ॥
सक वसु दृग गुन ससि१३२८ समय, भवपायउ इहिं भूप ॥
गुन श्रुति गुन भू१३४३ पर गह्यो, राज्यासन अनुरूप ॥५४॥
वन्हि नंद गुन ससि१३९३ बरस, पुत्रहिं अप्पि नृपत्व ॥
पुरकासी त्रि कु चउ कु१४१३पर, तनुतजि गो मिलि तत्व ॥५५॥
वयपचीस२५ जावत बरस, पट्ट पंचसिख पाइ ॥
हड्डनृपति बरसिंह१८४१२हुव, बुंदिय सुनय बढाइ ॥ ५६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १यणोपञ्चम ५राशौ वीतिहोत्रचरणासि १ बीज्यवर्णानवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितविवरणावेलाऽयाहार्यबुन्दीशहड्डनरेन्द्रहम्मीर १८३१ समयसङ्कतबम्बावदेशहड्डनरेन्द्रहल्लू १८२१चरित्रे तज्जन्म १ राज्य २ शकप्राप्तिसूचन १ भटवर्गत्रयोदश १३ वर्षवयस्कवप्तृवैर विवालपिषुहल्लू १८२१ सप्रसभप्रतिमोटन २ जितनृपत्रय ३ रणाऽष्टक ८ पंचदश १५ वर्षवयस्कहल्लू १८२१ हिंगुलाजगढादिगतदुर्गलय ३ समाक्रमणा ३ सप्तदश १७ समावस्थपरिणीतगौड़ी १कप्रत्यागतहल्लू १८२१ बम्बावदवेष्टकखिञ्चि १ प्रमा-

---

पाकर ॥ ५३ ॥ १ जन्म ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीश नरेन्द्र हम्मीरसिंह के समय के साथ बम्बावदा के हाडों के नरेन्द्र हल्लू के चरित्र में उसके जन्म और राज पाने के सम्वत् की सूचना करना, तेरह वर्ष की अवस्थावाले, और पिता का वैर पीछा लेनेकी इच्छावाले हल्लू को उमरावों के समूह का हठ पूर्वक पीछा फेरना, तीन राजा और आठ युद्धों को जीतकर पन्द्रह वर्ष की अवस्थावाले हल्लू को हिंगलाज आदि गये हुए तीन गढों को लेना, सत्रह वर्ष की अवस्था में गौड़ी को विवाहकर पीछे आयेहुए हल्लू का बम्बावदा को घेरनेवाले खीची और प्रमार शत्रुओं को भगाना, दशमयुद्ध में राणा की सहायक सेना को भगाकर जीरण पुर के राजा प्रामार जैत्रसिंह को मारना, फिर तीन विवाह करके नर

र २ प्रत्यनीकप्रद्रावण ४ दशम १० रणाद्रावितसहायकराणासैन्यजीरणपुरपृथ्वीशप्रामारजैत्रनिपातन५ पुनःप्रणीतपाणिपीड़नत्रय ३ नरपाल १८२।१ सहायजितरणलय ३पल्हायथखिचि १ डोडा २ रिनृपद्वय २ हल्लू १८२।१ पल्हायथ १ सीसवाली २ पुरद्वय २ बुंदीवशीकरण ६ तद्वर्जनप्रतीपराणाहम्मीरस्वसहाययुयुत्सुजीरणपतिसार्थस्वपुत्र १ पितृव्यक २ त्रयप्रधानपृतनाप्रधनार्थप्रेषण ७ स्वपितृव्यकसहायसक्षतीकृतक्षेत्रकुमारबुंदीनरेन्द्रहम्मीर १८३।१ सपाणिपीडस्वपाणित्रकर्तकभानुपुरभूपभरतसेनभ्रंशन ८ वीक्षितबलरामविद्धबुन्दीशसहायत्वल्लू१८२।२ वृहद्गुर्जरबलराम १ विध्वंसन ९ हल्लू १८२।२ स्वानुजलोहराज १८२।३हम्मीर-१८२।४ प्रहारकसिंहण १ विन्ध्यराज २ शीर्षोद्वनिषूदन १० नवरंग १८३।१ राणाभटहूलकलिकर्णकर्तन ११ जितैतच्चतुर्दश १४० युद्धप्रद्रावितशत्रुसैन्यत्रय ३ पञ्चदश १५ प्रधनप्रधानपराक्रमप्राप्तपुरमण्डलाख्यराणापत्तनप्रत्यागतहल्लू १८२।१ प्रापितपाटवहम्मीर-

---

पाल की सहाय होकर तीन युद्ध विजय करके पल्हायथा के खीची और डोड दोनों शत्रु राजाओं को जीतकर हल्लू का पल्हायथा और सीसवाली दोनों पुरों को बुन्दी के वश में करना, उसके मना करने के विरुद्ध राणा हम्मीरसिंह का अपनी सहायता से युद्ध करने की इच्छावाले जीरण के पति के साथ अपने एक पुत्र और दो काका इन तीनों को सेनापति करके युद्ध के अर्थ सेना भेजना, अपने काका के सहाय कुमर क्षेत्रसिंह को घायल करके बुन्दी के राजा हम्मीर का अपने बाहुत्राण को काट कर बाहु को पीड़ा पहुंचानेवाले भानुपुर के राजा भरतसेन को मारना, बलराम से बुन्दी के राजा को घायल किया हुआ देखकर उसके सहायक होकर लल्लू का बडगूजर बलराम को मारना, हल्लू और अपने छोटे भाई लोहराज का हम्मीर पर प्रहार करनेवाले शीशोदिया सिंहण और विन्ध्यराज को मारना, नवरङ्ग का राणा के भट हूल कलिकर्ण को मारना, उस चौदहवें युद्ध में शत्रुओं को जीतकर तीनों सेनाओं को भगाकर पन्द्रहवें युद्ध में अपने पराक्रम की प्रधानता से राणा के मांडल नामक पुर को लेकर पीछे आयेहुए हल्लू का नैरोग्य होने पर हम्मीर (हामा) को बुन्दी भेजना,

१८३।१ बुंदीप्रस्थापन १२ तदनन्तरवैरविस्मारकस्वपौत्रीसम्प्रदा-नीकृतक्षेत्रलकुमारनिस्सारितहल्लू १८२।१ सैन्यशून्यीकृतपुरमगड लहड्डाधिराजहम्मीर १८३।१ दशपुर १ जीरण २ सैन्यसमेतहल्लू ७ ८२।१ कुलनिर्बीजीकर्तुकामप्रस्थितराणाहम्मीरपूतिस्थापन १३ बुन्द्यागतवीतवयस्कगद्दिकोपवेशितबरसिंह १८४।१ कृतकाशिनि-वासभाविसमयप्राप्तावसानहड्डेशहम्मीर १८३।१ जन्म १ राज्य २ प्राप्तिराज्यत्याग ३ तनुत्याग ४ संवत्सूचनं १४ नवमो ९ मयूखः ॥९॥

आदितष्षट्पञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥ १५६ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

दोहा ॥

हल्लू१८२।१ समर चउद्दहम१४, पृतना त्रय३ जयपाइ ॥
अक्षत लखि वपु अप्पनों, घन रिपुजन गन घाइ ॥ १ ॥
रनरन इम अक्षत रहत, बार्द्धक आवत बिक्खि ॥
मनचिंतिय धारा मरन, समर कुभावन सिक्खि ॥ २ ॥

युग्मम् ॥

बैर पराये लैन बदि, जितजित जुज्झनजाइ ॥
भूप नियति निंदतभयो, अक्षत वपु गृहआइ ॥ ३ ॥

जिस पीछे वैर मिटाने के लिये अपनी पोती कुमर क्षेत्रसिंह को देकर हल्लू को सेना सहित निकाल कर मांडल नगर को खाली करके हड्डाधिराज हामा का मन्दसोर और जीरण की सेना सहित हल्लू के कुल को निर्बीज करने की कामना वाले प्रयाण कियेहुए राणा हम्मीरसिंह को पीछा भेजना बुन्दी में आकर अवस्था बीतने पर बरसिंह को गद्दी बैठाकर काशी निवास करके आगे आनेवाले समय में मृत्यु पानेवाले हड्डेश हामा के जन्म, राज्य प्राप्ति, राज्य त्याग और शरीर त्याग करने के सम्वत् की सूचना करने का नवमा ९ मयूख समाप्तहुआ और आदि से १५६ मयूख समाप्त हुए ॥

तीनों १सेनाओं से २ घाव रहित अपना ३शरीर देखकर ॥ १ ॥ ४ बुढापा आताहुआ ५ देखकर ६ युद्ध ॥ २ ॥ ७ भाग्य को ॥ ३ ॥

षट्पात् ॥

गिरिधर नृप गुग्गैर जत्थ हरराज१८१।१ बिवाहिय ॥
सो तोमर धनसाहि*सूनु ×जासन असि साहिय ॥
नरउरके कुम्भनृप लुपत सीमा साहसलगि ॥
आयउ सहबल अतुल ÷ज्वलन अंतर प्रकोपजगि ॥
हल्लू१८२।१ नरिंद सुनतहि हरखि बिनुहिँ[1] निमंत्रन[2] पंच्छबनि ॥
तोमर सहाय कुम्भहिँ तरजि, हुव बिजई प्रतिपंच्छ[3] हनि ॥४ ॥
पहिलैं बंग १७९।१ नृपाल गंजि चाचिक कृपान गहि ॥
भैंसरोरगढ गाहिय द्रोहपावक[4] रैंन १ हिँ दहि१ ॥
रैंनतनय हरि[5]नाम अमर३ चाचिक हरि अंगज ॥
सो प्रसभी[6] इहिसमय सद्धि इक निसफल संगज[7] ॥
सत१००सुभट भिल्ल भट दुवसत२००न दिय निश्रेनिय गढ दुलभ
रोपाल१८२।११तत्थहल्लू१८२।१अनुज लये समुहसूचन समुह॥५॥

दोहा ॥

कलि[8] कटाइ रजपूत कति, ससमर अमर भज्यो सु ॥
सावधान हुवतहि समुह, जय रोपाल १८२।११ भज्योसु ॥६॥

रभज्योसु १ लभज्योसु २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

निंबड़िपति सालक अमर, तिहिँ जुत तस सुधि रक्खि ॥
हल्लू१८२।१ इम रन सत्रहम१७, चाचिककुल गय चक्खि ॥७॥
जब झल्लन जीनोद२ लिय, जुज्झिय दसपुर२ जाइ ॥
उहाँभयो न जय१ न अजय२, इमहु मिलत बिधिआइ॥८॥
हो दहिया हरि नैनवा, भूप अरिहु तसभीर ॥

तँवर धनसाह का*पुत्र×जिस से÷अग्नि बिना१बुलाये२मदत बनके ३ शत्रुओं को मारकर ॥ ४ ॥ ४ द्रोह रूपी अग्नि में रणसिंह को दहनकरके ५हरिसिंह का पुत्र ६ हठी ७ साथी ॥५॥ ८ युद्ध में कितनेही रजपूत कटाकर उस युद्ध से अमरसिंह भगा और रोपाल ने विजय सेवनकिया (पाया) ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

जित्ति उदासीन हि लयो, पद्मनगर नृप बीर ॥ ९ ॥
बुंदियपति हम्मीर१८३।१ तव, पठयो इम लिखि पत्र ॥
काका १८२।१ तुम अरिभीरकिय, अनुचित दोष अमत्र[1] ॥१०॥
पद्मसेन दाहिम सुपहु, नगर[2] नगर[3] निर्दोष ॥
तिहिँ अरिकरि हरि हिततक्यो, पँन्नग[4] भरि पय[5]पोष ॥ ११ ॥

षट्पात् ॥

सुनियह हल्लुव१८२।१ सुपहु पत्र बुंदिय इम पिल्लिय[6] ॥
इतेबरस हम आँजि खेल[7] चाहत जिय खिल्लिय ॥
चउद्दहम १४ रन चंड पिक्खि आवत पलितावलि[8] ॥
असुछंडन[9] आग्रहहि बंधि तिम हय नक्खिय वलि ॥
पिक्खहु भतीज१८३।१ नियति[10] प्रबल इक्क१ हु छत[11] अंगन सफल ॥
तरवारि धार तुट्टन[12] तिमहि बंधिय हम हठि मंत्रबल ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

दैन भीर यातैं दु २ बल, लज्जत जावत लाल ॥
तुमहिं रुची जु न तो तुमहु, क्रमहु[13] निबल अरिकाल ॥ १३ ॥
हम्म १८३।१ कहिय जो यह गहिय, संधा[14] निबलसहाय ॥
निबलभतीजहु सबलसन, आपकरहु जय आय ॥ १४ ॥

॥ षट्पात् ॥

जंपिय हल्लुव१८२।१जुज्झि समर१८१।१ काका अग्रज१८१।१ सह
हम गृहहित हुव हुतहि मिच्छ पावक महंत मह[15] ॥

॥ ९ ॥ वह दोष का १ पात्र है ॥ १० ॥ २ नगर नामक ३ पुर के पति पद्मसिंह, को निर्दोष शत्रु बनाकर हरिसिंह का हित किया सो मानों ४ सर्प को ५ दूध पिलाकर पोषण किया है अर्थात् सर्प को दूध पिलाने से भी विषही उत्पन्न होता है ॥११॥ ६ भेजा ७ युद्ध में ८ श्वेत केशों की पंक्ति आती हुई देखकर ९ प्राण छोडने का १० भाग्य को ११ घाव. तरवार की धारा से १२ मरने का ॥१२॥ १३ चलो ॥१३॥ १४ प्रतिज्ञा. ॥१४॥ बडे १५ उत्सव से,

पुर दिल्लिय निर्भय प्रविसि, आधिपत्य लिय आनि ॥ ५६ ॥

प्रायो मरुदेशीयप्राकृतमिश्रितभाषा ॥

सचरणगद्यम् ॥

इणहीसमय राणाँ लक्खणरो पट्टपकुमार अरिसिंह आखेटमैं रमताँ कोई ग्रामरा परिसरमैं एक चंदाणा जातिरा हळखड़ रजपूतरी पुत्रीनूँ बळमैं अतुळ जाणि प्रसभपूर्वक परणियो ॥

अर केहीदिन उठैही रहि चंदाणी कुमराणीनूँ आधानसहित पिउहर ही मेल्हिआयो पछैं जिण प्रसवरै समय हम्मीरनाम कुमार जणियो ॥

सोतो बाळकथको आपरी मातासमेत पिता१पितामह२रा बुलावणरो अवसर न जाणि नाँनाँरै घरही रहै ॥

अर अठी चित्रकूट चंडासिराज हम्मीर १८१।१रा पुत्र रत्नसिंह १८३।३नूँ सरणाँ राखि राणा लक्खणसिंहरो मन आपरै आथाँण आवता अलावुद्दीन११रा अनीकनूँ चंड चंद्रहास चखावणरी चहै।५७।

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

भूप१८१।१ भरोसाके भटन, इत मंडनगढ आप्पि ॥
आयो बुंदिय रन असह, थिर जय जस जग थप्पि ॥ ५८ ॥
पुव्वहि१८१।१ नृप बुंदीपुरी, विसंतरसह बसवाइ ॥
रक्खी अरि आहव उचित, गुरु[11] प्राकार[12] लगाइ ॥ ५९ ॥
कुमर नप्प१८२।१ कै हुव कुमर, बुंदियपुर इहिं बेर ॥
जग जंपत हम्मीर१८३।१ जिहिं, कहि आकर[13] गुनकेर ॥ ६० ॥
साहगमन चित्तोर सुनि, समरसिंह१८१।७ नरनाह ॥

दिल्ली में आकर १ बादशाहत ले ली ॥५६॥ २ शिकार में किसी ग्राम के ३ समीप की भूमि में ४ अतोल ५ हठ पूर्वक ६ गर्भ ७ स्थान ८ सेना को भयंकर ९ खड्ग ॥ ५७-५८ ॥ १० विस्तार सहित बसाकर ११ बडा १२ कोट बनाकर ॥ ५९ ॥ गुणोंकी १३ खान कह कर ॥ ६०-६१ ॥

पुनि मम सिसुपन पुहवि गई बंबावदके बस ॥
बुंदीकी बिगरी न तदपि हमहुव वर्द्धक[1] तस ॥
रिपुगिनत नप्प१८२स्वसुरहिं तजि रु जुग[2]दिवाइ गढ कारि त्रि३जय
आयो रु बहुरि लखिहौं इमहिं ऐहौंतो लखिहौं न अय ॥१५॥

॥ दोहा ॥

इमहि तुमारो जो अरिहु, लखिहौं निर्बल लाल ॥
तो ऐहौं हुत भीर तस, कटि आसिलौं बनि काल ॥ १६ ॥

॥ षटपात् ॥

ऊनबिंस १९ इम बिजित तुमुल[3] सद्धि रु तदनंतर ॥
अप्प[4] १८२।१ बारहम१८२।१२अनुज बैर बालिय[5] बसुधांबर
देव १८०।१ कुमर जब द्रंग लुंचि[6] मोहिल पट्टनि लिय ॥
सल्ह२ मनोहर १ सूनु आइ लक्खन आराधिय ॥
रक्ख्यो सु रान बग्घोरदै सुत[10] तदीय अब इहिं समय ॥
हम्मीरराज करि दुर्गपति मंडनगढ[11] रक्ख्यो मलय[12] ३ ॥ १७ ॥
हल्लू१८२।१सन बारहम१२लघु सु धोपाल१८२।१२कालवहि
अच्छोटन[13] रस अटत पत्त मंडन गढ पासहि ॥
मलयसिंह मोहिल सु स्वल्प परिकर हह्हहिंसुनि ॥
अग्ग बैर सुधिआनि च्यारिसत ४०० सैबर[14] मुख्य चुनि ॥
क्रम तजि स्वबेस पारिचायक[15] रु भिल्ल निभ[16] सु दुर्गम भिरयो॥
लघुभ्रात यहहु धोपाल१८२।१२लरि खट६घटिका[17] धारन खिरयो॥१८॥

दोहा ॥

उसके १ वढाने वाले २ शुभ भाग्य को नहीं देखूंगा अर्थात् अवश्य आकर मरूंगा ॥ १५ ॥ १६ ॥ ३ युद्ध ४ अपने वारहवें भाई का वैर ५लिया ६ राजा ने. मोहिलों से७ खोसकर. महाराणा ८ गढ लक्ष्मणसिंह की सेवा की ९ बागोर नामक पुर देकर १० उसका पुत्र. ११ मांडलगढ में १२ मलयसिंह को ॥१७॥१३शिकार के१४भील. वह मलयसिंह भी अपनेको१५लखाने.(पहिचानकराने)वाला.ऐसा वेषछोडकरभीलों के१६सदृशछः१७घडीतक॥१८॥

हन्यौं किरात[1]न किरिहनत, परसीमा घोपाल१८२।२ ॥
वत्त मुधा[2] यह किय विदित, सुनिहल्लु१८२।२ नटसाल[4] ॥१९॥
कोपत नृप१८२।१ भिल्लन कहिय, जाइ पिहित[5] करजोरि ॥
मारक सठ मोहिल मलय, हम सिर धरत निहोरि ॥ २० ॥
अन्नसंग घुन घरट[6]इम, जिनहम पीसेजाँहिं ॥
भंजहु तिहिं बग्घोर[7]भिरि, मरैं न मंडल[8]माँहिं ॥ २१ ॥

॥ षट्पात ॥

भिल्लनप्रति नृप१८२।१ भनिय आत मंतु[9] न तुम ओरहु ॥
तो बग्गोरहि ताहि देखि हमलगि द्रुत दोरहु ॥
स्वमरन[10] भिल्लन समुझि मलय मग्गहि दिखाइदिय ॥
संभर१८२।१ झपटि सिचान कुमाय[11] मोहिल कपोतकिय ॥
अजमेरनृपति साजि गोड इस लुट्टन पन मारोट लिय ॥
ताकँहँबचाय हरराज१८२।१सुतकँ[12]लिइकवीसम२१बिजयकिय॥२२॥

॥ दोहा ॥

प्रबल जदपि अजमेरपति, लैनचही लघु[13] लैहि ॥
सो मारोट न धसिसक्यो, हल्लू१८२।१ बिजय यहैहि ॥ २३ ॥
हड्डुनको कुलबारहठ, हुव पहिलैं हरसूर१ ॥
स्यामदास हुव तासुसुत, पाटव गुन१ रन२ पूर ॥ २४ ॥
समरसिंह१८१।७ बुंदिय सुपहु, सो आदर कवि स्याम[14]२ ॥
पुज्जिचरन किय भेट पुनि, गिनि सासन[15] खट६ग्राम ॥ २५ ॥
पुरी बरोदा परगनाँ, काछेला१ जसकाम ॥

१भीलों ने दूसरों की सीमा में२लूवर को मारतेहुए घोपाल को मारडाला हल्लू को४नटसाल(नहीं निकले ऐसा साल)समझकर यह बात ३ झूठ प्रसिद्ध की ॥१९॥५गुप्त ॥२०॥ अन्न के साथ६ चक्की में घुण(जन्तु विशेष)पीसेजावें इस प्रकार७बागोर में युद्ध करके८मांडलगढ में ॥२१॥ तुम्हारी तरफ९ दोष नहीं आता है भीलों ने१०अपना मरना समझकर११माया रहित १२युद्ध ॥२२॥ १३ शीघ्रलेलेवेंगे ॥ २३ ॥ २४ ॥ १४ श्यामदास के १५ सांसण (उदक) ॥ २१॥२६॥

दोडुंदा२हरिनाँ३ विदित,रोसुंदा४ अभिराम ॥ २६ ॥
चंपखेट५ नामक रुचिर, अरुगिंडोली६ अप्पि ॥
अप्प चढायउ स्याम२ इभं, थिरि स्वअंस पयथप्पि ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

स्याम२ तनय सामोर सुकवि लोहठ३ अभिधाँसह ॥
हल्लू१८२।१ जय चउदसम१४ विरुद्द वरानिय महंतमह ॥
सु निज काव्य सुनि सत्य अष्ठ८ निवसंथ नृप१८२।१ अप्पिय ॥
अयुत१०००० दम्म आभरन२ सगँय३ हय४ सिर्चय५ सप्पिय ॥
पुनि कहिय अप्प लोहठ३ निपुन करहु इक्क१ उपकार कवि॥
चिरंतैं चहंत हम रनभरन छतंहु तदपि लगि दै न छवि ॥२८॥

॥ दोहा ॥

यातैं तुम चहि हित अटंहु, धरनि पग्घ मम धारि ॥
रुठ्ठावंहु करि नृपन रिपु, अनंत याहि उच्चारि॥२९ ॥
कवि यहसुनि हल्लू१८२।१कथित, लोहठ३ विचरन लग्गि ॥
विकस्वतंहुव भूपन वहुन, असह लगावन अंग्गि ॥ ३० ॥

॥ षट्पात् ॥

मंडोउर जिंहिसमय राज्य धारत अधर्मरत ॥
हम्मीर१ सु प्रतिहार महामहिपँन निलज्जमत ॥
हुव बुंदिय हम्मीर१८३।१ सु पहु ताको यह सालक ॥
विदित कुमर वरसिंह१८४।२को सु मातुल सुखकालक ॥

१चम्पाखेड़ा २हाथी पर ३ अपने कन्धे पर पैर दिलाकर॥ २७॥ लोहठ ४नामक सामोर शाखा के चारण ने ५ बडे उत्साह से ६ ग्राम ७ हाथी सहित ८ घर ९ बहुत समय से १० घाव भी ॥ २८ ॥ पृथ्वी में ११ फिरो मेरी १२ पगड़ी धारण करके १३ क्रोध कराओ इस पगड़ी को १४ अनम्र (नहीं झुकने वाली) कहकर ॥ २९ ॥ १५ देखताहुआ १६ अग्नि ॥ ३० ॥ बडे १७ राजाओं में १८ साला१९ मामा२० काले मुखवाला

इक विप्र द्विरागमन करि उहाँ लैजावत तिय अति ललित ॥
लंपट विनके प्रतिहार लखि जुहु छिन्निय दर्पक ज्वलित ॥३१॥
दिनदस१० लंघित द्विजहि नदिय पामर जब नारिय ॥
आय विफल अजमेर १ पुनि सु चित्तोर२ पुकारिय ॥
ईडर३ दसपुर४ इम अवंति५ नरउर६ पट्टनि७ अरु ॥
दिल्लिय८लग करि शोर मलिन किन्नैं मरुप१ रु मरु२ ॥
भेरि१ न निर्नाद डिंडिम२ भनिति तस पुकार न सुनिय तबहि॥
पुनि आइ कुपित मंडपपुरसु द्विज मृत हुव इम देहदहि ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

कुपित अनेक अकजकरि, मद्यपानजुत मूढ ॥
हुव जननी१ गोजुग२ सहित, इमसु अग्गि आरूढ ॥ ३३ ॥
उनदिवसन लोहठ३ अटत, पुर मंडोउर पत्त ॥
अल्प अहनके अंतरहि, तिहिं बुल्ल्यो कवि तत्त ॥ ३४ ॥

॥ षट्पात् ॥

कवि करि हल्लुव१८२११ कथितैं कहिय दिय पट धावक कहँ ॥
पटनमँहु इक१पग्ग प्रनंत होवत सु न मोपहँ ॥
पग्घैं इतर परंतु विदित हल्लु१८२११ सिरकी वहु ॥
सुर१ द्विज२ कवि३ विनु सवन प्रनंति नकरैं जोपै पहु ॥

स्त्री का १ गौना करके २सुन्दर स्त्री को ३ नकटे ने ४ कामदेव से जलतेहुए ने ॥ ३१ ॥ उस५नीचने ६ मारवाड़ के राजा को और ७ मारवाड़ को. नगारों की ८ आवाज में जिस प्रकार डिमडिमी के ९ शब्द को कोई नहीं सुनता तिस प्रकार उसकी पुकार को किसीने नहीं सुनी ॥३२॥ माता और दो गौओं सहित वह ब्राह्मण१० अग्नि में जलगया ॥३३॥११गया. थोड़े १२दिन पीछे १३ तहाँ॥३४॥ हल्लू का १४कहना करके कहा कि वस्त्र,धोबी को देदिये हैं, वस्त्रों में एक पगड़ी है सो मुझसे १५ झुका ही नहीं जाता अर्थात् उस पगड़ी को रखकर मैं किसीको झुक नहीं सकता. पगड़ियां १६ और भी बहुत हैं परन्तु वे सब प्रसिद्ध हल्लू के मस्तक की हैं सो १७ देवता १८ ब्राह्मण और १९चारणों के विना दूसरों से २१ राजा होवें तोभी नहीं २०नमतीं

ध्रुव कल्हि पग्घ अहैं सु धरिअहौं अरु मिलिहैं उभयर ॥
जानतो त्वरा तोमैं जबहु देतो पग्घ न विदितदंय ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

तुमकिन्नी ईततांहि तो, मंतु छमहु महिपाल ॥
लै वह पग्घ रु कल्हि लहुं, अहौंधारि उत्ताल ॥ ३६
जाचक मैं भूपति जनन, सो आऊं न समाज ॥
यामैं हल्लुव१८२।१ पग्घ अरि, अपंहु दिखावत आज ॥ ३७ ॥
हल्लू१८२।१ सवपट देत हम, लई पग्घ निहारि ॥
अक्खिय क्यों न मिली यहै, पटगन मुख्य पुकारि ॥ ३८ ॥
हल्लू१८२।१ आक्खिय ब्रत हमहिं, व्याहव मरन उमाहि ॥
पग्घ न मम होवत प्रनत, यह साहस दृढ आंहि ॥ ३९ ॥
बुल्ल्यो मैं पग्घैं बहुत, न बहुत तोहु नरेसं ॥
नमिहौं धारत ओर निज, अनंतै पग्घ करि एस ॥ ४० ॥
तवहि रीझि हरराज१८१।१ सुत, बसंन सकल बहुवेर ॥
पग्घनजुत दिन्नैं प्रथितं, जे होत न कहु जेर ॥ ४१ ॥

षट्पात् ॥

कंर्णाकरि सु कविकथित कुहकं हम्मीरं कहाई ॥
हल्लू१८२।१ पग्घहि धरहु आहु रक्खहिं अधिकाई ॥
प्रथम सु कवि तिम पुज्य१पग्घ हल्लुव१८२।१धूर्तं धरि पुनि२ ॥
न नमहु मिलहु निसंक सुजस हल्लन रक्ख्योसुनि ॥

---

१ शीघ्रता जानता तो २ हे प्रसिद्ध दयावान् ॥३५॥ ३ जल्दी ही की है तो ४ अपराध माफ करना ५ शीघ्र ६ शीघ्रता से ॥ ३६ ॥ तुमको ७ मूर्ख दिखाती है ॥ ३७ ॥ ८ वस्त्रों में मुख्य कहकर ॥ ३८ ॥ हल्लू ने कहा कि युद्ध में मरने के उत्साह से मेरा नियम है कि मेरी पगड़ी किसीसे झुकती नहीं यह दृढ हठ ९ है ॥ ३९ ॥ १० हे राजा इस पगड़ी को ११ अनम्र करके ॥ ४० ॥ बहुत १२ वस्त्र १३ प्रसिद्ध ॥ ४१ ॥ १४ सुनकर वचन १५ जालसाज. हल्लू की १६ धारण कीहुई

जंपत यहैसु परिकर जनन बरज्यो कहि हितहेरि बलि ॥
ननकरहु पग्घ अपमान नृप कवि तो वुल्लहु टारि केलि ।४२।

दोहा ॥

तुमकरिहो अपमानतो, सो हल्लू१८२।१ दृढसंध ॥
जोरनपतिसे भंजि जिहिं, गंजे गढ बलबंध ॥ ४३ ॥
जानत सब्बहु निबल जो, भिरनहोत तसभीर ॥
वैरपराये लेत वढि, धरि लै सु न सुनिधीर ॥ ४४ ॥
भगिनी जेठी भावती१८३।१, कुंदीनृपति बिबाहि ॥
भाम हम्म१८३।१ तुमरेभये, ते भंजिहैं रिपुताहि ॥ ४५ ॥
तुमसौं हुत सालत्व तजि, हल्लू१८२।१ सहचर व्हैहि ॥
इक्कलही हल्लू१८२।१ यहै, लरि जित्ति रु भुवलैहि ॥ ४६ ॥
तिनहिं कहिय हम्मीर तब, छिति ममहल्लू१८२।१ छुत्त ॥
जिती व्है सु अप्पौं छिजन, व्हैन तदपि मम हुत्त ॥ ४७ ॥
मोसौं संकिय रानखुंब, विप्रपुकार पचाइ ॥
बंवावदपति वप्पुरो, आजि रचहिं किन आइ ॥ ४८ ॥

षट्पात् ॥

सुतको यहहठ सुनत नृपसु जननी हु निवारिय ॥
तदपि महाजड़ तत्थ हड्ड चारन हक्कारिय ॥
लिय जताइ पहिलेंहि मिलहु अनतेंहि हम मन्निय ॥
मिलि लोहठसन तिम्महि कपट गौरव आदरकिय ॥
वैठि रु तदीयँ जस काव्यवदि बिरदायउ प्रतिहार पहु ॥

१ परगढ़ के लोगों ने २ युद्ध को पचाकर ॥ ४२ ॥ दृढ ३ प्रतिज्ञावाला ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४ बहिनोई. वे शत्रुता को ५ धारण करेंगे ॥ ४५ ॥ तुमसे ६ शीघ्र लालापन छोडकर. हल्लू का ७ साथी होवेगा ॥ ४६ ॥ मेरी जितनी जमीन को हल्लू ८ स्पर्श करेगा; अथवा मेरी जितनी जमीन पर हल्लू की छाया पड़ेगी युद्ध में नहीं ९ माराजाऊं तो ॥ ४७ ॥ १० आदि ११ विचारा (बापड़ा) १२ युद्ध ॥ ४८ ॥ १३ बुलाया १४ बिना नमस्कार कियेही १५ उसका

सहकपट[1] रीझि हम्मीर सठ ललित[2] दिन्न सिरुपाव लहुँ[3] ॥४९॥
हत्थजोरि प्रतिहार कहिय सबकै समान कवि ॥
धरहु ममहु परिधान[4] जदपि सुलभ रु भजैंन[5] छवि ॥
लोहठ सु सुनि सलज्ज कुड्यंअंतर[6] धारनकिय ॥
पटउतारि पहिले रु दासँ[7]निजकर असेस[8] दिय ॥
बैठो सु आइ परिखद[9] तबहि सठ पिक्खनमिंस[10] दाससन ॥
मंगाइ पग्घ मंडलै[11] सिर सु कहिय खिजिबंधन कुजन[12] ॥५०॥

दोहा ॥

कोऊ तँहँ सु सक्यो न करि, जमसम हड्डन जानि ॥
कवि पिक्खत तब निजकरन, किय सठ सुहि तजिकानि ॥५१॥
खुल्लि सभा निजबैनकरि, स्वान सु गहि सयँसंधि[13] ॥
अतिमद हल्लू१८२११ पग्घवह, बालिसँ[14] तस दिय बंधि ॥५२॥

षट्पात् ॥

लोहठकवि यहलखत कह्हि कट्टार निसितँ[15] कर ॥
लग्गिय मरन अलुद्ध[16] लियसु पकराइ खिज्जि खर[17] ॥
कहिय कैद जो करहिं ततो यहवत्त[18] दृष्टतव ॥
कवन हड्डसन कहहिँ जाइ रुड्डाइ बडेजव[19] ॥
इम तजत तोहि जावहु अरहि कहि इम दियउ बिडारि[21] कवि ॥
गृह तब यहैहु लंघित[22] गयउ छलि ठग छिन्नैं[23] बनिकँ[24] छवि ॥५३॥

दोहा ॥

१कपट सहित २ सुन्दर ३ शीघ्र ॥४९॥ ४ वस्त्र ५ शोभा नहीं देते हैं तो भी ६ दीवार की आड में अपने ७ सेवक के हाथ में ८ सब ९ सभा में देखने के १० मिस से सेवक से मंगवाकर उस ११खोटे मनुष्य ने क्रोध करके कहा कि ११कुत्ते के मस्तक पर बांध दो ॥ ५० ॥ ५१ ॥ अपने १३ हाथ से. उस१४ मूर्ख ने ॥५२॥ १५ तीखा १६ निर्लोभी १७ गधे ने. यह१८ वार्ता तेरी देखीहुई है. पड़े १९ वेग से २० शीघ्र ही. कवि को २१निकाल दिया २२लंघन करता हुआ धन २३ छिपाये हुए २४ बनिये की भांति ॥ ५३ ॥

मंडपपुर बहुरिहु मरत, निजन दयो सु निवारि ॥
मैंजानत मरत न मुरत, नियत सती जिम नारि ॥ ५४ ॥
अनसन लोहठ आत इम, सुनि अजमेर अधीस ॥
मिलिसम्मुह लावनलग्यो, सो न मुर्यो हठसीस ॥ ५५ ॥
बेतनवस अनुचर बहुत, हे तिन मग्गबिहाइ ॥
बंबावद छन्नैं प्रबिसि, अप्प दुर्यो गृह आइ ॥ ५६ ॥
आवन पुब्बहि नृप यहै, बिदित लई सुनि बत्त ॥
पै आयउ पच्छन्न कवि, जानिसक्यो सु न जत्त ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम ५राशौ वीतिहोत्रचण्डासि १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्याऽनुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुंदीशहम्मीर १८२।१ चरित्रसमानसमयकबम्बावदेशहारराजिहल्लू १८२।१चरित्रे जितचतुर्दश १४ महारणसैन्यत्रय ३ वीक्षितविक्षतवपुष्कवृद्धवार्द्धकागमप्रतिज्ञातरणमरणनिजजनकश्यालकगुग्गौराख्यनगरनरेन्द्रस्वल्पबलतोमरगिरिधरसहायीभूतहड्डाधिराजहल्लू १८२।१ षोडश १६ समरनलपुरनरेन्द्रकूर्मपराजयन १सप्तदश१७सङ्गरमहिषदुर्गरक्षकसानुजरोपाल १८२। ११ पराजितदुर्गरक्षकलुनिम्बडीनगरनृपश्यालकचाचि

१अपने लोगों ने. ग्रन्थकर्ता(सूर्यमल्ल)कहते हैं कि मेरी समझ में मरनेवाला पुरुष २निश्चय ही सती होनेवाली स्त्री के समान रोकने से नहीं रुकता ॥ ५४ ॥ ३ निराहार ॥ ५५ ॥ ४ तनखाह के कारण ५ मार्ग में छोड़कर ॥ ५६ ॥ ५७ ।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पांचवें राशि में अग्निवंशी चहुवाण के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की कथा चलाने के समय के वचनों में बुन्दीपति हम्मीर के चरित्र के समान समयवाले बम्बावदा के पति हरराज के पुत्र हल्लू के चरित्र में चौदहवें बड़े युद्ध में तीन सेना को जीत कर अपने शरीर को घाव सहित देख और बुढापे का आगमन जान कर युद्ध में मरने के लिये अपने पिता के साले, थोड़े बलवाले, गुग्गौर नामक नगर के राजा तोमर गिरधर का सहायक होकर हड्डाधिराज हल्लू का सोलहवें युद्ध में नरवरके कछवाहे राजा का पराजय करना, सत्रहवें युद्ध में भैंसरोड़

काऽमर १ सजामिप २ संहरण २ तदनन्तराऽष्टादश १८ रणप्र त्याक्रान्तजिन्नोदपुरदशपुरनरेन्द्रयोत्स्यमानहल्लू १८२।१ जया १ जया २ प्रापण ३ तथैकोनविंशति १९ तमसमाघातस्वसपत्नलो चनपुरनरेशदभिकहरिसिंहसहायनगरनामनगरनृपदाधिमपद्मसेनप राजयन ४ तत्कारणबुन्दीन्द्रहम्मीरो १८३।१पालब्धहल्लू १८२।१ प्रेषितप्रत्युत्तरस्वप्रतिज्ञाप्रख्यापन ५ विंशतितम २० युद्धस्वानुजघो पाल १८२।१२ संहारकव्याघ्रपुरप्रमाडनदुर्गरक्षकराणासामन्तमोहि लमलयसिंहनिपातन ६ तथैकविंशतितम २१ संख्याजमेरपुरपा र्थिवगौड़प्रतिप्रस्थापनप्रगल्भहल्लू १८२।१ मारोटपुररक्षण ७ पूर्व कालबुंदीनृपसमरसिंह १९१।७ पौराणिकहरसूर १ सूनुश्यामदा सा २र्थसासिन्धुर १ गिराडोली २ प्रभृतिग्रामचतुष्क ४ वितरण विख्यापन ८ वर्णितस्वचतुर्दश १४ विजयविरुदश्यामदास २ सूनु लोहठा ३ र्थमुद्रा १ भूषण २ गज ३ हय४वस्त्र ५ सहितसगौरव ६ ग्रामाऽष्टक ८ समर्पण ९ तदनंतरमृधमुमूर्षुहल्लू१८२।१ राजक

गढ के रक्षक अपने छोटे भाई घोपाल से पराजित उस दुर्ग पर चढने की इच्छा वाले निम्बडी नगरके राजाके साला चाचिक अमरसिंह को बहिनोई सहित मारना, जिस पीछे अठारहवें युद्ध में घेरेहुए जिन्नोदपुर और मन्दसोर पुर के राजाओंसे युद्ध करनेमें हल्लू की जय अजयका प्राप्त न होना, तथा उन्नीसवें युद्ध में अपने शत्रु नैणवा पुर के राजा दहिया हरिसिंह की सहाय होकर नगर नामक नगर के राजा दाहिमा पद्मसेन का पराजय करना, इस कारण से बुन्दी के राजा हम्मीर के उपालम्भ देने पर हल्लू का उत्तर भेजने में अपनी प्रतिज्ञा को प्रसिद्ध करना, बीसवें युद्ध में अपने छोटे भाई घोपाल को मारनेवाला महाराणाका उमराव बाघोरपुर का मोहिल मलयसिंह जो मांडलगढ का किलेदार था उसको मारना, तथा इक्कीसवें युद्ध में अजमेर पुर के राजा गौड़ के प्रस्थान में प्रगल्भ हल्लू का मारोठ पुरकी रक्षा करना, पहले समयमें बुन्दी के राजा समरसिंह का चारण हरसूर के पुत्र श्यामदास के अर्थ हाथी सहित गींडोली आदि चार ग्राम देने की प्रसिद्धि करना, अपनी चौदहवीं विजय का यश वर्णन करने पर श्यामदास के पुत्र लोहठके अर्थ रुपये, भूषण, हाथी,

रिपूकरणनिमित्तशिक्षितस्वोष्णीषानमककविलोहठ ३ प्रतिराजधानीप्रेषण १० मण्डपपुरपृथ्वीशप्रतिहारहम्मीरसमात्तस्वनववधूकप्रतिराज्यपूत्कृतिमोघताविमनस्कपुनरागतपीतापेय १ खादिताखाद्य २ स्वसावित्रि १ सुरभियुग २।३ सहितविप्रविशेषवैश्वानरविशन ११ स्वप्रसू १ परिकर २ प्रतिषेधप्रतीपमण्डपपुरराजस्वपुरसमागतकौहक्यपचांतहल्लू १८२।१ष्णीषानमनभावप्रासभ्यप्रबोधितकविलोहठ स्वसमज्ज्यासमाकारण १२ श्रुततत्प्रणीतस्वकाव्यकैतवकलितप्रासन्न्यपरिधापितस्वदत्तसर्वपटहम्मीरवीक्षणव्याजसमानायिततदुत्तारितहल्लू १८२।१ दत्तपूर्वोष्णीपश्वानाशिरोवेष्टन १३ बलात्कारवारितमुमूर्षणनगरीनिस्सारितागच्छन्नुपेक्षिताऽजमेरनरेन्द्रनाहरलोहठप्रच्छन्नबम्बावदविशनं १५ दशमो १० मयूखः ॥१०॥

आदितस्सप्तपञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥१५७॥

घोड़े और वस्त्र सहित बड़प्पन के साथ आठ गाम देना, जिस पीछे युद्ध में मरने की इच्छावाले हल्लू का राजाओं को शत्रुबनाने के निमित्त अपनी पगड़ी को अनमनीय होने की शिक्षा करके कवि लोहठ को राजधानियों में भेजना, मंडोवर पुर के राजा प्रतिहार हम्मीर के अपनी नवीन स्त्री को छीन लेने से प्रत्येकराजाओं के आगे कीहुई अपनी पुकार निष्फल होने से उदास होकर पीछा आकर नहीं पीने की वस्तु को पीकर और नहीं खाने की वस्तु को खाकर अपनी माता और दो गउओं सहित किसी ब्राह्मण का अग्नि में प्रवेश करना, अपनी माता और परगह के लोगों के मना करने से विरुद्ध मंडोवर के राजा का अपने नगर में आयेहुए कपट रहित, हल्लू की पगड़ी को नहीं झुकाने का हठ प्रबोध कराने वाले कवि लोहठ को अपनी सभा में बुलाना, उस के बनायेहुए अपने काव्य को सुनकर छली हम्मीरसिंह का प्रसन्नता से दियेहुए अपने सरोपाव के वस्त्रों को पहनाकर उसकी उतारीहुई हल्लू की पहले दीहुई पगड़ी को देखने के मिस से मंगाकर उसे के मस्तक पर बांधना, मरने की इच्छावाले लोहठ को बलपूर्वक रोककर नगरी से निकालेहुए लोहठ का अजमेर के राजा नाहर को छोड़कर छाने बम्बावदा में प्रवेश करने का दसवां मयूख समाप्तहुआ ॥१०॥ और आदि से एक सौ सत्तावन मयूख हुए ॥

सज्जे बुंदिय दुर्गसह, सत्तहसहँस१७००० सिपाह ॥ ६१ ॥
मंडनगढ पुनि मुक्कलिय, सहँससत्त७००० दल सज्जि ॥
रुपि अप्पन बुंदियरह्यो, गिरि सइंद१गति गज्जि ॥ ६२ ॥
पठयो दिल्लिय पुव्वही, कन्ह सचिव कायत्थ ॥
साह सु इत पाटव२ समय, पहुँच्यो वासवपत्थ३ ॥ ६३ ॥
जियत साँदि सतपंच५०० जुत, देखि अलावुद्दीन११ ॥
सब सुरि प्रकृति भतीजसन, हुव याकेहि अधीन ॥ ६४ ॥
कीलि भतीजहिं कुलकरन, तस संगिन सिरतोरि ॥
पट्ट अलावुद्दीन११ पहु, वैठो अभय वहोरि ॥ ६५ ॥
पुव्वहि कछु दल पिल्लयो, महि लुट्टन मेवार ॥
चित्तोरहिं जित्तन चल्यो, अब अप्पहिं कलिकार ॥ ६६ ॥
लक्खेरिय दर लंघिकैं, अप्पन सीमा आत ॥
उहाँ सालिवाहन१८।१२ अनुज, भेज्यो सम्मुह भ्रात ॥ ६७ ॥
गज इक नाम सु घनगरज, तिम चउ४ खास तुरंग ॥
उपदामँ पठये इते, सोदर१८।१२ अप्पन संग ॥ ६८ ॥
अति ढिग आवत अप्प१८।७ हू, पेयं१ खाद्यं२ करि पेस ॥
गुनआश्रय६ गहि साहसन, आयो मिलि पटु एस ॥ ६९ ॥

पर्वत में १ सिंह के समान गर्जना करके ॥ ६२ ॥ बादशाह की २ नैरोग्यता के समय में ३ दिल्ली गया ॥ ६३ ॥ अलाउद्दीन को पांच सौ ४ सवारों सहित जीवित देख कर उसके भतीजे सुलेमान को छोड कर ५ वजीर आदि राज्य के सब अंग अलाउद्दीन के आधीन होगये ॥ ६४ ॥ ६ कैद करके अपने कुल में होने के ७कारण उसको मारा नहीं, और उसके साथियों के सिर तुड़वाकर अलाउद्दीन फिर पाट बैठा ॥ ६५ ॥ मेवाड़ की भूमि लूटने को कुछ सेना तो पहिले ही भेजी थी ८ युद्ध करनेवाला ॥ ६६ ॥ लाखेरी के दरे को लांघकर बुंदी की सीमा में आते ही शालिवाहन नामक छोटे भाई को राजा ने बादशाह की पेशवाई को भेजा ॥ ६७ ॥ ९ नजराने में अपने १०सगे भाई के साथ॥६८॥ बादशाह के अत्यंत समीप आने पर बुंदी का राजा स्वयं नरसिंह भी ११ पीने के १२ खाने के पदार्थ नजर करके नीति का छठा गुण(आश्रय)ग्रहण करके वह चतुर, बादशाह से मिलकर आया ।६९।

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुकवि सु जब आयोसुन्यौं, अनसन* जलआधार ॥
तबहि जाइ हल्लू१८२।१ तँहँ रु, दिय बिस्वास उदार ॥ १ ॥
कहिय तज्यो क्यौं अन्न कवि, कथित किंयउ सबकास ॥
तुमपठये दृढमंत्रि तब, यहहि करन अभिराम ॥ २ ॥
अनंत पग्घ सुनि कवि कहिय, लेतो लरन बुलाइ१ ॥
तुमहिं निंदतो२ बात बहु, होतो सागैस हाइ ॥ ३ ॥
पै नवपट पहिरायकैं, इक्खनमिस करि अग्घ ॥
पांमॅर किय मंडल कॅं परं, प्रभुसिरकी वह पग्घ ॥ ४ ॥
नतो अनत सुनि पग्घ निज, कहतो हल्लुव१८२।१ कोन ॥
जो बल तो आवहु जुरन, हम रिपु सम्मुह होन ॥ ५ ॥
गो पहिलैं चित्तोरगढ, रानहु तँहँ पनरक्खि ॥
पग्घ नमतं जो रजकँ पँहँ, आवहु सुहि धरि अक्खि ॥ ६ ॥
एह पंच ५ दिन लखि रहिय, मैं तब कहिय महीस ॥
नमतपग्घ सो अब निकट, सभा उचित रहि सीस ॥ ७ ॥

युग्मम् ॥

है निदेस आऊँ जबहिँ, जानि रान हसि जोहु ॥
बुल्ल्यो अनत जु पग्घ बर, सर्पग दिखावहु सोहु ॥ ८ ॥
नमन पग्घ धरि सीस निज, पग्घ यहहु करि पांनि ॥
रानसभा जाइ रु कहिय, इक्खहु यह दिय आनि ॥ ९ ॥
रानकहिय जउ कविसिरहिं, पूनतकरैं सहपग्घ ॥

*निराहार. मेरे १कहने से ॥२॥२अनअ२दोषी॥३॥४नीच ने कुत्ते के ५मस्तक पर ॥४–५॥जिस पगड़ी को रखकर ६नमते हो सो७धोबी के पास है तो वह पगड़ी आवे तब धरकर आना ॥६॥७॥८ हाथ में लेकर हमको दिखाना ॥८॥ ९नमने वाली पगड़ी अपने मस्तक पर रख और इस पगड़ी को १० हाथ में लेकर ॥९॥

जाकीपग्घ करैं न जिहिं, यह अचिज्ज हितअग्घ ॥ १० ॥
सहठ नमावत कविसिरहिं, मूढ सु मोघ महीस ॥
पग्घहुको तब अनलपन, व्है जब हल्लू१८२।१ सीस ॥ ११ ॥
जोरि त्रुटित नृप हम्म१८३।१ जब, कुंमरकनी किय दैन ॥
अनतभाव गो कित उहाँ, अब जो धारत ऐन ॥ १२ ॥
बदि इम दै समुचित बिदा, मैं किय रान समाज ॥
इम अवंति१ अजमेर२ मुख, इक्खे कति अधिराज ॥१३॥
जावत पट्टनि मैं जबहिं, पुरमंडोउर पत्त ॥
अनुचित तहँ प्रतिहार यह, रचिय विप्रवध रत्त ॥१४॥
अक्खिय अब हल्लू१८२।१ अवनि, जो मम छुवहिं जितीक ॥
सेवित रहिं विप्रन सहज, सीमाँ करहिं समीक ॥१५॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

कविकों असन कराइ, हल्लू १८२।१ अक्खिय सह सपथ ॥
जुद्ध मरहिं१ कै जाइ, कै मंडोउर निजकरहिं२॥१६॥

॥ षट्पात् ॥

जुतलोहठ यह जंपि आइ हल्लुव१८२।१ निजआलय ॥
भाखिय ममबय भटन मरन हुवसमय मनोमय ॥
लहिहैं मृत१ दिवलाभ अमृत२रहिहैं मंडोउर ॥
बंबावदभुव बिलसि धरहु अब पुत्र राज्यधुर ॥
कहि इम रु चंद्र१८३।१जेठोकुमर चेच१८३।१हु जिहिं मागध चवत॥
दै ताहि राज्यगद्दिय विदित भरन किन्न चहुवानमत ॥१७॥

दोहा ॥

।१०। १ निरथक. पगड़ी का २अनअपन हल्लूके मस्तक पर होवे तब है॥ ११ ॥तूटी हुई बात को जोड़कर हाम्मा ने जब अपने ३कुंमर की कन्या देनी की तब वह अनअपन कहां गया था जो अब अपने ४घर में धारण करता है॥१२॥१३॥१४॥ ५पृथ्वी को ॥ १५ ॥ १६ ॥ ६ मन माफिक(चाहाहुआ) ७जीवित रहेंगे तो ॥ १७ ॥

वयजुव्वन सुभटन वरजि, समवय वृद्ध सिपाह ॥
करिइक्कत रक्खन कहिय, चिन्ह मरन रनचाह ॥१८॥
अजिरकुंड अक्खिय उनहु, रक्खहु घुसृन घुराइ ॥
जिहिंमरनों निजवस्त्र जुहि, अकथित बोरहिं आइ ॥१९॥
वरसतीस३० अतिगत वय सु, बोरहुपट यहबैन ॥
नृपकोसुनि लघुवय भटन, उर हुव असह अचैन ॥२०॥

प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सचरणागद्यम् ॥

आपरा अजेयँ वीराँरो इसड़ो अभीष्टजाणिकुंकुमरो कुंड घुळाइ हाडांरो अधीस हालू १८२११ बासठि ६२ वर्षरावयमैं पहली आपरावस्त्राँरै बोळ दिवाइ उर्वसीरोवींदबणियो ॥

जिकणारै साथ तीस ३० वर्षरावयथी विसेस हूँता जिकाँ पंचसत ५०० सुभटाँ केसरराकुंडमैं वस्त्र बोळिया जठै हालू १८२११ रा अनुज रोपाल १८२११रीपत्नी आपराकांतनूँ इणरीति भणियो ॥

अवळारै एकपतिही परमेश्वरकहीजै जिकाँरोदरसणकरिजीजै तिकाँ आप मरणाही आसंगियो तो मोनूँ आपरैहीआगैं काँचढाइ पधारो ॥

अर जीवणारी आसव्हेतो मरणीकहुवा सत्यसंध अग्रजरै साथ नावणारी नधारो ॥२१॥

आपरी अंगनारो इसड़ो अभिमत जाणिरोपाळ १८२११ काकरा दा दामाँरीदुहिता सुगुणा १८२११ नाम इसड़ी आपरी पत्नीनूँ

॥ १८ ॥ १ अखाड़े के कुण्ड में २ केसर घुलवाकर ३ बिना कहे डुबोओ ।१९। तीस वर्ष से४ ऊपर की अवस्थावाले ॥ २० ॥ ५ विजय करने में नहीं आवैं ऐसे ६ केसर का ७ डोब ८ डुबोये ९ पति को१०कहा ११सत्य प्रतिज्ञा वाले । २१ ॥ १२ सम्मत (विचार) १३ पुत्री

आपरै आलयही काठाँचढाइ बम्बावदैआइ अग्रजरोसाथकीधो ॥

सो जाणि हालू१८२।१ नरेंद्रभी पावकमैं पत्नीरो पहिलीप्रवेस प्रमाणाथी विरुद्ध बिचारि आपराअनुजनूँ उपालम्भ² दीधो ॥

कहियो रणारो मरणातो देवरै अनुकूलहुवाँ होइ जिको नवणा-सीतो संसारनूँ मुखदिखावणाजिसड़ो रहसीनहीं ॥

अर वेदहूँ बहिर्गत³ बातवणाइ पतिव्रतापत्नीनूँ पहली प्रज्वाळ णरी प्रसंसा कोईभी कहसीनहीं ॥२२॥

दोहा

नीँचा तदि कीधा नयण, पाइ त्रपा⁴ रोपाळ१८२।११ ॥
इम सजियो हालू१८२।१ अनंड⁵, कजियोरचण⁶ कराळ॥ २३॥
वरसपचासाँ५० हेठ वय, वीसीसात१४० प्रवीर ॥
अड्डारहवीसी३६० अधिक, खुररण⁷ खंचण धीर ॥ २४ ॥
पट कुंकुम सतपंच५०० ही, इमकरि गरक उदार ॥
हुवाबराती सेहरो, हालू१८२।१ रक्खणाहार ॥२५॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

प्रस्थानरैप्रथम बारहठ लोहठ नरेसनूँ कहियो मंडोवररैअधीस हम्मीरपढिहार आपणा चरण⁸ चंपैजतरी जमीं द्विजाँनूँ देणकही जिणकारण इसड़ैतोर चालियोतो पढिहार केहीपीढियाँथी धन्व⁹-धरारोप्रांत पाइ प्रगल्भ वणिबैठा जिणथी आहवरोआरंभ उरैंही पावसी ॥

अर मंडोवररा राजमार्गमैं पूगाँ प्राण१ पुंड्ळाँ२¹⁰ रै वियोगवाँतो द्विजाँरैअर्थ दुर्जनरा द्रंगराँ¹¹ दानमैं प्रसभपूर्वक प्रभुरोही पुरापरूटाव-सी ॥ २६ ॥

---

१ जलाकर २ उरहना(ओलम्भा) वेद के ३ बाहिर ॥ २२ ॥ ४ लज्जा ५ अनम्र ६ युद्ध ॥ २३ ॥ २४ ॥ ७ खोड़ ॥ २५ ॥ पैरों ८ नीचे आवे जितनी जमीन ९ मारवाड़ का देश. प्राण और १० शरीरों के ११ नगर के देने में ॥ २६ ॥

हाल्लू१८२।१ कहियो मंडोउर पूगियाँभी डूंगरोदेवोतो इंदुरा[1] आदानं[2] अर्थ ऊंचो कर कीधा सावकाँरा[3] संकल्परैसमान मोघजाणों[4] ॥

अर बिप्र वळियो तिणरी लज्जारो लेसभी न पायो जिणथी आणहीण[5] पामर प्रतिहाररो प्राणमैं प्रियत्व[6]ही प्रमाणों ॥

तोभी मंडोउर पूगि मराँतो रंकरै राजराखणमैं आपरोही आसानरहै ॥

अरु मरुमहीरो महीपपणों पाइ जीवताकुणप[7]नूं सारोही संसार हाडाँरो दानलेणहार कहै ॥ २७ ॥

इसड़ो अमोघउपाइ विचारि कपटरैप्रपंच वाणियाँरीवरातव णाइ बाजियाँरै[8]बदलै रथ१ छकड़ा२ जुताइ किताक प्रवहणाँ[9]मैं प्रहरणाँ[10] छिपाइ कुंकुमरारंगमैं गरक दुकूल[11]कीधां दूजीर दिसारै-मार्ग मंडोउर पूगिया ॥

अर राजद्वारजावताँही सत्त्वसमाहि माँहिंपैठा जठै पढिहारवंसरा प्रवीरभी आपरा अधीसनूँ धिक्कारधारणकराइ मरणीक थिया[12] ॥ पहली प्रतोली[13]मैं पैठताँहीं माँहिंलाचोकमैं हाडाँ१ पढिहाराँरै२ अचाणक कोरड़ो[14] लोहबाजियो ॥

परंतु उणसमय जुद्धजाणियांबिनाँ ढीलाथका पढिहार हाजरहूँता तिकाँ दीपकमैं पतंगरैप्रमाण आपरो अंग धारातीर्थमैं पवित्रकियो ॥ २८ ॥

संगररा करणहारतो एकठाहोइ मंत्रपूर्वक लड़ाईकरताती ठीकहोती जिणथी गढमाँहिंलापढिहार पाया जिके हाडाँरा सत्त्वरूप अग्निमैं अचाणकही आवटियाँ[15] ॥

---

१ चन्द्रमा को २ पकड़ने के लिये ऊँचा हाथ कियेहुए ३ बालक के समान ४ निरर्थक जानो ५नकटा ६ प्यार. जीवित ७ मृतक ॥२७॥ घोड़ों के ८ एवज ९ डोलियों में १०शस्त्र ११वस्त्र १२ हुए १३ पोल*(द्वार) १४केवल॥२८॥ १५जावे

*गोपुरं हि प्रतोल्यां च नगरद्वारयोरपि ॥ इतिमहीपः ॥

अर मरणीकहुवा मच्छरीकाँरा[1] समूह बाटमैं[2] आया सिपाहाँनैं बाढता[3] प्रच्छन्नप्रकोष्ठरैसमीप[4] थटियाँ[5] ॥

आपरा अंगजमैं आई असाधारण आपदा ईखि[6] मंडोउररामहीप हम्मीररीमाता बुंदीरानरेस हम्मीर१८३।१री सासू मंडोउरही द्विजाँनूं देखारी जणाइ आपरा अप्रतिभ तनुजनूं तरजियो ॥

अर अंगजरैआगैं डोढीपर आइ एककपाटरै अंतर हालू१८२।१ नरेसनूँ बुलाइ बैर धोवणरै काज इणरीति बरजियो ॥ २९ ॥

म्हारा कुपुत्ररीकीधीनूँ न धारि एक१आपराही बडप्पणनूँ[9] बिचारि बैर१रै बदळै बेटीबिबाहि कुपुत्र१नूँ प्राण२ मोनूँ[10] मंडोउररी मही[11] २ दानकीजै ॥

अरभावती१८३।१सुतारास्वसुरआपबिबाहिणिरीप्रार्थनाँरैप्रमाणबिबाहणरीबातबिरुदाँराबिसेसनिबाहणरीनिहारिअछूतोजसलीजै ॥

हालू१८२।१ कहियो पूरो बयपाइ संसारहूँ बिरक्तहुवा महीपवंसरै महामंगळमानि मरण१नूँ चाहै तिके बिबाहण२नूँ नचाहै ॥

जिणथी हाडाँरा समग्रही पाँचसै ५०० सिपाह तिकाँनूँ काढण काज आपरी समस्तही सेना पेलीजै तो बिस्वंभर बिबाहिणि १ बिबाही२ बिहूँ२ संबंधियाँरो बचन निबाहै ॥ ३० ॥

हे बिबाहिणि अजेभी आपरोअनीक मंत्रणामेळकरि समग्रही सज्जहोइ आवैतो म्हाँरा मारणमैं समर्थजाणाँ ॥

अर कपटकरि गढहीमैं अचाणक आइपैठणाँतो आपरा अंगजरो कूड़ापण१ दिखावणरैकाज वेसबदलणमैं म्हारोपण कूड़ापण२ही प्रमाणाँ ॥

१चहुवाणों का समूह २मार्ग में ३काटते हुए ४जनानी ड्योढी के समीप ५इकट्ठे हुए ६देखकर ७लज्जित पुत्र को ८धमकाया ॥ २९ ॥ ९ को १० मुझको ११ भूमि १२व्याहिन (समधी की स्त्री) १३अपूर्व १४काढने के लिये १५भेजो १६परमेश्वर १७व्याहिन १८व्याही (समधी) ॥ ३० ॥ १९ अब भी २० सेना २१ पुत्र का २२ झूठापन २३ भी

जिणाथी अब पड़िहारांरो समयही सावधान साथ म्हांरो पणी पूरणानूं पधारेतो मंडोवर राजरेहीरहियो ॥

इसड़ी कहि पांचसै ५००ही मरणीके सिपाहां समेत हाडेनरेस हालू १८२।१ आपरा शेकिया दुर्गथी बारैंकढि चोगानमैं सजहोइ धारातीर्थमैं मरणारोही मनोरथ गहियो ॥ ३१ ॥

तिणसमय पडिहाररा समयही सुभट मंडपपुरपत्तनमैं हूंतां तिके गढ खालीहुवोजाणि मांहिंपैठा तिकांहूं प्रतिहारराजकहियो माता री नीतिकरि दुर्गरेबारैं कढिया हाडांरो पणी अब म्हारे साथ होइ निवाहीजे ॥

अर राजनीतिमैं सदाही भूमिराभोगणाहारांनैं समयरैअनुसार छळबळभी साहीजै ॥

जठै हम्मीररीमाता पुत्रनूं धिक्कारदेर आपरो भटवर्ग मैंकोष्टरैसमी प बुलाइ कहियो हाडांरापणामैं कपट नहीठो जिणाथी वैरमैं विवाहणारोवचन विनैंयरैसाथ करि काढियो ॥

तिकणानूं मारतांपहली म्हांरोमरणों विचारि कुपुत्ररे परोक्षही हाडांनूं कीजे चम्मरीचाढियो ॥ ३२ ॥

जठै रजपूतां राणीनूं कहियो आपरो आदेस टाळि कुपुत्ररो कहणोंही मांडि गढ छोडिगया हालू१८२।१ जिसड़ा नरेसनूं वच नहीणाहोइ मारणारा आपरारजपूतांनूं नजाणीजै ॥

अर नहकृतपारा वित्तसणाह्नारैं आपरा कुपुत्रनूं कैडैकरि म्हारा तो मनमैं स्वामीरी सैनिकीरोही सासन समस्तरैं सीस प्रमाणीजै॥

इसड़ीकहि मंडोवररे एक १ उमराव सन्नहीणाहोइ हाडानरेस

---

१ गिलसं २ प्रतिज्ञा ३ पूरी करने के लिये ४ पणी ५ मरने की इच्छावाले ६ युद्ध में ॥ ३१ ॥ २२ ७ थे ८ प्रतिज्ञा ९ ग्रहण करना चाहिये १० चोटी के पाल ११ ग्रहण के साथ १२ परस्पर मारना ॥ ३२ ॥ १३ भोगनेवाले १४ पीछे करके १५ नाना

हालू१८२।१कनैंजाइ दो २हीतरफ प्रमाणहुवो बचन बताइ अनेक उपाइकरि निबाहणारी धारि बिवाहणारी चही ॥
जठैहाडैंकहियोएकुंकुमरादुकूळ*तोअच्छरीगंणारैंउचितजाणिकीधा जिणथी बिबाहणारोबयव्यतीतहुवोजाणिकेवळ मरणारैही मनोरथ आया तिकाँरैं बिबाहकीधाँतोदो२हीलोकमैं जसरी रीति नरही।३३।
जिणथी जिताक बिबाहणारैउचित बयरा बीर म्हाँरैसाथ आ-या तिकाँरैं बिवाह बिलसणारी होइतो म्हाँराबारहठ लोहठ३रै प-गाँपड़ि भाई रोपाल१८२।११नूँ सारिखो साथी सूँपि इणाँरै अंगी कृत करावीजै ॥
अर म्हाँरैतो धरापैं धराधवाँरै धामधाम धाराँधाराँरी धमचक देखि ओरठैभी पणारी पूर्णता भरावीजै ॥
जठै इसड़ीसुणि बिहत्तर ७२ बर्षरा बयमैं हाडानरेस हालू१८२। १रा बिबाहणारीबात समयरा सासनकरि अत्यंतही असंभवजाणि पड़िहाररै सुभट पाछोजाइ मंडोउररामहींपरीमाता प्रति कही हा लू १८२।१ रा बिबाहणमैंतो आप सिंह५रासिरा बृहस्पतरैसंगही लग्न जाणीजै ॥
अर एकसोचालीस१४०सिपाह बिबाहणारैउचित दीठा तिकाँरैं स्वीकारकरणरोभी मालिकरा बिबाहबिनाँ असंभवही प्रमाणीजै॥ इसड़ीसुणि हम्मीररीमाता आपरापुत्रनूँ बारहठलोहठ३रै पगाँलगाइ अंतेउररी डोढीबुलाइ अंजळीउपेत अपराध माँगि कहियो म्हाँरी अरजहूँ हाडानरेसरै आपरा उचित भर्ताँरो उपयम कराइ पाधरो वैरधोवणारी प्रतिश्रुतहुई परंतु सुहड़ाँरै स्वीकारकरावणमैं एक आ

काही *वस्त्र॥ ३३ ॥ १ समता (बराबरी) वाला २ स्वीकार ३ राजाओं के ४ घर,घर ५ जब सिंह राशि पर बृहस्पति आता है तब विवाह का सर्वथा निषेध माना जाता है इसको लौकिक में सिंहस्थ (सींगसत) कहते हैं ॥ ३४ ॥ ६ जनाने की ड्योढी पर ७ हाथ जोड़कर ८विवाह ९प्रतिज्ञा की हुई १०सुभटोंके

परोही आश्रय-लीधो जिणथी पुत्र १नूँ माथ २ मो १नूँ मंडो-
उररोराज २ दीजै ॥

अरु रोपाळ१८२।११नूँ न रुचैतो कहयाँ एक*पत्नीरै एवजइ-
च्छारै मणाथ उपयाम कीजै ॥

बारहठ पाछैआइ याहीअरजकीधी सुणि दयारैदरियाव हालू
१८२।१ नरेस सातबीसी १४० सुभटाँनूँ पड़िहाररीपौळि पाणिपी-
ड़णरी स्वीकारकराई ॥

परंतु कालीराकळस सतीरानाळेर[4] पतिपहलीमजळी प्रतिव्रता
रा मिथंतन रोपाळ १८२।११ नूँ न भाई ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

बूडो लाजसमुद्रबिच, लखि अग्रज लंकाळ ॥
पाणिजोड़ि दे घण सपथ,पुणियो तदि रोपाळ१८२।११॥३६॥
नारि सती बळतीनहीं, बिणुवय तोभी व्याह ॥
करतो भ्रात न आपक्रम, राखे जस १ कुळ २ राह ॥ ३७ ॥
तुमसुख अब लीधो तिकाँ, तो उचिताँ परिणाइ ॥
आप करीजै औरठै, पणपूरण इणपाइ ॥३८॥
मोनूँ अब भरियाँ मिळै, उचित सुजस आभोग ॥
कहो आपही गति कवण, जीवण१ मरण२ दुर जोग ॥३९॥
हेक १ हेक १ दै अब हुकम, पलीजै पड़िहार ॥

*.स्त्री १ विवाह २ विघ्राह ३ पागल स्त्री के मस्तक का घड़ा (वीर) और
सती होनेवाली स्त्री के हाथ का ४ नारियल (वीर) "इन दोनों वस्तुओं के न
ष्ट होते देर नहीं लगती" ५ जली हुई ६ पति. नहीं ७ इच्छी ॥३५॥ ८ डूबा ९
रावण (लङ्का का पति) "यहां लक्षणा से रावण के समान हठ करनेवाला सम
झना चाहिये और डिंगल भाषा में सिंह को(लंकाळ) कहते हैं" १०सोगन ११
कहा ॥ ३६ ॥ १२ विना अवस्था १३ हे भाई १४ आपके क्रमानुसार मैं भी
विवाह नहीं करता ॥ ३७ ॥ जितने विवाह के १५ उचित हैं उनको व्याहकर
॥ ३८ ॥ १६ परिपूर्णता ॥ ३९ ॥

काळचहै हरि जेणाकर, सोहि *हणौं सिरदार ॥४०॥
×पुणियो नृप मरियाँ पछैं, ब्याहै और न वीर ॥
पणपूरण कीजै पछैं, धरे इतादिन धीर ॥ ४१ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

इणरीतिरो आदेस आपरा अनुजरै अंगीकृतकराइ हालू १८२।१ नरेस आपरा उचितबयरा सातबीसी १४० सुभटाँनूं संबंधियाँसहित पड़िहाराँरी एकसोचाळीस १४० कन्या परिणाइ राजाहम्मीरसहित सभाकरि कहियो भाई रोपाळ १८२।११रो पण पूरण करणनूं एक १ सिरदार पधारो ॥

अर जिकणरै मरियाँही मंगळहोइ तिकणरा बचावणमैं कोईभी जतन नधारो ॥

जैरै मरणाँहीमानि अठीरै अठी जोवताँ हम्मीररीसभाहूँ महराज पड़िहार ढाल १ तरवारि २ पकड़ि अखाड़ैआयो ॥

अर अठीहूँ खड्ग १ खेटक ३ २ समाहि अछूतीअणीरोबींद रोपाळ १८२।११ हरराजो १८२।१त चलायो ॥ ४२ ॥

आपआपरो दावदेखि खड्गरा बाईस २२ ही मार्ग साधि हाडे ५ पड़िहार २ दो २ ही महाबीराँ आपसमैं अनेकवार कीधा ॥

अर आपआपरा पराक्रमरैप्रमाण दो २ ही नरेसाँनूं अचंभो दिखाइ दो २ ही पटैताँ प्रहार टाळिदीधा ॥

उणसमय आपरो वार जाणि पड़िहार महराजरो साँचो हाथ छूटो ॥

जिकणथी अचळैरा उपमान रोपाळ १८२।११ हरराजो १८२।१तरो सीस शृंगरै समान तूटो ॥ ४३ ॥

सीसउडताँही पड़िहार हँसिया अर महराज मुरड़ि चालियो ति

---

* मारे॥४०॥ ×कहा॥४१॥ १जब २इधर उधर ३ढाल ४हरराज का पुत्र॥४२॥ ५आश्चर्य६पर्वत के ७शिखर के समान ॥४३॥ ८पीछा फिरकर, अथवा घमंड से

पुर खीनाँ दर लंघि पुनि, जात अग्ग जवनेस ॥
बुंदिय मित[1] बंबावदहु, उपदा किन्न असेस ॥ ७० ॥
याही मित[2] चंद्राउतन, सुन्यौं उपायन सोर ॥
पहुँचि चमू जवनेस पुनि, चुनि बिंटिय चित्तोर ॥ ७१ ॥
भूप कतिक सहँचर भये, नियँति नम्र मिलि मग्ग ॥
संग कतिन दिय भ्रात १ सुत२, इक१रहि रान उदँग्ग ॥७२॥
बसु दृग गुन भू १३२८ मित बरस, बिक्रम नृप सक बेर ॥
जवनराज चित्तोरजँहँ, घोर जोरदिय घेर ॥७३॥

इतिश्रीवंशभास्करेमहाचम्पूकेपूर्वायणे पंचम५राशौ वीतिहोत्र चराडासि १ वंशवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्य

खीएया नामक पुर के दरे को लांघ कर बादशाह के आगे जाने पर बुंदी के १ मुवाफिक बंबावदा के राजा ने भी नजराना पेश किया ॥ ७० ॥ इसी २ मुवाफिक रामपुरा के चंद्रावत के ३ नजराना करने का शोर सुना ॥ ७१ ॥ कितने ही राजा, अपने ५ नियमों को नम्र करके मार्ग में मिल कर बादशाह के४साथ होगये; और कितनों ही ने अपने भाई और बेटों को साथ करदिया, उस समय६उच्चता को धारण करनेवाले एक महाराणा ही रहे ॥ ७२-७३* ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखा-

* ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल ने अलाउद्दीन और राजा हम्मीर चहुवाण की लड़ाई विक्रमी संवत् १३१२ में होना लिख कर चित्तोड़ के महाराणा गढलक्ष्मणसिंह का सहायक होना लिखा सो ठीक नहीं है; क्योंकि इस समय में तो अलाउद्दीन और गढलक्ष्मणसिंह का जन्म भी नहीं हुआ था. यह संवत् बड़वाभाटों का कल्पना कियाहुआ है. अन्य इतिहासों के देखने से पायाजाता है कि अलाउद्दीन और राजा हम्मीर की लड़ाई विक्रमी सम्वत् १३५६ में हुई थी, जिसमें एक वर्ष भर वीरता से युद्ध करके हम्मीर मारा गया, जिसके पीछे तीसरे वर्ष विक्रमी सम्वत् १३५९ में अलाउद्दीन ने चीत्तोड़ के रावल रत्नसिंह पर चढाई करके चित्तोड़में घोर संग्राम किया सो अन्य इतिहासों में और विशेष करके 'वीरविनोद' नामक मेवाड़ के इतिहास में यह युद्ध पद्मिनी रानी के कारण होना लिखा है, परन्तु यह भी संभव है कि हम्मीर का पुत्र रत्नसिंह, रावल रत्नसिंह के शरण चित्तोड़ में चला गया होवे तो युद्ध का एक कारण यह भी होसक्ता है; परन्तु विक्रमी सम्वत् १३२८ में गढलक्ष्मणसिंह के साथ अलाउद्दीन की लड़ाई होना असंभव है; क्योंकि इस समय गढलक्ष्मणसिंह चित्तोड़ की गद्दी पर नहीं थे. महाराणा गढलक्ष्मणसिंह का युद्ध दिल्ली के बादशाह मुहम्मद तुगलक के साथ विक्रमी सम्वत् १३९० के लगभग हुआ था; जिसको बड़वा भाटों की भूल से ग्रन्थकर्ता ने सम्वत् १३२८ में अलाउद्दीन के साथ लिख दिया है ॥

करणरै त्तारत्तागै रोपाळ १८२।१।१रै रुंडै खड्गपटकि कटारी का ढि सातवैं ७ पैंडजावतां कटिबंधं पकाड़ि पड़िहाररा पिंडमैं सात७ घायजाड़िया ॥

सो च्यारि ४ ऊभाँ तीन३ पड़ियाँ देरं इणारीति दोरही वानैतं एक१हीकाळमैं खेतपड़िया ॥

लोहठ३रापुत्र हरिदास४नूँ वंबावदाहूँबुलाइ पडिहाराँरावारहठ नाधू नगराजरीपुत्री परिणाइ हालू१८२।१ पड़िहारराजा हम्मीरनूँ मंडोउर देरं पाघरावेरपर आपरा एक १ बारहठ सातवीसी १४० मुँहड़ाँरैकाज एकसोइकताळीस१४१ कन्या लेर वंबावदेआयो ॥

अर आपरा अर्नड़पणाँरै अनुसार मंडोउर आपरी विवाहिणिनूँ देणरो सुजस चो४तर्फही चलायो ॥ ४४ ॥

राठोड़ राव चूँडा वीरमदेवोतरै भाग जोरकीधो जिकणहूँ हालू १८२।१ मंडोउरमैं आपरी आण फेरी नहीं ॥

अर ओरही लेसी तो आपणै आ ईळा किणरीति छोडीजै इस हीवात महा उदार विचारमैं हेरीनहीं ॥

आपरा वडापुत्र चंद्रराज१८३।१नूँ राजदीधो जिणथी वंबावदआ इ अवसाणपर्यंत उदासीन रहियो ॥

अर जुद्धजाणियो जठैही जाइजाइ कामआवणरो प्रसंभ गहि यो ॥ ४५ ॥

सोतो पछै इणवातरै अनंतर वीस २०वर्ष थाँसै थाँळियाँ केडै कोईभी कैजियाँमैं मरणरो महारभी न पायोजाणि विक्रमरा चउदहसै एगारह१४११रै संवत वाणाँवै९२वर्षरां वय विताइ हालू१८३।१नरेस

---

१ बिना मस्तक का धड़ २ कमरबन्धा ३ ढूंकर ४ बानाबन्ध ५ मध्य में ६ ढूंकर ७ सुभटों के लिये ८ चन्द्रग्रहन के अनुसार ९ व्याहिने को ॥ ४४ ॥ १० इस कारण से ११ भूमि १२ अन्त समय तक १३ हठ ॥ ४५ ॥ १४ पीछे १५ छिपे १६ पश्चात् १७ युद्धों में

वार्द्धक[1]मैं विसेसजिवावणहार आपरा प्रारब्धरी गर्हणा[2]करि बंबाव दारैबारैंही जोगिणीनाम देवीनूँ मस्तकचढाइ अभीष्टलोक पूगो सोतोउदंत अठै दूरभावी[3] जाणीजै ॥

अर मंडोउरहूँ हालू१८२।१ आविपाँकेई नरेस हम्मीर १८३।१ कासीवासकीधो जिणपछैं बुंदीरो नरेस बरसिंह१८४।१ हुवो जिण रोभी अद्वितीय आतंक प्रमाणीजै ॥

जिणसमय चीतोड़रा अधिराँज राणा हम्मीररै खेतलनाम कु-मार गैणोलीरा अधीस हाडा लालसिंह१८४।२री पुत्रीनूँ बिवाहण रैकाज प्रयाणकीधो ॥

जिकणरैसाथ राणाँ त्यागरा जसरो प्रकास प्रसारणरैकाज आपरा पोळिपातबारहठ बारू सहित बडावडा सुभटाँनूँ सज्जकरि हाडाँरी आसंगमैं नआवै इसड़ो बरातरो बाणिक बणाइदीधो ॥ ४६ ॥

पहली बैरकुमावणरैकाज हालू१८२।१री पाघ लेर बारहठ लो हठ चित्तोड़गयो जठै राणैहम्मीर कहियो हाडैहम्मीर १८३।१ आप रा पुत्ररीपुत्री देर बचायो आपरेघरे अँनड़पणाँ जणावै सोतो स्वप्न रा संकल्परैसमान मोघ मानणमैंआवै ॥

अर साँचामरणीक सरवीराँरा पणतो मातंगाँपर पताकाँखुला इ घरबैठा बैरियाँनूँ वकारै जठैही सफळहुवो रवटावै॥

पहली इसड़ा वचनराबाण लगाया जिणथी एकसोपचीस१२५ तोपाँ साथ देर रणरीसामग्रीसूँ सिलहमैं जाड़िया बीर वरातमैं बि दाकीधा ॥

अर मार्गमैं कूटजुद्ध[12] करणरा स्थान जाणिया जिके टळाइ दीधा ॥ ४७ ॥

---

१ वृद्धावस्था में २ निन्दा ३ आगे आनेवाले समय में होनेवाला ४ स्वामी ५हिम्मत में ॥४६॥६ अनम्रपन ७ विचार ८निरर्थक ९हाथियों पर १०ध्वजा ११ ललकारै १२ कपट युद्ध ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

दोहा

बणि दुल्लह खेतल बणी, अठी रायसुत एह ॥
गैणोली व्याहणगयो, लालसुता १८४।२ बिधिलेह ॥४८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पंचम५राशौ वीति होत्रचण्डासि१वीज्यवर्णनभीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंशानुवंशविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेंद्रहम्मीर १८३१ समाचरितसमानसमयककम्बावदेशहाररराजिहल्लू १८२।१चरित्रे मण्डपपुरजिगीषासमर्थनसहितशपथहल्लू १८२।१ समाश्वासितसम्भोजितकविलोहठराणाहम्मीरादिमहीन्द्रमिलनभूतस्वोष्णीषप्रवृत्तिप्रख्यापन १, ज्येष्ठसुतचन्द्रराजा१८३।१ र्थदत्तराज्यनिश्चितरणमरणसुभटपंचशती५००समेतकौसुम्भीकृतदुकूलविप्रवृन्दमण्डपपुरवितितीर्षुविहितवणिग्जन्यदेशहल्लू१८२।१प्रतिहारपुरप्रविशन२,स्वमरणपूर्वदग्धपत्नीकस्वाग्रजोपालब्धस्मृधमुमूर्षुहाररराजिहड्डरोपाल१८२।११हल्लू १८२।१ सहायीभवन३,निपातितराज्यद्वाररक्षकविध्वस्तान्तर्भटव्रा

श्रीवंश भास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चम राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्द्धन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र हम्मीर के समान श्रेष्ठ आचरणवाले और उसीके समय में होनेवाले कम्बावदे के पति हरराज के पुत्र हल्लू के चरित्र में मंडोवरपुर को जीतने का निश्चय किये हुए ऐसे हल्लू से (शपथ पूर्वक) आश्वासन देकर भोजन कराये हुए कवि लोहठ का महाराणा हम्मीरसिंह आदि राजाओं से मिल कर अपनी पगड़ी की प्रवृत्ति प्रसिद्ध करना, बड़े पुत्र चन्द्रराज को राज्य देकर युद्ध में मरना निश्चय करके पांच सौ वीरों सहित वस्त्रों का केसर में करके मंडोवरपुर को ब्राह्मणों को देने की इच्छा करके बनियों की बरात के उद्देश से हल्लू का प्रतिहार के पुर में प्रवेश करना, अपने मरने से पहले अपनी स्त्री को जलाने के कारण अपने बड़े भाई से उपालम्भ पाये हुए और युद्ध में मरने की इच्छावाले हरराज के पुत्र हाडा रोपाल का हल्लू का सहायक होना, राज्य द्वार के रक्षकों को मारकर भीतर के वीरों के समूह को विध्वस्त करने पर हल्लू को समझाइश करके रोकनेके लि

तद्दल्लू १८२।१ समाश्वासननिवारणोद्युक्तप्रतिहारराजहम्मीरजननी तदुष्णीषवैरवालनार्थप्रत्येकसुभटकन्यासम्बन्धस्वीकरण ४,त्यक्त दुर्गबहिरागतहल्लू १८२।१ रणमरणसन्धासाफल्यसमर्थन ५,प्रतिहा रपूजितप्रार्थितद्वारहठलोहठ १ हारराजिरोपाल २ प्रतिबोधितहल्लू १८२।१ द्वारहठहरिदास १ऽधिकसमुचितवयोवीरविंशतिसप्तक १४० विवाहन ६, खुरलीत्तमखलूरिकाखेलासमात्तखरखड्ग १खेटक २द्वंद्वसमाघातसमुद्युक्तप्रतिहारमहराज १प्रहाराच्छिन्नमूर्द्धकोशकृष्टकट्टारसप्तम ७ पदसम्प्राप्तदत्तप्रहारसप्तक ७ हारराजिरोपाल १ प्रतिहार महराज २ निपातन ७,प्रत्यागतराज्योदासीनहल्लू १८२।१सूचितभावि सम्वत्समयस्वमूर्द्धकालिकोपहारीकरण, ८ कृतकाशीवासहड्डाधि राजहम्मीर १८३।१ ज्येष्ठकुमारवरसिंह १८४।१ बुंदीपुराधिपत्य प्राप्तिपुनःसूचन ९, गैणोलीहड्डाधिराजहाम्मीरिलालसिंह १८४।२ पुत्रीपरिणीपुराणाकुमारक्षेत्रसानिष्कासिकाऽनुष्टान १० राणाना

ये उद्योग करनेवाली ऐसी प्रतिहारों के राजा हम्मीरसिंह की माता का उसकी पगड़ी का वैर देने के लिये प्रत्येक सुभट से कन्याओं का सम्बन्ध करने को स्वीकार करना, गढ छोड़कर बाहर आये हुए हल्लू का युद्ध में मरने की प्रतिज्ञा की सफलता का समर्थन करना, प्रतिहार से पूजा और प्रार्थना कियेगये ऐसे बारहठ लोहठ का हरराज के पुत्र रोपाल को समझाना और हल्लू का बारहठ हरिदास को अधिक लेकर उचित अवस्थावाले सातबीसी अर्थात् एकसौ चालीस वीरों को विवाहना, शस्त्रविद्या और अखाड़े की क्रीड़ा में समर्थ, तीक्ष्ण खड्ग और ढाल लियेहुए और द्वन्दयुद्ध के आघात में उद्युक्त ऐसे हरराज के पुत्र रोपाल का प्रतिहार महराज के प्रहार से मस्तक कटने पर म्यान से कटारी निकाल कर प्रतिहार महराज को सात पैंड पर पकड़ कर सात प्रहार देकर मारना,अपने राज्य में पीछे आकर उदासीन हल्लू का जनायेहुए आगे आनेवाले सम्वत् में अपने मस्तक को काली के भेंट करना, हड्डाधिराज हम्मीर के काशीवास करने पर उसके ज्येष्ठ कुमर वरसिंह के बुन्दीपुर के अधिपति होने की फिर सूचना करना, गैणोली नगर के पति हम्मीर के पुत्र लालसिंह की पुत्री को विवाहने की इच्छावाले राणा के कुमर क्षेत्रसिंह का यात्रा करना:राणा का अपने उमरावों की सहायता से निर्भय

लीयन्त्रादिसमरसामग्रीसहितसज्जस्वीयसामन्तसहायकानिर्भीकपरिणीषुपुत्रप्रस्थापन ११ मेकादशो ११ मयूखः ॥११॥

आदितोऽष्टपञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥१५८॥

॥ इति हल्लू १८२।१ त्रि३मयूखी ॥

प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा

सगपरा हामैं १८३।१ संधियो, बीखे सो बय बात ॥
गैणोली खेतल गयो, बरबणि विदित बरात ॥१॥
कीधा इण खेतलकँवर, आगैं चउ४ उपयाम ॥
हो इणरै पहिलीहुवो, नंदन लाखोनाम ॥ २ ॥
पोत रमैं सो पोतपण, बरस पंच५ मित बेस ॥
जिण सिसुरो खेतल जनक, आयो व्याहण एस ॥३॥
नीराजन मुख विधि नियम, साधि लगन पळ साच ॥
कन्हकँवरि १८५।१ लाल १८४।२ सुकनी, आपी खेतल आंच॥४॥
मँहडै दिन चोथै४ मचे, भूँजाई घणभाँति ॥
जुड़ि संभर१ सीसोद२ जन, प्रसरे चो४सर पाँति ॥५॥

षट्पात् ॥

अतिव्यंजन१ पैंळ२ अन्न३ रचे जीमण वंछित रस ॥
आसवँ छकि आपानँ वणे जदुवंस जँथा वस ॥

विवाह करने की इच्छावाले अपने पुत्र को तोपें आदि युद्ध की सामग्री सहित सज्ज करके प्रस्थान कराने का ग्यारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ११ ॥ और आदि से १५८ मयूख हुए ॥

१सम्बन्ध २ खेत्रसिंह (खेता) ॥ १ ॥ ३ विवाह ४ पुत्र ॥ २ ॥ ५ बालक ६ खेलते हैं ७ बालकपन में ८ पिता ॥ ३ ॥ ९ आरती १० आदि. लालसिंह की ११ पुत्री १२ हाथ में ॥ ४ ॥ १३ मांढ (मंडप) में १४ रसोई (गांठ) ॥ ५ ॥ १५ मांस१६ मद्य में परिपूर्ण होकर १७ पानगोष्ठी (मतवाल) यदुवंश में हुई थी१८ जिसप्रकार कीहुई. वहां महाराणा के उमराव रत्नसिंह ने

भणी रयण राणभड़ सबळ हाडाँ कुळ सरणो ॥
इण दुलहीरी ओट अनड़ हालू १८२।१ ऊबरणौं ॥
सुणि इम बरात बिहँसे सकळ जंपि अतुळ चीतोड़ जय ॥
बारहठ तेण बारू बळे पूळो दव दीधो प्रबय ॥६॥
भाखी इम बय भलि मत्त बारू आसव मद ॥
अवकी चिंरथी एह हुई चराडासि१ बंस हद ॥
चिलगढहि चहुवाण पृथा पीथल१७६ परणाई ॥
राउळ समर सहाय पुहवि साळै जिम पाइ१ ॥
निधिलीध२ खणे खाटूनगर बधियो सो चीतोड़ बळ ॥
इमलाल१८४।२सुतासाँटैअनड़बाजैबचिहालू१८२।१बिकळ ॥७॥
राणसुहड़ राठोड़ प्रथम१ तिण रयण१ प्रजाळी ॥
बारू२ धरि बारूद बळे२ भौखरचढि बाळी ॥
कीधो दुल्लह३ कँवर मिरा छकिये अनुमोदन ॥
वहियो भावी विखम नराँ रहियो सु बिनोद न ॥
जंपियो सुकवि लोहठ जँरै सुता जाइ१ जावैर सगाँ ॥
कुनरेस किसो जिणबळ कहो भू भोगै पछापगाँ ॥८॥
पृथीराज१७६री पुहवि समरराउळ राखी सो ॥
नरनर उर छानी न सुकवि ग्रंथाँ साखी सो ॥
तेज समरनृप तात गहे जदि छळि मंडलगढ ॥

---

१ कहा कि हाडों के कुल का यह बड़ा शरणा है; क्योंकि इसी दुलहिन की आड से २ अनड़ हालू का बचाव हुआ है ३हँसे ४अतोल. ५ वृद्ध बारू बारहठ ने अग्नि में पूला दिया ॥ ६ ॥६ बहुत समय से ७ पृथ्वीराज ने अपनी बहिन पृथा को व्याही. खाटू नगर में ८ खोदकर धन लिया ॥ ७ ॥ ९ राणा के सुभट १०जलाई ११पर्वत पर चढकर इस बात की मद्य में छकेहुए दुल्लह कुमर चेत्रसिंह ने पुष्टि की १२कहा १३ जब ॥ ८ ॥

बंबावद२ रैणागढ२ रैण१७५ रचिया रावणरद्ध ॥
उणठाम तपे हाडो अनड़ पुर१ गढ२ लै जावद१ प्रमुख ॥
संतापपटक्कि चीतोड़सिर रहियो एकल बाघरुख² ॥९॥
सो कुळबाट³ सम्हाळि बळे न्रृप बंग१७६ महाबळ ॥
पुरमंडल१ मुख⁴ प्रांत खंडिलिधा आहड़⁵ खळ ॥
अब हालू १८२।१ रण असह कँवर दुल्लह घायलकरि ॥
जुगकाका हँणि⁶ जेण धरादाबी पाणिय⁷ धरि ॥
मोड़ियो राण हामैं सुमति १८३।१करि सगपण सो हितकियो ॥
सीसोद नतो चीतोड़सिर जाइकवण उणरण जियो ॥ १० ॥
दोहा—आणी सो मुख बात अब, हालू १८२।१बचण सहाय ॥
गडलखसमणेरै हींगळू१८०।, हुवो भीड़⁸ तिम हाय ॥११ ॥

सहाय१महाय२अन्त्यानुप्रासः१॥

काका अजयतणी कंनी⁹, प्रभावती १८४।१ करि पेस ॥
बूंदीन्रृप बरसिंह १८४।१ नूँ, अपणायो नय एस ॥१२ ॥
जाणो.तो सगपणजुड़ै, समकुळ १ बळ २ अनुसार ॥
सुता जनक जै हणिसब, दो भी अधिक उदार ॥ १३ ॥
पृथीपाळ १५६ न्रृप परणियो, चाहुवाण चीतोड़ ॥
उत्तम राउळ अंगजा, माथैधरि जसमोड़ ॥ १४ ॥
सेनपाल १५७ तिण भूपसुत, किरणादीत कुमार ॥
सरसौंतजियो मूँडि सिर, सीह पछाड़ि¹¹ सिकार ॥१५॥
कहणाँ जिणकुळरो किसूँ¹², बिरुद १ सुजस २ बाखाण ॥

रावण के समान १हठ करनेवाले ने. सिंह की २भांति ॥९॥ ३कुलमार्ग ४आदि ५आहड़*(अहाड़ा)६मारकर७पराक्रम ॥१०॥ ८सहाय (मदत) ॥११॥अजयसिंह की९पुत्री ॥१२॥१३॥उत्तम रावल की१० पुत्री ॥१४॥११गिराकर ॥१५॥१२क्या

*आहड़ नामक नगर में राज्य करने के कारण गुहिलोत अर्थात् सीसोदिये क्षत्रियों को आहड़,अहाड़ा और आहदा कहते हैं ॥

ब्याह नहोतो तो बळे, पूँचै लखता पाण ॥ १६ ॥
नृपहालू १८२।१ आयो नथी, सहि हायन ज्वरसंग ॥
बुंदीनृप बरसिंह १८४।१ सो, आयो मिलण उमंग ॥ १७ ॥
जिण कुबैण सहियो जिको, रहियो बैठो राव ॥
लाल १८४।२ सु चुप अग्रज लखे, ऊफणियो अणमाव ॥१८॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रतभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

लखि चुप अग्रज१८४।१लाल१८४।२जन्य १ मत सुहि दुल्लह२जुत ॥
स्वसुता हल्लव १८२।१ सटि दई सुनि सहि कहो न हुत ॥
बारू जब विप्फुरियँ कहन संकल्प तबहि किय ॥
पै लोहठ निजपात्र लाल १८४।१ पहिलैं सु ओडलिय ॥
कुलदुवर समान ब्याहनकहे तदनंतर खिन कहन तकि ॥
संबोधि कवि सु बारू सहज कहिय लाल१८४।२इम छोह छकि॥१९॥
बारू कुळगति बदहु गर्व न बदहु बालिसगति ॥
कविकुल सच्चहि कहत मन्नि तुम रीति सुपै मति ॥
चित्तोरहु तव चवियँ कहत प्रतिमा सु च्यारि ४ कर ॥
कवन रानसन कहत सूर १ दायक २ अग्रेसर ॥
बरजन त्रि ३ लोक कर त्रि३क विहित कर चोथो ४ गलधारि गहत
जो होइ अपर २ हम्मीरजिम ममकर ममसिर छेदमत ॥ २० ॥
जंपि रान गुन जुग २ ह्नि मन्नि तुम सबन सिरोमनि ॥

॥१६॥ एक१वर्ष से ज्वर सहन करके ॥१७॥१८॥२बरातवालों का मत था सोही दुलहे का देखकर३अपनी पुत्री हाळू के४बदले में ५क्रोधित हुआ तभी कहने का विचार किया था परन्तु अपने६पोलपात्र लोहठ ने लालसिंह से पहले ही उस बात को७झेलली. उस बारू बारहठ को८सम्बोधन करके९क्रोध में परिपूर्ण होकर ॥१९॥ हे बारू! चारण लोग सदैव सत्य बोलते हैं इसीप्रकार तुमको भी अपने कुल की रीति के अनुसार सत्यकहना चाहिये१०सूर्य के समान११ कहा था. चार हाथवाली१२मूर्ति निकलने पर१३दातार१४दूसरा ॥२०॥

सिरकट्टन दिय *सपथ आर प्रतिमा जड़ पैं आनि ॥
छिति रजपूतन छाइ रचैं घरघर +बितरन १ रन २ ॥
जिनमैं बहु रानजिम बढत बहु जिम ÷बिटपी बन ॥
श्रद्धाउपेत बढि रानसन जैहैं बहु हम साक्खि[1] जँहँ ॥
कट्टैं न सीस प्रतिमा[2] स्वकरैं[3] तुमहु निबाहक बचन तँहँ ॥२१॥
बारू[4] प्रत्ययं[5] बिदित लेहु ताको हमसौं लहुं[6] ॥
इतहु सूरपन१ अधिक पै सु सत्रुन सम्मुह पहु ॥
बितरन२मित इतबढत प्रथितं[7] प्रत्यय तस पावहु ॥
अबहि सीस१ छिति २ इतर३ जोहि मंगहु लेजावहु ॥
मंगनहिं मस्थं[10] जो हहु हम कट्टि न देहैं तो कुलहिं ॥
लग्गहिंकलंक संवर्त्तलग[11] तृन१ जाचक२ तुलना तुलहिं ।२२।
मस्तक१ अरु भुव२ मैंहु देत मंगहु इक१वा दुव२ ॥
जामाता[12]बिनु जुद्ध३ होहु तउ हम दाताहुव ॥
अब मंगहु इक्क१हु न होहु तो निजकुल बाहिर ॥
देहैं न जु कहि देन हमहु बाहिर कुलतैं किर[13] ॥
रानके रहहु जो बारहठ प्रधनं[14]१ दान२ तो अब परखि ॥
कै कट्टि सिरहिं१रक्खहु कथित कै ओढहु तियपट२करखि।२३।

दोहा ॥

कै प्रतिमासौं उचित कढ़ि, स्वकरैं[15] कटावहु सीस३ ॥
नतो बिंडारहिं[16] संढनिभ[17] कत्थन रान कवीस ॥ २४ ॥

---

* सोगंद (सौगन्द) + दान. बन. से. एक से एक ÷. वृक्ष बढकर होते हैं ऐसे. जिसके हम १ साची हैं. २ मूर्ति ३ अपने हाथ से अपना मस्तक नहीं काटसकती सो उस वचन के निबाहक तुम हो ॥ २१ ॥ ४ हे बारू! इसका प्रसिद्ध ५ सुबूत हमसे ६ शीघ्र लो ७ प्रसिद्ध. मस्तक ८भूमि और ९ अन्य भी १० मस्तक ही मांगना है तो ११ प्रलय के समय तक ॥ २२ ॥ १२ जमाई के बिना १३ निश्चय ही हम भी कुल से बाहिर हैं १४युद्ध और दान की अब परीक्षा करो॥२३॥१५अपने हाथ से१६निकालेंगे१७नपुंसक की भांति॥२४॥

बरज्यो नृप वरसिंह१८४।१ वहु, ए आसव जड़ अत्थ ॥
बारू पनबोल्न बदिय, तदपि लाल१८४।२ धकि तत्थ ॥ २५ ॥
अग्रजसन किन्नीअरज, कहत न तुम तियकानि ॥
कन्या कानि न मैं करत, पन *ऋत१ अमृत२ प्रमानि ॥ २६ ॥
जामाता मैं तजत जँहँ, कन्यादित करिबो न ॥
अक्खहिं बुधजन निंदि इम, लग्गहियहिं लरिबो न ॥ २७ ॥

पद्धपात् ॥

अग्रज१८४।१ मति इम अक्खि पुनि सु बुल्लिय बारूपति ॥
ससिर१ बिभव२ मम सकल मंगिलेहु ब प्रतीत मति ॥
हहु न जो देहौं न१ समरलेहौं न२ रानसन ॥
तुम चारन तो तकहु परख दातार१ सूरपन२ ॥
लेहु१ कि नलेहु२ हमहिं सु हठ न रान बिकत्थन सोध रचि ॥
रक्खिय अयोग्य प्रतिमा पर सु बह्लहु सिर रहनौं न बचि ॥२८॥

दोहा ॥

उठि प्रतृप्तहि असनैसन, रुठि सु बर१ रु बरात२ ॥
सब निंदत आये सिबिरैं, बदत लाल१८४।२ यहबात ॥२९॥
बारुव सोदा मध्यवस, अति लाघवं आपन्न ॥
रक्खिथाल पठयो स्वसिरं, छेदि पटालय छिन्न ॥ ३० ॥

॥ २५ ॥ प्रतिज्ञा का सत्य * करना अमृत के समान है ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ १ मस्तक सहित राणा को विशेष कहने के वचन २ निरर्थक ॥२८॥ ३ भूखा ४ भोजन से ५ डेरों में ॥ २९ ॥ बारू नामक ६ सोदा बारहठ शाखा के चारण. अत्यन्त ७ शीघ्र ८ आपद्ग्रस्त बारू ने १० डेरे में छाने काट कर ९ अपना मस्तक* थाल में रखकर भेजदिया ॥ ३० ॥

*यह कथा वीरविनोद नामक मेवाड़ के इतिहास में जिस प्रकार लिखीहुई है, तिसकी हम यहा पर नकल करदेते हैं. वह यह है. "महाराणा क्षेत्रसिंह के देहान्त का हाल इसतरह पर है, कि जब हांमां हाडा के बेटे लालसिंह की बेटी का विवाह इनके साथ करार पाया, तो यह बडी धूमधाम से शादी करने को बुन्दी की ओर सिधारे, यह शादी बुंदी में हुई थी, रीति पूर्वक विवाह होचुकने बाद एक दिन दर्बार होरहा था,

विहितव्याख्यानावसरव्याहार्यहड्डाधिराजदेवसिंह १८०।१ चरमसमयसहितबुंदीशसमरसिंह १८१।१ चरित्ने प्रेष्ठागौड़ी १८०।३ पुत्रसमरसिंहा १८१।७र्थबुंदीयुक्तदत्ताऽर्द्धराज्यहड्डाधिराजदेवसिंह १८०।१ तनुत्यजन १ स्वौरससुतार्थसमर्पितहड्डहेलित्वत्तृतीय ३ राज्ञीगौड़ी १८०।३ सहगमन २ नामान्तरख्यातिसहितदेवसिंह १८०।१ जनितद्वादश१२पुत्रोद्देशन ३ प्रतिपुत्नतत्तन्मातृनिश्चयन ४ प्राप्तबंबावदाधिपत्यहरराजा १८१।१ऽनुजहत्थ १८१।२ प्रातिहारी १८१।२।१ राष्ट्रकूटी १८१।२।२ पत्नीद्वय२परिणायन ४ तदौरससुर्जना १८२।२ दिपुत्नत्रय ३ संततिहड्डकुलतृतीय ३ भेदहत्थावुत्तो १।३ पटङ्कप्राप्ता ५ भटशूरा १८१।३ दिभ्रातृनवक ९ निस्सन्ततिसमापन ६ हड्डाधिराजहरराज १८१।१ शैषोंद्दी १८१।१।१ प्रमुखपत्नीषट्कपरिणायन ६ हल्लू १८२।१ प्रमुखसर्वराज्ञीपुत्रद्वादशक १२ प्रकटन ७ तदन्तस्तृतीय३लोहराज १८२।३ वंशभावि[illegible]समा[illegible]सूचन ८ ज्येष्ठहल्लू १८२।१ जननहल्लूपौत्रो१।४पटाङ्कितहड्डकुलचतुर्थ ४ भावभेदप्रवृत्तिद्योतन ९ प्राप्ताऽर्द्धराज्यकृतबुन्दीस्कन्धावारसमाक्रान्त-

---

ओं की कथा के वचनों में हड्डाधिराज देवसिंह के अन्त समय सहित बुन्दी के पति समरसिंह के चरित्न में प्यारी गौड़ी के पुत्र समरसिंह के अर्थ बुंदी सहित आधा राज्य देकर हड्डाधिराज देवसिंह का शरीर छोडना, अपने औरस पुत्र के अर्थ हाडा क्षत्रियों का सरजपन देकर तीसरी रानी गौड़ी का सती होना, नामान्तर की प्रसिद्धि सहित देवसिंह के बारह पुत्रों का कथन, पुत्र पुत्र प्रति उनकी माताओं का निश्चय करना, बम्बावदा का राजा होकर हरराज के छोटे भाई हत्थ का प्रतिहारी और राठोड़ी दो स्त्रियों से विवाह करना, उसके औरस सुर्जन आदि तीन पुत्रों की संतान का हाडों के कुल में तीसरा भेद 'हत्थाउत्त' पदवी पाना, भटसूर आदि नव भाइयों का निस्संतान मरना, हड्डाधिराज हरराज का सीसोदिनी आदि छः स्त्रियों से विवाह करना, सब रानियों के हल्लू आदि बारह पुत्र प्रकट होना, उनमें से तीसरे लोहराज के वंश की भविष्यत काल में समाप्ति की सूचना करना बडे हल्लू के जन्म से हल्लूपोते की पदवीवाले हाडों के कुल के चौथे भेद की सूचना करना, आधा राज्य पाकर बुन्दी को राजधानी बनाकर चामल

उस समय महाराणा खेता ने बातें करते समय बारहठ बारू की निस्बत फरमाया कि हमारे पिता महाराणा हम्मीरसिंह ने इनको अपना बारहठ बनाया है, और इन्हींकी माता बरबड़ी की बरकत से, जोकि देवीका अवतार थी, महाराणा के कब्ज़े में पीछा चीतोड़ आया, परन्तु यह बारू हमारा कियाहुआ अजाचक है. इसपर बारू ने कहा कि मैं राजपूतों को मांगनेवाला हूं और महाराणा के सिवाय मुझको कोई राज पूत पृथ्वीपर दिखाई नहीं देता इसलिये इनके सिवाय दूसरों से नहीं लेता, यह बात हाडा लालसिंह को बहुत नागवार गुजरी, परन्तु उस वक्त तो मौका न देखकर कुछ न बोला और जब अपने महलों में गया उस समय बारू को कोई सलाह-पूछने के बहाने से अपने पास बुलाया और एक मकान में बन्द करके कहा कि हम भी राजपूत हैं तुमको हमारे पास से कुछ लेना चाहिये-यदि नहीं लोगे तो हम तुमको सम झेंगे. बारू बारहठ ने देखा, कि इस वक्त मैं इनके कब्जे में हूं ऐसा न हो कि महाराणा साहिब मेरी मदद करें उससे पहले ही ये बेइज्जती कर बैठें, यह सोचकर उसने दिल में मरना ठानलिया और जवाब दिया, कि आप जो देवें वह मुझे इस शर्त पर लेना मंजूर है कि जो कुछ मैं दूं उस को पहिले आप लेवें यह बात लालसिंह ने मंजूर की, तब बारू ने एक भाट के लड़के को जोकि उसकी खिदमत में रहता था, कहा कि मैं अपना सिर काटकर तुझे देता हूं वह हाडा को जाकर देदेना, इस सेवा का एवज तुझको महाराणा देवेंगे (मशहूर है कि उस भाट के लड़के को महाराणा लाखा ने बारू बारहठ के कहने के मुताबिक चीकलवास गांव दिया) उस लड़केने पहिले तो इनकार किया परन्तु आखिर को बारू के समझाने से मंजूर किया, और बारू ने तलवार से अपना सिर काटडाला, उस लड़के (इस लड़के की औलाद के भाट उदयपुर के नजदीक चीकलवास गांव में मौजूद हैं) ने बारू के हुक्म के मुवा-फिक उसका मस्तक कपड़े में लपेट कर लालसिंह को जादिया, मस्तक देखकर लालसिंह को बड़ी चिंताहुई यह सारा वृत्तान्त उस लड़के ने महाराणा से जाकहा, इस पर महाराणा ने निहायत नाराज होकर बुन्दी को घेरलिया, और कई दिनों तक लड़ाई होतीरही, निदान जब बुन्दी का किला फतह न हुआ तो महारा णा खुद किले की दीवार पर जाचढे, जहां पर वे भीतरी लोगोंके हथियारों से मारेगये, लालसिंह को भी महाराणाकी सेना के शूरवीरों ने मारलिया और हाडा बरसिंह अपना प्राण बचाकर भागा, इस वक्त म हाराणी हाडी महाराणा के साथ सती हुई ”

इस इतिहास में मेवाड़ के इतिहासकर्ता कविराज श्यामलदास और बुन्दी के इतिहासकर्ता ठाकुर सू-र्यमल्लमें मत भेद हैं परन्तु हमारी समझ में श्यामलदास का लिखना सत्य है; क्योंकि इतिहास की जो सामग्री कविराज श्यामलदास को मिली वह सूर्यमल्ल को नहीं मिली थी तथापि इन दोनों इतिहासों में चाहे जिसको सत्य समझें हम इसमें विशेष हठ करना नहीं चाहते क्योंकि अन्तिम परिणाम दोनों का एक ही है-केवल बडा भेद इतना ही है कि मेवाड़ के इतिहास में लालसिंह का उसी युद्ध में माराजाना लिखा है और बुन्दी के इतिहास में लालसिंह का जीवित रहना लिखा है परन्तु कर्नल टॉड वगेरा बहुधा इतिहासकर्ताओं की सम्मति मेवाड़ के इतिहास से मिलीहुई है ॥

लाल१८४३२निक्किय सोकहु सु लखि, श्रोक१हु असुरहु अनेक ॥
ब्रुह्मिय जे चुक्कत वचन, उनकों हितगति एक ॥३१॥

षट्पात् ॥

सु सुनि भूप बरसिंह१८४३१ उपालंभहि अनुजहिं दिय ॥
खित्तल सुनतहिं खिज्जि स्वसुर मारन संधा लिय ॥
उज्झि मिलन१ आगमन२ स्वसुरगृह सनय३ असन४ सह ॥
मंडि विविध मोरछन दियउ रनहुकम दुराग्रह ॥
नासीरै रक्खि तोपन निकर गैनोली दिय दल गरद ॥
बरसिंह१८४३१नृपहु समुझाइ बहु हुव दुर्मन छोरी न हद ॥३२॥
उदासीन दल अप्प रक्खि तँहँ कहिय धर्मरत ॥
जो न टुलहि लेजाइ मरन१ मारन२ इच्छै मत ॥
उत टुल्लह २ इत अनुज २ वीर तो जुग२ हिं वचावहु ॥
इमकहि बुंदिय भ्रात चविय वर तुमुल रचावहु ॥
हड्डहि समत्थ २ तोपन हनहिं कुमरहि इम सुभटन कहिय ॥
तोपन अलातै लागिलगि तदनु दिसदिस पुर परिसरै दहिय ॥३३॥
रान बारहठ मरन सुनत अंतर अति सोचिय ॥
दयौ सुत प्रति लिखिदिगउ कियउ खेल हहु कुलोचिय॥

१घर में ही २ उरहना (ओलम्भा) ३ चंद्रसिंह ४ प्रतिज्ञा ५ छोड़कर ६ आगे. तोपों का ७समूह रखकर गैनोली नगर के ८ घेरा लगाया ॥३२॥ ९ कहा १० सुख११समर्थ१२ अग्नि. पुर के १३समीप की भूमि॥३३॥पुत्र के नाम १४पत्र१५ लिखा१६दुष्ट राजा ने१७बुरा किया

यहाँ अपने पुत्र के नाम महाराणा का पत्र लिखना लिखा सो अनुचित है क्योंकि महाराणा [illegible] पहिले ही देहान्त होचुका था और महाराणा भीमसिंह चित्तौड़ के राज्यासन पर बैठगये [illegible] करने को बूंदी गये थे और यहाँ [illegible] ने यह युद्ध [illegible] में होना लिखा सो [illegible] नहीं है क्योंकि मेवाड़ के इतिहासकर्ता [illegible], कर्नल टॉड, [illegible] इतिहासकर्ताओं ने इस युद्ध को बूंदी में होना लिखा है [illegible] अनुमानों से भी बूंदी [illegible] क्योंकि [illegible]

तू जो है ममतनय बैर बारूभव बालहु ॥
तब आवहु चितोर लहैं चारनगति लाल १८४।२ हु ॥
कुमरहिं कहाइ इम निजकटक पठयो खिल गैनोलिपुर ॥
लाल १८४।२ हु रचाइ तोपन लरन परन मरन मंडिय प्रचुर ।३४।

॥ दोहा ॥

हल्लू १८२।१ नृप तिहिंकालहो, खट्वागत ज्वरखीन ॥
चवि नृपकृत सुतचंद १८३।१ सौं, पठये स्वभट प्रवीन ॥ ३५॥
बाहिर १ तैं सौसिकैं बिरचि, कट्टतहुव ते क्रुद्ध ॥
पुर २ तैं लाल १८४।२ बरातपर, जोरयो तोपन जुद्ध ॥ ३६ ॥
इम जुज्झत हुव अब्दइक १, तजिय रान तनु तत्थ ॥
सुनि खित्तल ह्वै रान सब, जोधन बुल्लिय जत्थ ॥ ३७ ॥
बिगरयो तोपन पुरबरन, पग पग मग तिम पाइ ॥
कल्हि तुरंगन बीचकरि, हड्डहिं लैहिं गहाइ ॥ ३८ ॥

॥ षट्पात् ॥

यह कुमंत्र आलोचि विखम रजनी सु बहाइय ॥
सुनत बरातिनसौंह कलितें यह लाल १८४।२ कहाइय ॥

१ चारण की गति हुई लोही बालसिंह की होनी चाहिये "यह बारू बारहठ चारणों की सोदाबारहठ शाखा के मूल पुरुष और इस टीकाकार (बारहठ कृष्णसिंह) के सौलहवीं पीढी के पुरखा थे" २ सेना ३ शत्रुओं का ४ बहुत ॥ ३४ ॥ ज्वर से दुर्बल होकर ५ चारपाई पर पड़ाहुआ था ६ युवराज बनायेहुए राजा अपने पुत्र चन्द्र से कहकर ॥३५॥ ७ रतिवाह देकर ॥ ३६ ॥ ८ शरीर ॥ ३७ ॥ ९ शहर कोट (शहर पनाह) १० घोड़ों को ११ पकड़ा लेवेंगे॥३८॥ १२ विचार कर १३ प्रसिद्ध

रांत महाराणा जैसे महाराजाओं का आतिथ्य भी बुन्दी में सुगमता के साथ गैणोली जैसे छोटे ठिकाने में होना कष्टसाध्य है इसकारण बुंदी में ही हुआ होगा. तीसरा सूर्यमल्ल ने एक वर्ष पर्यंत इस युद्ध का होना लिखा सो भी बुंदी के लिये ही संभव है क्योंकि गैणोली जैसे छोटे नगरमें रहकर इतनेबड़े महाराजाधिराज से एकवर्ष पर्यंत युद्ध करना कैसे संभव होसकता है क्योंकि न तो गैणोली में ऐसा गढ था और न लालसिंह का इतना परिकर था कि वह वहां रहकर महाराणा से एक वर्ष पर्यंत लड़सके इत्यादि कारणों से कविराजा श्यामलदासादि का लिखना ही सत्य है.

ममसम्मुह *जामात आनदेहु न ÷पटु तुम अति ॥
क्यों हत्याबस करहु मरहु तुम टरहु +प्रसभ मति ॥
दुल्लहहु होत दिनकर उदय स्वसुरउक्त इम बचनसुनि ॥
सुभटन निवारि दै निजसपथ पनालिय लाल१८४१२हिं हननपुनि३९
नृपबरसिंह १८४१२ हु नियत[2] मरन तिनको बिचारि मन ॥
बुंदीसन चढि बहुरि उभय २ सांधक हुव अप्पन ॥
प्रबदिय[3] रानहिं प्रथम जई तुम १ न हम २ रहैं जिम्म ॥
हड्डन हारि हकाइ सम्मुख प्रबिसहु अगार इम ॥
बारू कविंद बदलै बहुरि भेर्म लहहु वपु तुल्य भर ॥
आसानकरहु हड्डन उपरि तो तुमसौं हम चकिततर ॥ ४० ॥
सुनि ममबिन्नति सदय जाहु निजगृह दुलहीजुत ॥
दुहिता बिच को दोस नारि तुमरी कुलीन जुत ॥
बरसिंह १८४१२ हिं इम बिदित खिज्जि बुल्लिय सठ खित्तल ॥
महिलाजित तुम मंद[10] मैं न तिम नियत[11] महाबल ॥
प्रभावति १८४१२ लत्त[12] सहि तू सभय रहत तिम न कुलनृप रहैं ॥
बरसिंह १८४१२ नयन इतनी बदत दवजग्गिय[13] जनु सब दहैं ॥४१॥
बुंदिपपति खिजि बदिय प्रथित[14] तावक[15] नृपत्वपन[16] ॥
जनकमाइ[17] जिम जाइ सीर[18] हंकिय १ पटुतासन ॥
सिंचिय २ खेतन सलिल[19] स्वकुल नारिन जीवन सम ॥

---

* जमाई को ÷ चतुर + हठ की बुद्धि से अपनी १ सौगंद शपथ) देकर ॥ ३९ ॥ २ निश्चय ही मारना जानकर. प्रथम राणा से ३ कहा अपने४ घर(चित्तोड़) में. फिर बारूकवीन्द्र के बदले में उनके ५ भार के बराबर ६ स्वर्ण लेलो ॥ ४० ॥ ७दया पूर्वक ८ स्तुति योग्य ९ स्त्रीजित १०मूर्ख ११ निश्चय ही तुम्हारी स्त्री प्रभावती की १२ लात (ठोकर). नेत्रों में अग्नि १३ जलने लगी "अग्नि शब्द पुल्लिंग है परन्तु लोक भाषा में स्त्रीलिंग से व्यवहार किया जाता है" ॥४१ ॥ १४प्रसिद्ध है १५ तुम्हारा १६ राजापन. तुम्हारे १७ पिता की माता ने चतुराई से १८ हल हांका था. खेतों में १९ पानी सींचा था उसके

तास उदर तवतात हुव सु कुलता न भजेंहम ॥
इतनी सुनाइ रानिहिं उचित भूप १ अनुज २ सत्थियँ भयो ॥
आदित्य चढ़त घटिका उभय ३ वारन चाव दुवरदिस लयो ॥ ४२ ॥
सह बरात सीसोद रोकि नंक्खिय पुरसम्मुह ॥
पानिप वीरन प्रसरि भयो भीरुन दुस्सह दुहँ ॥
लखि वरसिंह१८४१२ रु लाल१८४२ कोर सत्रुन पुर दव्वन ॥
हल्लु१८४१ भटगन सहित अभय हंक्किय निज थव्वन ॥
किय मिलत बाढ सगान वजिग लालहि१८४२खित्तलों आतलखि॥
वक्कसोहु अग्गो अभिमन्यु विधि अंतिकें तस वढिगो अनखि॥४३॥

दोहा ॥

सेसैं अरिन वरसिंह किय, रोध जयद्रथ रीति ॥
विरचि तुमुल जन्यो विचहि, जन्यँ प्रवीरनै जीति ॥ ४४ ॥
रतनसिंह रट्ठोर अरु, संभर रूपर सवेग ॥
दुलह१ सत्थ पहुँचे दुवरहि, गय२ रँग वज्जिय तेग ॥ ४५ ॥
इतरैं वरातहिं रोकि इत, सह वंचावद सेन ॥
रचि वरसिंह१८४१हु सिंह रन, अखिलाकरे जिम ऐन ॥४६॥

षट्पात् ॥

मिलि इम खित्तलकुमर लाल१८४२ स्वसुरहिं समीपलिय ॥
रतनसिंह१ रट्ठोर लाल१८४१ उर भल्ल दुसह दिय ॥
लाल१८४२ तुपक्क कर लौं सु रतन१ विनुपान गिरायउ ॥

उदर से तुम्हारा १ पिता हुआ था. छोटे भाई का २ साथी हुआ. दो घड़ी ३ दिन चढ़ने पर ॥ ४२ ॥ ४ थोड़े बरातों ५ पराक्रम ६ कैलाकार ७ न्याय ८ चोड़ों को ९ बरसिंह को. अभिमन्यु की भांति १० सेना से भी आगे ११ लांघ ॥४३॥ १२ बारात की सेना को बरसिंह ने जयद्रथ की भांति रोकी १३ युद्ध १४ बरात के १५ वीरों को विजय करके ॥४४॥ नहुवाय १६ रूपसिंह. दोनों के १७ हाथ से ॥ ४५ ॥ १८ अन्य १९ इकट्ठा ॥ ४६ ॥

पिसि हय ऊँधोपरत रूपर परलोक निरायउ ॥
लै कान अवधि पुंखन दुलह स्वसर स्वसुर हिय तकि हन्यों॥
हयभाँल लगि सु गलपारहै बामक सय भेदक बन्यों ॥४७॥

दोहा— परतपरत हय लाल१८४१२ पहु, छुट्टी संगि उछारि ॥
दुल्लह छत्तिय बेधि द्रुत, माहिप रान लिय मारि ॥ ४८ ॥
सुभट भूप बरसिंह१८४१२को, रन साहिम वलराम१ ॥
भट्टिय बीरमर रानभट, कटि दुवर आये काम ॥ ४९ ॥
पंद्रहसत१५०० इत१उतर परे, समर हट्ट१ सीसोदर ॥
लजि बरात चित्तोरलिय, बिगरिय व्याह विनोद ॥ ५० ॥
खित्तलसुत वय वरस खट६, नृपहुव लखपति नाम ॥
लिय पन बुंदिय लैनको, इहिं सिसुपन उद्दाम ॥ ५१ ॥
वपु नरेस बरसिंह१८४१२कैं, इत छद६घाय लगि अंग ॥
लिय पाटव उपचार लहि, भायो नव रन भंग ॥ ५२ ॥

परलोक को १समीप लिया. २पुंखारों को कान पर्यन्त लेकर दुल्लह ने ३अपना तीर श्वसुर के हृदय में तक कर मारा. सो घोड़े के ४ललाट में लगकर उसके गले में निकल कर बाएं ५हाथ को भेदनेवाला हुआ ॥४७॥४८*॥४९॥५०॥ ६लाखा नामक ७ प्रतिज्ञा ८निरंकुश॥५१॥ ९नैरोग्यता १०इलाज करने से॥५२॥

---

*महाराणा खेत्रसिंह और हाडा लालसिंह के युद्धमें बंबावदा के राजा हल्लू के बीमार होने के कारण उस के युवराज चंद्रराज को लालसिंह की सहायता पर भेजना लिखकर ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) ने इस पंचमराशि के तेरहवें मयूख के ४२ वें छंद में संवत् १४११ में हल्लू का देवी को अपना मस्तक चढादेना लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि उदयपुर के कविराज श्यामलदास ने कई प्रमाणों सहित मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद में महाराणा खेत्रसिंह के इस युद्ध का संवत् १४३९ लिखा है सो बीकानेर के नेणसी मुहता की ख्याति आदि कई इतिहासों से भी उक्त संवत् ही सिद्ध होता है इसकारण सूर्यमल्ल के लिखे हुए इस समय को हम असत्य मानते हैं इसके अतिरिक्त कुंवर खेत्रसिंहकी सगाई महाराणा हम्मीरसिंह के समय में बुंदी के राव हामा का करना लिखकर सम्वत् १३९३में हामा का राज्य छोडकर अपने पुत्र वरसिंह को राज्य देना लिखा सो भी नहीं बन सकता, क्योंकि १३९३ में तो खेत्रसिंह का जन्म ही नहीं हुआ था, किंतु संवत् १४०० के पीछे महाराणा हम्मीरसिंह ने चित्तोड़ पीछा लिया जिस पीछे खेतसिंह का संबंध होना संभव होसकता है सो इस भूल का कारण या तो बड़वाभाटों की लिखाईहुई ख्याति से अथवा बुंदी की पिछले समय की लिखीहुई ख्याति से प्राचीन लेख का कल्पित संवत् लिखना पायाजाता है ॥

लाल१८४।२ स्वसुर जो जयलह्यो, सुगिनि पराजय सोहि ॥
मारक मैं जामातको[1], दुमन रह्यो इम द्रोहि ॥ ५३ ॥
कृष्णाकुमरि जिहिं निजकनी[2], पावक[3] करत प्रवेस ॥
आचर वर तीरथ अखिल, लाल१८४।२ दहिय अघ लेस ॥५४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वरहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यव्याख्यानवेलाव्याहार्यस्वानुजलालसिंह१८४।२ सहितबुन्दीनरेन्द्रबरसिंह १८४।१चरित्रे प्रथमप्रणीतपाणिपीडनचतुष्क ४ हायनपञ्चक ५ पूर्वसमुद्भावितलक्षाऽभिधानस्वौरसीक १ पुत्रराणाकुमारक्षेत्रलगैणोलीपुराधीशहड्डलालसिंह१८४।२ पुत्रीपरिणायन १, चतुर्थ ४ दिनसहजग्धिसमासीनापानमदपरवशराणाभटराष्ट्रकूटरत्नसिंह१हल्लू१८२।१जीवनानिमित्ततदुपयामसमाख्यापन२,प्राक्तनतरडेडुरीपृथापरिणायनप्रक्षिप्तगर्हणाचारणबारू २ तत्समर्थन ३, द्वय२श्लाघोद्युक्तरूपकुमारक्षेत्रलजकुट२जल्पितानुमोदन४,ज्ञाततूष्णीकबरसिंह१८४।१लाल १८४।२ सौदर्यमल २ तत्प्रतोलीपालचारणलोहठपृथ्वीराज१७६।१ सैन्यपाल १७६ रत्नसिंह १७६ वङ्गदेव १७९ हल्लू १८२।१प्रभृतिस्वीयस्वामिसामर्थ्यसमुत्कर्षपुरस्सरनानादृष्टांतदुर्धर्षकोटिवाक्यजन्यादिजनप्रसभापातितनिजनिन्दानिराकरण ५, तदनन्तरस्वी

---

1 जमाई का ॥ ५३ ॥ अपनी 2 पुत्री को 3 अग्नि में ॥ ५४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा कहने के समय के वचनों में अपने छोटे भाई लालसिंह सहित बुन्दीनरेन्द्र बरसिंह के चरित्र में प्रथम चार विवाह करने पर और पहले जन्मेहुए पांच वर्ष के लाखा नामक औरस पुत्र होने पर भी राणा के पुत्र क्षेत्रसिंह का गैणोली पुर के अधीश हाडा लालसिंह की पुत्री से विवाह करना, चौथे दिन भोजन पर बैठे हुए, मतवाल (पानगोष्ठी) में मद्य के वशीभूत राणा के उमराव राठोड़ रत्नसिंह का हल्लू के जीवन में इस विवाह को मुख्य कारण जतलाना, प्राचीन

कृततदधिकशौर्यौ १ दार्य २ लालसिंह १८४।२ राणाशौर्यौ१दार्य२ साम्याभावप्रत्ययप्रक्षिप्तप्रतिमोपरिशीर्षशातनशपथबारूस्वककर्तनौचित्यसमर्थन ६, प्रस्तुतप्रत्यवसानप्रतीपप्राप्तपृतनाप्रपातजन्यजनप्रच्छन्नचारणबारूकरकृत्तस्वशीर्षलालसिंहा१८४।२ र्थप्रेषण७,श्रुततद्वृत्तराणाहम्मीरबारूवैरवालनवर्जितस्वसूनुसमागमसंरोधन ८, हायनैक १ जीर्णज्वरजर्जरहल्लू १८२।१ प्रबोधितपुत्रचन्द्रराज१८३।१ प्रेषितभटसौप्तिकादिवहीरणजन्यजनव्यग्रीकरण९, कृतैका १ ब्दकलहप्रेष्यमुखप्रज्ञातपितृपरासुत्वप्राप्तचित्रकूटाधिपत्यपुनरागत्यबुन्दीशबरसिंह १८४।१ प्रबोधप्रत्यनीकराणाक्षेत्रलश्वशुरशातनार्थगैणोलीदङ्गाभिमुखस्वसादिसैन्यसम्पातन१०, बरसिंह १८४।१ संरुद्धस्वसेनरत्न १ रूप २ सुभटद्वय २ सहितराणाक्षेत्रलश्वशुरसहसंयो

डिङ्डुर वंशवाली पृथा के विवाह से क्षेपक निन्दा को चारण बारू का पुष्ट करना, दोनों के प्रशंसा करने पर दुल्लह कुमर क्षेत्रसिंह का दोनों के कथन को अनुमोदन करना, बरसिंह और छोटे भाई लालसिंह को मौन धारण किये देखकर उनके पोलपात चारण लोहठ का पृथ्वीराज, सैन्यपाल, रत्नसिंह, वा देव और हल्लू आदि अपने स्वामियों की सामर्थ्य की श्रेष्ठता को आगे करके अनेक दृष्टान्तों से दुर्धर्ष कोटि के वाक्यों से बरातके लोगोंसे हठसे कीहुई अपनी निन्दाको दूर करना, जिस पीछे उनकी उदारताको स्वीकार करके लालसिंहका राणाकी वीरता और उदारतासे बराबरी न करनेकी प्रतीति करानेवाली गढी हुई प्रतिमाके ऊपर मस्तक काटनेका शपथ खानेवाले बारूके लिये अपना मस्तक काटने का समर्थन करना,भोजन करते समय भी उठकर सेना के पड़ाव में पहुंच कर बराती लोगों के छाने चारण बारू का अपने हाथ से मस्तक कांटकर लालसिंह के पास भेजना, यह वृत्तान्त सुनकर राणा हम्मीर का बारू के बैर को लिये विना अपने पुत्र को वापिस आने से रोकना, एक वर्ष के जीर्णज्वर से दुर्बल हल्लू के समझाये हुए पुत्र चन्द्रराज के भेजेहुए वीरों का रतिवाह आदि युद्धों से बरात के लोगों को व्याकुल करना, एक वर्ष तक युद्ध करके दूतों द्वारा पिता का देहान्त सुन, चित्तोड़ का स्वामिपन पाकर और फिर आकर बुन्दीश बरसिंह के समझाने के विरुद्ध राणा क्षेत्रसिंह का अपने श्वशुर के मारने के अर्थ गैणोली नगर के सन्मुख अपनी घुड़सवार सेना

धन ११, सोढरत्नैक १ रोपतुपक१ तुरगन्युब्जापात २ संस्थापितर त्नं १ रूप २ जामातृजिम्हगविद्धमूर्द्धपतत्सप्तिसादिलालसिंह १८४। २ कासूकृतकालखञ्जजामातृच्छेत्रलसंहरण१२, बुन्दीशसुभटदाधि मबलराम १ राणामवीरभट्टिवीरमदेव १ परस्परप्रहारनिपातन १३, सार्द्धसहस्र १५००स्व १ पर २ सुभटशूरशय्याशयन १४, ज्ञातलाल १८४।१ कासूलीढप्रभुप्राणम्लानमुखजन्यजनविज्ञापितपोतत्वप्रति श्रुतबुन्दीविध्वंसच्छेत्रलकुमारलक्षपतिचित्रकूटाधिपत्यप्रापण १५, प्राप्तक्षतषट्क ६ बुन्दीशवरसिंह १८४।१ पटूपचारपाटवप्रसाधन १६, जामातृमरण १ सुतासहगमन २ संकुचितप्रायश्चित्तपरलालसिंह १८४।२तीर्थाचरणं १७ द्वादशो १२ मयूखः ॥१२॥

आदित एकोनषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥१५९॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

को डालना, बरसिंह से अपनी सेना के रोके जाने पर रत्नसिंह और रूपसिंह दोनों सुभटों सहित राणा क्षेत्रसिंह का श्वशुर के साथ युद्ध करना, रत्नसिंह के एक घाव को सहकर बन्दूक से उसके मरेहुए घोड़े के अधोमुख गिरने से नीचे दबकर रूपसिंह के मरे पीछे जमाई के बाण से बेधेहुए मस्तकवाले गिरतेहुए घोड़े के सवार लालसिंह का बर्छी से कलेजा बेधकर जमाई को मारना, बुन्दीश के उमराव दाधिमा बलराम और राणा के वीर भाटी वीरमदेव का परस्पर के प्रहारों से माराजाना, अपने और पराये पन्द्रह सौ वीरों का काम आना, मलिन मुखवाले परात के लोगों से लालसिंह की बर्छी से अपने स्वामी का प्राण जाना और बुन्दी का नाश होना सुनकर बालकपन में क्षेत्रसिंह के कुमर लाखा का चित्तोड़ का आधिपत्य लेना, छः घाव पायेहुए बुन्दी के पति बरसिंह का उत्तम इलाज, कराने से नैरोग्य होना, जमाई के मरने से और बेटी के सती होने से सिटाकर प्रायश्चित्त करने के लिये लालसिंह का तीर्थ यात्रा करने का बारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १२ ॥ और आदि से १५९ मयूख हुए ॥

पीछैं खित्तल[1] पट्टपति, रहिय लक्ख सिसु रान ॥
तक्क्यो जिहिं मृत तातको, नृप बरसिंह१८४।१ निदान[2] ॥ १॥
सबनकहिय बुंदीस जो, बढि[3] रोकैं न बरात ॥
गैनोलीपति संगिकरि, तो न मरैं तुमतात ॥ २ ॥
मन्नि हठ्ठनृप मंतु[4] इम, लक्ख रान हठलग्गि ॥
लिय पन बुंदिय लैनकों, जिहिं सिसुपन रिसजग्गि ॥ ३ ॥
कहिय दंतधावन[5] करौं, बुंदिय कल्हि बिगारि ॥
तो खित्तल ममतातहै, नहिं असती तस नारि ॥ ४ ॥

षट्पात् ॥

पंचन यह पन जानि कहिय बुंदिय बहुकोसन ॥
हठी लरन पुनि हठ्ठ रचहु वय बस यह रोस न ॥
लंघि[6] तदपि नृप लक्ख छुमन[7] कछिय दूजोरदिन ॥
तब किय कपट बितानँ बालवंचर्न[8] मिलि मंत्रिन ॥
बुंदिय सदुर्ग कृत्रिम[9] बिरच्चि भट बिच परिचय[10] रहित भरि ॥
तिन कहिय सज्जि तोप रु तुपक रविनुगोलन बाहहु बिथरि[11]।५।
[12]केतिन तत्थ यह कहिय बालनृप कुतुक[13] बिधायक ॥
कोऊ आश्रितकहहु हठ लिहिंदुग्ग सहायक ॥
तनुजहिं दै जबतजिय राज्य हलुव१८२।१ मरिवे रन ॥
कुंभकरन१८३।२ तसकुमर मन्नि अग्रज अवनीमन ॥
अप्पबल भिन्न खट्टन[14] इला रान पटा लहि तँहँ रह्यो॥
भ्रातन समान जिहिं भाग दिय चंद्रराज१८३।१ सोहु न चह्यो ॥६॥

दोहा ॥

---

१ लाखा २ कारण ॥ १ ॥ ३ बर्छी से ॥ २ ॥ ४ अपराध ॥ ३ ॥ ५ दातुन ॥ ४ ॥ ६ लंघन (उपवास) करके. छल से ७ डेरे खड़े किये. बालक को ८ ठगने के लिये ९ बनावटी. विना १०.पहिचान के ११ फैलाकर ॥ ५ ॥ १२ कितनेही लोगों ने १३ खेल के लिये. जुदी भूमि १४ उपार्जन (खाटवां) करने के लिये

चर्मरावतीपारमान्तप्राप्तपितृ १ मातृ २ प्रसादसुख्यीभावहड्डाधिरा-
जसमरसिंह १८।१७ चालुकीसुज्ञानकुमारी १८।१२ प्रमुखराज्ञीत्र-
यो ३ पयमन १०प्रत्येकराज्ञ्यौरसनरपाला१८।१दितत्पुत्रचतुष्क
४ समुद्भवन ११रणस्तम्भरणसमयश्रुतपरतटप्रान्तभिल्लोपद्रवहड्-
डाधिराजसमरसिंह १८।१२ शवरसहस्रत्रय३००० व्यापादन १२कृ-
तनिर्भयपरतटप्रान्तकेथोरयादिपुरन्यस्तरक्षकप्रत्यागच्छन्नरेन्द्रपुन
र्युध्यमानभिल्लशतनवक ९०० संहरण १३ नृपसुभटशतत्रय ३००
शूरशय्याशयन१४ हड्डेन्द्रविध्वस्तपल्लीककौटिकनामपुलिन्दपलाय
न १५ प्राप्तजज्जावुर १ कोटा२खर्जूरी३कराजकुमारहरपाल १८।
२ जैत्रसिंह १८।३ डूंगरसिंह १८। ४ भाविवंशहरपालपौत्र २।५
जैत्रावुत्त २।६ खर्जूरीको ३।७ पटक्त्रय३प्राप्तिसूचन १६ यवनरा-
डल्लावुद्दीन ११ चित्रकूटराजराणालक्ष्मणसिंहपार्श्वहाम्मीररित्न-
सिंह१८३ मार्गण १७ शीर्पोद्दगाजतदनङ्गीकरण१८प्रतिश्रुतशरणा
गतलाणाराणाराष्ट्रजिगीषुप्रतिष्ठासुम्लेच्छराजप्रेरितसैन्यान्तरमेदपा

नदी के पार के प्रांत को लेकर माता पिता की प्रसन्नता से सुख्यभाव को प्राप्त करके हड्डाधिराज समरसिंह का सोलंखिनी सुज्ञान कुमारी आदि तीन रानियों से विवाह करना, प्रत्येक रानी के उदर से नरपाल आदि उसके चार पुत्रों का जन्म होना, रणस्तम्भ के युद्ध समय में चामल नदी के पार के देश में भीलों का उपद्रव सुन कर हड्डाधिराज समरसिंह का तीन हजार भीलों को मारना, नदी के पार के प्रान्त को निर्भय करके 'कथूणी' आदि पुरों में रक्षक स्थापन करके पीछे आते हुए राजा से फिर युद्ध करने-वाले नौ सौ भीलों को मारना, राजा के तीन सौ सुभटों का मारा जाना, हड्डेन्द्र की विनाश कीहुई पाल से कोटया नामक भील का भागना, जज्जावर १ कोटा २ खजूरी ३ पाकर राज कुमार हरपाल–जैत्रसिंह–डूंगरसिंह के आगे होनेवाले वंश को 'हरपालपोता, जैतावत्त, खजूरीका' इन तीन पदवियोंके पाने की सूचना करना, पादशाह अलाउद्दीन का चित्तौड़ के राजा राणा लक्ष्मणसिंह के पास से हम्मीर के पुत्र रत्नसिंह को मांगना, उसको सीसोद राजा का अस्वीकार करना, पीछे सुनकर शरणागत की रक्षा करनेवाले राणा के राज्य को जीतने की इच्छावाले गौरव से म्लेच्छराज की भेजीहुई

हुव सु रान हम्मीरको, सहआदर *सामंत ॥
वीर सु गो न बरात विच, अरहन विरस उदंत ॥७॥
इत१ मृत हुव हम्मीर१ अरु, उत२ खित्तल२ वस आयु॥
खित्तैं निज प्रारब्धवल, जँहँ सुधाहु न न जायु॥ ८ ॥
रान लक्ख तब भट्ट रहि, लिय पन बुंदिय लैन ॥
कुम्भ१८३।२हिँ तँहँ प्रतिभट करन, सीसोदन किय सैन२ ॥ ९ ॥

षट्पात् ॥

कुम्भकरन१८३।१तँहँ कहिय स्वीय संभट सीसोदन ॥
नृप सिसुत्व सम निरखि इष्ट सब्बहिँ लहि ओदन३ ॥
हेतु नाँहिँ यँहँ हड्ड१ नाँहिँ सीसोद निहारहु ॥
कृत्रिम बुंदिय कलह विजय रपि दे सु विचारहु ॥
इक१ हड्ड मैंहु लिन्नौं इहां हिंगुलु१८०।९जिम आश्रय हरखि ॥
ध्वंसनैं अभीष्ट मम तो धरहु कृत्रिम बुंदिय करकरखि ॥१०॥

दोहा ॥

सिसु लखि जो सम्मुख्खाइवो, नृपको लो गहि नीति ॥
इतर भटन रक्खहु इहाँ, पालहु जो इत प्रीति ॥११॥

षट्पात्

सीसोदन लर्भसह मँसभ वल कुंभ१८३।२ पठायउ ॥
सो कछु तोपनसहित अनखि कृत्रिम गढ आयउ ॥
गोले न दये गेल पटाकि तोपन तब पैसे ॥
किय सम्मुह जयकरन अखिल संग्रह सजि ऐसे ॥
सत्यसौंकह्यो तुपकन सबहि गोली दुवरहुवर गेरिकैं ॥
इक१ रानटारि मारहु अरिन हित बुंदिय जय हेरिकैं ॥१२॥

॥ ६ ॥ * उमराव ॥ ७ ॥ ८ ॥ १ दुकानदारी करनेवाला २ इशारा ॥ ९ ॥ ३ अन्न ४ नाश अर्थात् मुझे ही मारने की इच्छा है तो ५ हाथ खींच कर ॥ १० ॥ ६हर्षा (मसखरी) के साथ ७ हठ से ॥ १२ ॥

दोहा ॥

लरन संग पठवनलगे, इतरहु सुभट अनेक ॥
कुंभ १८३।१ बहुत मैंही कहि रु, आयो न लयो एक ॥१३॥

षट्पात् ॥

मनबिचारि हठ भरन सत्थ कुंभ१८३।१हु निज सज्जिय ॥
रुक्खि चढत सिसु रान बंब१ आनक२ उत बज्जिग ॥
गोलन बिनु नालिगन चले सीसोद चलावत ॥
नगये जोलौं निकट इतहु तोलौं तिम आवत ॥
लहि ढिग बचाय सिसु लक्खकौं दहन तोप१तुपक्कन२ दगिय॥
ताम्रपर्न बिद्ध नर१गज२तुरग३लोटि खुत्थि लुत्थिन लगिय॥१४॥

दोहा ॥

सोई होतहि इक१ सकल, सहँस१००० चमूँ इक१संग ॥
गो भजिहू रहि रानगज, जुत खिल बल तजि जंग ॥ १५ ॥
कढि गढतैं सु१८३।२हु असि कराखि, परयो सभट तसपिट्ठि ॥
सावधान सीसोदव्है, हुतहि मुरे धारदिट्ठि ॥ १६ ॥

षट्पात् ॥

किते कहत यँहँ कुंभ१८३।२ कामआयउ तिलतिलकटि ॥
जंपहिं कति यहजानि रान जननी सिराह रटि ॥
स्वभट१ सूनु२ समुझाइ वीर यह कुंभ१८३।२ बचायउ ॥
रक्खत तदनु रह्यो न अलंखि बंबावद आयउ ॥
ज्वरखिन्न जनकं हल्लू१८२।१हु जिहिं अंसं थप्पि लिय लाइउर॥
नृपराम२०३।४लखहु कुलरीति निज पहु हहुन पानिपं प्रचुर॥१७॥

दोहा ॥

---

१३ ॥१नगारे २ढोल ३तोपें और बन्दूकें ४लाल होकर ॥१४॥१५॥१६॥५ कहकर ६जिसपीछे ७ क्रोध करके ८पिता ९कन्धा १० हे राजा रामसिंह! ११ पराक्रम १२बहुत ॥१७॥

कृत्रिम छुंदिय ढाहि किय, रुचि भोजन इत गन ॥
इत रहोरन अघ उदय, पिक्खहु *निपति प्रमान ॥ १८ ॥

प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सचरणागद्यम् ॥

पहली अठी खेड़रोठाकुर राठोड़ वीरमदेव सळखाउत भतीज जगमालरोकाढियो श्राम सेलावारा साँगळिया ठाकुर राणंगदेवरे वास आपरी पूर्वपत्नी चावोड़ी १ सहित देवराज १ प्रमुख आपरा च्यारि४ही पुत्रानूं राखि तिकणारी पुत्रीनूँ विवाहि साथलेर सिंधु देसरै अंतर्गत भाड़ंगनेररा जोइयाँ रै जाइ आश्रितरहियो ॥

सो उठारै अधीस दलैनामजोइये आपरा वैभवसमेत आधीश्र वनीं देर आगैं कीधो आपरावचावणारो उपकार बिचारि बडाआ-दररैसाथ केलियो तोभी महामूढ वारूणीरैवसीभूत अनेक उपद्रव मचाड़ ऊवटैही वहियो ॥

उठैही इणारै साँगळियाँणी मैं पुत्र चूँडारोजन्महुवो जिकणारीही वधाईमैं जाणौं ढोलां रैं आँटैं जवनांरी निमाजगाहरा फरासवढाइ १कवरांरैमाथै वाराहविणासिर दलारा धावडनूँमारि३एक१दुर्ग उपेतैं आधीहूँ अधिक इळा अपणाइ४ अपराध संग्रहमैं उधारि न राखो ॥

जरैं स्वामीरा सम्मत बिहूणाँ भी जोइया जिकणानूँ मारणा चंलाया जठैजठैही दलै उणारोकीधो उपकार चींताड़ रोकियाँ केडे आपरो जामाता मारिलीधो तोभी समस्तहूँ सहणीरी भाखी ॥१९॥

देऊनाम दलारीपुत्रीरा पतिरो प्राणलीधो जरैंतो जोइयाँ जमाईरो वैरवाळणरेकाज आपरा प्रभूरैप्रच्छन्न प्रहररैप्रभात वीरमदेव

* निश्चय ॥ १८ ॥ १ आदि २ आधीन ३ बिना मार्ग ४ निमाज पढने की जगह (मसजिद) में सूवरों को ५ मारकर. ६ दूध चूँखनेवाले बालक को ७ सहित ८थाकी ९बिना १०पीछे ११जमाई को १२सहन करने के लिये कहा ॥१९॥

नूँ जाइघेरिलियो ॥

जठै वढणा१ *चाढणा २ नूँ बुलावणारो वंब बाजियो सुणि माँ गळियाँणी नालिकेरा माथारो उसीसो हुवो आपरो वामेतर वाहू अवेरियो ॥

हाथकढताँही निद्रानिवारि सस्रादिक संगररी सामग्रीसँ सज्जहोइ उणहीसमय सळखाँउत वीरमदेव सन्नाधि बड़वारी पीठिआयो॥

अर आपरी रजपूताँ उपेत पाहुणाँ नूँतो मानणारो दुंदुभी दिवाइ बडवेग साम्हाँ चलायो ॥ २० ॥

जिणसमय राठोड़ चंद्रहासँ चलावणामैं कुमीं न कीधी परंतु महापापाँरा करणहारतो श्री परमेस्वररा प्रपंचमैं जीतीहूँ न जावै॥

जिणथी स्वतंत्र संभवसूँ एक आपरा आलयहूँ काढिदेणरो उपकार करि जिकणरा सीसाँमैं सहियो न जाइ इसड़ा अनेक अनर्थ कुमाइ मनमत्ते वहै तिकणारो अंततो इसड़ो खटावै ॥

जिणकारण जुड़ताँही अनेकाँ माथै वारहोइ संगरसैं खटाम आपरा अनीकरा उत्तंसंग उडता जोइ जोइयाँपहली आपरी सिखाई घोड़ी सन्नाधिनूँ गेहररा ढोलरै नाचलगाइ अरिनूँ आवत्तकरि समीपलीधो ॥

अर धीरण१हाँसू२अरड़कमल्ल ३ जीवराज ४ वीजावैरिचाँनूँ वाढै चलावता समीपजाइ जगमालरेणानै काढिदेणरा एक१उपकार माथै खँमिया आपरा अनेक प्रत्युपकार चीताइ आवर्त १ प्रमुख

---

* मरने मारने को १ उपधान (तकिया) २दहिना हाथ ३ समेटा ४ सलखा का पुत्र. सन्नाधि नामक ५ घोड़ी की पीठ पर चढा ६ नगारा॥२०॥ ७वज्ह ८संसार में ९ जन्म सफल करके; अथवा यश सहित १० बदले में; वा प्रत्युपकार में; ११ स्वतन्त्र चले. अपनी सेना के १२ मस्तक १३ वश (काबू) में १४ तलवारों की धाराका स्वाद चखातेहुए १५सहन कियेहुए १६ स्मरण कराके १७भौंर कुंडा (गोलाकार घूमना) आदि

अनेक *अनुकरणांरा नाचकरती × अर्वतीनूँ विश्रामरो बोलदेर जोइये धीरण राठोड़रैकंठ खड्गरो आघातदीधो ॥ २१ ॥

धीरणरा पाणिरा प्रहारणांहूँ बीरमदेवरो मुंड अछंट उडिपड़ियो तोभी राठोड़रो रुंड अनेक म्लेच्छाँरा मुंड भेटाँरा झुंडरै उपहार करि नीठिनीठि चेष्टा बिहूँण थियो ॥

सो सुणताँही तिणाही अवसेस तमीरा अंधकारमैं माँगळियाँणी स्वकोपसुत चूँडासमेत आपरी वसीरो एक १ जाट ओठीपै साथ आयो तिकणरै बाँसैत बैठि बडैवेग देसरो मार्गलियो ॥

देसमाँहि आवताँही ओठीनूँ सीखदेर बिपत्तिरा मैहार्णवमैं मैग्न माँगळिपाँणी पुत्रसहित बेसरो बिपैर्यासकारि कैराऊ ग्रामरा ठाकुर रोहड़िपाबाँरहठ आल्हारै बास जाइरही अर थोड़ादिनाँमैं बहोविस्वासरैसाथ मैहानसरी मालिकहोइ चारणारी चाकरीमैं चितलगाइ चातुराईरी रीभ चही ॥ २२ ॥

अठी वीरमदेवनूँ जवनाँरा मारियाजाणि ग्रामसेनावाहूँ चलाइ राठोड़ गोगै वीरमदेवोत आपरा बापरा वाढणाहारनूँ बिसाँरि बि

*अनेक प्रकार के नाच करतीहुई×घोड़ीको ठहर ने के बोल देकर ॥२१॥१हाथ के २ दूर जापड़ा (उत्तम प्रहार के होने से दो टुकड़े होकर खड्ग के रक्त की छांट नहीं लगे उसको मरुभाषा में अछंट कहते हैं) ३ भेट. चेष्टा ४ विना ५हुआ. बाकी की ६ रात्रि के अन्धकार में ७ अपने पुत्र ८ बसती का ९ ऊंट पर "ओठी नाम ऊंट के सवार का है परंतु यहां लक्षणा से ऊंट का ग्रहण किया है" १०ऊंट पर बैठकर ११ वडे समुद्र में १२ डूबीहुई. वेश १३ बदलकर १४ आल्हा नामक रोहड़िया बारहठ शाखा के चारण के *केराऊ नामक ग्राम में जा रही १५ रसोई की ॥२२॥ पिता के १६ मारनेवाले को १७ भूलकर

*इस गांव का नाम काळाऊ भी प्रसिद्ध है जिसके प्रमाण में स्वयं आल्हा का कहा एक दोहा है ॥

दोहा ॥ चूंडा नावे चीत, काचर काळाऊतणाँ ॥ भड़ थायो भै भीत, मंडोवररामाल्हियां ॥१॥

मंडोवर लिये पीछे चूंडा आल्हा बारहठ को भलगया था जिसपर आल्हा ने चूंडा के नाम यह दोहा लिखभेजा था जिसपर आल्हा का वडा मान बढ़ाया गया ॥

१ शब्द स्त्री लिंग है परंतु लौकिक में पुल्लिंग से व्यवहार किया जाता है इसकारणसे पुल्लिंग लिखा है.

नाँही अपराध *भाजडमैं शीत संकटरैहेठै सपत्नीकसूता जोइया दलानूँ जाइ हणियो ॥

सोभी आततताइनूँ उबारि वापरो बचावणहार वाढियो तोभी अद्वितीय २ वारँ हुवा सुणि किताक कविलोकाँ तिकणराही प्रहाररो प्रकर्षणों भणियो ॥

जूँड़ा १ जोड़ाँ २ पर्यंक ३ पेवणी ४ पाँत्र ५ पुंजँ कटि करवाँल पुहवीमैं पैठो तोभी मंतु बिहूण जनकरो मिल मारणमैं म्हाँरोतो प्रन आघातरो उत्कर्ष नम्हानैं ॥

पहै जिणनूँ जिसड़ी दीसै सो आप आपरा अन्तहकरणमैं इसड़ी ही गहानैं ॥२३॥

जिणकेड़ै जोइयाँरी बरात आइ दलारो मरणसुणि तिकणनूँ महीदेर बँसैलागि गोगानूँ मारगमैंही जाइलीधो ॥

अर आपसमैं चन्द्रहास चखाइ दो २ ही तरफरा प्रवीराँ उठैही देहरो त्याग कीधो ॥

अठी बारहठ आल्है किताककाळमैं माँगळियाँणीनूँ बीरमदेव री जोड़ायत जाणि तिकणरा पुत्र चूँडानूँ द्वादस१२ ग्रामाँरा अधीस आपरा जजमान ईंदा पड़िहाररी पुत्री बिवाही ॥

अर ईंदाँहीं आपरा जमाई रै साथहोइ पहली हाडानरेस हालू १८२११राजीतिया ब्रह्महत्यारा करणहार पड़िहार राजाहम्मीरनूँ बुरै हवाल काढि राव चूँडानूँ मंडोउररो महीप करि एकता निबाही॥२४॥

*भगने में भय पावेहुए अपनी स्त्री सहित १ छकड़े (गाडी) के नीचे सोयेहुए २मारा ३*वधोद्यत (मारनेवाला) ४प्रहार ५ श्रेष्ठता कही ६ जूआ (बैल जुतने का काष्ठ) ७ स्त्री पुरुष दोनों ८ चारपाई ९ चक्की और १० थाली के ११ समूह कटकर १२ खड्ग १३ भूमि में घुसगया तो भी विना १४ अपराध. प्रहार की १५ अधिकता. जिसको १६ जैसी दीखे वैसी १७ कहै ॥ २३ ॥ १८ दीक्षा करके १९ विवाहिता स्त्री २० बुरी तरह ॥ २४ ॥

*श्लोक ॥ अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः । क्षेत्रदारापहारी च षडेते ह्याततायिनः ॥१॥

जरैं हम्मीरतो जैसलमेररा भाटियाँरी सीमामैं बारू१टेकरे २ नाम नगर जाइ निवासकियो ॥

पछैं तिणरोही बंस बघड़ाउतताँरो बिध्वंसकरि सोही हड्डाधि-राजरो स्वसुरकुळ नागोध१ ऊँचाहेड़ा२ पर्यंत पूर्वरोप्रांत दावि उ-ठीही प्रवर्त्तथियो ॥

इणरीति हम्मीर कढियाँकेड़ै राठोड़ रावचूँडो बीरमदेवोत मंडो उरनगरमैं आपरी राजधानी जमाइ रहियो ॥

गाधिपुर छूटाँपछै इणसमयसूँहीं फेर राठोड़ाँ प्रतिदिन बर्द्धमान राजपाइ चीतोड़१ नरउर२ आमेर३ अजमेर४ पाटण५ दसोर ६ बेवावदा७रै समान भूपभाव गहियो ॥ २५ ॥

दोहा ॥

लीधो मंडोवर लड़े, इम चूँडैनृप एंण, ॥

पुत्र सता१रणमल२प्रमुख, जणिया चउदह१४जेण॥ २६ ॥

सचरणगद्यम् ॥

जिणसमय अठी म्हाँराबंसरा बिरोचन मिश्रण चंडकोटिरा कुळमैं प्रपितामह बिजैसूर मंडोउरथी आथमणीदिसा बाढमेर १ कोटड़ा२ कनैं बोधन्यापी१ भाद्रेच२ नाम नगर निवासकरै जठै खड़रो महादुकाळ पड़ियो जाणि आपरी बसीरा लोकाँसहित छ-कड़ाँमैं भारघलाइसकुटुंब सिरोही१ जाळोर२ गुजरात३रै काँक ढंधै तृण नेपै देखि आइरहिया ॥

जठै सखहियाँरा बारहठ बाँटी समुद्रसिंहरा साँसण हूँता जि-कण सुणताँही मिलणनूँ डेरैआय समतारा गिनायत जाणि प्रीति

१जव२पे गूजर, जिनकी कथा आगे आवेगी३नाश४कन्नोज५चढताहुआ (बडा) ६मंडोवर में चूंडाकाराज्य होने का सम्वत् मारवाड़ के इतिहास में१४५१लिखा है सो इसग्रंथ के लिखेहुए संवत् से नहीं मिलता७राजापन॥२५॥७इस चूंडे ने८ आदि॥२६॥९तृण का१०सीमा पर११उत्पन्न पैदाइश१२बाटी शाखा के चारण.

रा पेचमें[1] गाढा गाहिया ॥

वाटी समुद्रसिंह आपरी सीमाँमें वसीरा[2] लोकाँसहित मीसणाँ

रो गोळ दिवाइ गिनायताँनूँ आदररैसाथ राखिया ॥

अर जळ[1] जीमण[2] आखेट[3] आदि विहारक्रीड़ामेँ सामिलरहि

स्नेहरा उर्दर्करा[4] अनेक अमोघफळ चाखिया ॥ २७ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

हद समुदरो हेत, विजयसूर दीठाँ वळे[5] ॥

स्व बहिणि देय समेत, वाटीनूँ दीधी विदित ॥ २८ ॥

विजयसूररी वाम[6], आठ ८ मासहूँ दिन अधिक ॥

धारियो गर्भ सुधाम, वणियो तँदि[7] आवी विखम ॥ २९ ॥

षट्पात् ॥

एकसमय आखेट वळे साळा[1] वहणोई[2] ॥

आवे[8] हणि ससे[9] एक[1] मीति[10] सबुहारि पँजोई ॥

सो लेजावण सदन पुँसो[11] मीसण[1] वाटी[2]प्रति ॥

उठै सिद्धपळ[12] अम्हे[13] संगि[14] जीमण चहियो मति ॥

वँदियो[15] समुद्र कीजै विविध एक महानसँ[16] आपरै ॥

हूँ आइ गोळसामिल हुवाँ कराँ असण[17] इम मनकरै ॥ ३० ॥

दोहा ॥

जदि मीसण ले सस जिको, आप गोळ हुतँ[18] आइ ॥

वणावायो जिण पळ[19] विविध, मेळणाँ उचित मिळाइ ॥ ३१ ॥

वाटी घरपूगाँ वळे, आवण आळस आणि ॥

---

१ दाव में २ पड़ाव (डेरा) ३ शिकार ४ भविष्यत् काल के भाग्यफल ॥ २७ ॥ ५ फिर अपनी बहिन को दहेज सहित वाटी को दी ॥ २८ ॥ ६ स्त्री ७ उस समय ॥ २९ ॥ ८ आये. एक ९ खरगोस मारकर १० प्रास की ११ कहा. पकाहुआ १२ मांस १३ मैंने १४ मांगकर १५ कहा. आपकी १६ रसोई में १७ भोजन ॥ ३० ॥ १८ शीघ्र १९ मांस २० मुसाला ॥ ३१ ॥

गेहकरणा सस मंगियो, जीमण दंपति[1] जाणि ॥ ३२ ॥
कहियो मीसण ससस सकेळ[2], चूल्हाँ दीध चढाइ ॥
अब नमणों भोजन उठे, अठे कृपाकरि आइ ॥ ३३ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

इणरीति मीसण विजयसूररो वचनसुणि बाटीरै अनुचर पाछो जाइ जथातथ[3] बातकही ॥

सो सुणतांही भावीरैप्रभाण वारुणीरै[4] वसीभूत हुवै समुद्रसिंघ त्रिपरीत व्यवहार बतावणरी टेक[5] गही ॥

गोळमें कहाई कैं तो पळरा[6] देगचा[7] उठाइ म्हाँरा आदेसरै[8] आधी न हुवो मीसण वेंगे बेग अठै आवै ॥

नहींतो बळसमाहि म्हाँनूँ चोड़ैखेत चंद्रहास चखावै ॥ ३४ ॥

इसड़ी कहि धरारोधणी[9] बाटी समुद्रसिंह आपरासाथनूँ सज्जकरि उणहीं सैंझ्यारैसमय[10] मीसणाँरा गोळऊपर चलायो ॥

जरैं विजैसूरभी भावीनूँ दोसदेर आपरा आउंधीक[11] पूँतारि[12] सा म्हाँही आयो ॥

बाटियाँ १ रा वीस २० मीसणाँ २ रा पंद्रह १५ प्रवीर पड़ियाँ पछै बहणोईरा प्रहारथी साळारो सीस उडियो तोभी विजयसूररो रुंड तीन ३ बैरियाँनूँ बाढि खेतपड़ियो ॥

तिणपछै गोळरालोकभी मोरछासाँडि तुपंक १ तीराँ २ रो वं[13]ध्यो बणाइ पहरदोइ २ सूधो लड़ियो ॥ ३५ ॥

आसवरो उतारहुवाँ समुद्रसिंहनूँ तो उणारा पुरोहित१मोतीसरं[14]२

---

१ स्त्री पुरुष के जोड़े से जीमने के लिये ॥ ३२ ॥ २ सम्पूर्ण खरगोस को ॥ ३३ ॥ ३ जैसी थी वैसी ४ मद्य के ५ हठ पकड़ा ६ मांस का ७ पकाने के पात्र विशेष ८ हुकुम के ॥ ३४ ॥ उस ९ भूमि का स्वामी.१० संध्या के समय ११आयुध धारण करनेवाले लोगों को १२ ललकार कर (उत्साह बढ़ाने के वचन [illegible])१३निशाना बनाकर॥३५॥१४चारणों में [illegible]

प्रमुख संकोचरा लोकाँ वीचमैं आइ पाछो मोड़ियो ॥

अर प्रभात हुवाँ केड़ै गर्भवती पत्नी आपरा अनुगाँनूँ [1] काठाँचा ढगारो निदेस देर धणीरा अंचळहूँ [2] अंचळजोड़ियो ॥

जिको सुणि पूरा पछितावासजात समुद्रसिंह आपरी पत्नी इसड़ी विजयसूररी बहिणी वरजणनूँ गोळमैंभेजी जिकण कहियो बाभी पहिली मोनूँ मारि पछैं चितारीतरफ चरणदीजै ॥

अर नहींतो वीररो वंस राखि प्रसूतिकाळरै अनंतर वेदरा वचनरै अनुसार विधानपूर्वक सहगमण कीजे ॥ ३६ ॥

इसड़ो वचन सुणि विरोधरो क्रोध बिसारि विजयसूररी जोड़ायत करमैं कटार झालि साहस [3] ठवणरैकाज [4] रीढकरै समीप आपरी पीठ फाड़ि नेत्रमूंद [5] [6] मूर्छितबाळकनूँ काढि नणदरै हाथदीधो ॥

अर अब इणरो पाळणो थारे अधीन इसड़ी कहि बाळकरो नाम पीठहवो रखाइ सहगमणकीधो ॥

जिण बाळकनूँ आपरी सुवा मंजारादूध [7] देर नीठिनीठि पाळि दस १० वर्षरा वयमैं आणियो ॥

जिण अर्भक [8] लाडमैं मत्त एकणदिन कंदुकरी [9] क्रीड़ाकरताँ आघातरो अपराधमानि कोई ग्राम्यस्त्रीरा कहणहूँ फूँफा समुद्रसिंहनूँ आपरा बापरो मारणहार जाणियो ॥ ३७ ॥

जैरैं उठाहीसूँ पीठहव भुवारो भवनछाँडि कोईक औघड़ [10] अतीताँरी जमातिरैसाथ वेड़ीरै [11] बळ खाडीलाँघि हिंगुलाजदेवी रै धाम पूगियो ॥

---

१ सेवकों को २ जलाने का हुकुम देकर पति के ३ वस्त्र से वस्त्र (गठजोड़ा) लगाया ॥ ३६ ॥ साहस ४ ठहरने के कारण ५ पीठ की हड्डी के पास से पीठ को फाड़कर ६ मिचेहुए नेत्रवाला ७ बकरी का दूध देकर ८ बालक ९ गेंद खेलते समय ॥ ३७ ॥ १० संन्यासी विशेष जिनको खाखी भी कहते हैं उनकी जमात के साथ ११ नाव के बल से

टदेशडमरविस्तरण १८ प्राप्तावसरहड्डाधिराजसमरसिंह१८२।७म-
राडनगढनामदुर्गसमाक्रमण १९ राणाश्रुतगतदुर्गहड्डेन्द्रयुयुत्सुस्वकी
यपट्टपकुमाराऽरिसिंहनिवारण २०मृगयागतप्रहरणप्रहारितैकाकि
१स्वपितृव्यकदिल्लीशालावुद्दीन ११मूढदशानिश्चितपरासुत्वतद्भ्रातृ-
जसुलैमानदिल्लीसमाक्रमण २१ तत्समयमृगव्यरममाणकुमाराऽरि
सिंहक्षात्रबन्धुचन्द्राणीपरिणयन १२ तत्पितृगृहन्यस्तसभ्रूणकुमार
चित्रकूटागमन २२ तदनन्तरपितृपस्त्यस्थकुमारपत्नीचन्द्राणीहम्मी
रनामकुमारप्रसवन २३ मराडनगढस्थापितविश्वस्तरक्षकहड्डाधिरा
जप्राक्कालप्रकृतिविस्तारितवसतिबुन्दीपुरागमन२४श्रुतयवनेंद्रागमपु
नर्मराडनगढप्रस्थापितसप्तसहस्र ७००० सैन्यनरेन्द्र १८२।१ बुन्दीदु
र्गसप्तदशसहस्र १७००० सुभटसज्जीकरण २५ तत्प्राक्कालस्वकीय
सचिवकृष्णनामकायस्थयवनेन्द्रानुमोदनार्थदिल्लीप्रेषण २६ सम
यप्राप्तपाटवदिल्लीसमागतरुद्धसलेमानविध्वस्ततत्साङ्गिजनपुनःप्रा-
प्तपट्टयवनराडलावुद्दीन ११ चित्रकूटविजयप्रस्थान २७ हड्डाधिरा

सेना का मेवाड़ में उपद्रव करना, समय पाकर हड्डाधिराज समरसिंह का मांडलगढ नामक गढ लेना. गढ को गयाहुआ सुनकर हड्डेन्द्र से युद्ध करने की इच्छावाले पाटवी कुमर अरिसिंह को राणा का रोकना, शिकार में गये हुए अकेले अपने काका अलाउद्दीन को शस्त्र से प्रहार करके मूर्छित दशा में मराहुआ जान कर उसके भतीजे सुलैमान का दिल्ली लेना, उसी समय में शिकार खेलतेहुए कुमर अरिसिंह का हल्लूके वंश के क्षत्रिय 'चन्दाणी' से विवाह करना, गर्भ के बालक सहित उस गर्भिणी को उसके पिता के घर में रखकर कुमर का चित्तोड़ आना, जिस पीछे पिता के घर में रहीहुई कुमरानी 'चन्दानी' का 'हम्मीर' नामक कुमार को जन्म देना, मांडलगढ में भरोसे के रक्षक रख कर हड्डाधिराज का पहले समय में शिल्पविद्या से विस्तार पूर्वक बसाईहुई बुन्दी में आना, बादशाह का आना सुन कर फिर मांडलगढ में सात हजार सेना रख कर नरेन्द्र का बुन्दी के गढ में सत्रह हजार सुभटों को सज्ज करना, उसके पहले समय में अपने मंत्री 'कृष्ण' नामक कायस्थ को बादशाह की प्रसन्नता के लिये दिल्ली भेजना, नीरोगता का समय पाकर अथवा कुछ समय से नीरोगता पाकर दिल्ली में आकर सुलैमान को कैद कर

जिणसहाभक्तरो अंगसंगहोतांहीं आपरोकोड गमियो जाणि मीसण राठोड़ूनूँ दसमाँ१०सालिग्राम२ इसड़ो विरुददियो ॥३९॥

भक्तिरै प्रभाव जेतमाल औरभी इसड़ा अनेक दुष्कर काम करि आपरो नाम ख्यातकीधो सो अजेभी भक्तलोकाँरी नामावलीमें प्रधानता जणावै ॥

किताक काळपछैं अठी वंशावतारै नरेस हालू १८२।१ अनेक उपायकरियाको तोभी रणमरण न पायो जाणि प्रतिदिन वार्द्ध-कनूँ वर्द्धमान देखि वर्षतीन३रा निरंतर ज्वरथी पाटवै पाइ प्रामार राज विक्रमरा चउदहसैएगारह१४११रा सकमैं आपरो सीस जोगिणीनाम देवीनूँ चढाइ दीधो ॥

जिणकेड़ै इणरा पुत्र चन्द्रराज १८३।१ रो राज सीभाड़ाँ चो तरफमूँहीं दावणरो विचारकीधो ॥ ४० ॥

दोहा ॥

सक तेरह इगुणीस१३१९ सक, हालू१८२।१ संभव होण ॥
भू नव गुण ससि१३१९ भाँजियो, भड़ मंडोउर भोण ॥ ४१ ॥
सक मयंक भू सक्र१४११, देवीनूँ सिर दीध ॥
कीधा जिण पगपग कळह, लेख इसै सृत लीध ॥ ४२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१ यणे पञ्चम५राशौवीतिहोत्रचण्डासि १ बीज्यवर्णनवीजहडाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवर्णनविहितत्याख्यावेशाख्यानार्यनुन्दीनरेन्द्रवरसिंह १८४।१ राज्ञानरा

१ परमेश्वर के दसवें अवतार का विरुद दिया (जैतमाल के वंशवाले राठोड़ों को चारण लोग अब भी दूसरा शालिग्राम कहते हैं)॥३९॥ २ बुढ़ापे को बढ़ता हुआ देखकर ३ नैरोग्यता पाकर ॥ ४० ॥ विक्रम के शाक के तेरह सौ उगनीस के ४ सम्वत् में ५ जन्म हुआ ६ नगर ॥ ४१ ॥४२॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में चारिणपंक्ति पक्ष्य का क्रम वर्णन के सारथ्य हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की क-

मयकप्राप्तचित्रकूटाधिपत्यराणालक्षपति १ राष्ट्रकूटवीरमदेव २ तत्पुत्रचुण्ड ३ तत्पितृव्यकजैत्रमल्ल ४ बारहठमिश्रणपृष्ठभव ५ प्रवृत्तिप्रस्तवनेशैशवमूढराणालक्षपतिबुन्दीविध्वंसानन्तरभत्यवसानसन्धास्वीकरण १, भट १ मन्त्रि २ वर्गकल्पितबुन्दीदुर्गमध्यस्वाश्रितपूर्वहल्लू १८३।१ द्वितीय २ पुत्रकुम्भकर्ण १८३।२ सप्रसभस्थापन २, कृत्रिमबुन्दीपराजयमुमूर्षुकुम्भ १८३।२ राणावर्णितसहस्र १००० वाहिनीविध्वंसन ३, पलायितप्राप्तस्वास्थ्यप्रत्यभिमुखराणानीककल्पितबुन्दीविजयकुम्भकर्ण १८३।२ मरण १ जीवन २ संदिग्धपक्षद्वय २ प्रख्यापन ४, कथितपूर्वमाडंगनगराधीशयवनविशेषाश्रितनीतनिखिलनेम १/२ राष्ट्रकूटवीरमदेव १ चुण्ड २ नामस्वपुत्रजननानन्तरतज्जामातृमारणादिमन्तुपञ्चक ५ प्रमुखानेकानर्थार्जन ५, स्वप्रभुप्रच्छन्नयवनपरिकरविधिविशेषविश्रामितवाजिनीविकलवीरमदे

धा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र बरसिंह के समय में होनेवाला चीतोड़ के स्वामिपन को प्राप्तहुआ महाराणा लाखा, राठोड़ वीरमदेव, उसका पुत्र चूंडा, उसका काका जैत्रमल्ल, बारहठ मीशण पीठवा, इन की प्रवृत्ति के प्रस्ताव में बालकपन के कारण मूढ राणा लाखा का बुन्दी का विनाश किये पीछे भोजन करने की प्रतिज्ञा को लेना, (कृत्रिम बुन्दी को बिगाड़ने और महाराणा लाखा की प्रतिज्ञा लेने की कथा मेवाड़ के इतिहास में नहीं है). उमराव और मन्त्रि वर्ग से कल्पित कियेहुए बुन्दी के गढ में पहिले अपने आश्रित हल्लू के दूसरे पुत्र कुम्भकर्ण को दृढ पूर्वक रखना, कृत्रिम बुन्दी को पराजय करने पर मरने की इच्छावाले कुंभकर्ण का राणा की बनाई सहस्र सेना को भगाना, भागकर और स्वास्थ्य पाकर फिर साम्हने आईहुई राणा की फौज के कल्पित बुन्दी को विजय करने पर कुम्भकर्ण के मरने और जीने इन दोनों पक्षों के सन्देह की सूचना करना; पहिले कहेहुए माडंगनगर के अधीश यवन विशेष के आश्रित सम्पूर्ण में से आधा राज्य प्राप्त करके राठोड़ वीरमदेव का चूंडा नामक अपने पुत्र के जन्म के पीछे उस यवन के जमाई को मारने आदि पांच अपराधों को आदि लेकर अनेक अनर्थों को इकट्ठा करना, अपने मालिक के छाने यवन की परगह का किसी प्रकार से घोड़ों को ठहराकर

वाविध्वंसन ६, स्वौरसपुत्रचुण्डसहितपलायिततत्पत्नीमाङ्गलिकीप्र
तिहारगतोऽखीपालधन्वदेशस्थबारहठाऽऽल्हसमाख्यवशबहुवर्षविधा
न ७, बारहठमध्याभिज्ञातचुण्डेन्दोपटाक्षिप्रतिहारभेदविशेषप्रधानधारि
ख्यापनानन्तरहलेशहल्लू १८२१२ जितपूर्वप्रतिहारपृथ्वीशहम्मीरनि
ष्कासनपुरस्सरवीरमदेवितनयचण्डपुरमहिषीकरण ८, श्रुतजनकध्वंस
वीरमदेवद्वितीय २ पुत्रगोगराजदलाख्यनिर्मन्तुम्लेच्छमारणाकरवा
लप्रहारयाथातथ्यश्लाघा १ गर्हा २ सूचन ९, प्रत्यागतसजन्यजन
परिवृतम्लेच्छराजपुत्र १ मार्गमिलितगोगराज २ मिथोमरण. १०,
बारू १ टेकर. २ ख्यनगरक्षुपितपलायितप्रतिहारराजहम्मीरवंशी
य विशेषव्याघ्रटप्रमुखपापादनानन्तरपूर्वदेशान्तरूच्चखेटादिप्रान्तसमा
क्रमणसंज्ञापन ११, प्राप्तमण्डपपुरराष्ट्रकूटराजचुण्डसुतवशत्रुश
ल्य १ रणमल्ल २ द्विपुत्रचतुर्दशक १४ भाविप्रादुर्भावप्राप्तिनिवेद
न १२, आलक्ष्यदौर्लभ्यदुष्कालगौर्जरजनपदपूर्वप्रान्तप्राप्तस्वीय

मिलकर वीरमदेव को मारना, अपने औरस पुत्र चूंडा सहित भगीहुई उस (वी
रमदेव) की स्त्री मांगलियानी का प्रतिहार के पोलपात मारवाड़ देश में रहने
वाले आल्हा नामक बारहठ के वश में बहुत वर्ष बिताना, ईदापदवीवाले
पड़िहारों की किसी शाखा के प्रधान का बारहठ से पहिचान करायेहुए चूंडा
को अपनी पुत्री ब्याहकर हाथों के पति हल्लू से प्रथम विजय कियेहुए प्रतिहा
र राजा हम्मीर को निकाल कर आगे वीरमदेव के पुत्र को मंडोवर का राजा
करना, पिता को माराहुआ सुनकर वीरमदेव के द्वितीय पुत्र गोगराज का द
ला नामक निरपराधी म्लेच्छ को मारने में खड्ग के प्रहार की यथार्थ स्तुति
और निन्दा की सूचना करना, ब्याहकर पीछे आयेहुए बरात के लोगों सहि
त म्लेच्छराज के पुत्र और मार्ग में मिलेहुए गोगराज का परस्पर माराजाना,
बारू और टेकरा नामक नगर में वास करके भगेहुए प्रतिहार राजा हम्मीर
के वंशवालों का बघड़ावतों को मारकर पूर्व देश में 'ऊंचाखेड़ा' आदि
प्रान्तों को दबाने की सूचना करना, मंडोवर लेकर राठोड़राज चूंडा के पुत्र
शत्रुशल्य, रणमल्ल आदि चौदह पुत्रों के आगे आनेवाले समय में जन्म हो
ने की प्राप्ति बताना, दुष्काल में तृण की दुर्लभता जानकर गुजरात देश के

ग्रामजनतान्वितनिजकुलपरपुरुषविजयशूरस्य रैवतराजशरवधिको
टांकिचालुक्यविशेषप्रतोलीपात्रवार्तिकसमुद्रसिंहस्वसीमस्थापन-
१३, मिश्रणस्वकनिष्ठभगिनीवार्तिकपरिणायनानन्तरपरिणायनोत्तर
दिनान्तराखेटकमारितैक १ मृदुलोमकप्रत्यागतानुचितविरोधजा
मिप१ शाला २ समरच्छिन्नमूर्द्धविजयशूररुण्डशत्रुत्रि ३ भटीपातना
नन्तरपतन१४, निवारणायातनिजननान्दृकरसमर्पितविदारितपृष्ठमा
र्गनिष्कासितपृष्ठभवनामाङ्कितस्वभ्रूणाविजयशूरसुचारित्रासहधर्मिणी
सहगमन१५, ज्ञातस्वजनध्वंसकसमुद्रसिंहत्यक्ततत्पस्त्यप्राप्तहिंगुला
जाम्बिकाप्रसादप्रत्यायातहतसमुद्रपितृभगिनीप्रार्थनप्रतीपद्वादश१२
वर्षवयस्कपृष्ठभवतन्मस्तकानर्पण१६, सहगामिनीसतीशापप्राप्तकु
ष्ठकृताऽनेकोपचारपञ्चदश १५ वर्षवयस्कपृष्ठभवपरमभागवतराष्ट्र-
कूटजैत्रमल्लसंस्पर्शोत्कुष्ठोल्लाघीभवन१७, मिश्रणमहाभक्तमहिप
विरुदविशेषवसुधेशवर्गविख्यापन १८, द्विनवति ९२ वर्षवयस्कयो-

पूर्वप्रान्त में गयेहुए अपने ग्राम के लोगों सहित ग्रन्थकर्त्ता (सूर्यमल्ल) के पर
पुरुष विजयशूर को वहांवाले रैवत के राजा सरवहिया पदवीवाले किसी
सोलंकी के पोळपात वाटी समुद्रसिंह का अपनी सीमा में स्था
पित करना, मीसण का अपनी छोटी बहिन को वाटी को व्याहने के कुछ दि
नों पीछे शिकार में एक खरगोस मारकर पीछे आने पर अनुचित विरोध से
बहिनोई का साले के मस्तक को युद्ध में काटना और मस्तक कटने पर भी
विजयशूर का शत्रुओं के तीन वीरों को मारकर गिराना, रोकने के लिये आई
हुई अपनी ननँद के हाथ में पीठ को चीरकर निकालेहुए 'पीठवा' नामक अपने
बालक को देकर विजयशूर के साथ पतिव्रता स्त्री का सती होना, समुद्रसिंह
को अपने पिता का मारनेवाला जानकर, उसका घर छोडकर, हिंगुलाज
देवी का वरदान पाकर, पीछे आकर, समुद्रसिंह को मारकर, पिता की बहि
न की प्रार्थना के विरुद्ध बारह वर्ष की अवस्थावाले पीठवा का उसके मस्तक
को नहीं देना, साथ गमन करनेवाली सती के शाप से कोढ पाकर अनेक उ
पाय कराकर पन्द्रह वर्ष की अवस्थावाले पीठवा का परम भगवद्भक्त रा
ठोड़ जैत्रमल्ल के पास जाकर उसके स्पर्श से उस रोग से नैरोग्य होना, मि
श्रण का महाभक्त राजा को राजाओं के समूह में विशेष विरुद से प्रसिद्ध

गिनीनामोपहारीकृतस्वमूर्द्धहड्डाधिराजहल्लू १८२।२ जन्म १ मरणादि२ दिशकसूचन१९, तत्पुत्रपृथ्वीशचन्द्रराज १८३।२ पृथ्वीप्रत्यनीकवृन्दा क्रमणविचारणां २० त्रयोदशो १३ मयूखः ॥ १३ ॥

आदितः षष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६० ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सक विक्रम सिवसक्वरी १४११, हल्लू १८२।२ मरन निहारि ॥
वेरिनको जिततित बहुरि, बढत प्रताप विचारि ॥ १ ॥
दिल्लीसहि दब्बन दुजन, अप्रगल्भ लखि ईह ॥
गिरिसिर तारादुर्ग किय, बुंदियनृप बरसीह ॥ १८४।२ ॥ २ ॥
सीमा पुब्ब १ तडागसों, चामुंडा २ बाग चाहि ॥
तारागढ तिन समय तकि, बंधिय बिरुद निबाहि ॥ ३ ॥
साहमुहम्मद १५ मरिग सक, बाजि ब्योम चउ चंद्र १४०७ ॥
तखततखो, फीरोज १६ तँहँ, तुगलक ३ साइ अतंद्र ॥ ४ ॥
दयाप्रमुख बहुगुन विदित, यामें तदपि अनेक ॥
बंगा १दिक सूबा प्रबल, टरे पकरि सनटेक ॥ ५ ॥
अज्ज १ जवन २ जिततित अधिप, लग्गे परं भुवलेन ॥
यातें नृप बुंदिय अचल्लों, आक्रिम दुर्गम ऐन ॥ ६ ॥
प्रथम १ ब्याह बरसिंह १८४।२ पहु, आनयसिंहजों थानि ॥

करना, बालक १२ वर्ष की अवस्था में अपने मस्तक को योगिनी नामक देवी की भेट करनेवाले हड्डाधिराज हल्लू के जन्म मरण आदि के सम्वत् की सूचना करना, उनके पुत्र राजा चन्द्रराज की भूमि को शत्रुओं के समूह का दर्प का विचारने का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ ॥ १३ ॥ और आदि से १६० मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ निर्णय २ वैरी; अथवा उन्नति ॥ २ ॥ ३ पूर्व की सीमा ॥३॥ ४ बराबर होने का ४ दृढ मालूम करके ॥ ४ ॥ ५ मार्ग ६ पाई भूमि को छैं लो. कुर्सी के ७ पर्वत पर ८ घर (गढ) खड़ा किया ॥६॥ आनयसिंह कीहपुर्ओ

प्रभावती १८४।१ गुन सों ल पट्टु, किय *दयिता हितकानि ॥७॥
जो +महिषीहुव हम्म १८३।१ जब, कासीनिवसन कीन॥
क्रम दूजो २ उपयम्म कियउ, पुनि इहिंसमय प्रवीन ॥ ८ ॥
सो खुसाल कूरमसुता, जंवारेगढ जाइ ॥
अहिजनकुमारि १८४।२ सनाम यह, ब्याहिय त्याग बढाइ ॥९॥
पुनि अनुपम प्रामारकी, कन्या छत्रकुमारि १८४।३ ॥
गो ब्याहन मंचोरगढ, बल बुंदीस बिथारि ॥ १० ॥
कछवाहीके ब्याहके, अंतरही नृप एह ॥
पंतो[1] ब्याहन मंषपुर, गढ प्रामारन गेह ॥ ११ ॥
करि बिबाह दै बसु[2] कनिन, दलत अरातिन[3] दर्प्प ॥
दुलही जुग २ सेवित दुलह, आयउ बुंदिय अप्प ॥ १२ ॥
पट्टरांगिनी १८४।१ के प्रसव, नभयो चिरहु[4] निहारि ॥
सक रवि सक्करि १४१२ इम सुपट्टु, ब्याह्यो उभय २ विचारि ।१३।
तनय छ ६ हायनलग[6] तदपि, हुव दुव २ तेहु रहेन ॥
नियति नांमपुब्बहि मरन, किय इम प्रथम १ कहेन ॥ १४॥
सक अट्ठारह सक्करी१४१८, अव बिक्रमभव आत ॥
कछवाही१८४।२ कै हुव कुमर, बैरिसल्ल१८५।१बिख्यात॥१५॥
तीजे३ अब्दहि अनुज तस, नृपसुत जावदु१८५।२ नाम ॥
[illegible]कद्योकछवाही प्रसव, दूजो२ गुनउद्दाम ॥१६॥
भो तीजो३ प्रामारि १८४।३ भव, निम्मदेव१८५।३ जस जुत्त॥
वांर्द्धक्यों[11] बरसिंह १८४।१ नृप, पाये इम त्रय३ पुत्त ॥१७॥
लंकसरान[12] इत सुल लाहिय, अनघ[13] चुंड[14] अभिधान ॥

* भारी ॥ ७ ॥ + पटरानी ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ १ जया ॥ ११ ॥ २ धन ३ [illegible] का ४ दर्प (घमंड) ॥ १२ ॥ ५ पटरानी के ६ बहुत समय पर्यन्त ॥१३॥ छः ७ वर्ष पर्यन्त ८ लोकोंने ९ भाग्य के वश १० नामकरण होने से पहले ही मरगये ॥१४-१५-१६॥ ११ वृद्धावस्थामें ॥१७॥ राणा १२ लाखाने १३ पापरहित. चुंडा १४ नाम

बरनिय छंद ६ रासे बहु, जगजस बिदित सुजान ॥१८॥
छन्द बीस२० लग अंतर सु, बिनु पूर्बा१पर२ बोध ॥
तिनसौं अंतर अधिक तब, बत्तन समय बिरोध ॥१९॥
तिम अनिरुद्ध १९८ चरित्त तक, ऐसो अंतर आइ ॥
जँहँ न असंगत जानिये, संभव उचित सुहाइ ॥२०॥
कहि इक्क१ रु अपर२हिं कहूँ, कहुँक अनंतर काल१ ॥
कहुँ अंतर२ समकाल३ कहुँ, पै संभव महिपाल ॥ २१ ॥
कहुँ पहिली १ पीछैं कहुँक, पीछैं २ हुव पहिलौं २ सु ॥
बाढि पै हायन बीस २० सौं, होइ जु पुव्व नहँसु ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत अंडपपुर ईस चुंडसुत कहिय चउद्दह १४ ॥

---

* ॥ १८ ॥ पूर्वापर का १ ज्ञान नहीं होने के कारण इन कथाओं में बीस वर्ष का अन्तर है और यदि इससे अधिक समय का अन्तर होवे तो कथा में समय का विरोध होजाता है ॥ १९ ॥ जिस प्रकार अनिरुद्धसिंह के चरित्र तक इसी प्रकार का अन्तर आवेगा जिसको असंगत नहीं जानना चाहिये जहां जैसा सम्भव होवे तहां तैसा जानलेवें ॥ २० ॥ एक को कहकर दूसरे को किसी दूसरे समय में कहते हैं और कहीं एक स मयवालों को दूसरे समय में कहते हैं, परन्तु हे राजा रामसिंह! उसके होने में सन्देह नहीं है ॥ २१ ॥ कहीं तो पहली कथा पीछे है और कहीं पिछली कथा पहिले है, परन्तु बीस वर्ष से बढकर आगे अन्तर नहीं है ॥ २२ ॥

---

*यहां ग्रंथकर्ता(सूर्यमल्ल) ने पूर्वापर का बोध नहीं होने के कारण बुन्दी के रावराजा अनिरुद्धसिंह के समय पर्यंत कथाओं में बीस वर्ष का अंतर होना लिखा है, परंतु कई स्थानों पर सौ सौ वर्ष के अंतर पायेजाते हैं; इसका कारण ऐसा प्रतीत होता है कि पृथ्वीराजरासा के कारण पृथ्वीराज के संवत् में सौ वर्ष का अंतर होगया है और पृथ्वीराजरासा के उस संवत् को सही मानकर पिछले बड़वाभाटों ने अपनी बहियों में पृथ्वीराज के पिछले राजाओं के कल्पित संवत् लिखकर पृथ्वीराजरासा के उस कल्पित संवत् से पिछले संवतों को श्रेणीबद्ध करदिये हैं. यदि पृथ्वीराजरासा की उस भूल को पिछले समय के बडवाभाट समझ लेते तो यह सौ वर्ष का अंतर नहीं आता परंतु पृथ्वीराजरासा के संवत को सत्य समझने के कारण ही राजपूताने के संपूर्ण राजाओं की वंशावलियों में उक्त सौ वर्ष का अंतर हुआ है और ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल)भी पृथ्वीराजरासा की अनेक कथाओं का मिथ्या होना सिद्ध करने पर भी

सत्रुसल्ल तिम सबन महंत बरनिय विरोधमई ॥
जास अनुज रनमल्ल २ सोहु अनई अग्रजसम ॥
तात अनंतर सत्रुसल्ल १ भो भूप कहेक्रम ॥
रनमल्ल २ समर हनि सिंधुलन लरि सोझतिपुर दब्बिलिय ॥
सक सकित्रिसत३६०निवसथ सकल करि अधीन तहँ राज्यकिय२३
सत्रुसल्ल १ नृप सूनु नाम नरबद २ हुव निर्दय ॥
इक अह तात १ तनुज २ संग मिलि किय अधर्ममय ॥
करि महिमानी कपट छुल्लि रनमल्ल १ जुत्त बल ॥
रत्ति हनहिं जब रहहिं तब सु सोझत अप्पन तल ॥
इम मंत्रि तत्थ पठयो महहि नरबद २ सुत बुल्लन अनुज ॥
नृपराम२०इणवहु कलिकेन्नृपन भक्खन वंसखुजातभुज॥२४॥

॥ दोहा ॥

अनई चिंतिय अप्पउर, रनमल्ल १ हु सुहिरीति ॥
हेनन उतारयो थानहित, प्रकटि भतीजहिं प्रीति ॥ २५ ॥

॥ षट्पात् ॥

समपरत्ति तस सिविरै भोजि नानाविध भोजन ॥

१बड़ा २विरोध में ३औरंगजेब ३इन्याय रहित. पिता के ४पीछे ५सिन्धुल क्षत्रियों को मारकर ६ग्राम ॥ २३ ॥ एक ७दिन ८पिता और ९पुत्र ने १० सेना सहित ११ रात्रि में १२ ऐ राजा रामसिंह!. वंश के १३ खाने में छुजा खुजलाते हैं ॥ २४ ॥ १४ मारने को ॥ २५ ॥ १५ डेरे में

संवत् यहां संवत् मानलिया है; इसीकारण से इस ग्रंथ (वंशभास्कर) में चतुर्थराशि में पृथ्वीराज के चारणों से लेकर सप्तमराशि में अनिरुद्धसिंह पर्यंत कई स्थानों में इन्हीं सौ वर्षों की भूल हुई है इसमें कहीं पर सत्य संवत् भी मानलिये हैं परंतु अधिकतर उक्त अंतर ही पायाजाता है. यद्यपि हमारे पास राजपूताना के सब ही रजवाड़ों के इतिहास विद्यमान हैं जिनमें शुद्ध संवत् लिखेहुए हैं; परंतु वे सभी अंतर यहां लिखेजावें तब तो इस ग्रंथ की अधिक कथाओं को बदल देना पड़े, परंतु ऐसा करना हमारा अभीष्ट नहीं है केवल बड़ी बड़ी भूलों पर नोट करदिये गये हैं और आगे भी यथाशक्ति करदिये जावेंगे; परंतु यहां पर उक्त भूल का कारण दिखाकर केवल दिशा दर्शन करदिया है सो पाठक लोग स्वयं समझलेवें ॥

मदिरापाइ प्रमत्त जास किन्न न वह को जन[1] ॥
बलि लै निजभटबर्ग रत्ति[2] काका सौप्तिकरचि ॥
कट्टिय भ्रातृज[3] कटक बीच नरवद रहिगो बचि ॥
प्रहरन[4] प्रहार दृग तस दुव[5] हि गयेफुट्टि कटि[6] गातहू ॥
बहु घाय लग्गि परिगो बिकल जियहित लोचन जातहू॥२६॥

॥ दोहा ॥

कपटफेन[7] निजवदनकरि, व्याकुल स्वास बढाइ ॥
सठ लग्गो कर १ पय २ घिसन, इुत असु[8] जात हढाइ ॥ २७॥

॥ षट्पात् ॥

नरवद मरतनिहारि भटन जामिक[9] धरि निर्भय ॥
लिय वैभव तस लुट्टि दीप प्रद्योत बीतंदय[10] ॥
महलआइ रनमल्ल सयन किन्नौं पतनीसह ॥
कछुउपाय इत कढ्ढि अंध भग्गो नरवद यह ॥
सो ग्राम सीरवादे प्रविसि घुसि निबस्यो इक जट्टघर ॥
रविउदय सुन्यौं रनमल्लजागि सो भतीज कढिगो सडर ॥२८॥
दयो भटन तिन्ह दंड जिते रक्खे तिहिं जामिक ॥
सजि निजकटक समत्थ गयो वासर[11] आगामिक[12] ॥
बल मंडपपुर[13] बेढि लूटमंडत प्रबिस्यो लरि ॥
राजद्वार निज रक्खि आनि मारिय अग्रज अरि ॥
दहि सत्रुसल्ल रनमल्ल दुर्त[14] मंडोउर भूपति भयो ॥
नरवद दुरयो सु खोजन निपुन प्रचुर[15] दूत गन प्रेसयो[16] ॥ २९ ॥

१कौन मनुष्य है यह नहीं जानसका; अथवा मदिरा पाकर उसको प्रमत्त किया जहां कोई अन्य मनुष्य नहीं था. २रातिवाह ३भतीजे की सेना को४शस्त्रों के प्रहार से उसके दोनों ५नेत्र फूटगये. और ६शरीर भी कटगया ॥२६॥ अपने मुख में कपट के ७झाग बनाकर८प्राण निकलना ॥२७॥९पहरायत रखकर. उसके वैभव को दीपकों (मशालों) के प्रकाश में उस १०निर्दय ने लूटलिया ॥२८॥ १२ आनेवाले ११ दिन में १३ घेरकर १४ शीघ्र १५ बहुत १६ भेजा ॥ २९॥

जस्वसीमागतम्लेच्छराजसमीपगज १ हयो ४ पायनसहितस्वकीयसोदराऽनुजशालिवाहन १८।११२ प्रस्थापन २७ निकटसमागतखाद्य १ पेया २ दिसन्मानितयवनेन्द्रसभास्वयंसम्मिलन २८ पुनः प्रस्थितादिल्लीशबुन्दी १ समानवम्बावद २ रामपुरो ३ पदाप्रापण २९ शरणासमागतराजतासेवकीभावसमादान ३० विस्तृतवरूथयवनेन्द्रचित्रकूटवेष्टनशकसूचनं प्रथमो १मयूखः ॥ १ ॥ आदितः सप्तचत्वारिंशदुत्तरशततमः ॥ १४७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

दुसह अलावुद्दीन११सौं, लक्खनन्नृप जस लाह ॥
इक्क मुररि गढ अंकुरयौ, रक्खौ अज्जन राह ॥ १ ॥

गीतिका ॥

बलं थाँहबर्जित साह यौं नरनाह लक्खन विंटयो ॥
भुव छाइ जोजन दुग्ग जो गरदाइ फोजन भिंटयो ॥
परिवेसमध्य दिनेसलौं मनुजेस रान प्रकासभो ॥

उसके साथियों को मारकर अलाउद्दीन का फिर पाट बैठना, चितोड़ को विजय करने के प्रस्थान में हड्डाधिराज का अपनी सीमा में आयेहुए म्लेच्छराज के समीप एक हाथी और चार घोड़े सहित नजराना अपने सगे छोटे भाई शालिवाहन के साथ भेजना, समीप आयेहुए खानपानादि से सन्मान किये हुए बादशाह की सभा में स्वयं समरसिंह का मिलना, फिर गमन कियेहुए बादशाह को बुन्दी की बराबर बम्बावदा और रामपुरावालों का नजराना देना, मार्ग में आयेहुए राजाओं का सेवकभाव ग्रहण करना, बड़ी सेना से बादशाह का चित्तोड़ को घेरने के संवत की सूचना करने का प्रथम मयूख समाप्त हुआ ॥ १ ॥ आदि से १४७ मयूख हुए ॥

१ महाराणा गढलक्ष्मणसिंह. २ गढ में खड़ाहुआ. ३ आर्यों के मार्ग को रक्खा ॥ १ ॥ इस प्रकार ५ अथाह ४ सेना से बादशाह ने राणा लक्ष्मणसिंह को ६ घेरा. उस गढ को फौजों से घेर कर एक योजन भूमि को छाकर. ७ भिड़ा उस समय ८ परिवेष (कुंडलाकार उत्पात सूचक सूर्यचन्द्र के रश्मिमंडल को परिवेष कहते हैं) में. ९ सूर्य के समान १० मनुष्यों का पति महाराणा

॥ दोहा ॥

कुमरी इक १ रनमल्लकैं, क्रम चोवीस २४ कुमार ॥
अक्खयराज १ रु करन २ इम, अनुजनि चंप ३ उदार ॥ ३० ॥
सुत खंधिल्ल ४ रनधीर ५ नर, सब कौलिकृत्य सुबोध ॥
इत्यादिक कतिकन अनुज, जोध १ नाम रनजोध ॥ ३१ ॥
इत बंबावद गढ अधिप, चंद्रराज १८३।१ चहुवान ॥
हल्लु १८२।१ सुत जाकौं कहिय, अपर २ चंच १८३।१ अभिधान ॥ ३२ ॥
आयुभुग्गि विधिउचित इहिं, दिय तजि चंद्र १८३।१ हु देह ॥
तनय धीर १८४।१ अभिधान तस, अधिप भयो तँहँ एह ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदिपपति बरसिंह १८४।१ सुनत उपर्यम इत सद्दिय ॥
पल्लहनगढ प्राकार हेरि अप्पन समता हिय ॥
पट्टिमदेवी १८५।१ प्रथम १ सुता दलसाह सयानी ॥
वैरिसल्ल १८५।१ वह व्याहि कमनआनी कुमरानी ॥
चालुकी सदाकुमरि १८५।२।१ सु प्रथम १ जनक विवाहो जावदुव ॥
भुवभाग पाइ पीछैं पहहु त्रय ३ विवाह पुनि करतहुव ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

परन्यौं दूजी २ पट्टलहि, वैरीसल्ल १८५।१ वहोरि ॥
दहर भारमल्लहसुता, मानकुमरि १८५।२ हितजोरि ॥ ३५ ॥
निम्मदेवं १८५।३ कुमरहिं नृपति, पुरवालेर पठाइ ॥
सीता १८५।३।१ हरिदासिमसुता, परिनायउ समपाइ ॥ ३६ ॥

॥ सचरगागद्यम् ॥

हड्डाधिराज बरसिंह १८५।१ नैं मध्यमकुमार ज.वद १८५।२ कौं वसुधाकविभागमैं वंसीपुरदयो ॥

---

१ छोटा २ चांपा (इसके वंश के चांपावत कहाते हैं) ॥३०॥ ३ युद्ध के कामों में चतुर ॥३१॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ४ विवाह ५ सुन्दर ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

सोही अपनौं आवासँराखि जावदू १८५।२ महाघाटीधर गंवदू नाम भिल्लकौँ भंजि अनेक आहवनमें प्रसंसापाइ बुंदीसौं छ ६ कोस ईसान औंसानपर नंदननाम निवँसथ वसावतभयो ॥

ताकेवंसके समस्तही हड्डनमैं एगारम ११ भेद पाइ जावदूके १।७।१।१ कहाये ॥

जहाँ जावदू १८५।२ कै सारन १८६।१ अरु सेव १८६।२ दो २ पुत्रभये तिनमें सारन १८६।१ के सामंत १८७।१ सेव १८६।२ के मेव १८७।१ भयो तिनकारि निजनिजकुल सामंतके ११।१ मेवाउत्त ११।२ऐसें जावदू १८५।२ के जननके द्वै २ ही भेद प्रसिद्ध पाये ॥३७॥

॥ दोहा ॥

जावदु १८५।२ कुल इम भेद जुग २, द्विरदंन तोरन दंत ॥
कहियत नृप सामंतके ११।१, मेवाउत्त ११।२ महंत ॥ ३८ ॥
निम्ब १८५।२ हिं दियउ विभाग नृप, नगरनाम नवगाम ॥
पुरबुंदियसन पच्छिम २ जु, वसहि त्रि ३ कोस विराम ॥ ३९ ॥
निम्बकेव१८५।३संतति निखिल, निम्बाउत्त ।५।१।८।१२ कहाइ
हड्डनभेद सु बारहम १२, पँहँसंख्या मिति आइ ॥ ४० ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदियपति नरसिंह १८४।१ जरठ गंगा १ सूकरं २ जँहँ ॥
पत्तो पढु कजुपर्व नय ३ हि रानिन उपेत तँहँ ॥
सुवरन पंचसहस्र ५००० सुरभि सतपंच ५०० सुलच्छन ॥
विप्रनलित दिय वंटि पारि विस्मय परपेच्छन ॥
यह खिननिहारि तोमर अमर रवमट अचानक साजि सव ॥
पहिलैंजु हम्म१८३।१जिरयो प्रथित वह दच्छिय पुर टुंक अव ॥

१निवासस्थान. गमदू नामक घडेरवाड़ायती (डाकू) भील को मारकर. ईशान२ दिशा पर ३ग्रामध्वंस के ॥३७॥ १हाथियों के दांत तोड़नेवाले ॥३८॥ तीन कोस दंर्श्चिशान पर ॥३९॥४०॥८बुढापे में. गङ्गा के१सोरनघाट पर गया१०ब्राह्मणों को

॥ दोहा ॥

भीम नैनवापति *दभिक, सो हरिसुत लै संग ॥
पुरडग्गीपति अमर इम, दब्बिय टुंक सु दंग ॥ ४२ ॥

॥ षट्पात् ॥

अमर टुंक अंगासि रु आइ बुंदिय घन घेरिय ॥
नैननगरके नाह दभिक ÷तदुचित सहायदिय ॥
मंडिय कुमरन अमित सज्जि तारागढ संगर ॥
घनतोपन निर्घात पटकि व्याकुल किन्नैं पर ॥
इत लालसिंह १८४।२ नृपकेअनुज गैनोलासिन बीरगति ॥
हुत१ आइ असह रतिवाहदिय किय अद्भुत लिय मारि कति॥४३॥
दहिया १ तोमर २ दुवं २ हि मिले भज्जत बिगारिमुख ॥
निट्ठिनिट्ठि नैनपुर जाइ मन्निय जीवनसुख ॥
बुंदिय पुनि बरसिंह १८४।१ आइ कुमरन सिराहि अति ॥
दियउ रीझि सोदरहिं दुर्ग मक्खीद महामति ॥
दल सज्जि निखिल बिजई दुसह लोचनपुर २ हुत बिंटिलिय ॥
सकुटुंब दभिक१ तोमर२ सहित कढि ३आलंबन टुंकाकिय ॥४४॥

॥ दोहा ॥

लरि करउर जिम हम्म१८३।१ लिय, पहिलैं दहियन पेलि ॥
लोचनपुर बरसिंह १८४।१ लिय, खेल ४असिन तिमखेलि ॥४५॥
निजथाँनाँ धरि नैनवा, रच्छक बीर बिसेस ॥
चिंतिय नृप अग्गैं चलन, दब्बन टुंक प्रदेस ॥ ४६ ॥
भाखिय तँहँ अप्पन भटन, दुर्लभ जय विधिदिन्न ॥
उपउ टुंक तिहिं ५संटि गढ, लोचनपुर ६ तुमलिन्न ॥ ४७ ॥

॥ ४१ ॥ * दहिया ॥ ४२ ॥ ÷ उसके उचित सहाय दी. १ भगाये ॥ ४३ ॥ २ नैणवा नामक नगर ३ आधार ॥ ४४ ॥ ४ तलवारों का खेल खेल कर ॥४५॥ ॥ ४६ ॥ ५ बदले में ६ नैणवा को ॥ ४७ ॥

बिच दाहिम १ चालुक २ बहुत, नृप इंगदंग[1] निशाइ ॥
अग्गैंबजते मित्र अब, रिपुहुव सीम भिराइ ॥ ४८ ॥
दाहिम १ तोमर २ मिलि दुहु रन, साज्जिग टुंक सिपाह ॥
अहेबहु[2] लग्गहिं अप्पनैं, नैरचलहु[3] नरनाह ॥ ४९ ॥
अक्खियनृप बार्द्धक[4] उचित, मरनदेहु रनमाँहिं ॥
प्रसभ मोरि आन्यौं तदपि, जोधन लांघिन जाँहिं ॥ ५० ॥
बंबावंद धीर १८४।१ जु बदिय, चंद्र १८३।१ तनय चहुवान ॥
जाकोनाम छितियि२ जग, कहत जु चंच कथानें[5] ॥ ५१ ॥
पहिलैं अरिन उपायकिय, दब्बन चंच१८३।१ प्रदेस ॥
दीस्यो तब रोधक[6] दुसह, रिपु बरसिंह१८४।१ नरेस ॥ ५२ ॥
अंग तजिय बरसिंह१८४।१ अब, जय संभव इम जानि ॥
धरनी दब्बन धीर१८४।१की, अरिगन लग्गे आनि ॥ ५३ ॥
बसु रस गुन भू१३६८ मित बरस, जँहँ बिक्रम सक्क जात ॥
भयो नृपति बरसिंह१८४।१ भवँ[7], पुरबुंदिय तँहँ मात ॥ ५४ ॥
गुन नव तेरह१३९३ साकगत, धरिय छत्र सिर धीर ॥
तारागढ[8] बंधिय तिमहि, सिव चउदह१४११ सक सीरें[9] ॥ ५५ ॥
सुत संभवँ[10] चिरलौं[11] चहत, गहिय न रानिय गंभ[12] ॥
गवि चउदह१४१२ सक तब रचे, दुवर२ पुनि ब्याह अदंभ[13] ॥ ५६ ॥
सक बसु ससि चउदह१४१८ समय, बंय पचास५०समैं[14] बित्ति ॥
पायउ सुत त्रय३ कंपन, किय बितरन[15]१ रन२ कित्ति ॥ ५७ ॥
सकात्रि बेद चउ इक्क१४४३ समें[16], जनक अस्थिलैजाइ[17] ॥

---

१ नैणवापुर को नजदीक लेकर ॥४८॥ बहुत २ दिन. हे राजा अपने ३ नगरचलो ॥४९॥ ४ बुढापे के ॥५०॥ ५ कथाओं में ॥५१॥ ६ रोकनेवाला ॥५२॥५३॥ ७ जन्म ॥ ५४ ॥ ८ बुन्दी के गढ का नाम तारागढ है. चौदह सौ ग्यारह का सम्वत् ९ शामिल होने पर ॥ ५५॥ पुत्र का १० जन्म ११ बहुत समय से १२ गर्भ १३ बडे(उत्तम)॥५६॥ पचास १४ वर्ष की अवस्था बीतने पर १५ दान में ॥ ५७ ॥ १६ वर्ष में. पिता की १७ हड्डियां लेजाकर

सूकर डारे सुरसरित[2], वितरन[3]१ न्हान२ विधाइ ॥ ५८ ॥
ता१४४३हि. वरस रचि रन तुमुल[4], भीम १ रु अमर२ भजाइ ॥
लोचनपुर चिरंगत[5] लयो, जितातित अरिन लजाइ ॥ ५९ ॥
वरस वयासी८२ भुग्गि वय, नभ सर सक्करि१४५० मान[6] ॥
सक जावत वरसिंह१८४१।१नृप, सुरपुर पत्त[7] सुजान ॥ ६० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रचरणडासि १ वीर्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रवरसिंह १८४१।१ चरित्रे सूचितशकसमयदिल्लीशमुहम्मदा१५नन्तरप्राप्तपट्टफीरोजसाह १६ सामन्तगणप्रातीप्यप्रबुद्धसमालोचितदेश १ काल २ वरसिंह १८४१।१ तारादुर्गनिर्माणसमयानन्तरवार्द्धकछुप्तानपत्यनृपकौर्मी १ प्रामारी २ पत्नीद्वय२ परिणयन १, समसूनिश्चयवारसिंहिवैरिशल्य १८५।१ जावद १८५।२ निम्मदेव १८५।३ कुमारत्रय ३ समुद्भवन२, चित्रकूटाधिराजराणालक्षधीरज्येष्ठकुमारचुण्डप्रादुर्भवन३, समय

१सोरमघाट* पर २ गङ्गा नदी में ३ दान ॥ ५८ ॥ ४ भयङ्कर ५ बहुत समय से ॥ ५९ ॥ ६ प्रमाणवाले संवत् के जाने पर ७ स्वर्ग ७ गया ॥ ६० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की कथा बनाने के समय के वचनों में बुंदीनरेश वरसिंह के चरित्र में जिसके शक समय को सूचित किया है ऐसे दिल्लीश मुहम्मद के पीछे फीरोजशाह के तख्त पर बैठने पर उमराव गणों के विरुद्ध होने से चेतेहुए और देश काल को विचारनेवाले वरसिंह का तारागढ़ बनाने के समय के पीछे बुढापे के छूने पर अर्थात् वृद्ध होने पर सन्तान न होने के कारण कछवाही और प्रामारी दो स्त्रियों से विवाह करना, माता सहित निश्चय कियेहुए वरसिंह के पुत्र वैरिशल्य, जावद और निम्मदेव तीन कुमारों का जन्म होना, चीतोड़ के राजा राणा लाखा के ज्येष्ठ कुमर चूंडा का जन्म होना, समय के विरुद्ध वृत्तान्त वर्णन करने के कारण भू

* पुराणों में कथा है कि वराह अवतार ने सोरमघाट पर शरीर छोड़ा था इस कारण इसका नाम सूकर क्षेत्र हुआ है.

विरुद्धवृत्तान्तवर्णनवीजसन्देहसङ्गतिसमाधानावधिसूचन ४ ,मराड-
पपुराधिराजराष्ट्रकूटचुराडतनुत्यागानन्तरप्राप्तपट्टतत्पुत्रशत्रुशल्य १
स्वीयकुमारनरवद २ समाहूतरणमल्लमारणरहस्यालोचन ५, प्राप्त
सोझतपुराधिपत्यस्वानुजरणमल्लाकारणार्थशत्रुशल्यस्वपुत्रप्रेषण ६,
प्रत्युतप्रतीपरणमल्लमदिष्ठाभ्रातृजशिरस्सौप्तिकपातन ७, ज्ञात
म्रियमाणावस्थाग्रजात्मजन्यस्तजामिकसमात्तशिविरसर्वस्वरणम-
ल्लशयनसमयान्धीभूतनरवदप्राप्तच्छिद्रपलायन ८, योत्स्यमानर
णडपपुरप्रविष्टनिपातितस्वाग्रजशत्रुशल्यरणमल्लतदाधिपत्यसमादा-
न ९, रणमल्लौरसाज्ञयराज १ कर्ण २ चम्पा ३ दिचतुर्विंशति २४
सूनुसमर्थकिपदनुजयोधनामकुमाराधिकयोधनाऽभिरुचित्वज्ञापन-
१०,वस्वावदद्दुर्गाधिराजचंचा १८३।१५पर २ नामचन्द्रराज१८३।१मर
णानन्तरतत्पुत्रधीरदेव १८४।१ पितृपट्टप्रापण ११ , नरेन्द्रवरसिंह-
१८४।१ कुमारत्रय ३ क्रमप्राप्तप्रामारी १ चालुक्की २ दाधिमी३पत्नी
त्रय ३ परिणायन १२, जनकमरणानन्तरवैरिशल्य१८७।१ जावद्

त सन्देह की सङ्गति के समाधान की अवधि की सूचना करना, मंडोवर के
राजा राठोड़ चूँडा के देहान्त के पीछे उसके पुत्र शत्रुशल्य का गद्दी बैठकर अप
ने पुत्र नरवद को बुलाकर रणमल्ल को मारने का एकान्त में विचार करना,
सोझतिपुर के स्वामिपन को प्राप्त हुए अपने छोटे भाई रणमल्ल को बुलाने के
लिये शत्रुशल्य का अपने पुत्र को भेजना, उलटा शत्रु बनकर रणमल्ल का म
दिरा में मस्त भतीजे के ऊपर रतिघात देना, बड़ेभाई के पुत्र को मरने की
अवस्था में जानकर उस पर पहरायत रखकर डेरों में से सर्वस्व हरनेवाले रणम
ल्ल के शयन करने के समय अन्धे नरवद का छिद्र पाकर भागना, युद्ध करने
वाले रणमल्ल का पुर में प्रवेश करके अपने बड़ेभाई शत्रुशल्य को मारकर
उसका आधिपत्य लेना, रणमल्ल के अजयराज, कर्ण और चम्पा आदि चौबीस
औरस पुत्रों में से समर्थ कितनों ही से छोटे जोधा नामक कुमार की युद्ध कर
ने में अधिक रुचि होने की सूचना करना, वस्वावदा गढ के राजा चंच दूसरे
नाम से चंद्रराज के मरने पीछे उसके पुत्र धीरदेव का पिता का पाट पाना, न
रेन्द्र वरसिंह के तीन कुमारों का क्रम पूर्वक प्रामारी १ चालुक्की २ और
दाधिमी ३ इन तीन स्त्रियों से विवाह करना, पिता के मरे पीछे वैरिशल्य और

१८५।२ क्रमैक १ त्रय ३ भाविविवाहकरणकथन१४, विभागप्राप्तवंशीपुरव्यापादितगवड्डाख्यभिल्लसंवासितनन्दननामानिवसथजाबदु १८५।२ सन्तानजाबदूको १।७।११ पदङ्क्येकादश ११ हड्डभेदसमासादन १५, भाविजावदवसारण १८६।१ सेव १८६।२ द्वय २ सुतसामन्त १८७।१ सेव १८७।२ द्वय २ सन्तानस्वभेदान्तर्भूतपृथक्पृथक् सामन्तक११।१ सेवाउत्त ११।२ भेदद्वय्या २ धिगमन १६, दायलब्धनवग्रामनगरनिम्मदेव १८५।३ सन्ततिनिम्माउत्तो १।८।१२ पदङ्क्तिद्वादश १२ हड्डभेदप्रकटन १७, राज्ञीत्रयो ३पेतशूकरक्षेत्रगङ्गासङ्गतवरसिंह १८४।१ नरेन्द्रपर्वान्तरपुण्यसमयसुरभिशतपञ्चक ५०० सहितस्वर्णसहस्रपञ्चक ५००० समुत्सर्ज्जन१८, नयननगरनाथदभिकभीमसहायप्राप्तावसरसमाक्रान्तटोङ्कपुरसन्नद्धतोमराऽमरसिंहबुन्दीद्रङ्गवेष्टन१९, तारादुर्गाधिष्ठितबैरिशल्या १८५।१ दिकुमारत्रय ३ प्रारब्धनालीयन्त्रावमर्दविहस्तलालसिंह १८४।२ सौप्तिकसन्त्रस्ततोमर १ दभिक २ नयनपुरपलायन २०, प्रत्यागतप्रशंसितस्वसूनुकस

जावदू का क्रम से एक और तीन आगे होनेवाले विवाह करने का कथन करना, बंट में वंसीपुर पाकर गवदू नामक भील को मारकर नंदन नामक गांव बसाकर जावदू की सन्तान का 'जावदूका' इस पदवी से हाडों में ग्यारहवें भेद का ग्रहण करना, आगे होनेवाले जावदू के पुत्र सारन और सेव के दो पुत्र सामन्त और सेव, इन दोनों पुत्रों की सन्तान का अपने ग्यारहवें भेद के अन्तर्गत जुदे जुदे 'सामन्तक' और 'सेवाउत्त' इन दो भेदों को प्राप्त होना, बंट में नवगाँवाँ नामक नगर पाकर निम्मदेव के वंश का 'निम्माउत्त' पदवी से हाडों में बारहवें भेद का प्रकट होना, तीन रानियों सहित गङ्गा में सोरमघाट पर राजा वरसिंह का किसी पर्व के पुण्य समय में पांचसौ गौओं के साथ पांच हजार मुहरों (अशर्फियों) का देना, नैणवानगर के पति दहिया भीमसिंह की सहाय से समय पाकर टोंकपुर को लेकर लज्जीभूत हुए तँवरों के राजा अमरसिंह का बुन्दी नगर को घेरना, तारागढ में स्थित बैरिशल्य आदि तीन कुमारों से तोपों का युद्ध प्रारंभ करके प्रवीण लालसिंह के रतिवाह से भयभीत होकर तँवर और दहिया का नैणवापुर को भागना, पीछे आकर

ह्रोदरार्थप्रसाददत्तमच्छीदटुर्गनिष्कासिततोमर १ दहिक २ द्वय २ वयोवृद्धवरसिंह १८४१ नयननगरसमाक्रमण २१, लब्धबुन्दीन्द्रमरणावसरशत्रुमण्डलबम्बावदाधिराजधीरदेव १८४१२ देश १ दुर्गाऽऽदानप्रारम्भण २२, हड्डाधिराजवरसिंह १८४१ जन्म १ राज्य २ प्राप्ति ३ तारादुर्गनिर्माण २ पत्नीद्वय २ पाणिपीडन ३ पुत्राधिगम ४ गङ्गोपरागदान ५ नयननगराक्रमण ६ तनुत्याग ७ शकसूचनं २३ चतुर्दशो १४ मयूखः ॥ १४ ॥

आदित एकषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

जवनराज फीरोज १६ जो, किन्न कबेल जब काल ॥
तखत गयासुद्दीन ७ तस, साह रह्यो इक १ साल ॥ १ ॥
सर चउ चउ ससि १४४५ सक्क समय, जो१७हु मरत जवनेस ॥
दिल्लीपति अष्टादशम १८, अबूबकर १८ हुव एस ॥ २ ॥
कातिकमास सो १८ राज्यकरि, हुव बिधिबस वपुहीन ॥
ता १४४५ हि बरस बैठो तखत, दुमंति नासुरुद्दीन १९॥ ३ ॥
सक ख पंच चउ ससि१४५० मृत सु, पंच ५ बरस असुपाइ ॥
तखत हुमायोंसाह २० तब, बैठो स्वमत बनाइ ॥ ४ ॥

प्रसंशा युक्त अपने पुत्र और छोटे भाई के लिये रीझ में मच्छीदगढ देकर तोमर और दहिया दोनों को निकालनेवाले वृद्ध अवस्थावाले बरसिंह का नैणवानगर लेना, बुन्दी के राजा के मरने का समय पाकर शत्रुमंडल का बम्बावदा के राजा धीरदेव से देश और गढ लेने का आरम्भ करना, हड्डाधिराज बरसिंह के जन्म १ राज्यप्राप्ति २ तारागढ को बनाना३ दो स्त्रियों से विवाह करना ४ पुत्रों का होना ५ ग्रहण में गंगा पर दान देना ६ नैणवानगर को लेना ७ और शरीर छोडने ८ के सम्वत् की सूचना करने का चौदहवां मयूख समाप्त हुआ ॥१४॥ और आदि से १६१ मयूख हुए ॥

१ मारा ॥ १ ॥ २ ॥ २ खोटी बुद्धिवाला ॥ ३ ॥ ३ जीविन रहकर ॥ ४ ॥

ता १४५० हि वरस मृत सो२० हु तव, विगरत समय विसेस॥
दिल्लीपति महमूद २१ हुव, आगम मुगलन एस ॥ ५ ॥
तसहु नासुरुद्दीन २१ तिम, पद दूजो २ अभिधानं ॥
सोहु सम्हारि न धर सक्यो, भजि प्रमाद मितभान ॥ ६ ॥

॥ प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

हुवो मरण बरसिंह १८४११ रो, जिणही समय सजोर ॥
एक मुगल वधियो अठी, गंजे कावल १ गोर २ ॥ ७ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

इणहीसमय अठी समरकंददेसरा एक मुगल अमीररोपुत्र तैंमूरबेग २२ प्रारब्धरैंजोर वधियो तिकण समरकंद १ वकर २ गोर ३ फारस ४ तातार ५ कावल ६ प्रमुख देसाँरो विजयकरि एक आपराभरोसारो भड़ मुगल रमजानवेग दिल्लीरो बळ देखणरैकाज अटकरै वार भेजियो ॥

जिकण कस्मीर १ मुलतान २ दो २ ही देस लूटिया जाणि पंजावरा ओलाँ देस ऊजड़हुवा सुणि दिल्लीसहित प्रतीची ३ दिसारो आधो आर्यावर्त्त चळविचळ थियो ॥

एकवीसमाँ महमूदा २१ऽपर २ नाम नासुरुद्दीन २१ रे दिल्ली में राजकरताँ इण तैंमूर २२ कावलरैअधीस आपरो विस्वासपात्र मुगल रमजानवेग करतोपारै ओलैतट पेलियो ॥

जिकण पंजावमें दरोळैपाड़ियो तोभी दिल्लीरै अधिराज महमूदा २१ऽपर २ नाम नासुरुद्दीन २१ साम्हैं चलावणरो उच्छाह

मुगलों का १आना इसीसे हुआ ॥५॥ २नाम. आलसी अथवा प्रमादी ३कोकर ४आनिकारी ॥६-७॥ ५आदि ६ अटक नदी के इधर ७ इधर के (इरली तरफ के) ८ पश्चिम दिशा का ९ दूसरे नाम से १० अटक नदी के ११ इधर के किनारे १२भेजा १३ उपद्रव

शी नधारियो ॥

जिणथी दिसादिसारानरेसाँ मुगलरैसाम्हैं अनेक उपहार भेजि आपखरी इळा आपआपरेरहैठे लेणारो प्रयत्न वधारियो ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

वाळे वरस वतीस ३२ वय, संभर वैरीसाल १८५।२ ॥
जनकछत्र धरियो जठै, पौतावे कुळचाल ॥ ९ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अठी रूमजानवेग पंजाबरो विजयकरि महमूद २१ नूँ निर्वळनि- हारि पाछोजाइ आर्यावर्त्तनूँ आँगेमणरैकाज तैमूर २१ नूँ अटकन दरिवार आणियो ॥

जिणथी दो २ हीवार लड़ाईमैं पराजयपाइ भागे प्रसादेरेअधीन भानहीण जवनाँरे अधिराज नासुरुद्दीना २१ऽपरनाम महमूद २१ तीजी ३ वार साम्हैंचलाइ रणरोरस चाखणरो मनोरथभी नजाणि यो ॥

अठी हाडाँरेअधीस वैरीसाल १८५।१ बूंदीहूँचलाइ पातोररा द रुड़ भाग्मल्लरी कन्या मानकुमरि १८५।२रे साथ दूजो २ विवा- ह कीधो ॥

अर अठी सगुलंडळरा सीलाड़ाँ वंवावदारा नरेस धीरदेव १८४। १ रा देस दावणरो निवाह कीधो ॥ १० ॥

पहली वरसिंह १८४।१ जीवताँ जिकाँरो जोर न लागो तिकाँ अब एक १ तो बुंदीसरामरणरोसहाय पायो ॥

अर दूजाँ २ तैमूर २२ रे आगम दिल्लीस महमूद २१ नूँ दवि गांसेंग्वि २ खींचियाँ १ झालाँ २ भामाराँ ३ सहित सीसोदियाँ ४ राँ हाडाँरी धरादावणनूँ मन चलायो ॥

१ नजराना २ भूमि ॥ ८ ॥ ३ स्मरण करके ४ दबाने के लिये॥१०॥

वंश भास्कर

(चतुर्थ खण्ड)

[बारहठ श्री कृष्णसिंह विरचित उदधि-मंथिनी टीका सहित]

मूल लेखक :
सूर्य मल्ल मिश्रण

सम्पादक
स्वर्गीय पंडित रामकर्ण आसोपा
भूतपूर्व प्राध्यापक
इतिहास विभाग
कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता

एकाधिकारी वितरक
बाफना बुक डिपो
चौड़ा रास्ता, जयपुर-२

लवनोद[1]कौं चउ४कोद[2] लै जंबु[3] द्वीप जंबुव भाँसभो[4] ॥ २ ॥
वपु ढंकि कंदर बासुकी कि[5] अगेस[6] मंदर आँवरयो[7] ॥
कि मनौं वराटक[8] बीच बाटक[9] कंज केसरनैं[10] करयो ॥
रिपु वृत्त[11] दुर्ग नरेंद्रको इम केंद्र[12] सन्निभ[13] व्हैरह्यो ॥
दुहुँ२ ओर घोर सजोर व्है दगि सोर भूतलकौं दह्यो ॥ ३ ॥
मिलि दाँव[14] दुस्सह तावदै अररौंव[15] नालिनको मच्यो ॥
तिहिँ बार झार फुलिंग[16] फार[17] पसारमैं गिरि जो तच्यो[18] ॥
लागि चक्क[19] ढक्कन यौं झलाझल धूम[20] संकुल व्हैलस्यो ॥
बहु बिज्जु[21] मिश्रित अभ्र[22] जाति अदभ्र काननपैं[23] बस्यो ॥ ४ ॥
बाहि वज्र बैर नसात बैरन फैर फैरनपैं बनैं ॥
चहुँ४ओर यौं सुनि सोर संकिय भारज्यौं तरकैं घनैं ॥
धकि वन्हि बित्थरैं[24] पत्थ पत्थर भू थरत्थर व्है झुकी ॥

प्रकाशित हुआ ३ मानों १ खारसमुद्र को चारों २ दिशाओं में लेकर जम्बूद्वीप ४ शोभायमान हुआ ॥ २ ॥ ५ किधौं कंदरावाले शरीर को ढककर बासुकि नाग ने ६ पर्वतों के पति मंदराचल को ७ घेरा. किधौं ८ कमल के डब्बे के बीच में ९ कमलगट्टा घिरगया, अथवा मानों उस कमल के डब्बे को कमल की १० केसर (कमल के डब्बे के चारों ओर की शलाकाओं को केसर कहते हैं) ने डब्बे को बीच में करलिया, अथवा शत्रुओं रूपी ११ परिधि (गोलाकार) में राजा का गढ १२ केन्द्र (गोलाकार का मध्यस्थान) के १३ सदृश होरहा है. दोनों ओर भयंकर और बलवान् होकर बारूद ने जलकर भूमितल को जलाया ॥ ३ ॥ दोनों ओर से १४ ज्वाला मिल कर दुःसह ताव देती है, और तोपों का १५ अरराट (अखण्ड शब्द का अनुकरण है) शब्द म चरहा है, उस समय में ज्वाला और १६ अग्निकणों के १७ समूह के फैलाव में वह पर्वत १८ जला, इस प्रकार १९ सेना उमल कर उसको ढकनेलगी और धुआँ २० भर कर ऐसा शोभायमान हुआ, मानों बहुत २१ बिजुलियों से मिला हुआ २२ मेघ बड़े २३ वन पर बसा है ॥४॥ वज्र के समान गोले बढ बढकर बैर और नगरों का नाश करते हैं, यह बनाव तोपों के फैर फैर के साथ बनता है, भाड़ में चने तड़कें इस प्रकार का शब्द सुन कर चारों दिशाएं शङ्कित हुईं. अग्नि के जलने से, पत्थरों के मार्ग में २४ फैलने से भूमि कम्पायमान होकर झुकती है, झड़ में बरसती हुई मेघमाला नीचे को झुकती है

अठीतो भाखापुररा खीची भरतसेण १ रै पोतै जयमल्ल ३ तो आपरीतरफरी सीमारा खेड़ी १ रत्नगढ २ प्रमुख बंबावदारा गढ गंजि भैंसरोड़ ३ सूधी आइ अमलजमायो ॥

अर झालाँ १ प्रमाराँ २ नूँ प्रचारि सीसोदियाँ ३ भी केथोली १ सींघोली २ जावद ३ अठाँणा ४ बींझोली ५ आदिक देस १ दुर्ग २ दाबि बेघम ६ रै माथै तोपाँरो ताव धमायो ॥ ११ ॥

नरेस बैरीसाल१८५।१ दूजो २ बिबाह करणरैकाज पातोरपूगो ॥

जिकणहीसमय बेघमरैऊपर जोरपड़ताँ आपरै एक १ बंबावदो १ ही रहतोजाणि चाँचाउत्त ४।१ धीरदेव १८४।१ दूलहनरेस बैरीसाल १८५।१ नूँ अवनीजावणरो पलदीधो ॥

सो आजरा बैरियाँरो अंत आसंगियोनजाइ जिणथी प्रपितामह समरसिंह १८१।७ रो बिरुदबिचारि सहायरो अवलंबदीजै इण रीति अरजीमैं प्रणातीरो प्रसादकीधो ॥

मिरजा पातसाह तैंमूरबेग२२रै आगम आर्यावर्त मैं दिसादिसा दरोळैपड़तो देखि नरेस बैरीसाल१८५।१भी दुलहीनूँ वडैबेग लेर बूँदीपधारियो ॥

अर धीरदेव १८४।१ नूँ सहायदेण बेघमरैमाथै फौजबंधीकरण मैं बिलंब नधारियो ॥ १२ ॥

जठै आपरा सुभट १ मंत्रियाँ २ एकत्रहोइ अरजकीधी इणसमय बेघम हालियाँतो बुंदीभी घरे रहणमैं द्वापरहीदिखावै ॥

अर दिल्लीस महमूद २२ नूँ निर्बळ निहारि आर्यखंड आँगमण नूँ तैंमूर २२ अटकरैवार आवियो तिको असेसही आर्य अवनीसाँ नूँ अवसरदेर आपसरा देसदावणाँ सिखावै ॥

आपुरा परिकररी इसड़ी अरज मानि नरेस बैरीसाल १८५।१

१समूह २ दबाने(हिम्मत) में नहीं आवे ऐसा ३उपद्रव ॥१२॥४संदेह५दबाने को

धीरदेव १८४११ रैसहाय तीनहजार ३००० सेना भेजी जिंकी पूगियाँपहलीही सीसोदियाँ दुर्गसमेत बेघमपुर छुडाइलीधो ॥ अर उँठीरा देसमैं राणालाखारो अमलजमाइ बंबावद जाइ आहवरो प्रारंभकीधो ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

सक चोवन चउदह १४५४ समा, मुगल अठी तैंमूर २२ ॥
समर गंजि दिलीस २१ नूँ, साहहुवो अतिसूर ॥ १४ ॥

॥ षट्पात् ॥

तातारी दळ अतुळ साजि रमजान १ कुतुब २ सह ॥
मुगल साह तैंमूर २२ आइ दिल्ली जयआग्रह ॥
सक चोवन चउ सोम १४५४ हाँकि संका विणु हैंबरें ॥
पाणीपथ लग पूगि धणीबणियो आरिजंधर ॥
महमूद २१ मीर निरखे निबळ कचरघाण घमसाण करि ॥
मंडियो तखत दिल्ली मुगल कातर बंस पठाण करि ॥१५॥
साणकरि १ ठाणकरि २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

नीड़े दिल्लीनैररै, लाखउभै २००००० मित लोक ॥
कत्तीहेठै करि कतल, अमलकियो सब ओक ॥ १६ ॥
पंद्रह १५ दिन रहियाँपछैं, मुगल मीर तैंमूर २२ ॥
क्रम इण मंडळ जीतकरि, गो गृह पाँणिप पूर ॥ १७ ॥
आँरिज राजाँ समय इण, जठीतठी अड़ि जुद्ध ॥
आपसरी दावे इळा, राखी अवसर रुद्ध ॥ १८ ॥

॥ १३ ॥ १४ ॥ १ अपार २ घोड़े उठाकर ३ आर्यों की भूमि का ४ नाश "कायरों को घाणी (कोल्हू) में पीसने के समान पील डालने को कचरघाणकहते हैं" ५ युद्ध में ॥ १५ ॥ ६ समीप ७ तलवार की धार नीचे ८ घरों में ॥१६॥ पूर्ण ९ पराक्रमवाला ॥१७॥१० आर्य राजाओं ने ॥ १८ ॥

हूँता भड़ १ जे नृप २ हुवा, हूँता जे नृप १ हारि ॥
हळ खेती ठाकुर २ हुवा, बैलाँ सींचण बारि ॥ १९ ॥
अधिप किता बधिया अधिक, गंजे परगढ १ गेह २ ॥
बरताणाँ इसड़ो बिखम, आगम मुगल अनेह ॥ २० ॥
बंबावद रचि बैरियाँ, समर अठी बळसीर ॥
धीरदेव १८४१ हणियो धणी, बूँदीदळ सहबीर ॥ २१ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अठी तैंमूरबेग २२रै पाछोगयाँ केड़ै एक दिल्लीरैअमीर इकबालखान पातसाहीरो प्रबंध आपरैअधीन कीधो ॥

अर पराजयरैप्रसंग मांणहीणहुवो महमूदसाह २२ पाछो आयो तिकणनूँ प्रामाररैसाथ प्रतिमामात्र पातसाह रहणनूँ अवसरदीधो ॥

पंद्रह १५ दिन रहियाँ बावीसमाँ २२ पातसाह तैंमूर २२ रै गयाँ केड़ै प्रतिमामात्र सोळह १६ बरस रहियाँ एकवीसमाँ २१ पातसाह महमूद २१ रै मरियाँपाछै बिक्रमरा ब्योम बाजी बेद बिधु १४७० सम्मित साहरै समय मुलतानरा सूबादार सय्यद मलिकसुलैमानरै पुत्र खिजरखान २२ नाम तेवीस २३मैं पातसाह दिल्लीरो अधिराज भाव गहियो ॥

सोभी अटकपाररा पातसाह तैंमूर ११ रा पुत्र साहरुखरो सिक्को ही रुपियाँमैंराखि जगतनूँ जणावणनैं तिणराही हुकमरै अधीनहोइ रहियो ॥

अठी चीतोड़रा अधीस राणा लाखारा पट्टपकुमार चूँडाथी पुत्री

जो १ उमराव थे वे राजा होगये और जो राजा थे वे हल चलाकर बैलों से २ पानी सींचकर खेती करनेवाले ठाकुर होगये ॥ १९ ॥ मुगल के आने का ऐसा कठिन ३ समय वर्ता ॥ २० ॥ २१ ॥ ४ मूर्ति के समान ॥ २२ ॥

रो संबंधकरणारैकाज मंडोउररैनरेश राठोड़ रणमाल आपरा पोळि पात्र भेजिया ॥

तिकाँ राणारी सभामैंजाइ समतारासंबंधरा सूचक[1] पत्रदिया ॥

राणाँ समानवयरा विवाहरो नर्म[2] कीधो सुणि कुमारचूँडै बडा प्रसभरैप्रमाण पितारो संबंध करवाइ आप चीतोड़रीगादी छोडणारो लेखकरि मारवाड़ाँरै अधीनकीधो ॥

अर तिकोही माँग पितानूँपरणाइ तटस्थभाव धारि अपूर्व जस लीधो ॥ २३ ॥

इणग्रंथमैं छठो ६ रासि पहली निर्माणहुवो जिकणमैंभी प्रसंग पाइ कुमारचूँडारी सपूती बिसेसजणाई ॥

अर राणाँरै दूजो २ पुत्र राठोड़ाँरोभाणेज मोकल हुवो तिकण पितारैअनंतर चूँडानूँ काढि नाँनाँरा पक्षरो विस्वासकरि बाळकथकैही चीतोड़री गादीपाई ॥

पछैं मोकलरैमाथै विस्वासघात बिचारियो जाणि चूँडै चीतोड़माथै चढि राव रणमाल १ नूँ मारि कुमार जोधा २ नूँ भगायो ॥

अर जाटराघरथी पाटराधणीँ नरवद आँधानूँ बुलाइ मंडोउर लैजाइ उणादेसमाँहै तिकणारो हुकमलगायो[4] ॥ २४ ॥

---

१ जतानेवाला २ * हँसी ३ हठकरके ॥ २३ ॥ ४ चलाया ॥ २४ ॥

---

* मंडोउर से राव चूंडा की पुत्री की सगाई कुमर चूंडा से करने को मंडोउर के भले आदमी चीतोड़ गये थे उनसे महाराणा लाखा ने हँसी में कहा कि जवानों की सगाई करना सभी कोई चाहते हैं हमारे जैसे वृद्धों का विवाह कौन करै? जिसपर चूँडा ने अपनी सगाई का निषेध करके पिता को विवाह देने का हठ किया इस पर मंडोउर के भले आदमियों ने कहा कि रणमल्ल की पुत्री के महाराणा लाखा से जो पुत्र होवेगा वह तुम्हारा सेवक समझाजावेगा इस कारण हम महाराणा को विवाहना नहीं चाहते इस पर चूंडा ने चीतोड़ का राज्य छोडदिया. इस कथा को वीरविनोद नामक मेवाड़ के इतिहास में अन्य प्रकार से लिखी है सो वीरविनोद के २०७ की पृष्ठि में देखो

पहली जैतारणरै साँखलै राजा महंराज कुमारपणौं नरवदहूँ आपरी बडीपुत्रीरो संबंधकीधो ॥

पछैं सोझतिरा संगरमैं नरवदनूं मरियोजाणि पालोरापड़िहार खींदारा कुमार बरसिंहदेवहूँ तिकण कन्यारो बिवाह करिदीधो ॥

पछैं इणकारण माँगरैआँटै थोड़ाहीबरसाँमैं नरवद १ बरसिंह २ दो २ ही साँचैमन ऊजळालोहाँ कामआया ॥

जरैं रणमालरै चोबीसाँ २४ मैं केहासूँ छोटैपुत्र जोधै मंडोउर आइ पाछा आपरा नीसाँण घुराया ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

काँमिणि आरत्ती करण, नरवद १ रै सुणि नाह ॥
रहियो इम बरसिंह २ रण, सह अरि अंध १ सिपाह ॥ २६ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अठी बाळहीबयमैं राणौं मोकल आपरा अग्रज चूँडानूँ पाछो

१प्रहार करने में खड्ग पर रक्त नहीं ठहरे उसको ऊजळालोह कहते हैं २ नगारे बजवाये ॥ २५॥ *अपनी ३ स्त्री का नरवद की आरती करना सुनकर ॥ २६ ॥ महाराणा४×मोकल ने

---

* नरवद की मांग सुपियारदे की शादी नरसिंह बीदावत के साथ करदीगई थी, फिर मांग का दावा करने पर सुपियारदे की छोटी बहिन नरवद को इस शर्त से व्याहीगई कि, सुपियारदे नरवद की आरती करेगी, नृसिंहदेव ने अपनी स्त्री को आरती करने से मना किया, परन्तु उसने अपने पीहरवालो के प्रार्थना करने पर नरवद की आरती की, यह खबर पाकर नृसिंहदेव ने सुपियारदे को बहुत कष्ट दिया, जिसका वृत्तान्त सुपियारदे ने नरवद को लिख भेजा, जिसपर सुपियारदे को छाने निकालकर नरवद लेभगा, तिस पर परस्पर में युद्ध होकर नरवद का भाई मारागया और स्त्री को नरवद लेगया. यहां इस कथा में कुछ भेद है

× रावरणमल्ल को महाराणा मोकल के समय में रावत चूंडा का मारना लिखा सो ठीक नहीं ; क्योंकि रावरणमल्ल राठोड़ महाराणा कुम्भा के समय में मारागया था, जिसका वृत्तान्त इस प्रकार है कि रणमल्ल का भानजा महाराणा मोकल चाचा और मेरा नामक पासवानियों के हाथसे मारेगये थे उन दोनों को मारकर रणमल्ल ने अपने भानजे महाराणा मोकल का वैर लिया, फिर मालवा के बादशाह महमूद को युद्ध में पकड़ कर महाराणा कुम्भा के आधीन किया, इन सेवाओं के कारण महाराणा कुम्भा ने रणमल्ल को प्रधान बना कर मेवाड़ का सम्पूर्ण कार्य उसके हाथ में देदिया जिसपीछे रणमल्ल का विचार महाराणा कुम्भा को मा

राजरो तदेशाहारि जाणि तिकणरा भुजाँ चीतोड़रो भार फलाइ मेवाड़में अकंटक अमलकीधो ॥

अर चाँचाउत्त धीरदेव १८४।१ नूँ मारियाँकेड़े तिकणगामाई १ बेटाँ २ नूँ मंडणगढरा सात ७ ग्राम दर बेघस १ वेवावदा २ सूँपी चीतोड़रो थाँणो जमाइदीधो ॥

अठी महमूदसाह २१ नूँ जीति दिल्लीपैं पंदह १५ दिन पातसाहीकरि आर्यावर्त्तरा केही अधीसाँनूँ दंडि मीर तैमूरबेग २२ रै पाछोगयाँकेड़े दिल्लीरासूबादार जठीतठी आपआपरें मत्त रहणहूका ॥

अर सिंधुदेस १ रा सूबादार जवन करीमखान १ जिसा अनेक अधिकारी सीमारासमीपी नरेसाँहूँ उपहार लेर तिकाँनूँ आपरैअधीन वणाइ सूबादारीरो अनादरकरि पातसाहीपदनूँ वहणहूका ॥ २७ ॥

माळवारैसूबादार नवाब बाजबहादुर १ तो माँडूसहरनूँ राजधानीवणाइ धारा १ भूपाल २ सागर ३ सीहोर ४ राजगढ ५ राघवगढ ६ गुंगेर ७ सोपुर ८ गागरूणि ९ गगराड़ १० मारणपुर ११ दसोर १२ जीरण १३ रानपुर १४ प्रमुख राजाँहूँ उपदाँलेर बूंदी १ चितोड़ २ भी उपायन सहित आइ मिलणरो फरमाणदीधो ॥

अर दक्खिणरपातसाह अहमदखान २ आपरा अग्रज फीरोजसाहसूँ गादीपाइ गुजरातमें अहमदाबाद नाम नगरवसाइ अठैही आपरी राजधानी राखि माँडवी १ जामनगर २ हलवद ३ मोरवी

---

१ मालकमाह [illegible] ॥ २७ ॥ २ [illegible]

४ अणिहलपुर ५ कोकिलपुर ६ वालेस ७ ईडर ८ सिरोही ९ जाळोर १० बाढमेर ११ जूनाँगढ १२ समेत पच्छिमरोप्रातभी आपरैही अधीनकीधो ॥

पहली ग्यारहाँ ११ पातसाह अलावुद्दीन ११ रै अनंतर केही सूबादार दिल्लीहूँ पलटिया तिकाँमैं किताक पाछा दिल्लीरा तांबादार हूँता तिकाँभी तैंमूरबेग २२ रो बिजयदेखि फेरि महमूद नासुरुद्दीन २१ री तथा खिजरखान १३ री आसंगमैं नआइ जुदैजुदै ठिकाणैं आपआपरो अमलजमायो ॥

पहली दिल्लीरा पँद्रहाँ १५ पातसाह अलफखाना १५ऽपर२ नाम मुहम्मद १५ तुगलकरै समय दक्खिणमैं काईगणाकराज बिप्ररो चाकर एक १ हुसन १ नाम जवन हुवो तिकण प्रारब्धरैजोर दक्खिणरी पातसाही पाइ अलावुद्दीन १ नाम कहाइ कुलबर्ग १ दौलतावाद २ दोही सहर आबादकरि दो२ हीठाम आपरी राजधानी बणाई तिकणरा बंसमैं इणासमय फीरोजसाह ८।१ अहमदसाह ८।२ दो २ ही कुलबर्ग १ दौलताबादमैं नामी हुवा तिकाँमैं बडो फीरोजसाह८।१ पहली बिजयपुररा वारडनरेस रणाधवलहूँ रणमैं हारियो तिकणरी लाजपाइ आपरा अनुज अहमदसाह ८।२ नूं गादीदेर दक्खिण१ पच्छिम२ रो पातसाह कीधो तिकण अहमदसाह ८।२ इणासमय दक्खिण १ मैं गोलकुंडा १ नाम गढवणाइ गुजरात२ मैं अहमदाबाद२ नाम नगर बसाइ सो ही आपरी राजधानी राखि दो२ ही दिसारो राजमंडळ नमायो ॥२८॥

अठी बुंदीरा नरेस बैरीसाल १८५।१ रै अखैराज १८६।१ चूडो १८६।२ उदैसिंह १८६।३ सुभांडदेव १८६।४ सोंडदेव १८६।५ लोहठ १८६।६ कर्मचंद्र १८६।७स्यामदास १८६।८ स्यामाकन्या१८६।९ ए नव ९ ही संतान आप आपरै समय प्रसूत हुवा ॥

---

१ पीछे २ काबू में ३ दूसरा नाम ४ ज्योतिषी ५ झुकाया ॥२८॥

तिकांमैं सुभांडदेव १८६।४ सौंडदेव १८६।५ दोर ही कुमारां बासठि ६२ वरसरा वयमैं वृद्धहुवा हड्डाधिराजहूँ छोटीराणी दाहड़ी २ मैं जोड़ै २ ही जन्मलीधो तिकाँहीं पछैं बुंदीपाइ चीतोड़रा अधीस कूँभारा भाँजिया हुवा ॥

तिकाँरै अनंतर दाहड़ी२ मैं लोहठ१कर्मचंद्र २ प्रामारी१ मैं स्यामदास१ स्यामा२ ए च्यारि४ही संतान बुंदीस बैरीसाल १८५।१रै वयमैं पैंसठि ६५ माँ वर्षपर्जंत प्रकटिया ॥

अर अखैराज १ चूंडो २ उदैसिंह ३ ए तीन ३ ही कुमार हड्डाधिराजरै चाळीस४० वर्षरा वयथी बडीराणी पाटिमदेवी १८५।१मैं प्रसूताथिया ॥ २९ ॥

दोहा ॥

दूजो२ नाम सुभांड १८६।४रो, भारमल्ल१८६।४ निवहंत ॥
स्यामदास१८६।८अभिधा[2] अपर२, केसवदास१८६।८कहंत ॥३०॥
तनय भूपरा तीन३ही, पहिला जोबनपाइ ॥
रुचि जिमतिम लग्गो रहण, भाव निरंकुस भाइ ॥ ३१ ॥

प्रायों व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

हेमसाहि कछवाहकी, कन्या नंदकुमारि१८६।१ ॥ १ ॥
अक्खयराज१८६।१कुमारकौं, नृप व्याहिय निरधारि ॥ ३२ ॥
रामसाहि प्रतिहारकी, कन्या राजकुमारि १८६।२।१ ॥
आधिप कुमर चुंड१८६।२ हिं यहै, व्याही सुमह[3] बढारि ॥ ३३ ॥
कन्या मानकवँध[4]की, राजकुमारि १८६।३।१ अभिधान ॥
सुता गोड़ सुरतानकी, स्यामाकुमारि १८६।३।२सुजान ॥ ३४ ॥
ए उभय२ हि तीजे३ तनय, उदयसिंह १८६।३ के अत्थ ॥

---

१ समूह ॥ २९ ॥ २ नाम ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३ श्रेष्ठ उत्सव करके ॥ ३३ ॥ ४ मानसिंह राठोड़ की पुत्री ॥ ३४ ॥

परिनाई बुंदी सुपहु, *श्रुतिबिधान१ मह२ सत्थ ॥ ३५ ॥
कुमरपनहि खटपुर१ कियउ, अक्खयरज १८६।१ अधीन ॥
सुतदूजे२ चुंड १८६।२ हिं सुपहु, द्रंग बरुंधनि२ दीन ॥ ३६ ॥
तीजे३ सुत उदय १८६।३हिं बितरि, नृप पिप्पलदा ३नैर ॥
मंडूपतिसन मंडयो, बैरीसल्ल १८५।१ हु बैर ॥ ३७ ॥
पायो नहिं इन राजपद, तीन३न कुब्यसन तानि ॥
व्है हैं सिसुहि सुभांड१८६।४ नृप, जब मरिहै भू२जानि ॥ ३८ ॥
कुल सब अक्खयराज१८६।१ को, अक्खाउत्त१।९।१३ कहाइ॥
हड्डनमैं हुअ तेरहम१३, प्रकट भेद क्रमपाइ ॥ ३९ ॥
कुमर चुंड१८६।२ संतति सकल, अरिन करन उच्छेद ॥
चुंडाउत्त २।१०।१४ चउदहम१४, भो हड्डन कुल भेद ॥ ४० ॥
ऊदाउत्त३।११।१५ कहाइ इम, उदयसिंह१८६।३ कुल एह ॥
हड्डन अभिधा३ पंद्रहम१५, नृप जानहु जुतनेह ॥४१॥
भेद सबहि भावी भनिय, वर्तमान पुनि वत्त ॥
सुपहु राम२०।३।४ धारहु श्रवन, ४अन्वय जस अनुरत्त ॥४२॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचंपूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रचाहुवाण१वीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल१५५वंश्यानुवंश्य-विहितव्याख्यानवेलाव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रबैरिशल्य १८५।१ चरित्रे पूर्वनृपबरसिंह १८४।१ मरणसमयसमीपमुगलजातीयतैमूर २२ नाम म्लेच्छकाबल१प्रभृतिप्रत्यन्तप्रभभवन १, तत्प्रेरणाधीनकरतोया

---

* वेद के विधान से बडे उत्सव के साथ ॥३५॥३६॥ १ देकर ॥३७॥ २भूप॥३८॥ ॥३९॥४०॥३नाम(भेद) ॥४१॥ ये सब भेद आगे होनेवाले कहे हैं हे रावराजा रामसिंह! ४वंश के यश में ५प्रीति करके अब वर्तमान की वार्ता सुनो ॥४२॥
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में वैरिशल्य के चरित्र में पहले राजा बरसिंह के मरने के समय के समीप मुगल जाति के तैमूर नामक म्लेच्छ का

वारातनिर्णीतदिल्लीयाथातथ्यलुंटितकश्मीर १ मुलतान २गृ-
हीतविविधार्योपहारप्रतिगतयवनरसूजानतैमूर२२आर्यावर्तसीमासमान
यन २, प्राप्तपितृपट्टहड्डाधिराजवैरिशल्य १८५।१ पातोरपतिपुत्रीदा
हड़ीमानकुमरी १८५।२ परिणायन ३, सीमाशत्रुवर्गवम्बावदेशधीर
देव१८४।१सम्पूर्णराज्यसमाक्रमण४, समरसंस्थापितधीरदेव१८४।
१ सन्तत्यर्थमण्डनदुर्गसम्बन्धिग्रामसप्तक ७ समर्पण ५, पराभूतप्र
द्रावितदिल्लीशमहमूदनासुरुद्दीन २१ मारितनिर्मन्तुतद्देशीयलोकल-
क्षद्वय २०००२० तैमूर २२ पक्षैक १ दिल्लीराज्यकरण ६,
तदवसरप्रबुद्धयत्तदार्यराजकपरस्परपृथ्वीसमाक्रमण ७, तैमूर
२२ प्रतिगमनानन्तरपराजितप्रत्यायातमूर्तिमात्रपातसाहमहमूद
२१ षोडश १६ वर्षजीवितावधितत्सचिवेकबालखानसर्वराज्य
कार्यसाधनानन्तरमुलतानसूबापतिसय्यदसुलेमानपुत्रखिजरखान
२३ सूचितशकसमयदिल्लीपट्टप्रापण ८, चित्रकूटशशीपोदिलक्ष

काबुल आदि म्लेच्छ देशों का पति होना, उसकी प्रेरणा के अधीन अटक नदी के इधर का दिल्ली का सत्य वृत्तान्त जानकर कश्मीर और मुलतान को लूट कर आर्यों से नाना प्रकार की भेट लेकर पीछे गयेहुए यवन रसूजान का तैमूर को आर्यावर्त की सीमा पर लाना, पिता का पाट पाकर हड्डाधिराज वैरिशल्य का पातोर के पति की पुत्री दाहड़ी मानकुमरी से विवाह करना, सीमा के शत्रुओं के समूह का वम्बावदे के पति धीरदेव के सम्पूर्ण राज्य को दाबना, युद्ध में स्थापित धीरदेव के पुत्रों के लिये मांडलगढ स म्बन्धी सात गांव देना, पराजित होकर भगेहुए दिल्ली के बादशाह महमूद नासुरुद्दीन के देश के निरपराधी दो लक्ष लोगों को मारकर तैमूर का पन्द्रह दिन तक दिल्ली में राज्य करना, उस समय में चेते हुए इधर उधर के आर्य रा जाओं का परस्पर की पृथ्वी को दाबना, तैमूर के पीछे जाने पर हारकर पीछे आयेहुए नाममात्र के बादशाह महमूद के सोलह वर्ष तक जीने की अवधि में उस के सचिव इकबालखान के सब राज्यकार्य साधने के अनंतर मुलता न के सूबापति सय्यद सुलेमान के पुत्र खिजरखान का ऊपर जनायेहुए शक समय में दिल्ली का पाट पाना, चित्तोड़ के पति शीशोदिया लाखा का कुमर

झर झुट्टती घनमालसौं फनमाल आलुककी झुकी ॥ ५ ॥
जिम साह चाह सिपाह गोलन दुग्ग डोलन जोरिदै ॥
तिम रानकेभट तोपजालन मिच्छ ढालन तोरिदै ॥
सह अर्थ भो वह चित्रकूटहु सोन१ धूमर२ कृसानु३ सौं ॥
भुव अंधकार अपार कैं रज बादमंडिय भानुसौं ॥ ६ ॥
गढलग्गि गोलन अट्ट१ गोपुर २ कोट३कंगुर४ के गिरैं ॥
वलँ लग्गि वारन१ वाजि२बीर३न छुत्थि कोसन लौं किरैं ॥
इत सौध१ गोखर२ लदाव३ मंडप४ थंभ५छत्रिय६उल्लटैं ॥
उत केणिका१ अपटीर२ वितान३ रु तल्प४ ज्वालनमैं अटैं ॥७॥
पवि बाज गाज दराज तोपन गेंभ गब्भिनिके परैं ॥
अह१ रत्ति२ तत्ति निवान आवटि नीर सीढिन उत्तरैं ॥
लहि धूम नैनन गैन ऐनन अंधता चिरलौं लगैं ॥
जरिकैं अनेकन पच्छ१ केकन पुच्छ२ चंगनलौं जगैं ॥८॥

उसके समान १ शेषनाग की फणमाला झुकती है ॥ ५ ॥ जिस प्रकार बाद शाह की चाह के मुवाफिक सिपाही लोग गोलों से जोर देकर गढ को २ हिंडोला बनादेते हैं, उसी प्रकार महाराणा के वीर तोपों की ज्वाला से अथवा तोपों की जाली से म्लेच्छों के ३ निशानों (झंडों) को तोड़ देते हैं. वह चित्रकूट (चित्तोड़) ४रक्त, धुआँ और ५ अग्नि से सार्थक होगया, अर्थात् आश्चर्य करानेवाला होगया. रज (धूलि) ने पृथ्वी पर अपार अन्धकार करके सूर्य से बाद (हठ) मांड दिया कि मैं तुम्हारा प्रकाश भूमि पर नहीं आने दूंगी ॥ ६ ॥ गोले लगने से गढ की कितनी ही छत्तें, ६ शहर के दरवाजे, कोट और कांगरे गिरते हैं. ७ सेना लग कर हाथी, घोड़े और वीरों की चूर्ये (टुकड़े) कोसों तक ८गिरती हैं. इधर ९ महल, झरोखे, लदाव १० गुम्मट, खंभे, छत्रियें उलटती हैं; और उधर ११ छोटे डेरे (रावटी) १२ कनात १३ शामियाने और १४ शयन करने के डेरे ज्वाला में जलते हैं ॥ ७ ॥ १५ वज्र के शब्द के समान तोपों की १६ बड़ी गर्जना से गर्भिणियों के १७ गर्भ पड़ते हैं. १८ दिन १९ रात. गर्मी से निवाणों का पानी उबल कर सीढियें उतर जाता है; और २० आकाश, घरों और नेत्रों में धुआँ भर कर चिर काल तक अन्धपन लाते हैं; अनेक पक्षियों के पंख और कितनों की पूँछें जल कर पतंगों (गुड्डियों) के समान जलते हैं ॥ ८ ॥

कुमारचुण्डसंबन्धार्थसमागतमण्डपपुरमहीपराष्ट्रकूटरणमल्लविश्व
स्तवर्गमध्यगणावयःसाम्यविवाहनर्मविधान ९, श्रुतैतदुदन्तत्यक्तपै
तृकराज्यसहिततत्सम्बन्धकुमारचुण्डतत्कन्यापितृपरिणायन १०,
लक्षमरणानन्तरनिर्वासितचुण्डबाल्याविवेकराणामोत्कलमातुल-
पक्षविश्वसन ११, श्रुतमोत्कलजिघांसुमारववर्गप्रच्छन्नप्रत्यागतमारि
तरणमल्लद्रावितततत्पुत्रयोधचुण्डाचित्रकूटराज्यस्वानुजमोत्कलाधीनी
करण १२, मण्डपपुरराज्यपितृव्यरणान्धनरवदार्थप्रत्यर्पण १३, त्या
जितपूर्व १ सम्बन्धाऽपरसम्बन्धपरिणीतशाङ्खलीसुप्रियकारदेवीनिमि
त्तराष्ट्रकूटनरवद १ प्रतिहारवरसिंह २ परस्पररणमरण १४, श्रुतैतद्
वृत्तमण्डपपुरप्रत्यागतकत्यनुजराणमल्लियोधसिंहतद्राज्यसमासाद
न १५, दिल्लीशसूबाधिकारिवर्गस्वामिद्रोहसमाचरणसमयदक्षिणयव
नेन्द्रप्रतापप्रकर्षपुरस्सरमालव १ सिन्धु २ देशा २ धिकारिद्वय २

चूंडा के सम्बन्ध के लिये आयेहुए मंडोवर के राजा राठोड़ रणमल्ल के विश्वासपात्र लोगों में समान अवस्था न होने से विवाह करने की हँसी करना, यह वृत्तान्त सुनकर पिता के राज्य सहित उस सम्बन्ध को छोड़कर कुमार चूंडा का उस कन्या को अपने पिता को व्याहना, लाखा के मरे पीछे चूंडा को निकालकर बाल्यावस्था के अविचार से राणा मोकल का मामा के पक्ष पर विश्वास करना, मोकल को मारने की इच्छावाले मारवाड़ों को सुनकर छाने पीछे आयेहुए चूंडा का रणमल्ल को मारकर उसके पुत्र जोधा को भगाकर चीतोड़ का राज्य अपने छोटे भाई मोकल के आधीन करना, काका का युद्ध में अन्धेहुए नरवद को पीछा मंडोवर का राज्य देना, पहले सम्बध को छोड दूसरे सम्बन्ध का विवाह करने पर सांखली सुपियारदे के कारण राठोड़, नरवद और पड़िहार वरसिंह का परस्पर युद्ध में माराजाना यह वृत्तान्त सुनकर मंडोवर में पीछा आकर कितनों ही से छोटे रणमल्ल के पुत्र जोधा का उसके राज्य को लेना, दिल्ली के बादशाह के सूबों के अधिकारी वर्ग के स्वामिद्रोह करने के समय दक्षिण के बादशाह के बड़े प्रतापसे मालवा और सिंधुदेश के दोनों अधिकारियों का हठ पूर्वक बादशाह होना, विजय नगर के पति चारड़ रणधवल का पराजय करके सज्जीभूत होकर दक्षिण के पति फीरोज़

प्रासभ्यपातसाहीभवन १६, विजयनगराधिपवारङरणधवलपराजय सज्जितदक्षिणाधिराजफीरोजसाह १ स्वानुजाऽहमदसाहा २ऽर्थस्व राज्यवितरण१७, तदहमदसाह २ दक्षिणाऽन्तरगोलकुण्ड १ दुर्गस हितगौर्ज्जरान्तरनिजनामाङ्कितनव्य २ नगरनिर्माण १८, बुन्दीन्द्रह ड्डाधिराजवैरिशल्य १८५।१ सन्तानपुत्र्येक १ पुत्राऽष्टक ८ समुद्भव न १९, नृपमध्यवयोजातत्रिक ३ बार्द्धकजातषट्क ६ सन्तानप्रत्येक मातृनिश्चयसहयुग्मै २ क १ सहजनिसूचन२०, नरेन्द्रकुमाराक्षय राज १ कौर्मी १ चुण्ड २ प्रातिहारी २ तृतीयो ३दयसिंह ३ राष्ट्र कूटी १गौड़ी २ युग्म १ परिणायन २१, प्रथम १ कुमाराऽर्थ २ष ट्पुर १ द्वितीया २ र्थवरूंधणि २ तृतीया ३ र्थपिप्पलदा ३ स्थानवि भजन २२, कुमारत्रय ३ व्यसनविमनस्कनृपचतुर्थ ४ कुमारसुभा णडदेवा १८६।४ र्थस्वानन्तरभाविनीराज्यप्राप्तिनिर्दिशन२३, कुमार त्रय३भाविसन्तानाऽक्खाउत्त १।९।१३ चुण्डाउत्ता २।१०।१४दावुत्तो ३।११।१५ पटाङ्कित्रयोदश १३ चतुर्दश१४पञ्चदश १५ भाविहड्डभेदा

शाह का अपने छोटे भाई अहमदशाह के अर्थ अपना राज्य देना, उस अहमद शाह का दक्षिण के भीतर गोलकुण्डा गढ सहित गुजरात के भीतर अपने नाम से नवीन नगर बसाना, बुन्दीन्द्र हड्डाधिराज वैरीशाल के संतान में एक पुत्री और आठ पुत्रों का जन्म होना, राजा के मध्य वय में उत्पन्न हुए तीन और बुढापे में उत्पन्न हुए छः सन्तानों की प्रत्येक माताओं के निश्चय के साथ एक साथ उत्पन्न होनेवाले दो बालकों की सूचना करना, राजा के कुम र अक्षयराज का कछवाही, चूंडा का प्रतिहारी और तीजे उदयसिंह का रां ठोड़ी और गौड़ी दोनों से विवाह करना, पहले कुमर के अर्थ खटकड़ दूसरे के अर्थ बरूंधणी और तीसरे के अर्थ पीपलदा स्थान बांटना, तीनों कुमारों के व्यसनी होने से उदास राजा का चौथे कुमार सुभांडदेव के अर्थ अपने पीछे आगामी राज्यप्राप्ति को दिखाना, तीनों कुमारों के आगे होनेवाली सन्तान से अक्खाउत्त, चूंडाउत्त, ऊदाउत्त पदवीवाले, तेरहवें चौदहवें और पन्द्रहवें आगे होनेवाले हाडों के भेद की सूचना करने का पन्द्रहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १५ ॥

विश्रावसूचनं २४ पञ्चदशो १५ मयूखः ॥ १५ ॥
आदितो द्विषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६२ ॥
प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥
पादाकुलकम् ॥

मंडोउर इत जोधमहीपति, सुत बारह १२ पाये निजसंतति ॥
पहिलो १ सूरजमल्ल १ पट्टधर, भयो जनकपीछैं सुहि भूवर ॥१॥
ऊदा२बालि दूदा ३ जसउत्तम, कर्मसिंह४रतनेस५जथाक्रम ॥
जिम बीका६बीदा७सेखा८जुत, सेसनं सह बारह१२प्रकटे सुत।२।
निजनिजकुल इनके इन नामन्, अग्ग उत्तपद भजत प्रथितपन ॥
बीका६भिन्नराज्य निजबंधिय, सोहु अग्ग अैहैं क्रमसंधिय ॥ ३ ॥
गय बीदा७हु सहज तस संगहि, जंगलधर खत्तिय जिन्ह जंगहिं ॥
इत आमैर नगर वर अंहति, पृथ्वीराज नाम हुव भूपति॥ ४ ॥
सो यह चंद्रसेन नृपको सुत, जाकै सुत बारह१२हुव जसजुत ॥
अग्रज भारमल्ल१हुव इनमैं, खिल११हु भये कुलधर बढि खिनमैं।५।
मुक्कल इत चित्तोर महीपति, मुलक सम्हारन अटत महामति ॥
क्रम मुकाम बग्घोर द्रंग किय, लहिखिनंरल्लन तत्थतसअसुंलिय।६।
दासीभव याके काकादुवर, है नृप चाच१रु मेर२दुष्ट हुव ॥

और आदि से १६२ मयूख हुए ॥

१ रांजा हुआ ॥ १ ॥ २ बाकी के सहित ॥ २ ॥ ३ प्रसिद्धपन से ॥ ३ ॥ श्रेष्ठ ४ दानी ॥ ४ ॥ ५ बाकी के भी ॥ ५ ॥ ६ मोकल ७ फिरता था ८ बागोर नामक पुर में ९ समय पाकर १० प्राण लिया ॥ ६ ॥ इसके दो काका चाचा*

*यहां पर चाचा और मेरा को दासी के पेट से उत्पन्न होना लिखा सा ठीक नहीं है; क्योंकि ये दोनों खातिन के पेट से उत्पन्न हुए थे. इनसे बागोर के मुक़ाम पर महाराणा मोकल ने एक दरख्त के लिये पूछा कि काकाजी इस दरख्त का नाम क्या है? इस पर चाचा और मेरा ने विचारा कि वृक्षों के भेद खातीलोग जानते हैं और हम भी खातिन के पेट से उत्पन्न हैं इसकारण महाराणा ने सबके सन्मुख हमारी निंदा सूचक हँसी की है इस द्वेष के कारण रात्रि में महाराणा के डेरे पर जाकर, उनको दगा से उन दोनों ने मारडाला और वहां से भगगये. यह खबर सुनकर मंडोवर के राव राठोड़ रणमल्ल ने अपने भानजे का वैर लेनेको उदयपुर से पश्चिम दिशा में 'पेई' के पर्वतों में जाकर चाचा और मेरा दोनों

बिरचि दगा तिन्ह रान बिनासिय, तेहु बहुरि चुंडासन त्रासिय ॥७॥
मंत्रि१भट२न अंतर कतिमासन, बिरचि चाच१अरु मेर२बिनासन ॥
मुक्कल सूनु सिसुहि कोविदमति, कुंभ३ कियउ मेवार महीपति ॥८॥
कुंभलमेरु दुर्ग जिहिँ किन्नौं, दान अमित कवि१बिप्र२न दिन्नौं ॥
ताकेदये अबहु दुखत्रासन, सुकवि१बिप्र२भुग्गहिँ बहु सासन४ ॥९॥
रानौं यहहु भयो दुर्जय५ रन, चुंड पितृव्य सधर्म धराधन६ ॥
॥ १० ॥

षट्पात् ॥

॥११॥
॥१२॥
॥१३॥
॥१४॥
॥१५॥

रायमल्ल हुव कुंभरानसुत,जो सिसुपनहि कुमर सबगुन जुत ॥१६॥

दोहा॥

कहत चाच१मेर२हिँ किते, जाठर खत्तनि७ जात॥
तिनकिय पुच्छत जाति तरु, पापिन रान निपात ॥१७॥

और मेरा नामक दासी के पुत्र थे जिन्होंने दगा करके महाराणा को मारडाला जिससे फिर वे भी चूंडा ? से डरे ॥ ७ ॥ बुद्धि में २ पण्डित ३ कुम्भा को मेवाड़ का राजा किया ॥ ८ ॥ ४ सांसण (उदक) ॥ ९ ॥ युद्ध में ५ विजय नहीं कियाजावै ऐसा ६ राजा ॥१०॥ १६ ॥ ७ खातिन (बढइन) के पेट से पैदा हुए थे उनसे महाराणा ने पूछा कि इस वृक्ष की जाति क्या है? इस पर उन पापियों ने महाराणा को इस विचार से मारडाला कि हमको खाती जान कर वृक्षों की जाति पूछी है, जिससे सब के सन्मुख हमारा अपमान हुआ ॥ १७ ॥

भाइयों को मारडाला और वे वहां से चित्तोड़ आकर राज्यकार्य करने लगे, जिसका वृत्तान्त,पहला नोट में आचुका है.

बाजबहादुर साहवनि, मंडूपति इत मिच्छ[1] ॥
बुंदी उप्पर बाहिनी[2], आनी लुंटन इच्छ ॥१८॥
नृप नमाइ सब निकटके, पहिलैं इहिं बलपान ॥
दिय बुंदिय१चित्तोर२द्रुत, मिलनकेर फरमान ॥ १९ ॥

षट्पात् ॥

मुक्कल[3] नृप मेवार मिच्छफरमान न मन्निय ॥
नमिलन उचित निहारि कुंभरानहु साहस किय ॥
बैरीसल्ल१८५।१हु बीर सोहु हठ अडर समाह्यो ॥
ताके दूतन तरजि[4] दुष्ट मिच्छन उरदाह्यो ॥
तातैं सु पुब्ब[5] चित्तोरतजि बाजबहादुर सजि बल[6] ॥
द्रुत आइ देस लुंटत दुसह बुंदिय किय वेढन[7] बिकल ॥२०॥
धकि तोपन घमचक्क आग्गि लग्गिय धर१अंबर२ ॥
ओलनगति[8] दुहुँ२ओर असह गोलन आडंबर ॥
सलिल निवानन सुक्कि तजत पत्रन भुरसे तरु[9] ॥
देस अनूपहुं[10] दहत महत झंखर[11] बनिगो मरु[12] ॥
हड्डहु चलाइ रोके अहितैं[13] तारागढसन तोपतंति[14] ॥
किन्नौं बिहाल मंडुव कटक गजबडारि पबि पात गति[15] ॥२१॥

दोहा ॥

दूर लखत दर्पन[16] दृगन, नृप अरिसेन निहारि ॥
सुरभि१[17] बैल२कट्टत[18] सैतन, रत[19] न रह्यो तिहिंरारि ॥ २२॥

---

१ म्लेच्छ २ सेना ॥ १८ ॥ १९ ॥ मेवाड़ के ३ मोकल ने म्लेच्छ के फरमान नहीं माने थे ४ धमकाकर. इस कारण५पहले चित्तोड़ को छोड़कर ६ सेना ७ घेरे से वा युद्ध से ॥२०॥ ८ ओले पड़ने के समान. वृक्ष ९ जलगये १० जलप्राय देश.था सो बडा ११ झंखर (पत्र विहीन) बनकर १२ मारवाड़ (निर्जल) होगया १३ शत्रुओं को. तोपों की १४पंक्ति ने १५वज्रपात के समान ॥२१॥ १६दूरबीन से १७गौएं१८सैकड़ों. उस प्रकार का युद्ध करने में १९.प्रीति

कहिय भूप भोजनकरहिँ, अप्पन बुंदिय औन[1] ॥
कहँ द्वारहिँ गो निकर[2], सु अनय पिक्खिसकैं न ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

मंडूपुरपति मिच्छ घोर संगर पुरघेरिय ॥
याके अमित अनीक[3] हनन हड्डन हितहेरिय ॥
तोपन रन रचि तदपि निकट आवन देते नन[4] ॥
पै गोवध यह पिक्खि मरन१जित्तन२चिंतैं मन ॥
जो परैं खेत हम तो सँजव सब अंतहपुर[6] सिसुनसह[5]॥
तुम देहु कहि रहन न उचित,जानि जवन अतिबल असह॥२४॥

नसह१असह२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

भूप कतिक बिस्वस्तभट, रक्खे पुर इम आक्खि ॥
मरनचल्यो सेसन सहित, सविता कँहँ कारि सक्खि ॥ २५ ॥
अक्खय१८८।१तिम चुंड१८८।२रु उदय१८८।३,मूरख त्रय३हि कुमार
रहे दुँरे[10] निजनिज निलय[11], भिरन न बंटिय भार ॥ २६ ॥
नृप आक्खिय आये नहीं, ममसहाय सुत मूढ ॥
तिनहिँ न रक्खहु पट्ट तुम, रहहिँ सुभांड१८८।४प्ररूढ[12] ॥२७॥
अखिल करावहु याहितैं, प्रेत कर्म बिधिपाइ ॥
मरन महीपति आक्खि इम,अरर[13] खुलाये आइ ॥२८॥
साक गगन निधि वेद ससि१४९०,बिक्रमसक गतबेर ॥
बाजबहादुर सैन्यबिच,किन्नें हय जयकेर ॥ २९ ॥

नाराचः ॥

नहीं रही ॥ २२ ॥ १ घर में २ समूह ॥ २३ ॥ ३ सेना ने. समीप ४नहीं आने देते ५ शीघ्र बालकों सहित ६ जनाने को ७ भरोसे के वीरों को ८ सूर्य को ९ साक्षी करके ॥ २५ ॥ १० छिपे. अपने अपने ११ घरों में ॥ २६ ॥ १२ अधिक प्रसिद्ध ॥ २७ ॥ १३ किवाड़ ॥ २८ ॥ २९ ॥

नमात भू हमल्ल हल्ल वैरिसल्ल१८५१ निक्करयो ॥
खुलाइ द्वारके किंवार आजि फार उल्लस्यो ॥
कसे दुतंग ऐंड अंग दंग रंग दंडते ॥
चले तुरंग ज्यौं कुरंग यौं मलंग मंडते ॥ ३० ॥
करीनपैं खुले निसान लंबमान लोलहैं ॥
दिसादिसान खानखान वद्धमान बोलहैं ॥
समग्ग खग्ग संभरी करग्ग नग्ग संग्रहयो ॥
अनीक अग्गहै उदग्ग ऐंचि बग्ग उम्महयो ॥ ३१ ॥
रहे कुमार३दट्टि द्वार जे अगार जत्थहीं ॥
सजे स्वभ्रात जावदू१८५२ रु निम्मदेव१८५३सत्थहीं ॥
सलज्ज सज्जरज्ज कज्ज अज्ज१मिच्छर२अंकुरे ॥
घटा सकज्ज छज्ज गज्ज बज्ज तज्जने घुरे ॥ ३२ ॥
चलंत चक्क होत हक्क रीझि अंक रुक्कयो ॥

हमल्लों से भूमि को झुकाता हुआ हल्ला करके वैरीसाल निकला और द्वार के किवाड़ खुलाकर १युद्ध में अत्यन्त हर्षित हुआ. घोड़ों के दुतङ्ग कसकर शरीर में २घमण्ड भरकर नगर से युद्ध में दण्ड देता हुआ चला, और हरिणों के समान कूदते हुए३ घोड़े चले ॥३०॥ हाथियों पर बड़ी बड़ी ४ ध्वजाएं चपल होकर खुलीं और दिशाओं में खाओ खाओ ऐसा ५ बढता हुआ वचन हुआ खड्ग के ६ सब मार्गों (पट्टावाजी) सहित चहुवाण ने ७ हाथ में ८ नग्न खड्ग लिया और सेना के आगे ९ उदग्र (निरंकुश) होकर घोड़े की १० बाग * खैंचकर उत्साहित हुआ ॥ ३१ ॥ जो कुमर घर में थे वे द्वार ११ बन्द करके वहीं रहे और अपने भाई जावदू और निम्मदेव साथ तैय्यार हुए, लज्जा सहित सज्जीभूत होकर १२ राज्य के १३ लिये १४ आर्य और म्लेच्छ उठे. कार्य के साथ घटा के समान गर्जना से शोभायमान होकर उस युद्ध से उत्पन्न होनेवाले वाद्य बजे ॥३२॥ १५ सेना के चलते समय हाक होते ही प्रसन्न होकर १६सूर्य रुक गया और धक्के लगने की झटक से नासिका पककर शेष नाग

*घोड़े को शीघ्र दौड़ाने के समय उसके गिरजाने के भय से बाग को खींचे रहते हैं इससे बाग का खींचना तेज दौड़ाने का चिन्ह है

झटक्क धक्क पक्क नक्क सप्प भक्क झुक्कयो ॥
झरी कृपान यौं खनंकि ज्यौं झनंकि झल्लरी ॥
ढरैं प्रवीर प्रोत तीर होत चीर ढल्लरी ॥ ३३ ॥
वृखेसपैं चढे महेस १ पब्बई २ मृगेसपैं ॥
निहारिबे लगे पधारि रीझि ते नरेसपैं ॥
पचासद्वै ५२ रु च्यारिसट्ठि ६४ पत्त रत्त पूरिकैं ॥
मिरा समान मंडि पान मत्त भान भूरिकैं ॥ ३४ ॥
सनंकि पिच्छ अंतरिच्छ गिद्ध १ चिल्लह २ संकुले ॥
खलक्कि अस्त्र खाल लाल ताल नालसे खुले ॥
इते मुरारि इष्टधारि गंगबारि आंचमैं ॥
निगाह लाह राह दै उतैं इलाहको नमैं ॥ ३५ ॥
कितेक रुंड झेलि झुंड ब्याम दौरते करैं ॥
कबंध जातुधान के समान प्रान संहरैं ॥
कृपान तंति फेन भंति सेन पंतिमैं कढैं ॥

---

१ शङ्कित होकर; अथवा अपने स्थान से सरक (हट) कर झुक गया; झनकार होकर तलवार इस प्रकार चली जिसप्रकार झालर का झनकार होता है, तीरों से २ विधकर वीर गिरते हैं और ढालों की चीरें होती हैं ॥ ३३ ॥ ३ बैल पर महादेव और सिंह पर ४ पार्वती चढी और युद्ध में आकर बुन्दी के राजा पर प्रसन्न होते हुए युद्ध देखने लगे, बावन भैरव और चौसठ योगिनियां रक्त से ५ पात्र पूर्ण करके ६ मद्य के समान पीकर मस्त होने से चेत भूलने लगे. ("भूरिकैं" इस शब्द में 'ल' के स्थान में 'र' किया है) ॥ ३४ ॥ पंखों का सनंकार शब्द होकर आकाश में गिद्ध और चीलहें ७ भर गईं ८ रक्त के खाल पड़कर लाल रङ्ग के तालाव के नाले के समान खुले, इधर परमेश्वर का इष्ट धारण करके गङ्गा का नीर ९ पीते हैं और परलोक के लाभ की ओर दृष्टि देकर उधर १० खुदा को नमते हैं ॥ ३५ ॥ कितने ही रुंड समूहों को झेलकर दौड़ते हुए ११ भुज फैलाते हैं वे कितने ही कबन्ध राक्षस के समान प्राणों का संहार करते हैं, जिसभांति झागों में तांत निकले तिसभांति सेना की पंक्ति में तलवारें निकलती हैं, और कितने ही भार पड़ने पर

परंत भार वारपार मारमार के पढैं ॥ ३६ ॥
लुभाइ साकिनीन गोद मोद डाकिनी २ लहैं ॥
सपीति कज्ज रीतिसों पिसाच ३ रत्त संग्रहैं ॥
सु सार के दुसार केक अद्धपार सेल ठहै ॥
महंत भार धार ज्यों तुला प्रकार मेलठहै ॥ ३७ ॥
कहीं कितेक फारि कोच अग्ग संगि अग्गठहै ॥
मनों कि लालमीन बाल झीनजाल मग्गठहै ॥
बड़े करीन मत्थ हत्थ वैरिसल्ल १८५।१ के बहैं ॥
रुलैं तदुत्तमंग रंग पाय चो ४ रुपेरहैं ॥ ३८ ॥
झिलैं कितीक वेर वेर फेर भुम्मिपैं झुकैं ॥
लगे स्वप्रान त्रानमैं चढाक आनमैं लुकैं ॥
कितेक छिन्न बावदूक जावदूक १८५।२ कित्तिकैं ॥
जई कितेन लेत खेत निम्मदेव १८५।३ जित्तिकैं ॥ ३९ ॥

मार करते हुए इधर से उधर निकल जाते हैं ॥ ३६ ॥ मांस के ऊपर शाकिनियां लोभायमान होती हैं और डाकिनियां मोद पाती हैं (शाकिनी और डाकिनी ये देवी की दासियां हैं) पान करने के (मतवालके) लिये पिशाच रीति से रक्त का संचय करते हैं, कितने ही श्रेष्ठ वेधन करनेवाले भाले पार निकल जाते हैं; और कितने ही शरीरों में आधे घुसते हैं, सो बड़े भार को धारण करनेवाली तकड़ी के समान होते हैं ॥ ३७ ॥ कहीं पर कितने ही कवचों को फाड़कर सांग (बर्छी) के अग्रभाग आगे निकलते हैं सो मानों कि लाल मछली का बालक बारीक जाल के मार्ग से निकसता है, बड़े हाथियों के मस्तक पर वैरीसाल के हाथ चलते हैं जिनसे उनके १ मस्तक लुढ़कते हैं और धड़ में शरीर चारों पैरों से खड़े रहते हैं ॥ ३८ ॥ वे कितने ही शरीर कितनेक समय तक ठहर कर फिर भूमि पर झुकते हैं, उन पर चढ़नेवाले अपने प्राणों की रक्षा में लगेहुए अन्य में छिपते हैं, कितनेक कटे हुए १ बहुत बकनेवाले जावदू की कीर्ति करते हैं और विजयी निम्मदेव रणक्षेत्र में कितनों

१ [illegible] बावदूक शब्द के अनुप्रास के लिये जावदू नाम [illegible] बावदूक शब्द [illegible] है.

करंत काज अज्जराज मिच्छराजपैं क्रम्यौं ॥
दु २ पास तास दंति खास चंद्रहासतैं दम्यौं ॥
समत्थ तत्थ हत्थि हत्थ बाजिमत्थ संग्रह्यो ॥
रच्यो दु २ मग्ग खग्गदै करग्ग लग्ग जो रह्यो ॥ ४० ॥
भई सु छिन्नि सुंडि है सिरोधि वेढि यौं भली ॥
करी कि याल बाल त्रान काल व्यालकुंडली ॥
कटंत सुंडि छंडि रारि चीहपारि गो करी ॥
कियो स्वबाह और साह भो निगाह सो करी ॥ ४१ ॥
वितंड पिट्ठि जातजात खग्ग भूपको बह्यो ॥
रनंकि टोप कट्टिगो रु सीस चट्टिगो रह्यो ॥
गजद्वितीय २ पिट्ठिपान इट्ठि साह निट्ठिगो ॥
दुरंत होद कोद जो समोद भूप दिट्ठिगो ॥ ४२ ॥
चल्यो तदीय लैन जीय खग्ग स्वीय चंडलै ॥
दुचाल दुष्टजालपैं मनौं कि काल दंडलै ॥

को जीत लेता है ॥३९॥ इसप्रकार के कार्य करता हुआ आर्यों का राजा म्लेच्छों के राजा पर चला उसके दोनों ओर के खासा हाथी खड्ग से मारेगये और वहां उसके समर्थ हाथी ने सूंड से घोड़े का माथा पकड़ लिया, वह सूंड घोड़े के लगी हुई थी जिसके खड्ग से दो टुकड़े करदिये ॥ ४० ॥ इस प्रकार घोड़े की गर्दन को घेरनेवाली सूंड भले प्रकार से कट गई, सो किंवा घोड़े की अयाल (केसवाली) रूपी सर्पों के बच्चों की रक्षा करने के लिये काले सर्प ने कुण्डली की है, सूंड कटते चीख मारकर हाथी युद्ध से चलागया उस समय बादशाह की निगाह में जो अन्य हाथी आया उसीको उसने अपना वाहन बनालिया ॥ ४१ ॥ उस दूसरे हाथी की पीठ पर जाते जाते राजा का खड्ग बहा सो टोप को काटकर और सीस को चाटकर रह गया; दूसरे हाथी की पीठ पर प्राण की इच्छा रखनेवाला बादशाह कठिनाई से गया और वहां दूर है अन्त जिसका ऐसा बादशाह होदे के कोने में आनन्द के साथ राजा को दीखगया ॥ ४२ ॥ उसका जीव लेने को अपना भयङ्कर खड्ग लेकर गया सो मानों बुरे चालवाले दुष्टों के जाल पर यमराज दण्ड लेकर चला उस बाद

रन कौतुकीन बिमान जे कछु उच्च धूमित ह्वै रहैं ॥
चित चित्र *चंडमरीचि त्यौं रजके अभावहिकौं चहैं ॥
कटिजात हत्थिन सुंडि पन्नगपात अध्वरज्यौं करैं ॥
अगतैं मयूर उडान ज्यौं छिपैं पिट्ठि केतनं उत्तरैं ॥ ९ ॥
इम अंधकार प्रसार लोलक अग्गि गोलक उल्लसैं ॥
हरिचक्रकी कि अलोकके तमगाढ रंचक भा हसैं ॥
किंधु अर्क अंबुद चक्र अंतर अग्गि प्रेतनकी कुहू ॥
सनगंकि जावत पिक्खि आवत नाँ समा उपमा सुहू ॥ १० ॥
डगमग्गि सैलन सृंग फैलन लोक गैलनमैं डरैं ॥
बुध बीर जाल त्रिकाल साधक काल आन्हिके बीसरैं ॥
अतिगाज जात दरारि भूतल पक्क दारिम ओपलैं ॥
तँहँ थान नामहि जो लख्यो सहि जो निरंतर तोपलैं ॥ ११ ॥
गुरुता परक्खन के चरक्खन चक्क चक्खन भू ग्रसैं ॥

युद्ध देखनेवालों के विमान ऊपर ही धूसरे होरहे हैं, और इसीप्रकार युद्ध देखने के आश्चर्य से *सूर्य अपने चित्त में रज का अभाव चाहता है हाथियों की सूंडें कटकर जनमेजय के २ यज्ञ में १ सर्प पड़ते थे ऐसे पड़ती हैं. ३ पर्वत से मयूर के उडान के समान ४ हाथियों की पीठ से ५ ध्वजाएं उतरती हैं ॥ ९ ॥ इसप्रकार अन्धकार के फैलाव में ६ चपल अग्नि के गोले शोभायमान होते हैं, सो मानों विष्णु के चक्र की कान्ति ७ अतलादिक लोकों के घोर अन्धकार पर ईषत् हास्य करती है, अर्थात् मुसकुराती है. ८ मानों. १० मेघ के बीच में ९ सूर्य होवे इसीप्रकार ११ सेना में अग्नि दिखाई देती है, अथवा जिस प्रकार १२ नष्टचन्द्रा अमावास्या में प्रेतों की अग्नि दीखे ऐसे दीखती है. वह तोपों के गोलों की अग्नि शीघ्रता से जातीहुई दीखती है उसके समान कोई उपमा नहीं कहती ॥ १० ॥ पर्वतों के शिखर हिल कर फैलने से मनुष्य मार्ग में डरते हैं. तीनों समय की संध्या करनेवाले बड़े १३ पंडित भी उस अंधेरे के १४ समूह में १५ संध्यासमय को भूलते हैं. अत्यन्त गर्जना होने से भूमितल दरार देकर (फटकर) पकीहुई दाड़िम की उपमा लेता है. तहां पर नाम मात्र स्थान दीखता है उसको भी तोपें निरन्तर मिटादेती हैं ॥ ११ ॥ १६ भार की परीक्षा करने को कितने ही चरखों के पहियों को चखने के लिये भूमि उनको गिरती है, वे पहिये मनुष्य और बैलों के ह

दये सु पञ्चबाह साह हड्डुनाह वच्छ है २ ॥
मनौं तनुत्र जाल मच्छ पच्छ वेग स्वच्छ है २ ॥ ४३ ॥
सही प्रवीर तीर पीर गो सु मीर सम्मुहो ॥
प्रसंस हड्डवंस व्हैन अंसहू परम्मुहो ॥
सम्मुहो १ स्म्मुहो २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
हन्यौं करीम अब्दुलादि १ मिच्छ जत्थ हड्ड है ॥
बन्यौं सु भूप भूप यूह जानि व्यूह बड्ड है ॥ ४४ ॥
तजैं न जंग जो भजैं न संग जो भजैं तहाँ ॥
जु भुम्मि वाह पाह हड्डनाह आरुह्यो जहाँ ॥
करीम अब्दुलादि१को तुरंग भूप काटिकैं ॥
दयो चिराइ खग्गसौं गिराइ सो हु दट्टिकैं ॥ ४५ ॥
चढाइ बान सेनखान२व्हाँ सुहानपैं चल्यो ॥
दयोन जान जालहू१८५।२सु पै कृपानतैं दल्यो ॥
दुश्वाह मिच्छको सु वाह अप्प नाहको दयो ॥

शाह ने हाडों के राजा की छाती में दो बाण दिये वे कवच में ऐसे अच्छे दीखे मानों जाल में पांखों के वेगवाले दो मच्छ घुसे हैं ॥ ४३ ॥ वह वीर तीरों की पीड़ा सहकर बादशाह के सन्मुख गया, प्रशंसनीय हाडों का वंश लेशमात्र भी पराङ्मुख नहीं होता वहां अब्दुलकरीमनामक म्लेच्छ ने हाड के घोड़े को मारा जिससे वह राजा भूप अर्थात् पृथ्वी पर पैर रखनेवाला (पैदल) होगया; और उस म्लेच्छ की बड़ी व्यूह रचना में छिपा हुआ जाना ॥ ४४ ॥ वह म्लेच्छ उस युद्ध को नहीं छोड़ता और नहीं भगता तो वहीं पर उस राजा का साथी होजाता, प्रशंसा की जाती है, कि हाडों के पति ने भूमि रूपी वाहन का आरोहण किया (पैदल हुआ) और उस राजा ने अब्दुलकरीम के घोड़े को मारकर उस अब्दुलकरीम को भी दबाकर खड्ग से चीरडाला ॥ ४५ ॥ वहां पर सेनखां बाण चढाकर बादशाह के ऊपर चला जिसको जालहू ने नहीं जाने दिया और खड्ग से मारडाला, उन दोनों हाथों से प्रहार करनेवाले(यह जालहू नामक वीर का विशेषण है)जालहू ने म्लेच्छ का श्रेष्ठ वाहन अपने

नरेस तास अस्ववार जुद्ध फार निर्मयो ॥ ४६ ॥
गुलाम हैदरादि३कौं सवाजि आजि गंजिकैं ॥
रहीम४भंजिकैं लयो निराइ साह रंजिकैं ॥
कमाल५नूर६भूपपैं कृपान हत्थ सत्थके ॥
करे सिरस्क दारि फारि भाग च्यारि४मत्थके ।४७।
स्वसीस बंधि भुम्मिपाल सो कमाल५संहर्‌यो ॥
कृपानघात निम्म१८५।३भ्रात पात नूर६को कर्‌यो ॥
तदग्ग खैंचि वग्ग निम्म १८५।३खग्ग साहपैं तज्यो ॥
भयो सत्रान खंध हान खान प्रानपैं भज्यो ।४८।
महीप अव्वपैं इते झुक्यो घुमाइ मोहसौं ॥
लही मही सु नाँटिक्यो छक्यो अचेत लोहसौं ॥
अचेत भू रह्यो बहोरि व्है सचेत उठ्यो ॥
प्रलैसमैं भयो प्रमानि रुद्र जानि रुठ्यो ॥ ४९ ॥
हुसेनखान७मिच्छ तत्थ मत्थ भूपको हर्‌यो ॥
सु जानि जाधदूक१८५।२आनि सोहु मिच्छ संहर्‌यो ॥

पति को दिया उस पर सवार होकर राजा ने बहुत युद्ध रचा ॥४६॥ हैदर गुलाम को घोड़े सहित युद्ध में मारकर रहीम को भांजकर प्रसन्नता के साथ बादशाह को समीप लिया वहां कमाल और नूर ने एक साथ राजा पर तलवार के हाथ किये सो टोप को फाड़कर मस्तक के चार भाग कर दिये ॥ ४७ ॥ अपने मस्तक को बांधकर राजा ने उस कमाल को मारलिया और भाई निम्बदेव ने खड्ग के प्रहार से नूर को गिरादिया उसके आगे घोड़े की बाग खैंचकर निम्बदेव ने बादशाह पर खड्ग चलाया जिससे कवच सहित कन्धा कटगया और उसका प्राण जा रहा था, परन्तु वह भगगया ॥४८॥ इधर घोड़े पर मूर्छा से घूमकर राजा [illegible] छूटकर अचेत होकर भूमि पर गिरा, ऊपर नहीं रहा, भूमि पर अचेत होकर रहा, फिर सचेत होकर उठा सो मानों प्रलय के समय क्रोध किये हुए रुद्र के समान हुआ ॥४९॥ वहां पर हुसेनखां नाम के म्लेच्छ ने राजा का मस्तक काटा, सो जानकर जादू ने आकर उस म्लेच्छ को भी मारा, राजा के मस्तक के चार भाग खड्ग से [illegible]

खुले महीस सीसके बिभाग च्यारि४ खग्गसौं ॥
मच्यो तथापि रुंडको रच्यो प्रघात मग्गसौं ॥ ५० ॥
हृदाक्ष्य नेन पाइ जैन सैन जावनी हनैं ॥
जितैं जितैं चलैं तितैं तितैं बजारसे बनैं ॥
अनुत्तमंग भिन्न अंग रंग द्वैर घरी रच्यो ॥
विमत्थ व्है न नाथ तो सु साहको कहैं बच्यो ॥ ५१ ॥
भरैं दुहत्थ अप्पनैं तथापि धाइ झुंडमैं ॥
महीप लत्त घत्त की घनैंन बच्छ१मुंड२मैं ॥
किते पदाति सत्रु घाय रायपायरहू कटे ॥
अमत्थ१साख४पिंडकेहु अंग जंगको अटे ॥ ५२ ॥
गिरंत भूप जावदू१८५१२प्रघात स्वामिता गही ॥
मलेच्छ मुंड पट्टिकैं मतीर खेत की मही ॥
समान१निम्म२जाबदू३अमान खान संहरे ॥
पठानके सहस्र१०००चाहुवानके छसै६००परे ॥ ५३ ॥
घटी छ६सेस घस्रपैं नरेस कढ्ढि नैरसौं ॥

भी धड़ से युद्ध के मार्गों को रचकर प्रहार मचाया ॥ ५० ॥ हृदय के स्थान में नेत्र पाकर यवन की सेना को मारने लगा, जिधर जिधर राजा चलता है उधर उधर सेना में अवकाश होकर बजार के समान बनता है, विना म स्तक और कटेहुए शरीर से दो घड़ी तक युद्ध किया, राजा विना मस्तक नहीं होता तो बादशाह को बचाहुआ कौन कहता? ॥ ५१ ॥ अपने दोनों हाथ गि रगये तो भी शत्रुओं के झुण्ड में दौड़ कर राजा ने बहुतों के हृदय और म- स्तक में लात का प्रहार किया, कितने पैदल शत्रुओं के घाव से राजा के च रण भी कटगये तो भी विना मस्तक और विना हाथ पैर केवल पिंड से ही शरीर युद्ध में फिरा ॥ ५२ ॥ राजा के गिरने से जावदू ने प्रहारों से स्वामिपन लिया और यवनों के मुंडों से छाकर मतीरों के खेत की भूमि होवे वैसी बना दी, मानसिंह के सहित निम्मदेव और जावदू ने अमानखान को मारा, पठान के एक हजार और चहुवाण के छःसौ वीर खेत पड़े ॥ ५३ ॥ छः घड़ी दिन बाकी रह राजा नगर से निकला और सूर्य के छिपते समय लेशमात्र वैर को

बन्यो दिनेस गुप्ति एस लेस लेस बैरसों ॥
निहारि म्लिच्छ जैभयें वरोध को निकासिबो ॥
तथासु दीह अंत लै रच्यो अराति त्रासिबो ॥ ५४ ॥

दोहा–परें नृपाऽनुज दुव२महत, रहत आयुबल रक्खि ॥
मारि छ६खान समान१सृत, चालुक छत नव९चक्खि॥५५॥

षट्पात् ॥

परिग बिजय प्रामार सत्रु अष्टक८रन संहरि ॥
परिग कुम्भ गोपाल३कतल सत्रह१७जवनन करि ॥
भट तेरह१३अरि भंजि हड्ड लक्खन४।१८५घुग्घल१०८हर॥
परिग भीम५पतिहार खाडि बारह१२खल संगर ॥
जद्दव सुमेरु६हनि दस १० जवन खंडि अमर७सीसोद खट ६॥
पिस्थल बघेलहनि नव ९ परिग भट्टिय संकर च्यारि ४ भट ।५६।

॥ दोहा ॥

जैताउत ६ खंधिल १०।१८१ जई, हते सोलह १६ खलमारि॥
छिति२प परत दिन३कर छिपत, तहँ धप्पिय तरवारि ॥ ५७॥
एकादस११मुख्य रु इतर, पंद्रह तदनु पचीस२५॥
एकावन ५१ हनि परिग इम, सुपहु ससीस १ असीस२ ॥ ५८॥
भ्रात जावदुव१८५।४निम्म१८५।३भट, पंद्रह १५ सत्रह१७पारि॥
बिसम लोह छकि परि बचे, ध्रुवहि आयु खिल४ धारि ॥५९॥
खसत पिक्खि पुरके सुजन, इनकों जानि अचेत ॥
लाइ दुराये समय लहि, निज कहुँ गूढ५निकेत ॥ ६० ॥

बाकी रखकर आप भी अपने शरीर से लेशमात्र बना (यहां बैर शब्द में श्लेष है अर्थात् बैर और शरीर दोनों का वाचक है जिसका अभिप्राय है कि अपने शरीर को थोड़ा ही बाकी रक्खा) म्लेच्छों की विजय होना देखकर जनाने को निकाला और इसीप्रकार दिन का अन्त लेकर शत्रुओं ने त्रास देना रचा ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १ मरा २ राजा ३ सूर्य ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ४ बाकी ॥ ५९ ॥ ५ भूमिगृह (तहखाने) में ॥ ६० ॥

पुर प्रविसे नृपके परत, तब अरि अरर तुराइ ॥
लग्गे लुट्टन लोभलगि, पथ बजार पृथु पाइ ॥ ६१ ॥
भूपति जे बिश्वस्त भट, आयउ रक्खि अगार ॥
अरि प्रविसत तुट्टत अरर, किय तिन कथित प्रकार ॥ ६२ ॥
सह परिगह १ रानिन ३ सिसुन ३, बलि कुमर ८न निर्वाहि ॥
तारागढकों छन्न तजि, चले नैयनपुर चाहि ॥ ६३ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम ५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रवैरिशल्य १८५।१ चरित्रे मरुडपपुराधिराजराष्ट्रकूटयोधराजौरससूर्यमल्ला १ दिद्वादश१२ पुत्रप्रादुर्भवन १, तत्तन्नामोपटङ्कितततकुलभेदप्रकटन २, तथाऽऽमेरनरेन्द्रचान्द्रसेनिकूर्मपृथ्वीराजौरसभारमल्ल १ प्रभृतिकुलधरकुमारद्वादशक १२ समुद्भवन ३, चित्रकूटाऽधिराजशीषोद्भौजिष्येयपितृव्य १ चाचा १ मेरा२ व्याघ्रपुरविश्वस्तराणामोकलनिपातन ४, प्राप्ततत्पट्टनिबद्धकुंभिलमेरुदुर्गसमुत्पादितसूनुराजमल्लमोत्कालिरा-

१किंवाड़ तुड़वाकर २बड़ा ॥ ६१ ॥ ३भरोसे के वीरों को. पहिले ४कहा था उसीप्रकार किया ॥ ६२ ॥ ५ नैंवावापुर जाना चाहकर ॥६३॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज के वंश और अनुवंश की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेन्द्र वैरिशल्य के चरित्र में मंडोवर के पति राठोड़ों के राजा जोधा के सूर्यमल्ल आदि बारह औरस पुत्रों का जन्म होना, उन उनके नाम की पदवी से उन उनके कुल के भेद प्रकट होना, तथा आमेर के नरेन्द्र चन्द्रसेन के पुत्र कछवाहे पृथ्वीराज के कुल को धारण करनेवाले भारमल्ल आदि बारह औरस पुत्रों का होना, चीतोड़ के पति सीसोदिया राणा मोकल को पासवानिये काका चाचा और मेरा का बागोर पुर में विश्वासघात से मारना, उनका पाट पाकर कुम्भलमेर गढ बनाकर रायमल्ल पुत्र को उत्पन्न करनेवाले मोकल के पुत्र राणा कुम्भकर्ण की वीरता और उदारता की प्रशंसा करना, राजधानी लाडू पुर से आकर बुन्दी और चीतोड़ की विरुद्धता के क

णाकुम्भकर्णशौर्यौ १ दार्य २ प्रशंसन ५, मराडूदङ्गस्कन्धावारबुन्दी १ चित्रकूट २ प्रातीप्यप्रतिकूलमालवाधिराजयुयुत्सुयवनेन्द्रबाजबहादुरबुन्दीवेष्टन६, मुकुरोपदृग्दृष्टगोवर्गवधतदुपेक्षितनालीयन्त्रयुद्धज्ञातकुमारत्रय ३ सहायानागमपट्टार्हीकृतचतुर्थ ४कुमारनिरर्गलीकृतगोपुरारहड्डाधिराजवैरिशल्य १८५।१ सूचितसम्वत्समयमुक्तेतरशस्त्रशत्रुसैन्यसंबोधन७, कर्त्तितनिजार्वशिरोधिवेष्टितम्लेच्छराजगजहस्तनरेन्द्रापरगजारोहन्म्लेच्छपरिशिरस्कखड्गकर्तन८, म्लेच्छान्तरसोढनिषादिम्लेच्छराजबाणद्वय २ हड्डाधिराजहयनिपातन९, पत्तीभूतनरेन्द्रखड्गप्रहारसतुरङ्गतत्प्रातिघातन१०, जावद् १८५।२ निजनिपातितयवनान्तरसप्तिस्वस्वामिसमर्पण११, तत्तुरगारूढसंहृतससप्तियवनयुग्म २ बुन्दीशमस्तकयवनानन्तरद्वय २ खड्गयुगपत्प्रहारचतुर्धा ४ विभजन १२, वस्त्रबद्धस्वशीर्षहड्डेशस्वप्रहारककमालाख्यम्लेच्छासन१३, प्रमथितद्वितीय२प्रहारक निम्मदेव१८५।३

रण प्रतिकूल हुए युद्ध करने की इच्छावाले मालवा के पति बादशाह बाजबहादुर का बुन्दी घेरना, दूरबीन से गौओं के समूह का वध देखने के कारण तोपों के युद्ध को छोडकर तीन कुमरों का सहायतार्थ आना जानकर चौथे पुत्र को पाट के योग्य करके शहर के द्वार के किवाड़ खुलाकर हड्डाधिराज वैरिशल्य का सूचना कियेहुए सम्वत् के समय में अमुक्त अर्थात् तलवार से शत्रुसैन्य के साथ युद्ध करना, अपने घोड़े की गर्दन को घेरनेवाले बादशाह के हाथी की सूंडको काटकर दूसरे हाथी पर चढेहुए म्लेच्छ के टोप को राजा का खड्ग से काटना, हाथी के सवार बादशाह के दो प्रबल बाणों को सहनेवाले हड्डाधिराज के घोड़े को किसी म्लेच्छ का मारना, पैदल हुए राजा का खड्ग के प्रहार से घोड़े सहित उसको मारना, अपने मारेहुए किसी यवन के घोड़े को जावद् का अपने स्वामि को देना, उस घोड़े पर चढकर घोड़े सहित दो यवनों का संहार करनेवाले बुन्दीश के मस्तक का किसी दो यवनों के एक साथ खड्ग के प्रहार से चार भाग होना, वस्त्र से अपने मस्तक को बांधकर हड्डेश का अपने ऊपर प्रहार करनेवाले कमाल नामक म्लेच्छ को मारना, दूसरे प्रहार करनेवाले को मारकर निम्मदेव का कन्यत्राण सहित आयुधवाले

सस्कन्धत्राणसायुष्कम्लेच्छराजांसविदारण १४, हुसैननाम यवनमूर्छितवाजिपातितोत्थितयुध्यमानमहीपकन्धराकर्तन १५, जावदु१८५।२पराभूकृततन्म्लेच्छपूर्वकर्तितसङ्कुलावमर्दमर्दितमहीश मूर्द्धभागचतुष्क ४पृथक्पृथग्विशरण १६, घटिकाद्वय २ मण्डितावमर्दनिपातितैकपञ्चाश ५१ त्यारिपान्थिकराजरुण्डकरचरण २ दि प्रतीकशकलीभवन १७, संहृतपञ्चदश १५ सप्तदश १७ सपत्नदुस्सह प्रघातजर्जरिताङ्गसायुष्कजावदु १८५।२ निम्मदेव १८५।३ रङ्गपतन १८, समाना १ द्यब्दुलकरीमा २दिशतषट्क ६०० सहस्र १०००सम्मिताऽऽर्य१ म्लेच्छ २ शूरशय्याशयन १९, पौरजनगूढगृहानीतजावदू १८५।२निम्मदेव १८५।३ क्षतपूर्त्तिहितोपचारप्रवर्तन २०, लोटितारपुरप्रविष्टयवनानीकलुन्दीविप्लवविस्तरण २१, दृष्टतदुपद्रवशुद्धान्तद्वारस्थापितविश्वस्तसामन्त १ भट २ स्वशिशुवर्गशुद्धान्तजननेत्रनगरप्रस्थापनप्रारम्भणं २२ षोडशो १६ मयूखः ॥ १६ ॥

आदितस्त्रिषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६३ ॥

बादशाह के कन्धे को काटना, हुसेन नामक यवन का मूर्छित होकर घोड़े से पड़कर उठेहुए युद्ध करनेवाले राजा की गर्दन को काटना, जावदू से मारे हुए उस म्लेच्छ के पहिले काटेहुए और अवकाश रहित युद्ध में मर्दित राजा के मस्तक के चारों भागों का जुदा जुदा बिखरना, दो घड़ी तक युद्ध रच कर इक्कावन ५१ शत्रुओं को मारकर राजा के धड़ के हाथ पैर आदि अंगों का टुकड़े टुकड़े होना, पन्द्रह और सत्रह शत्रुओं को मारकर दुःसह प्रहारों से जर्जर अङ्ग होकर आयुष्यवाले जावदू और निम्मदेव का युद्ध में पड़ना, समान आदि छःसौ६०० आर्य और अब्दुलकरीम आदि हजार यवनों का काम आना, पुर के लोगों का जावदू और निम्मदेव को तहखाने में लाकर घावों की पूर्ति के इलाज में लगना, किवाड़ तोड़कर पुर में घुसीहुई यवन सेना का लुन्दी में लूट फैलाना, इस उपद्रव को देखकर जनानी ड्योढी पर रक्खेहुए विश्वासवाले उमराव और वीरों का अपने बालकों के समूह सहित जनाने लोगों को नैणवा नगर में स्थापित करने के प्रारम्भ का सौलहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १६ ॥ और आदि से १६३ मयूख समाप्त हुए ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

पादाकुलकम् ॥

सारन१८६।१सेव१८६।२उभय२जाबहु१८५सुत,
जैत्रसिंह१८५।१गैनोलीपति जुत ॥
अनुज तास नवब्रह्म१८५।२वीर इम,
तोग१८६।१हु निम्मदेव१८५।३नंदन तिम ॥ १ ॥
भ्रात विजय १८६।१ नवरंग १८३।२ वंसभव,
वलि रूप्प१८२।२ रु डुंगर १८२।४ कुलबंधव ॥
निज २ही जात सकै न निहारिहु, रुद्र१कृतांत३प्रचारैं रारिहु ॥२॥
पहुँचे जे भूपति अंतहपुर, धरे भ्रात ऐसेप्रकोष्ट धुर ॥
निज कुमार एक१हु आयो नन, मोरयो इम लिक३नैहिं भूप मन॥३॥
थिर विस्वस्त सुभट कति थप्पिय, अंतहपुर रच्छा जिन्ह अप्पिय॥
गिनियत तेहु सुनहु सह परिग्रह, सुंदरदास१गोर गिरधर२सह ॥४॥
धीर३कबंध कुम्भ वंसीधर४, सल्ह५प्रमार त्रिविक्रम६सैंगर ॥
चापोत्कट देव७रु हरि८चालुक, कलह सवहिं पलचरन कृपालुक५

पट्पात् ॥

अट्ठ८बंधु भट अट्ठ८जत्थ कति सहँस चमूँजुत ॥
पहु अवरोध प्रकोष्ठ रक्खि फुल्लत सिंधुन रुत ॥
कहि इम बाहिर कढिय परैं जो हम तो तुम पट्ठ ॥
नारि१न सिसु२न निकासि कुसलजिमि जाहु पिक्खि कट्ठु
सुनि हुवनरेस१८५।१तिलतिल समरपारि जवन घन झरिपरयो
जवनेस सेस दल लहि विजय सजि पुर लुट्टन संचैरयो ॥ ६ ॥

१ पुत्र ॥ १ ॥ २ लज्जा ३ यमराज को ॥ २ ॥ राजा के ४ जनाने में. प्रथम ५कोठी पर ६ रखा ॥ ४ ॥ युद्ध में अथ ७मांस खानेवालों पर कृपा करनेवाले ॥ ५ ॥ ८ जनानी कोठी पर. सिन्धवी रागनी के ९.शब्द से फूलता हुआ १० कष्ट पड़ा ११ चला ॥ ६ ॥

पुर खल करतप्रवेसि बिकिखि[1] सारन १८६।१ मुख्य बांधव ॥
सुंदर १ आदिक[2] सुभट जानि बहुविघ्न बडेजव ॥
दलहिं पुब्ब दौराइ[3] जैतगढ संरनि[4] जमायउ ॥
तारागढसन तियन[5] निकरि ध्रुवदिस निकसायउ ॥
जहँ सवनमध्य रानी जुगल हुव प्रामारिय१८५।१दाहरिय १८५।२
अर्भक[6] छ ६ जुत्त चल्लिय२उभय२ निखिल[7] वेढ[8] जिम नाहरिय।७।
सिसु सुभांड१८६।४अरु सौंड१८६।५सहज नव९समवय सोदर॥
क्रम लघु लोहठ १८६।६ कर्मचन्द्र १८६।७ सिसु तेहु सहोदर ॥
सोदर १ होदर २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
प्रामारी १८५।१ भवं[9] पृथुंक[10] स्याम स्यामा१८६।१ इन्ह वय सम॥
ए चउ ४ धात्रिन[11] अंक चले सहसा भय[12] चंक्रम ॥
यहसुनत सिच्छ[13] लगि पिठ्ठि अर सोधतहुव रजनीसमय ॥
विधिलिखित[14] कोन टारनप्रबल आयति पर अय१वा अनय२।८।
बहुल नृजान१न बैठि गूढ निकसन बनी न गति ॥
हेषाकेभय[15] न हय २ संग इक्क १ हु किम संहति[16] ॥
औरहु प्रवहन[17] अखिल हत्थि ३ आदिक परबसहुव[18] ॥
यातैं सब अवरोध[19] भजिग पायन परसतभुव ॥
दीपनप्रकास नैंकन दुरैं छपां[20] तिमिर निक्रसे छिपन ॥
निजगम्य[21] मन्नि अंबकनगर[22] जानलगे गिरिमग्ग[23] जन ॥ ९ ॥

---

१ देखकर २ आदि ३ दौड़ाकर. जैतगढ के ४ मार्ग में. स्त्रियों के ५ समूह को उत्तर दिशा में. छः ६ बालकों सहित ७ सम्पूर्ण. सिंहनी ८ घेर कर चले जिस प्रकार चली ॥७॥ प्रमारी रानी से ९ उत्पन्न हुए १० बालक ११ धायों की गोद में १२ भय से इधर उधर भ्रमते हुए १३ शीघ्र १४ ब्रह्मा के लिखेहुए कर्मफल के कल्याण और अकल्याण को कौन टाल सकता है? ॥८॥ १५ हीसने के डर से साथ में एक भी घोड़ा नहीं लिया फिर १६ समुदाय कैसे? और हाथी आदि १७ वाहन १८ शत्रुओं के वश में होगये १९ जनाना २० रात्रि के अन्धेरे में २१ अपने जाने योग्य २२ नैणवा नगर को जानकर २३ पर्वतों के मार्ग में जाने लगे ॥९॥

॥ दोहा१मदनावतार२योर्द्विभंगिका ॥

कुमरस्याम १८६।१ स्यामा१८६।१कंनी, इनसह धाइ उभै २ हि॥
२यंहत डुलि पीछैं रहत, भो तिन्ह आगि सु भैहि ॥
भै सु तिन्हैं आनि गढ अद्रि मध्यहि भयो ॥
लखत इतउत फिरत भेद जवनन लयो ॥
भेदअनुसार पहुँचे रु अतिद्रोहभरि ॥
पोतँ धात्रि३न सहित द्वै २ हि आनैं पकरि ॥ १० ॥
कहनलगी ते करि कपट, बनिकनके ए बाल ॥
तदपि लये पहिचान तिन्ह, भोग्य नियत लिपिभाल ॥
भाग्यलिपि भोग्य न मिटैं सु बेदहु भनैं ॥
बेसँ नृपसिसुन किम और कहतहिं बनैं ॥
स्याम १८६।१ स्यामा १८६।१ पकरि लुद्दि पथ सेसकौं ॥
जाइ रोवत दये द्वै २ हि जवनेसकौं ॥ ११ ॥
जँहँ कटकहिं सुद्धांतजन, मिले भटनजुत मग्ग ॥
सोधन तँहँ लग्गे सबन, उत्तरि घँटिय अग्ग ॥
त्वरित गति लंघि निज अद्रिँघंटिय तहाँ ॥
*
चर्क्रविच लै सबन बाहनन चढाये ॥
पाक दुव २ तेहि तँहँ रंकँनिधि न पाये ॥ १२ ॥
प्रचुर दीपिँका जोरि पुनि, हारे जिततित हेरि ॥
पै नलखे ते दुव २ पृथुकँ, टिके छिनक तिन्ह टेरि ॥
टेरि कछुकाल तँहँ वीरपंच ५ हि टरे ॥
कटकसह नैनपुर सेस चलतेकरे ॥

१कन्या२वेगहत होकर३बालक ॥१०॥४ललाट के लेख से५पहनावा(लिबास) ॥११॥ आगे की६घाटी उतर कर. अपने७पर्वत की घाटी को८सेना के बीच में लेकर९बालक१०रङ्कके धन के समान॥१२॥११मशालें(चिरागें)लगाकर१२बालक

* यहां मूल में त्रुटि है सो दो प्रतियों में एक सी ही मिली है ॥

नर१ वैल२ हल्लन जे हमल्लन नाग३टल्लन निक्खसैं ॥
रन मिच्छ बादिक अन्नआदिक दुग्ग मग्गन रोधकैं ॥
बढि रानकेभट मेटि कंटक आत पाल प्रबोधकैं ॥ १२ ॥
चहि हल्लाके प्रतिमल्ल बाहिरके निसैंनिनदै चढैं ॥
बल बाहु बिस्मय खट्टिकैं तिन्ह कट्टि अंदरके बढैं ॥
कहुँ सोर दट्टन दै सुरंग सु जानि अट्टन के हुलैं ॥
तँहँ तैल१ तोय२न पिल्लिकैं भयमेटि तज्जव तेहु लैं ॥१३॥
कहुँ खग्ग तिच्छन घात मिच्छन आत कंगुर कट्टिदै ॥
वृक थाप कीस२ कलाप३ कौं बिटपी कि आवत बट्टिदै ॥
कति कुद्दि कंगुर आत पज्जन बाँत अज्जन द्वै २ करैं ॥
किंमु भ्रात दोउ२न लोभमज्जन भाग सज्जन लै करैं ॥१४॥
द्रुत दुर्गअंतर साहके बढिजात के भट दूरलौं ॥
हुत खग्ग पावकमज्झ कैं पहुँचात भट वे हूरलौं ॥
कति दट्टि बत्थन मिच्छ मत्थन कट्टि फैंकत कोटसौं ॥

कोहमल्लों से नहीं निकल कर १ हाथियों के दलों से निकलते हैं. युद्ध में हठ करनेवाले म्लेच्छ दुर्ग के मार्गों में अन्न आदि सामग्री को रोक देते हैं. और इधर महाराणा के वीर बढकर, घात लगाकर दुष्टों को मिटा देते हैं. और सामग्री लानेवालों को समझा आते हैं ॥ १२ ॥ कितने ही बाहर के शत्रु हल्ला करना चाह कर, निसेनियें देकर चढते हैं, इधर आश्चर्य करनेवाला बाहुबल उत्पन्न करके उनको काट कर भीतरवाले बाहर बढते हैं. कहीं बारूद दाट कर, सुरङ्ग देकर बारहवाले ऊपर चढते हैं, वहां तेल और पानी डाला कर उनसे उत्पन्न हुए भय को मेट कर वे चढते हैं ॥ १३ ॥ कहीं कंगुरों पर आतेहुए म्लेच्छों को तीक्ष्ण खङ्ग की घात से काट देते हैं सो ५ मानों वृक (चघेरा) थप्पड़ की देकर ४ वृक्ष पर आते हुए २ वन्दरों के ३ समूह को बिखेर देता है. कितने ही ६ धंत्वजों के ७ समूह कूद कर कोट के कंगुरों पर आते हैं जिनके ८ आर्यलोग दो दो टुकड़े कर देते हैं ९ मानों दो भाई लोभ मे १० निमग्न होकर महात्मा (पिता) अथवा कुलवान के धन के दो भाग करते हैं ॥ १४ ॥ बादशाह के वीर गढ के भीतर शीघ्र दूर तक चढ जाते हैं, उनको गढ के भीतर के लोग खङ्ग रूपी अग्नि में ११ होम कर १२ अप्सराओं तक पहुंचाते हैं.

देखि ग्रामारि १।८५।१ दुख भ्रात सहज़ात दुव २ ॥
सोधि वे³ सिसुरन लग्गे मुरन भूपसुव ॥ १३ ॥

॥ षट्पात् ॥

सहज सुभांड१।८३।४रु सोंड१।८६।५अनखि हेरन मुरिआवत॥
निठिन भटन निहोरि लये गहि संग लजावत ॥
सह अवरोध निसीथ ग्राम दुवलान चमू गय ॥
इत भट पंचक५कियउ पिक्खि तारागढ पव्वय ॥
कुमरी१कुमार२पाये कहुँन सुनि उदंत पुनि भूत सव ॥
गतनक जानि मिच्छन ग्रसन तिन चिंतियरतिवास तव॥१४॥

कर्पूरकम् ॥ उल्लालइत्येके ॥

जावदु१।८५।२तनूज सारन१।८६।१जई,
लाल१।८५।२तनय नवब्रह्म१।८६।२लहूँ ॥
रह्वोरधीर१ चालुक हरि २ रु, सहित त्रिविक्रम३संगरहु॥१५॥
पंच५हि विचारि रतिवाह पहु, प्रबल जाइ इततें परे ॥
उततेंकुमारउद्दवो१।८६।३अनखि,कनकनरनजवननकरे ॥१६॥

दोहा ॥

काम जनक आयो कलह, उदयसिंह१।८६।३सुनि एह ॥
पिप्पलादा सन सज्जि पुनि, आयो रजनि अनेह ॥ १७ ॥
जानि कलह अवरोध जन, पठयो चेर तिन्हपास ॥
पंथ १ मिल्यो भट पंचक५हिं, सिव केदार निवास ॥१८॥
जंपियें तिन अवरोधसन, इत पठये दुवलान ।

---

१ प्रद नामक राजा के २ दोनों के राजा के पुत्र ॥१३॥ ३ आधी रात को ४ छुरा मनुष्यों के मुखाग हुआ ७ नाक कटा हुआ जानकर ८ म्लेच्छों के पकड़ने से ९ रात्रि को ग्राम देकर विचारा ॥ १५ ॥ १० शीघ्र ॥ १६ ॥ ११ उदयसिंह ॥१७॥ रात्रि के १२ मध्य ॥१७॥ १३ हलकारा १४ केदारनाथ नामक शिव के स्थान पर ॥ १८ ॥ उन्होंने १५ कहा ॥ १९ ॥

पै स्याम१रु स्यामा२पकरि, मिच्छन लिय सहमान ॥१९॥
षट्पात्-कहिय दूत पंचक५हिं उदय१८६१३कुमरहु खिजि आवत॥
तासौं मिलि सब तुमहु परहु निंद्रित खल पावत ॥
सुनि यह दूतहिं संग मोरि लाये सारन१८६१सुख ॥
मिलि उद्दल१८६१३सन अग्ग दुसह तिन चर्विय भूतदुख ॥
कुप्यो सु सुनत सोदर कुगति पावक जनु बारूदपारि ॥
तुरकन अनीक उप्पर अतुल किंयउ हल्ल हरि सक्खिकरि ॥२०॥
बलि सारन१नवब्रह्म२बीर हरि३धीर४त्रिविक्रम५ ॥
सजिसजि निजनिज सत्थ सद्धि पंच५नसहँ संक्रम ॥
बजत विनायकवाग जत्थ जवनेस बिजैजुत ॥
सोवत निर्भय सिबिर दाव तापर लगाइ द्रुत ॥
पटके तुरंग हड्डन प्रथित रयनि अद्ध जात रु रहत ॥
चलविचलकिन्न मिच्छनचमू मिल्यो पैन इच्छित महत॥२१॥
बाजबहादुर बाल बखसि अभिमत बहिकाये ॥
हियलगाइ करिहेत सयन निजढिगहि सुवाये ॥
बाह रचिग रतिवाह आय हड्डन इहिं अंतर ॥
जनु कलविंकन जात पातकिय स्येन घातपर ॥
सारन१वजीर२मार्यो सहज उद्दकुमर१रोसन२अली ॥
नवब्रह्म१हन्यौं तूसीन जबर२बलि हरि१कम्मन२काबली॥२२॥
ए चउ४गिरत अमीर प्रहत सत्रुन छुट्टे पग ॥
निम्म१८५१३धाय नतखंध साहलग्गिय मंडुव मग ॥
तजेन दुव२सिसु तदपि खास गज तिन्ह चढाइ खल ॥

१सोते हुओं पर२कहा ३बीताहुआ दुःख ४दुर्गति. विष्णु भगवान् का ५ साक्षी करके ॥ २० ॥ उपरोक्त पांचों वीरों के ६ साथ ७ प्रसिद्ध. आधी ८ रात्रि जाते और आधी बाकी रहते समय ॥ २१ ॥ ९ बालकों को १० इच्छानुसार देकर ११ चिड़ियों पर सिकरा पक्षी पड़ै जिस प्रकार ॥ २२ ॥

बंटउब्बट भजि बेग निक्कि मालव लिय निर्बल ॥
हनिनृपहि तासभुव भोग हित दुजनन झंडे गाड्डिदिय ॥
भिरितत्थउदय१८६।३सारन१८६।१प्रभूंतिलहि जय बुंदिय रक्खिलिय

दोहा

कुमरउदय१८६।३उनमत्त क्रम, घलो निसीथं सु घत्त ॥
जननी जुग२बंदनं बिनुहि, पिप्पलदा पुनि पत्त ॥ २४ ॥
सिसु निग्रहं जावदु१८५।२ सुन्यौं, हो पुरमैं जँहँ हार्य ॥
असु छोरे उड्ढत अनखि, घंटं फट्ट सब घाय ॥ २५ ॥
अप्पन दल दुबलान इत, जवन पलायित जानि ॥
तजि अंबकंपुर गमन तव, महा कुसल लिय मानि ॥ २६ ॥
पै गिनि जयसु पराजयहि, निग्रह सिसुन निदानं ॥
अंतहपुर आन्यौं अखिल, बुंदिय जतन बिधान ॥ २७ ॥

॥ कर्पूरकम् ॥ उल्लालइत्येके ॥

बुंदीस पट्टरानी बिकल, प्रामारी १८५।१ अनसनपकरि ॥
इम तजिय देह सब लघु उभय२,कीलितं औरसं ध्यानकरि।२८।

पकरि १ नकरि २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

निंदि मरत प्रामारि १८५।१ निज, जेठे त्रय ३ तनुजात ॥
भूप सोतिसुतंहो भन्यौं, बर सुभांड १८६।४ बिख्यात ॥ २९ ॥

१मार्ग और,बिना मार्ग२आदि॥२३॥३आधी रात को४घात. दोनों माताओं को ५नमस्कार किये बिना ही फिर पीपलदे ६गया ॥२४॥ बालकों को ७पकड़ने का वृत्तान्त सुनकर ८ खेद का वचन९प्राण छोड़ दिये१०शरीर के सब घाव फट गये ॥२५॥ ११ भगाहुआ जानकर १२ नैणवानगर का जाना छोडकर ॥ २६ ॥ बालकों को पकड़ने के१३कारण. सब१४ जनाने को ॥२७॥१५खान पान का त्याग करके१७अपने उदर से उत्पन्न हुए बालकों को १६कैद करने का विचार करके ॥ २८ ॥१८ पुत्रों को१९सौत के पुत्र को ही राजा होना श्रेष्ठ कहा॥२९॥

सधं[1]न कह्यो याकेंहि सयं[2], निज मृति[3]कृत्य निसेस ॥
मनि १ हाटक २ भू ३ गज ४ प्रमुख, विप्रन विर्त[5]रि बिसेस ।३०।
हुव सारन १८६।१ अरु धीर १ हरि २, जुज्झत घायल जंग ॥
तातैं जावड़ु१८५।२ कृत्य तिम, सद्धिय सेव१८६।२ सअंग ॥३१॥
निम्म १८५।३ सहित इत घायल४न, उचित ठानि उप[6]चार ॥
क्रम सं[7]त्वर पाँ[8]टवकियउ, आगम[9]बिधि अनुसार ॥३२॥
प्रजा पलाँ[10]यित बुल्लि पुनि, सचिव१न भट२न समा[11]न ॥
दै बिसवास बसाइदिय, थिर अप्पिय सुखथान ॥ ३३ ॥
मरनकढत बुंदियें[12]महिप, भन्यौं सुभांड १८६।४ हिं भूप ॥
पै जनकहि मृत सुनत पुनि, उदय १८६।३ लख्यो अनु[13]रूप।३४।
भारमल्ल१८६।४सिसु राज्य[14]भर, निबहै समयसु नाँहिं ॥
मन्न्यौं जो नृप मंतु[15] सो, उदय१८६।३मैं न अब आँ[16]हिं ॥३५॥
यहबिचारि बुल्ल्यो उदय १८६।३, पै बय १ जाँड्य[17] २ प्रमत्त॥
नीचजनन निरं[18]त सु नट्यो, बदि जंजाल सु बत्त ॥ ३६ ॥
आकारं[19]न सुनि उदय १८६।३ को, अक्खयराज१८६।१ हुएह॥
गहिय चाहि गुं[20]रुत्व गिनि, आयउ कृत्य[21]अनेह ॥ ३७ ॥
ताहि गोरि चुंड१८६।२हिं तरजि, उदय१८६।३नट्यो आलोचि[22]॥
किय प्रमान निजप्रभु कथित[23], समय१देस२ गति सोचि ॥३८॥

---

१ करने को २ हाथ से ३ प्रेतकर्म ४ स्वर्ण ५ दिया ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ६ इलाज ७ शीघ्र ८ नैरोग्य किया ९ वैद्यक ग्रन्थों की रीति के अनुसार ॥ ३२ ॥ १० भगी हुई प्रजा को ११ बराबर ॥ ३३ ॥ जब १२बुन्दी का राजा मरने को निकला तब सुभांड को राजा करना कहा था. अपने उदयसिंह नाम के स्वरूप के १३ अनुसार ॥ ३४ ॥ १४ राज्यभार १५ अपराध. उदयसिंह में वह दोष अब नहीं १६है ॥ ३५॥ अवस्था और १७मूर्खता से. नीच लोगों से१८प्रीतियुक्त होने के कारण राज्य करने को जंजाल कहकर नटगया ॥३६॥ १९ बुलाना. अपने को २०बड़ा जानकर२१प्रेत कार्य के समय पर आया ॥ ३७ ॥ २२ विचारकर. अपने स्वामि का २३ कहना ॥ ३८ ॥

खेतहिँ हारे खोजि पै, नृपवपु[1] पायउ नाँहिँ ॥
लगेहोन समरुंड लखि, मंत[2] बहु पंचन[3]माँहिँ ॥ ३९ ॥

॥ षट्पात् ॥

निम्मदेव १८५।३ नृपअनुज परयो घायल प्रासादहि[4] ॥
जिहिँ झंझट[5] यह जानि कुणप[6] खोजिन पठईकहि ॥
नृप १ कमाल २ तँहँ हनिय मैं १ हु नूर २ सु जँहँ मारिय ॥
जँहँ प्रकुप्पि जाबदुव १ कँवल कंकन हुसैन २ किय ॥
जवनेस हत्थि कर अग्ग जँहँ पिक्खहु नृप कर्तित परयो ॥
क्षिच्छपति[10] अंस[11] कट्टि रु हमहु कलह[12] जत्थ अद्भुत करयो ।४०।

॥ दोहा ॥

जँहँ समान १ मैं २ जाबदुल ३, परे लखे तुमपास ॥
हमतैं दिस दक्खिन ढिगहि, आँजि[13] तुमुल तँहँ आस ॥ ४१ ॥

॥ षट्पात् ॥

कट्टिय सिर चो ४ फार तेग द्वै २ परि नृपको तँहँ ॥
पुनि हुसैन असि पाइ जोहु खुल्लि खंड परयो जँहँ ॥
मस्तकरहित मुहूर्त[14] भिरत कर १ पय २ पुनि भग्गे ॥
ढरयो[15] विकसि ढहरहुँ लोह अगनित तस लग्गे ॥
कर१पय२कटे रु सिर३के सकल[17] चतुर तत्थ[18] पहिचानिकैँ ॥
कारि निचित दाह तिनको करहु पहु सुभांड१८६।४लेंहु पानिकैँ।४२।

॥ दोहा ॥

पहिलैँ कछु हमसैँ परैँ, रुंडपनहु रचि रारि ॥

१राजा का शरीर २विचार ३पञ्चों में ॥३९॥ ४ महलों में ५परस्पर का यह झोड़ ६जानकर मुर्दों की तलाश करने वालों को. कंक पक्षियों का ७ग्रास. बादशाह के हाथी की कटीहुई ८सूंड के आगे राजा ९कटाहुआ पड़ा है सो देखो १०बादशाह के ११कन्धे को १२युद्ध ॥ ४० ॥ भयङ्कर १३युद्ध हुआ ॥ ४१ ॥ १४दो घड़ी तक १५गिरा १६कलेवर (धड़) १७टुकड़े १८तहां १९शीघ्र

प्रभु[1]प्रतीक तँहँ पायहो, निश्चय निपुन निहारि ॥ ४३ ॥

षट्पात् ॥

निम्म१८५।३कथित सुनि नरन खेत मति गति पुनि खोजिय ॥
अंग निचित[2] किय अखिल जाहि भास्यो सम जो जिय ॥
सबनतैंहु पुनि सोधि कतिक नृप अंग निकारे ॥
कतिक नपाये कलह टूक लघुलघु असि टारे ॥
सिर सकल[3] द्वैरु कर१पय२सकल रजानि गूढ ढँढ्ढर३दलित ॥
कर निज सुभांड१८६।४चय तास करि कथितरीतिदग्धसुकलित।४४।
पट्टिमदेवी१८५।१प्रान तजिय वासर बसु८अंतर ॥
यातैं बीस२०हि अहन नियत हुव कृत्य निरंतर ॥
मनि१हाटक२मातंग३सप्ति४सुरभी५भू६मुख सब ॥
दये द्विजन सुभदान तिमहिँ अभिमत भोजन तब ॥
सह प्रीतिपाइ भोजन सबन इकबीसम२१आवंत अह[11] ॥
बैठोसु पट्ट नव९अब्द[12] वय महिप सुभांड१८६।४महंतमहँ[13] ।४५।

॥ दोहा ॥

घायमिटत सब घायलन, लिय बुलाय हियलाय[14] ॥
हय१गज२ग्राम३अतीव[15]हित, बखसे मानबढाय ॥ ४६ ॥

रुचिरा ॥

जवन इतसु लजि बाजबहादुर भजि मंडुव पुर जातभयो ॥
निम्म१८५।६निसित असि[16]भिन्नविकृत[17]निजअंस[18]अहनैं[19]सिकवातभयो
रहि[20]मय जास सिबिर उपहार[21]हु तिन्ह लुंटन पुर जनन तयो ॥

॥४२॥ १ प्रभु के शरीर के अवयव ॥४३॥ सब अंगों को २इकट्ठे किये ३ टुकड़े ४ धड़ ॥४४॥ बीस५दिनों तक ६निश्चय ७ घोड़े ८ गौएं ९ आदि १० अभीष्ट (वांछित)११दिन. नौ१२वर्ष की अवस्था में. बड़े १३ उत्सव से ॥४५॥१४हृदय से लगाकर १५ अत्यन्त स्नेह से ॥ ४६ ॥ निम्मदेव के तीखे १६ खड्ग से १७ कटेहुए अपने १८कन्धे को १९दिनों तक सिकवाता रहा २०रहगई२१सामग्री

जयविंच खहि सहसा सु पराजय वालि बुंदियसिर कुपितवन्यो॥४७॥
गो पहुंपाक जुगल२गहिकैं गृह आनि तिहिं प्रति हित अहित भरचो॥
उरखललाइ असन निजअपिरुजिहिंसिसुजकुंटरहिजवनकरयो॥
तिन दोउ२न बिस्वास बढैं तिम दये निजन अधिकार दयो॥
पहुंइतपृथुकसुभांड१८६।४सुहुव परगुनसहन१सुदोसत्व२गयो॥४८॥

दोहा॥

विदित यहै आधारवस, उचित१रु अनुचित२आहि॥
जोगि१ न गुन अति सहन२ जो, सुपहु१ न दोस२सदाहि॥४९॥
कोउन जानैं दैवक्रम, हिय विद्या निधि होहु॥
व्हैहैं नृप साधारनहु, सवन नजानीं सोहु॥ ५०॥
सक.वसु ससि चउदह१४१८समय, वैरिसल्ल१८५।१हुव वीर॥
नभ सर सकारि१४५०सक नियत, धरिय छत्र जिहिं धीर॥५१॥
ख निधि चउदह१४९०साक खिन, इम बुंदिय रन एह॥
वरस वहत्तरि७२ पाइ बय, देत भयो तजि देह॥ ५२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर१ वीज्यवर्णनवीजहङ्काधिराडस्थिपाल १५५वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसुभाण्डदेव १८६।४चरित्रे तारादुर्गाद्रिपर२पार्श्वमस्थापितपूर्वबल १ वाह २ वर्गसहपरिग्रहसारणा १८६।१ दिवान्धवाऽष्टकसुंदरा १ दिसुभटाऽष्टक ८ नयनपुरनेतव्यसाशिशुशुद्धान्तजननिष्कासन १, प्राप्तप्रत्ययपृष्ठलग्न

॥ ४७ ॥ १ राजा के दो बालकों को॰ बालकों के २ जोड़े को. इधर सुभांड बालक ही ३राजा हुआ जिसमें सहनशीलता का गुण था परन्तु वह अधिक होने के कारण दोष होगया ॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायणके पञ्चमराशिमें अग्निवंशी चहुवाणवंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपालके वंश और अनुवंश की कथा बनाने के समय के वचनों में सुभांडदेव के चरित्र में तारागड के पर्वत की परली ओर स्थापन कीहुई पहले की सेना और वाहन वर्ग सहित परगह सारण आदि आठ

लुराटाकयवनाऽनीकहतवेगमार्गमूढधात्रीजनधृतस्ववशीकृतश्याम १८६।८ श्यामा १८६।१शिशुद्वय २ म्लेच्छराजोपायनीकरण२, पानारोहणस्थानालब्धशिशुद्वय २ प्रसभप्रतिप्रस्थापितसाऽनुजसुभाण्ड १८६।४ गम्यमार्गगामितसानीकरक्षणीयवर्गप्रत्यागमशोधितशैलालब्धलभ्यसम्यवगतयथाभूतोदन्तसम्मतसौप्तिकचिकीर्षाचंक्रम्यमाणसपरिग्रहसारण १८६।१ नवब्रह्म १८६।२ धीर ३ हरि४ त्रिविक्रम ५ सामन्तपञ्चक ५ केदारेश्वरसद्मसमीपपिप्पलदाधीशकुमारोदयसिंह१८६।३सम्प्रेषितसन्देशहारकसम्मिलन३, प्रत्यानीततद्दूतसम्मेलितसर्वसङ्घातसम्पातन ४, सारणोदय २ नवब्रह्म ३ हरिसिंह ४ तदमात्यादिसुभटचतुष्क ४ संहरण ५, समाश्वासनविश्रम्भसार्थीकृतशिशुद्वय २ सोढांसक्षतव्यथयवनाधिपबाजबहादुरमण्डूपुरपलायन ६, जननीजकुट २ दर्शन १ वन्दना २ दिवि

वांधवऔर सुन्दर आदि आठ उमरावों का नैणवापुर को लेजाने योग्य वालकों सहित जनाने लोगों को निकालना, सुबूत पाकर पीठ लगीहुई लुटेरी यवन सेना का थकेहुए, मार्ग भूलेहुए और धायों के उठायेहुए श्याम और श्यामा दो बालकों को अपने वश में करके बादशाह की नजर करना, सवारियों पर चढने के स्थान में दोनों बालकों को न पाकर और छोटे भाई सहित सुभांड को जाने योग्य मार्ग में हठ से पीछा भेजकर, सेना सहित रक्षा करने योग्य समूह को अर्थात् जनाने को रवाना करके पीछे आकर पर्वत को शोधने पर भी लभ्य वस्तु को न पाकर यथार्थ वृत्तान्त को जानकर, सलाह करके रातिवाह देने की इच्छा से चलाईहुई अपनी परगह सहित सारण १ नवब्रह्म २ धीर ३ हरि ४ और त्रिविक्रम५ इन पांचों सामन्तों का केदारेश्वर के मंदिर के समीप पीपलदा के पति कुमर उदयसिंह के भेजेहुए हलकारे से मिलना, उस दूत को पीछा लाकर सब समूह को मिलाकर छापा देना, सारन १ उदयसिंह २ नवब्रह्म ३ और हरिसिंह ४ का उस (बादशाह) के मन्त्री आदि चार सुभटों को मारना, धैर्य देने से विश्वास पायेहुए दोनों बालकों को साथ में लेकर कन्धे के घाव की पीड़ा को सहनेवाले बादशाह बाज बहादुर का मण्डूपुर को भागना, दोनों माताओं के दर्शन और नमस्कार

मुखमहोन्मत्तोपमानकुमारोदयसिंह १८६।३ स्वस्थानपिप्पलदाम तिप्रस्थापन७, शिशुयुग २ निगडनश्रवणसमकालसंरम्भससुत्थान शीर्णक्षतसन्धानजावड़ु १८५।२तनुत्यजन ८, श्रुतशत्रुपलायनसेवा १८६।२ दिवन्धुवर्गसकुशलशिशु १ शुद्धान्त २ जनबुन्दीपुरप्रत्यानयन ९, धीर १ हरि २ सहितसारण १८६।१ क्षतपारवश्यप्राप्तावसरसेव १८६।२ जावड़ु१८५।२ प्रेतकर्मप्रणयन १०, निश्चितनृपनिर्दिष्टापराधनिवारणसुभट १ सचिव २ समाकारितनीचजनानुमतरतोदयसिंह १८६।३राज्यानङ्गीकरण ११, राज्यरक्षिवर्गविज्ञाततद्वृत्तकृत्यसमयसमागतसन्नद्धसैन्यसानुजज्येष्ठकुमाराऽक्षयराज१८६।१ निराकरण १२, सचिव १ सामन्त २ स्वीकृतस्वामित्वसुभाण्डदेव १८६।४ सक्षतस्वपितृव्यकनिम्मदेव १८५।३ सूचितसमरस्थानगवेषणसम्पादितपृथ्वीशप्राप्यप्रतीकस्वकरसमीरसखसंस्करण १३, दिनाऽष्टका ८ ऽनन्तरपट्टराज्ञीपद्मिनदेवी १८५।१ तनुत्यागकारण वासरविंशति २० पितृप्रेतकृत्यानुष्ठान १४, प्राप्तैकाविंश २१ वासर

आदि से विमुख और महा उन्मत्त के सदृश कुमर उदयसिंह का अपने स्थान पीपलदे को वापिस जाना, दोनों बालकों का कैद होना सुनने के साथ ही जोश आने से घावोंका मिलना फटकर जावडू का शरीर छोडना, शत्रुओं को भगेहुए सुनकर सेव आदि बान्धव वर्ग का बालकों और जनाने के लोगों को कुशलता पूर्वक बुन्दीपुर में पीछा लाना, धीर और हरि सहित सारन घावों से परवश होने के कारण समय पाकर सेव का जावडू के प्रेतकर्म करना, राजा के कहेहुए अपराध के निवारण का निश्चय करके उमराव और सचिवों के बुलाने पर भी नीच लोगों की सलाह में प्रीति रखनेवाले उदयसिंह का राज्य से इनकार करना, राज्य की रक्षा करनेवाले समूह का उसका वृत्तान्त जानकर प्रेतकर्म के समय सेना सजकर आयेहुए छोटे भाई सहित बडे कुमर अक्षयराज का अनादर करना, मन्त्री और उमरावों से स्वामिपन को स्वीकार करके सुभांडदेव का घायल काका निम्मदेव को सूचना कियेहुए युद्धस्थल में ढूंढ कर राजा के पाने योग्य अंगों को इकट्ठा करके अपने हाथ से अग्नि संस्कार करना, आठ दिन के पीछे पाटवी रानी पद्मिनदेवी के शरीर छोडने

वसरसर्वसम्मतनव ९ वर्षवयस्कभूपभारमल्ल १८६।४ पितृपट्टप्रापण १५, प्रापितप्रघातपाटवसभासमाकारितवीरवर्गपट्टादिपूजन १६, प्रकृतिविप्लुतशिबिरोपहारनिम्म १८५।२ खरखड्गखिन्नांसमगडूपुरप्रविष्टपुनर्निश्चितबुन्दीविरोधबाजबहादुरसम्पादितसमुचिताधिकारबुन्दीन्द्रबालद्वय २ यवनीकरण १७, पौगण्डवयप्राप्तपट्टभूमीभुजङ्गभारमल्ल १८६।४ तिसहनगुण १ दोषीभाव २ भाविताभाषण १८, बुन्दीन्द्रवैरिशल्य १८५।१ जन्म१ पट्टप्राप्ति२ शूरशय्याशयन ३ शकसूचनं १९ सप्तदशो १७ मयूखः ॥१७॥

आदितश्चतुष्षष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६४ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अक्खय१८६।१तिमचुंड१८६।२रु उदय,१८६।३,नमिल्यो पट्ट निहारि
दव्वन लग्गे देस हुत, वालक नृपहिं बिचारि ॥ १ ॥
जानि तज्यो हम पट्ट जब, भोगन दारिदभाव ॥
क्यों पावहिं इम चिंतिकैं, उदय १८६।३ हु किय उफनाव ॥२॥

के कारण बीस दिन तक पिता और माता का प्रेतकर्म करना, इक्कीसवें दिन का समय प्राप्त होने पर सबकी सलाह से नौ वर्ष की अवस्थावाले राजा भारमल्ल (सुभांड का दूसरा नाम है) का पिता का पाट पाना, घाव पायेहुए वीरों के समूह के नैरोग्य होने पर सभा में बुलाकर उनका पट्टा आदि देने से सत्कार करना, डेरों की सामग्री को प्रजा के लूट लेने पर निम्मदेव के तीक्ष्ण खड्ग से कटे कन्धेवाले बाजबहादुर का मण्डूपुर में प्रवेश करके फिर बुन्दीपुर के विरोध का निश्चय करके उचित अधिकार देकर ग्रहण कियेहुए बुन्दीन्द्र के दोनों बालकों को यवन बनाना, दश वर्ष की अवस्था पाकर भूपति भारमल्ल का अत्यन्त सहनशीलता के गुण का दोषभाव को सेवन करना अर्थात् गुण का दोष होना, बुन्दीन्द्र शत्रुशल्य के जन्म १ पाट पाने २ और काम आने के सम्वत् की सूचना करने का सत्रहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १७ ॥ और आदि से १६४ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ २ ॥

चल बाल दै किंदु दोट पिल्लत गोट गैंदन चोटसौं ॥१५॥
कति मोरछे तजि मिच्छ दै अधिरोहिनौं चढते कटैं ॥
अरि लंक के गढजात रक्खस घात कौं कपि उल्लटैं ॥
बहु घट्ट गोलन वर्ट्टहै तहँ टट्ट १ अट्ट २ नये बनैं ॥
मिलिकैं दुंरघां भैर भै तनैं मिलिकैं परस्पर जै भनैं॥१६॥
भट साहके बढि खातिकां बिच तूलके बुरके भरैं ॥
जिनकी तुपक्कन जेहि प्रत्युत रान इच्छक व्है जरैं ॥
अह१रत्ति२ मिच्छ अली अली कहि आनि दुग्गहि आवरैं॥
सह रत्ति रान सिपाह संचर्य पानि पुग्गत संहरैं ॥ १७ ॥
सिलगाइ सोर कुतूनं डारत केक मिच्छन सूल्यव्है ॥
गुरु ग्रांव गेरन धाव केकन मृत्यु विक्रय मूल्यव्है ॥
कति दोहरी २ तिहरी ३ क्रिया नट निंदि आवत कोटतैं ॥

कितने ही लोग म्लेच्छों को अङ्क में दबा, उनके मस्तक काट कर कोट से नीचे फैंकते हैं. सो २ मानों १ चपल बालक ४ गोल गैंदों को ३ दौड़ाने की प्रबल चोट देकर चलाते हैं ॥ १५ ॥ कितने ही म्लेच्छ मोरचे छोड कर ५ निसरनियों पर चढतेहुए कटते हैं, सो मानों लंका के शत्रु पन्दर गढ में जातेहुए ६ राक्षसों की घात से उलटते हैं. गोलों से बहुत ७ घाटों (दो पर्वतों की संधि का मार्ग) की सीध ८ मार्ग होते हैं और वहां पर नवीन ९ पगडंडिये (छोटे मार्ग) और १० चौड़े मार्ग बनते हैं. ११ दोनों ओर के १२ भड़ (वीर) मिलकर भय फैलाते हैं, और मिल कर परस्पर जय बोलते हैं ॥ १६ ॥ बादशाह के वीर बढकर १३ खाई में (चित्तोड़गढ के खाई नहीं है, परंतु गढ के सामान्य रूप से कहागया है) १४ रूई के १५ बोरे भरते हैं, वे बोरे उन यवनों की बंदूकों से १६ उलटे महाराणा के इच्छुक होकर जलते हैं. दिन रात म्लेच्छ 'अली अली' कहकर गढको आकर १७ घेरते हैं जिनको रात्रि के साथ महाराणा के सिपाहियों के १८ समूह पहुंच कर हाथों से नाश करते हैं ॥ १७ ॥ बारूद के १९ कुप्पे (पीपे अथवा खोदड़े) जलाकर ऊपर से डालते हैं, जिससे कितने ही म्लेच्छों के सूले (कबाब) होते हैं. बडे२०पत्थरों का गिराना और दौड़ाना ही मानों कितनों को मृत्यु२१बेचने का मूल्य होता है. कितने ही नट की दुहरी तिहरी क्रिया की निन्दा करके कोट से नीचे आते हैं. उनको अपने साहस की आड से गढ के बलवान् लोग धन डाल कर

निजनिज डिगके बरनेगर, अंगमि प्रसभ अकूट ॥
लिय छिन्न रु रोधक लख्खत, लगे मचावन लूट ॥ ३ ॥
पट्टनि १ जयथल २ खेट ३ पुनि, लकखैरी ४ रु लवान ५ ॥
खटपुरपति दव्वे अखय १८६।१, उद्धतपन अभिमान ॥ ४ ॥
पुव्वहु यह लंपट प्रथित, भयो सु सुनि खिजि भूप ॥
निजप्रसाद बाहिर नियत, रक्ख्यो अघ अनुरूप ॥ ५ ॥
चुंड १८६।२ हु लखि अग्रज चलन, लग्गो छोरन लज्ज ॥
देसमें सु वर्जन दुसह, कैं तर्जन १ मद २ कज्ज ॥ ६ ॥
बिगरनके दिन बाहुरत, बिक्खैं सुभ १ विपरीत २ ॥
नीचजनन उदय १८६।३ हु निरंत, प्रकट सु मत्त प्रतीत ॥ ७ ॥

॥ मदनावतारः ॥

बुल्लयो याहि जब पट्ट बैठारिवे,
धरनि अधिराजपन छत्न सिरधारिवे ॥
हेर्य कुल सचिव चम्मार याकै हुतो ॥
स्वामि संबोधि लग्गोहि अटकन सुतो ॥ ८ ॥
बदिय इम स्वामि तुम भूप जब बज्जिहो ॥
गरुव[11] भर[12] नम्रसिर इमन तब गज्जिहो ॥
लैन लखि जाचकन हैन कहि लज्जिहो ॥
सैन[13]सर पै न इम मैन[14]सुख सज्जिहो ॥ ९ ॥

दोहा॥

चर्मकार[15] जो इम चविय, उदय १८६।३ सु मन्नि असेस ॥

---

१ अष्ट नगर. सत्त हठ से २ दबाकर ३ रोकनेवालों के ॥ ३ ॥ ४ ॥ ४ व्यभिचारी ५ प्रसिद्ध ॥ ५ ॥ ६ ॥ ६ प्रीतियुक्त ७ स्वामिपन का ८ त्यागने योग्य कुलवाला ९ चमार (चर्मकार). स्वामि को १० समझाकर ॥ ८ ॥ ११ घडे १२ भार से सिर झुकाओगे और इस प्रकार गर्जना नहीं करोगे. लेनेवाले याचकों को मेरे पास नहीं है ऐसा कहकर लज्जित होओगे १३ शय्या के ऊपर इस प्रकार १४ कामदेव का सुख नहीं साधोगे ॥ ९ ॥ १५ चमार ने जो यह कहा

पायो अबुध न भूप पद, दब्बहिं अब प्रभुदेस ॥ १० ॥

॥ मदनावतारः ॥

दब्बिपुर द्वै २ रु कृति २० गाम निज देसके,
कतिक लिय नानता १ प्रमुख कोटेसके ॥
होजु मक्खीद १ गैनोलिपतिको हर्‌यो,
और भ्रातन सनहु जोर अति अहर्‌यो ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

निम्मान१ रु लोहित २ नगर, खीनाँ३ डब्भिय ४ खंड ॥
चुंड १८६१२ हु लग्गिय चट्टिबे, कोन घटैं अघ कंडे ॥ १२ ॥
रोहितपुर दिनसत १०० रह्यो, नियत अमल निम्मान ॥
नृप देनक्कि हल्लू १८२११ कुलहिं, लिय पच्छे खिलरथान ॥१३॥
बुंदिय बल प्रबयौ वच्यो, निम्मदेव १८५१३ बिनु नाँहिं ॥
नृपके सिसुपन इम निजहु, सुरनलगे मनमाँहिं ॥ १४ ॥
चले क्यों न परचित्त जब, घरहीमें यहघाट ॥
तकत छिद्र अभिमत तन्यों, बन्यों मुलक ब्रहवाट ॥ १५ ॥
नृप १ हिं मराइ गहाइ निज, अनुज २ रह्यो भजि एक ॥
भाग्यहीन यह भूप है, अक्खैं इमहु अनेक ॥ १६ ॥

षट्पात् ॥

पौगंडहुँ वय पाइ इम न सहिवो व्है औरन ॥
सरल निसर्ग सुभांड१८६१४जनन वचनहु दै जोरन ॥
इतरहु तब अंगमि रु भ्रात लग्गे दब्बन भुव॥

---

१ मूर्ख ने राज्य नहीं पाया और अब स्वामी के देश को दबाने लगा॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ पाप करनेवाला २ नीच ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ३ वृद्ध ॥ १४ ॥ ४ शत्रु ओं के चित्त क्यों नहीं चलें ५ अभीष्ट (वांछित) ६ बरबाद ॥ १५ ॥ १६ ॥ ७ दश वर्ष की अवस्था पाकर इस प्रकार सहनशीलता अन्य लोगों में नहीं होती ८ स्वभाव

असगोत्रहु भट अवर हड्ड सहना प्रतीपहुव ॥
सीमा अराति लखि यह समय रहे दब्बि जिततित धरनि ॥
जँहँ बढत द्रोह इक१गृह जननं सत्रु मनन सुहिं तँहँ सरँनि ॥१७॥
नृपति पितृव्यक निम्म१८५।३तजिय द्वि६समां अंतर तनुँ ॥
जिहिँ सब लुब्धहु जानि मन न मोस्यो भीषम सनु ॥
बुंदिय रन छतंबिकल पंटुहु खिन्नहि रहयोसु पुनि ॥
बोधितकिय जिहिँ बिमुख सोहु उपदेस तज्यो सुनि ॥
अब निम्म१८५।३मरत प्रबयां न इक१परे स्वामिढिग सब प्रबय ॥
असगोल भटन कति उब्बरे जिनतैं नबन्यों बिमुख जय।१८।
अमरदुर्ग१इत दब्बि पाइ झुज्झोल२प्रमोदन ॥
संकरगढ३लग सहज सीम प्रसरिय सीसोदन ॥
इत खिच्चिन आटोनि १ लियउ बारां२बड़ोद३लग ॥
बप्पाउर ४ बरसोद ५ प्रमुख पुहवी दब्बी पग ॥
इत हम्म१८३।१बिजितं डोडन अनाखि लग रहलावनि१दब्बिलिय॥
इक१होइ दमिक१तोमर२अरिन इत उत्तर भुव अंगमिय॥१९॥
उन्नयपुर१लहि इनहु गंजि आमा२हनुमतगढ३ ॥
लोचनपुर१इत लग्गि रारि मंडिय प्रलोभ रंढ ॥
जँहँ नृपमातुल जैत दहर गढपति हो दुस्सह ॥
दिय भजाइ जिहिँ दुजन मारि गोलन प्रसारि मह ॥
नैनपुर टिकत उतके निखिल रंदतुट्टत अंहिजिम रहे ॥
इत निजनमँहु वहुपुर अखय१८६।१दब्बि निजहि कुलजन दहे।२०।

हाडे की सहनशीलतासे१ विरुद्ध होगये२शत्रु३वंशमें. शत्रु के मन भी उसी४मार्गमें जाते हैं॥१७॥५काका. दो ६ वर्ष पीछे७शरीर. सबकोद्लोभी जानकर भी आपने अपने स्वामि से मन नहीं मोड़ा.बुन्दी के युद्ध में९घावों से विकल होकर१०नैरोग्य होने पर भी११दुखी रहा. एक भी१२वृद्ध नहीं रहा. सब१३वृद्ध लोक अपने स्वामी शत्रुशल्य के पास काम आगये॥१८॥ हाडा के१४विजय कियेहुए डोडिया क्षत्रियों ने क्रोध करके॥१९॥ लोभ के१५हठ से१६दांत टूटेहुए १७सर्प के समान।२०।

दोहा ॥

पट्टनि१से पुर लिय प्रथम, गिनि प्रभुता निजगेह ॥
सरत निम्म१८५।३रोधं न मिल्यो, अधिक बढ्यो तब एह ॥२१॥
जास तोग१८६।१अभिधान जग, बिदित पराक्रम बोध ॥
निम्मदेव१८५।३सुत जिहिँ निपुन, जनक पट्ट लिय जोध॥२२॥
हल्लू१८२।१बिनु जिम तुच्छहुव, वंवावद सु वढंत ॥
वैरिसल्ल१८५।१पीछैं सु बिधि, हुव बुंदियसुव हंत ॥ २३ ॥

पट्पात ॥

खित्तल बनिक खटोर हुतो नृप सचिव स्वामि हित ॥
प्रतिभा४मंत्रं५ प्रगल्भ दूरदरसी सकुंनोदित३ ॥
बिख सु राज्यबिच बढत हेरि सबसुख रोकत हुव ॥
जिनजिन लिय जोजोहि भयो तिनतिन अप्पतभुव ॥
सारन१८३।१रु जैत१८५।१समुचित समुझि अनुमतं निज लैएउभय
नृपपैलगाइदिन्नैँनिखिलउज्झि अखय१८६।१चुंड१८६।२रुउदय१८६।३

दोहा ॥

निजनिज दब्बी दै निखिल, लाये नृपपय लुंद्द ॥
लाल१८४।२निम्म१८५।३जावद१८५।२कुलहि,सुभातिरहेतहँसुद्द२५
गहत उदय१८६।३मक्खोद१गढ, जैत१८५।१बिचारिय जंग॥
सचिव निवारयो सोहु सैँमि, रच्यो स्वामिहित रंग ॥ २६ ॥
अरिन जिते सब अंगमैं, गये तिते पुर१ग्राम२ ॥
निज प्रतीप रक्खे निजहिँ, सचिव दुधाँ रचि साँम ॥

---

१ रोकनेवाला ॥ २१ ॥ २२ ॥ २ हानि; अथवा खेद का वचन ॥ २३ ॥ खेता नामक खटोर जाति का ३ बनिया ४ बुद्धि ५ सलाह में ६ कुशल ७ शकुनी. राज्य में ८ जहर बढता देखकर ९ उचित. अपनी १० सलाह में लेकर ११ छोडकर ॥ २४ ॥ १२ लोभियों को ॥ २५ ॥ १३ शान्त करके ॥ २६ ॥ अपने १४ विरुद्ध लोगों को भी अपने बनाकररक्खे १५ दोनांओर १६ मिलाप

॥ षट्पात् ॥

वय नृप सोलह१६वर्ष हुवहु न *छमा छोरत हुव ॥
सरलपनहु सचिवाक्त धारि निजहित मन्न्यौं ध्रुव ॥
राव सूर खदिराट जनन चालुक्य जाजपुर ॥
तनया कमला १८४।१तास धरन प्रकर्षा साध्विन धुर ॥
उपयामें प्रथम रानी यहै पहु सुभांड १८६।४ आनी परनि ॥
संबंधि नृपन न दई सुता धर्म्मि घटत अविरत धरनि ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

कनीनास अनुपमकुमरि १८६।२, अमरकवंध अगार ॥
उपयम दूजे २ सो अधिप, परन्यौं कथित प्रकार ॥ २९ ॥
राजकोट चालुक रतन, कन्या स्यामकुमारि १८६।१ ॥
सोंड १८६।५ विबाह्यो सो सती, नियति लेख निरधारि ॥३०॥

॥ षट्पात् ॥

जुग २ सोदर सहजात विविध महसह विवाहि वर ॥
सचिव सु खितलसाह घनैं जस जुत लायो घर ॥
लघु इनतैं लोहठ १८६।६ रु कर्मचंद्रक १८६।७ वय बालहु ॥
हुव अनूढ मृत हात कहुंक असहन छेम कालहु ॥
सुत दुवरउपंत मृत दुव२सुतन दुख्ख अनंत किय दाहरिय१८५।२
तिन्ह प्रेतकर्म विधिवत वितत करि द्विजजन धनघन करिय॥३१॥

॥ दोहा ॥

सक मुनि नव चउदह १४९७ इमसु, विरचि भ्रात जुग२व्याह ॥
वन्यौं थंभ खितलबनिक, राज्यथंभि नयराह ॥ ३२ ॥

---

* क्षमा = नन्दिन का कहाहुआ. १ खैराड़ प्रदेश स. सोलांखयों के २वंश में ३ पतिव्रताओं की धुर खींचनेवाली ४ विवाह ५ धर्मी लोग ६ निरन्तर ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ७ जांहता (एक साथ उत्पन्न होनेवाले) ८ उत्सव सहित ९ बिना विवाह किसीके हाथ से मरा. काल १० समर्थ है ११ विस्तृत (फैला) करके बहुत ब्राह्मणों को दृढ कर दिया ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

पाछैं निजनिज समयपर, तनया इक १ सुत तीन ३ ॥
भारमल्ल १८६।४ नृपकेंभये, पथ निज चलन प्रबीन ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

तँहँ जो जेठोतनय सूर नारायनदास १८७।१ सु ॥
*तानक स्वकुल द्वितीय २बिदित नरबद१८७।२ +बितरन ÷बसु॥
ससु १ बसु २ अन्त्यानुप्रासः ॥
प्रभुके जिहिं परपुरुख वंस यह बहुल बढायउ ॥
॥
नरसिंह१८७।३नामतीजो३निपुनकुमरजन्यौंअनुपमकुमरि१८६।२॥
जिन्ह पिछ्रिमदनकुमरी१८७।१जनीकमला१८६।१बांर्द्धक भावकरि॥

॥ दोहा ॥

संतति न भई सोंड १८६।५ कै, नियति उदर्क निदान ॥
क्रम संभव ए चउ ४ कहिय, सुपहु हहु संतान ॥ ३५ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

मंडोउर इत जोधमहीपति, औरस कुल बिस्तारि प्रबया अति॥
बिक्रमसक पंद्रह तिथि१५।१५बितत्त, सुक्र बिसद एकादसि११स
सुव निजनाम रहन कछु भायउ, ॥
सोदर बीका१बीदा२तससुव,भाग्य लखँन गय दुव२जंगलभुव।३७
देवीदास तनय इक १ दुव्वर, पाइ जनक कटुबैन ग्रनंखपर ॥
आयउ हड्डवती जनपद वह,स्वभटकियउ खिच्चिन पुनिहितसह।३८
भो पित्थल जाको नाती भट, मातुल मारि बढ्यो जो उब्बट ॥
जिहिंकुल अब गागरनौं जानहु, प्रभुंभ्राता व्याह्योसु प्रमानहु।३९

॥३३॥ अपने कुल को *फैलानेवाला +देनेवाला ÷धन १ हे रावराजा रामसिंह आपके पर पुरुषों का वंश जिसने २ बहुत बढाया ३ वृद्ध अवस्था में ॥३४॥ ४ भाग्य के ५ फल से ॥ ३५ ॥ ६ वृद्ध अवस्था में ॥ ३६ ॥ भाग्य ७देखने के लिये ॥ ३७ ॥ हाडोती ८देश में ॥ ३८ ॥ ९ पोता १० हे रावराजा रामसिंह आपका भा

लखि *खिन रान अमरगढ जब लिय, कोउक बंधु दुर्गपति तँहँ किय॥
बुंदियधर जिहिँ लूट बढाई, +प्रचुर प्रजा पँहँ त्राहि पढाई ॥ ४० ॥
सोलह १६ ÷सम नृपबय जबहीसौं, त्रासन अरिन चिंति तबहीसौं॥
×बर्मितबल खिजि चढ़ना बिचारिय, निजअमात्य तब तबसु निवारिय४१
जिनजिन भुव दब्बी निज जोधन, पठये ते इम नीतिप्रबोधन ॥
आगस[1] मिटन बेर यह आगत, जो वह जोर अरिनसिर जागत।४२।
मनंबिनु तेंहु गये रिपुमारन, बाहिर १ अंतर २ भेद बिथारन ॥
क्रम१लघुतम[2]हेला[3]१गुरु२कारन, कहुँक लरैंहु मिटीसु पुकार न।४३।
रुकारन १ पुकारन २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
हनैंइनहिंजिन छद्म[4]प्रहारन, संग नदियइमं[5]जैत१८५।१रुसारन१८६।६॥
जे सागस पहुँचे निज जारन[6], पायंउ तँहँ तिन परन प्रतारन[7] ।४४।
बसुधा निज प्रभुकीहि बिगारन, धी कुटिलसु[8] लग्गैं किम धारन[9]॥
बिफल मुरे लखि बिमुख न बारन[10], हुव नृप बिमन[11] पुकार हजारन॥४५॥
रुकिय अग्ग गणकन[12] उच्चारन, प्रानतजहिं नृप हेतिप्रहारन[13] ॥
सु बचन चिंति खित्तल१रुसारन२, नृपकोकरहिं सँसौंह[14] निवारन।४६।
रहत सदाहि छमा १ प्रभुता २ रन, बढँ छमाँ १तउ कित्तिबिगारन॥
जुज्झैं इमहुव नृप साधारन, बेलोचित[15] कृति जानि बिचारन ॥४७॥

वहां व्याहा है ॥ ३९ ॥ * समय देखकर महाराणा + बहुत ॥ ४० ॥ राजा सोलह ÷वर्ष की अवस्था में हुआ जब से ही × कवच धारण कीहुई सेना के ॥ ४१ ॥ १ अपराध ॥ ४२ ॥ २ छोटे कदमों से चलकर ३ लम्बी आवाजें देनेवाले कहीं पर लड़ें उस कारण से वह पुकार नहीं मिटी ॥ ४३ ॥ ४ छल की घात से ५ इस कारण से ६ बुन्दी की भूमि को गुप्त रीति से भोगने वाले ७ धोखा देने को ॥ ४४ ॥ कुटिल ८ बुद्धिवाले ९ तलवारों की धारों से भागने से १० समय नहीं लगा; अथवा प्रवृत्ति के विघातक पीछे फिर गये ११ उदास ॥ ४५ ॥ राजा जाने लगा जिसको भविष्यत् वाणी से १२ ज्योतिषियों ने रोकदिया १३ शस्त्रों के प्रहार से १४ शपथ दिलाकर ॥ ४६ ॥ प्रभुता सदैव क्षमा और युद्ध से रहती है इनमें क्षमा बढजाती है तो भी कीर्ति को विगाड़ती है १५ समय के उचित ॥ ४७ ॥

जो गुन१वच्यो बाल्य अंतर जब,ओगुन१छमा२दया३सह सो अब॥
प्रभुता १ जँहँ ऐसे छबि पावैं, दुष्टन तो इन्ह पंरखि दबावैं ॥४८॥
धुत्त १ धिट्ठ २ बंचन तँहँ धारैं, पचां५गन जँहँ मंत्र २ प्रचारैं ॥
जँहँ लेसहु उच्छाह३न जग्गैं, भिदि तँहँ कृत्य उपक्रम भग्गैं ॥४९॥
लिक ३ जो इक व्हैहै प्रभुता १ ही, दब्ब सबन तौहु सठ दाही॥
नृपमैं सक्ति त्रय३हि भास्यो नन,जातैंन दबिरहे निज१पर२जन॥५०॥
सारन१सोंड२ जैत ३ खित्तल ४ सह, ए चउ ४ व्हैन रहे न पट्ट पह॥
निम्म१८५।३तनयतोगहुभटनामी,सिरहिसदामन्नैंनिजस्वामी॥५१॥

॥ दोहा ॥

तिमनवन्नह१८५।२रुसेव१८६।२तँहँ,अमर१८६।१विजय१८६।१चउ४एहु
निज मनकरि इच्छै नृपहि, जुरे इतर निजें जेहु ॥ ५२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वरवीज्यवर्णानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल१५५वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानाऽवसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसुभाण्डदेव १८६।४ चरित्रेऽप्राप्तराज्याऽत्तयशजा १८६।१ यग्रजत्रय ३ बुन्दीद्रङ्गदुर्गादि २

वाल्यावस्था के पीछे जना गुण रहा सो अब कहीं गुण दया के १ साथ होकर अवगुण होगया ॥ ४८॥ २ धूर्त और ढीठ लोग वहां ३ ठगाई करते हैं कि जहां * पांच अङ्गों सहित मन्त्र का प्रचार नहीं होता, जहां पर राजा की उत्साह नामक तीसरी शक्ति नहीं जगती तहां आरम्भ में ही कार्य का नाश होजाता है ॥ ४९ ॥ यदि प्रभुशक्ति १ मन्त्रशक्ति २ और उत्साहशक्ति ३ ये तीनों एक होती हैं तो वहां पर ही प्रभुता होती है और वही राजा सबको दबाकर दुष्टों को जलानेवाला होता है. ये तीनों शक्तियां इस राजा में नहीं दीखतीं इसकारण से अपने और पराये लोग दबे नहीं रहे ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ४ अपने लोग थे सो भी ॥ ५२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेन्द्र सुभाण्डदेव के चरि

*सहाया: साधनोपाया विभागो देशकालयोः ॥ विनिपातप्रतीकारः सिद्धिः पञ्चाङ्ग इष्यते ॥१॥

समप्रसभसमाक्रमण १, चर्मकारपारवश्यानङ्गीकृताऽऽधिपत्योदयसिंह १८६।३ बुन्दी १ कोटा २ गैणोली ३ पुर १ ग्राम २ प्रकरसमा- सादन २, ज्ञातयुवावस्थबुन्दीशतितिक्षातिशयपृथ्वीपरिलुब्धस्व १ पर २ सामन्तस्वस्वसीमावृद्धिविस्तारण ३, दृष्टेतराऽपूर्वलाभप्रत्यु तत्प्राप्तिप्रतीपपृथ्वीशपितृव्यकगाङ्गेयगृहीतधुरधारकमहामनोनि- म्मदेव १८५।३ प्रधनप्रहरणप्रघातप्राप्तिपञ्चत्वाद्वितीया २ऽब्दावसान समयतनुत्यजन ४, राणाकुम्भकर्णाऽमरदुर्गा २ दिबुन्दीसीमाप्रदे शसमाक्रमण ५, खिचि १ डोड २ द्विषद्द्वय २ बुन्दीवशाऽऽटोणि १ रहला वणि २ प्रभृतिप्रान्तप्रभूभवन ६, मनोविभक्तलब्धिनैमैकी १ भूत- प्रान्तोन्नयनपुर १ प्रमुखपत्तनप्रदेशदाम्भिक १ तोमर २ द्विषद्द्वन्द्व २ दृग्दङ्गवाहिनीवेष्टन ७, तद्दुर्गपतिबुन्दीशमातुलदहडजैत्रमल्लतत्प्रत्यनी कपृतनाप्रद्रावण ८, रोधकनिम्मदेव १८५।३ मरणाऽनन्तराऽक्षय राज १८६।२ पुनःपुनःप्रभुपृथ्वीपरिच्छेदन ९, निम्मदेव १८५।३ न- न्दनतोगनाथ १८।१ विभागप्राप्तपितृपदनवग्रामपुरस्वामितासमा-

त्र में राज्य नहीं मिलने से अक्षयराज आदि तीन बडे भाइयों का बुन्दीनगर और गढ आदि को हठ सहित दवाना, चमार के वशीभूत होकर राजापन को अस्वीकार करके उदयसिंह का बुन्दी, कोटा और गैणोली के पुर और ग्रामों के समूह को लेना, युवावस्था में बुन्दीश की अत्यन्त क्षमा को जानक र पृथ्वी के लोभी अपने और पराये उमरावों का अपनी अपनी सीमा को वढाना, दूसरों का अपूर्व लाभ देखकर उलटा उस प्राप्ति के विरुद्ध भीष्म की ग्रहण कीहुई धुर को धारण करनेवाले राजा के काका बडे उदार मनवाले नि म्मदेव का युद्ध में शस्त्रों के घाव पाये पीछे दूसरे वर्ष के अन्त समय में शरी र छोडना, राणा कुम्भकर्ण का अमरगढ आदि बुन्दी की सीमा के प्रदेश को लेना, खीची और डोड दोनों शत्रुओं का बुन्दी के वशवर्ती आटोण और र- हलावण आदि प्रान्तों का मालिक होना, इकट्ठे मिलेहुए प्रांत को और उणि थ्यारा आदि नगर के प्रदेशों को मन से आधा आधा बांट कर दम्भिया और तो मर दोनों शत्रुओं का नैणवा नगर को सेना से घेरना, उसके किलादार बुन्दी श के मामा दहड़ जैत्रमल्ल का उन शत्रुओं की सेना को भगाना, रोकनेवा ले निम्मदेव के मरे पीछे अक्षयराज का वारम्वार मालिक की भूमि को काट

सादन १०, विभ्रष्टबुन्दीराज्याऽवशिष्टरक्षकसमालोचितदेश१ काल २ ज्ञातगतदौर्लभ्यतत्तदर्थप्रत्यर्पितमनोमालाऽवमतस्वस्वसामन्तसमाक्रान्तप्रान्तस्वामिधर्मसेवनसमर्थसारणा १८६।१ जैत्र १८५।१ सम्मतिसङ्गतप्रतिभा १ प्रगल्भमन्त्र २ महोदधिशाकुन ३ सुज्ञानवर्तिष्यमाणा४दूरदर्शिमहामात्यमन्त्रिमणिवणिक्क्षेत्रल१बन्धुत्रय३वर्जितविमुखीभूतसमस्तस्वभटवर्गस्वामिसभासमानयन ११, तिरस्कृताग्राह्यलब्धिलोभलाल १८४।२ निम्म १८५।३ जाबदु१८५।२ सन्तानस्वामिसेवासमुत्कर्षसूचन १२, वैश्यसचिवोदय १८६।३ परिच्छिन्नपूर्वस्वपितृप्राप्तमक्षिपदद्दुर्ग१प्रतिनिनीषुजैत्रसिंह १८६।३ निवारण १३, मन्त्रिराजक्षेत्रल १ सम्नृपानङ्गीकारसमयसीमासमीप्यवर्तिसामन्तापत्यचालुक्यी १८६।१ राष्ट्रकूटी १८६।२द्वितीयाद्वय २नरेन्द्रभारमल्ल १८६।४ परिणायन१४, नृपाऽनुजसोरड १८६।५ राजकोटनामग्रामैकग्रामणीचालुक्यरत्नसिंहकन्याश्यामकुमारी

ना, निम्मदेव के पुत्र लोगनाथ का विभाग में आयेहुए पिता के स्थान नवगांवां नगर का स्वामिपन प्राप्त करना, बुन्दी के राज्य को भ्रष्ट हुआ देखकर बाकी के राज्य की रक्षा करने के लिये देश काल को समझ, गयेहुए का मिलना दुर्लभ जान, जो जो प्रांत जिन जिनने दबाये थे उन उनको वे वे प्रांत केवल मन से अपमान कियेहुए अपने उमरावों को पीछे देकर स्वामि धर्म का सेवन करने में समर्थ सारण और जैत्र की सम्मति के साथ बुद्धि में प्रबल, सलाह के महा समुद्र, शकुन के श्रेष्ठ ज्ञान में वर्तनेवाले, दूरदर्शी, प्रधान मन्त्रिशिरोमणि वैश्य क्षेत्रल का तीन भाइयों को छोडकर बाकी के विरूद्धहुए सब उमरावों के समूह को स्वामि की सभा में लाना, अग्राह्य लाभ के लोभ का तिरस्कार करके लाल, निम्मदेव और जाबदू की सन्तान का स्वामि सेवा में वडप्पन दिखाना, वैश्य सचिव का पहल अपने पिता को मिलेहुए उदयसिंह के छीनेहुए मक्खींदगढ को पीछा लेने की इच्छावाले जैत्रसिंह को मना करना, बराबर के राजाओं के अस्वीकार करने के समय में मन्त्रिराज खेता का अपनी सीम के समीपवर्ती सामन्त की पुत्री चालुकी और दूसरी राठोड़ी दोनों से नरेन्द्र भारमल्ल का विवाह करना, राजा के छोटे भाई सोरड का राजकोट नाम एक ग्रामकेपति सोलंखी रत्नसिंह की कन्या श्यामकुमारी से

उन्ह रीझि दै गढके बली बसु डारि साहस ओटतैं ॥१८॥
जरि वस्त्र ×स्रावकदेवव्है कति मिच्छ बैठत जीवदै ॥
गढके प्रबीर तिन्हैं सिराहन ÷चच्छु चाहन ग्रीवदै ॥
उफनाइ साहस साह यौं गरदाइ दुर्गहिं अंकुर्यो ॥
जिम मन्निकैं महिमान रानहु खान१पान२किलैं जुर्यो॥१९॥

॥ षट्पात् ॥

रानकुमर १ अरिसिंह बीर कोउक वह बल्लन २॥
हिंगुलु ३ नाम सु हड्ड हुलसि इतिमुख अति हल्लन ॥
कढि कढि जाँमिनिकाल बिरचि सौप्तिक बहुबारन ॥
सेना मथि सहसाहि हनतहुव जवन हंजारन ॥
लग्गे सिपाह जिम जिम लुपन तिमतिम साहस साहतकि॥
नवनव अनीक रक्खत निधँत सनैसनै ढिगहुव सरकि॥२०॥

॥ दोहा ॥

सम्पसमय मिच्छन प्रसरि, दहबट्टन करि देस ॥
पिहित बहत अन्नादि पथ, अटकिय प्रहँत असेस ॥ २१ ॥
श्रीलग्राम १ पुर २ लुट्टि सब, जिन रचि प्रलय प्रजारि ॥
आढ्यजनँन कारा अटकि, दिय दुकाल भयकारि ॥ २२ ॥
वित्ततलखि अन्नादि वल, प्रजा रुदन दुख पाइ ॥

रीझ देते हैं ॥ १८ ॥ कितने ही म्लेच्छ वस्त्र जल जाने से × श्रावकों (श्रावगियों) के देवता (पार्श्वनाथ) की भांति नग्न होकर, मर कर बैठते हैं. जिन को अपने ÷ नेत्रों से देखने की इच्छा से गढ के वीर लोग प्रशंसा करने को अपनी गर्दन निकालते हैं; इसप्रकार हठ ग्रहण करके बादशाह गढ को घेर कर १ खड़ा हुआ, तिस प्रकार इनको महिमान जानकर महाराणा ने भी किले में खान-पान इकट्ठा किया ॥ १९ ॥ रणतभँवर की सहाय पर जानेवाला 'बल्लन' नामक २ कोई वीर जिसकी जाति का पता नहीं ३ इत्यादि ४ रात्रि के समय ५ रतिवाह रचकर ६ सेना ७ निश्चय ॥ २० ॥ ८ फैल कर देश को बरबाद किया ९ गुप्त मार्गों से अन्नादिक सामग्री जाती है १० विशेष हत करके सब रोक दिये ॥ २१ ॥ ११ धनवान् १२ धनवान् लोगों को १३ कैद

१८६।२पाणिग्रहण१५, विवाहशकज्ञापनाऽनन्तरानूढलोहठ १८६।६कर्मचन्द्र १८६।७कैशोर्यसंस्थासूचन १६, भूभुजङ्गभारमल्ला१८६।४ऽपत्यचतुष्क ४ सम्भवाऽवसरकुमारनारायणदास १८७।१ नरबद १८७।२ कन्यामदनकुमारी १८७।१ तोकत्रय ३ चालुकी १ प्रसवन १ कुमारैकनरसिंह १८७।३ राष्ट्रकूटी २ जनन २ विख्यापन १७, परिणीतचालुकी१कशोण्ड १८६।५ सन्तानाभावसमर्थन१८, मण्डपपुरराजराष्ट्रकूटयोधराजनिजनामाङ्कनवीनयोधपुरनामनगरनिर्म्माणसम्वत्सरसंख्यान १९, योधराजपुत्रबीक १ बीद २सोदरद्वय २ जाङ्गलप्रदेशप्रस्थान २०, तत्तृतीय ३ पुत्र देवीदास ३ हड्डवतीजनपदसमीपखिच्चिवाटदेशाधिपतिखिच्चिराजाश्रितीभवन २१, तद्भाविपौत्रपृथ्वीराजवंश्याद्यावधिगागरणीपुरप्रवर्तमानदेवीदासपौत्रराष्ट्रकूटकुलप्रभुकनिष्ठभ्रातृश्वाशुर्यसम्बन्धितास्फुटीकरण २२, चित्रकूटायत्तामरदुर्गाध्यक्षबुन्दीसीमान्तरविप्लव–

।विवाह करना, विवाह के सम्वत् की सूचना किये पीछे विना विवाहे लोहठ और कर्मचन्द्र के किशोर अवस्था में मरने की सूचना करना, भूपति भारमल्ल के चार सन्तानों के जन्म के समय कुमार नारायणदास, नरबद और कन्या मदनकुमारी तीनों बालकों का चालुकी से प्रकट होने और एक कुमर नरसिंह का राठोड़ी से जन्म होने की प्रसिद्धि करना, चालुकी को व्याहने वाले शौण्ड की सन्तान के अभाव को पुष्ट करना, मण्डोवर के राजा राठोड़ जोधा का अपने नाम से नवीन नगर योधपुर बसाने के सम्वत् की गणना करना,जोधा के पुत्र बीका और बीदा दोनों सहोदर भाइयों का जाङ्गल देश में जाना, उसके तीसरे पुत्र देवीदास का हाडोती देश के समीप खीचीवाड़ा देशके पति खीची राजा के आश्रित होना, उसके आगे होनेवाले पौत्र पृथ्वीराज का वंश इस समय तक गागरणी पुर में वर्तमान है उस देवीदास के पौत्र के राठोड़ कुल में प्रभु (रावराजा रामसिंह)के छोटे भाई के ससुराल के सम्बन्ध को स्पष्ट करना, चित्तोड़ के वशवर्ती अमरगढ के अध्यक्ष का बुन्दी की सीमा के भीतर लूट खसोट फैलाना, उसको मारने की इच्छावाले राजा के प्रस्थान को रोककर मन्त्रिराज के भेजेहुए उमरावों का कार्य के विना वि

विस्तरण २३, रुद्धतज्जिघांसुनृपप्रस्थानमन्त्रिराजप्रस्थापिताकृतकार्यविमुखभटवर्गप्रत्यागमन २४, शक्तित्रय ३ विहीननृपक्षमा १ दया २ गुणदोषीभावप्रकटन २५ मन्त्रिराजक्षेत्रल १ समुपेतसारणादिदायाऽष्टक ८ साधारणस्वामिनृपतानिर्वाहण २६ मष्टादशो १८ मयूखः ॥ १८ ॥

आदितः पञ्चषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६५ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

विधिविलासित जानैंन जग, रक्खैं हित अनुराग ॥
कति सुभांड १८६।४ लखि अब कहैं, भू रहिहै जो भाग ॥१॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अधिपहु मरन जात यह अक्खी, स्वामि सुभांड१८६।४करहु सवसक्खी
सिसुकी व्हैं न परख सब सच्ची, कति इम बत्त गई रहि कच्ची ॥ २॥
समरअग्रज १ हु अचल अनुज२सम, तदपि यहै दोउ२न अंतरतम॥
नृप१८६।४रन आनि बनैं तहँ निबहैं, सोंड१८६।४निजन दुखदूरहु नसहैं३
यातैं जबजब सचिव अटक्किय, तबतब तासकथित हित तक्किय ॥
नृप१को कथितहु अनुज२निबाहयो, सचिव मानि संकोचहु साह्यो॥४॥
जो नृप १ होतो अनुज २ सुद्ध जम, करतो तो मरि१मारि२कुलक्रम
नृप१रु सचिव२अब पाइ निर्यंत्रिक, धूनैं सिर मनमारि सदा धक॥५॥
मेवारन यह डँमर मचावत, आतिपुकार जनपैंजन आवत ॥
वनिक हुतो जब कछुक व्याधिवस, रन.खिन तब नृपकैं रचाइ रस॥

सुख होकर पीछा आना, तीन शक्तियों के विना राजा के क्षमा और दया गुण का दोष होना प्रकट करना, मन्त्रिराज क्षेत्रल सहित सारण आदि आठ भाइयों का साधारण स्वामि के राजापन को निबाहने का १८ अठारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १८ ॥ और आदि से १६५ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ साची ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ २ शासन करनवाले ३क्रोध ॥५॥ ४ ७

सेना सजि हंकिय दुव २ सोदर, पर्‍यो कलह थाँनाँपुर परिसर ॥
हिंडोली लुट्टन असहारे, मिले तत्थ जावत मेवारे ॥ ७ ॥
सुनिसारन१८६।१पहुँच्योवंसीसन,जैत१८५।१नपूगिसक्योखट६जोंजन
जो मगमाँहिँ सु संग तोग१८६।१भट, सत्रु मिलत बेढे अतिसंकट ।८।
दिन अवसेस रहत घटिकादस१०, रच्यो प्रबीरन रन समुचित रस॥
मिलिमैंननइकसहँस१०००चमूउत,सहँसच्यारि४००००सुभटनइतसंजुत
दिट्ठिजुरत बज्जिग असि दारुन, रनहुव अचल हट्ठ कोपारुन ॥
फैर इक्क १ तुपक्कन कछु फुट्टे, खापन तदनु कालअहि खुट्टे ॥१०॥
मिलताहिँ बिकल भजे खल मैनैं, प्रचुर सहे न गये असि पैनैं ॥
भजत गर्मार लगे अरि भज्जन,लुटन१पट्ट जुट्टन२जिन्ह लज्जन।११।
दब्बतही एडिन इन्ह दोरत, एहु मुरे कति लज्ज अहोरत ॥
बज्ज्योप्रखरतहाँबलिअसिवर,परिगाबिभिन्नलुत्थि लुत्थिनपर ।१२।
आयउ काम गोरि गिरधर१इत,जु लखि सोंड पहुँच्यो घाटिपै जित॥
बाहुलँ तस तरवारि बिदारिय,याके असि तस सीस उतारिय ।१३।
सुंदर १ गोर गोरि अरि सत्तल २, मोरयो गिरधर बैर महाबल ॥
बंसीधर १कूरम सुत हय बढि,चपल घाटिपति बाह लयो चढि।१४।
माधव१भ्रात हुल्ल हरि२मार्‍यो, बलिय तोग१तस बाजि बिदार्‍यो॥
लुंटाक१रुसत्तल२हरि३लोटत,घोटकजुग२मोटकपगघोटत ॥१५॥
पुनि मेवारभटन छुट्टे पग, मारे इन्ह बहु पहुँचि पहुँचि मग॥
धीर१सलह२सारन३ अग्गैं थँपि, अहँ मग ठट्ठे जय आलँपि।१६।
रिपु बिच परे मरे बहु मारत१, मरे कतिक२कातर मातर मत ॥

॥ १ ॥ थाणापुर के १समीप की भूमि में ॥ ७ ॥ २ घेरे ॥ ८ ॥३ मीणों की ॥ ९ ॥ ४ क्रोध से लाल . म्यानों से ५ काले सर्प के समान खड्ग निकले ॥ १० ॥ ६ मीणे ७ तीक्ष्ण ८ मूर्ख ९ एडियों को दबाते हुए अर्थात् साथ के साथ दौड़े. लज्जा से १० फेरे हुए ११तीक्ष्ण ॥ १२ ॥ १२ घाड़ायतियों का पति जिधर था. १३बाहुत्राण ॥१३॥१४॥ १४लूटनेवाले ॥ १५ ॥ १५ दौड़कर. अपनी विजय १६कहकर ॥ १६ ॥

गाढचकितअरिअट्ठ८लयेगहि,बुल्ल्योनृपअवचलहुविजयवहि॥१७॥
जंपिय सोंड१८६।५नैर प्रभु जावहु, सेना बलि निजसंग सिधावहु॥
हम सतपंच५००अमरगढ हंकहिं,इक्क जो जतन बनैं तो अंकहिं[२]॥१८॥
जतनकोनसारन१८६।१खिजिजंपिय, पहुअनुजांतसुसुनतपयंपिय॥
तुम१हम२चलिगढद्वारनिसातम,कैदिनअरिनखुलाइ अररंकम॥१९॥
पैठैं सहज दुर्ग निज पावैं, नृप आगम इम सफल बनावैं॥
असथप्पिसारन१८६।१मन्नीयह,आनिइतैंजेत१८६।१हुपहुँच्योवह॥२०॥
मंत्र सु मान्नि चलन किन्नौं मन, नृप तब कहिय हमहु जैहैं नन॥
जैत१८५।१ कह्यो इतनों दल जावैं,नृपको हठ तब हमहिं नसावैं॥२१॥
तदपि न नैंक महिप मन्नी तब, जैत सबन पहुसंग दयो जब॥
संग न जानलगो हठि सोहू, तिन दिय सपथं संगकिय तोहू॥२२॥
काका१जाइ भतीज३मरे कलि, विजयभये लै जस अछुत्त बलि॥
यह न उचित हमरेमन ऐहैं, जदपि सबन टारे टरि जैहैं॥२३॥
भनि इम जैत १८५।१मुरयो लै भूधंन, आये सब निजनाह आयतंन
भट सतपंच५००सज्जि उत भू पर, सारन १८६।१सोंड१८६।५तोग-
१८६।१ अग्रेसर॥२४॥
अरि जे अट्ठ८ गहे कातरं अति, पटादैन इततैं कहि तिन प्रति॥
पहुँचत अमरदुर्ग पुर परिसरं, वढे अग्ग तजि हयन बीर बर॥२५॥
अरि अट्ठ८न कटिपटं गहि सह असि, हिय जमदंड्ढ छुवात चले हसि॥
॥२६॥
जंपिय ढिग अप्पन पहुँचे जब, तुम इम श्रामितं देहु हेला तब॥
हनन आत हड्डन हम हारे, अररंखुल्लि लेहुव रखवारे॥२७॥

१प्राप्त करके॥१७॥२हमारे नाम से जानाजावे ऐसा करेंगे॥१८॥ राजा के३छोटे भाई ने४कहा५किवाड़ खुलाकर॥१९॥६कन्धा थापकर॥२०-२१॥७सौगन देकर साथ किया॥२२॥ ८युद्ध में ९ अछूता (अपूर्व) यश॥२३॥१०राजा को११स्थान पर॥२४॥ १२ कायर१३अमरगढ के १४समीप भूमि॥२५॥१५कमरबन्ध (पटुके) को पकड़ कर १६ कटार॥२६॥ १७थकेहुए १८ किवाड़ खोलकर॥२७॥

चविहो इम न तो सु मन चुरिहैं, मोरि असु८न लुट्टत बसु सुरिहैं ॥
पटा कथित नाहिंतो तुम पैहो, बनि हमरे सुख आयु बितैहो ॥२८॥
इमकहि धरि मेवार पग्ग इन, डिंगरहि बंधि सिसिर ऋतु डंढिन ॥
तमीरहत इक१जाम निबिडतम, दुर्गद्वार पहुँचे दायक दम ॥ २९॥
कथितरीति अट्ठ८न हेलाकिय, वदलि गिरा एकाति तिम बुल्लिय ॥
जामिक सुनि प्रतिहार जगायो,अक्खिय तिहिंगढपतिनन आयो॥३०॥
किम ताबिनु अब खुलैं किंवारहु, प्रातहि सब तससंग पधारहु ॥
गढपति हनिय कह्यो तिन्ह गाढें,वच कतिक हम तिन्ह अबबाढें॥३१॥
लाइ निसैंनिन गढ अरि लैहैं, अंदर जो न लरन हम ऐहैं ॥
विक्खि निजन तिन अररै बिछोरे, द्वारखुलत प्रबिसे भट दोरे॥३२॥
कछुक हुते रच्छक ते कट्टिय, द्वार किंवार पैठिगढ दट्टिय ॥
भटनघुराइअभयजयभेरिय,फवतसुभांड१८६।४आनपुनिफेरिय।३३।
अट्ठ८न तिन इततैं कछु आदर, पायउ इक१इक१ग्राम बचनपर ॥
बुंदिय कहि लिय दूत बधाई, पुहवि उचित जित्ते तिन्ह पाई ॥३४॥
किल्लादार तत्थ तोग१८६।१हि किय,सारन १८६।१ सोंड १८६।१
बुलाये बुंदिय ॥
तोग१८६।१सुभटसतपंच५००सहिततिम,कियविप्लुतमेवारमुलकजिम
भिल्लहड़ा१लग लुट्टि रानभुव, धनिक बनिक गहि वहु आनैं धुव ॥
मंडनदुर्ग२सहित पुरमंडल३, बिंझोली ४ वेगम ५ लुट्टिय बल ॥३६॥
सत्रु धरनि इम धुम्मि निम्म१८५।३सुव, हाहाकारकार दुजननहुव॥
गढचित्तोर पुकार असह गत, कुंभरान सज्जिय जन कुक्कत ॥३७॥

१धन लूटकर. पहिले २कहे अनुसार ॥२८॥३मार्ग में ही ४दाढियें बाँधी. एक प्रहर ५.रात्रि बाकी रहते ६ अत्यन्त अन्धेरे में ७ दण्ड देनेवाले ॥ २९ ॥ ८आवाज बदल कर ९ सिपाही ने १० द्वारपाल को ॥ ३० ॥ ३१ ॥ १२अपने लोगों को ११ देखकर १३ किवाड़ खोलदिये ॥ ३२ ॥ पीछे किवाड़ १४ लगादिये १५ विजय के नगारे बजाये ॥ ३३ ॥३४॥ १६ उपद्रव युक्त ॥३५॥१७ धनवान् बनियों को ॥३६॥ निम्मदेव का१८पुत्र हाहाकार१९करानेवाला॥३७॥

॥ षट्पात् ॥

रायमल्ल रानसुत कहिय हमछत प्रयान किम ॥
देहु हमहिं आदेस[1] जित्ति हड्डन अग्गैं[2] जिम ॥
अमरदुर्ग[3] अपनाइ हड्ड तोग १८६।१ हिं संगरहनि ॥
अहैं लहि जस अतुल तात मानस[4] सम्मद[5] तनि ॥
तस अरज एह मुकलतनय[6] सुनि सिरहि ग्रह रक्खि सुव ॥
करि छल अनीक इक१ठाम करि हड्डन हनन प्ररुष्टहुव ॥३८॥

॥ दोहा ॥

थोरोथोरो थप्पिकैं, मंडनगढ दल मेलि ॥
कुंभ छन्न प्रस्थानकिय, हनिबे हड्डनहेलि ॥ ३९ ॥
कुमत रान पतनी कह्यो, अहो कब प्रभु अत्थ ॥
अक्खिय अहाँ हड्डहनि, तीज ३ श्रावनिकैं तत्थ ॥ ४० ॥
दंपति २ कै हो प्रेमदृढ, परिवृढ[11] इम अतिप्रीत ॥
कलितै[12] सपथ[13] पुनिपुनि कह्यो, तीज ३ न होहिं अतीत[14] ॥४१॥
रानी अक्खिय रानसौं, किन्न सपथ मम कानि ॥
तो मृतगिनि[15] जरिहौं तुमहिं, जत्थ अनागत[16] जानि ॥ ४२ ॥
पतनीप्रति करि इम सपथ, प्रस्थित[17] निस प्रच्छन्न[18] ॥
हयनडाक इत आइ हुव, सूचितै[19] गढ संपन्न[20] ॥ ४३ ॥
कुहकभाव करि कुंभको, प्रकट न भो प्रस्थान ॥
तोग १८६।२ भीर करतो नतो, चतुरंगहिं चहुवान ॥ ४४ ॥

---

१ आज्ञा २ आगे जीते थे इसी मुवाफिक जीतकर ३ अमरगढ. पिता के ४ मन में ५ हर्ष फैलाकर ६ मोकल के पुत्र (महाराणा कुम्भा) ने ७ पुत्र को ॥ ३८ ॥ हाडों के ८सूर्य को मारने के लिये ॥३९॥ राणा के ९चलते समय १० सावन की तीज पर ॥ ४० ॥ इस कारण से ११ अधिप ने १३ सौंगन १२ करके १४ व्यतीत नहीं होवेगी ॥४१॥ १५ मरेहुए जानकर १६नहीं आया जानकर ॥ ४२॥ १७गमन किया १८चुपके १९ऊपर जतायेहुए मांडलगढ में २०शामिल ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

कछुकहुँकछुकहुँ इम किपउ, इतउत थित दल अद्ध[1] ॥
मंडनगढ तिम नेम[1] निज, बलजोरयो हठबद्ध ॥ ४५ ॥
कामिनिअग्गैं सौंहकरि, अब मंडनगढ आइ ॥
चाहत जय व्हाँतैं चल्यो, स्वीयनें[2] गम्य[3] सुनाइ ॥ ४६ ॥

॥ षट्पात् ॥

अमरदुर्ग उद्देस समय ग्रीखम सायंतन[4] ॥
करि दल सब एकत्र रान हंकिय इक्कत रन ॥
अखिलरत्ति[5] बहि अध्व[6] पाइ उद्दिष्ट प्रभातहि ॥
बढ्यो तोपन व्रात जोरि जंजीरन जातहि ॥
पठई छ६ तोप भूपहु प्रथम तोग १८६।१ अमरगढ सज्जि तिन ॥
रजगुन उफान अंदर रुप्यो, कंदरजिम केहरि कठिन ॥ ४७ ॥
चउदह १४ दिन धमचक्क तोग १८६।१ मंडिय दारुनतम[6] ॥
नदये आवन निकट कुंभ जोधन रोधनक्रम ॥
सारन १८६।१ कै जिहिं समय जग्यो बिधिबस संतत[7] ज्वर ॥
मारि असिन मक्खीददुर्ग जैत १८५।१ सु लिय दुद्धर ॥
लाल१८४।१सुत गत्त[8] जिहिं रन लगिय दुसह हेति[9] आघात दुव २॥
भंजिकैं तदपि उद्दल १८६।३ भटन हइ बिजय जसहेतहुव ।४८।

॥ दोहा ॥

लग्गो जावन सोंड १८६।१ लघु, दै तँहँ सपथ निदान ॥
वरज्यो निठि सु नृपर चनिक२, अक्खि तोग १८६।१ आव्हान[10]।४९।

॥ षट्पात् ॥

दल तोग १८६।१ हु इम दियउ लरहिं द्वापर[11] जिन लावहु ॥
पै उपहार[12] अनष्ट प्रचुर अन्नादि पठावहु ॥

१आधी सेना मांडलगढ में रक्खी ॥४५॥२अपने लोगों को३जाने की जगह सुनाकर ॥४६॥४सायंकाल के समय. सब रात्रि५मार्ग में चलकर॥४७॥६अत्यन्त भयंकर७निरंतर८शरीर में९शस्त्र के महार ।४८।१०बुलाना।४९। ११संदेह १२सामग्री

पत्रलिखित पठयेहु पंरन लुट्टे लखि पद्धति ॥
वारवार सुहिवनत गिनैं सव पंथ रुद्धगति ॥
पठई लिखाइ तव तोग१८६।१प्रति निरखि वसैर आवहु निकसि ॥
सुनिसोक१त्रपा२वहिनिम्म१८५।३सुंवहुवधुवरनजुज्झारहसि ।५०।

॥ दोहा ॥

प्रथम अठ ८ जे लिय पकरि, गिनि निज अप्पिय ग्राम ॥
कढ्ढि छिन्न ते मुक्कले, बुंदिय सुख विस्राम ॥ ५१ ॥
हल्लू १८२।१ कुल संतान हे, मंडनगढ हदमाँहिं ॥
क्रमत कुंभ हड्डन हनन, निखिल रहे तँहँ नाँहिं ॥ ५२ ॥
आइ तोग१८६।१ प्रति कहिय इन, आवन रानउँदंत ॥
पुव्वहि किय अवधान पटु, अद्धरजानि खिन अंत ॥ ५३ ॥
कड्डनलग्गो तिनहुकों, स्वीकृत वसु ८ अरिसंग ॥
हड्ड हमहु उन उच्चरिय, रचिहैं प्रभुमत रंग ॥ ५४ ॥
सपथ करिहु न कढ समुझि, बीच भटन वैठाइ ॥
सप्तअग्ग पंचहि सत ५०७ न, पूजे भुज महपाइ ॥ ५५ ॥
पट १ भूखन २ आयुध ३ प्रमुख, अप्पिय सबनहि आनि ॥
केसर रंग दुकूल करि, मरन सज्यो सुभमानि ॥ ५६ ॥
रमत असिन मारत १ मरत २, जेहाँ काढि तो जोग्य ॥
रहाँ नतो ढिग रानके, भव्य त्रिदिवं चहि भोग्य ॥ ५७ ॥
हड्डनकुलहिं कलंक व्हे, जव छन्नैं भजिजाइ ॥
तथा वनैं किम तोग १८६।१ सों, लज्ज प्रिया हियलाइ।५८।
इम हढकरि खट ६ तोप वे, गड्डि धरनि कहुँ गूढ ॥

---

१ शत्रुओं ने २ मार्ग में ३ समय देखकर ४ लज्जा ५ पुत्र ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ६ माण्डलगढ की ॥ ५२ ॥ राणा के आने का ७ वृत्तान्त ८ सावधान होने में ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ९ वस्त्र ॥ ५६ ॥ १० स्वर्ग ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

करि गंगोदक न्हान क्रम, रंजिय प्रमद प्ररूढ ॥ ५९ ॥
अहँ पहिलैं किन्नौं असन, अनसनैं सबविधि अज्जं ॥
लग्गे दिनकी संझलग, सभटँ भयो रनसज्ज ॥ ६० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पञ्चमराशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ वीज्यवर्णनर्वीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेंद्रसुभाण्डदेव १८६।४चरित्रे संदिह्यमानस्वप्रजाऽवनसामर्थ्यमहीप १ तदनुज २शौर्यमहदन्तरद्योतन१, स्वामि१सचिव२ संरोधन्हीणशौराडदेव१८६।५ वैमनस्यविख्यापन २, श्रुतस्वदेशराणापक्षीयवर्द्धितविप्लुतपूत्कारनिश्चितरुङ्मांद्यवणिक्प्रधानपारवश्यविप्लववर्द्धियुयुत्सुसन्नद्धसैन्यशौराड१८६।५स्वाग्रजप्रस्थापन ३, बुन्दीवरूथिनी १ हिंडोलीशृगालीश्रान्तप्रतिगम्यमानलुण्टाकगण २ स्थानाख्यपुरपरिसरप्रधनप्रारम्भण ४, प्रेक्षितपलायमानस्वसहायीभूतान्त्यजाविद्रुतवैरिबलभूयोविनिवर्तन ५, परपक्षयोधान्तर १ बुन्दीवीरगौडिगिरिध

१गङ्गाजल से ॥५९॥ प्रहिले२दिन३निराहार४आज५संध्या पर्यन्त६वीरों सहित

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखा की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेन्द्र सुभाण्डदेव के चरित्र में अपनी प्रजा की रक्षा करने में संदेह युक्त सामर्थ्यवाले राजा और राजा के छोटे भाई की वीरता में बडा अन्तर होने की सूचना करना, स्वामी और सचिव के रोकने से लज्जित शौराडदेव के उदास होने की प्रसिद्धि करना, महाराणा के पक्षवालों का अपने देश में उपद्रव मचाने की पुकार सुन, बनिया जाति के प्रधान को रोग के वश जान, उपद्रव बढानेवालों से युद्ध करने की इच्छावाली सेना को सज्जीभूत करके शौरड का अपने बडे भाई राजा को रवाना करना, बुन्दी की सेना का हिंडोली को लूटकर पीछे जानेवाले थकेहुए लुटेरों के समूह से थाणा नामक पुर के पास की भूमि में युद्ध प्रारम्भ करना, देखते ही भगनेवाले अपने सहायक अन्त्यजों के भगते ही वैरियों की सेना का पीछा लौट जाना, शत्रुओं के वीरों में से किसी सुभट का बुन्दी के वीर गौड़ गिरधर को मारना, शौरड का उस धाड़ायतियों (डाकुओं) के पति

र २ संहरण ६, शौगड १ तद्वाटिधरमुख्यवैरि २ व्यापादन ७, गौडसुन्दरदास १ पारिपन्थिकसत्तल २ समापन ८, प्राप्तसंस्थार्वे कूर्मवंशीधर१ डमरकरस्वामिसप्त्या २ रोहण ९, नवरंग १८३।२ वंशीयमाधव १ प्रतियोधिहुल्लहरि २ हनन१०, निम्मदेव १८५।३ नन्दनतोगनाथ १ तद्वाजि २ विध्वंसन११, पलायितपरबलनासीरप्राप्तकार्मध्वजधीर १ प्रमारसल्ह २ हड्डसारण ३ प्रत्यनीकप्रतिरोधन १२, शातितानेकशात्रवबुन्दीवीरवर्गलुण्टाकभटाऽष्टक ८ निग्रहण १३, सार्थीकृतजैत्र १८५।० शिक्षा१शपथ २ स्वीकारितसद्मसरणिप्रतिमोटितवाहिनीकबुन्दीशसहायसङ्गीभूतशूरशतपञ्च५०० कसन्दानिताऽभियात्यऽष्टक ८ संगतिच्छलामरदुर्गनिनीषुविन्यस्तमेदपाटदेश्यवेशोष्णीषपङ्गीभूतदत्तलोभ १ भय २ व्याजवाग्विवक्षितसंरुद्धसपत्नशोगड १ सारण २ तोग ३ त्रय ३ याम १ यामिन्यवशिष्टसन्तमससमयसमाक्रमिष्यमाणदुर्गसमीपसंक्रमण१४,सन्दानितासहनकपटसंलापितदुर्गद्वाःस्थ १ यामिका २ ऽपावृतवल

मुख्य वैरी को मारना, गौड़ सुंदरदास का शत्रु सत्तल को मारना, घोड़े का नाश होने पर कछवाहे वंशीधर का धाड़ायतियों(डाकुओं) के पति के घोड़े पर चढना, नवरङ्ग के वंशवाले माधवसिंह का शत्रु हुल्लजाति के क्षत्रिय हरि को मारना, निम्मदेव के पुत्र तोगनाथ का उसके घोड़े को मारना, भगेहुए शत्रुओं के आगे जाकर राठोड़ धीर, प्रमार सल्ह और हाडा सारण का शत्रुओं को रोकना, अनेक शत्रुओं को मारकर बुन्दी के वीरों के समूह का लुटेरों के आठ भटों (वीरों) को पकड़ना, शिक्षा और शपथ से जैतसिंह को साथ दे, सेना को पीछी लौटाय, घर के मार्ग को पीछा जाना स्वीकार करनेवाले बुन्दीश की सहायता के लिये इकट्ठे हुए पांच सौ वीरों से कैद कियेहुए आठ शत्रुओं को साथ लेकर छल से अमरगढ को लेजाने की इच्छा से मेवाड़ देश का वेष और पगड़ी पहनायेहुए, पैदल कियेहुए, लोभ और भय दियेहुए कैद कियेहुए शत्रुओं से कपट की वाणी बोलना स्वीकार कराकर शौड, सारण और तोग इन तीनों का एक प्रहर रात्रि बाकी रहते अन्धकार के समय में गढ लेने की इच्छा से उस(गढ)के समीप जाना, कैदियों की असह्य कपट की वाणी से द्वारपाल और चोकीदार के किवाड़ खोलने पर बुन्दी की फौज

भट १ अंत्रिन रानहिं भनिय, रतन १८३ देहु पकराइ ॥ २३ ॥
आनन इम छन्निय अरज, रान न मंन्निय रंच ॥
सरनग संटै भुव १ रु सिर २, चिंतिय दैन प्रपंच ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

अंगॅज तेरह१३ अनुज अठ८ निज तिम दुव२ नत्तिय ॥
बल्लन१ बलि वह बुल्लि घिरन पहगति जिहिं घत्तिय ॥
हिंगुलु३ नाम सु हड्ड भ्रातजाँमात महाभट ॥
इम स्वकीय भट अखिल बिरचि एकल मंत्रबट ॥
सूचिय न दैहिं हम्मीर१८२सुत घनरस्स इम दिय सिर१घर२न
वदि यह रु सज्ज रक्खन बिरुद लक्खन हुव बाहिर लरन ॥२५॥

(दोहा)

भनत किते हम्मीर१८२भव, दियउ कढ्ढि कहुँ दूर ॥
किते रानसकुटुंबके, संग जंग म्रत सूर ॥ २६ ॥
अज्जन लक्खन सहित इम, मिच्छन लक्खन मारि ॥
बीरसयन सुत्तो बिदित, रानौं लक्खन रारि ॥ २७ ॥
अंगज बारह१२ बसु८ अनुज, पौत्र उभय२ लहि पास ॥
साह निकट लक्खन सुपहु, रमत परयो रन रास ॥ २८ ।
जिहिंरन पोढे बिदित जग, असिय चयारि८४ नृप अज्ज ॥
अवनि लोभगिनि रान इम, लुप्पी नन कुललज्ज ॥ २९ ॥
लक्खनको इक पुत्र लघु, अजयासिंह१ अतिबीर ॥
बहुन मारि लहि छतें बच्यो, धनी हुकम वहि धीर ॥ ३० ॥

करके उस बुरे समय में भय दिया ॥२२-२३॥ १ अन्य लोगों ने इस प्रकार गुप्त अर्ज की. २ शरण आयेहुए के ३ बदले में (एवज) ॥ २४ ॥ ४ पुत्र ५ पोते ६ फिर ७ भाई का जमाई ८ सलाह के मार्ग से, हमने शिर और घर को ९ पानी दिया ॥ २५ ॥ १० हम्मीर चहुवाण के पुत्र (रत्नसिंह) को दूर निकाल दिया, और कितने ही कहते हैं कि वह वीर युद्ध में राणा के कुटुम्ब के साथ मारागया ॥२६॥ लाखों ११ आर्यों के साथ लाखों म्लेच्छों को मारकर ॥ २७-२८ ॥ १२ आर्यराजा ॥ २९ ॥ १३ घाव पाकर ॥ ३० ॥

जबुन्दीवलविशनं १५, श्रुतशातितत्तत्यशत्रुवर्गसंरुद्धाऽष्टक ८ संप त्त्नार्थसमर्पितैकैकग्राम १ ग्रामदुर्गाक्रामकस्वकीयसामन्तसंघाविहि तोचितप्रसादतत्कोट्टाध्यक्षीकृततोग १८६।१ मूर्भीभुजंगभारमल्ल १८६।४ शौगड १ सारण २ बुन्दीप्रत्याकारण १६, पुनःपुनर्लुण्टि तमेदपाटजनपदपूर्ग्राम २ प्रकरस्वदुर्गसमानीतानिगडितानेक धनिकवणिग्जनतोग १८६।१ त्रस्तप्रजाप्रभुपार्श्वपूत्करण १७, वा रितसन्निनत्सुस्वसूनुराजमल्लस्वयमभिषिषेणयिषुराणाकुम्भकर्ण १ स्वकीयसहधर्मिणी २ समक्षश्रावणीकतृतीया ३ समयप्रत्यागमन सन्धास्वीकरण १८, प्राणप्रियप्रत्यनागमप्रेष्टापावकप्रवेशप्रतिश्रव ण १९, मण्डनदुर्गसम्मेलितनानापद्धतिप्रस्थापितसमस्तसैन्यसंगत सन्नद्धप्रच्छन्नप्रस्थितकुम्भकर्णाऽमरदुर्गवेष्टन २०, प्रारब्धप्रगुणीकृ तप्रभुप्रेषितषड्नालीयन्त्रयुद्धतोग १८६।१ चतुर्दश १४ दिनावऽ धिसपत्नसैन्यसमीपसंक्रमसंरोधनं २१, तत्समयसारण १८६।१ वि

का घुसना, वहांवाले शत्रुओं को मारकर पकड़े हुए आठ शत्रुओं को एक एक ग्राम देकर गढ लेनेवाले अपने वीरों के समूह को उचित पारितोषिक देकर उस कोट (गढ) का अध्यक्ष तोग को बनाकर राजा भारमल्ल का शौण्ड और सारण को बुन्दी बुलाना, बारम्बार मेवाड़ देश के पुर और ग्रामों को लूट करके अपने गढ में लाकर अनेक धनवान् बनिये लोगों को कैद करने से तोग से डरी हुई प्रजा का अपने स्वामी के पास पुकार करना, गर्जना करतेहुए अपने पुत्र रायमल्ल को रोककर, स्वयं युद्धयात्रा की इच्छावा ले राणा कुम्भकर्ण का अपनी स्त्री के आगे श्रावण की तीज के समय पीछा आने की प्रतिज्ञा स्वीकार करना, प्राणप्यारे पति के नहीं आने पर प्या री का अग्निप्रवेश की प्रतिज्ञा करना, मांडलगढ में शामिल कीहुई अनेक मार्गों से भेजी हुई समस्त सेना सहित सज्जीभूत होकर छुपके से प्रस्थान करनेवा ले कुम्भकर्ण का अमरगढ को घेरना, अपने स्वामी की भेजीहुई भाग्य से सफलहुई छः तोपों से युद्ध करके चौदह दिन पर्यन्त शत्रु सेना के समीप आने को रो कना, उस समय सारण के विषम ज्वर से रोगी होने की सूचना करने के सा थ शस्त्र के दो प्रहार पायेहुए जैत्रसिंह का अपने पहिले के मक्खीदगढ को लेकर उदयसिंह की सेना को विजय करना, शौण्ड की युद्धयात्रा को रोक,

पमज्वरापाटवप्रख्यानपूर्वकप्राप्तप्रहरणप्रहारयुग्म २ प्रतिनीतस्वकीयपूर्वमन्त्रिपददुर्गजैत्रसिंहो १८६।१ दयसिंह१८६।३ वल्लाविजयन२२, रुद्धशोराडा १८६।५ ऽभिषेणबुद्धभेष्यपदार्थविघ्नमहीप १ मन्त्रि २ प्रनष्टोपहारतोग १८६।१ मत्याकारण २३, वाचिततत्पत्रप्रच्छन्नबुन्दीप्रेषितपरपूर्वस्वीकृतभटाऽष्टक ८ तोग १८६।१ संग्रामसन्धासमादान २४, तिरस्कृतमेदपाटनिवासविज्ञापितराणागमाऽवमतपिहितनिष्कसनहल्लू १८२।१ वंशीयवीरपञ्चक ५ तोग १८६।१ सहायीभवन २५, ह्यःकृताऽशनभूषणाऽऽदिसमर्चितवीरवर्गबाहुकौङ्कुमीकृतदुकूलगूढनिखातगोपितनालीयन्त्रविहिताऽऽहवमुमूर्षुविधेयतोग १८६।१ शर्वरीसमयसङ्ग्रामसज्जीभवन२६मेकोनविंशो १९ मयूखः ॥१९॥ आदितष्षट्षष्ट्युत्तरैकशततमः ॥६६॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

मुक्कलसुतपँहँ मुकल्यो, अप्पन चरँ इम अक्खि ॥
आवत हड्डे रंगँ अब, रुपल्लु प्रमादँ नरक्खि ॥ १ ॥
काल निसागत जोकहहु, कालनिसा तुमकाँहि ॥
सहँसन तुम हम पंचसत ५००, यह अंतर कछु याँहि ॥ २ ॥

भेजने योग्य पदार्थों में विघ्न जानकर राजा और मन्त्री का नष्ट हुई सामग्री वाले तोग को पीछा बुलाना, उस पत्र को पढ़कर पहले अपनाये हुए शत्रु के आठ भटों को छाने बुन्दी भेजकर तोग का युद्ध की प्रतिज्ञा लेना, मेवाड़ के निवास को छोड़कर राणा के छाने आने की सूचना करनेवाले हल्लू के वंश के पांच वीरों का छाने निकलना नामंजूर करके तोग के सहायक होना, पहले दिन भोजन और आभूषण आदि छोड़, वीरों के समूह के भुजों को पूज, केसर में वस्त्र रङ्गकर, तोपों को भूमि में दबाकर, युद्ध में मरने की इच्छावाले, कर्तव्य कर्म करनेवाले तोग का रात्रि के समय युद्ध में सज्ज होने का उन्नीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १९ ॥ और आदि से १६६ मयूख हुए ॥

१ हलकारा २ युद्ध में ३ आलस्य वा असावधानी नहीं रखकर ॥१॥ ४ रात्रि का समय कहोगे तो वह ५ कालरात्रि तुमको ही है ॥ २ ॥

सावधान रानहु सुनत, चढि चढाइ चतुरंग ॥
सज्ज लखैं हड्डन सरनि, जयभनि धरनि भुजंग ॥ ३ ॥

चटकप्लुतिः ॥ हरिरित्येके ॥ पर्यस्तकुमारललितेत्यपरे ॥

सुनि कुंभ रान सज्ज्यो, गहिरे अनीक गज्ज्यो ॥
सहँसैं अलात सक्खी, रन माहताब रक्खी ॥ ४॥
छ६ मुहूर्त चंद्र छायो, उततैंसु तोग १८६।१ आयो ।
[माल द्व २ हरोल मज्झी, दव खग्ग भुम्मि दज्झी ॥ ५ ॥
भिरतैं किवान भासी, कढि चंद्रकी कलासी ॥
हय १ सूर २ लेत हल्ली, चपला कि अद्रि चल्ली ॥ ६ ॥
बहु ओक सोक बग्गी, सिवकी समाधि जग्गी ॥
॥ ७ ॥
चलि आइ चौंकि चंडी, रमि सट्ठि च्यारि ६४ रंडी ॥
गन डाकिनीन गोलैं, डिगरी बिहीन डोलैं ॥८॥
क्रमि रत्त मत्त केई, थरकैं पिसाच थेई ॥
दुवपंच ५२ बीर दौरैं, मुरकी अनीन मोरैं॥९॥
त्रहकें टमंकि त्रंबी, बिथुराइ नाद बंबी ॥
रदं बज्जि भीरु रोरी, हिममैं कि नीर होरी ॥ १० ॥
खिरजात सूर सोहैं, भिरिजात मुच्छ भौंहैं ॥
हसिकैं चुरैल हुंकैं, भजि दूत भूत भुंकैं ॥ ११ ॥

---

१ मार्ग ॥ २ ॥ ४ ॥ ५ ॥ २ खड्ग ॥ ६ ॥ ७ ॥ चौसठ ३ योगिनी ॥ ८ ॥ ४ रक्त से ५ नाच का अनुकरण है. बावन वीर दौड़कर भगी हुई ६सेना को पीछी फेरते हैं ॥ ९ ॥ ७नगारे और ८ तासे बजते हैं ९ नगारों का शब्द फैलने के ११भय से कायरों के १०दांत बोलते हैं सो मानों हेमंत ऋतु में पानी की होली (फाग) खेलने से बोलते हैं ॥ १० ॥ फटकर गिरते हुए बीर शोभा पाते हैं और मूछें भौंहों से भिड़ती हैं, चुड़ेलिनें (देवी की दासियें) हँसकर हुंकार करती हैं और दूत रूपी भूत भगकर कूकते हैं ॥ ११ ॥

वढिजात मार बत्ती, कढिजात पार कत्ती ॥
घट फुट्टि केक घुम्मैं, झट जुट्टि कंठ झुम्मैं ॥ १२ ॥
धरि व्याम रुंड धावैं, गन सम्महे गिरावैं ॥
खिजि केक लग्गि खेधैं, बरछीन बीर बेधैं ॥ १३ ॥
तरवारि तोग१८६।१वारी, दल संहरैं दुधारी ॥
महि रुंड १ मुंड २ पट्टैं, घन नास स्वास घट्टैं ॥ १४ ॥
पॅल जात तेग पंती, तिरछी कि सब्बु तंती ॥
मिलि अच्छरीन माला, झुकि खेत देत झाला ॥ १५ ॥
गज १ बाजि २ भार गैली, फनमाल व्याल फैली ॥
ढंहि कोल दंत ढीले, लजि कुम्म अंग 'लीले ॥ १६ ॥
फटि फीलमत्थ फाँकैं, ढरि कुंभ छोनि ढाँकैं ॥
किलकैं बिरूप काली, लहि गत्त रत्त लाली ॥ १७ ॥
असिधार झार इक्खे, तरकैं फुलिंग तिक्खे ॥

प्रहारों की वार्ता बढती है और १ तलवारें पार निकलती हैं. शरीर फूटकर कितने ही घूमते हैं और शीघ्र जुट करके कंठों में झूमते हैं ॥ १२ ॥ रुंड २ हाथ फैलाकर दौड़ते हैं और साम्हने के समूह को गिराते हैं. कितने ही क्रोध करके ३ पीछे वा युद्ध में लगकर वीरों को बरछियों से बेधते हैं ॥ १३ ॥ तोग की दुधारी तलवार शत्रुओं का नाश करती है और रुंड और मुंडों से भूमि को छा देती है और बहुतों की नासिका से श्वास घटते हैं ॥ १४ ॥ ४ मांस में तलवार की ५ पंक्ति जाती है सो मानों ६ साबुन में तांत के समान तिरछी जाती है. अप्सराओं की पंक्ति मिलकर झुककर युद्ध के खेत में ७ झाले (बुलाने के लिये हाथ के इशारे) देती है ॥ १५ ॥ मार्ग में हाथी और घोड़ों के भार से ८ शेषनाग की फणमाला फैलती है (केवल व्याल शब्द से सर्प का ही बोध होता है, परंतु फणमाला के योग से शेषनाग का ग्रहण है) वाराह के दंत ढीले होकर ९ गिरते हैं और लज्जा युक्त होकर १० कूर्म अपने अंगों को ११ गिटता (समेटता) है ॥ १६ ॥ १२ हाथियों के मस्तक की चीरें होती हैं और उनके कुंभस्थल गिरकर पृथ्वी को ढांकते हैं १३ शरीर में १४ रक्त की लाली लगने से विरूप होकर काली किलकारें करती है ॥ १७ ॥ तलवार की

जिंत रान हत्थि जान्यौं, तित तोग जंग तान्यौं ॥ १८ ॥
ढिग गो बढाइ बाजी, उलटात व्रात आजी ॥
इक सत्रु मिच्छ १ आयो, रन चो४गुनौं रचायो ॥ १९ ॥
जुव २ दाव घाव जोर्‌यो, तस सीस तोग १८६।१ तोर्‌यो ॥
जिहि लैन रुद्द जावैं, प्रहसैं सिखा नपावैं ॥ २० ॥
बलभद्द २ रानबंधू, गिरि अंध अध्वं अंधू ॥
रन तोग १८६।१ कौं निरायो, गलकट्टि सो गिरायो ॥ २१ ॥
चहुवान इक्क १ चीनौं, तस तंग दौरिदीनौं ॥
झुकि आइ कोउ झल्ला४, रचि हड्डसीस हल्ला ॥ २२ ॥
बढिकैं किंवानें बाही, सुन तोग १८६।१ व्हाँ सिराही ॥
छमैं खग्गवार छुट्टयो, लगि झल्ल ४ धूरिलुट्टयो ॥ २३ ॥
गज रान ५ केर गड्ढो, ठनकात घंट ठड्ढो ॥
लखि तोग १८६।१ बागलिन्नी, असि रान५अंसैं दिन्नी ॥२४॥
छुवि खंधत्रान छेद्यो, तिल अंसभाग भेद्यो ॥

॥ २५ ॥

की ज्वाला दीखती है और तीक्ष्ण अग्निकण तड़कते हैं. १ जिधर महाराणा के हस्ती को जाना उधर ही तोग ने युद्ध फैलाया ॥ १८ ॥ घोड़ा बढाकर २ युद्ध में समूह को उलटाता हुआ तोग महाराणा के समीप गया ॥ १९ ॥ ३ शिव उस यवन का मस्तक लेने को गये परन्तु ५ चोटी नहीं पाने से ४ हँसने लगे अर्थात् प्रसन्न तो हुए परंतु यवन का सिर जानकर उसको नहीं उठाया ॥ २० ॥ ६ मार्ग के ७ कुए में गिराया. ८ समीप लिया ॥२१॥ चहुवाण ने एक वीर को देखा जिसके ९शरीर को १० काट डाला. फिर कोई झाला राजपूत आया जिसने तोग पर हल्ला किया ॥२२॥ और बढकर ११ तलवार चलाई जिसकी तोग ने प्रशंसा की उस झाले पर तोग के खड्ग का १२ समर्थ (बल का) प्रहार छूटा जिससे वह झाला धूल में लौट गया ॥२३॥ महाराणा का दृढ हाथी वीरघंट बजाता हुआ खड़ा था जिसको देखकर तोग ने अपने घोड़े की बाग उठाई अर्थात् घोड़े को उडाया और राणा के १३ कन्धे पर तलवार मारी ॥ २४ ॥ उसने कंधे का त्राण (झालर, कवच) काटकर तिल

छिति जात टापं ह्वैगो, यह वध्य डोडि६ व्हैगो ॥
सतच्यारि ४०० बीर सत्थी, इम तोग१८६।१ जुद्ध अत्थी ॥२६॥
असिझारि रारि अच्छी, कढिजान किन्न कंच्छी ॥
इक बीर रानवारे, मिलि तत्थ बैनमारे ॥ २७ ॥
सतइक्क १०० संटि सूरे, करि मान लोभ कूरे ॥
किम आस्थिपाल १५५ केरे, अब भज्जिजात एरे ॥ २८ ॥
सुनतैं सु छोहछायो, हय मोरि सम्मुहायो॥
हगकन्न पिट्ठि दोरयो, मनु पुच्छको मरोरयो ॥ २९ ॥
सतद्वै२०० निकास सिक्खे, पलटे तितेहि पिक्खे ॥
मनजे अराति जीके, बर अच्छरी बनीके ॥ ३० ॥
जिनमैं सु तोग १८५।१ जैसैं, उडुवृंद चंद्र ऐसैं ॥
बकतैं असह्यबानी, पलटे उदस्त्रपानी ॥ ३१ ॥
मरिबेहि बाजि मोरे, जिम अग्ग खग्गजोरे ॥
लखि रान भीतिलायो, द्विप दिट्ठि तैं दुरायो ॥ ३२ ॥
झुकि तोग १८६।१ तेगझारी, बहुवेर फोजफारी ॥
अतिमान रानवारे, पखरैत केकपारे ॥ ३३ ॥

मात्र कंधे को काटा ॥२५॥ वह घोड़ा भूमि पर उतरा तब उसके १ पैर के स्पर्श से २ डोडिया जाति का क्षत्रिय मारागया. युद्ध का ३ अर्थी (वीर) ॥ २६ ॥ तोग ने ४ घोड़ा निकालना चाहा अर्थात् भगना चाहा, उस समय राणा के एक वीर ने वहां पर वचन मारा (ओलाबोला) कि ॥ २७ ॥ सौ वीरों को बदले में देकर (मरवाकर) प्राण का लोभ करके ५ आस्थिपाल के वंश वाले हे नीच तोग! अब भगकर जाता है ॥ २८ ॥ यह सुनते ही वह तोग क्रोध में छकाहुआ घोड़े को मोड़ कर सन्मुख आया. मानों पूंछ मरोड़ा हुआ ६ सर्प पीछे दौड़ता है ॥ २९ ॥ दो सौ मनुष्य जो भगनेवाले थे वे सब तोग को (मुड़ाहुआ) देखकर पीछे फिरे जिनके मन अपने जीव के शत्रु (मरने में उद्यत) और अप्सरा रूपी दुलहिनों के वर थे ॥ ३० ॥ जिसमें तोग ७ ताराओं के वृंद में चंद्रमा के समान था. राणा के वीरों के असह्य वचन बोलते ही (वे वीर) हाथों में ८ अस्त्र उठाये हुए पीछे फिरे ॥३१॥ ९ हाथी की पीठ पर छिप

हिय रान *भ्रांतिहेरयो, गज इक्क भुम्मिगेरयो ॥
अरि तीस ३० छेदि छक्कयो, जब तोग १८६।४ निट्ठि जक्कयो ॥३४॥

दोहा ॥

हयतैं इक[1]तिथि१५ हत्थतैं, पहिले रन रिपुपारि ॥
वेलि पच्छोमुरि बोलपैं, तीस३०न सीसउतारि ॥ ३५ ॥
करि सक्खी करवालकौं, रानअंस[3] कछु रेखि ॥
गजइक१ पाछैं गेरियो, द्रोहिपॅके भ्रम देखि ॥ ३६ ॥
सूरपरें उतके त्रिसत ३००, सतदुव २०० इतके सर्व ॥
परयो तोग१८६।१ मुरि बैनपर, इम करि क्त्ति अखर्व ॥ ३७ ॥
घायल सत १०० छकि घुम्मते, बुंदिय पत्ते[6] वीर ॥
क्रम समुचितँ उपचारकिय, सब उल्लाघ सरीर ॥ ३८ ॥
हल्लू १८२।१ के कुलके हुते, सबघायल तिनसंग ॥
पटामाँहिं उनकौं सुपहु, दिय डब्भिय मुख द्रंग ॥ ३९ ॥
वंछे १ अरु घायल बचे २, और जिते तिन्हअत्थे ॥
उचित अप्प किन्नैं अधिप, सब मन लरन समत्थ[12] ॥ ४० ॥
तनय तोग १८६।१ कें हो न तस, अनुजहि गंग१८६।२उदार ॥
पहु[13] किय पुर नवगाम पहु, भुवधरि बुन्दियभार ॥ ४१ ॥

षट्पात् ॥

अमेरदुर्ग अपनाइ थप्पि अंदर पुनि थानों ॥
किय बुंदियासिर कुच्च रोसफुल्लत अहि[16] रानों ॥
सुक्र[17] चउद्दसि १४ सुभ्र रक्खि नवगामप तिहिं रन ॥

गया ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ महाराणा के हाथी के *भ्रम से ॥३४॥ १ फिर ॥३५॥ २ खड्ग को. राणा के ३ कन्धे को ४ शत्रुओं के पति के भ्रम से ॥३६॥ ५ बहुत ॥३७॥ ६पहुंचे ७उचित ८इलाज ९ नैरोग्य ॥३८॥३९॥ १०मरे. उनके ११ लिये. लड़ने में १२ समर्थ किये ॥४०॥१३राजा ने. नवगांवां का१४पति किया ॥ ४१ ॥ १५ अमरगढ़ को १६सर्प के समान१७ज्येष्ठ सुदी १४ के दिन नवगांवां के पति को

करि दस १० तत्थ मुकाम पूर सज्ज्यो गढ तोपन ॥
प्रतिमल्ल[2] हड्ड हत्थन परखि लार खिल[3]हु बल बुल्लिलिय ॥
आसाढ असित [4]कंदर्प अह १३ क्रमि बुंदियपुर बेढ[5]किय ॥४२॥
समुचित जँहँजँहँ सिबिर[6] रान बेढिय विधानरचि ॥
पृतना पतन प्रतीप[7] बिसम अचलादि रहेबचि ॥
तेरसि १३ अह प्रत्यूष[8] लोल गोलन झरलग्गिय ।
उडत सार दुरहुँओर ज्वलन कीला[9]कुल जग्गिय ॥
तारिका[10]दुर्ग दगि तोप तति[11] दुजन निकट रहन न दये ॥
गज्ज१रु अलात२अयपिंड३गन छिति१अंबर२संकुल[12] छये ॥४३॥

॥ मनोहरम् ॥

होत फैर फैरनपैं तापके अमाप जव,
डिगि डिगि शृंग आपआपके अंगेर[13]मैं ॥
गोलनचलात १ परगोलनके पात २ भाँत[14],
तारागढ जान्यौंजाल जग[15]रमगरमैं ॥
जा रन प्रजारन हजारन अलात[16] फैले,
बाखरि[17]१मैं बीथी[18] २ मैं वजार ३ मैं बगर[19] ४ मैं ॥

युद्ध में मारकर १ तहां २ शत्रुओं ने हाडों के हाथों की परीक्षा करके ३ बाकी की सेना को भी साथ बुला ली. आषाढ वदि ४ तेरस * के दिन चल कर बुन्दी के ५ घेरा लगाया ॥ ४२ ॥ ६ डेरे खडे करके ७ शत्रुओं की सेना के पडाव से. तेरस के ८प्रभात चपल गोलों की झडी लगी ९अग्नि की ज्वाला उठी१०तारागढ से. तोपों की११पङ्क्ति. गर्जना, अग्नि और लोह के गोलों के समूह पृथ्वी और आकाश में १२ अवकाश रहित छागये ॥ ४३ ॥ अपने अपने १३घर में१४प्रकाश अथवा शोभा १५अग्नि की ज्वाला की चकाचौंध (झगामग) में उस युद्ध में जलाने के लिये हजारों १६ अङ्गारे (निर्धूम अग्नि) १७ ÷ मकानों में १८ गली में वजार में १९ बगड़ (चौक) में फैले

---

* ज्योतिष में तेरस तिथि का पति कामदेव को मानते हैं.

÷ व्रजभाषा में घर को बाखरि कहते हैं और मरुभाषा में घर की सामग्री को बाखर कहते हैं.

कालिकाकी बालिकालौं ज्वालिकाबमंत[1] बनी,
नालिका दगत दीपमालिका नगरमैं ॥ ४४ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

फोजनतैं ओजन[2] १ तैं जोजन कहत दूर,
अर्चिनके[3] ओजनतैं जो पैं रहैं रुकिरुकि ॥
पाउसके अंधसे[4] अखंड धूमसंडलमैं,
तापनतैं तापन[5] तपायो लज लुकिलुकि[6] ॥
बिस्मय प्रलैबिनु त्रि ३ लोक ओकओक[7] आनैं,
चौंकें चंद्रचूडहु[8] समाधि जात चुकिचुकि ॥
कालके से टोला गुरुगोला[10] गिरिबेतैं मही,
व्यालफन[11] दोलौं[12] चढी झोलालेत झुकिझुकि ॥ ४५ ॥

॥ मनोहरम् ॥

स्याम सुचि[13] तेरसि १३ तैं सावनअमा ३० अवधि ३३,
बासर व्यतीतभये घोर घमसानकौं[14] ॥
कारनैंउलंघि[15] जैत १८५।१ सारन १८६।१ हु आये परं[16],
दैदैरतिवाह सोंड १८६।५ सोस्यो परप्रानकौं[17] ॥
सोही दावदीनौं दुव २ बेर चुंड १८६।२ औ उदय १८६।३,
कीनौं कितो तोपन अनीक अवसानकौं ॥

---

१ उगलतीहुई ॥ ४४ ॥ २ प्रताप से ३ अग्नि की ज्वाला के ताप से. वर्षा ऋतु के ४ मेघ के समान. अग्नि की ताप से तपाया हुआ ५ सूर्य ६ छिपःछिप कर लज्जित हुआ. विना ही प्रलय तीनों लोकों के जीव ७ घर घर में आश्चर्य करने लगे और ९ शिव भी समाधि भूल भूल कर ८ चिमकगये १० बड़े गोले ११ शेषनाग के फण के १२ हिंडोले पर चढीहुई भूमि ॥ ४५ ॥ १३ आषाढ वदि तेरस से श्रावण वदि अमावास्या तक के तेतीस दिन भयङ्कर १४ युद्ध के बीते. नहीं आने का १५ कारण था तो भी उसका उल्लंघन करके १६ शत्रुओं पर १७ शत्रुओं के प्राणों को सुखाये.

बुंदीपुर पावनकी पद्धति न पाई इतैं,
आई तीज ३ सावनकी जावनकी रानकौं ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

बनि दुर्मन[2] सुभटन बदिय, रान रसिक स्मररंग[4] ॥
तीज ३ परब पहुँचैं न तो, पतनी[6] जरन प्रसंग ॥ ४७ ॥

॥ षट्पात् ॥

बुल्ले भट हमबहुत पग्घ निज रक्खि पधारहु ॥
जिहिं अग्गैं सब जुरहिं १ नमहिं २ संदेह न धारहु ॥
मन्नि सुनत सुहि मूढ गूढ हयडाक गयो ग्रह ॥
पटग्रह रक्खिय पग्घ सुपहु ऐसो रत सस्प्रह ॥
तोपनचलाइ जिम पुब्बतिम कातिक रहे डमरहु करत ॥
बुंदिय बिनाह लग्गे बढन मेवारे मारत १ मरत २ ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

दृढ निश्चयहुव दोजि २ दिन, रक्खि पग्घ गय रान ॥
कढि जुज्झन मत सुनत किय, चहि अवसर चहुवान ॥ ४९ ॥

॥ षट्पात् ॥

सारन १ जैत २ रु सचिव ३ अरज नृपप्रति किन्नी यह ॥
जिम छुद्रहि[12] रनजात स्वामि वरजे हम साग्रह[13] ॥
तिम यह न अब तुमुल[14] रान महिमान पधारत ॥
जाकी पग्घहु जोहिं बनत तस भाव[15] बिचारत ॥
कै पग्घ गहहिं १ दलजित्तिकैं मरनठाम उग्गहिं[16] मरन २ ॥

बुन्दीपुरी प्राप्त होने का १मार्ग नहीं मिला ॥ ४६ ॥ २ उदास होकर ३ कहा ४ कामदेव के रङ्ग का रसिक ५समय पर ६ स्त्री जल जावेगी ॥४७॥ ७डेरे में ८पगड़ी रखकर. रत करने का ९लोभी १० उपद्रव (लूट खसोट) ११ बिना मालिक के ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ १२ छोटे युद्ध में जातेहुए १३ हठ करके हमने आपको रोके थे. उसप्रकार अब यह १४ घोर युद्ध नहीं है. जिनकी पगड़ी है वह स्वयं उनका १५होना ही है. मरना १६प्रसिद्ध होवेगा

कट्टा पुर चित्तोर कारि, स्वान१ बिडाल२ समेत ॥
चढ्यो निरंकुस साह चहि, इम गढ विजय[२] उपेत ॥ ३१ ॥

षट्पात् ॥

चवंत[३] किते चित्तोर दुग्ग नृप सयन स्वप्नदिय ॥
अकिखंय सुनहु अधीस सोन[४] मिच्छ१न बहु सिंचिय ॥
अज्जं२न[५] लोहितं अलप बह्यो मोसिर कछु बिप्रवंव ॥
होतो अद्ध[७] हु हाइ ततो रहतो निकेत[८] तव ॥
जावतो गेह मिच्छन जदपि[९] अति सत्वरं[१०] घर आवतो ॥
जात न रह्यो[११] वैं उत जातहौं सेवक जन न सुहावतो ॥ ३२ ॥
रानकहिय जिम रहहु कहहु सुहि जतन कृपागति ॥
कहिय दुर्ग जगकहत चंमूसन[१२] अधिक चंमूपति[१३] ॥
सुत१ भ्राता२ तव सकल पाइ क्रमसह नृपतापद ॥
मरत तोहि यह मरहिं मोहि दे रुधिरपान मद ॥
तुम बढहु कुआप[१४] मिच्छन तबहि रान मुदित तवघर रहौं ॥
पोखत बिसेस सुहि होत प्रिय कछु भोजक न प्रिय कहौं॥३३॥

(दोहा)

जवन बली लैहैं जदपि, अैहैं तदपि इतैंहि ॥
यह दुर्गन गति आदितैं, जे बलिदेत[१५] जितैंहि ॥ ३४ ॥

षट्पात् ॥

सुनि दुर्गोदित[१६] स्वप्न रान प्रातहि परिखद रचि ॥
कहियँ[१७] एह सब करहु बहुरि इक१ तंतु रहहु बचि ॥

१कुत्ते बिल्ली सहित. विजय२सहित ॥३१॥ कितनेक३कहते हैं. म्लेच्छों ने मुझ को४रक्त से बहुत सींचा है और५आर्यों का६रक्त ७युद्ध में कम बहा है; यदि यवनों से आधा लोही भी तुम्हारा बहता तो८तुम्हारे ही घर में रहता ९तो भी १०शीघ्र ११ अब यवनों के जाता हूं ॥३२॥ १२ सेना से १३ सेनापति को अधिक कहता है, तभी यवनों से तुम्हारे १४ मुर्दे पडेंगे ॥३३॥ १५ बलिदान देते हैं वहीं रहते हैं ॥३४॥ १६ गढ का स्वप्न में कहाहुआ सुनकर १७महारा-

सन्नद्ध बिरचि*ध्वजिनी सकल करहु हल्ल जग जसकरन ॥५०॥
सोंड १।८।६।५ सिराहिय सुनत त्रय ३ हि कहि वाहवाह तब ॥
बुल्लि सेव१।८।६।२नवब्रह्म१।८।५।२अमर१।८।६।१गंग१।८।६।२रुमाधव अब
भार खंध जिनभटन पानि[1] मुत्तिन तिन पुज्जहु ॥
जिम पिक्खहिँ प्रतिजाम समर कौतुक रुकि सुज्जहु ॥
अनुजात[2] कथित[3] करि बत्त यह साधुसाधु[4]कहि भटनसह ॥
बुंदिय त्रपा[5] सु गरबंधिकैं आधिप हड्ड सज्जिय असह ॥ ५१ ॥
नसह १ असह २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

जंपिय[6] सारन१ जैत२ मति, गदकृस[7] रहिये गेह ॥
तिन अक्खिय हो गद तब सु, अगद[8] बन्यौं अब एह ॥ ५२ ॥
राजादिन[9] निजरोधकन[10], इम सहसपथ[11] निवारि ॥
हुव संगहि दायाद[12] दुवर, धुव[13] व्याधि न कछु धारि ॥ ५३ ॥

षट्पात् ॥

पर[14]पृतनाके पिट्ठि पिहित[15] दल अद्ध पठायउ ॥
अद्धकटकसह अप्प आरिन सम्मुह उफनायउ[16] ॥
रजनि घटीदुव२ रहत स्वस्थ निर्भय सीसोदन ॥
पहुँचि परे पविपात[17] मंडि मंडिय अनुमोदन ॥
राजा१ रु जैत२ सारन ३ रुजित[18] हंकिय त्रय३ आरूढ हय ॥

सब *सेना को सज्ज करके ॥५०॥ उनके १हाथ मोतियों से पूजो २छोटे भाई का ३कहना ४श्रेष्ठ है श्रेष्ठ है. बुन्दी की ५लज्जा को गले से बांधकर ॥५१॥ ६कहा ७रोग से दुर्बल हो इस कारण घर पर ही रहो ८नैरोग्य ॥५२॥ ९राजा आदि को लेकर १०अपने रोकनेवालों को ११सौगनों से निवारण करके. दोनों १२भाई १३निश्चय ही रोग को कुछ नहीं विचारकर साथ हुए ॥५३॥ १४शत्रु सेना की पीठ पर १५छाने आधी सेना भेजी. आधी सेना के साथ शत्रुओं के साम्हने आप १६चढा १७वज्र पड़ने के समान १८रोग युक्त थे इस कारण घोड़ों पर चढकर चले

दल[1] खिल पद[2]ाति उभयरहि अनिन[3] प्रारंभिय मंडन प्रलय।५४।
गोटे दलबिच गेरि प्रथम बारूद प्रजारित ॥
बंधन हयन बिछोरि दये लरवाइ बिदारित ॥
होत अचानक हक्क[4] जूह[5] निद्रित कति जग्गत ॥
कति गुल्मन[6] नित्यकरि लुब्भि[7] इष्टन पयलग्गत ॥
गीतादि पढत कति वीरगन कतिक कोन १क्यों २ किम३ करत[8]॥
गज[9] रिपुन पैठि ह[10]रि हह्ु गय अरि१ यातैं२ इम३ उच्चरत।५५।
तुल्लि मिलत तरवारि झकट[11] जितंतित रचि झारिय ॥
करजोहुव[12] सुहि कतिन प्रखर[13] उततैंहु प्रहारिय ॥
पै यह अतुलप्रमाद[14] बनत जान्यौं बिरलें बल ॥
खुल्लिहय जुट्टतखिनहु[15] प्रचुर[16] पाये मीचित पल ॥
उठि उठि प्रमत्त ते भट अखिल मगलग्गिय लै जिय बिमद[17] ॥
सम्मुहचलाइ कट्टिय सकल हड्डन रक्खिय बिरुद[18] हद ॥ ५६ ॥
सेव१ छ६ अरि संहरिय[19] खल माधव२ चउ४ खंडिय ॥
अमर३ च्यारि४ अंगसिर[19] कुठार[20] नवअक्ष४ सत्त७ क्रिय ॥
नवक९ गंग५ हठि हनिय ग्लान[21] सारन६ चउ४गोरिय ॥
लुंचि[22] त्रि३सिर जैत७ लिय नवक९ असु[23] साँड८ निबेरिय ॥
कोणिका[24] खास सोधनकरत गोहिल हरि९ पग्ग सु गहिय ॥

बाकी की १सेना २पैदल. दोनों ३अग्नियों ने)सेना के अग्रभाग को; अथवा सेना के टुकड़े को मरुभाषा में अणी कहते हैं)॥५४॥ ४ हाक ५ समूह ६रक्षार्थ (रिजर्व) सेना, वा रक्षार्थ सेना रहने के स्थानों में नित्य नियम करके परलोक का ७ लोभ करके. कितने ही कौन है? क्यों? ८ कैसा हुआ? शत्रु रूपी ९ हाथियों में १० सिंह रूपी हाडे घुसगये॥ ५५ ॥ ११ युद्ध में १२ जो हाथ में आया उसीको लेकर १३ तीक्ष्ण. अत्यन्त १४ गफलत से. घोड़े के १५ लड़ते समय १६ बहुत से मनुष्य नेत्र मिचे हुए आये १७ मद रहित होकर १८ यश वा स्तुति की हद हाडों ने रक्खी ॥ ५६ ॥१९मारे २०मुर्दे २१रोगग्रस्त सारण ने. जैत्र ने तीन मस्तक १२ काटे २३ प्राण. खास २४डेरे में (छोटे डेरे का नाम कोणिका है)

इम आतआत सिंखरी उदय लुटि सिविर जस थिर लहिय ।५७।

दोहा ॥

मिली पग्घ सुनतहि सुररि, अनंखि सिविर पुनि आइ ॥
मेवार हसत२०० मरे, दारुन हत्थ दिखाइ ॥ ५८ ॥
मार नृप तिनमांहिसों, बानन पंच५ प्रबीर ॥
कढि उभय२ असितें करे, सत्त७न कुश्राप सरीर ॥ ५९ ॥
पहुँआश्रित खटसत६०० परे, अरि तेरहसत१३०० अत्थ ॥
आहन बंब घुराइ इम, हहुन किय जय हत्थ ॥ ६० ॥

मनोहरम् ॥

ग्रीखम१तें पाउस२लों वाहिनी वलय बंधि,
रोपी रारि रानाँ कुंभकरन प्रतीपनैं ॥
तारागढ़ नालिन निघातकरि कंप्यो सोहु,
चेदिपै ज्यों चंप्यो चतुरंग सह श्रीपनैं ॥
परिकर राखि जपि हित सु निकेतें पूगो,
काटि सोंपे कीनों जे कृसानुंकुलदीपनैं ॥
संप्रयोगें सहल सच्चैंग्घ सुधराइ उतें,
पग्घ पधराई इतें मद्दल महीपनैं ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

इत जयबंब घुराइ इम, पुर करि भूप प्रवेस ॥
लेंचु पाटयेंकिय घायलान, बीरन अप्पि बिसेस ॥ ६२ ॥

---

१ सूर्य के उदय गिरि पर आते आते (यहां उदय गिरि के सम्बन्ध से सूर्य का ग्रहण है) २ डेरे ॥ ५७ ॥ ३ क्रोध करके ॥ ५८ ॥ ४ घावों से ॥ ५९ ॥ ५ राजा के आश्रित लोग ६ वहां ७ नगारे बजवाकर ॥ ६० ॥ ८ घेरा ९ शत्रु ने १० तारागढ़ का पर्वत ११ तोपों से १२ शिशुपाल के समान सेना सहित १३ कृपाण १४ श्रीकृष्ण के समान बुन्दी के राजा के १५ घर को गया १६ अग्निकुल के प्रकाशक १७ रत्न को १८ आदर पूर्वक ॥ ६१ ॥ १९ शीघ्र २० मरहम ॥ ६२ ॥

मेवारेहु बिगारि मुख, पत्ते[1] जब पहुँ[2]पास ॥
लज्जित रान सक्यो न लखि, अंतर[3] निवसि उदास ॥ ६३ ॥
कुं[4]भ तज्यो सुहि सोककरि, बपु[5] दुव २ मास बिताइ ॥
रायमल्ल तब रानहुव, पट्ट जनक[6]धृत पाइ ॥ ६४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्व१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसुभाण्डदेव१८६।४चरित्रे पूर्वप्रेषितस्वदूतप्रख्यापितनिजाऽभिसम्पातसावधानसज्जीकारितसपत्नसैन्यतोग १८६।१ शुक्रशुक्लचतुर्दशी १४ निशीथनिकटवैरिबलसम्मुखसमभिषेणन १, संहृतपञ्चदश १५ सपत्नसाम

---

१ गये. अपने २ प्रभु के पास ३ जनाने में उदास रहकर ॥ ६३ ॥ ४ कुम्भकर्ण ने इसी शोक से दो *महीने पीछे ५ शरीर छोडा ६ पिता के धारण कियेहुए पाट को पाकर ॥ ४६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चम राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेंद्र सुभाण्डदेव के चरित्र में पहिले अपना दूत भेजकर अपने युद्ध की सूचना करके शत्रु की सेना को सचेत और सज्जीभूत कराकर तोग का जेठ सुद१४ को आधी रात के समीप शत्रु सेना के सन्मुख युद्धयात्रा करना, शत्रुओं के पंद्रह वीर और उमरावों का

---

*बुंदीवालों का महाराणा की पगड़ी लेजाना और इसी लज्जा से दो महीने पीछे महाराणा कुम्भा का मरना लिखा सो असत्य है. यह इतिहास बून्दी की ख्याति से अथवा बून्दी के बडवाभाटों की पुस्तकों के लेख से लिखना पाया जाता है; जिन्होंने बढावे से कल्पित कहानी लिख दी है; क्योंकि कुम्भलगढ पर सम्वत् १५१७ मार्गशीर्ष कृष्णा पञ्चमी की खुदी हुई मामादेव के कुण्ड ऊपर की प्रशस्ति में महाराणा कुम्भा के लिये लिखा है कि " हाडोती को विजय करके वहां के स्वामि से दण्ड लिया " इस प्रशस्ति के खुदने से ८ वर्ष पीछे तक महाराणा जीवित रहे थे, इससे पगड़ी लेजाने आदि इतिहास असत्य प्रतीत होता है, इसके अतिरिक्त जिन महाराणा ने मांडू और मालवा के बादशाहों को दण्ड दिया उनका बूंदी विजय नहीं होने के कारण लज्जा से मरना नहीं सम्भवता. ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) की सत्यता पर हम कलंक लगाना नहीं चाहते परन्तु बुंदी की ख्याति अथवा बड़वाभाटों के लेख पर विश्वास कर लेने के कारण ऐसा लिख देना पाया जाता है.

न्त १ शूर २ करवालकृत्तसस्कन्धत्राणराणांसस्तोकभागविशीर्ण
विपक्षवाहिनीकप्राप्तप्रत्यनीकान्तरवाक्प्रतोदनिर्यियासुतोग १८६।
१ पुनरवमर्दप्रत्यारम्भण २, मेदपाटमहीपमारीचभ्रान्तिपातितमत
ङ्गजान्तरपुनःपरासूकृतत्रिंश ३०त्प्रतीपसाध्वसप्रतापितप्रत्यनीक
परिवृढतोग १८६।१ शूरशय्याशयन ३, पक्षद्वय २ प्रवीरशतपञ्चक
५०० परलोकप्रापण ४, नरेन्द्रसुभाण्डदेव १८६।४ बुन्द्यागतस्वकी
यक्षतखिन्नपटूकृतशूरशतक १०० यथातथसत्करण ५, प्राप्तप्रचुरप्र
हारस्वबन्धुहल्लू १८२।१ वंशीयप्रवीरपञ्चक ५ दाभीं १ प्रभृतिपत्त-
न १ प्रतिवसथ २ प्रकरपट्टप्रसादन ६, निष्प्रजतोगा १८६।१ऽनुज
गङ्ग १८६।२ऽ पर २ नामयशःकर्ण १८६।२ स्वाग्रजपदनवग्राम-
पुरप्रभूभवन ६, न्यस्ताऽमरदुर्गसनालीयन्त्र १ रक्षिवर्ग २ तत्सीम-
न्युषितदिनदशक १० समाकारिताखिलसैन्यप्रस्थितराणाशुचिश्या
मलत्रयोदशी १३ प्रत्यूषबुन्दीवाहिनीवेष्टन ७, श्रुतैतदुदन्ताऽवमत
क्षत १ ज्वर २ खेदजैत्र १८५।१ सारण १८६।१ स्वामिसहायबुन्दी

संहार कर, खड्ग से राणा के कन्धत्राण को काट,कंधे के थोड़े से भाग को वि
दीर्ण कर, शत्रु की सेना को विखेर कर निकलने की इच्छावाले तोग का प्रा
स हुई शत्रु सेना में से किसी शत्रु के वचन रूपी चाबुक लगाने से फिर युद्ध
प्रारम्भ करना, मेवाड़ के महीपति की सवारी के हाथी की भ्रान्ति से किसी
हाथी को मार, फिर तीस शत्रुओं को मारने से शत्रुओं की सेना को भय से
तपाकर बलवान् तोग का माराजाना, दोनों पक्ष के पांच सौ वीरों का परलो
क को प्राप्त होना, नरेन्द्र सुभाण्डदेव का बुन्दी में आयेहुए घायल सौ वीरों
को नैरोग्य करके उनका यथार्थ सत्कार करना, बहुत प्रहार पायेहुए अपने
बन्धु हल्लू के वंश के पांच वीरों को डाभी आदि पुर और गामों का समूह
पटा में देना, विना सन्तानवाले तोग के छोटे भाई गङ्ग दूसरे नाम से यशक
र्ण का अपने बड़े भाई के स्थान नवग्राम पुर का पति होना, तोपों सहित रक्षा
करनेवाले समुदाय को अमरगढ में रख, उसकी सीमा में दश दिन निवास
करके बाकी की सेना को बुलाकर प्रस्थान कियेहुए राणा का आषाढ वदि
१३ के प्रभात बुन्दी को फौज से घेरना, यह वृत्तान्त सुन, प्रहार और ज्वर के

पुरीप्रविशन ८, पुनःपुनःश्रुतशौराड १८६।५ समनुष्ठितसौप्तिकचुण्डो १८६।२ दय १८६।३ युग्म २ द्विःकृत्वोरात्रिप्रघातपातन ९, श्रावणि कदर्श ३० पर्यन्तसम्प्रहाराऽप्राप्तबुन्दीविजयनिजसामन्तसङ्घसम्मत स्वस्थानस्थापितोष्णीषराणाकुम्भकर्णप्रच्छन्नचित्रकूटप्रविशन१०, ज्ञाततद्वृत्तान्तसारण१सचिवा२दिस्वसम्वर्द्धितोत्साहशौराड१८६।५ समेधितशौर्यसमाहूतयशःकर्ण१ऽपरनामगङ्ग१माधवा२दिदायादसंदोहबुन्दीन्द्रसुभाराडदेवो१८६।४ष्णीषस्वामिचित्रकूटचमूसंग्रामसंक्रमण११,स्वसुहृद्वर्जनविपरीतप्रसभविगतस्वस्वव्याधिवेगसहप्रस्थित हयारूढसारण १८६।१ जैत्र १८६।५ स्वामिसहायीभवन १२, परपृतनापरप्रान्तप्रस्थापितपत्तीकृतसैन्यार्द्ध १ सार्थीकृतपत्तिनेमा २ नीकस मारूढसप्तिहड्डाधिराज १ प्रक्षेपितपूर्वबारूदवर्त्तकविक्षोभवित्रोटित बन्धनवैरिबलवाजिविद्रावण १३, मुहूर्तैक १ रात्रिशेषसमयबुन्दीन्द्र वाहिनीसौप्तिकसम्पातकोलाहलावबुद्धप्रमत्तप्रद्रुतप्रत्यनीकप्रकरप्रतिमुटितकियत्सपत्नसामन्तसम्मुखसंयोधन १४, सेव १८६।२ माध

खेद को न गिनकर जैत्र और सारण का स्वामि की सहायता के लिये बुन्दी में प्रवेश करना, वारम्वार शौराड का रतिवाह देना सुनकर चुण्ड और उदय दोनों का दो वार रतिवाह देना, श्रावण की अमावास्या पर्यन्त के युद्ध से बुन्दी की विजय नहीं मिलने से अपने उमरावों के समूह की सलाह से अपने स्थान में पगड़ी रखकर राणा कुम्भकर्ण का छाने चित्तौड़ जाना, यह वृत्तान्त जानकर सारण और सचिव आदि के निजउत्साह को बढाने से और शौराड की भलीभांति बढाई हुई वीरता से यशकर्ण दूसरे नाम से गङ्ग, माधव आदि भाइयों के समूह को बुलाकर बुन्दीन्द्र सुभाराडदेव का, पगड़ी दी है स्वामि जिसका ऐसी चीतोड़ की सेना से युद्ध करने को चलना, अपने सुहृदों के मना करने के विरुद्ध हठ से अपने अपने रोग के वेग को न गिनकर घोड़ों पर चढ, प्रस्थान करनेवाले सारण और जैत्र का अपने स्वामि की सहाय होना, शत्रुसेना के पीछे आधी पैदल सेना को भेजकर आधी पैदल सेना को अपने साथ करके घोड़े पर सवार होकर हड्डाधिराज का प्रथम बारूद के पीपों से चोभ होने के कारण बंधन तुड़वाकर शत्रुओं की सेना के घोड़ों को

वा १८६।१ ऽमर १८९।१नवब्रह्म १८५।२ गङ्ग १८६।२ सारण१८६।
१ जैत्र १८५।१ शोराड १८६।५ प्रभृतिबुन्दीवीरविपोथितवैरिवर्गसं
ख्यासूचन१५, दिवाकरोदयाऽधिसमस्तशिबिरसामग्रीसंग्रहणावसर
भूपभटगोभिलहरिसिंह १ हस्तमेदपाटमहीपमूर्द्धमण्डनमिलन १६,
श्रुतैतदुदन्तप्रत्यागतपरमवीरद्विशती २०० पुनःप्रत्याघातप्रवर्तन १७,
खड्गखण्डितद्वेषिद्वय २ पृशत्कपरासूकृतमतीपपञ्चक ५ पृथ्वीशप्रो
त्साहितप्रवीरतच्छेष १६३ निषूदन १८, संस्थापितपरपक्षत्रयोदशश
तक १३००सुभाण्डदेव १८६।४सुभटषट्शतक ६०० शूरशय्याशय
न १९, निर्घोषितविजयवाद्यप्रद्रावितपारिपन्थिकसक्षतस्वभटकारि
तोचितोपचारयथातथप्रसारितप्रवीरहड्डाधिराजशत्रुशीर्षोष्णशिरोवेष्टन
स्वसद्मसमानयन २०, पलायनप्रत्यागतनिजानीकिनीप्रेक्षणापरा
ङ्मुखतत्रपानिगूढन्युषितमासयुग्म २ राणाकुम्भकर्णतनुत्यागान
न्तरतत्पुत्रराजमल्लपितृपट्टप्रापणं २१ विंशतितमो २०मयूखः ॥२०॥

भगाना, दो घड़ी रात्रि बाकी रहते समय बुन्दीन्द्र की सेना के रातिवाह के कोलाहल से जगकर गाफिल भगेहुए शत्रुओं के समूह में से पीछे मुड़ेहुए शत्रु के कितने ही उमरावों का सन्मुख युद्ध करना; सेव, माधव, अमर, नवब्रह्म, गङ्ग, सारण, जैत्र और शौरड इन बुन्दी के वीरों से मारेहुए वैरिवर्ग की संख्या कीसूचना करना, सूर्योदय के समय समस्त डेरों की सामग्री हरण करने के समय राजा के उमराव गोभिल हरिसिंह के हाथ मेवाड़ के महीप की पगड़ी मिलना, यह वृत्तान्त सुनकर शत्रु के दो सौ वीरों का पीछे आकर फिर युद्ध करना, दो शत्रुओं को खड्ग से और पांच शत्रुओं को बाणों से मारकर राजा के उत्साहित वीरों का बाकीके शत्रुओं को मारना, तेरह सौ शत्रुओं को मारकर सुभाण्डदेव के छः सौ सुभटों का माराजाना, विजय के बाद्यबजवाय, शत्रुओं को भगाय, घायल हुए अपने वीरों का उचित इलाज कराकर यथातथ उनकी फैलाईहुई वीरता से हड्डाधिराज का शीर्षोष्णा शत्रु की पगड़ी को अपने घर में लाना, भगकर पीछी आई हुई अपनी सेना के देखने में पराङ्मुख, उस लज्जा से गुप्त निवास करने वाले राणा कुम्भकर्ण के शरीर छोडे पीछे उसके पुत्र रायमल्ल का अपने पिता के पाट पाने का बीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २० ॥

आदितः सप्तषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥१६७॥
प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अनुज सोंड१८६।५हित दिय उचित, नरपति करउर१नेर॥
तँहँ रहि चिंत्यो हनि तुरक, वालन स्वजनक वैर ॥ १ ॥
पच्छेलिय पट्टनि१ प्रमुख, अक्खय १८६।१ दव्वे अग्ग ॥
अग्रज को तँहँ किय अमल, लोभ न रंचक लग्ग ॥ २ ॥

षट्पात् ॥

सारन १ जैत२ सहाय सोंड३ लै अग्रज दल सन ॥
चुंड १८६।२उदय१८६।३चंपीहु अवनि पच्छीलिय अप्पन॥
जैताउत ६ खंधिल्ल १८५।१जु मारि सोलह १६ सुतो महि॥
तस भ्रूखांग१८६।१तनूंजलई उदय१८६।३सु सक्यो न लहि ॥
वाकोहु अमल करवाइ उत नानता१दि आमन निपुन ॥
चहि जनकवैर लग्गो चढन मंडुवपुर पृतना प्रगुन ॥३॥
इहिं निहारि नृप अग्ग जैत १ सारन २ लाये जब ॥
अग्रज १ सचिव २ उपेत ताहि च्यारि ४ हु बुझे तब ॥
मंडुवपति वह मिच्छ प्रचुरदल सँह वजत पहु ॥
अज्ञनृपन गंजि अरु लेत आव्दिकै सवतैं लहु ॥
संगर न ताहि अंगेमि सकैं उज्झहु लाल कुमंत्रैं यह ॥
छिन्नी स्वकीय विमुखन छिति जु सुहि दब्बहु उद्यम असह॥४॥

॥ दोहा ॥

और आदि से १६७ मयूख हुए ॥

१ लेने को २ अपने पिता का ॥ १ ॥ ३ आदि ॥ २ ॥ ४८ नार्ईकुई ५ भूमि को ६पुत्र ७विशेष गुणवाला ॥३॥ मन्त्री ८सहित ९बड़ी सेना १०बादशाह ११अ में राजाओं को १२सालाना खिराज मय से शीघ्र लेता है १३स्वामियों. हे मा बा! यह १५खोटी सलाह १४छोड़ो १६अपनी भूमि को शत्रु लोगों ने छीन ली है उसको दबाओ ॥ ४ ॥

सो मन्नी जिम सोंड १८६।५ सुनि, दिनकछु ठहरि उदार ॥
छिन्नी १ अरु रक्खी २ जु छिति, लिन्नीं बिमुखन लार ॥५॥
परतभार न सह्यो कँ पर, परैं काम जिन पोचि ॥
उनतैं सब छिन्नी अवनि, उचित देमन आलोचि ॥ ६ ॥
सुपहु १ जैत २ सारन ३ सचिव, सोंड१८६।५ हि निद्धि निद्दोरि ॥
पच्छी दिय ही जु कु प्रथम, तिन्ह मन कानि न तोरि ॥ ७ ॥
तिनमैं हो सु लिअबिक्कम १ हु, सँगर बिमुख कुसंग ॥
सो अपमान न जिहिं सह्यो, जो तिलतिलहुव जंग ॥ ८ ॥
भारपरत जिनजिन भटन, निर्वह्यो टारि नरेस ॥
दब्बे स्ववस प्रदेस जे, अप्पे तिनहिं असेस ॥ ९ ॥

॥ मदनावतारः ॥

तोग १८६।१ अनुजात जो गंग १८६।२ नवगामपति,
जास अभिधानँ जसकर्ण १८६।२ दूजो २ जगति ॥
सुरथपुर १ दे रु उडुँदुर्गपति सो करयो,
अप्पासिर तोग १८६।१ कृत क्रन सु इम उद्धरयो ॥ १० ॥
भिरत घुग्घुल १८१ हर जु टूक लक्खन १८५ भयो,
अमर १८६ तसपुत्र जिहिं खेट १ पुर अप्पयो,
हड्ड नवरंग १८३।२ कुल भ्रात माधव १८६।१ हितैं ॥
अस्व १ निज जुत्त अरनिठ्ठ २ अप्पिय इतैं ॥११॥

॥ दोहा ॥

मोरत वल मेवारको, सवन गिन्याँ कछु सत्वं ॥
बिमुखन दब्बी लेत वलि, पिक्खयो उचित नृपत्व ॥ १२ ॥

॥५॥ भार पड़ने समय जिन्होंने १ मस्तक पर भार सहन नहीं किया और काम पड़ने पर पोचे होगये उन्हींको २ दण्ड देना उचित विचार कर सब भूमि छीन ली ॥ ६ ॥ ३ पृथ्वी ॥ ७ ॥ ८ ॥ ४ निर्वाह किया ॥ ९ ॥ तोग का ५ छोटा भाई ६ नाम ७ तारागढ का किलादार बनाया ॥ १० ॥ घुग्घुल ८का पोता ९अरणेठा नामक ग्राम दिया ॥११॥ १०पराक्रम ११फिर १२राजापन ॥१२॥

इकखैं कोउन परत अब, संब[1] अचानक सीस ॥
मन औरैं कछु चिंत मन, जोरैं कछु जगदीस ॥१३॥
सोंड १८१।५ गिंनी नृप १ वा सुभट २, मंडू जाइ न मूर ॥
मैं दावा करि मिच्छसौं, करूँ सु व्याकुल कूर ॥ १४ ॥
करउरही यहमंत्रकरि, सादी चउसंत ४०० सज्जि ॥
मालव जो मंडूमुलक, गो लुट्टन तिहिं गज्जि ॥ १५ ॥

॥ मदनावतारः ॥

हड्डनृप छन्न इम सोंड १८६।५ सजि हंकियो,
ढार खुरमार रजभार रवि ढंकयो ॥
पुव्व[4] १ लक्खेरि १ पुनि जाइ पट्टनि २ परयो ॥
आपगा[5] थाग[6] कोटा ३ सु क्रमि[7] उत्तरयो ॥ १६ ॥
भ्रात भूसांग १८६।१ महिमानि मह[8] मंडयो,
द्वै २ दिवस रक्खि उपहार[9] इच्छित दयो ॥
मन्नि इम कोउ आजाइ जिन मोरिब[10],
इतहि चढिगो सु जनकारि[11] भुव दोरिबे ॥ १७ ॥
भूध्र[12] दर[13] लंघि मग लुट्टि खिच्चीन भू,
खुंदि किय पट्टनि १ रु भानपुर २ खीन भू ॥
रक्खि अपसव्य[14] चंद्राउतन रामपुर,
पैठिगो देस आवंत्य[15] भय दै प्रचुर[16] ॥ १८ ॥
कन्हड़ १ हिं खुंदि सारंगपुर २ कुट्टिकैं,
लिन्न करि खिन्न उज्जैन ३ लग लुट्टिकैं ॥

यह किसीने नहीं जाना कि अब मस्तक पर अचानक १ वज्र गिरेगा ॥१३॥ २ समझी ॥ १४ ॥ ३ सवार ॥ १५ ॥ ४प्रथम ५ नदी ६ जिस नदी में पैदल चलकर मनुष्य पार होसके उसको थाग (थाह) कहते हैं ७ चलकर ॥ १६ ॥ ८ उत्सव ९ नजराना १० पीछा फेरने को ११ पिता के शत्रु की भूमि को लूटने के लिये ॥ १७ ॥ १२ पर्वत के १३मार्ग को लांघकर (कोटा से बारह कोस दूर दरा नामक स्थान है)१४दाहिनी ओर १५उज्जैन के देश में १६बहुत ॥१८॥

हो सुत[1]सुत हम्मीर पिहित[2] मातुलगृह[3] पोतहि[4] ॥
सो सुमिरन बिनुसुद्धि[5] हुव न मंत्तन यह होतहि ॥
यातैं तनूज१ नत्तिय२ अनुज३ संबोधियं[6] इक१ जियन सब ॥
अखिलन बचैंन इम उच्चरिय कुलज[7] रहैं तजि तात[8] कब॥३५॥
निखिल निहोरत नृपहिं तनय लघु अजयसिंह तब ॥
किय बिन्नति करजोरि यहहि प्रभु इष्ट ततो अब ॥
मैं कुपुत्र यह मन्नि स्वामिसासन चढाइ सिर ॥
[10]रनसन मारतमरत कहौं खिल[11] आयु रहैं किर[12] ॥
यह मन्नि खुल्लि[13] रानहु अररं कढ्ढि असह घमसान करि ॥
बंगरिन[14] हीन बीविन बहुन बिरंचि गयो दिवनारि[15] बरि ॥३६॥
इम कुमार अरिसिंह१ आदि बारह१२ नृपअंगज[16] ॥
पाइ पाइ नृपपट्ट गये लरि नाक[17] ठाहि गज ॥
उभय २ पौत्र बसु८ अनुज इमहि रचिरचि अति आहव ॥
गये तिदिव[18] अरिगंजि धीर बनि समय धराधव[19] ॥
हड्डु सु प्रबीर हिंगुलु१ बहुरि पंरमानन[20] पीवत परयो ॥
बल्लन२समेत बीरन बहुन कलहैं[21] काय तिलतिल करयो॥३७॥

(दोहा)

लक्खनको वहपुत्र लघु, अजयसिंह अभिधान[22] ॥
बहु हनि निकस्यो आयुबल, बहु छत[23] लाहि बलवान॥३८॥
रक्खि धरम जिहिं रन रहे, इम रानाँ तेईस २३ ॥

णा के १पुत्र अरिसिंह का पुत्र हम्मीरसिंह २ मामा के घर में ४ बालकपन में ३छिपाहुआ था सो यह सलाह होते समय बिना ५खबर के स्मरण नहीं आया, इनमें से एक के जीवित रहने के लिये सबको ६ समझाया: ७ कुलवान् पुरुष ८पिता को छोड कर कब रहते हैं ॥३५॥ ९ सबको १० युद्ध से ११बाकी की आयु, किल अर्थात् निश्चय है तो निकल जाऊंगा: १२कपाट खोलकर १४ वलय (चूड़ियों) बिना १५ अप्सरा को विवाह के स्वर्ग में गया ॥३६॥ राजा के १६पुत्र १७स्वर्ग गये १८स्वर्ग: समय समय पर १९राजा बन बन कर २०शत्रुओं के मांस को २१युद्ध में शरीर को ॥३७॥ २२नामवाला: बहुत २३घाव पाकर ॥३८॥

इंद्रपुर ४ घुम्मि इत जागपुर ५ अंगम्यौं ॥
दब्बि रवनीज ६ इतकौं मऊ ७ लौं दम्यौं ॥ १९ ॥
दै बसी ८ त्रास सीतामऊ ९ दंडयो ॥
खुंदि सुरनैर १० हरिदुर्ग ११ इत खंडयो ॥
पिप्पलोदा १२ रु समखेट १३ जय पट्टिकैं,
दंडि अरुनोद १४ निंबोद १५ लिय दट्टिकैं ॥ २० ॥
वाहिनी[1] साहकी पिट्ठिलग्गी वही,
संग जिम छाँह तिम रंग[2] इच्छित सही ॥
सौंड १८६१५ जयलैंन दिन अैंन[3] कछु सैंनकैं[4],
नैंक निसमैं न मिलि चैंन दुव २ नैंनकैं[5] ॥ २१ ॥
धर्म आपत्तिके तुल्य चर्या[6] धरैं,
अर्व आरूढ कहुँ भोज्य सब अहरैं ॥
जानि इम बात भजिजात अरि जानिहैं,
तुल्लि असि मोघ खल मुच्छ कर तानिहैं ॥ २२ ॥
सोधि यह अप्प[9] निंबोद १५ सन संक्रम्यौं,
जंगहर अंग रुचिरंग दोउ २ न जम्यौं ॥
भ्रांत[10] दल व्रात[11] दुव २ प्रातपहिलैं भले,
चीरते दंस[12] १ पल[13] २ हड्ड ३ असि व्हाँचले ॥ २३ ॥
सत्रु बहु निंदगत[14] भान[15] लहि नाँ सके,
छिप्प[16] निसअंत तम लोह हड्डन छके ॥

॥१९॥ २० ॥ १ सेना. जिस प्रकार शरीर के साथ छाया रहती है तिस प्रकार २ युद्ध की इच्छा करतीहुई सेना साथ रही. शौण्ड ने जय लेने के लिये दिन के ३ स्थान में. कुछ ४ शयन किया परन्तु रात्रि में दोनों ५ नेत्रों को जराभी आराम नहीं मिला॥२१॥ आपद्धर्म के समान ६आचरण किया. घोड़े पर ७सवार. दुष्ट लोग ८ निरर्थक खड्ग उठाकर मूछ खींचेंगे ॥ २२ ॥ ९ चला १० शोभायमान सेना के ११ समूह १२ कवचों को और १३ मांस को चीरतेहुए ॥ २३ ॥ १४ निद्रा में होने से १५ चेत नहीं सके १६ शीघ्र

खान परेज अरि मुख्य भिरतहि[1] खप्यो ॥
धीर चहुवान परमान पीवत धप्यो ॥ २४ ॥
मरत सेनाधिपति पाय मिच्छन मुरे,
आहनैं केक नासीर बढि अंकुरे ॥
पार दलकेर दुव २ बेर हय प्रेरये,
गाहि भुजपीनं[2] सततीन ३०० खल गेरये ॥ २५ ॥
जुग्गिनी १ बीर २ पलचौर[3] ३ जयकारलै ॥
फोज मुरमाँइ[4] घनघाइ जस फारलै[5],
बंब घुरवाई[6] छकछाँइ[7] ठट्ठो बली ॥
वाह जग पाइ जुरवाइ उत अंजली[8] ॥ २६ ॥
जत्थ तरफत लखे मिच्छ घायल जिते,
तानि बहुजान कहुँ थानपठये तिते ॥
झारि असि रारि सतइक्क १०० निजहू झरे,
अट्ठ अरु बीस २८ तिनमाँहिं परि उब्बरे ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

तिन्ह डोलिन बैठारि तब, मुररि सोंड १८६।५ अतिमान ॥
कियउ साह हय लैनकौं, पुर दसपुर[9] प्रस्थान ॥ २८ ॥
मंडूपतिकी मंदुरा[10], ताजिनकी[11] इक १ तत्थ ॥
द्रंग नदीतट जिनदिनन, सुखित रहैं रुचिसत्थ ॥ २९ ॥
सत्तुन[12] मोदक १ दधि २ सिता[13] ३, असन[14] लहैं जे अर्व ॥
सुगम न्हान ग्रीखम समय, सरितातट इम[15] सर्व ॥ ३० ॥
दिनमैं खसखानन दुरैं, छिति १ टट्टि २ न छिरकाइ ॥

॥ २४ ॥ १ आगे बढकर २ पुष्ट भुजों से ॥ २५ ॥ ३ मांस खानेवालों से ४ पीछे फेरकर ५ बहुत. नगारे ६ बजवाकर ७ उत्साह में छाकर ८ हाथ जुड़वाकर ॥ २६ ॥ २७ ॥ ९ मन्दसोर पुर को ॥२८॥ १० हयशाला ११ घोड़ों की ॥२९॥ १२ सत्तू के लड्डू १३ शक्कर. जो घोड़े १४ खाते हैं १५ इस कारण से नदी के तट पर थे ॥ ३० ॥

निसबाहिर बंधैं निखिल, प्रतिठानन रुचि पाइ ॥ ३१ ॥

॥ षट्पात् ॥

बाजबहादुर बाजि खास ताजिक नत[2] खंधन ॥
इन दसपुर सतइक्क १०० बिहित[3] तटिनीतट[4] बंधन ॥
तिनहिलैन दढतक्कि सोंड १८६।५ सतत्रय ३०० भट सादिन[5] ॥
अव्वरजनि खिन आइ मारि तिन्ह त्रान[6] प्रमादिन ॥
सब्बन दुँ२बंध कारि छिन्न सब लोल हयन धारि अग्ग लिय॥
संजेत१ लुट्टि हंकत सतत[10] दरॆगिरि[11] पैठि मिलानदिय[12] ।३२।
भ्रात सु सुनि भूशांग १८६।१ हुलसि पहुँच्यो सहायहित ॥
बल खिच्चिन तिहिं बेर सुनत बाहिरहुव संचित[13] ॥
दसपुरतैं मिच्छ[14] १० दल सहँसइक्क १००० पिट्ठिलग्यो सैंरि[15] ॥
पहुँचि मिल्यो अगंपार[16] कलह खिच्चि२न सीरी करि ॥
दर रुक्कि झारि तुपकन दुहुँ२न इन संगर मंडिय असह ॥
भूशांग१भिरिगौ सतदुव२०० भटन सोंड२जुरिग सततीन३०० सह ॥

असह१नसह२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

आत दरेढिग अरिनमारि मोलिन[18] पगमोरे ॥
सहँस१००० मिच्छ दुवसहँस२००० असह खिच्ची२हु अँहोरे[19] ।३३।
तिन्हसुकाम तँहँ जानि सबर हक्कारि उँभैसत २०० ॥
रक्खि दरेपर लरन रिक्थ[21] बहु अप्पि करे रत[22] ॥
तिन रुपि निसंक भिल्लन तबहि जुरि रोके खिच्चिय१ जवन२ ॥
सहभ्रात१ सोंड२ कोटा क्रमिय[23] हेतिन[24] करि अहितन हवन[25] ।३४।

१सब ॥ ३१ ॥ २झुकेहुए कन्धोंवाले३कियेहुए४नदी के किनारे५सवार. उन घोड़ों की६रक्षा करनेवाले७अगाड़ी पिछाड़ी के दोनों बन्धन८चपल ९सामान लूटकर१०निरन्तर११पर्वत के दरे में१२मुकाम किया ॥३२॥ १३इकट्ठे १४म्लेच्छ सेना १५चलकर १६पर्वत के पार १७भिड़ा ॥ ३३ ॥ १८मोला (खुदा) को मानने वालों के१९रोके. दो२०सौ भीलों को बुलाकर२१धन देकर२२प्रीतियुक्त किये २३चला२४शस्त्रों से शत्रुओं का २५होम करके ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

दोहा ॥

कानि रक्खि भूगांग१८६की, हित कोटा चउ४रत्ति ॥
हय किय भेट सुभांड१८६।४रहि, घरघर पुर जसघत्ति ॥३५॥
उपालंभ जैत१ रु अधिप२, सारन३ सचिव४ समेत ॥
दिन्नौं कहि आन्यौं दुखहि, बुंदिय भय समवेत[२] ॥ ३६ ॥

पादाकुलकम् ॥

जोधतनय बीका इत जंगल, बढ्ढि संखुल[१]न अर्धन[४] महाबल ॥
भट्टि[२]न जित्ति तत्थ निर्जलभुव, हद निजनाम द्रंग बिरचतहुव॥३७॥
बिक्रमसकमुनिद्दगतिथि१५२७बित्ततसनि७बैसाख४तीज३सितसंगत
पहुँ बिक्रम१जंगल जयपायो, बर[६] पुर बीकानैर१ बसायो ॥ ३८ ॥
तँहँ तदनुजँ बीदा२हु बीरतर, स्वाभिध खेट रच्यो बीदासर२॥
जबतैं बीकानैर सु जंगल, बन्यो राज्य बढिबढि इतनैंबल ॥ ३९ ॥
बदत किते सर चउतिथि१५४५संबत,सो बहुँ[१०]हेतुन परत असंगत ॥
वृद्ध जोध जोधपुर बसायउ, पहिलैं तस बीका जनु पायउ ॥४०॥
बीस२०बरसबयकेनिकटहिबलि,कियजंगलधरअमलजित्ति[११]कलि ॥
अरु पुंगलपति पुत्री उद्वहि[१२], बिरच्यो द्रंग वहहु तँहँ बेगहि ॥ ४१ ॥

---

१ उलहना (ओलम्भा) २साथ ॥३६॥ ३ युद्ध में ॥ ३७ ॥ ४शुक्ल पक्ष ५ राजा बीका ने ६ श्रेष्ठ पुर ॥ ३८ ॥ ७ उसका छोटा भाई ८ अपने नाम से ९ खेड़ा (छोटा ग्राम) ॥३९॥१०बहुत कारणों से असङ्गत मालूम होता है क्योंकि जोधसिंह ने वृद्धाऽवस्थामें जोधपुर बसाया था जिससे पहिले ही बीका ने जन्म पालिया ॥ ४० ॥ ११ युद्ध १२ विवाह करके ॥ ४१ ॥

---

* यहां पर ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) ने बीकानेर के बसने के संवत् १५४५ का खंडन करके संवत् १५२७ में बीकानेर का बसना लिखा है सो ठीक नहीं है, क्योंकि बीकानेर का बसना संवत् १५४५ के वैशाख शुक्ल २ शनिवार के दिन प्रसिद्ध है सो ही बीकानेर के नैणसी महता, कर्नल टॉड और उदयपुर के महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास ने माना है. जैसलमेर के इतिहास में संवत् १५४२ में बीकानेर का वसना लिखा है सोभी असत्य है. यह संवत् १५२७ से बहुत दूर और ४५ के संवत् से अधिक समीप है. परंतु अधिक मत के कारण हम संवत् ४५ को हीं सत्य मानते हैं. बीका का पहिले पूंगल के पति की पुत्री से विवाह करना और फिर करनी माता की आज्ञा से सेखा नामक भाटी को

दोहा ॥

करिनिज संक्ति निदेसकरि, धरिवीका लहि धीर ॥
सेख भूप भट्टिय सुता, ब्याहो पुंगल वीर ॥ ४२ ॥
करत सक्तिके कथित करि, अवलौं विहित उछाह ॥
पहिलैं बीकानेर पहु, इम पुंगल उव्हाह ॥ ४३ ॥
पहु सूजा२ हुव जोधपुर, परत जोध१ तस पुत्त॥
तस कुमरहिं मृत बग्घ३ तँहँ, जनि गंग४हिं जसजुत्त ॥ ४४ ॥
अधिप परत सूजा२हु अब, सब नत्ती पढ़ तास ॥
कुमर बग्घ३को जो कुमर, अधिप गंग४ तँहँ आस ॥ ४५ ॥
राज्यकरत आमेर इत, भारमल्ल भूमान ॥
प्रतपै गढ चित्तोर पहु, रायमल्ल इत रान ॥ ४६ ॥
मंडूपतिके जिहिं समय, अस्व खास सत१०० आनि ॥
नृपहित सोंड१८६।५ निवेदये, जे दुखहेतु न जानि ॥ ४७ ॥

षट्पात् ॥

सु सुनि कुप्पि हुव असह मिच्छ वह बाजबहादुर ॥
वन्हिं मनहु बारूद अनखि उद्धत भजरयो उर ॥
बुन्दिय लेन विचारि कटक निज अखिल सज्जकिय ॥
गन तोपन बहु प्रगुन कलह जय उदय कज्ज किय ॥

१करनी माता की२आज्ञा से ॥४२॥ शक्ति के३उस४कथन को करने से अब तक उत्साह पूर्वक बीकानेर के राजा पुंगल में प्रथम४विवाह करते हैं ॥४३॥ जोधा की ५मृत्यु होने पर ॥४४॥ ६पोते(पौत्र)७कुआ ॥४५॥८भूपति ॥४६॥४७॥९बाग्नि में

पुत्री से दूसरा विवाह करना लिखा सो तो सब सत्य है परंतु यह विवाह बीस वर्ष की अवस्था में हो लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि बीकानेर की ख्याति में बीका का जन्म विक्रमी सम्वत् १४९५ में, एवं जोधपुर की ख्याति में १४८७में होना लिखा है इन दोनों में से कोई भी सत्य होवै, परंतु बीका ने पुंगल के राव सेखा की पुत्री से संवत् १५३५ के पीछे विवाह किया है सो बीका की अवस्था उस समय ४० वर्ष से न्यून नहीं थी और जोधपुर का राव जोधा भी उस समय विद्यमान था क्योंकि रावजोधा का देहांत संवत्१५४५ में ६१वर्ष की अवस्था में होना लिखा है. बीकानेरवाले जोधा का देहांत १५२७ में लिखते हैं परंतु यह मत से ऊपर का संवत् ही सत्य पायाजाता है ॥

बीरन पटाहु बढते बखासि थप्प्यो मंझुवभारभुज ॥
किय मंत्र निंयत पकरन कुटिल अधिपसुभांड१हि सहअनुज२॥४८॥
जवनकरे गृहजाइ दुष्ठ पहिलैं बालकदुव२ ॥
तिनमैं स्याम१ सु तास पास बिस्वासपात्र हुव ॥
प्रपा१ महानस२ प्रमुखं दुलभ बिल्ला तिहिं दिन्नौं ॥
सोवत इकनिस सबन पिहित जागि साह कं पिन्नौं ॥
पात्री सु उदंचन बिनुहि पुनि रक्खि आइ पल्यंक रहि ॥
स्याम१हिं जगाइ रिस तासिसिर करिय पिलावहु आब कहि॥४९॥

दोहा ॥

स्याम१ रु केसवदास२ तस, दुव२ कुलनाम दुराइ ॥
समरकंद१ अभिधान तिहिं, मिच्छ दियउ सुदलाइ ॥ ५० ॥
जवन सु ताहि बिबाह जिंहिं, बंध्यो स्वहित बिसास ॥
तनय खानदाऊद२ तस; इक१ किसोरबय आस ॥ ५१ ॥
समरकंद१ सन तिहिंसमय, जलमंगिय जवनेस ॥
पात्री उठि न लखी पिहित, उहाँ चकितहुव एस ॥ ५२ ॥
मिच्छकह्यो रे मैं मरत, अतुल पिपासा आइ ॥
समरकंद१ कंपत तब सु, बुल्ल्यो ताहि बताइ ॥ ५३ ॥
पाकै नाँहिं उदंचनहु, इम पाऊँ किम आब ॥
आनूँ नूतन डारि इहिं, स्वामिन जतन हिसाब ॥ ५४ ॥
भनि इम पात्री मंजि भरि, लाइ कह्यो अब लेहु ॥
मंगिमंगि जंपिय जवन, उचित भृत्य गिनि एहु ॥ ५५ ॥

पादाकुलकम् ॥

१ निश्चय ॥ ४८ ॥ २ पाणेरा (आबखाना) ३ रसोईधर ४ आदि ५ अधिकार ६ छान ७ पानी पिया ८ पानी की मटकी (पात्र) को ९ ढकन दिये विना ही १० सेज पर आकर सो रहा ११ पानी पिलाओ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ १२ दाऊदखां सोलह बर्ष की अवस्था में ही १३ हुआ ॥ ५१ ॥ १४ ढकी हुई नहीं देख कर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

जान्यौं स्याम१ कटक ध्रुवजैहैं, लरि सत्वर बुंदियधर लैहैं ॥
यातैं जनकभुवहिं मंगों वह,सोधि इम सु बुल्ल्यो अंजलिसह।५६।
किंकरपर जो साह महरकिय, बखसहु तलो ब प्रभु वह बुंदिय ॥
जान्यौं साह यह न बदलैं जन, ममहु लैन बुंदिय निश्चय मन।५७।
तो सुहि दै इहिं मुदितकरौं तिम, इक्क१पंथ दुव२कज्ज बनैं इम ॥
यहविचारिबुंदियतिहिंअप्पिय, थिरदलमैंहुमुख्यसुहिथप्पिय ॥५८॥
इक्कल १ साह रह्यो गढअंदर, पिल्ल्यो कटक सबै बुंदीपर ॥
हंकिय समरकंद१रन जयहित, आत भानपुर जानिपरी इत ॥५९॥

दोहा ॥

सट्ठिसहँस ६०००० दल संक्रमत, जिततित जग भजिजात ॥
अंध्वजनन अग्गैं १ उँदक २, पीछैं १ इचिक्किल २ पात ॥६०॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१ऽयणे पञ्चम५राशौ वीतिहो लवसुधेश्वर १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहित०पाख्यानावसर०याहार्यबुन्दीभूपालभारमल्ल १८६।४ चरित्रे स्वाग्रजप्रसादवसुधाविभागप्राप्तकरपुर १ पत्तनसारणा १ जैल सहायसमिद्धसैन्यसङ्गतसन्नद्धशोण्ड१८६।५ पूर्वत्रय ३ परिच्छिन्नपूर्व

लेना १ निश्चय ही जावेगी २ शीघ्र. पिता की३ भूमि को ही ४ हाथ जोड़ कर बोला ॥ ५६ ॥५७॥ ५८॥ ९ चलते समय ६ मार्ग के लोगों को. आगेवालों को ७ पानी और पीछेवालों को ८*कीच मिलता है ॥ ६० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंशकी शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के राजा भारमल्ल के चरित्र में बडे भाई की प्रसन्नता से भूमि के विभाग में करडर नगर पाकर सारण और जैत्र की सहायता से युद्ध में बडी सेना को साथ ले, सज्जीभूत शौंड आदि तीनों का छिनीहुई पहली पृथ्वी को पीछी लेना, जैत्र और सारण का भूणंग के अर्थ गयेहुए कोटा आदि गामों को पीछा दिलाकर मवडू के पति म्लेच्छराज को मार, वैर लेने को प्रस्थान करने की इच्छावाले शौण्ड को हठपूर्वक बुंदी

*"जंबालचिकिलौ पंकः कर्दमश्च निपद्वरः" इति हैमः॥

पृथ्वीप्रत्याक्रमण १, जैत्र १ सारण २ भूणाङ्का १८६।१ र्थमतिदापितगतकोटाग्रामादिकमरडूमहीशम्लेच्छराजमारणावैरिवालनप्रतिष्ठाप्तुशोरड १८६।५ समरसभक्षुन्दीप्रत्यानयन २, नृप १ सचिवा२ऽऽदिचतुष्टय ४ सम्बोधितशोरड १८६।५ स्वस्वामिभटवर्गसाहसमाक्रान्तप्रान्तप्रत्यादान ३, कलहकार्यशेमुषीशिथिलप्रेरणाप्रतीपसर्वथाविमुखसगर्वसर्वस्वहरणावसरस्वामिसेनासम्मुखसन्नद्धसाङ्गरत्रिविक्रम १ प्रधनपरासूभवन ४, नृपा १ दिचतुष्टय ४ कृतप्रभुकार्यरणरसिकनियोगाऽनुकूलस्ववीरवर्गार्थपरिच्छिन्नसमस्तप्रतिदापन ५,नरेन्द्रस्वप्रसादप्रापितसुरथपुरतोगा १८६।२ऽनुजयशःकर्णा१८६।२ऽपर २ नामगङ्ग १८६।२ तारादुर्गाध्यक्षीकरण ६, बुन्दीमरडूपतिमृधमृतघुग्घुल १८१।१ वंशीयलक्ष्मण १८५।१ तनुजन्माऽमरसिंहा १८६।१ऽर्थखेट १ नामपुरपट्टाऽर्पण ७, नवरङ्ग१८३।२ वंशीयमाधवसिंहा १८६।२ऽर्थस्वारोहसप्ति७ सहिताऽरणोष्ठ २ नामनिवेशनवितरण ८, स्वस्थानीयकरपुरसन्नद्धचतुःशत ४०० सादिसङ्घशोरड

में पीछा लाना, राजा और मन्त्री आदि चारों के समझाने पर शौंड का अपने स्वामि के सुभटवर्ग के हठ से लियेहुए प्रान्तों को पीछा लेना, युद्ध के कार्य में शिथिल बुद्धिवाले, प्रेरणा से विरुद्ध, सर्वथा विमुख ऐसे सैंगर त्रिविक्रम का गर्व के साथ सर्वस्व हरने के समय स्वामिसेना के सन्मुख सन्नद्ध होकर युद्ध में माराजाना, राजा आदि चारों का प्रभु का कार्य करनेवाले, रणरसिक आज्ञानुकूल अपने वीरवर्ग के अर्थ छीनेहुए सब गाम आदि पीछे देना, राजा की प्रसन्नता से तोग के छोटे भाई यशकर्ण दूसरे नाम से गंग को सुरथपुर देकर तारागढ का किल्लादार बनाना, बुन्दी में मरडूपति के युद्ध में मरेहुए घुग्घुल के वंशवाले लक्ष्मणसिंह के पुत्र अमरसिंह के अर्थ खेड़ा नामक पुर का पट्टा देना, नवरंग के वंशवाले माधवसिंह के अर्थ अपने चढने के घोड़े सहित अरणेठो नामक स्थान देना, अपने रहने के करवर नगर में सज्ज होकर चार सौ सवारों के समूह सहित शौरड का मालवा लूटने को जाना, कोटा में दो दिन बिताकर भाई भूणंग का आतिथ्य स्वीकार करके मार्ग में आयेहुए पाटन, भाणपुरा आदि खीचियों के देश लूटकर हाडा का मालवा की सीमा

१८६।५ मालवलुण्टनप्रस्थान ९; कोटाविहापितदिनद्वय २ स्वीकृत भ्रातृभूखाङ्ग १८६।१ऽऽतिथ्यविप्लुतमार्गागतपट्टाख्य १ भानुपुर २ प्रभृतिखिच्चिखण्डहड्डमालवसीमसङ्क्रमण १०, विप्लुतविशाल १ न्द्रपुर २ यागपुरा ३ऽऽदिमालवोदग्भागसमाचरिताऽऽपद्धर्मचर्यशौण्ड देव १८६।५ स्वसमापनसज्जसंमुखसमागतमण्डूपतिचमूपरिसौप्ति-कसम्पातन ११, व्यापादितसेनाऽध्यक्ष १ सहितसपत्नशतत्रय ३०० निर्घोषितविजयनिःशाणदशपुरप्राप्तनृपाऽनुजबलात्कारविलुण्टि-तवैरिवाजिशतक १०० स्वसद्मसरणिसमानयन १२, ज्ञातखिच्चि १ यवन २ शत्रुसैन्यद्वय २ समभिषेणनसानुमत्सन्धिपुटान्तरायातसहा यसम्मिलितभूखाङ्ग १८६।१ समुपेतकृतकियत्कलिकौतुकप्रत्यनी कप्रतिमल्लीकारितसमाकारितप्रसारितशबरशतद्वय २००चतूरात्रस्वी कृतकोटापतिसत्कारबुन्दीसमागतशौण्ड १८६।१ तत्तुरगशतक १०० स्वाग्रजोपायनीकरण १३, नृप १ जैत्र २ सारण ३ सचिवा ४ दिनृ पाऽनुजोपालम्भन१४, योधपुराधिराजराष्ट्रकूटयोधराजतनूजविक्रम

में जाना, विशालपुर, इन्द्रपुर और यागपुर आदि मालवा के उत्तर भाग को लूटकर आपद्धर्म का आचरण करनेवाले शौण्डदेव का अपने मारने को सजकर सन्मुख आईहुई मण्डूपति की सेना पर रतिवाह देना, सेनाध्यक्ष को तीन सौ शत्रुओं के साथ मारकर विजय के नगारे बजाकर मंदसोर पुर में आकर रा-जा के छोटे भाई का बल पूर्वक वैरी के घोड़ों को लूटकर अपने घर के मार्ग में लाना, खीची और यवन दोनों शत्रुओं की सेना का युद्धयात्रा करना जान, पर्वत की सन्धि (दरा) में आय, सहाय के अर्थ मिलेहुए भूणंग सहित कुछ युद्ध कौतुक कर, शत्रुओं से मुकाबिला करनेवाले दो सौ भीलों को बुलाय उनको वहां रोपकर पीछे कोटा के पति का चार रात्रि तक सत्कार स्वी कार करके बूंदी में आयेहुए शौण्ड का उन सौ घोड़ों को अपने बड़े भाई की भेट करना; राजा, जैत्र, सारण और सचिव आदि का राजा के छोटे भाई को उपालम्भ देना, जोधपुर के पति राठोड़ जोधा के पुत्र विक्रम और बीदा दोनों सहोदर भाइयों का जंगल देश को लेना, युद्ध में सांखला भामारों को मारकर भाटी यादवों को अपने हुक्म के वश करके शक्ति की आज्ञानुसार पुंगल के

बिद २ सोदरद्वय २ जङ्गलजनपदसमाक्रमण १५, रणशातितशङ्खु ल १ प्रामारशासनवशीकृतभट्टि २ यादवशक्तिशासनाऽनुसारसमनुष्ठितपुङ्गलपतिभट्टिभूपसेखसुतापाणिपीडनविक्रम १ सूचितसंवत्समयस्वसञ्ज्ञासम्बद्धविक्रमनगर १ नामनव्यनगरनिर्मापण १६, प्रमाणशून्यमतान्तरसंवन्निरास १ बिद २ रचितबिदासर २ स्थानीयसूचना २ समेतदेवीनिदेशवशजाङ्गलाधिराजविक्रम १ वंशपट्टधरप्रथम १ पुङ्गलपतिकुलपतिपुत्रीपाणिग्रहणनियमविख्यापन १७, योधराजा १ नन्तरकतिकियत्कालराज्यतत्पट्टपपुत्रसूर्यमल्ल २ संस्थावसरतत्तनूजमुख्यव्याघ्रराज ३ योधपुराधिपत्यप्रापण १८, चित्रकूटाधिराजराजमल्ल १ ऽऽमेरनगरनरेशभारमल्ल २ समयशोराड १८६१५मराडूपतिवाजिविप्लवसूचन १९, श्रुतैतदुदन्तकालकुपितपुनर्बुन्दीसमाचिक्रमयिषुम्लेच्छराजबाजबहादुर१ सुप्रसादितसैन्यसज्जीकरण२०, निग्रहीतपूर्वशिशुश्यामाऽऽयत्तीकृतप्रपा १ महानसा २ द्यधिकारात्र्यन्तरपिपासाऽवबुद्धप्रच्छन्नपीतजलाऽपिहिततत्पात्रप्रत्यागतकप-

पति भाटियों के राजा सेख की पुत्री से विवाह करके बीका का ऊपर सूचना कियेहुए सम्वत् के समय में अपने नाम से बीकानेर नामक नवीन नगर वसाना, प्रमाण से शून्य ऐसे मतान्तर के सम्वत् का खंडन और बीदा के रचेहुए बीदासर स्थान की सूचना समेत देवी की आज्ञा के वशवर्ति जांगल देश के पति बीका के वंश के पाट धारण करनेवालों का पुंगल पति के कुलपति की पुत्री से विवाह करने का नियम प्रसिद्ध करना, जोधा के पीछे कितनेक समय राज्य करके उसके पाटवी पुत्र सूर्यमल्ल (सूजा) के देहान्त समय पर उस(सूर्यमल्ल)के पाटवी पुत्र व्याघ्रराज(बाघा)का जोधपुर का स्वामी होना, चित्तौड़ के राजा रायमल्ल, आम्बेर नगर के राजा भारमल्ल के समय शौरड का मण्डूपति के घोड़े लूटने की सूचना करना, यह वृत्तान्त सुनकर समय फेर से कुपित हुए बाजबहादुर का फिर बुन्दी लेने की इच्छा से कृपापात्र सेना को सज्ज करना, पहिले पकड़ेहुए बालक श्याम के पाणेरा(जलघर) और रसोईघर आदि अधिकारों को वश में करके रात्रि में प्यास से जगकर जल पीकर पानी के पात्र को विना ढकाहुआ रखकर पीछे आयेहुए

जवनराज लहि दुलभजय, सजवै चढ्यो गढसीस ॥ ३९ ॥
हे पौत्र२ न केते कहत, हो पिहित सु हम्मीर ॥
इम रानाँ इक्कबीस२१ ही, विदित परे रन बीर ॥ ४० ॥
महि अनल गुन चंद १३३१ मित, जँहँ विक्रम सक जात ॥
कतल दुर्ग चित्तोर करि, लिय जवनेस लुभात ॥ ४१ ॥
वरस तीन३रन रवि बिकृति२३, सिंचि रान निज सोन³ ॥
गढ⁴संटै दै अ⁵सुगये, तदपि रह्यो तवतो न ॥ ४२ ॥

॥ मनोहरम् ॥

घायन त्रि⁶हायनलौं संतत⁷ समर मंडि,
राखि रनथंभराज⁸ सौंपन सम्हाह्यो नाँ ।
साह्यो हठ बप्पवंस⁹ विरुद बढावनकौं,
रावनकौं पीठ¹⁰दै मिटावनकौं साह्यो नाँ ॥
जातजान्यौं जनन¹¹ पै¹² मन न मुरात जान्यौं,
व्रतहि निबाह्यो अपकीरति बियाह्यो नाँ ।
देखो रान लक्खन अलाउद्दीन११अंत¹³ककौं,
औन¹⁴ दैन चाह्यो पर¹⁵ रैन¹⁶१८३ दैन चाह्यो नाँ ॥४३॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे१ पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रचरणडासि १ वीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवं-

१ शीघ्र ॥३९॥ कितने ही कहते हैं कि राणा के पौत्र नहीं थे, और हम्मीरसिंह २ गुप्त था इस तरह इकवीस राणा होकर मरे ॥ ४०-४१ ॥ अपने ३ रक्त से ४गढ के बदले में ५प्राण देकर गये तो भी उस समय तो गढ नहीं रहा ॥ ४२ ॥ तीन ६ वर्ष तक ७ निरन्तर ८ रणस्तम्भ के राजा रत्नसिंह को शरण रखकर पीछा देना अङ्गीकार नहीं किया ९ बापा रावळ के वंशवाले ने १० पीठ देकर अर्थात् रावण से भी आगे बढगया ११ वंश को नष्ट होता जाना. १२ परंतु मरने से मन नहीं मोड़ा. १३यवनराज को अपना१४ घर देदेना चाहा१५परंतु अपने शरणागत१६रत्नसिंह चहुवाण को देना नहीं चाहा॥४३॥

श्रीवंशभास्करमहाचम्पू के पूर्वायण के पंचमराशि में अग्निवंशी चहुवाण के वंश में उत्पन्न होनेवालों के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और

टकुद्धयवनेन्द्रस्वप्रतिबोधितश्याम१सकाशवामार्गणा२१, गोपितश्या म१केशवपूर्वनामद्वय२प्राक्कालपरिणीतयवनपुत्रीकसमुत्पादितदाबूदा१ऽऽदिदायादप्रभुप्राप्तसमरकन्द१स्वनामहड्डुपूर्वतद्यवनपुनरानीतनिवेदन२२,स्वसेवासावधानताप्रसन्नम्लेच्छपतिमिमार्गयिषितसमरकन्द१बुन्दीराज्ययाचन२३,दत्तप्रार्थितसेनाऽध्यक्षीकृतसमरकन्द१स्वयमात्तदुर्गाश्रयम्लेच्छमहीपषष्टिसहस्र६०००० सर्वसैन्यबुन्दीविजयप्रस्थापन२४,मार्गपुर१ ग्रामा२ दिप्रजाप्रद्रावकभानुपुरसमीपसमागतपरिपंथकपृतनाशुद्धिबुंदीवास्तव्यवर्गसमाकर्णन २५ मेकविंशो २१मयूखः ॥ २१ ॥ आदितोऽष्टषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

सुनि बुंदिय खित्तल सचिव, इम मंडुवदल आत ॥
किय रहस्य एकत्रकरि, विदित बंधु १ भट २ व्रात ॥ १ ॥
सोंड १८६।५कहिय लघु सिंह १ व्है, दंती २ व्है गुरुदेह ॥
तदपि विदारै कुंभ तस, आलोचहु दृढ एह ॥ २ ॥

का कपट से क्रोध करके अपने जगायेहुए श्याम से जल मांगना, पहिले के श्याम और केशव इन दोनों नामों को छिपाकर पहिले समय में विवाह की हुई यवन पुत्री से दाऊदखां आदि पुत्र उत्पन्न करके स्वामि से पायेहुए अपने समरकंद नामवाले पहिले के हाडे उस यवन का फिर लायेहुए(जल)का निवेदन करना, अपनी सेवा की सावधानता से प्रसन्न म्लेच्छपति से मांगने की इच्छावाले समरकन्द का बुन्दी के राज्य की याचना करना, उसकी प्रार्थना को स्वीकार करके उसीको सेनापति बनाकर स्वयं किले का आश्रय लेकर म्लेच्छ महीप का साठ हजार सेना बुन्दी को विजय करने को रवाना करना, मार्ग के पुर, ग्राम आदि की प्रजा को भगानेवाली शत्रु की सेना का भाणपुर के समीप आने की बुन्दी के वीरों का खबर सुनने का इक्कीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २१ ॥ और आदि से १६८ मयूख हुए ॥

१सवाह २ समूह ॥ १ ॥ ३ हाथी ४बड़े शरीरवाला होता है तो भी ५विचारो

द्वीपी१ लघु गुरु देहके, गवय १ गवल २ बल गंजि ॥
दुसह गजि पारत दहल, भिरतहि डारत भंजि ॥ ३ ॥
यातैं लखहु न बहु१अलप२, सजहु इक्क १ मन सर्व ॥
अनीभवँर हम अग्ग व्है, खंडहिं दुजन अखर्व ॥ ४ ॥

॥ षट्पात् ॥

गहत इक्क१आमगुन तानि कीट२हु तिहिं तोरत ॥
बहुगुनजुरि बंधैं सु १ इभ२हु मदमत्त अहोर्रत ॥
यातैं सब मनइक्क१होहु कबहुन तो हारहिं ॥
समरकंद१सह सेन बंदन हरि आन बिगानहिं ॥
बढि अग्ग जित्ति मालव बलन शेधकको सूर न रहत ॥
जो मिच्छ भजहिं दूथैंनि जनित बिनु सूथनि गूथनि बहत ॥५॥
इम न ततो हम अलस जोति सीरहु नन जानैं ॥
असन१ बसन२ की आस मनन मनन तब प्रमानैं॥
मिलि यातैं इक्क१ मन तुरग नक्खहु तिन्ह लासहिं ॥
मथि हम बिसिख समुद्र नियत जयरत्न निकासहिं ॥
यहसुनत अमर माधव २ मुखन कियसराह तस वाइ कहि ॥
जहँ नृप१रु जैत२सारग्ग३सचिव ४ चंबी चउ४न नय एसनहि॥

---

१ बघेरा (दोगला सिंह) छोटा होता है तोभी बडे देहवाले २ रोझ और ३ आरणे(वन के) भैंसे के बल को दबाकर ॥ ३ ॥ ४ सेना के दुल्लह होकर ॥ ४ ॥५ कच्चे तन्तु को ६ कीड़ा भी खैंचकर तोड़ डालता है. मस्त ७ हाथी को ८रोक लेते हैं ९ मुख १० बन्दर ११ दो स्तनवाली के जनेहुए (मरुभाषा में स्त्रिया स्त्री को दूथणी कहते हैं जिसके जनेहुए) अर्थात् दासियों से. बिना १२सूथनों (पाजामों) के होकर अर्थात् उनके पाजामे फट जावेंगे और १३ विष्टा १४ करदेंगे ॥ ५ ॥ यह नहीं होवे तो हम आलसी १५ हल भी नहीं हांक जानते तब मन में वस्त्र और भोजन की आशा भी प्रमाण नहीं करें १६ बिना शिखावालों (यवनों) के समुद्र को मथ कर १७ निश्चय ही १८ आदिक ने १९ कहा यह नीति नहीं है ॥ ६ ॥

कहाँ अयुतखट६००००कटक कहाँ अप्पन छसदँस६०००किर॥
तकि भुवलेन तहाँहु आतस्याम १ हिं बनि आसिर २ ॥
लाय हयन तुम लाल बीज विपदामय बाँधिय ॥
यहफल तास अमोघ अबहि पक्खिपर आविय ॥
पूगें न लरन अप्पन परन मन्नहु इम सबको मरन ॥
को तब उपाय छितिहित करन रहहिं बंस बीजहु धर न ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

हे हड्डे अग्गे इहाँ, बीजहु गो ब बिलाइ ॥
करनी यहहि कथानिका, जुरहु समुख तो जाइ ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

यह मंडुवपति अज्ज अखिल दक्खिन बलि ऐंचत ॥
इहिं मंडुवपति अग्ग खग्ग कोउन रुपि खैंचत ॥
मङ्गँपुब्बहि साहिप अज्ज आंब्दिक इहिं अप्पाहिं ॥
यह दिल्लियबल उदधि थाहि नैंकन मन थप्पाहिं ॥
आश्रय १ रु द्वैध २ यातैं उभय २ अब कुल रक्खन अनुसराहिं ॥
रहिजाइ जबहि दल अल्प रिपु कदंन तबहि छलबल करहिं ॥९॥

॥ दोहा ॥

भायो सुहि बत१ भूपको, सारन२ जैत३ सहाय ॥
भटन चब्बि ओठन भनिय, हरख दब्बि तब हाय ॥ १० ॥
सहाय १ वहाय २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

रचत मंत्र यह रुठि तरजि गय उठि चउ ४ हि तब ॥

---

१ किल (निश्चय ही) २ असुर (यवन) ३ हे लाल ! तुमने घोड़े लाकर ४ पोए ५ खाली नहीं जानेवाली ॥ ७ ॥ ६ कथा ॥ ८ ॥ मांगने से पहिले ही ७ आर्य राजा ८ सालाना खिराज देते हैं ९ नीति के छः गुणों में से आश्रय और द्वैधीभाव से अपने कुल को रक्खो १० नाश ॥ ९ ॥ १० ॥

माधव१८६।१गंग१८६।२रुग्रमर१८६।१सोंड१८६।५कातरगिनि ए सव
सारन १ जैत २ रु सचिव ३ विहित लैकैं इततैं बलि ॥
वनि सु संधि विग्रहिंक मिले सम्मुह जँहँ चम्मलि ॥
उपदा निवेदि तीन ३ न अरज करिय स्याम१प्रति जोरिकर ॥
हम अनुग सिरहिं धारत हुकम मन्नि उचित मंडहु महर ॥ ११॥
हमछन्नैं लिय हयहु सोंड १८६।५ सिसुपन हठसंग्रहि ॥
वे हाजरि सव अत्थ नैंक मंतुहु नृपमैं नहिं ॥
समरकंद १ इम सुनत कह्यो छोरहु बुंदीकँहँ ॥
लहि सुभांड १८६।४ दुवलान १ तथा समुचित विलसहु तँहँ ॥
संवसंथ इतर बारह १२ सहित करि सु स्वीय सद्दहु हुकम ॥
वलि ग्राम पंच ५ सोंड१८६।५हिं वखसि व्है हैं सवन अधीस हम॥१२

॥ दोहा ॥

तवहि पटा लिखवाइ तिन्ह, सचिव १ वंधु २ लहि संग ॥
दै उपदा पच्छेमुरहि, आये रहित उमंग ॥ १३ ॥
दिय दुराइ पुव्वहिं पिहिति, वसु १ भूखन २ मुखं वौंत ॥
तजि बुंदिय दुवलान तव, पत्तो नृप कढि प्रात ॥ १४ ॥
निज गज १ तुरग २ रु नालिका ३, सवदिय बुंदिय संग ॥
मन यातैं कातर समुझि, रच्यो जवन हितरंग ॥ १५ ॥
तोग १८६।१ अनुज जसकर्ण १८६।२ तँहँ, तारा दुर्ग तजैंन ॥
सुपहु ताहि दे निजेंसपथ, आन्यौं उज्झि सु अँन ॥ १६ ॥
सोंड १८६।५ हिं गूढ विचारि सुहि, मिलि इन कठिन मनाइ ॥
पंच ५ ग्राम तक्षुर्त्तें १ प्रमुखं, स्वीकारित समुझाइ ॥ १७ ॥

१मन्नि करनेवाले पन कर २विग्रह करनेवालों से मिले ३सेवक ॥११॥ ४आप राघ ५ग्राम ६पति ॥१२॥ ७नजराना ॥१३॥ ८गुप्त ९धन १०आदि ११ समह ॥१४॥१२तोपें १३कायर जानकर ॥१५॥ १४अपनी सौगन दिलाकर. वह स्थान १५छुड़ाकर ॥१६॥ १६तालखा नामक ग्राम१७आदि १८ स्वीकार कराया॥१७॥

इम सु स्याम १ हुव आइकैं, पुरबुंदिय छितिपाल ॥
सूनु खानदाऊद १ सह, बुल्लै बेगम २ वाल ३ ॥ १८ ॥
बुन्दी जनपद वाहिनी, मिच्छन विचरि महंत ॥
समरकंद१वस करि करे, सब हाजरि सामंत३ ॥ १९ ॥
सीमाहर सत्तुहु सकल, लघुं तस पयन लगाइ ॥
छिन्नी नवं लिन्नी सु छिति, सासनवस समुझाइ ॥२०॥
बुंदी त्रि३ सहँस२०००रक्खि वल, मान अतुल जयमत्त ॥
करि प्रबंध खिलँ जो७५०००कटक, पच्छो मंडुव पत्त ॥२१॥
बुल्लै जव गृहतैं सवन, समरकंद१स्वसमाज ॥
माधव१सौंड२रु गंग४मुरि, आत खिल१रु अधिराज२॥२२॥
पुनि स्वनामे लेखित पटा, अखिलन नूंतन अप्पि ॥
जे बुंदियभट पुव्व जिम, थिर रक्खे निज थप्पि ॥२३॥
सनैं सनैं तिन्ह संहरन, अवहि धीरधर एह ॥
स्वांतं१अहित२बाहिर१सहित२, नरन दिखावत नेह ॥२४॥

॥ षट्पात् ॥

समरकंद१लिय समुझि आत सौंड१न उनमत्त सु ॥
क्यों माधव२ जसकर्ण२पटा मम लहि न आत पसु ॥
इहिं आगसैं बलबंधि अनखि तिन२ पैं उफनायउ ॥
जंत१८५।१रुजितें तिन्ह जंपि छलन तब चलन छमायउ ॥
मिस खेनं१अरसं२कोऊसमय दोऊ२ समय दिखाइदिय ॥
तुम जो असक्त भेजहु तनय कहि इम मिच्छहु माफकिय ॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ १८ ॥ १ देश में २ सेना ३ उमरावों को ॥१९॥ ४सीमा को हरनेवाले ५शीघ्र ६ नवीन ॥ २० ॥ ७ पार्थों की सेना को ८भेजी ॥ २१ ॥२२॥ ९अपने नाम के लिखे हुए पट्टे, सबको १०नवीन देकर ॥ २३ ॥ ११ मारना १२मन में शत्रु और बाहिर से मित्र ॥ २४ ॥ इस १३अपराध से १४ रोगी होना कहकर १५ क्षयरोग १६ मस्सा (बवासीर) ॥ २५ ॥ २६ ॥

अक्खय तिन सुत सिसु अबहि, अैहै लहि बय अत्थ ॥
काय१बचन२मन३ करि करहिं, सेवन प्रभु हितसत्थ॥२६॥
*जरासिथिल इत अति ×जरठ, दिय जैत१८६हु तजि देह॥
स्वामी हुव तस मुख्यसुत, गैनोली निजगेह ॥२७॥
सारन१८६।२माधव१८६।१हे सबल, पै नृप दिन प्रतिकूल॥
एहु मरे बिधिबस उभयर, सोहुव सब हिय सूल ॥२८॥
वंसीपति हुव छ१सम बय, सारन१८६।१सुत सामंत१८७।१॥
बाल जदपि मतिवृद्ध बुध, इच्छैं बढन उदंत[२] ॥ २९ ॥
भो माधव१८७।१सुत इत भरत१८७।१,निडर लाडपुर नाह॥
सोंड१८६अमर२गंग३रु सचिव४,रहे चउ४हि नृपराह॥३०॥

॥ षट्पात् ॥

खित्तल बनिक खटोर सचिव कोबिद सकुनागम[३]॥
परि है नृपहि बिपत्ति कहिय जब भोन अतिक्रम[४] ॥
द्रंग[५] सु अब दुबलान रहैं सेवन पति हित रत ॥
जिहि पुब्बहिं लिय जानि बिखम परिहै दुकाल[६] बत ॥
संवत कु बेद तिथि१५४१गत समय अक्खय नृपहिं प्रतीप[७] अह[८] ॥
आगामि[९] अब्द[१०] सब संहरन[११] अब दुकाल परि है असह ॥३१॥

॥ दोहा ॥

वित्त१रु जे भूखन२बसन३, ए सब दै लै अन्न ॥
निखिल मरहु कुंट्ठार[१२] नृप, समय घोर संपन्न[१३] ॥ ३२ ॥
प्रत्यय[१४]हो अग्गहिं नृपहिं, सचिव न चवहिं[१५] असत्य ॥
हिय सोच्यो अब जानि हम,व्है किम छमहु असत्थ ॥३३॥

---

*बुढापे से शिथिल. ×अत्यन्तवृद्ध ॥२७॥२८॥ छः १वर्ष की अवस्था में २वृत्तान्त ॥२९॥३०॥ ३ शकुनशास्त्र में पण्डित. इस ४उपात्यय (उलटापलटी)के होने से पहिले ही उसने कहदिया था ५ नगर ६ दुर्भिक्ष पड़ने की वार्ता ७ उलटे ८ दिन ९ आनेवाला १०वर्ष. सब का ११संहार करनेवाला ॥ ३१ ॥ १२कोठार. १३घोर समय के साथ ॥ ३२ ॥ १४ भरोसा. झूठ नहीं १५बोलेगा ॥ ३३ ॥

षट्पात्

छमा१दया२निधि छितिप अखिल संसृति[1] उपकारक ॥
इम उदार३ आलोचि[2] सबन बिपदा संहारक ॥
इतउततैं आकारि[3] प्रचुर बानिज बिक्रयपर[4] ॥
मंत्रीकथित प्रमान कियउ निजपुर अन्नाकर[5] ॥
6पय बिरचि द्रम्म लक्खन बहुन क्रम लक्खनमन धान्यकरि
खातिका[6] १ खात[7]२ गहिरे खनित[8] भवन ३ कुसूल४हु[9] दिन्न भरि।३४।

दोहा—अधिपति पुब्बहि चेति इम, मतिसंख[10] मंत्र प्रमानैं[11] ॥
जगहिं जिवावन जो भयो, धन १ दै धान्य २ निधान[12] ॥३५॥
संबंधी निज तेहु सब, चतुर दये चेताइ ॥
न दयो बुंदिय भेद नृप, जानि अबहु भजिजाइ ॥ ३६ ॥
जितनैं सचिव कही जु ही, बनी अचानक बत्त॥
दुवचालीसम ४२ अब्द इह, पुहवि दुकाल सु पत्त ॥ ३७ ॥

॥ षट्पात् ॥

जिन गृह बल जान्यौं न प्रचुर तिनकै हु पठायउ ॥
बुंदियभट करि बिभैय[13] अखिल जनपद[14] अपनायउ ॥
लघु भूपहु कति चलित सहज लिय झेलि प्रजा सह ॥
जन लक्खन यहजानि आनि नृपढिग कट्ट अंह[15] ॥
इम जग जिवाइ करुनाउदधि धवल बह्यो अम्मीढधुर[16] ॥
धनपति[17] निधान निज जनु धरिय पूरि नव९हि दुवलानपुर ।३८।

॥ दोहा ॥

---

१ संसार का २ विचार कर ३ बुलाये ४ बेचने को ५ अन्न की खान ६ खाइयें (धन के खजाने) ७ खात (अन्न का खजाना) गहरे ८ खुदेहुए ९ कोठे ॥ ३४ ॥ १० सन्धी की सलाह ११ प्रमाण करके १२ धन ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ १३ भय रहित १४ देश को १५ दिन १६ अजमीढ राजा की धुर को धारण की; अथवा जिसकी बराबरी में दूसरे नहीं लगसकैं ऐसी धुर को धारण की. दुवलानपुर में मानों नव निधि सहित १७ कुबेर ने अपना धन धरा ॥ ३८ ॥

समरकंद १ तँहँ धान्यसुनि, अक्खिय बेचहु एस ॥
कछुकदयो आसानकरि, नलयो अर्घ नरेस ॥ ३९ ॥
कति सत्रुहु आसानकरि, जिनको कुकृत जताइ ॥
बखसि अन्न थंभे बिकल, प्रनतिपत्र तिन्ह पाइ ॥ ४० ॥

॥ मनोहरम् ॥

भो जैंडैल भूपैं परे तिन्हैं थंभि भिस्सा याग,
ब्याज लैंन बुंब दीसे राह बहु रोहे जे ॥
याके आदिपदन चतुर्दस १४ बरन आदि,
दल दोहा पहिलीके होत सब सोहे जे ॥
पंथपंथ पृच्छक पठाइ बुलवाये व्रातँ,
जातँ १ तातँ २ जार्या ३ जननी ४ जन ५ बिछोहे जे ॥
भारमल्ल १८६१४ भूप दुबलानाँ यौं खजानाँ खोलि,
मानव मतंगज मलीदनतैं मोहे जे ॥ ४१ ॥

१मूल्य (कीमत) ॥३९॥ २बुरा कार्य ३ नम्रता के पत्र (अरजियें) लेकर ॥४०॥ ढ-
लों (ढेलों) के समान भूमि पर पड़े हुओं को भिक्षा के यज्ञ से भोजन करा
कर थांभा और बुन्दी की पीछी लेने के मिस से बहुत मार्गों को जिसने रोके
अर्थात् भूखों को नहीं जाने दिये. इस चरण के आदि पदों के आदि के चौद
ह अक्षरों का आधा *दोहा अर्थात् पूर्वार्द्ध होता है. मार्ग मार्ग पर ४पूछनेवा
लों को भेजकर ५ समूहों को बुलाये ६ पुत्र ७ पिता ८स्त्री, माता और अपने
मनुष्यों से वियोग पायेहुओं को. इसप्रकार राजा भारमल्ल ने दुबलाना
ग्राम में खजाना खोलकर मनुष्य रूपी ९ हाथियों को १०मलीदों से मोहित
किये "यहां मलीदा शब्द में श्लेष है, अर्थात् मनुष्यों के लिये सीरा (हलवा)
और हाथियों के सामान्य भोजन का नाम मलीदा है" ॥ ४१ ॥

---

*दोहा शब्द स्त्रीलिंग है परन्तु लौकिक में पुल्लिंग से व्यवहार कियाजाता है जिस कारण हम भी पुल्लिंग ही लिखते हैं इस मनहर छन्द के आदि के चरण के चौदह पदों के आदि के चौदह अक्षरों से मरु भाषा के दोहे का पूर्वार्द्ध निकलता है जिसके निकालने का यह क्रम है कि ॥ सुप्तिडन्तम्पदम् ॥ अर्थात् सुप् तिङ् आदि विभक्ति जिसके अन्त में होवें उसको पद कहते हैं सो ये इसप्रकार हैं ॥ भो, जैंडैल, भूपैं परे, तिन्हैं, थम्भि, भिस्सा, याग, ब्याज, लैंनें, बुम्ब, दीसे, राह, बहु ॥ इन उपरोक्त १४ पदों से आदि के अक्षरों से दोहे का यह पूर्वार्द्ध निकलता है "भोजै भूपति थम्भिया याले बुन्दी राव॥" अर्थ-बुन्दीके प्यारे राजा राव ने भोजन कराकर ठहराये; अथवा ठहराकर भोजन कराता है ॥

दोहा—सो दोहा नृपसमयकी, मारव वानी माँहिं ॥
जँहँ लकार१८अधबिंदुजुत, अंत्य व२३दंत्य हु आँहिं ॥४२॥ ।
सोलह १६ मासन इम सुपहु, दै लक्खन जियदान ॥
किय तटस्थ १अरि३मित्र४कुल, अबिरत जस१आसान२॥४३॥
आधे ½ दूजे २ अब्दलौं, रक्खे कतिक नरेस ॥
पाथेयहु तिन्ह अर्थ पुनि, दै पठये निजदेस ॥ ४४ ॥

॥ मनोहरम् ॥

वेची स्वीयै संतति सविंली १ सविता २ हू जहाँ,
पति १ पतनी २ की प्रियतापैं हरि हीनकी ॥
घाँघाँ घर घुम्मत घरट्टनको घोर मिट्यो,
चुल्लिनमैं छाई तंतुमाला मर्कटीननकी ॥
खाल खिल सूके पंक मैंडुक मिलानैं बाग१,
बिपिन २ बिलानैं द्रुम छाँह छवि छीनकी,
देसकी गिनैं को असे समय सुभांड १८६।४ देखो,
पोखि परदेसकी प्रजाकों परिपीननकी ॥ ४५ ॥

॥ पट्पात् ॥

मंगिय बहुरिहु मिच्छ कहिय तवतव नृप कारन ॥
अब खंद्दो बहुअन्न बढत लक्खन जन वारन ॥

सो दोहा १ मरुभाषा में राजा भारलल्ल के समय का बनाहुआ है जिसमें 'ल' तो आधे अनुस्वार सहित है और अन्तिम 'व' दन्त्य अर्थात् 'व' है ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ २ मार्ग का व्यय (रस्ताखर्च) ॥ ४४ ॥ ३ अपनी सन्तान को ४ माता और ५ पिता ने भी बेच दी. जहां पर पति और स्त्री के ६ प्यार को हरण करके हीन कर दिया, और घरों में ७ ठाम ठाम घूमतीहुई घरटियों का शब्द मिटकर ८ चूल्हों में १० मकड़ियों के ९ जाले छागये और याकी के नाले सूखकर १२मैंडक ११कीचड़ में मिलगये, बाग और १३वन मिटकर वृक्षों की छाया की शोभा क्षीण होगई, ऐसे समय में देश की तो क्या कहैं? देखो राजा सुभाण्ड ने परदेश की प्रजा को पालन करके १४पुष्ट की ॥४५॥ १५खाया

तदपि हजारन ताहि जानि *प्रतिघस्र जिमावत ॥
स्वीय कतिन कछु सैंन **पिहित गेहहु पहुँचावत ॥
हमकों न देत इम सोधि हिय मारन पुब्बहिं जास मत ॥
तिहिं समरकंद१उर बैर१तकि बाहिर हित२मंडिय ***वितत॥४६॥

दोहा ॥

आनि असूया१ ईरखा२, जानि मिले सब जत्थ ॥
बसुधा हड्डनबंसतैं, इच्छत लैंन अनत्थ ॥ ४७ ॥
अधिप१ सोंड२ गंग३ रु अमर४, मारे चाहत भिच्छ ॥
ते चउ४ चाहत हनन तिहिं, अंतर प्रीति अनिच्छ ॥४८॥युग्मम्॥

॥ षट्पात ॥

भूपहिं खित्तल भनिय अप्प अंकिय दुकाल इम ॥
ममनामहु छितिमाँहिं करहु कछुरीति रहैं किम ॥
सुनिनृप पंद्रहसहँस१५००० काढ्ढि रुप्पय निजकोसन ॥
बिक्खि समय सुभ बुद्धि निपुन सिल्पिन निर्दोसन ॥
दुबलानतैं जु पवमानदिस पाइ उचितथल कोस१पर ॥
कासार रचिय तसनामकरि बिदित सु खित्तोलाव२बर ॥४९॥

दोहा ॥

नाम भवानीपुर नियत, अब निबसथ जँहँ आसें ॥
देबी खित्तोला सदन, ताल गिनहु वह तास ॥ ५० ॥
निवसथ रचिय सुभांड१नृप, भंडाहेर१सु भव्य ॥
सुंडाहेर१ सु सोंडर किय, निज१निज२ नामन नव्य ॥ ५१ ॥
नृपकुमार नारायन१८७१ सु, पंद्रह१५ समें बयपाइ ॥
बिदया प्रहरनं१ बाहनर२न, लिन्नी सब मनलाइ ॥५२॥

---

* प्रतिदिन ** छाने *** विस्तार से ॥ ४६ ॥ १ अनर्थ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ २ वायुकोण में ३ तालाव ॥ ४९ ॥ ४ ग्राम ५ है ६ खेतोला देवी का मन्दिर है ॥ ५० ॥ ७ सुन्दर ८ नवीन ॥५१॥ ९ वर्ष की अवस्था १० शस्त्रविद्या

एकाधिकारी वितरक

बाफना बुक डिपो

चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

मुद्रक

प्रताप प्रेस

जोधपुर।

स्यनिहितव्याकुलानाऽवसरव्याहार्यदुर्न्दानेन्द्रवनरसिंह १८।७ स-
मयमाणिक्ये वेष्टितचित्रकूटदुर्गम्लेच्छराडल्लाउद्दीन १४वर्षत्रय ३ नाली
पल्लनद्वारखुरपन १ राणालक्ष्मणसिंहपट्टपकुमारारिसिंह १ हट्ट-
हिंगुलु २ खानियान्तरवञ्चना २ऽऽदिमहिरागतदुर्गवीरवृन्दबहुवारसौ-
त्रिकसमाघातयवनेन्द्रसैन्यसंहरण २ म्लेच्छराजप्रगुणीकृतनव्यन
व्यमहद्यन्त्रविरचितमेदपाटविप्लवदुर्भिक्षप्रवर्तन ३ श्रुतप्रजाफूत्कार-
दानल्लाऽऽत्रिसार्गदर्शितदुर्गजलहाम्मीररत्नसिंह १८३ प्रत्यर्पणा-
र्थराणाविज्ञापन ४ प्रतिश्रुतशरणागतराणसुतद्वादशक १२ सोदरा
ष्टक ८ पौत्रयुग्मकुटङ्क २ हट्टहिंगुलु १ खानियान्तरवञ्चन २ समुपेत
राणालक्ष्मणसिंह १ शूरशय्याशयन ५ हाम्मीररत्नसिंह १८३ नि
ष्क्रमण १ मरण २ संशयसूचन ६ तत्सङ्गत्यवनेन्द्रानुगतचतुरशी-
ति ८४ पद्मिनीमुख्यस्त्रीपतिप्राणप्रहाण ७ शल्यशीर्णशरीरस्वायुर्वल
पराजितमालानन्तर्वाञ्जुजराणाप्रजाऽजयसिंह १ निष्क्रमण ८ च १
निद्राला २ दिमलेत्पश्चात्तिनभावितवर्गयवनेन्द्रचित्रकूटदुर्गसमाक्रम-

त्रय३पीढिन नृप हम्म१८३।१ तैं, *आयति विधिबस एक ॥
पुत्र लहे जिन वृद्धपन, जीवनहार जितेक ॥ ५३ ॥
पाये तिमहि सुभांड१८६ पहु, जुव्वन जव हरिजात ॥
कुमर तीन३ इक्क१ सु कनी, ÷प्रथित आयुबल पात ॥ ५४ ॥
नारायन१८७।१ तिनमैं निपुन, अग्रज सूर१ उदार२ ॥
जनक पुव्व चिंतैसु जुरि, बुंदियलैंन बिचारि ॥ ५५ ॥
चिच्छत्तहैं इन्ह मारिबो, एहु चहैं तिन्ह अंत ॥
दाव नलग्गैं द्वैरहि द्विस, मनकरि जदपि मिलंत ॥ ५६ ॥
आयति नृप१की अनुज२की, हुव ध्रुव बिगरनहार ॥
इच्छत बुंदिय आक्रमन, जेहि मरत जुझार ॥ ५७ ॥
जैत१८५।१ अनुज नवब्रह्म१८५।२जिम, अमर१८६।१ अलोद अधीस
पुनि गंग१८६।२हु नवगामपति, सुपहु भार जिन्हसीस ॥ ५८ ॥
अरु सेव१८६।२जु सारन१८६।१ अनुज,इन४हु लह्यो क्रम अंत ॥
तिम समाप्त अग्रज लि३कहु, इम यह होन उदंत ॥ ५९ ॥

षट्पात् ॥

समरकंद१ छलसज्जि हनन हड्डन हिंडोलिय ॥
परिगहसह खल पहुँचि पिहित बिस्वासघात प्रिय ॥
अंगज निज दाऊद२ कलित कछु मह निमित्त करि ॥
रचिय गोठि अभिराम विविध व्यंजन गन विस्तारि ॥
सुत तीन३ इक्क१ सोदरसहित दै निमंत्र हुबलानतैं ॥
अनुगनसमेत बुल्ल्यो अधिप मिल्यो कुहकं बहुमानतैं ॥६०॥

दोहा ॥

जद्दपि निवारयो जात जँहँ, पैंहु वहु बनिकप्रधान ॥

॥५२॥*भाग्य ॥ ५३ ॥ ÷ प्रसिद्ध ॥५४॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १भाग्य २ निश्चय ही. जो बुन्दी लेना चाहते हैं वे ही वीर मरतेजाते हैं ॥५७॥५८॥५८॥४ छाने ५पुत्र६ विदित७उत्सव८न्यौता देकर ९ सेवकों सहित१०कपटी ॥ ६० ॥ ११राजा को,

गयो तदपि *अंतकग्रसित, भोरो अरि हितभान ॥ ६१ ॥
सिसु नरबद१८७१ नरसिंह१८७१२सह, जावनलग्गो जत्थ ॥
जेठसुत१८७१ जुत सचिव जिन्ह, हठिरोके गहिहत्थ ॥ ६२ ॥
आयो सोंड१८६१५हु मिलन इत, जोहु नटयो तँहँजान ॥
सोहु लयो नृप दै सपथ, देखत हितहि निदान ॥ ६३ ॥

षट्पात् ॥

मिल्यो दुरहुन अतिमान समरकंद १ सु रचि संसद ॥
अबजु आँहि सरसेतु पंतिहुव तास सीमपद ॥
अक्खिय भूप १ हिँ अनुज २ जवन मारोँ यँहँ जिम्मत ॥
बदिय भूप खल बहुत बनत भावी नटरैँ बत ॥
आपान विरचि करि तब असन करधावन सानुज २ करत ॥
बहराम१ कुलब २ पति सैनबस वाहिय असि हसि बिप्फुरत॥६४॥

॥ दोहा ॥

पैठो नृपके अंसपरि, असि उपवीत उतार ॥
तदपि हन्योँ बहराम २ तिहिँ, कर निज झारि कटार ॥ ६५ ॥

॥ षट्पात् ॥

कुतबखान १ खग्गकरि सोंड २ उडिजात स्वीयसिर ॥
कंटिसन कढ्ढि कृपान चंड रन रुंड रच्यो चिर ॥
परि समाज पद्धयन जवन चढि तैरुन बचे जँहँ ॥

---

* काल का ग्रसाहुआ भोला शत्रु को हित जानकर ॥६१॥ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ १ सभा. जहां अब तलाव की पाल २ है उसके नीचे की सीमा में पंक्तिहुई ३ पानगोष्ठी (मतवाल). छोटे भाई सहित ४हाथ धोनेलगे स्वामि के ५इशारे से ॥ ६४ ॥ ६ कन्धे पर गिरकर ७ खड्ग ८एक कन्धे पर लगकर दूसरी ओर की पसलियों में जनेऊ के आकार घाव उतार देवे उसको जनेऊ उतार अथवा उपवीत उतार कहते हैं ॥६५॥ ९ अपना मस्तक १० कमर से तलवार निकाल कर ११ बहुत समय तक १२ पलायन (भगना) १३वृर्चों

हिय अंखिन मनु हड्ड तक्कि छ ६ अराति हनैं तँहँ ॥
पैंतीस ३५ भजे सहसा प्रधन पंद्रह १५ भट नृपके परे ॥
नृप१सोंड२सहितसत्तह१७नरन कतलमिच्छ छ६छ६गुन३६करे॥६६॥

॥ दोहा ॥

सचिव छन्न आवत सु सब, मुख्यकुमर १८७१ सुनि मग्ग ॥
पच्छोमुरि दुबलानपुर, आलय पत्त उदग्ग ॥ ६७ ॥
दहल्ल वढी सबदेसमैं, सुनि नृप पक्खिन सोंहि ॥
कढि निवास परसीमकिय, बन्यौं रहनवल्ल कोहि ॥ ६८ ॥
सारन १ सोदर सेव२सुत, तजि वसुदारी तत्थ ॥
गो मेव १८७१ हु खटपुर गहन, जानि रहन थिर जत्थ ॥ ६९ ॥
गिरिसकोंन ८ खट द्रंगतैं, मेर्ध्यासरित समीप ॥
ग्राम विरचि अभिनव गुढा, निवस्यो पैरन प्रतीप ॥ ७० ॥
नृप १ सानुज २ पायो जनंन, महि वसु सकरि १४८१ मान ॥
नवति चतुर्दस १४९० पट्ट निज, बैठो उचित बिधान ॥ ७१ ॥
वेद वेद तिथि १५४४ मित बरस, बिक्रम संबत बेर ॥
हिंडोली वपुहान किय, ढाहि छतीस ३६ न ढेर ॥ ७२ ॥
बदिय अग्ग गणकन विदित, नृपको सस्त्र निपात ॥
सोहिभई सारकसठन, भेजि परे दुव २ भ्रात ॥ ७३ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर१ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवं-

---

पर १ शत्रुओं को २ अचानक ३ युद्ध से ॥ ६६ ॥ ४ घर में ५ गया ॥ ६७ ॥
६ भय ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ खटकड़ नामक पुर से ७ ईशान कोण में ८ मेझ नदी के पास ९ नवीन १० शत्रुओं के विरुद्ध ॥ ७० ॥ ११ जन्म ॥ ७१ ॥ ७२ ॥
१२ज्योतिषियों ने १३ मूर्खों की प्रवृत्ति ॥ ७३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं

श्यविहितऽपाख्यावेलाऽयाह्वार्यबुंदीवसुधापतिसुभाराडदेव १८६।४
चरित्रे श्रुतसीमासमीपसमरकन्दा १ भिपेखानसामन्त २ सचिव २
नृप ३ निःशलाकमन्त्रावमाननोद्युक्तशोराड १८६।५ नानालघु १ गु
रु २ कृश १ स्थूल २ दृष्टान्तदर्शनसङ्ग्रामसमर्थन १, निरस्तमाधवा
१ऽमरकृततदनुमोदनरणानिश्चितवंशनाशनृप १ जैत्र २ सारण ३ सचिव
४ शत्रुशासनस्वीकारसूचन २, समवज्ञातनृपा १ दि ४ सन्धिसम्मततर्जि
तकथितकातरीभूतसन्धिमन्त्रिकसमाजदर्शितपार्थक्या ऽमर १ माधव
२ गङ्ग ३ शोराड ४ स्वस्वस्थानगमन ३, निश्चिताऽनुकूलाऽवसरम्लेच्छ
मारणानृपा १ नुमोदितप्रगुणीकृतोपायनस्वीकृतशत्रुशासनचर्मण्वत्य
वधिसमभिसृतनिवेदितोपदमानितम्लेच्छमतसारण १ जैत्र २ सचिव
३ बुन्दीविहानस्वीकरण ४, लेखितनृपा १ र्थद्वादशो १२ पवसथोपेतदुर्ब
लान १ दङ्गशोण्डा २ ऽर्थतर्क्कुला १ दिग्रामपञ्चक ५ पट्टप्रत्यागतततत्रप
३ वसुधेश १ बुन्दीबहिर्निःसरणोपदेशन ५, परागोचरगोपितवसु १ भूष

की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति सुभाण्डदेव के चरित्र में सीमा के समीप समरकन्द की युद्धयात्रा सुनकर उमराव, सचिव और राजा के एकांत में कियेहुए मन्त्र की अवज्ञा करके उद्युक्तहुए शौरड का अनेक छोटे बड़े दुर्बल और मोटे दृष्टान्तों को दिखाकर युद्ध को पुष्ट करना, माधव और अमर के कियेहुए उसके अनुमोदन का तिरस्कार करके युद्ध में निश्चय ही वंश का नाश जानकर राजा, जैत्र, सारण और सचिव का शत्रु की आज्ञा को स्वीकार करने की सूचना करना, राजा आदि चारों की सन्धि की सम्मति को न मानकर कायर कहकर सन्धि करनेवाले मंत्रिसमाज को धमकाकर पृथक्‌पन दिखाकर अमर, माधव, गंग और शौंड का अपने अपने स्थानों को जाना, अनुकूल समय में म्लेच्छ को मारने का निश्चय करके राजा के अनुमोदन से सरलता पूर्वक नजराना ले शत्रु की आज्ञा स्वीकार करके चामल नदी तक सन्मुख जाकर नजराना भेट करके म्लेच्छ के मत को मानकर सारण, जैत्र और सचिव का बुन्दी छोड़ने को स्वीकार करना, राजा के अर्थ द्वादश गामों सहित दुर्बलान पुर और शोंडा के नाम ताकला आदि पांच ग्रामों का पट्टा लिखाकर पीछे आकर जैत्र आदि तीनों का राजा को बुन्दी से बाहर निकलने की सम्मति देना, शत्रु ओं से नहीं जानेहुए धन और आभूषण के समूह को छिपाकर हाथी घोड़े और

ण २ व्रातत्यक्तसगज १ तुरग २ नालिका ३ निकरबुन्दीनगरब-
लात्कारनिष्कासिततारागढदुर्गाऽध्यक्षनरेन्द्रदुर्बलानप्रविशन ६, सार
ण १ सचिवा २ दिप्रसभप्रबोधितशोरड १८६।५ ग्रामपञ्चकप्रस्वी
कारण ७, समाहूतपत्नी १ पुत्रा २ दिपरिकरसमरकन्द १ सीमा
न्तबुन्दीराज्यस्वीकरण ८, जितवशीकारितसीमासपत्नबुन्दीस्थापि
तत्रिसहस्र ३००० बलखिलसैन्यमण्डूप्रतिगमन ९, समाहूतसमाग
तमाधवा १ऽऽदित्रय ३ वर्जितनृपा १ दिसामन्तसंघार्थस्वावसरसं-
जिहीर्षुयवनपृथक्पृथङ्निजनामलेखितपट्टाऽर्पण १०, निश्चितनृ
पाऽनुजोन्मत्तभावबुन्दीशमाधव १ गंगा २ऽनागमकारणपृच्छावस
रजैत्र १८५।१ यक्ष्मा १ऽर्शो२ मिषत्कोपनिवारण ११, क्षान्तमन्तुस्व
सेवनपुत्रप्रेषणादत्तनियोगकदाचिद्दृष्टकपटाऽऽमयाविद्युग २ स्वस्व
सूनुशैशवनिवेदन १२, जैत्र १ सारण २ माधव ३ त्रय ३ स्वस्वस
मयसंस्थासमादानाऽवसरतत्पुत्रगैणाल्या१ दिस्वस्वस्थानीयस्वामी
भवन १३, स्वस्वामिसेवासावधानदुर्बलान १ वास्तव्यनीति १ नि
मित्त २ निपुणमन्त्रिराजवणिक्क्षेत्रलस्वप्रभुसमक्षाऽऽगमिष्यमाण

तोपों के समूह सहित बुन्दी नगर को छोडकर तारागढ के किलेदार को कठिनता से निकालकर राजा का दुबलान पुर में जाना, सारण और सचिव आदि का हठ पूर्वक समझाकर शोरड को पांच गांव स्वीकार कराना, स्त्री पुत्रादि परगह को बुलाकर समरकन्द की सीमा पर्यन्त बुन्दी के राज्य को अपने अधिकार में करना, सीमा के शत्रुओं को विजय और वश में करके बुन्दी में तीन हजार सेना रखकर बाकी की सेना का पीछा मण्डूपुर जाना, बुलाने से आयेहुए माधव आदि तीनों को छोडकर राजा और उमरावों के समूह के अर्थ अपने अवसर पर मारने की इच्छावाले यवन का अपने नाम से लिखकर जुदे जुदे पट्टे देना, राजा के अनुज माधव और गङ्ग के उन्मत्तभाव का निश्चय कराकर बुन्दी नहीं आने का कारण पूछने के समय जैत्रसिंह का क्षयरोग और बवासीर के मिस से कोप मिटाना, अपराध को सहन करके अपने सेवन में पुत्रों को भेजने की आज्ञा देने पर कदाचित् कपट देखकर दोनों रोगियों का अपने अपने पुत्रों का बालकपन निवेदन करना; जैत्र, सारण और माधव तीनों के अपने

वर्षदुर्भिक्षविज्ञपन१४, परीक्षाप्रतीतसचिवसावधानीकृतविहितधर्म १ भूषण २ दिविनिमयदयालुनरेन्द्र १ सर्वजनजीवनसमानधान्य सम्भारसञ्चयन १५, प्राप्तसूचितशकसंगतद्विचत्वारिंशा४२ऽब्दमहादुर्भिक्षाऽऽगमयवनयाच्यमानदत्तसम्मितधान्यमूल्यानिर्नीषुसुभाण्ड देव १८६१४ सपत्नावधिशुष्यमाणासंख्यजनतासंजीवन १६, तत्रत्यमनोहरवृत्तप्रथम १ पादादिचतुर्दश १४ शब्दपूर्वपूर्वैक १ का १ क्षरयोगतत्कालीनप्राक्तनीदोहापूर्वा १ र्द्ध संघटन१७, पुनर्मार्गणाप्राप्तधान्यसमरकन्द १ सार्द्धैक समावधिनिर्वोढसर्वजनजीवनसपरिग्रहसुभाण्ड २ परस्परछद्मघातविचारण १८, मन्त्रिक्षेत्रलप्रार्थितनरेन्द्र १ सूचितस्थानविहितपंचदशसहस्र १५००० रौप्यव्ययवाणिङ्नामसूचकनव्यकासारनिर्मापण १९, सुभाण्ड १ शौण्ड२ स्वस्वाऽभिधानाऽङ्कितभाण्डखेट १ शौण्डखेट २ नामनवीननिवसथयुग्म२ निवासन २०, नृपहस्मा १८३१ऽर्वाग्वैरिशल्या १८५१ऽवधिनृपत्र

अपने समय में देहान्त होने के अवसर पर उनके पुत्रों का गैणोली आदि अपने अपने स्थानों का पति होना, अपने स्वामि की सेवा में सावधान दुष्लानपुर निवासी नीति और शकुन में निपुण मन्त्रिराज बनिया खेता का अपने स्वामि के सन्मुख आनेवाले सम्वत् में दुर्भिक्ष होने की जानकारी करना, परीक्षा से प्रतीति कियेहुए सचिव के सावधान करने से उचित स्वर्ण और भूषण आदि देकर दयालु राजा का सब जीवों के जीवन के समान धान्य का समूह संचय करना, सूचना कियेहुए४२के सम्वत् के साथ प्राप्त हुए महादुर्भिक्ष आने के समय यवन के याचना करने पर मूल्य नहीं लेकर कुछ धान्य देकर सुभाण्डदेव का शत्रुओं तक शुष्क हुए असंख्य मनुष्यों को जिलाना, वहांके मनोहर छन्द के प्रथम चरण के चौदह शब्दों के प्रत्येक पद के प्रथम के एक एक अक्षर के मिलाने से उस समय के प्राचीन दोहे के पूर्वार्द्ध की रचना, फिर मांगने पर धान्य के नहीं मिलने से डेढ वर्ष की अवधि तक सब जनों का निर्वाह करनेवाले परिग्रहसहित सुभांड को परस्पर छल घात करके मारने का विचारना, मन्त्री खेत्रल के प्रार्थना करने पर राजा का जनाये हुए स्थान पर पन्द्रह हजार रुपये खरच करके बनिये के नाम को जनानेवाले नवीन तालाव को बनाना, सुभाण्ड और शौण्ड का अपने अपने नामों से जाने जावैं ऐसे भांडखेड़ा

प ३ वार्द्धकवयोराज्यधरप्रसूतिप्राप्तिसूचनापुरस्सरसुभाण्डदेव१८६।
४ यौवनाऽवतरणासमयसंततिचतुष्टया ४ऽधिगमसूचन २१, हेति१
कृपा २ विद्याविदग्धज्येष्ठकुमारनारायणादास १८७।१ पितृपरोक्ष
म्लेच्छमारणविचारण २२, नृपनियतिप्रातिकूल्यपरतन्त्रम्लेच्छमार
णातन्त्रोद्यतनवब्रह्मा१ऽऽदिनृपबन्धुनवक९स्वस्वसमयसमापन २३,
हिण्डोलीपुरप्राप्तसपुत्रसमरकन्द१ कल्पितमहान्तरगोष्ठीभोजनव्या
जसमाहूतमन्त्रिवारणागृहन्यस्तकुमारसाहससार्थीकृताऽनुजसुभांड
देव १८६।४ सूचितस्थानगमन २४, भोजनाऽवसानसमरकन्द १
सूचनासञ्जिहीर्षुयवनयुगसुभाण्ड १८६।४ शौण्ड १८६।४ भ्रातृद्वय
२ दलन २५, तिर्यक्कृत्तवामकरकृष्टकट्टारनरेन्द्र१स्वमारकवहराम
२ संहरण २६, छिन्नमूर्धकरकृतकृपाणशौण्ड १ द्वेषिषट्क ६निषू
दन २७, नृपपक्षीयपञ्चदश १५ परपक्षीयषट्त्रिंश ३६ तूशूरसम्मि
तसमापन २८, मार्गश्रुतैतदुदन्तस्वस्थानप्रत्यागतकुमारनारायणदास

और शौण्डखेड़ा नामक नवीन दो गाम बसाना, राजा हम्मीर से पीछे वैरि
शल्य तक तीनों राजाओं के वृद्ध अवस्था में राज्य को धारण करनेवाली
सन्तान की प्राप्ति होने की सूचना पूर्वक सुभांडदेव के यौवन उतरने के
समय चार सन्तान होने की सूचना करना, शस्त्र और दया विद्या में पण्डित
बड़े कुमार नारायणदास का पिता के परोक्ष म्लेच्छ को मारने का विचार
करना, राजा के उलटे भाग्य की परतन्त्रता से म्लेच्छ को मारने के तन्त्र
में उद्युक्त होनेवाले नवब्रह्म आदि राजा के नव भाइयों का अपने अपने सम
य पर मरना, हिंडोली पुर में पहुंच कर समरकन्द के कल्पित उत्सव की
गोठ के मिस से बुलायेहुए मन्त्री के रोकने से कुमार को घर में छोड़कर हठ
पूर्वक छोटे भाई को साथ लेकर सुभाण्डदेव का सूचना कियेहुए स्थान को जा
ना, भोजन के अन्त में समरकन्द की सूचना से मारने की इच्छावाले दो य
वनों का सुभाण्ड और शौण्ड दोनों भाइयों को मारना, खड्ग से तिरछा कट
ने पर हाथ से कटार निकाल कर राजा का अपने मारनेवाले वहराम को मार
ना, मस्तक कटे पीछे हाथ में खड्ग लेकर शौण्ड का छः शत्रुओं को मारना, रा
जा के पक्ष के पन्द्रह और शत्रु के पक्ष के छत्तीस शत्रुओं का युद्ध में मार

१८७।१बन्धुवर्गपरजनपदपलायन२९, षट्पुरगहनसम्प्राप्तसेव१८६।२ सूनुमेव १८७।१ नव्यनिर्मितगुढा १ रूयग्रामनिवसन ३०, सानुज १ जन्म १ पट्टप्राप्ति २ तनुत्याग ३ शकसमासङ्ख्यासूचनं ३१ द्वाविंशो २२ मयूखः॥ २२ ॥

आदित एकोनसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १६९ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

बरज्यो जावत वनिक तास करि कानि रह्यो तब ॥
पुनि नारायन १८७।१ पिहित्ते जोग्य अवसर हंकिय जब ॥
इक्कल १ हय आरूढ जानि न सकैं अमात्यजिस ॥
नगर बरोदानिकट अध्व कुलनास सुन्यों इम ॥
पच्छो सु आइ दुवलानपुर हेय१तजि२रुनिधि१करतहुव २ ॥
बैरिन सराँह वाहिय१बदत२स्वांत१निगूढ२सुभांड१८६।४ सुव ॥

॥ दोहा ॥

संतति न हुती सोंड १८६।५ कै, यातैं कुमर उदार ॥
जनक १ पितृव्यक २ कृत्य जुग २, सक्किय बिधि अनुसार ॥२॥
कानिकरन आवैं अखिल, इम भाखैं तिन्हअग्ग ॥
करी उचित मारे कुटिल, मतिबिनु चलत कुमग्ग ॥ ३ ॥

जाना, मार्ग में यह वृत्तान्त सुनकर कुमर नारायणदास का अपने घर पर आना और बन्धुवर्ग का पराये देश में भागना, खट्पुर के गहन वन को पाकर सेव के पुत्र मेघ का नवीन बसायेहुए गुढा नामक ग्राम में निवास करना, छोटे भाई सहित राजा के जन्म, पट्टप्राप्ति और शरीर छोडने के विक्रम के सम्वत् की गणनासूचन करने का २२वां मयूख समाप्त हुआ।२२। और आदि से १६९ मयूख हुआ।
१ नारायणदास २ छाने. अकेला घोड़े पर ३चढ़कर४ मन्त्री नहीं जानसके इस प्रकार ५ मार्ग में ६ त्यागने योग्य को त्यागकर. ऊपर के मन से शत्रुओं की ७प्रशंसा करता रहा ८मन में वैर को छिपारक्खा ॥ १ ॥ २ ॥ ९ मातमपुर सी १० कुमार्ग ॥३॥

स्वामीको हनिबो *सतत, चाहतहे दुव २ चित्त ॥
सहत सहत अति **आगसन, भरि ***आमुख किय भित्त॥४॥
समरकंद काका सु पहु, अब हे जनक २ उदार ॥
बेगम १ काकी माइ २ बलि, हमरे पालनहार ॥ ५ ॥
सुनि बुंदिय यहवत्त सब, जवन तिन्हैं निजजानि ॥
बेगम १ सिसु २ पठये बिहसि, करन अग्रंजन २ कानि ॥ ६ ॥
नारायेन[2] १ सु नरायन २ हु, दीसत सव्द द्वि २ रूप ॥
इन दोउ २ न करि विदित इम, भाख्योजात सु भूप ॥७॥

॥ षट्पात् ॥

दुमन[3] नरायनदास अरज बेगमप्रति अक्खिय[4] ॥
तुम १ माता१वे१तात२प्रथित[5] पालक निज पक्खिय[6] ॥
उरलगाइ सुनि वहहु अभय अप्पि रु गृहआई ॥
अप्पन पतिके अग्ग वहुत किय तास वडाई ॥
कुमरहु इतैं सु सब कृत्यकरि नीतिनिपुन मिच्छन नँयो ॥
बिगनित जिमाइ दिन बारहम १२ भूपपट्ट पावत भयो ॥८॥
बुंदिय आइ बहोरि नीतिकोविद[9] अपुब्ब नमि ॥
समरकंद १ संसंद[10] सु स्वांतैं[11] गोपित बेठो समि[12] ॥
अंतहपुर[13] आदेस जानि हित चहत दयो जब ॥
बेगमपास बहोरि तास नुति[14]करि आयो तब ॥

* निरन्तर ** अपराधों से *** मुख पर्यन्त ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ १ बड़े भाइयों की मानमपुरसी करने के लिये ॥ ६ ॥ २ नारायण और नरायण ये शब्द दो रूप से दीखते हैं परंतु इन दोनों नामों से वह राजा प्रसिद्ध था इस कारण इस ग्रंथ में ऐसे लिखा है ॥७॥ ३ उदास होकर; अथवा बाहिर से मित्र और भीतर से शत्रु इसभांति दो तरह के मनवाले नारायणदास ने ४ पिता ५प्रसिद्ध ६पक्ष करनेवाले ७नमस्कार किया; या उन म्लेच्छों से नम्रता की ८ गणना रहित ॥८॥ नीति में ९पण्डित १०सभा में ११ मन को छिपाकर १२ सहन करके १३ जनाने में जाने की आज्ञा १४ स्तुति करके

उपवसथ[1] ताहि बारह १२ अधिक द्रोहमिटन मिच्छप[2] दये ॥
जैनकारि[3] अनुग इम जानि जग भूपहिं बहु निंदतभये ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

इम बारह १२ निर्वसथ[4] अधिक, पुव्व पटासन पाइ ॥
पहु आयो दुबलानपुर, मिच्छन हितहि मनाइ ॥ १० ॥
समरकंद १ कँहँ सुत २ सहित, चाहत[5] मारन चित्त ॥
जिम सल्लैँ काका १ जनक २, घर घल्लैँ बलवित्त[6] ॥ ११ ॥

॥ षट्पात् ॥

तँहँ नृप मातुलतनय[7] बग्घ[8] चालुक बीरनबर ॥
लहि अवसर दुबलान मिलनआयो हित[9] मंथर ॥
मनँ[10] संकल्प सु महिप कह्यो तासन[11] सहकारन ॥
बग्घ निपुन तब बंदिय[12] मित्त[13] न बनैं तस मारन ॥
पुच्छत निदान[14] अक्खिय पुनिहु अंधुछाँहँजिम[15] मंत्र उर ॥
रक्खैं सु हनैं ऐसे रिपुन धारि न सक्कैं और धुर ॥ १२ ॥
बदिय भूप तुव बंधु १ सुहृद २ मामक[16] मामकसुत[17] ॥
हम १ तुम २ अंतर हैन इम नजानैं इत २ ओ उत ॥
बग्घ कहिय व्है बंधु तदपि नकहहु अब तासौं ॥
अवसर सद्दहु इष्ट रक्खि व्यवहित[18] रचनासौं ॥
व्है जब अनेह[19] बुल्लहु हमहिं देहैं मेटि कलंक दुव ॥
हड्डनें[20] अधीस मारक हनि१रु भुग्गहु बुंदिय राज्य भुव ॥ १३ ॥

दोहा ॥

जंपि इम सु गय जाजपुर, बीर निजालय[21] बग्घ ॥

ग्राम२म्लेच्छों के पति ने वैर मिटाने के लिये दिये ३ पिता के शत्रु का सेवक, जानकर ॥ ९ ॥ ४ ग्राम ॥ १० ॥ ५सालते हैं (दुख देते हैं) ६ सेना रूपी धन ७ मामा का बेटा ८बाघसिंह सोलंखी ९ हित जनानेवाला १० मन का विचार ११तिससे १२कहा १३हे मित्र १४कारण पूछने पर १५कुए की छाया के समान मन में विचार रखनेवाला ॥ १६ मेरे १७मामा के पुत्र १८ गुप्त १९ समय होवै तब २० हाडों के पति को मारनेवाले को मारकर ॥ १३ ॥२१ अपने घर

णा ९ मतान्तरकथितत्रयोविंशत्ये २३ कविंशत्य२१ न्यतरसङ्ख्या सम्मितराणामरणप्रकारप्रबोधन १० यवनराडलावुद्दीन११ सराष्ट्र- चित्रकूटदुर्गसमादानसमयसंवत्सूचनं१२द्वितीयो२मयूखः ॥ २ ॥ आदितोऽष्टचत्वारिंशदुत्तरशततमः ॥ १४८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

मंडि अमल मेवारमैं, चढ़ि इम गढ चित्तोर ॥
साहरह्यो तँहँ कतिसमय, जगहिं जनावत जोर ॥ १ ॥
रान सचिव जे तँहँ रहे, वे बनि साह अधीन ॥
पानिजोरि बुल्ले पिसुन, हुव जय कछु भुवहीन ॥ २ ॥
तकितकि हड्डन छिद्रतम, अनुसरि कपट असेस ॥
रैंन१७५ बंग१७९ इतर रानके, दब्बिलये बहुदेस ॥ ३ ॥
बलि इन लुट्टन बाहिनी, पिल्ली ज्यानपनाह ॥
जब मंडनगढ लै सज्यो, समरसिंह१८१७ हेसाह ॥४॥
हजरत दिल्ली जातही, बिक्खत छिद्र बहोरि ॥
देस धनीके दब्बिहैं, छम दै हैं कबछोरि ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि पिल्लिय खिजि साह दूत बुंदिय१ बंबावद२॥
कहिपठई तुम कुमति हड्ड तजिदेहु रानहद ॥
सु सुनि मंत्र थित समरसिंह१८१७हरराज१८११ उभैरहुव॥
भट१ मंत्रिरन तँहँ भनिय भूप तजिदेहु रानभुव ॥
लखि देसकाल समुचित चलन राजनीति अनुसार रहि ॥

दूसरों के मत से कहेहुए तेईस और दूसरी संख्या से इक्कीस के प्रमाण रा- णाओं के मरने का ज्ञान कराना, पादशाह अलाउद्दीन का राज्य सहित चि- त्तोड़ लेने के संवत् की सूचना करने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ २ ॥ और आदि से १४८ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ मुगल ॥ २ ॥ २ अत्यंत छिद्र देखकर ॥३॥ ३ पुनि ४ सेना ५ मांड लगढ ॥४॥ छिद्र ६देखकर ७समर्थ हैं सो कब छोड़ देवेंगे ॥५॥ ८ भेजे ९उचित

दुस्सह बित्ते मासदस १० अधिपहिँ निह्नि[1] अनग्घं ॥ १४ ॥
पुनि नृप लग्गत ऋतुप्रसल[2], मृगसिरमास समत्थ ॥
वग्घादिक निज बुल्लिकेँ, सत्त ७ लये तँहँसत्थ ॥ १५ ॥
जोध इतर[3] सतच्यारि ४०० जिन्ह, राजा गोपुर[4] रक्खि ॥
स्वसँह[5] अह्न ८ प्रविसन प्रथम, उचित गिनैं फल अक्खि ॥१६॥

षट्पात् ॥

चढि प्रातहि चहुवान बेग आयउ पुरबुंदिय ॥
विरचत रन बुलबुलन[6] हसत पिक्ख्यो निर्भय हिय ॥
गोल्हावापिय[7] गाह महल पच्छिमदिस मंडित ॥
तोरनबाहिर[8] तत्थ प्रथित[9] बैठो छलपंडित[10] ॥
सिसु १ पुत्त १ पौत्र२काजी३सहित परिजन[11] अल्प प्रमोदपगि
वटछाँहँ सभा बोदियँ[12] बिरचि लखत समाह्वय[13] खेल लगि ।१७।
अक्खय१८६।१सुत अभिधान जास संग्राम१८७।१ सोहु जँहँ ॥
खटपुरपति मिलि खलन हुतो हाजरि पापी पँहँ[14] ॥
पहु तजि हय गय पास कलित[15] अंजलि[16] मुजराकारि ॥
कहि१ रु पुच्छि२ हित कुसल धीर बैठो अग्गैं धरि ॥
जुज्झत सकुंत[17] बुलबुल जकुट[18]२ पिक्खत जवन प्रसक्तमन[19] ॥
दिय सैन[20] सत्त७वग्घा१दिकन मारन तिन्ह चल्ल्यो न मन।१८।
तबहि कढ्ढि तरवारि निडर झारिय नारायन१८७।१ ॥
चकित अंखि[21] चकचुंधि घरन नँट्ठे[22] बिनु घायन ॥

१ अघ रहित ॥१४॥ २हेमन्त ऋतु ॥१५॥ ३अन्य वीर ४ शहर के द्वार पर रख कर ५ अपने सहित ॥ १६ ॥ ६ बुलबुल पक्षियों को लड़ाता हुआ ७गोल्हा बावड़ी के स्थान पर पश्चिम दिशा में महल बनता था उसके ८ बाहिर के दरवाजे से बाहिर ९ प्रसिद्ध १०छल करने में चतुर ११अपने थोड़े लोगों सहित. वट वृक्ष की छाया में १२चबूतरी बनाकर १३पक्षियों के युद्ध के खेल में लगा ॥ १७ ॥ उस पापी के १४पास १६ हाथ १५ जोड़कर १७पक्षियों का १८जोड़ा १९आसक्त होकर २० इशारा ॥ १८ ॥ २१ नेत्रों से २२ भागे.

समरकंद१ अरि अंस चक्खि तिरछी कढिचल्ली ॥
सघन मेघ असि असित२ बाढ चमकत घन३बल्ली ॥
उडिपरिय तास कर्तित अवनि मुंड विसिख५ भ्रमि चक्र मग ॥
कुट७ जँनु कुलाल८ खरतंति९ करि उडत चक्रसेंन किय अलग॥१९॥
इतर सत्रु आयुधिक अट्ठ८ जुज्झे गहि आउधै॥
भंजे खट६ नृप भटन उभयर अप्पहि बद्धे बुध ॥
अंदर गिनि दाऊद२चल्यो महलन सीढी चढि ॥
सु लगि पिट्ठि संग्राम१८७१ बेग नृप हनन गयो बढि ॥
पहु राजमहल सीढीन पर पहुँचत जानि कुबंधु११पर ॥
झुकिपलटिझारि उलटोहिअसि धंकि१३डारिय सिर तासधर॥२०॥
उदासीन गिनि याहि जवन कट्टत न हन्यों जब ॥
पै बनि सत्रुनपुत्त आत मारन पिक्ख्यो अब॥
पलटि खग्ग इमि१४ प्रबल कंठ झारिय उलटेकर ॥
कट्टि सु दक्खिन कुड्य१५ प्रखर१६ पैठो लगि पत्थर ॥
सिर१ रुंड२ उभयर संग्राम१८७१के गये अरर१७लगि बेग गुरि१८॥
पहुँच्यो महीप अंगनअवधि जँहँ बीबिन किय प्रस्न जुरि॥२१॥
जबलग तिन जानी न सौध१९ हक्कहि केवल सुनि ॥
इम नृपसम्मुह आइ कूककारन पुच्छिय पुनि ॥
बादिय अप्प हनि बंधु मियाँ मोकँहँ अब मारत ॥
दुरिहौं२० जँहँ दाऊद२ रहैं बिनु मंतु२१ बिदारत ॥
उनकहिय गयो फजरहि वहै वहरी१ बाज२ सिकार वन ॥

१कन्धे को चखकर २श्याम ३बिजुली ४कटाहुआ ५बिना शिखावाला ७मानं ८कुम्हार ने ९तीखी तांत से ६घट को फिरतेहुए १०चाक से उतारा ॥१९॥ ११शत्रु १२ खोटे भाई संग्रामसिंह पर १३ क्रोध करके ॥ २० ॥ १४ इसकारण से. दाहिनी ओर की१५दीवार में१६तीक्ष्ण १७किवाड़ तक१८गुड़क (लुढ़क) ए ॥२१॥ १९महल में केवल हाका होना ही सुना२०छिपूंगा, बिना२१अपरा

रहि तू अरोहि अधिरोहिनी बनत हर्म्य तँहँ भय अब न ।२२।

रवन१ अवन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

सुत१ नंत्ती२ लखि इतर सिसु, अधिप दया तिन्ह आनि ॥
हर्म्य न०य जँहँ होतहो, पत्तो तँहँ असिपानि ॥ २३ ॥
जन्मदिवस महँ होत जँहँ, राजमहल नृपराम २०३ ॥
सौध बनितहो तास सिर, लघु तिनदिनन ललाम ॥ २४ ॥
तँहँचढि निश्रेनीहु तस, ऐंची उप्पर अप्प ॥
रुचिर गोख ठंठोरह्यो, दलि कुलघातक दप्प ॥ २५ ॥
निजभट मुख्यप्रकोष्ठ नृप, बेग लये सब बुल्लि ॥
कह्यो बिडारहु खलनकँहँ, खीजहि जिततित खुल्लि ॥ २६ ॥
अज्ज मिले नृपमैं अखिल, मिच्छ२ रहे खिल मानि ॥
निखिल निकासे नैरतैं, तर्जन१ ताड़न२ तानि ॥ २७ ॥
पुरढिग भट चउसत४०० पिहित, आयो रक्खि अधीस ॥
आये ते मंडत अमलें, सेसन खंडत सीस ॥ २८ ॥
सिसु १ महिला२दिक सत्रुके, जन कहे बिनु जान ॥
भिल्ल१ जवन२ तँहँ दुव २ भये, सज्ज रचन घमसान ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

महा धनुर्द्धर मिच्छ दास १ अरु डेल्ल २ भिल्ल दुव २ ॥
कर चउ४टंक कमान पिट्ठि द्वि २ कलाप धरैं ध्रुव ॥

---

१ चढकर २ नीसरनी पर ३ महल बनता है तहां ॥ २२ ॥ ४ पोता ५नवीन ६ हाथ में खड्ग लिये गया ॥ २३ ॥ जहां पर अब जन्म दिन का७उत्सव होता है८ हे राजा रामसिंह ९ शीघ्र १०सुन्दर ॥२४॥ ११अपने कुल को मारनेवाले का १२ दर्प ॥२५॥ १३ सिरे ड्योढी पर १४ निकालो ॥२६॥ १५ आर्यलोग सब राजा में मिलगये १६ नगर से ॥२७॥ १७ छिपाकर १८ अधिकार १९ बाकी के लोगों के ॥२८॥२०स्त्री आदि ॥२९॥ एक तो म्लेच्छ का चाकर और दूसरा २१ डालिया नामक भील २२चार टंक की कमान हाथ में लिये (कमान की ताकत का एक तोल है. पूर्ण ताकतवाली कमान १८टंक की होती है) २३भाथा

वोध्यं सु द्रुम चलं १ वेधि अचल २ गुंजाहु[3] उतारत ॥
सद्द[4] ३ श्रवनअनुसार प्रदर[5] तनु सार प्रहारत ॥
अंज[6] १ अद्ध २ दलित १ आढक[7] २ असन चित्त असन मल्लन चहैं॥
रहि इत्थ[8] डमर परदेस रचि रित्थ[9] अमर लावत रहैं ॥ ३० ॥
मंडुवपति करि मिच्छ अग्घ १ आदर २ जिन्ह अप्पिय ॥
अरिगन[10] पाहुन इंह धिह काहु न रन धप्पिये ॥
पहिलैं इनहिं कुपाइ वैर अनुसरि कछु वोली ॥
मन असोक प्रामार वहैं साध्वस[11] बिंझोली ॥
मंडुवमहीस जिन्हकरि जवन वहुदिन रक्खि स्वपासैं[12] वलि ॥
दिय समरकंद १ संगहि दुसह जुंदिय दव्वन करन केलि[13] ॥३१॥

दोहा ॥

हसन १ चंदखाँ २ नामहुव, जिनके विदित जिहान ॥
गो त्रिसहँस ३००० दल सोहु गृह, परखि जिन्हैं अतिमाँन[14] ॥३२॥
इहाँ समर १ रक्खे इतर, कति १ ते हनि २ कति १ कढ्ढि २ ॥
इम जुंदिय लिन्नी अधिप, द्विप[15]अरि केहरि[16] दढ्ढि ॥ ३३ ॥
भिल्ल १ जवन २ तँहँ द्वै २ हि भट, हुव नन निम्मकहराम ॥
निजगृहतैं बुल्ल्यो[17] नृपहिं, लिडर चंदखाँ १ नाम ॥ ३४ ॥

---

१ पीपल (यहां लक्षणा से पीपल का पत्ता जानना चाहिये) २ हिलते हुए निसाने में पीपल के पत्ते को और ठहरे हुए निसाने में ३ चिरमी को भी उतार देते हैं ४ शब्द सुनने के अनुसार ५ तीर से शरीर को वेधने का प्रहार करते हैं. आधा ६ बकरा और आधा ७ आढक (बत्तीस सेर का नाम द्रोण है और द्रोण के चतुर्थांश अर्थात् ८ सेर को आढक कहते हैं अर्थात् ४ सेर भोजन करते हैं) ८ यहां रह कर पर देश में लूट करके. कभी नहीं खुटे ऐसा ९ धन लाते रहते हैं ॥३०॥ १० यहां उन धीठों को युद्ध में किसीने तृप्त नहीं किये. बींझोलियां का पति अशोक नामक प्रमार मन में ११ भय मानता है १२ अपने पास १३ युद्ध करने को ॥ ३१ ॥ १४ अत्यन्त बलवान् ॥३२॥ १५ हाथी रूपी शत्रुओं को डस १६ सिंह ने खाकर ॥३३॥ १७ बोला ॥३४॥

बुंदिय जो लिय भाग्यबल, तो झेलहु इक तीर ॥
निहचै हम मरिहैं नतो, बक्षन पिछ्लहु बीर ॥ ३५ ॥
बचिजैहो इक १ बानतैं, तो हम आयुध तोरि ॥
ह्वै फकीर तुमरे रहहिं, जुग २ आश्रित करजोरि ॥ ३६ ॥
गोलीअंतर[2] ताहि गिनि, भूप कुतूहल भाइ ॥
बदिय खान इक १ बान तू, चंद १ हु लेहु चलाइ ॥३७॥

षट्पात्

चाप बिसिख धरि चंद १ करखि कुंडलकिय आक्रमि ॥
लायो एडिय लपन नटी मानहु उलटी नमि ॥
कठिन तानि आकर्रन तज्यो गोलिय इक १ अंतर ॥
कढि सु सब्य भुज १ कंख २ संधि पर थंभ लग्यो सर ॥
कछु ग्राव[5] सकल[6] जिहिं भिन्न किय सकल[7] भये बिस्मित स्वजन
बचिगो सु पिक्खि चंद१ हु बदिय पिक्खहु अब कमनैतपन ।३८।
जोरि करन इम जंपि संधि धनुगुन द्वितीय २ सर ॥
गन छागिनि बामगिरि तक्कि चउ ४ बुरज दुर्गतर ॥
मस्त छगल[9] तिन्हमध्य इक्क १ सतिलक[10] दगआवत ॥
प्रकर लंबि पैंल्लवन[11] खरो दु २ पयन रहि खावत ॥
तस गोधि[12] तिलक कहि बेध्य[13] तब बिसिख बिसिख[14] दूजो२दयो
[16]अंजलेत कुलट महलनअवधि भुवप्रदेस[17] आवतभयो ॥

मारने को वीर १ अजो ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ २ बन्दूक की गोली के एक टप्पे पर (यहां तोड़ादार बन्दूक की गोली का टप्पा समझना चाहिये ॥३७॥ ३ बिना चोटीवाले चांदखां नामक यवन ने धनुष को खींचकर कुण्डलाकार किया और एडी के समीप मुख लाया ४ कान तक ५ पत्थर का ६ टुकड़ा ७ सब ॥ ३८ ॥ बुन्दी के बाईं ओर के पर्वत पर चौबुरजे के नीचे ८ बकरियों का समूह चरताहुआ देखा. मस्त ९ बकरा १० तिलकवाला. हाथों (अगले पैरों को लंबे करके ११ पत्तों को. उसके १२ ललाट के तिलक को १३ निसाना कह कर. उस १४ यवन ने दूसरा १५ बाण मारा. वह १६ बकरा कुलांचें खाताहुआ १७ भूमि पर

॥ दोहा ॥

इम सु मिच्छ वह मारि अज, अरज करतहुव एह ॥
बचि मोतैं प्रभु भाग्यवल, अब भुग्गहु भुव एह ॥ ४० ॥

॥ सौराष्ट्रीदोहा ॥

इमकहि दोउ २ न आइ, *हेतिनतोरि फकीर०है ॥
प्रभुता नृपकी पाइ, आश्रय लिय जीवित अवधि ॥४१॥
नृप तिन दोउ२न नाम, चोकी धरिरक्खे अचल ॥
इक१ सिवंदिस अभिराम, दूजी२ इत मंडूकदर॥ ४२ ॥
इम बुंदिय अपनाइ, समरकंद१ मारयोसुनत ॥
सुत दाऊद२ रिसाइ, मृगैयातजि आयो मरन ॥ ४३ ॥

षट्पात् ॥

इषुधि पिट्ठि१ कटि२ उभय२ प्रगुनँ दुव२ बाँजि दुँ२पासन ॥
इम दु२ओर दुव२ॐ्रास सज्ज कर इक१ सरासन ॥
कटि जहरी आसि१ कदर२ बाज१ बहरी२ बिहाइ बन ॥
पयचंपत जिम पुच्छ पलटि पन्नग फुलाइ फन ॥
आयो सु रहत त्रि३मुहूर्त अह बेरचहत अतिमद बहंत ॥
दृग कोप महत मानहु दहत कोन जनकं[11]मारक कहत ॥ ४४ ॥

दोहा ॥

गोपुर जिततित रुंद्वँ गिनि, सहहयँ ०हे गिरिसानु ॥

॥ ३९ ॥ ४० ॥ * शस्त्रों को तोड़कर फकीर होकर १ जीवन पर्यंत॥ ४१ ॥ ४२ ॥ २ शिकार छोड़कर ॥४३॥ पीठ और कमर पर दो ३ भाथे और ५घोड़े के ६दोनों ओर ४ प्रकृष्ट गुण (विशिष्ट प्रत्यंचा) वाले दो ७ धनुष और हाथ में एक सजा हुआ (चढ़ाहुआ) ८धनुष और कमर में विष के पाणवाली जहरी तरर और छुरोंवाला बाज और बहरी (शिकारी पक्षि विशेष) को वन में छोड़कर पैर से दबेहुए सर्प के समान फण को फुलाताहुआ छः घड़ी९दिन बाकी रहते बह कोप से जलताहुआ अत्यन्त मद को १० धारण करताहुआ मेरे ११ पिता को मारनेवाला कौन है ? यह कहताहुआ वह (दाऊद) पलटकर आया ॥४४॥ शहर के दरवाजों को सब ओर से१२बंद जान कर१३घोड़े सहित१४पर्वतके शिखर

उत्तरि पुर ढिगगो सु इम, भिंटन हड्डनभानु ॥ ४५ ॥

षट्पात् ॥

निकट चतुर्भुजनाथ सदन जँहँ अब *शृंगाटक ॥
आवत तँहँ अटक्यो सु छोहउद्धत मदके छक ॥
भट **रोधक चउ४ भंजि लंघि गोल्हाबापी लग ॥
आत कहाई अधिप मरहु अबही न लेहु मग ॥
मंडुव पुकारि लै दल महत पुहवि लेहु पुनि हमहिँ हनि ॥
दाऊद२बदियजत्थसु***जनक१तत्थहिसुत२करत०यतनि ।४६।
काहू भट इमकहत तुपक झारिय छन्नैं तकि ॥
सिर गोलिय लगि दुसह छोनि हयतैं सु परयो छकि ॥
जँहँ मारे चउ४ जोध घाय खट६ तँहँ लग्गे घट ॥
बलि सिर गोलिय बिद्ध भुव सु परि तदपि उट्ठि भट ॥
असिकड्ढि आत तोरनअवधि उज्झि परयो दाऊदअ२सु३ ॥
किय तुपकघात ताकँहँ तरजि पहु निंद्यो बहु अक्खि पसु ।४७।
अच्युत४ चउभुज५ अग्ग कबर तिन ढुहु२न कहावत ॥
समरकंद१ दक्खिन६ सु उदग७ दाऊद२ गोरगत८ ॥
समरकंद१ सुंदरिय२ नाम निज करन धाम८ जुत ॥
बिरच्यो बीबनबाइ१ जारि निवसथ बापी२जुत ॥
इत लहि गई सु पच्छी अवनि राजमहल संसद१० बिरचि ।
पहिलैं सु पट्टबैठो सुपहु मैह११तूर१२न अभिसेक मचि ॥ ४८ ॥
सत्रह१७ सम१३ नृपसीस सौध१४ जिहिँ हुव अभिसेचन१५ ॥

पर होकर ॥ ४५ ॥ जहां अब *चौहट्टा बजार (चौराहा) है, **रोकनेवाले चार वीरों को मारकर जहां***पिता मारागया है तहां पर ही ॥ ४६ ॥ महलों के बाहिर के १ दरवाजे तक २ छोडकर ३ प्राण ॥ ४७ ॥५चतुर्भुज४विष्णु भगवान् के आगे ६ उत्तर दिशा में ७ कबर में गया ८ ग्राम ९ बावड़ी सहित १० सभा ११ उत्सव १२ नगारे बजवाकर ॥ ४८ ॥ सत्रह १३ वर्ष की अवस्था में जिस १४महल में १५ अभिषेक हुआ

तबतैं नृप तँहँ करत पर्व हायन दल पूजन ॥
उम्मेद१९८१५हु अभिसिक्क तत्थ प्रभुके प्रपितामह ॥
भद्रासन तँहँ भजत अप्प इम अब्दगंठि अह ॥
ढुरवाइचमर१ तँहँ छत्र२धरि पुर फेरिय निजआन पहु ॥
संग्राम१८७१कट्टि पैठो जु सिल आसि तस व्है अर्चन अबहु ॥४९॥

दोहा ॥

जननीजुग२ अनुजातजुत२, परिजन१ सचिवउपेत ॥
बुंदीपुर दुबलानतैं, बुल्ले सब समवेत ॥ ५० ॥
नारायन१८७१तैं नरबद१८७१२ सु, जुग२हायन लघुजात ॥
नरबद१८७१२तैं नरसिंह१८७१३लघु, अंतर बरस छ६आत ॥५१॥
नृप१ नरबद२ सोदर स्वसा, कन्या मदनकुमारि१८७१ ॥
सो लघुबय नरसिंह१८७१३तैं, पंच५ समा बिच पारि ॥ ५२ ॥
बलि अवसर नृप व्याहिहै, याकौं गढ सुमियान ॥
निरखि भामता उचित नृप, कर्मध्वज कल्यान ॥ ५३ ॥
निज इम राज्य जमाइ नृप, स्वजन गये परसीम ॥
जे सब बुल्ले प्रीतिजुत, भासि अरातिन भीम ॥ ५४ ॥
रायमल्ल १ इत रान मृत, सुत नृप हुव संग्राम ॥
पट्ट बग्घ१को जोधपुर, लिय सुत गंग २ ललाम ॥५५॥

वर्ष भर में १दो बार पूजन होता है. उम्मेदसिंह का२अभिषेक वहीं कियागया ३ रावराजा रामसिंह के प्रपितामह. आप सिंहासन पर४बैठते ही५वर्षगांठ के दिन. संग्रामसिंह को काटकर जो खड्ग ६ पत्थर में घुसा उसका अब भी७पूजन होता है ॥४९॥ दोनों८छोटे भाई९शामिल ॥५०॥ १०वर्ष ॥५१॥ ११ बहिन १२ वर्ष ॥ ५२ ॥ १३ बहिनोईपन के उचित १४ राठोड़ ॥ ५३ ॥ १५ शत्रुओं को भयंकर दीखकर ॥ ५४ ॥ १६ गांगा* ॥ ५५ ॥

*सं१५८४में नारायणदास का बूंदी की गद्दी पर बैठना लिखकर चित्तोड़ पर महाराणा सांगा, जोधपुर पर राव गांगा और आमेर पर राजा भगवंतदास का उसी समय में गद्दी बैठना लिखा सो ठीक नहीं है क्यों कि इन राजाओं के गद्दी बैठने के सम्वतों में जो कुछ अंतर है वह निम्न लिखित लेख से स्पष्ट सिद्ध है और ये संवत् अपने अपने राज्यों के इतिहासों से स्पष्ट कियेहुए हैं जिनमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है

भारमल्ल १ भूपालके, अंगज इत भगवंत २ ॥
पट्ट लहिय आमेरपुर, अवसर स्वजनक अंत ॥ ५६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानवेलाव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रहड्डाधिराजनारायणदास१८७१ चरित्रे मार्गश्रुतपितृद्वय २ निपातसत्वरप्रतिनिवृत्तदुर्बलानप्रत्यागतविख्यापितस्वयङ्गर्हितस्वपक्षसापराधत्वसाधितपितृ१ पितृव्यौ२ र्ध्वदैहिकमनोनिगूढमन्तव्यबहिर्दर्शितयवनानुकूल्यकृतकप्रेममातृभावमतसद्मागतयवनयोषित्कनारायणदास १८७१ पितृपट्टप्रापणं १, स्वस्त्रीकृतश्लाघास्निग्धसमरकन्द१ समाहूतबुन्दीगतसूचितस्वाऽसहनस्वामित्वप्रव्हताप्रगुणसंसत्सम्मिलितोपविष्ट - नारायण १८७१ सपत्नीकसपत्नप्रसादग्रामद्वादशक १२ पुनःप्रापणं २, स्वसद्मायातनिजमातुलपुत्राऽग्रम्लेच्छमारणमनोमतप्रका

॥५६॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र हड्डाधिराज नारायणदास के चरित्र में मार्ग में काका और पिता दोनों का माराजाना सुनकर शीघ्र पीछा फिरकर दुबलान पुर में आकर उनकी स्वयं निन्दा करके अपने पक्ष को अपराधवाला विख्यात करके पिता और काका की और्ध्वदैहिक क्रिया करके अपराध को अपने मन में छिपाकर बाहिर यवन से अनुकूलपन दिखाकर घर पर आईहुई यवन स्त्री के साथ बनावटी प्रेम से माता भाव दिखाकर नारायणदास का पिता के पाट को प्राप्त करना; अपनी स्त्री की कीहुई प्रशंसा से स्निग्ध समरकन्द के बुलाने पर बुन्दी में आकर जनाई हुई अपनी असह स्वामिभक्ति और नम्रता के विशेष गुण से सभा में शामिल बैठकर नारायणदास का स्त्री सहित शत्रु की प्रसन्नता से बारह गामों को फिर प्राप्त कर

महाराणा सांगा विक्रमी संवत् १५६५ में चित्तौड़ की गद्दी पर बैठे हैं; रावगांगा सं १५७२ में जोधपुर के गद्दी पर बैठे हैं; आमेर के राजा भगवंतदास संवत् १६३० में जयपुर के राज्यासन पर बैठे हैं इसकारण उपरोक्त तीनों राजाओं की और बुन्दीके राव नारायणदास की गद्दीनशीनी एक ही समय में नहीं बनसकती

शनप्रतीपचालुक्यव्याघ्रदेव १ कार्याऽवधितन्त्रमूकीभावोपदेशन ३, मासदशका १० नन्तरसहायसार्थीकृतसमाहूतव्याघ्रदेवा१ दिविश्वस्तबन्धुसप्तक७गोपुरसमीपगूढस्थापितस्वभटचतुःशतक४००बुन्दशाऽऽगतनरेन्द्रनारायणदास १८७१स्वल्पसार्थसंसत्स्वास्थ्यसमुपविष्टपत्तिप्रधनप्रेक्षमाणयवनसमरकन्द १ संहरण ४, दाऊद २ गवेषमाणराजसौधश्रेढीसमारूढगतपृष्ठागतमिमारयिषुबान्धवाधमसङ्ग्रामकन्धरनृपखड्गदक्षिणकुडयप्रस्तरप्रभेदन ५, परिपन्थिपत्नीपृच्छाप्रतीतमृगव्यगतदाऊद२ दयोज्झितशत्रुशिशुवर्गसमारूढनव्यनिर्मीयमाणहर्म्यमूर्द्धभूमसमाकृष्टनिःश्रेणीकबुन्दीशसमाहूतस्वसुभटसङ्घसन्त्रस्तपरपक्षिजननिष्कासन ६, पुरप्रविष्टगोपुरबहिर्वर्तिशूरशतचतुष्क ४०० नृपाज्ञाप्रवर्तनपुरस्सरम्लेच्छमतमात्रनिःसारणसमयशबरपूर्वयवनबन्धुद्वय २ सुमूर्षण७, मराडूपतियवनीकृतदत्तसादरसामन्तभावविरोधविक्षोभितविन्ध्यावलीप्रमारमहाधनुर्द्धरबहुधाविप्लुतपरप्रान्तसमरकन्द १ सहायबुन्दीवास्तव्यमृधमुमूर्षुहस-

ना, अपने घर पर आयेहुए अपने मामा के पुत्र के आगे म्लेच्छ को मारने का विचार प्रकाश करने के विरुद्ध सोलंखी व्याघ्रदेव का कार्य करने की अवधि पर्यन्त सलाह को गुप्त रखने का उपदेश देना, दश मास के पीछे सहाय के लिये बुलायेहुए व्याघ्रदेव आदि विश्वासवाले सात बान्धवों को साथ लेकर शहर के दरवाजे पर अपने चार सौ वीरों को गुप्त रखकर बुन्दी में आयेहुए राजा नारायणदास का अपने अल्प साथ के साथ सभा में स्वस्थता पूर्वक बैठकर पक्षियों के युद्ध को देखनेवाले यवन समरकन्द को मारना, दाऊद को हेरने के लिये राजमहल की सीढी पर चढेहुए पीठ लगेहुए को मारने की इच्छावाले अधम बान्धव संग्रामसिंह के गले को और दक्षिण दीवार के पत्थर को राजा के खड्ग का काटना, शत्रु की स्त्री से पूछने पर दाऊद के शिकार जाने की प्रतीति होने पर दया से शत्रु के बालकों को छोडकर नवीन बनतेहुए महल पर चढकर निसरनी को ऊपर की छत पर खींचकर बुन्दीश का अपने सुभटों के समूह को बुलाकर डरेहुए शत्रु के पक्ष के लोगों को निकालना, पुर में प्रवेश करके शहर के दरवाजे से बाहिरवाले चार सौ वीरों का राजा की आज्ञा प्रवृत्त करने से पहिले म्लेच्छ मत के सम्पूर्ण लोगों को निकालने के समय पहिले के भील

साध्यहु न पंच५गुन संधिमुख गुन आश्रय६ इक लेहु गहि ॥६॥
भूप समर१८१।१ तँहँ भनिय इक्क१ मंडनगढ अप्पन ॥
पै अग्रज१८१।१ तर पुहवि बहु सु हुव रान वडप्पन ॥
वह दैबो किम उचित लई नृप रैंन१७५ बंग१७९ लरि ॥
जो दैबो तब जाहि रहित व्हैबो नृपता करि ॥
मंडन१६८महीप पहिले समय राज्य कियउ यह दुर्गरचि ॥
करि छल सु रान लिन्नौं कुहक सो हम दब्बिय समय सचि ॥ ७॥

(दोहा)

नागपाल जब गढगहिय, रचि बंबावद रैंन१७५ ॥
देस इतर तस तब हुतहि, दव्वे प्रतिफल दैन ॥ ८ ॥
नृप बंग१७९हु पीछें सु नय, दब्बिलये कति देस ॥
सुनत न्याय इम साह तो, आसेरहु दै एस ॥ ९ ॥

॥ षट्पात् ॥

बंबावद बस बिदित रान जनँपद अनेक रहि ॥
अग्रजको ईसत्व रंच बिगरैं न टेक रहि ॥
तोतो आश्रय तक्कि दुर्ग मंडन तजिदैहैं ॥
नतो जियन फल नाँहिं देस मरनहि भँजि दैहैं ॥
चिरतैं रहेहु मंगन चहत हाकिम साह अपुब्ब हुव ॥
सौंपहु हमैंहु मेवारसब चित्तोरहु चहुवानभुव ॥ १० ॥
भट१ सचिव२न तँहँ भनिय नृपति अपनीहि निवेरहु ॥
यह मंडनगढ अप्पि साह सासन हित हेरहु ॥
व्है हरराज१८१।१ सहाय हाय बुंदिय जिन हारहु ॥

---

१ संधि आदि पांच गुण इस समय साध्य नहीं हैं इस कारण से एक छठा गुण (आश्रय) ही लेना चाहिये ॥ ६-७ ॥ २ उलटा फल देने को ॥८॥ ३आसेर गढ चहुवाणों का था सो हमको देवै ॥ ९ ॥४ देश ५ प्रभुता ६ मांडलगढ ७ सेवन करके अर्थात् मर कर ८ बहुत समय से ॥ १० ॥

न १ चन्द २ यवनयुग २ स्वैकाऽऽशुगशरव्यताशोभाख्डि १८७।१ स्वीकारण ८, ज्ञातनृपकक्षासन्धिनिःसृतच्युतस्वसहा यक १ द्वितीयश्मदरविद्धसव्यसानुमच्छिखरचरन्मञ्जागणमध्य स्थवर्करगोधितिलकचन्दस्वधानुष्कताविख्यापन ९, नरेन्द्रत्रोटि तशस्त्रकाषायवस्त्रस्वशरणागतयवनयुग २ तन्नामनिर्मितसूचित स्थानस्थापन १०, श्रुतजनकमारणोत्पथागतनिपातितभटचतुष्क महामनोदावूद २ राज्यस्थानतोरणातनुत्यजन ११, यवनयुग २ निखातपातनसूचनासहितयवनीनिवासितवापीविशिष्टग्रामविशे षविख्यापन १२, राजसौधविहितसमाजसमभिषिक्तसमाहूतस्व जननारायणदास १८७।१ यथापूर्वबुंदीराज्यसमाचरण १३, प्र तिवर्षसमाप्तितद्वंश्यतत्सौऽधाभिषेचनसूचना१सहितनृपखड्गप्रभिन्नप्र स्तरपूजनरूढिप्रज्ञापन२पुरःसरनृपा१दिभ्रात३भगिनी१चतुष्क ४ व

यवनके दो बंधुओं का मरनेकी इच्छा करना, मराडूपतिके यवन कियेहुए और आ दर सहित उमरावपन दियेहुए विरोध से बीजोलियां के पमार को चोभ देनेवाले महाधनुर्द्धर बहुत करके शत्रुओं के देश को लूटनेवाले समरकन्दकी सहायता पर बुन्दी में रहनेवाले और युद्ध में मरने की इच्छावाले सहन और चांदखां नाम दो यवनों का अपने एक बाण से निशाना मारने का सुभाण्डदेव के पुत्र नारायणदा स को स्वीकार कराना, राजा की कांख की संधि में से बाण का निकलजाना जा- नकर अपने सहायक दूसरे बाण से बाएं हाथ के पर्वत के शिखर पर बकरि यों के मध्य में चरतेहुए बकरे के ललाट के तिलक में चांदखां का अपनी धनु र्विद्या को प्रसिद्ध करना, शस्त्रों को तोड़कर भगवां वस्त्र पहनकर अपने शर ण आयेहुए दोनों यवनों को राजा का उनके नाम से सूचना कियाहुआ स्था न बनाकर उस स्थान में स्थापन करना, पिता का मारना सुन उलटे मार्ग(कु परबाड़े)से आ चार वीरों को मारकर बडे मनवाले दाऊद का महलों के बाहिर के द्वार पर शरीर छोड़ना, दोनों यवनों को कबर में गाड़ने की सूचना सहित यवन की स्त्री के बसायेहुए बावड़ी सहित ग्राम विशेष के बसाने की प्रसि- द्धि करना, राजमहल में कीहुई सभा के लोगों से अभिषेक कियेहुए नारायण दास का अपने लोगों को बुलाकर पहिले के समान बुन्दी का राज्य करना, प्र ति वर्ष की समाप्ति (वर्षगांठ) पर उसके वंशवालों की उस महल में अभिषेक

र्षान्तरविवेचन १४, शीर्षोद्दसंग्राम १ कबन्धगङ्ग २कूर्मभगवतिसिंह ३ नृपत्रय ३ स्वस्वपितृपट्टप्रापणं १५ त्रयोविंशो२३ मयूखः ॥२३॥

आदितः सप्तत्युत्तरैकशततमः ॥१७० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

नृप बरसिंह१८४१ अनेहं लौं, अक्खे दिल्लिय ईस ॥
भये बहुरि अब भाखियत, साह अज्जभुव सीस ॥ १ ॥

षट्पात् ॥

मुगल अग्ग तैमूर २२ प्रतपि दिल्लिय दिन पन्द्रह १५ ॥
श्रुति सर चउ ससि१४५४साक सदनं पुनि गो सु बिजयसद्द॥
प्रतिमाजिम आइ पुर साह महमूद २१ रह्यो सिटि ॥
विभव खानइकबाल गंजि जिम कवल लयो गिटि ॥
तनुतजिय साह महमूद२०तब विनु रोधक सठ अभय बहि॥
इकबालखान स्वच्छंद इम लग्गो रहन अभीष्ट लहि ॥ २ ॥

दोहा ॥

किते सिकंदरनाम करि, कहत साह पाकौंहु ॥
वदत किते गद्दी विनाँ, अधिप होत कहुँ यौंहु ॥ ३ ॥
हाकिम जिम अप्पन हुकम, इम दिल्लिय सुनि याहि ॥
खिजरखान२३ तस सीस खिजि, आयो हनन उमाहि ॥ ४ ॥

षट्पात ॥

होने की सूचना सहित राजा के खड्ग से कटेहुए पत्थर के पूजन की रूढि की सूचना के आगे राजा आदि तीन भाई और एक बहिन चारों के वर्षों के अन्तर का विवेचन करना, शीशोदिया संग्रामसिंह, राठोड़ गांगा, कछवाहा भगवन्तसिंह इन तीनों राजाओं का अपने अपने पिता के पाट पाने का २३ वां मयूख समाप्त हुआ ॥ २३ ॥ और आदि से १७० मयूख हुए ॥

१ समय से २ आर्यावर्त पर ॥ १ ॥ ३ घर (ईरान) ४ मूर्ति के समान ५ इकबालखां ६ ग्रास के समान ७ निगल गया ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

सूबापति सय्यद जु हुतो मुलतान रट्ट हद ॥
सुलैमानसुत सज्जि सजव आयो सु दुरासद ॥
बदत हनन१ इकबाल कतिक कीलन २ भज्जन३ कति ॥
पै दिल्लिय जयपाइ प्रबलहुव खिजर२३ पट्ट पति ॥
वीरत्व१ दया२ सहनों३दि बहु पावत गुन जाके प्रचुर ॥
वह खिजरखान२३हुव साह इम धरि दिल्लिय भुवभार धुर ॥ ५ ॥

गिर्वाणभाषा ॥ पथ्यावक्त्रमनुष्टुप् ॥

तवारीखफिरस्ता१दिम्लेच्छितेभ्यो विनिश्चितम् ॥
तथाऽकबरनामा२दियवनानीभ्य उद्धृतम् ॥ ६ ॥
दिल्लीशानां प्रतिग्रन्थमायाति महदन्तरम् ॥
अद्भुतं यन्मतैक्ये१ऽपि गीरैक्ये२ऽप्युरुधा लिपिः ॥ ७ ॥
प्रभूतमतमासाद्य दिल्लीराड्यवनावली ॥
उद्देशेनोदिताप्याहो द्वापरालम्बनं क्वचित् ॥ ८ ॥
इंग्रेजैर्निश्चितापीयं संशेते ह्यन्तरान्तरा ॥
सर्वेषां स्वस्ववृत्तान्ते वास्तवी स्याद्विवेचना ॥ ९ ॥
इंग्रेजैर्वृत्तमार्याणामार्यावर्तनिवासिनाम् ॥

मुलतान१देश की सीमा में. कितने ही २ कैद करना कहते हैं और कितने ही भगना कहते हैं ३सहनशीलता आदि ४अत्यन्त ॥५॥ मैंने "तवारीख फिरस्ता" आदि म्लेच्छों के ग्रंथों से निश्चय किया है; तैसे ही 'अकबरनामा' आदि जो यवनों की भाषा में ग्रंथ हैं उनसे भी लिया है ॥ ६ ॥ दिल्ली के बादशाहों के हरएक ग्रन्थ में बडा अन्तर (फर्क) आता है, यह आश्चर्य है कि एक मत और एक भाषा होने पर भी नाना प्रकार का लेख है ॥ ७ ॥ बहुतों की सम्मति लेकर मैंने निर्णय के साथ दिल्ली के यवन बादशाहों की पीढियों का निर्णय किया है, तो भी आश्चर्य है कि कहीं सन्देह ही है ॥ ८ ॥ अङ्गरेजों ने यवन वंशावली का निश्चय किया है तो भी बीच बीच में सन्देह ही है. अपने अपने वृत्तान्तों में सब की खोज सत्य होती है ॥ ९ ॥ जैसे-अङ्गरेजों ने आर्यावर्त (भारत वर्ष) के रहनेवाले आर्य लोगों का वृत्तान्त राजाओं की पीढियों के साथ निर्णय करके लिखा है परन्तु उसमें भी बहुत से वृत्तान्त

सराजावलि निर्णीतं याथातथ्यच्युतं बहु ॥ १० ॥
तथैव यवनोद्देशे सन्देग्धि स्वीकृतौ मनः ॥
आर्यवृत्ताद्दतत्वं स्यात्तत्र सामीप्यतोऽधिकम् ॥ ११ ॥
तथापीङ्गजलोकैर्या निर्णीता यवनाऽऽवली ॥
तेषां धीमत्त्वमान्यत्वाद्ग्राह्याबहुमता हि सा ॥१२॥
यावनीगी१र्लिवि२ग्रन्थेषूक्तेषु यवनैरपि ॥
दिल्लीभुङ्म्लेच्छवृत्ता१ऽऽख्या२सङ्ख्या३सु न सदृक्क्रमः ॥१३॥
केचिन्निगडितं १ केचिद्धतं २ केचित्पलायितम् ३ ॥
दिल्लीशं ४ मन्वते केचित्त्रयोविंशं २३ सिकन्दरम् ॥१४॥
नैवाल ब्रुवतेऽन्ये तु समूलं हि सिकन्दरम् ॥
नापीङ्ग्रेजैर्मतोऽत्रासौ महमूदा२१त्सिकन्दरः ॥ १५ ॥
वृत्तान्त १ नाम २ सङ्ख्या३दि यद्यथाभूत्तथास्तु तत् ॥
ख्यापितं मतबाहुल्यं पक्षोऽस्माकं न कुत्रचित् ॥ १६ ॥
बहुभिः खिजरः२३प्रोक्तो महमूदा२१दनन्तरम् ॥

यथार्थ नहीं हैं ॥१०॥ तैसे ही यवनों का क्रम मानने में भी मन को सन्देह होता है, तहां पर आर्यों के वृत्तान्तों से अधिक सत्यता होती है; क्योंकि आर्यों का वृत्तान्त यवनों के वृत्तान्त से अधिक समीप है ॥ ११ ॥ तो भी अङ्गरेजों ने जिस यवन वंशावली का निर्णय किया है, अङ्गरेजों की बुद्धिमानी के कारण वह बहुमान्य है इससे, उसीको मानना चाहिये ॥ १२ ॥ यवनों की भाषा में और यवनों की लिपि में यवनों के बनायेहुए ग्रन्थ हैं तो भी उनमें दिल्ली को भोगनेवाले म्लेच्छों के वृत्तान्त, नाम और संख्या में एक सा क्रम नहीं है ॥ १३॥ सिकन्दर को कितने ही तो कैद हुआ मानते हैं कितने ही मरा मानते हैं, कितने ही भगाहुआ मानते हैं और कितने ही दिल्ली का २३ वां बादशाह मानते हैं ॥ १४ ॥ और अन्य लोग तो सिकन्दर का होना समूल ही नहीं कहते; अङ्गरेजों ने भी महमूद के पीछे सिकन्दर को नहीं माना है ॥ १५ ॥ इनके वृत्तांत, नाम और गिनती आदि जो जैसा हुआ है वह वैसा रहे हमने केवल मतभेद कह दिया है. हमारा पक्ष किसीमें नहीं है ॥ १६ ॥ बहुत लोगों ने महमूद के पीछे खिजर को कहा है, तिस कारण से २३ वीं संख्या खिजर

तत्त्रयोविंश२३तो नीतो खिजरं२३ न सिकन्दरम् ॥१७॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ वैतनामयावनीवृत्तम् ॥

भयेनाँ सिकंदर१किते यों भनैं, हन्यौं२के भज्यो३केगह्यो४के*मनैं ॥
भनी जो रह्यो बात क्यौंहूभई, खिजरखान२३÷पैं पातसाही लई ॥१८॥
यहै नीति१ईमान २ नेकी३ भर्यो, बिनाँ कंत दिल्ली सुनेता वर्यो ॥
यहै दूरदर्सी सबर[3] आनिकैं, रह्यो साहरुख १कौं जबर जानिकैं ॥१९॥
तनै साहरुख१नाम तेमूर२२को, दमैं मत्त जाकौं गिनैं दूर कौं ॥
कौंर पातसाही अटक पार जो, हरैं सत्रुहू जंग हुसियार[6] जो ॥२०॥
खिजर२३संक ताकी गिनी खाँमसौं, न सिक्का चलायो स्वयं नामसौं ॥
सदा साहरुख१दास हम यौं कहैं, मिलैं नोकरी सोहि करते रहैं ॥२१॥

॥ दोहा ॥

नियत साहरुख १ नामको, रुप्पय सिक्का रक्खि ॥
उर१ स्वतन्त्र२ बाहिर१ अनुग२, अप्पहिं तस बस अक्खि ॥२२॥
बनत साह दिल्लिय बिभव, पुरजन १ सुभट २ प्रधान ३ ॥
आनैं नन मन ईरखा, जिम किय खिजर२३ सुजान ॥ २३ ॥

॥ युग्मम् ॥

उपदा पुनिपुनि भेजि इहिं, पाइ साहरुख १ प्रीति ॥
मोहितकरि निजजनन मन, रचिय राज्य नयरीति ॥ २४ ॥
कर[10] न प्रजासन लिय कठिन, उत सब करि आबाद ॥
रीति बिमुख सासक रह्यो, मेटत नरन प्रमाद ॥२५॥
बैरिसल्ल१८५।१ बुंदीसके, समय हुतो यह साह ॥
ताहीछत गय छोरि तनु[11], लहि उदर्क[12] अयं[13] लाह ॥ २६ ॥

की है सिकन्दर की नहीं ॥१७॥*मानते हैं ÷परन्तु॥१८॥१पत्ति २ श्रेष्ठ हुकूमत करनेवाला ३ सन्तोष ॥ १९ ॥ मस्तों को ४ दण्ड देता है ५ कौन ६ सावधान ॥ २० ॥ ७ कचाई से ॥ २१ ॥ ८ सेवक ॥२२॥ २३ ॥ ९नजराना ॥ २४॥ १० हांसिल ॥ २५ ॥ ११ शरीर १२ आनेवाले समय के १३ शुभ कर्म फल का लाभ लेने को, अर्थात् यह बादशाह नेक था इस कारण स्वर्ग भोगने का लाभ ले

सक हय मुनि चउ ससि१४७७समय, खिजरखान२३वपु खोड़॥
पावत गति *अर्जित प्रजा, रहिय हारि सब रोइ ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

साह मुबारिक २४ खिजर२३सूनु हुव स्वभुव दुक्खहरि ॥
जग जिहिं मोजुद्दीन २४ कहत दूजी २ अभिधा करि ॥
सुघर यहहु सुलतान भयउ रन परन भयंकर ॥
जनकसौंहु बढि जास बिदित फैलिय जस बिस्तर ॥
ससि अंक वेद भू१४९१मान सक स्व सचिव निमकहराम सठ॥
मारयो जु साह चाहत मुलक होतहि पापिन पाप हठ ॥२८॥

दोहा ॥

पहिलेबरस सुभांड १८६।५पहु, छितियभयो धरि छत्र ॥
बरस द्वितीय२ मुबारिक२४ सु, पत्तो अनसु परत्र ॥ २९ ॥
दया१ छमा२ रु वदान्यता३, रनपाटव४ बीरत्व५ ॥
नयपटुता६ इतिमुख गुनन, तक्यो मुबारिक२४ तत्व ॥ ३० ॥
बल१ सूबा२पति जे बिमुख, तिनहु लह्यो तस त्रास ॥
बहु बिमुखहु नृप पहु स्वबस, किन्ने स्वजय प्रकास ॥ ३१ ॥
पगधारि अग्ग पिताहुसौं, सबन दयो सुख साह ॥
रोइ प्रजा ताके मरत, इम किय सोक अथाह ॥ ३२ ॥

षट्पात् ॥

साह मुबारिक२४ सूनु मीरहुव खानमुहुम्मद२५ ॥
सो इहिं हनिय समर्थ बप्पमारक मंत्री बद ॥

ने के लिये शरीर छोड़ा ॥ २६ ॥ * जैसा संचय किया था तैसी गति पाने के लिये ॥ २७ ॥ दूसरे १ नाम से २ विस्तार ॥२८॥ ३ बिना प्राण होकर ४ परलोक गया ॥ २९ ॥ ५ अधिक उदारता ६ युद्ध की चतुरता ७ नीति की ८ इत्यादि ॥३०॥ ३१ ॥ ३२॥ ९ पिता के मारनेवाले बुरे मन्त्री को

इक लोदी अफगान इमहि बहलोल१नाम इत ॥
हुवसु साह लाहोर देस पंजाब *बलोदित ॥
सरहिंदमुलक याको वतन सो पठान यह इहिंसमय ॥
बलपाइ साह लग्गो बजन अटक१सत्तद्रू२बिच अभय ॥३३॥

दोहा ॥

तजिय मुहम्मदसाह२५तनु, मही ख तिथि१५०१ सक मान ॥
तनय अलावुद्दीन२६ तस, स्वपुर भयो सुलतान ॥ ३४ ॥
रचिय अलावुद्दीन२६ इहिं, नगर बदाऊँ१ नाम ॥
बरस पंच५ दिल्ली सु बसि, धर्षित गय तिहिं धाम ॥ ३५ ॥

षट्पात् ॥

सक रस नभ तिथि१५०६ समय बीर लोदी बहलोल सु ॥
इंकिय तजि लाहोर वंटि बीरन अभीष्ट बसु ॥
अतिजव दिल्लिय आइ गंजि सय्यद लिय गद्दिय ॥
दुमन अलावुद्दीन२६ कढ्ढि खिल सब अधीन किय ॥
निज रचित बदाऊँ१ नवनगर रह्यो सु सय्यद२६ आमरन ॥
बहलोल२६साह दिल्लीसबनि कज्ज दुंकर लग्गो करन ।३६।
जोनपुर१हु जिहिं जित्ति कियउ निजतंल फतैकरि ॥
सरित अटक१ सनैं सीम बंग२ जनपदलग विस्तरि ॥
अर्ज्ज१ जवन२ नृप और निखिल पयलाइ नमाये ॥
मालव१ गुज्जर२ मीर द्वै२ हि प्रतिभट दरसाये ॥
जे बढिग अग्गहीसों जवर पातसाह बज्जत प्रबल ॥
उनतैं उदीचिदिस जो अवनि तिंहिं लोदी लिय अप्पतंल ।३७।

---

*बल से उदय पाया हुआ; अथवा सेना से प्रकाशित ॥३३॥३४॥
१धमकाया हुआ(डरकर) ॥३५॥ वांछित२धन देकर३मरण पर्यंत ४दुष्कर(कठिनतासे बनै ऐसा)कार्य करने लगा ॥३६॥ अटक नदी५से६बंगाला७देश तक८आर्य९मुकाबिला करनेवाले(शत्रु)१०उत्तर दिशा की भूमि को११अपने नीचे ली॥३७॥

दोहा ॥

तनु सुभांड१८६।४ नृप जब तजिय, वाहि वरस अफगान ॥
तजिय साह बहलोल२७ तनु, नियति उदर्क[1] निदान ॥ ३८ ॥
बेद बेद तिथि१५४४ सक वरस, दिल्लिय इम उद्दाम[2] ॥
साहभयो बहलोल२७ सुत, निपुन सिकंदर२८ नाम ॥ ३९ ॥
अभिधा[3]करि महमूद२८ इत, जो अहमदकुल जात[4] ॥
पुर अहमद आबाद१ पहु, गज्जैं धर गुजरात ॥ ४० ॥
बाजबहादुर सुत बिदित, दृढ इत मंडुव[5] दुंग[6] ॥
नाम मुदाफ़र जो निडर प्रतपैं स्वबल प्रसंग ॥ ४१ ॥

पादाकुलकम् ॥

श्रीस्साह बहलोल २७ पट्टधर, सासन दिल्लिय करत सिकंदर२८॥
याहि अनेहैं[6]नृपतिनारायन१८८।१,हन्यौंसमरकंद१सुजिहिंहायन[7]४२
मनकिय तबहि बिचार नीतिमत, करहिं पुकार सत्रुजन कुक्कत॥
पृतना[8] जो पिल्लहिं[9] मंडूपति, समर दुरघा नबनैं तब संगति ॥४३॥
यातैं जाइ करहिं आराधन[10],मुरहिं कदापि मुदाफरको मन ॥
मुरहिंजो न तो तँहँ तिहिं मारौं,निखिल[11] सल्य[12] मैं मारिहु निकारौं॥४४॥
द्वै२हीओर मरन जव दीसैं, जो को रिपुहिं तजैं तव जीसैं ॥
करत सहाय न साह सिकंदर२८, दोउ२न इन्हैं प्रत्युत[13] मन्नैं दर[13]॥४५॥
इमबिचारि परिकर[15]१अनुजात[16]२न,गदियँ[17] अभीष्ट कबहु थिर गात[18]न
सब तुमबुध[19]अवसरपरहितसह,मदनकुमारि१८७।१ बिबाहहुअतिमंह[20]
आयुसेस जो तो ध्रुव ऐहौं, जोधन[21] पै न संग लैजैहौं ॥

---

१ आनेवाले समय के भाग्य फल भोगने के कारण ॥ ३८ ॥ २निरंकुश ॥ ३९ ॥ ३ नाम से ४ उत्पन्न ॥ ४० ॥ माण्डू ५ पुर में ॥ ४१ ॥ इसी ६ समय में ७ वर्ष ॥ ४२ ॥ ८ सेना ९ भेजेगा ॥ ४३ ॥१०सेवन११ सब का १२ साल ॥ ४४ ॥ १३ उलटा १४ भय ॥ ४५ ॥ १५ परगह १६छोटे भाइयोंको१७कहा१८ शरीर स्थिर नहीं है १९पण्डित, अत्यन्त २० उत्सव से ।४६।परंतु २१ वीरों को

इक्क१जावन भटन अटक्किय, सादी[1] सत१००तव हठन सत्थलिय।४७।
मंडूपुर इम पत्त महीपति, पठई नम्र साहप्रति विन्नति ॥
जवनराज संवाहक[2] इकजन, धीसख[3] किय ताकौं कछु दै धन ।४८।
ताके कर पहुँची सु अरज तँहँ, कहिय मुदाफर बंचि अनुगक[4]हँ ॥
बदहुतासआसय१बल२बिक्रम३, समुचितअनुगकहेतबमनसम।४९।
जबहो करत मुदाफर भोजन, बुल्ल्यो तवहि असख धराधन[5] ॥
पिहित[6] इक्क१छुँरिका[7] धरि भूपति, मंडूपति ढिग पत्त[8] महामति ॥५०॥
दै उपहार[9] पुरटमुंदा[10] दस१०, तिम सक्किय करतव्य उचित तस ॥
भनिय साहक्यौं हमहिं भुल्लि मनि, हमरो समरकंद१डार्यो हनि।५१।
वदिय नृपहु पहु हमहु विपन्नहु[11], मन१वच२काय३रावरे मन्नहु ॥
परैं काम तँहँ मरन पठावहु, लहि जय दुलभ महर इत लावहु ।५२।
समरकंद१मम जनक हन्यौं सठ, हन्यौं कुहक[12] काका२हु छद्म[13] हठ॥
बाहुज[14]कुल यहरीति रही बनि, हनैं जनक तिहिं लंघुहु[15] रहैं हनि॥५३॥
कुल कुपुत्र नहनैं सु कहावत, गतपुरुखन अघ१गारि२गहावत ॥
जाति अंगुलिन ताहि जतावैं, पुनि सम[16]कुल न सुता[17] परिनावैं ॥५४॥
ताहि न देत अंग संगहु तिय[18], जंपि वंझ[19] जननीहु जरैं जिय ॥
यातैं समरकंद१मार्यो अरि, पुत्र२तदीय[20] मर्यो चहि हठ परि॥५५॥
इच्छित व्हे सु करहु हजरत अब, सासनबस[21] हाजरि हुव सब ॥
वदिय साह मम जनक हनैं बिनु, वदि तू सुत किम तस परनैं[22] बिनु।५६।

साथ नहीं लेजाऊंगा १ सवार ॥ ४७ ॥ २ अंग मर्दन करनेवाले को ३ मन्त्री किया ॥ ४८ ॥ ४सेवक को ॥ ४९ ॥ ५राजा को६छिपी हुई ७ छुरी ८ गया ॥ ५० ॥ ९ नजराना १० सोने की मुहरें ॥ ५१ ॥ ११ विपद्ग्रस्त ॥ ५२॥ १२ जालसाज ने १३ छल के हठ से १४ क्षत्रियों के कुल में १५ शीघ्र ही मारकर रहते हैं ॥ ५३ ॥ १६ समान कुलवाले १७ पुत्री को नहीं ब्याहते हैं ॥ ५४ ॥ १८ स्त्री भी अंग का स्पर्श नहीं करने देती १९ बांझ कहकर २०उसका पुत्र ॥ ५५ ॥ २१आज्ञा के अधीन. बादशाह ने कहा कि मेरे पिता ने तुम्हारे दादा को मारा था सो मेरे पिता को मारे विना २२ उसका विवाह कैसे हुआ

हनैंबिनु १ रनैंबिनु २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सुपहु कहिय हजरत*असुरस्वामी, इतर सकल प्रभुके+अनुगामी
तुम प्रभु रीझ१खीज२छम तातैं, खल को चिंतहिं बैर खुदातैं॥५७
कोउन दै प्रभु दंड कलंकहु, परनैं इम जुग२ब्याह पितापहु ॥
मनप्रसन्न हसि सु सुनि मुदाफर, कहिय तुमहु हमरे जो हितकर५८
आवहु समरकंद१जिम तो अब, सहभोजनकरि हरहु भ्रांति सब ॥
॥ ५९ ॥
जान्यौं नृप गाहक यह जीको, नुंत पुनि मरन धर्मपर नीको ॥
हैतो सहमरिबो जसहीको, छिप्रँ खलहिं करि इक्क१ छुरीको ॥६०॥
जातजात ढिग अरि बरजैं तो, भली तबहु असुं यहहु भजैंतो ॥

रजैंतो१भजैंतो२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इमगिनि बिरचि बाँहपट ऊँचे, पानिन मोरि परस्पर पूँचे ॥ ६१ ॥
जावत निकट जवन बरज्यो जो, तब गोपितँ नृप हठहु तज्यो जो ॥

रज्योजो१ तज्योजो२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

साहमुदाफर स्वकहि सराह्यो, चित्त समरकंद१हिंसम चाह्यो॥६२॥

दोहा ॥

पुनि लिखाइ बुंदिय पटा, नृपहिं अप्प जवनेस ॥
सिक्ख मरावत१ द्विरद२ सह, दिय आवन निजदेस ॥ ६३ ॥
बिगरीबत्त सुधारि सब, नृप नारायनदास१८७१ ॥
इम बिलसे पुनि आइकैं, बुंदिय बिभव बिलास ॥ ६४ ॥
सुपहु रचिय निजनामसह, नारायणपुर१ नाम ॥
पुरतैं पच्छिम३ दुव२ रु दल१/२, गव्यूतिनं नवग्राम ॥ ६५ ॥

और उसके विवाह हुए विना तू पुत्र कैसे हुआ?॥५१॥ *प्राणनाथ+सेवक ॥५७॥ ॥५८॥५९॥ १ लेनेवाला २स्तुति योग्य ३साथ मरना ४शीघ्र ही इस दुष्ट को भी एक ही छुरी से मारलूंगा ॥६०॥५ प्राण ६धारण करें ॥६१॥७छिपाहुआ८अपना कह कर ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ९ भोगे॥६४॥ ढाई १० गव्यूति (पांच कोस) पर॥ ६५ ॥

जिहिं चित्तोर अजेय पाइ किय विजय प्रसारहु ॥
मन्नहु भल्लो न रहिबो सुररि अग्रज भीर विचारि अब ॥
जवनेस जोर जानहु जबर सहज अज्ज किय जेर सब ॥ ११ ॥
मंत्र सु तदपि न मन्नि भूप बिन्नति लिखि भेजिय ॥
हम मंडनगढ हान किय रु सासन प्रमान किय ॥
अमल तत्थ करि अप्प हमहिं सेवक गिनि तुट्ठहु ॥
अग्रजैं भुव अपनाइ रीति लुप्पि रु जिन रुट्ठहु ॥
रानाँहु पुब्ब नृप रैन१७५सौं लिय मंडनगढ पट्टलहि ॥
ताकीहु अवनि तव दक्खि तिहिं राज्य कियउ सम न्याय रहि १२
निजजन सबन निबाह करत अप्पहु करुनाकरि ॥
हमहु कहुँक बस हुकम आथु कट्टहिं भय अनुसरि ॥
बुल्ले इम लिखि वार स्वीय मंडनगढ तैं सब ॥
सो१ रु अरज२ सुनि साह कहिय परभुम्मि रहैं कब ॥
अग्रज नृपत्व जो इष्ट तव तो गत रानप्रदेस तजि ॥
भूपहि रहो वैं निज भुग्गि भुव सेस हमहु मंगैंन सजि ॥ १३ ॥

(दोहा)

मंडनगढ किन्नौं अमल, जंपि यह रु जवनेस ॥
सेना पुनि हरराज१८१।१सिर, पिल्लिय तास प्रदेस ॥ १४ ॥
मंडनगढ दिन्नौं समुझि, चविय साह मनमाँहिं ॥
हरराज१८१।१हु दैहैं दरित, जुज्झन क्यों हम जाँहिं ॥ १५ ॥
यह बिचारि करि दल अधिप, निजभट रुस्तम१नाम ॥
सेना वह हरराज१८१।१सिर, पिल्ली बिजय प्रकाम ॥ १६ ॥
दिल्ली जावन अप्प दिगँ, विजई उचित बिचारि ॥
चित्रकूटगढ त्रान चहि, किय प्रबंध हितकारि ॥ १७ ॥

॥ ११ ॥ १ त्याग (छोडा) २ प्रसन्न होओ मेरे ३ बडे भाई की ॥ १२ ॥ ४ अब ॥ १३–१४ ॥ मन में ५ कहा ६ डरकर ॥ १५–१६ ॥ ७ दिग्विजय करने वाला ८ रक्षा ॥ १७ ॥

अर्ध रवास अनुचित यह१ ८७१रहि, रन दुक्खद तजि राज ॥
गिरिनितंब[2] निवस्यो दुगम, सजि नव सौध[3] समाज ॥ ६६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वी तिहोत्रवसुधेश्वर १ बीज्यंवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल१५५वंश्या नुवंश्यविहितवर्णनाऽवसरऽयाहार्यबुन्दीभूभुजंगनारायणदास१८७ ।१चरित्रे मुगलतैमूर २२ प्रतिगमनानन्तरमर्जितम्लेच्छराजमहमूद २१ मरणाऽर्वाक्खिजरखाना २३ दिसिकन्दरा २८ न्तषड् ६ यव नराड्दिल्लीशासनसूचन १, परमतवृत्ताऽल्पज्ञसर्वजनस्वस्व मतवस्तुविवेचनायाथातत्थ्यविख्यापन २, प्रत्यन्तराजतैमूरिशाहरु ख १ सेवकायमानसय्यदखिजरखान २३ तन्नामाङ्कमुद्राप्रवर्तन३, मन्त्रिमारितयवनेन्द्रमुबारिक २४ पुत्रदिल्लीशमुहम्मद २५ स्वस वितृसंहारकधीसखाऽधमध्वंसन ४, निष्कासिततत्तनूजदिलीशाऽ लावुद्दीन २६ प्राप्ततत्पट्टजितजोनपुरादिजनपदलोदिपठानबहलो ल २७ करतोया १ वङ्गा २ऽन्तरदिल्लीसीमाशासन५, तत्पुत्रसिकं

१नीचे के महलों में रहना २ पर्वत के शिखर पर. नवीन ३ महलों का समूह रचकर रहा ॥ ६६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी की भूमि के पति नारायणदास के चरित्र में मुगल तैमूर के पीछा जाने के अनन्तर बादशाह महमूद के मरने से इधर खिजरखां को आदि लेकर सिकन्दर तक इकट्ठे ही छः बादशाहों का दिल्ली की हुकूमत करने की सूचना करना, दूसरों के मत के वृत्तान्त में थोड़ा ज्ञान होने के कारण सब लोगों की अपने अपने मत से वस्तु के विवेचन में सत्यता न होने की सूचना करना, म्लेच्छराज तैमूर के पुत्र शाहरुख का सेवक होकर सय्यद खिजरखां का उसके नाम का सिक्का जारी रखना, मन्त्री के मारेहुए यवनेन्द्र मुबारिक के पुत्र दिल्लीश मुहम्मद का अपने पिता के मारनेवाले अ धम मन्त्री को मारना, उसके पुत्र को निकाल कर दिल्लीश अलाउद्दीन का उसका पाट पाने पर जौनपुर आदि देशों को जीतकर लोदी पठान बहलोल का अटक नदी से बङ्गाल तक दिल्ली की सीमा का शासन करना, उसके पुत्र

दर २८ नरेन्द्रनारायणदास १८७।१ युग्म २ सूचितैक १ स
मास्वस्वस्वामितासमासादन ६, तत्समयदिल्लीपतिप्रत्यनीकपृथ
ग्यवनेन्द्रीभूतपूर्वपरपुरुषमालवमराडू १ पुरराजधानीकम्लेच्छरा
जमुदाफर १ गौर्जराहमदाबादस्थानीयस्कन्धावारकद्वितीय २
यवनराज्महमूद २ यवनेशयुग्म २ भिन्नभिन्नशासकता
सामर्थ्यसङ्कथन ७, निपातितसपुत्रसमरकन्दसमाक्रान्तस्वरा
ज्यनिश्चितनिखिलार्यशल्यनिष्कासनमराडूप्राप्तपरिकरपिहितैक १
छुरिकबहिरशस्त्रदृश्यमानमुमूर्षुनरेन्द्रनारायणदास १८७।१भोजनस
मयम्लेच्छराजमुदाफरसविधसङ्गमन ८, दत्तप्रश्नापराधव्यावर्तको
त्तरसहभोजनाकारकम्लेच्छमारकीभूतनिकटायान्तनृपनिवारणा
ऽनुकूलसमर्पितप्रतिलेखितपृथ्वीपट्ट १ पीलु २ प्रभृतिमहन्मान्यत
पार्थिवप्रागल्भ्यप्रसन्नमराडूपरिवृढम्लेच्छराजमुदाफरबुन्दीन्द्रप्रति
स्थापन ९, सद्मसमायातबुन्दीशनिजनामैक १ नवीननिवसथनिर्मा

सिकन्दर और बुन्दी के राजा नारायणदास इन दोनों का जनाथेहुए एक सं
म्वत् में अपने अपने स्वामिभाव को ग्रहण करना; उस समय, पहले समय में
जिनके पुरुषा बादशाह थे और जिनकी मालवे में मराडूपुर राजधानी थी एसे
दिल्ली पति के शत्रु बादशाह मुदाफर और गुजरात की अहमदाबाद नामक
राजधानी में दूसरे बादशाह महमूद दोनों यवनेशों की जुदी जुदी हुकूमत और
ताकत का कथन, पुत्र सहित समरकन्द को मार, अपने राज्य को ले, सम्पूर्ण
आर्य लोगों के शल्य को निकालने का निश्चय करके मराडूपुर में पहुंच, परग
ह के छाने एक छुरी ले, बाहर से बिना शस्त्र दीखते हुए मरने की इच्छावा
ले नरेन्द्र नारायणदास का भोजन के समय बादशाह मुदाफर के समीप जा
ना, प्रश्न के अपराध को मिटानेवाला उत्तर देकर, साथ भोजन करने को बु
लानेवाले म्लेच्छ को मारने को तय्यार हुए समीप आतेहुए राजा के समीप
आने से अनुकूल होकर भूमि का पट्टा पीछा लिखाकर हाथी आदि देकर ब
ड़े आदर के साथ राजा की बुद्धिमानी से प्रसन्न मराडूपुर के पति म्लेच्छराज
मुदाफर का बुन्दीन्द्र को पीछा भेजना, घर पर आकर बुन्दीश का अपने ना
म का एक नवीन ग्राम बसाने के साथ तारागढ के पर्वत के शिखर पर महल

णा १ सहिततारादुर्गादिनितम्बप्रणीतप्रासादावस्थान २ सूचनं १० चतुर्विंशो २४ मयूखः ॥ २४ ॥

आदित एकसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७१ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

रायमल्ल इत रान मृत, अक्खिय पुव्व उदंत[1] ॥
कहियत तत्थ बिसेस कछु, जीवन तस परजंत[2] ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

रायमल्लकै कुमर प्रथित[3] हुव त्रय ३ हि बलीपन ॥
जेठो पृथ्वीराज १ अपर २ नामक सुहि उड्डन[4] १ ॥
जिहिं अनेंहँ इकजवन लल्ल[6] अभिधाकरि लंपट ॥
दिल्लीपति दयिता सु भेदि पातुरि लायो भट ॥
तिहिं आइ नगर टोडा तबहिं बेढि बिरचि तोपन बिकल ॥
दै त्रास कढ्ढि चालुक दरित[10] बिजित किन्न गढ अप्पबल ॥२॥
तिहिं उड्डन १ रानसुत बंस चालुक सहायबनि ॥
पहुँचि बेग प्रतिमल्ल[11] हल्ल लल्लसु पठान हनि ॥
करि टोडा जय कलह सु पुनि अप्पिय सोलंखिन ॥
उड्डन बज्जिग[12] अप्प पाइ अतिजँव[13] मतिपंखिन ॥
इम जित्ति सिरोहीपुर अधिप स्वीयस्वसा[14] दुख संहरिय ॥
[15]नृप सुनहु बैरकारन निखिल कुमर कुप्पि जिम यह करिय ॥३॥

नाकर निवास करने की सूचना करने का २४ वां मयूख समाप्त हुआ ॥२४॥ और आदि से १७१ मयूख हुए ॥

१ वृत्तान्त पहिले कहा. जीवन २ पर्यन्त ॥ १ ॥ ३ प्रसिद्ध. जिसका दूसरा नाम ४उड्डना था ५समय ६लल्ला नामक ७व्यभिचारी ८प्यारी ९घेर कर १० डरेहुए सोलंखियों को निकालकर ॥ २ ॥ ११शत्रु. यहां से आप उडना १२प्रसिद्ध हुआ. पक्षियों के समान अत्यन्त १३वेग पाकर १४ अपनी बहिन का दुःख मिटाया १५ हे राजा रामसिंह ॥ ३ ॥

रायमल्ल करि रान सुता[1]संबंध सिरोहिय ॥
वरन देवरा[2] बुल्लि कथित विधि सह विवाहकिय ॥
जत्थ दैत्त[3] गुरुजनन मिलित दंपति करमोचत[4] ॥
हमसु सिरोही दत्त कहिय उड्डन[5] अति उद्धत ॥
बरकहिय मम सु उड्डन १ बदिय[6] लेतो मैं वह छिन्नि लहु[7] ॥
अब मैं दई सु लैहौं न इम बिलसि सिरोही नृपवजहु ॥ ४ ॥
यहै सुनत धर्कि[8] असह तोरि अंचल[9] बंधन तब ॥
दुलही लैगय दुलह स्वपुर प्रतिकूल सद्धि सब ॥
उरधरि मंचक[10]अंघ्रि दैनलग्गो सु तियहिं दुख ॥
पिहितें[11] बंचि तस पत्र रुट्ठि उड्डन अंतकरुख[12] ॥
निसजाइ छन्न भगिनी निलय[13] सोवत भामें[14] जगाइ स्वक ॥
बुल्ल्यो कटार उरधरि बदहु तव भगिनी१प्रभु२ मैं१भृतक[15]२॥५॥
तुंगमहल[16] लै ताहि द्रंग[17] हेलाहु दिवायउ ॥
अज्जअवधि[18]लग अम्है प्रान ईस्वरबल पायउ ॥
राणाकुमर करि करुणाँ[20] आप्पि मोकहँ अबतैं असुं[21]१ ॥
सहर२ सिरोही सहित बिदित बखसे नृपता३ बसुं[22]४ ॥
इम बहु पराई हेला[23] रु इहिं छोर्यो जियत कुमार छम[24] ॥
बहिनिहिं न दुक्ख अब देहु बदि करिजय आयो बिजयक्रम ॥६॥

---

१ पुत्री का सम्बन्ध २ देवड़ा शाखा के चहुवाण को. जहां बडे लोग ३ देते हैं ४ हथलेवा छूटते समय ५ पृथ्वीराज ने कहा कि हमने सिरोही दी. तब दुल्लह ने ६कहा कि वह तो मेरी ही है तिस पर पृथ्वीराज ने कहा कि मैं ७ शीघ्र छीन लेता ॥ ४ ॥ ८ क्रोध कर के ९ गठजोड़ा तोड़ कर १० माँचे का पाया छाती पर रखकर ११ छाने १२ यमराज की भांति. बहिन के १३ घर. अपने १४ बहिनोई को जगाकर. तब बहिन के पति ने कहा कि मैं आपका १५ चाकर हूं ॥ ५ ॥ उसको १६ ऊंचे महल पर ले जाकर १७ नगर में आवाज दिलायी १८ आज पर्यन्त १९ मैंने २० करुणा करके. २१ प्राण २२धन. आवाज २३दिलाकर २४समर्थ कुमार ने ॥६॥

दोहा ॥

पृथ्वीराज१ कुमार पहु, उड्डन१ पर२ अभिधान ॥
कुमरपनहिं बपु हान किय, जिहिं जिम नियति निदान ॥७॥
उड्डन१ सौं हे दुव१ अनुज, मध्यम तँहँ जयमल्ल२ ॥
अरु संग्राम३ कनिष्ठ इम, सोदर रिपुकुल सल्ल ॥ ८ ॥
मरयो प्रथम१ उड्डन१ कुमर, रायमल्ल पुनि२ रान ॥
जयमल्ल१ रु संग्राम२ जँहँ, घुमँडि भिरे घमसान ॥९॥
हनि अग्रज जयमल्ल१ व्है, सुपहु अनुज संग्राम२ ॥
प्रतप्यो गढ चित्तोरपर, अँय१ नँय२ जय३ उद्दाम ॥ १० ॥

षट्पात् ॥

इत नारायन १८७।१ अधिप द्रंगबुंदिय दुर्जनदम ॥
बेदकथित बिधि निबहि कियउ उपयम चतुष्क४ क्रम ॥
तँहँ संग्राम पितृव्य जेष्ठ उड्डनतनुजाई ॥
चंपा१८७।१ गढ चित्तोर प्रथम१ हड्डहिं परिनाई ॥
तिम राजकुमरि १८७।२चंद्रावतिसु मलयसुता दूजी२सुमति ॥
परनैं बहोरि दुँवर जोधपुर पहु बुंदिय१ चित्तोर२पति ॥ ११ ॥

दूसरे १नाम से २ भाग्य के ३ कारण ॥ ७ ॥ ४ थे ॥ ८ ॥ ५ कुमर पृथ्वीराज पहिले मरा ६ * युद्ध ॥ ९ ॥ ७ प्रारब्ध ८ नीति और जय में ९ निरंकुश ॥ १० ॥ १० शत्रुओं को दण्ड देनेवाला ११ विवाह १२काका संग्रामसिंह (सांगा) ने. वडे भाई पृथ्वीराज की १३ पुत्री को. बुन्दी और चित्तोड़ के पति १४ दोनों राजा जोधपुर व्याहे ॥ ११ ॥

*यहां कुमर पृथ्वीराज का पहिले मरना और संग्रामसिंह का वडे भाई जयमल्ल को मारकर राजा होना. लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि इन तीनों भाइयों की लड़ाई कुमर पृथ्वीराज की विद्यमानता में पहले ही होचुकी थी जिसमें घायल तो हुए परन्तु कोई भाई मारा नहीं गया और कुमर जयमल्ल राव सुल्तान सोलंखी के साले सांखला रत्नसिंह के हाथ से मारागया इस पीछे कुमर पृथ्वीराज़ ने लल्ला पठान को मारकर टोडा विजय किया जिसका सविस्तर वृत्तान्त देखना होवे तो 'वीरविनोद' नामक मेवाड़ के इतिहास और 'टॉड राजस्थान' में देख लेवैं. और लल्ला पठान को मारने के कारण वडी शीघ्रता के साथ टोडे पहुँचे इसीकारण उसी दिन से कुमर पृथ्वीराज का नाम उडना पृथ्वीराज प्रसिद्ध हुआ था ॥

दोहा ॥

कन्या वग्घ कवंधकी, भ्रात गंग भूपाल ॥
नाम धना१ खेतू२ निपुन, व्याही दै स्वाविसाल ॥ १२ ॥
धना१ रान *संग्रामधन, आयो परनि उमाहि ॥
नारायन१८७१खेतू१८७३सु निज, बलि किय तीजी३व्याहि॥१३॥
क्रम लक्खाउत १ चुंड२ कै, सुत३ सुत४ केर सुताहु ॥
सरहकुमरि १८७१४ चुंडाउति सु, व्याहिय चोथे४व्याहु ॥१४॥
जाई गुज्जर२ जास जुग२, नत्थी १ लालाँ२ नाम ॥
भूप भुजिष्या३ करि भवन, रक्खी यह अभिराम ॥ १५ ॥
कन्या गुज्जर चंदकी, अतिबल जानी एह ॥
तस जनक४हिँ करि तुष्ट५ तिम, गिनि अनूढ६ लिय गेह ॥ १६ ॥

षट्पात् ॥

जोध१ नृपति जोधपुर रचिय तससुत हुव बारह १२ ॥
तिनमैं पंचम ५ रतन२ तास सुत रायसिंह३ तह ॥
तनुज रायमल्ल ४ तस तास कल्ल्यान ५ वीर७तम ॥
गिनि गृहको लघुग्रास८ वढ्यो मन तास दुष्टदम९ ॥
तनसम न साह दिल्लीस तकि गंजि समर सुमियानगढ ॥
घुम्मैं सु लुट्टि दिसदिसन धन रावनवारी इक्क१ रढ१० ॥ १७ ॥
दिल्लियदल बहुबेर भंजि कल्ल्यान भजाये ॥
मिच्छनमन प्रतिमल्ल११ सल्ल तसगुन न समाये ॥
रारिरसिक रट्ठोर दोरि दिल्लिय दावायत ॥
सुनि बुंदिय जससोर ओर तस चुनि हित आयत्त१२ ॥

॥१२॥*युद्ध ही जिसके धन है ॥१३॥महाराणा १. लाखा के पुत्र चूंडा के पोते की बेटी ॥१४॥ २गूजर(शूद्र जाति विशेष)३पासवान ॥१५॥ उसके ४पिता को ५ प्रसन्न करके ६कुमारी जानकर ॥ १६ ॥ ७ अत्यन्त वीर ८ घर की जीविका छोटी समझ कर ९ दुष्टों को दण्ड देने को १० हठ ॥१७॥ ११ शत्रु १२ बड़ा.

निज जामि[1] मदनकुमरी१८७।१निपुन तास बिरचि संबंध तँहँ ॥
लखतहु सु बुल्लि बुंदिय दई ब्याहि बहिनि कल्ल्यानकँहँ ।१८।
जवहु कल्ल जवनेस कटक[3] वेष्टित[4] गढतैं कढि ॥
परन्यौं बुंदिय पहुँचि बीर साहस दुरूह[5] बढि ॥
नवढ़दिन सालकनिलय[6] दै सु धन कविन लक्खदुव२०००००
सहदुल्लही हठसंग हंकि निजगढ प्रविष्टहुव ॥
दिन्नैं भजाइ पुनि गंजि दल पुनिपुनि लग्गे आइ पर[7] ॥
बिछुरन गयो न कल्ल्यान बय धक्कि घुम्मत दिल्लीस धर ।१९।
जिम आयउ जगमाल हम्म १८३।१ भूपति दुहिताहित ॥
कल्लहु तिम इककाल अप्प रमनिय[9] पठाइ इत ॥
घेरापर रचि घात पटकि रतिवाह पाइपथ ॥
सावनतीज ३ निसीथं[10] अप्प आयउ बुंदी अथ ॥
लै तियहिं जाइ सुमियान लहु[11] किंकर नापित[12] द्वेसकरि ॥
खग्गन सु कल्ल तिलतिल खिरयो जिम हड्डी गय संग जरि।२०।

दोहा ॥

सूनु सिकंदर २८ साहको, जेठे १ अनुज जलाल २ ॥
अबके रनहो मुख्य यह, सेनाबिच रिपुसाल ॥ २१ ॥
सजल १ भुम्मि सुमियानढिग, ऊसर निर्जल २ ओर ॥
दिल्लीदल जलबिनु दहैं, घेरारचि दुखघोर ॥२२॥
नापितहो जु नरेसको, संबाहक[13] सविसास ॥
किल्लापति वह कल्ल[14] किय, जानि धर्ममति जास ॥ २३ ॥

अपनी १ बहिन ॥१८॥ उस समय२कल्याणसिंह. यवनों की३सेना से४घिरे हुए गढ से निकल कर५कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसे साहस को बढाकर. सालेके६घर में७शत्रु ॥१९॥ राजा हामा की ८ पुत्री के लिये. अपनी९पत्नी को१०आधीरात को११शीघ्र१२नाई के द्वेष से ॥२०॥२१॥२२॥ १३ अङ्ग मर्दन करनेवाला १४ कल्याणसिंह ने ॥ २३ ॥

किल्ला सुहि तिहिँ दैनकहि, महुर छप्पि फरमान ॥
खल नापित भेद्यो खलन, प्रबलन छलन प्रधान ॥ २४ ॥
नापित अधम निसीथ निस, सत्रुन गढ प्रविसाइ ॥
स्वामि कटाइ कृतघ्न सठ, पीछैं फल लियपाइ ॥२५॥
बंधि कुतुपै[2] बारूदके, जवनन भुंज्यो जोहु ॥
कल्ल महिप हनि मिच्छकुल, सतिय[3] बस्यो दिव[4] सोहु ॥२६॥
जीवनलग निजजामि[5]कोँ, नगर बरोदा नाम ॥
नृप नारायनदास १८७।१दिय, आय वृद्धि अभिराम ॥ २७ ॥
सिखरबंध श्रीहरि[6]सदन, मदनकुमारि १८७।१जा माँहिँ ॥
बिरचि बरोदा किय बिदित, अबहु नाम तस आँहिँ[7] ॥ २८ ॥
कल्लमरन भावीकथा, बर्तमान अब वत्त ॥
परिनाये बुंदीस पुनि, अनुज उभय २ अनुरत्त ॥ २९ ॥
अखैराज कछवाहकी, कनी[8] समर्थकुमारि १८७।१ ॥
परिनायो[9] भूपति प्रथम, नरबद १८७।२ सबय निहारि ॥ ३० ॥
हरि जद्दव तनया बहुरि, सुगुनुकुमारि १८७।२ सनाम ॥
परिनायउ नरबद १८७।२ सु पहु, इम द्वै २ ही उपयाम ॥ ३१ ॥
कनी स्याम सीसोदकी, बल्लभकुमरि १८७।१ बिबाहि ॥
किय इक१ब्याह नृसिंह१८७।१को,नृप हित महित निबाहि।३२॥
अधिक नसा[10] अहिफेन[11]को, नृप नारायनदास १८७।१ ॥
क्रम बढिबढि लग्गो करन, त्वरित[12] भयो बस तास ॥ ३३ ॥
अतिअफीम करि अंगतैं, बिनस्यो दर्पक[13] बोध ॥
परिगो चिर[14]हिँ प्रसूति[15]को, रानिनकै इम रोध[16] ॥ ३४ ॥

उस नाई को १ फोड़ कर अपने में मिला लिया ॥ २४ ॥ २५ ॥ बारूद के २ पीपे से बांध कर ३ स्त्री सहित ४ स्वर्ग में ॥२६॥ अपनी ५ बहिन को ॥ २७ ॥ ६ विष्णु भगवान् का मन्दिर ७ है ॥२८॥२९॥ ८ कन्या ॥३०॥ ९ विवाह ॥३१ ॥ ३२ ॥ १०मद ११अमल का १२शीघ्र उस नशे के आधीन होगया ॥ ३३ ॥ १३कामदेव का ज्ञान १४बहुत समय तक १५बालक जनने का १६रोक ॥३४॥

संतति न हुव नृसिंह १८७१३ कैं, निज प्रारब्ध निदान ॥
नलयो[1] जिहिं भूभाग निज, मन संतुष्ट प्रमान ॥ ३५ ॥
निबसथ[2] इक नृसिंह १८७१३ नैं, नैं[3]व्य रचिय निजनाम ॥
पट्टनि प्रांत नृसिंहपुर, अबहु बिदित अभिराम ॥ ३६ ॥
नरवद १८७१२ कौं भूभाग नृप, दिय माटुंदा ग्रंग ॥
ताकैं संतति पंच ५ तिम, प्रकटिय बैंसर[4] प्रसंग ॥ ३७ ॥

षट्पात् ॥

भये अर्जुन१८८१२ रु भीम१८८१२ उभय२ कछवाही ओरस ॥
कन्या कर्मवती१८८१२रु पूर१८८१३ मुकल१८८१४जाहिरजस॥
भगिनी इक१ दुव२भ्रात त्रिक३हि जद्दोनि जन्यौं तिम ॥
नृप पहिलैं नारवद प्रजा[6] पंचक ५ उपज्यो इम ॥
हड्डेस रान संग्राम हित कर्मवति१८८१२ सु ब्याही कुमरि ॥
याकेहि प्रसव बिक्कम१ उदय२कुमर भये लघुकाल करि।३८।

दोहा ॥

कुमर धना१ रट्ठोरिकैं, भोज१ रतन२ दुव२ भ्रात ॥
इनपीछैं विक्कम३ उदय४, जुगल२ कर्मवति२ जात ॥ ३९ ॥
ब्याह्यो भोज१कुमार वलि, मीरौं मेरतनी सु ॥
कुमरपनहि पति मृत्युकरि, बिभुंहरिभक्त बनी सु ॥ ४० ॥
तकि इक्कत१ संबंध त्रिक३, चहि बुंदिय१ चित्तोर२ ॥
नारायन१ संग्राम२ नृप, इक१ मन दु२तन दु२ओर ॥ ४१ ॥

षट्पात् ॥

अग्रजैंजा[11] पति१ ऐंह प्रथित वह२ अनुजसुतापति२ ॥

१ भूमि का बंट नहीं लिया ॥ ३५ ॥ २ ग्राम ३ नवीन ॥३६॥४ समय पर ॥३७॥
५ नरवद की ६ सन्तान ७ विक्रमादित्य और उदयसिंह इसके ही हुए ८थोड़े समय में ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ९ मीरां बाई नामक मेड़तनी को १० व्यापक विष्णु भगवान् की ॥ ४० ॥ ४१॥ ११बड़े भाई की पुत्री का पति १२नारायणदास

जुग२हि स्वसुर२ जामात[1]२ मन्नि इतरेतर[2] सम्मति ॥
हालीबिर[3]१इत१ हड्ड१बहुरि उतर२ रान२ कुलबिर[4]२ ॥
सगपन त्रय३ सम्मेल१ तिमहि मनमेल२ अधिकतर[5] ॥
सीसोद१ गिनत बुंदिय२ सदन[6] हड्ड१ तिमहि चित्तोर२ चहि ॥
आह्वान[7]बिनुहु आवत उभय२ गदित[8]रीति ऐकत्व[9]१ गहि ॥४२॥
सुरभि[10]समय संग्राम कबहु बुंदिय आगमकिय ॥
तत्थ विसद[11] मधुतीज[12]३ माहिप दोउ२न महमंडिय[13] ॥
दियउ पातुरनि द्रविन[14] अयुत इक१००००इक१००००इतरेतर[15]॥
आयउ ढक्कुव[16] अत्थ[17] सभा सकलहि उट्ठिय अर[18] ॥
उठ्यो न भूप[19] पललागि इहाँ तक्कि ढक्कुव अपमान तँहँ ॥
भनि मृतक[20] नर्म[21] किय रानभट तिंहिं दब्बिय खिजि रान तँहँ ॥४३॥

मानतँहँ१ रानतँहँ२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

चेतत पुनि निजकवि चविय[22], नृप[23] ढक्कुव कटु नर्म॥
भ्रात[24]समहु अरितम[25] भनिय, बनिय अप्प जयबर्म[26] ॥ ४४ ॥
नारायन१८७१ अक्खिय निजहु, भ्रात नजानत भाव ॥
विनासमय बल बाहुजन[27], दुरघोरहत खय दाव[28] ॥ ४५ ॥

षट्पात् ॥

और नारायणदास के छोटे भाई की पुत्री का पति प्रसिद्ध संग्रामसिंह, इस प्रकार दोनों ससुरा और १ जमाई २ परस्पर ३ साली का पति तो हाडा नारायणदास और उधर ४ बडसासू (स्त्री की बडीबहिन) का पति महाराणा सांगा ५अत्यन्त. बुन्दी को अपना ६घर जानते हैं. विना ७बुलाये ही ८कही हुई रीति से ९ एकता ग्रहण करके ॥४२॥ १० वसन्त ऋतु में ११ शुक्लपक्ष १२ चैत्र मास १३ उत्सव १४ धन१५परस्पर१६मेवाड़ के उमराव कोठारिया के पति पूरबिया चहुवाण का नाम है१७यहां१८शीघ्र१९राजा नारायणदास क्या२०मरगया? यह कह कर२१हँसी की॥४३॥२२कहा २३राजा को २४ भाई के समान है तो भी २५ अत्यन्त शत्रु के समान कहा. आप २६ विजय का कवच पहननेवाला बना ॥ ४४ ॥ २७क्षत्रियों का २८अग्नि ॥ ४५ ॥

अहमदखान१ पठान अरु, प्रथितं अज्ज प्रासार२॥
स्वर्णगिरे७ चहुवान३ सह, रक्खे गढ रखवार ॥ १८ ॥
करि प्रसाद तिनप्रति कहिय, तुम इत्थल चित्तोर ॥
मेवारहिं रक्खहु मुदित, जितातित दब्बहु जोर ॥ १९ ॥
इन बसकरि चित्तोर इम, बंबावद दल पिल्लि ॥
पत्तो दिल्लिय साह पुनि, क्रमत अज्ज अहि किल्लि ॥ २० ॥
साहकटक हरराज१८।१।१सिर, लै रुस्तुम१ बहलीम२ ॥
प्रस्थित सुनि बुंदियपतिहु, सत्वर पत्तो सीम ॥ २१ ॥
हरराज१८।१।१हु अर्जुन१८।१।७हिं कहिय, हमरी होहि सु होहि ॥
अप्प लाल बुंदियअधिप, सत्थ न खोवहु सोहि ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

सिव१ हरि२ चंडिय३ सौंह अप्प४सह जनक५सौंह अति ॥
रुट्ठि दियउ हरराज१८।१।१ तुट्ठि मरनहिं गिनैन तति ॥
पानिजोरि पयप्रनालि हानि निश्चितकहि हहुन ॥
कहिय मरहु गहि कलह अप्प१८।१।१सानुज१८।१।७असि१अहुन२॥
जीवत दुरघाँहिं प्रभुता१ रु जस२ धोइ स्वसहिं धमनीं धमत ॥
प्रसभहि गह्यो सु जवनेस प्रभु सो न जतनपुब्बहु समत ॥२३॥
समरसिंह१८।१।७ इम आक्खि जिट्ठ१८।१।१ नासीर भयउ जब ॥
निश्चित मरन निहारि तुमुल हरराज१८।१।१रचिय तब ॥
पुर मंडन ढिग परत खान रुस्तुम१ उद्धत खल ॥

१ प्रसिद्ध २ सोनगिरे ॥ १८-१९ ॥ ३ सेना ४ भेजकर ५ पहुंचा ६ आर्यरूपी ७ सर्प को कील कर ॥ २० ॥ ८ प्रस्थान करना सुन कर ९ शीघ्र सीमा पर पहुंचा ॥ २१ ॥ १० हमारी तो जो गति होनी होगी सो होगी परंतु हे लाल! हमारे साथ तुम बुंदी को मत खोओ ॥ २२ ॥ ११ छोटे भाई सहित १२ दोनों ओर१३जीवसाक्षिणी नाड़ी चलती है जब तक, अथवा लुहार की धौंकनी के समान श्वास लेतेहुए सन्वेग १४यत्न पूर्वक नहीं मिटेगा ॥ २३ ॥ १५ ज्येष्ठभ्राता का १६ सूर्य १७ घोर संग्राम

राठ उक्कुव सोहुमुनि वदिय जो तुन वंसेवर ॥
सहितसभा पैठ सबन थंग किनकरहु सम्म थैर ॥
रान जानि इम विरस सुंदि उहि द उवकूलुख ॥
सिविर दई तिहिं सिवज रक्खि भट संग प्रबलरुख ॥
सोदा रह्यो जु विल्लवन सुकवि काव्य विरुद पुनि श्रवनकिय॥
कहँ प्रसन्न कुंवीस तब हुवरसासनइकलक्ख१०००००दिय॥४६॥
सत्तलसुत खामोर धीर कुंदीस वृत्तिधर ॥
रानविरुदअष रचिय हुव अनुमंत लोहठहर ॥
दिय सुनाइ गोत्थिय दिन सोहु कविता सीसोदहिं ॥
सुगए शासन लक्खजुग२००००० रानदिय मन्नि प्रमोदहिं ॥
लग्गो न लैन जिन्ह धीर जब पिक्खि विमनैं चित्तोरपति ॥
संकुचि निहोरि सासत सुवहु मन्निय निहि उदारमति ॥४७॥
तदनंतर चित्तोर न्रपहु गय गढ़ नारायन १८७१२ ॥
मिलो उभय २ महिपाल करन सिच्छन कारायन ॥
सदुदैश्पुन संबंध मिथैहिं स्वसुर २ र जामाई ३ ॥
रानी ईम रखोरि प्रचुर मालिमालि पठाई ॥
दिनइक रान रावेंद्र सद्न भद्रासेन थित भूप हुव २ ॥
कुंवीस तदप अतिफैनस मैंचि पलंग दिंडैलुकुव ॥४८॥

दोहा ॥

सुरविंधा कुट्ठाग्गति, वद उक्क चहुवान ॥

१ आनि हुआ ।. २ पत्र ३ सौन ४ गोत्र [illegible] के [illegible] में ५ [illegible] ॥ ४३ ॥ और नाहक कामोर शाखा [illegible] बूंदी के ६ [illegible] के. [illegible] ७ [illegible] ८ [illegible] [illegible] ॥ ९ [illegible] को ९. कैद करने के लिये १० [illegible] (रानी की बहिन का पति) [illegible] ११ [illegible] १२ [illegible] १३ [illegible] [illegible] १४ सिंहासन [illegible] १६ [illegible] १७ [illegible] १८ [illegible] ॥४८॥ १९ [illegible] खाना का [illegible] नामक

चिंततभो नृपकोबचन, करि रस विरस कथान ॥ ४९ ॥
तबसु बहुकरी केर तृन, मंगि फरासन मूढ ॥
पिहित गयो नृपपिट्ठिपैं, गदि अग्गिन कहुँ गूढ ॥ ५० ॥
प्रभुं मामक कुल परपुरुख, उहाँ भानुअभिधान ॥
वरज्यो सठ ढक्कू बहुत, सो न रुक्यो अवसान ॥ ५१ ॥
तब रानहु ताकों तरजि, उठ्यो अटकन अप्प ॥
जोलों तिहिं ढिगजातही, दिय सिर तृन अतिदप्प ॥ ५२ ॥

॥ षट्पात् ॥

वरजनके सुनि बचन हड्ड मन सावधानहुव ॥
पैं करि कपट प्रमाद अधिक उंघिय सुभांड १८६।१ सुव ॥
बैठि पिट्ठि इहिंबीच सत्रु तृनकुंच धरयो सिर ॥
बुल्ल्यो को यह वन्हि कांडं इक्क १ हु जरैं न किरै ॥
सैंचेहिंदगन ढिग तुल्लिसन उलटेकरदिय झारि असि ॥
वसु ८ खंड कट्टि चहुवानवपु धारा कछु गय थंभ धसि ॥५३॥

दोहा ॥

अँचे दुव २ पक्खिन असिनें, रान पिधान कराइ ॥
कहिय अनय ढक्कूहिकिय, पाप फलहु लिय पाइ ॥ ५४ ॥
वन्यों सभा रस १ मैं बिरस२, परि हित१माँहिं प्रतीपं २ ॥
पिसुन नैर कुट्टारपति, मारयो इम सु महीपं ॥ ५५ ॥

ठिकाने का पति १ कथा ॥ ४९ ॥ २ बुहारी (मार्जनी) के तृण. इस राज में छिपाहुआ ३अग्नि कहते हैं सो अग्नि होवेगा तो ये तृण जल जावेंगे पर फहकर छिपकर पीठ पर गया ॥ ५० ॥ ४ हे प्रभु रामसिंह! मेरे कुल का अन्त में ॥ ५१ ॥ ६ रोकने के लिये ७ अत्यन्त घमगड से ॥ ५२ ॥ ८ तृणों का कूंचा (समूह). यह कैसा ९ अग्नि है कि जिससे निश्चय ही १० एक तृण भी नहीं जलता ११ किल (निश्चय ही) ॥५३॥ दोनों पक्षवालों ने १२तलवारें खैंचीं महाराणा ने १३ म्यान करा दीं १४ अनीति ॥ ५४ ॥ १५ उलटा (विरोध) १६ चुगल १७ कोठारिया नगर का पति. बुन्दी के १८ राजा नारायणदास ने ॥५५॥

परि उक्कुरू[1]की पिंडुरिन, खग्ग अठ्ठ ८ अरिखंड ॥
किय धरके जुग २ द्वै २ करन, चउ ४ चरनन इम चंड ॥ ५६ ॥
आवनलग्गो रुट्ठि[2] यह, नारायन १८७११ अवनीस ॥
हत्थजोरि रक्खयो हठन, रान समावर्तरीस ॥ ५७ ॥

॥ षट्पात् ॥

नृपहिं रक्खि बहुदिनन करत म्रुगयादिक[3] क्रीड़न ॥
बिबिध गोठि ब्यंजनन असनसह होत सईड़न[4] ॥
बिजन[5] भूप दुव २ बैठि मंत्र इकदिन इम मंडिय ॥
पच्छिम १ दक्खिन २ पहुन[6] खलन अज्जन[7] मदखंडिय ॥
वदि तृनसमान दिल्लीसवल जुग २ हि साह लग्गे वजन ॥
प्रतिअब्द लेत लक्खनप्रमित धरहिं भेट कबलौं सु धन ॥ ५८ ॥
इक्के बीर अनेक रहत जिनके जयरक्खन ॥
प्रतिहायन[10] प्रतिपानि[11] लेत केतन[12] बहु लक्खन ॥
सत१००सर[13] चउ४चउ४सरधि[14] धनुख त्रय३त्रय३जे धारत ॥
त्रय ३ गोलिन अंतरहु बेधि परबलहिं[15] बिडारत ॥
कैसो उपाय रोकन करहिं जाइ जवन परिभूत[16] जिम ॥
अज्जन[17] प्रजाहु लुट्टत अटत[18] पत्रिनरन[19] पारथ[20] प्रतिम[21] ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

इहकहिय बुल्लहु हमहिं, सासन अलस सहाय ॥

१ऊकड़ू(दोनों पगों के बल बैठने को मरुभाषा में ऊकड़ू बैठना कहते हैं)बैठे हुए की पींडियों पर पड़ कर ॥ ५६ ॥ २ क्रोध को शांत करता हुआ ॥ ५७ ॥ ३ शिकार आदि ४ स्तुति सहित ५ एकान्त में ६ राजाओं के ७ आर्यों के ८ सालाना ९ लाखों के प्रमाण से ॥ ५८ ॥ १० सालाना ११ एक एक भुज प्रति अर्थात् दोनों भुजों के दो लाख रुपये १२ तनख्वाह लेते हैं. सौ सौ १३ तीरों के चार चार १४ भाथे और तीन तीन धनुष धारण करते हैं १५ शत्रुओं की सेना को बिखेर देते हैं १६ अनादर के साथ १७ आर्य प्रजा को लूटते १८ फिरते हैं १९ बाणों के युद्ध में २० अर्जुन के २१ सदृश हैं ॥ ५९ ॥

फिर करिहैं कछुरीति करि, इक्के जयन उपाय ॥ ६० ॥
दोउ रन किय यह मंल हठ, रहि कछुदिन अनुरत्त ॥
करि सगोल ढक्कू कदन, पहुं बुंदिय इम पत्त ॥ ६१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणो पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रचतुर्बाहु १ अग्निजपवर्णनबीजहड्डाधिराजास्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरविख्यापनीयहड्डकुलकोटीरबुन्दीवसुधेश्वरनारायणदास१८७१ चरित्रे संहृतलल्लनामयवनप्रवीरराणारायमल्लज्येष्ठकुमारोड्डयनपृथ्वीराजटोडापुरपुनश्चालुक्यकुलायत्तीकरण १, विजितशिवपुरीनरेशनिजजामिजानिमोचिततद्दत्तभगिनीकष्टविद्यमानपितृकप्राप्तयौवनकुमारपृथ्वीराजतनुत्यजन २, निपातितनिजाग्रजराणासंग्रामसिंहपितृपट्टप्रापण ३, परिणीतशैपींदी १ प्रभृतिपत्नीचतुष्क ४ स्वीकृतैक १ भुजिष्यनरेन्द्रनारायणदास १८७१ स्वभगिनीमदनकुमारी १८७१ तिरस्कृतदिल्लीशसमाक्रान्तसुमियाणादुर्गराष्ट्रकूटराजकल्याणकरग्रहण ४, श्वाशुर्यनिवे

१ निश्चय ही २ विजय करने का ॥ ६० ॥ ३ प्रीति सहित. अपने गोलवाले ढक्कू का ४ नाश करके ५ राजा ६ पहुंचा ॥ ६१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चार हाथवाले (चहुवाण) के वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में प्रसिद्ध करने योग्य हाडा कुल के मुकुट बुन्दीन्द्र भूपति नारायणदास के चरित्र में लल्ल नामक यवन का नाश करके बड़े वीर राणा रायमल्ल के ज्येष्ठ कुमर उडना पृथ्वीराज का टोडापुर को फिर सोलंखियों के कुल के आधीन करना, सिरोही के राजा को जीतकर अपनी बहिन के पति के दियेहुए दुःख से बहिन को छुडाकर पिता की विद्यमानता में यौवन प्राप्त होकर कुमर पृथ्वीराज का शरीर छोडना, बडे भाई को मारकर राणा संग्रामसिंह का पिता का पाट प्राप्त करना, शींपं..देनी आदि चार स्त्रियों से विवाह करके एक पासवान करके नरेन्द्र नारायणदास का अपनी बहिन मदनकुमारी का दिल्ली के बादशाह का अनादर करनेवाले सुमियाणा गढको दबानेवाले राठोडराज कल्याण से विवाह करना, ससुराल में दो लाख रुपये लाग में देकर, हठ के साथ स्त्री सहित घर में आ

शनवितीर्णद्रम्मलक्षद्वय २००००० समसभसपत्नीकसमागतएल: पुनःपराजितयवनानीकाविप्लावितादिल्लीशकमर्दध्वजनरेशकल्याणप्र तीपीभूतस्वसंवाहकनापितदुर्गप्रवेशितपरपृतनाप्रधनसहगामिनीस हितपुद्गलप्रहाण ५, बुन्दीशनिजानुजनरबद १८७।१ कौर्मी १ याद वी २ दयिताद्वय २ नृसिंह १८७।३ शेषोद्दी १ पत्न्येक १ परिणा यन ६, वर्द्धितातिमात्रसमभ्यस्ताऽहिफेनवशीभूततन्मदमत्तमनरकन रेन्द्रसन्ततिसंरोधचिरसम्भवन ७, विधिवशालब्धसन्तानानङ्गीकृत वसुधाविभागनृपाऽनुजनृसिंह १८७।३ निजनामनव्यनिवसथनिर्मा ण ८, भूभागप्राप्तमाटुन्दाख्यद्रङ्गनरबद१८७।२ दयिताद्वय२ लब्धा तसुतैक १ सहिताऽर्जुना १८८।१ दिसुतचतुष्क ४ समुद्भवन ९, न रेन्द्रनारायणदास १८७।१ स्वानुजनरबद १८७।२ सुताकर्मवती १८८।१ चित्रकूटेशराणासंग्रामसिंहपरिणायन १०; राणौरसधानेय भोज १ रत्न २ कार्मवतेयविक्रमो १ दय २ कुमारचतुष्क ४ स मुद्भवन ११, जीवज्जनकज्येष्ठकुमार भोज १ मरणानन्तरतत्पत्नी

कर यवन सेना को वारम्वार जीतकर दिल्ली के बादशाह के उपद्रव करनेवाले राठोड़ नरेश कल्याण का शत्रु बने हुए अपने शरीर के मालिस करनेवाले नाई से गढ में प्रवेश कराई हुई शत्रु सेना के साथ युद्ध करके अपने साथ गमन करनेवाली स्त्री सहित शरीर छोड़ना, बुन्दीश का अपने छोटे भाई नर बद का कछवाही और यादवी दो स्त्रियों से और नृसिंह का एक स्त्री शीपो दिनी से विवाह करना, अत्यन्त मात्रा बढजाने के अभ्यास से अमल के वशी भूत उसके नशे में मत्त मनवाले राजा के सन्तान का बहुत समय तक रुकना, दैव वश से सन्तान न पाकर, पृथ्वी के विभाग को न लेकर राजा के छोटे भा ई नृसिंह का अपने नाम से नवीन ग्राम बसाना, पृथ्वी के बंट में माटूंदा ना मक नगर पानेवाले नरबद के दो स्त्रियों से एक पुत्री के साथ अर्जुन आदि चार पुत्रों का होना, नरेन्द्र नारायणदास का अपने छोटे भाई नरबद की पुत्री क र्मवती को चित्तोड़ के पति राणा संग्रामसिंह को व्याहना, राणा के पत्नी के उदर से भोज और रत्नसिंह तथा कर्मवती के उदर से विक्रमादित्य और उ दयसिंह इन चार औरस कुमारों का जन्म होना, पिता के जीवित समय में ही बडे कुमार भोज के मरे पीछे उसकी स्त्री राठोड़ी मीरां का जीवन पर्यन्त

राष्ट्रकूटीमीराँयावज्जीवहरिभक्तिसमासादन १२, नरेन्द्रनारायणदास १ राणासंग्रामसिंह २ सम्बन्धत्रय ३ स्निग्धस्वान्तैक्य १ परस्परप्रीतिप्रकटन १३, सुरभिसमयबुन्दीसमागतसभासमुपविष्टदत्तद्वि १ पक्षपणस्त्रीगणार्थद्रव्यायुत१०००० राणास्वकीयभटढक्कूकृतबुन्दीशाहिफेनप्रामाद्यदुर्वचनवारण १४, श्रुतस्वगर्हणसावधानसूचिताकाण्डक्षात्रसत्वकालाग्निगोपनौचित्यबुंदीशविल्हणार्थमुद्रालक्ष १००००० शासनोपवसथद्वय २ विश्राणन १५, प्रसभमतारणाप्तनाप्रपातप्रेषितस्तब्धताप्रागल्भ्यकुत्सकतावमतबुन्दीशबलवैश्वानरत्वस्वशठभटढक्कूकराणाद्वितीय २ दिनावसरबुन्दीशकविधीरार्थसमुद्रालक्षयुग २००००० शासनयुग२ सप्रसभसमर्पण १६, स्नेहोत्कर्षसोत्कण्ठचित्रकूटप्रयातप्राप्तज्येष्ठश्वश्रूप्रेष्यसमज्यासङ्गतविभक्तार्द्धभद्रविष्टरोपविष्टसौभाण्डकृपाणप्रत्यक्प्रहारस्वमूर्द्धखटक्षेपकढक्कूचाहुवाणवपुरष्ट ८ धाकर्तन १७, प्रव्हताप्रतिनिवर्त्तितकियत्कालकृतनिवाससमर्थितराणारहस्यस्वीकृतसमयसहाय

ईश्वर भक्ति ग्रहण करना, राजा नारायणदास और राणा संग्रामसिंह का तीन सम्बन्धों के कारण स्निग्ध मन से एकता करके परस्पर प्रीति प्रकट करना, वसन्त समय में बुन्दी में आ, सभा में बैठकर दोनों पक्ष की ओर से वेश्याओं को दश दश हजार रुपये देने पर राणा का अपने उमराव ढक्कू के किये हुए बुन्दीश की अमल के नशे की असावधानी के दुर्वचनों को मिटाना, अपनी निन्दा सुनकर सावधान हुए विना समय क्षत्रियों के पराक्रम रूपी कालाग्नि को छिपाना उचित सूचित करके बुन्दीश का विल्हण नामक चारण के अर्थ एक लाख रुपये और दो गाम उदक देना, घमंड की प्रबलता से बुन्दीश के बलरूपी अग्नि की निन्दा करके अवज्ञा करनेवाले अपने उमराव मूर्ख ढक्कू को बलात्कार से ताड़ना करके डेरे भेजकर राणा का दूसरे दिन बुन्दीश के कवि धीर नामक चारण के अर्थ दो लाख रुपयों के साथ दो उदक ग्राम हठ पूर्वक देना, बड़े स्नेह से उत्कण्ठा सहित चित्तोड़ में जाकर बड़सासू की भेजी हुई महिमानी पाकर सभा में आयेहुए आधे आसन पर बैठेहुए सुभाण्ड के पुत्र का तलवार के उलटे प्रहार से अपने मस्तक पर तृण रखने वाले ढक्कू चहुवाण के शरीर के आठ टुकड़े करना, नम्रता से निवर्तन हुए

नरनाथनारायणदास १८७१ बुन्द्यागमनं १८ पञ्चविंशो २५ मयूखः ॥ १२५ ॥

आदितो द्विसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पैसे नव ९ मित लेत पहु, फलरोधक अहिफेन ॥
जाकेजय निकस्यो विजित, स्मर पुरतैं सहसेन ॥ १ ॥
बाढ जदपि नृप कायबल, अतिबल तदपि अफीम ॥
रक्खयो श्रम आहारपैं, स्मर नट्ठो तजि सीम ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

अच्छोर्टन दिनइक्क १ हड्डनृप रमि इक्कल १ हय ॥
आवत पुर अति अमल मिचेनैंनन प्रमादमय ॥
इक्क धूंसरितिय अंध्व कछुक गिनिसुप्त नर्मकिय ॥
कर तस आयस कुस सु लोलहय फैंकि छिन्निलिय ॥
गहि द्रुत नमाइ ताकेहि गल करि डारी नृप कुंडली ॥
गुरु निगड तुल्य भर बस सु गृह चिर विश्रमिविश्रमि चली ॥

दोहा ॥

कंठीरव गहि वसकरन १, सिंधुर रोकन २ सीम ॥

कुछ समय निवास करके राणा की सलाह का समर्थन करके समय पर सहाय करने का स्वीकार करके राजा नारायणदास के बुन्दी आने का २५ वां मयूख समाप्त हुआ ॥ २५ ॥ और आदि से १७२ मयूख हुए ॥

१ नौ पैसे भर २ संतान रूपी फल को रोकनेवाला ३अमल ४कामदेव, शरीर रूपी पुर से सेना सहित निकलगया ॥ १ ॥ ५ शरीर का बल ६ तो भी ७ भगा ॥ २ ॥ ८ शिकार ९ धूसर जाति की स्त्री ने १० मार्ग में ११ हँसी की १२ लोहे की १३ कुस(भूमि आदि खोदने का शस्त्र)१४चपल घोड़े को १५बड़े बंधन (तोख) के बराबर के१६भार से१७बहुत ठहर ठहर कर; अथवा बहुत श्रम से विश्राम करके ॥ ३ ॥ १८ सिंह को १९हाथी को

पैसे इक[१]के प्रमित[१] अमल रानी पति आन्यौं ॥
दर्वीकरं[२] गर[३] द्वि[२] गुन जोस बढतो मद[४] जान्यौं ॥
सरंधि[५] इक्क[१] करि सून्य तीर अन्यत्न बंधि तस ॥
कीलि[६] सु उरगँ[७] कलाप[८] लग्यो हय चढन गतालस[९] ॥
आयुधिक[१०]१अनुगँ२जोलौं अखिल जिमतिम पहुँचि चमूह जुरि ॥
सूकर लिवाइ मुरि इम सुपहु घरआयउ गर[११] अमल घुरि ॥१४॥
सिक्ख अप्पि निज सवन अप्प गो जब अवरोधन[१२] ॥
हो वासक[१३] रठोरिकोहि मन्नि सु अनर्थमन ॥
अमलसमय अतिवार[१४] त्रासित[१५] सब सुरनं[१६]मनावत ॥
तब पिक्ख्यो वह तोर अजिर[१७] घुम्मत नृप आवत ॥
इहिंकहिय कोन मोबिनु अभय अज्ज प्रभुहिं जिहिं दिय अमल
नृपकहिय मिल इक मिलि निपुन द्विगुन दयो तुमदेत दल[१८]॥१५॥
रुट्ठि कहिय रठोरि मोहि भुल्लि रु को मित्र सु ॥
सरंधि[१९] खुल्लि तब सर्प कस्यो कुट्टिमं[२०] चल चित्रसु ॥
लगिभय रानी लखत अमलतजिवे ढिगआन्यौं ॥
हसि ससौंहं[२१] नृपकहत पुनिसु गर अभय प्रमान्यौं ॥
तिहिं अमल[२२] रत्ति[२३]आधान[२४] तिहिं धरिय भावि[२५] रविमल्ल १८८१ धन[२६] ॥
पुनिहुव सु जोग अवसर प्रसवँ[२७] जगि प्रमोद जनपद[२८] जनन॥१६॥

दोहा ॥

विप्रन धन लक्खन वितरि[२९], महँ[३०] किय अतुल महीप ॥

१ प्रमाण २ सर्प का ३ विष ४ नशा. एक ५ भाथा खाली करके ६ कैद करके ७ सर्प को ८ भाथे में ९ आलस रहित होकर १० सेवक ११ विष के अमल से घुट कर ॥ १४ ॥ १२ जनाने में १३ चारी १४ उल्लंघन १५ डरतीहुई, सब १६ देवताओं को मना रही थी १७ चौक में, तुम १८ आधा देती थीं ॥ १५ ॥ १९ भाथे से खोलकर २० भींत पर २१ सौगन सहित. उस २२ नशे से २३ रात्रि में २४ गर्भ २५ आगे होनेवाले सूर्यमल्ल का २६ स्त्री ने २७ जन्म २८ देश के मनुष्यों को ॥ १६ ॥ २९ देकर ३० उत्सव किया

बसु८ गुन घटत *अफीम बिधि, दये कुमर कुलदीप ॥ १७ ॥

षट्पात् ॥

१०पकुमररविमल्ल १८८।१ अनुजहुव रायमल्ल १८८।२ इम ॥
तासन कल्ल्यान १८८।३ त्रिक३हि रहोरि प्रभवे तिम ॥
भुजिष्यां जु इक १ भनिय सहँस १ सत्तल २ द्वै २ तससुव ॥
पुत्र द्वि२बिध इम पंच ५ हड्ड नृपकै प्रवीर हुव ॥
पट्टप कुमार तिनमैं प्रबल सिसुहि बेध्य सद्दँ सरन ॥
पहिलो१कि पत्थ२अबको१कि पुनि पित्थ२कुमर यह धन्विपन।१८।
अति सिसुहो जब एह कुमर तब कबहु रुदित किय ॥
रानी मंजनकरत दासिजन स्तन काहूदिय ॥
अटकत रोदन आइ पुच्छि दासी सु प्रतारिय ॥
प्रसू भ्रामि सिसु पयन सु पय रुधिरांत निसारिय ॥
अहिस्याम गरलमद जात यह रुचिहु स्याम इम हास्यरहि ॥
माता लडाइ उरलाइ मम कारो अतिगर नाग कहि ॥ १९ ॥
इत लोदी अफगान साह दिल्लीस सिकंदर १८ ॥
सक गुन हय तिथि १५७३ समय कियउ तिहिं हान कलेवर ॥
अंगज इब्राहीम २९।१ बडो पट्टप हुव बय बल ॥
दुख निजभ्रातन दैन छिप्र लग्गो सु भरयो छल ॥
जानैं जलाल २ अप्पन अनुज कीलितकारि मारयो कुगति ॥

*अमल के आठ गुना घटने पर अर्थात् नौ पैसे भर लेता था सो एक पैसे भर रहने पर ॥ १७ ॥ १ उससे छोटा २ उत्पन्न ३ पासवान ४ मानों पहिले समय का ५ अर्जुन ६ पृथ्वीराज ७ धनुषविद्या में ॥ १८ ॥ ८ रोया ९ स्नान करती थी १० स्तन से दूध पिला दिया ११माता ने. बालक के पैर पकड़कर १२ भ्रमाया सो वह दूध १३रुधिर है अन्त में जिसके वहां तक निकाल दिया १४काले सर्प के १५जहर के मद से१६जन्मा था इस कारण यह बालक भी श्यामरंगवाला हुआ यह हास्य की बात है. मेरा १७काला १८ अत्यन्त जहरीला १९सर्प कहकर ॥१९॥२०शरीर का २१शीघ्र २२कैद करके ॥२०॥

अरु भ्रात अलाउद्दीन३इक गो कावल भजि लखि दुगति॥२०॥

॥ दोहा ॥

कुल संतति तैमूर २२को, इत बावर अभिधान ॥
कावल जय तिहिंकाल करि, स्वबल भयो सुलतान ॥ २१॥

॥ षट्पात् ॥

अंदजान १ पति अग्ग यहहि हुव जनक अनंतर ॥
दबि समरकंद १ पुनि बढ्यो सबसिर जब बावर ३० ॥
भ्रातनविच परि भेद छोनि यातैं सब छुट्टिय ॥
पै बहुरिहु बलपाइ किन्न भुवबस रिपु कुट्टिय ॥
इम पुनि तातारी उजबकन समरकंद १ जब जित्तिलिय ॥
तब अंदजान१दल सज्जि तिहिं कावल२दबि अधीनकिय॥२२॥

॥ दोहा ॥

अंदजान १ कावल २ उभय २, सासंत बावर ३० साह ॥
इब्राहीम २९।१ सु दुष्ट इंत, हुव तब दिल्लियनाह ॥ २३ ॥
अधिकारी दुर्मन अखिल, भये तास लहि भीति ॥
तिम टरिटरि बिस्वासतजि, पावत कहुँन प्रतीति ॥ २४ ॥
मार्‍यो अनुज जलाल २ जब, द्रवित अलाउद्दीन ३ ॥
कावल बावर ३० साहको, लयो सरन भयलीन ॥ २५ ॥

॥ षट्पात् ॥

तँहँ सूबा मुलतान खानदोलत अप्पन खतें ॥
पठयो बावर ३० पास स्वीय पक्खिन लिखि सम्मत ॥
खानाँ भयउ खराब इहाँ लोदी अफगानन ॥
इब्राहीम २९।१ हिं अखिल हमहु चाहत अब हानन ॥
तुम प्रबल आइ इत सुख बितरि हितधरि सब संकटहरहु ॥
यह स्यार कनकगिरितैं अलग करि दिल्लिय अप्पन करहु॥२६॥

॥२१॥पिता के१पीछे यह अंदजान नामक शहर का पति हुआ ॥२२॥२हुकूमत करता था ॥ २३ ॥ ३ उदास ॥ २४ ॥ ४ भगाहुआ ॥ २५ ॥ ५ पत्र६ पर ७ मारना, सुख ८देकर, इस गीदड़ को ९स्वर्ण के पर्वत से दूर करके

इन सौप्तिक दिय असह बहुल बौद्धिय मिच्छन बल ॥
कलविंक निकर बिच ढेल क्रम प्रबलजाइ निधरक परिय ॥
पिक्खहु महीप अग्रज प्रथम कलि अपुब्ब समर सु करिय ॥२४॥
रुस्तुमखान सु रत्ति आत दल हुड्ड अचानक ॥
बचि जिमतिम टरि बिकल तराजि खिल भट रनतानक ॥
मुरि सम्मुह पयमंडि धप्पि बुट्ठिय धाराधर ॥
आता दुहुरन सु भिंटि किय निजबल काराधर ॥
भजि पुनि कितेहि अंत्यज सुभट सुनि रुस्तुम पकरयो सजव ॥
एकत्थ मिलि रु जुज्झिय असह दहन हड्ड बन घोरदव ॥२५॥
कवच दारि असि कढत तंति सब्बन गति तिच्छन ॥
मारत अज्जन मिच्छ मांडि अज्जहु तिम मिच्छन ॥
गजन सुंडि कटि गिरत खंध बाजिन बपु खुल्लत ॥
फुल्लत घातन फांक हक्कि गौतन भट हुल्लत ॥
गौतन दुओर तृनमित गिनत मात न बीर उफान मन ॥
लज्ज रु सनेह भ्रातन लखहु रंच भुलात न कुलहि रन ॥२६॥

॥ दोहा ॥

१रतिवाह २बहुत सेना को ३काटा ४ चिड़ियों के ५ समूह में ६ढकल (ढेला) पड़े इसप्रकार ७ युद्ध ८ अपूर्व ॥ २४ ॥ ९ रात्रि में १० बाकी के ११ युद्ध फैलानेवाले दौड़कर १२ खड्ग की वृष्टि की १३ कैद करलिया १४ यवन १५ शीघ्र १६ एकत्र. हाडों रूपी वन को जलाने के लिये असह १७ अग्नि होकर ॥ २५ ॥ कवच को १८ विदारण करके २१ तीक्ष्ण १९ खड्ग २० साबुन में तांत निकले इस प्रकार निकलते हैं. २२ आर्यों को २३ म्लेच्छ मारते हैं और इसीप्रकार म्लेच्छों को आर्यलोक २४ मसल कर मारते हैं. हाथियों की सूंडें कट कर घोड़े के कंधों पर गिरती हैं सो उनके शरीरों को शोभा देती हैं; और घावों से फांकें फूलती हैं तो भी ललकार कर अथवा वीर लोक आगे बढ कर वीरों के २५ समूह को बढाते हैं. दोनों ओर के वीर अपने २६शरीरों को तृण के समान गिनते हैं और वीर रस का उफान मन में नहीं समाता है. बुन्दी और बम्बावदा के राजा दोनों भाइयों की लज्जा और उनके स्नेह को देखो कि युद्ध में अपने कुल को जरा भी नहीं भूलते हैं ॥ २६-२७ ॥

बाबर ३० तब इम बंचि खानदौलत*पेसित**खत ॥
आयउ जब तरि अटक हुलसि दिल्लियसिर हंकत ॥
सबदल पंद्रहसहँस १५००० ***तंत्र ताके कहियत॰तब ॥
जित्ति तदपि पंजाब सजव आयो नमात सब ॥
स्वक[1] बय[2] दुर२अग्गचालीस४२ सम[3] जुब्बन बय निजपुत्रजुत ॥
पहुँच्यो सु आनि पानीपथहि दब्बत दिल्लियदेस द्रुत[4] ॥ २७ ॥
इब्राहीम२९१२ अमीर बदलि तामाँहिँ मिले बहु ॥
दल खिल[5] सहदिल्लीस लरन इततैं पहुँच्यो लहु[6] ॥
पानीपथ भुव प्रधन[7] भयउ चलि सस्त्र भयंकर ॥
हनि सुहि इब्राहीम २९१२ बिजय सासकहुव बाबर ३० ॥
लोदी रह्यो सु बर्सु८अब्दलग संवत ससि बसु तिथि१५८१समय ॥
तैमूर१२ बंस प्रभुता बिंतत अब दिल्लिय मुगलन उदय ॥ २८॥
पहिलैं गोरिन५पाइ भुम्मि दिल्लिय बहु भुग्गिय॥
तिम खलजी२ कुल तुरक तुरक तुगलक३ इम उग्गिय ॥
सय्यद४ लोदि५न सहित साह बजिबजि नट्ठे सब ॥
दुलही दिल्लिय दुलह मन्नि मुगलद्दन आई अब ॥
जोलौं सु साह बैठो न जमि सूबा कछु पलटे सबल ॥
मालव अधीस१ गुज्जर[10]महिप२ पाये दुव२ प्रतिभट[11] प्रबल ॥२९॥
बदल्यो दिल्लिय बेस पिक्खि गुज्जर१ मालव२ पति ॥
गंजत जिततित गढन बढे दिसदिस अति उन्नति ॥
बसु आब्दिक[12] कछुबरस चढयो चित्तोर भरन भनि ॥
अतिबल इक्के उभय२ बिदित पठये स्वामीबनि ॥
पहुँचे प्रबीर दुव२ रानपुर[13] बिबिध फैल१ बानाँ२ बहत ॥

*भेजाहुआ **पत्र ***आधीन १ अपनी २अवस्था ३वर्ष की ४ शीघ्र ॥२७॥ ५ बागीं की सेना के सहित ६ शीघ्र ७ युद्ध ८आठ वर्ष तक ९ बीतने पर ॥२८॥ १० गुजरात का राजा ११ शत्रु॥२९॥ १२ सालाना खिराज १३ चित्तोड़ में

करसंगि* अनय **इच्छित करत रान उर न मावत रहत ॥ ३० ॥

दोहा ॥

कहिऽप्पय इक्कतकरत, रक्खि स्वपाहुन रीति ॥
छन्न लिख्यो बुंदिय छदन, आवहु लखहु अनीति ॥ ३१ ॥

षट्पात् ॥

बलसह दल[२] वह बंचि सुपहु चितोर सिधारिय ॥
गंजन इक१इक१ गढन सूर इच्छित अनुसारिय ॥
मोहिल्ला[३]मगरी सु छेकि रानहु हितमैं छकि ॥
आयो सम्मुह अप्प तुरक इक्क२हु रह्यो तकि ॥
मिलि मग्गतैंहि आचँरि उचित प्रासादन गय रान१ पहु ॥
नृप२हुव प्रविष्ट[६] निज पटँनिलय बितरत रंकन बित्त बहु ॥ ३२ ॥
पठई कहि रानपति मत्त उद्धत दुवश[९]मिच्छन ॥
हडुन बुल्लि सहाय अब कि दैनन कँर[१०] इच्छन ॥
[११]बलि चढाइ बहुबरस [१२]बलिहु [१३]चँयकरन [१४]बिलंबहु ॥
[१५]प्रधन सहेपरिहै न बजत साहन जय [१६]बंबहु ॥
[१७]अह अट्ठ ८ अवधि कै सोचि अब कर चल्यो[१८]सु हमकरकरहु१ ॥
यह जो न द्वार समुचित अटकि धन लुट्टहि२ [१९]कोसन धरहु ॥ ३३ ॥
बुंदिय १ इत २ संबंध चउ ४ सु साहहु पहिचानत ॥
तुम सहाय कहि तदपि आन १ जानहु २ भ्रम आनत ॥

*अनीति**इच्छानुसार॥३०॥बुन्दी को छाने १पत्र लिखा॥३१॥ २पत्र ३दसराथा पर सेना की हाजरी की जावे उसको मोहोला कहते हैं (इस नाम की मगरी हमने चित्तोड़ में नहीं देखी परन्तु सम्भव है कि उन दिनों में किसी टेकरी का नाम होवेगा. उचित ४ व्यवहार करके ५ महलों में ६ प्रवेश. अपने ७डेरों में रङ्कों को बहुत धन ८देताहुआ ॥ ३२ ॥ ९दोनों म्लेच्छों ने कहलाया क्या? १०खिराज देने की इच्छा नहीं है? ११खिराज १२फिर भी १३ इकट्ठा करने को १४ देरी करते हो सो १५युद्ध में १६विजय के नगारे बजते हुए तुमसे सहन नहीं होवेंगे ॥ ३३ ॥आठ १७दिन की अवधि में १८हमारे हाथ में दो १९खजाने नहीं धर सकोगे

पाहुन आतहु परत सतन सहँसन *व्यप संगत ॥
वसु ८ दिन जँहँ तुम वदत मास इक१ तँहँ हम मंगत ॥
इमरान कथन मिच्छन उफनि अक्खिय अट्ठ८हि अवधि **अह॥
इक१मास अवधि तुम तो अवहि अटिअटिपुर लुट्टहिँ असह॥३४॥
लुट्टत रंक लुकाइ हमहिँ जो लेहु दगा हनि ॥
तोहु सुगति हम तकहिँ तुमहिँ कालहि ग्रसिहै तनि ॥
तँहँ पहुँच्यो नृप तदिन इत १ रु उत २ बाद रह्यो इम ॥
जुग २ घटिका निसजात तक्कि सगपन वरोध तिम ॥
रट्ठोरि धना कहियत कुली करि बहुधन जिहिँ नाम क्रम ॥
लघुबहिनि पतिहिँ पठयो ललित सब आतिथ्य सनेह सम॥३५॥
सर्पडसन भय संकि तज्यो रानिय अफीम तँहँ ॥
अमल त्रिगुन वढि अधिक जात मन बढि अटक्यो जँहँ ॥
पैसे त्रय ३ मित जदपि अमल रहिगो अधिपतिकै ॥
तंद्रित दग मिलि तदपि मोहँ आवतहुन मतिकै ॥
चित्तोरराज रानिय निचिंत स्वागत आयउ पटसदन ॥
दीस्यो सु तवहु नृप मैंचिदृग १ बहुउंघत २ व्याँदित वदन ॥३६॥
नृपको यहहि निदेस आइ कोऊ खिंन उंघं न ॥
तो मुहिँ तिमहिँ वताइ जवहि चेताइदेहु जन ॥
सवनिदेस वस स्वजन मरन न करन भयमानत ॥
जिन अंतहपुरजनन जवहु जावन दिय जानत ॥
कोउन हरेहिँ तिनमैं कहिय किम इनवल इक्कन १ कंदन ॥
इन्ह राहलखत पहु रान इन्ह दृग१ खुलैंन२ नमिलैं वदन ॥३७॥
यहहु लई सुनि अप्प होइ अवहितैं तदनंतर ॥

* स्वरर्ग । ** दिन की ॥ ३४ ॥ १ सम्बन्ध जानकर जनाने से २ बडसाम्र ॥३५॥ ३ ऊंघ से ४अचेताई ५युक्त ६ डेरों में ७फटाहुआ ८मुख ॥३६॥ ९आज्ञा. १०किसी ११समय १२धीरी आवाज से १२नाश ॥३७॥ १३सचेत होकर १४जिसपीछे

हसि वडसस्सू *पहिते सहित सब रक्खि प्रीतिपर ॥
पहु रुप्पय सतपंच ५०० उचित सोदर तिन्ह अप्पिय ॥
मिलि इक्कन २ पुनि गमन +थानसंसद मन थप्पिय ॥
निसरहत जाम१ अप्पहिं ÷नियत अक्खि जगावन अनुचरन॥
करिचैन असन१ सुखसैन २ किय सूरधर्म रक्खत सरन॥३८॥
रहतजाम१खिलरत्ति जग्गि१ सुचि २ करि संध्या ३ जप ४ ॥
बिविध सद्धि व्यायाम तुलन मल्लन असह्य तप ॥
मनछ्छ६ लोह मुद्गर१न उछटि हनि अंस उडावत ॥
बिबिध झंप दंड २ बहु ऐंचि अतिवल्ल उफनावत ॥
सत्वरँ कसाइ हय साजि सल्लह बिजय पट्ट बाहुन बिलसि ॥
मनअद्ध सांगि अयमय महिप करझल्लिय सब हेति कसि३९
भटनरोकि प्रभुभाव नल्लिय इक्क १हु सहाय नय ॥
इक्कन २ उप्पर इक्क १ हल्लु हंकिय आरुहि हय ॥
उत निमाज १ मुख उचित सद्धि व्यायाम २ वनावत ॥
दूतन अक्खिय दोरि इक्क १ इक्ल१हय आवत ॥
सत्थके जवन लग्गे सजन तिन्ह निवारि अतिमद धरत ॥
इक१भयउ सज्ज तउ इक१अभय करत हो सु रहिगो करत॥४०॥
कछुक बिंब रवि कढत इक्क १ पिक्खिय नृपआवत ॥
कबहु कुब्जबेपु १ कबहु लहरि हाँनैं सिर २ लावत ॥
कहिय मिच्छ सिसु कोन इतसु मरिबे किमआवैं ॥
वदिय चरनैं बुंदीस उंघि इम अमल उगावैं ॥
तब जानि दम्मैं दैन१ न तकिय रान कुहकैं छल तकिय रन२॥

* भेजेहुए + सभा में ÷ निश्चय ॥ ३८ ॥ १ कसरत २ छः मन के तोल का ३ कन्धे की टक्कर देकर ४ शीघ्र. आधे मन की ५ साङ्ग (बरछी) ६लोहे की. सब ७ शस्त्र कसकर ॥ ३९ ॥ निमाज ८ आदि ॥ ४० ॥९ कुबड़ा शरीर. कभी झोला खाकर घोड़े के १० हाने पर मस्तक लगाकर ११ हलकारों ने कहा. १२रुपये देना नहीं चाहकर १३छली ने

पै इक१सवार आगम*प्रधन किम इम चिंतिय मिच्छमन।४१।
पहिचानिय दृगपरत निकट आवत नारायन १८७१ ॥
इक्का १ चढि +खिल अटकि ÷हुत्त हंकिय मत्ते मन ॥
सोर१ नकीबन सुनत हेस२ तानत सम्मुह हय ॥
पहुमन१ बुद्धरहु प्रकट१ भान२ मंडिय तँहँ निर्भय ॥
क्यौंआत मरन१ ताके कहत भनिय रान रुप्पय भरन२ ॥
बिसिख१न किधौं कि सँगिरन बदहु रुचत बिसिख तब कोनरन।४२।
भरन१नरन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
गदियँ मिच्छ तव सुगम कलह सुहि लेहु वारकरि ॥
प्रथमवार पाहुनन भूप अक्खिय साहसभरि ॥
तुरगफैंकि तव तुरक हड्डर कुंत प्रहारिय ॥
भिदि तनुत्र कछुभाग बाहु१ उर२ संधि बिदारिय ॥
मानहु अमाप अहिफेनमद होन चेत यह वारहुव ॥
मैंआत सम्हरि इमकहि मुदित सज्जिय सँगि सुभांड१८६।४सुवं।४३।
सरभव१ कर संग्रहिय हनन जनु क्रौंच२ केकिहय ॥
कै अमोघ कर करिय करन१ जनु आत घटुक्कय२ ॥
जातु मनहु इंद्रजित१ पानि पकरिय लक्खन२पर ॥
पिरथ भट किँ पुंडीर१ खंभ२ बेधन लिन्नी ख्वर ॥

*युद्ध में +बाकी के लोगों को रोककर ÷ होम होने को चला ॥४१॥१ हींसना फैलाते हैं २ चेत हुआ ३बाणों से वा ४बर्छियों से ५ हे बिना शिखावाले(यवन) ॥ ४२ ॥ ६ कहा ७भालों ८ कवच फूटकर ९ अमल के नशे में १० बर्छी उठाई, सुभाराड के ११ पुत्र ने ॥ ४३ ॥ १३ मानों १४ क्रौंच पर्वत का नाश करने को १५ मयूर के वाहनवाले १२ स्वामिकार्तिक ने बर्छी ग्रहण की. अथवा १६ घटोत्कच के आने पर कर्ण ने अमोघ शक्ति हाथ में ली. मानों राचस इन्द्रजित ने लक्ष्मण पर शक्ति हाथ में ली १८ किधों १७ पृथ्वीराज के सामन्त पुण्डीर ने खम्भे को बेधने के लिये तीक्ष्ण शक्ति ली. इस प्रकार बुंदी के राजा नारायणदास ने गरुड़ के वेग से घोड़े को दौड़ाकर घोड़े के मलंग लेते

गहि संगि दपटि हयरय गरुड़ उडत फाल बाहिय उससि ॥
तस[1]उर[2]तुरंग[1]त्रिक[2]बेधि तिम निकसि बरित्ति[3]गय धरनि धसि[44]
असनि[1] अटकि मिच्छउर अग्र[2] इक[1]कर धर अंदर ॥
पैठत हय चउ[4] पयन खरोरहिगो सह पक्खर ॥
अतिबल्ल वाहत अस्व भयउ नृपकोहु भिन्नकटि ॥
अपर[5]२ इक[1] सवउज्झि लखत सहसत्थ गयो लटि ॥
तसतुरग सज्ज थित ठान तकि चढितिहिं नृप पुरसंचरिय ॥
वल्लखन रान परिगह बलिन असिन संगि न उद्धरिय॥ ४५॥
अरिहय नृप आरूढि आइ प्रतिरान कहाइय॥
इक[1] अनसुकिय अपर[2] जवन सवतजि लैगोजिय ॥
अनसुहु पिक्खन उचित सु चल्लि पिक्खहु परिगहसह ॥
सुनत चढिग सीसोद मचिग चित्तोर महामह ॥
तुरगहु तज्यो न सुनि आत तिहिं अब बल निजनिज जुत उभय२ ॥
मिलिचलिय चढत छघटिय मिहिर, मिच्छलखन जय मोदमय।४६।
दूरहिंसन तिहिं देखि सहय ठढो रविकीरुख ॥
कहिय पिसुन ढक्कूज मरन आनैं अरिसम्मुख ॥
नृप सहसपंथ निराइ जथा प्रत्ययँ लैगो जब
बदिय वाह बुंदीस अभय तवभुजन करे अब ॥

समय उठाकर बर्छी चलाई जो इक्के के हृदय को और घोड़े की १ कमर की हड्डी को वेधकर २काछें (अण्डप्रदेश) में निकल कर वह बर्छी भूमि में घुसगई ॥ ४४ ॥ ३ बर्छी. राजा के घोड़े की भी४कमर टूट गई ५ दूसरा इक्का पहिले इक्के को ६मुरदा छोडकर देखते ही साथ के लोगों सहित ७ भगगया ८ पुर में गया. बर्छी को नहीं ९ निकाली ॥ ४५ ॥ १० शत्रु के घोड़े पर ११ चढकर राजा ने एक इक्के को विना प्राण करादिया और १२ दूसरा यवन १३ मुरदे को छोडकर जीव लेकर भगगया. वह १४ मुरदा देखने योग्य है १५ सूर्य ॥४६॥ १६ सूर्य के साम्हने १७ चुगल १८ ढक्कू के पुत्र ने १९सौगन सहित. समीप जाकर जिस प्रकार २० विश्वास आवै तिसप्रकार

संभर स्वसंगि कह्नन कहत रहे करखि[1] थकि राँनके[2] ॥
संग्रामचविय कह्नहु सुपहु प्रतिबल्ल[3] न तुम प्रमानके ॥४७॥
सु सुनि कहिय संभरिय बाजि मम मृत इहिँ बाहत ॥
मिच्छतुरग तउ मिलत हानि नगिनी सु जथा हत ॥
बाहत१थाहत२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
इतर[4] हय न असोहु अन्य याते[5] हय आनहु ॥
सुनि रानहु दिय सप्ति चढिय निजतजि चहुवानहु ॥
तिरछो सु फैंकि ठेकन तुरग कह्निय झटकि संगि कर ॥
कटि[6]भग्न वहहु[7] मृत१ क[8]तिकहत परि घुटनन गो थकि१ अपर[9] ॥४८॥

दोहा ॥

इक्कनके द्वैर हय अपर[10], बल्ल निज उचित बचाइ ॥
कह्नी संगि सु रानके, चढि हय झंप रचाइ ॥ ४९ ॥
अक्खिय तिन्ह उपहार[11] यह, थप्पहु अब निजथान ॥
अबै[12] उभय लिय हम उचित, रीझ सु मन्नहु रान ॥ ५० ॥
रान कहिय ए अरु इतर, गज१ हय२ हेति[13] ३ स्वगेह ॥
वत्त कतिक चित्तोर४ बलि, इहिँ आसान अनेहँ[14] ॥ ५१ ॥

षट्पात् ॥

न आसान नृप कहिय आदिधर्महि अप्पन यह ॥
अक्खोहिनि[15] मृत अग्ग ओर दुवरकारि अट्ठारह १८ ॥
मिहिकावति बहु महिप गोगें[16] ।१हित आत अबूफर२ ॥
कंगुरपति१के कज्ज समय केदार२ सिकंदर३ ॥

१खींचकर २राणा के सुभट ३ दूसरा बलवान् तुम्हारे समान बलवाला नहीं है ॥४७॥४अन्य ५ घोड़ा ६ कमर टूट कर. वह भी ७ मरगया ८ कितने ही कहते हैं कि घुटनों के बल गिरकर थकगया. यह ९अन्य लोगों का मत है ॥४८॥ १०दूसरा ॥४९॥ यह घोड़ा ११निजर है १२घोड़ा ॥५०॥ १३शस्त्र १४समय ॥५१॥ आगे दोनों ओर की अठारह१५अक्षौहिणी मरी थीं और अबूफर आया तब१६ गोगा चहुवाण के लिये मिहिकावती में बहुत राजा मारेगये थे और कांगड़ा के

पृथ्वीप्रत्याक्रमणा १, जैत्र १ सारणा २ भूणाङ्गा १८६।१ र्थपातिदापि तगतकोटाग्रामादिकमणडूमहीशम्लेच्छराजमारणावैरिवालनप्रति- ष्ठासुशौराड १८६।५ समसभबुन्दीप्रत्यानयन २, नृप १ सचिवाऽऽ दिचतुष्टय ४ सम्बोधितशौराड १८६।५ स्वस्वामिभटवर्गसाहससमा क्रान्तप्रान्तप्रत्यादान ३, कलहकार्यशेमुषीशिथिलप्रेरणाप्रतीपसर्व- थाविमुखसगर्वसर्वस्वहरणावसरस्वामिसेनासम्मुखसन्नद्धसाङ्गरत्रि विक्रम १ प्रधनपरासूभवन ४, नृपा १ दिचतुष्टय ४ कृतप्रभुकार्यर णारसिकानियोगाऽनुकूलस्ववीरवर्गार्थपरिच्छिन्नसमस्तप्रतिदापन ५,नरेन्द्रस्वप्रसादप्रापितसुरथपुरतोगा १९६।२ऽनुजयशःकर्णा१८६ २ऽपर २ नामगङ्ग १८६।२ तारादुर्गाध्यक्षीकरणा ६, बुन्दीमणडूप- तिमृधमृतघुग्घुल १८१।१ वंशीयलक्ष्मणा १८५।१ तनुजन्माऽमरसिं- हा १८६।१ऽर्थखेट १ नामपुरपट्टाऽर्पणा ७, नवरङ्ग१८३।२ वंशीयमाध वसिंहा १८६।१ऽर्थस्वारोहसप्ति७ सहिताऽरणिष्ठ २ नामनिवेशनवि तरणा ८, स्वस्थानीयकरपुरसन्नद्धचतुःशत ४०० सादिसङ्घशौराड

में पीछा लाना, राजा और मन्त्री आदि चारों के समझाने पर शौंड का अप ने स्वामि के सुभटवर्ग के हठ से लियेहुए प्रान्तों को पीछा लेना, युद्ध के कार्य में शिथिल बुद्धिवाले, प्रेरणा से विरुद्ध, सर्वथा विमुख ऐसे सैंगर त्रिविक्रम का गर्व के साथ सर्वस्व हरने के समय स्वामिसेना के सन्मुख सन्नद्ध होकर युद्ध में माराजाना, राजा आदि चारों का प्रभु का कार्यकरनेवाले, रणरसिक आज्ञानुकूल अपने वीरवर्ग के अर्थ छीनेहुए सब गाम आदि पीछे देना, राजा की प्रसन्नता से तोग के छोटे भाई यशकर्ण दूसरे नाम से गंग का सुरथपुर देकर तारागढ का किल्लादार बनाना, बुन्दी में मणडूपति के युद्ध में मरेहुए घु ग्घुल के वंशवाले लक्ष्मणसिंह के पुत्र अमरसिंह के अर्थ खेड़ा नामक पुर का पट्टा देना, नवरंग के वंशवाले माधवसिंह के अर्थ अपने चढने के घोड़े सहित अरणेठो नामक स्थान देना, अपने रहने के करवर नगर में सज्ज होकर चार सौ सवारों के समूह सहित शौंराड का मालवा लूटने को जाना, कोटा में दो दिन बिताकर भाई भूणांग का आतिथ्य स्वीकार करके मार्ग में आयेहुए पाट न, भाणपुरा आदि खीचियों के देश लूटकर हाडा का मालवा की सीमा

१८६।५ मालवलुण्टनप्रस्थान ९; कोटाविहापितदिनद्वय २ स्वीकृत भ्रातृभ्रूखाङ्ग १८६।१ऽऽतिथ्यविप्लुतमार्गागतपट्टाखा १ भानुपुर २ प्रभृतिखिञ्चिखण्डहट्टमालवसीमसङ्क्रमखा १०, विप्लुतविशाले १ न्द्रपुर २ यागपुरा ३ऽऽदिमालवोदग्भागसमाचरिताऽऽपद्धर्मचर्यशौण्ड देव १८६।५ स्वसमापनसज्जसंमुखसमागतमण्डूपतिचमूपरिसौप्ति-कसम्पातन ११, व्यापादितसेनाऽध्यक्ष १ सहितसपत्नशतत्रय ३०० निर्घोषितविजयनिःशाखादशपुरप्राप्तनृपाऽनुजबलात्कारविलुण्टि-तवैरिवाजिशतक १०० स्वसद्मसरणिसमानयन १२, ज्ञातखिञ्चि १ यवन २ शत्रुसैन्यद्वय २ समभिषेणनसानुमत्सन्धिपुटान्तरायातसहा यसम्मिलितभ्रूखाङ्ग १८६।१ समुपेतकृतकियत्कलिकौतुकप्रत्यनी कप्रतिमल्लीकारितसमाकारितप्रसारितशबरशतद्वय २००चतूरात्रस्वी कृतकोटापतिसत्कारबुन्दीसमागतशौण्ड १८६।१ तत्तुरगशतक १०० स्वाग्रजोपायनीकरण १३, नृप १ जैत्र २ सारण ३ सचिवा ४ दिनृ पाऽनुजोपालम्भन१४, योधपुराधिराजराष्ट्रकूटयोधराजतनूजविक्रम

में जाना, विशालपुर, इन्द्रपुर और यागपुर आदि मालवा के उत्तर भाग को लूटकर आपद्धर्म का आचरण करनेवाले शौण्डदेव का अपने मारने को सजकर सन्मुख आईहुई मण्डूपति की सेना पर रातिवाह देना, सेनाध्यक्ष को तीन सौ शत्रुओं के साथ मारकर विजय के नगारे बजाकर मंदसोर पुर में आकर रा-जा के छोटे भाई का बल पूर्वक वैरी के घोड़ों को लूटकर अपने घर के मार्ग में लाना, खीची और यवन दोनों शत्रुओं की सेना का युद्धयात्रा करना जान, पर्वत की सन्धि (दरा) में आय, सहाय के अर्थ मिलेहुए भ्रूणंग सहित कुछ युद्ध कौतुक कर, शत्रुओं से मुकाबिला करनेवाले दो सौ भीलों को बुलाय उनको वहां रोपकर पीछे कोटा के पति का चार रात्रि तक सत्कार स्वी कार करके बूंदी में आयेहुए शौण्ड का उन सौ घोड़ों को अपने बड़े भाई की भेट करना; राजा, जैत्र, सारण और सचिव आदि का राजा के छोटे भाई को उपालम्भ देना, जोधपुर के पति राठोड़ जोधा के पुत्र विक्रम और बीदा दोनों सहोदर भाइयों का जंगल देश को लेना, युद्ध में सांखला प्रमारों को मारकर भाटी यादवों को अपने हुक्म के वश करके शक्ति की आज्ञानुसार पुंगल के

बिद २ सोदरद्वय २ जङ्गलजनपदसमाक्रमण १५, रणशातितशङ्खुल १ प्रामारशासनवशीकृतभट्टि २ यादवशक्तिशासनाऽनुसारसमनुष्ठितपुङ्गलपतिभट्टिभूपसेखसुतापाणिपीडनाविक्रम १ सूचितसंवत्समयस्वसञ्ज्ञासम्बद्धविक्रमनगर १ नामनव्यनगरनिर्मापण १६, प्रमाणशून्यमतान्तरसंवन्निरास १ बिद २ रचितबिदासर २ स्थानीयसूचना १ समेतदेवीनिदेशवशजाङ्गलाधिराजविक्रम १ वंशपट्टधरप्रथम १ पुङ्गलपतिकुलपतिपुत्रीपाणिग्रहणानियमविख्यापन १७, योधराजा १ नन्तरकृतकियत्कालराज्यतत्पट्टपुत्रसूर्यमल्ल २ संस्थावसरतत्तनूजमुख्यव्याघ्रराज ३ योधपुराधिपत्यप्रापण १८, चित्रकूटाधिराज राजमल्ला १ ऽऽमेरनगरनरेशभारमल्ल २ समयशोराड १८६।५ मण्डूपतिवाजिविप्लवसूचन १९, श्रुतैतदुदन्तकालकुपितपुनर्बुन्दीसमाचिक्रमयिषुम्लेच्छराजबाजबहादुर १ सुप्रसादितसैन्यसज्जीकरण २, निग्रहीतपूर्वशिशुश्यामाऽऽयत्तीकृतप्रपा १ महानसा २ द्यधिकारान्त्यन्तरपिपासाऽवबुद्धप्रच्छन्नपीतजलाऽपिहिततत्पात्रप्रत्यागतकप-

---

पति भाटियों के राजा सेख की पुत्री से विवाह करके बीका का ऊपर सूचना किये हुए सम्वत् के समय में अपने नाम से बीकानेर नामक नवीन नगर बसाना, प्रमाण से शून्य ऐसे मतान्तर के सम्वत् का खंडन और बीदा के रचेहुए बीदासर स्थान की सूचना समेत देवी की आज्ञा के वशवर्ति जांगल देश के पति बीका के वंश के पाट धारण करनेवालों का पुंगल पति के कुलपति की पुत्री से विवाह करने का नियम प्रसिद्ध करना, जोधा के पीछे कितनेक समय राज्य करके उसके पाटवी पुत्र सूर्यमल्ल (सूजा) के देहान्त समय पर उस (सूर्यमल्ल) के पाटवी पुत्र व्याघ्रराज (बाघा) का जोधपुर का स्वामी होना, चित्तौड़ के राजा रायमल्ल, आम्बेर नगर के राजा भारमल्ल के समय शौरड का मण्डूपति के घोड़े लूटने की सूचना करना, यह वृत्तान्त सुनकर समय फेर से कुपित हुए बाजबहादुर का फिर बुन्दी लेने की इच्छा से कृपापात्र सेना को सज्ज करना, पहिले पकड़ेहुए बालक श्याम के पाणेरा (जलघर) और रसोईघर आदि अधिकारों को वश में करके रात्रि में प्यास से जगकर जल पीकर पानी के पात्र को विना ढकाहुआ रखकर पीछे आयेहुए

टक्कुद्धयवनेन्द्रस्वप्रतिबोधितश्याम१सकाशवामार्गणा२१, गोपितश्याम१केशवपूर्वनामद्वय२प्राक्काल्लपरिणीतयवनपुत्रीकसमुत्पादितदावूदा१ऽऽदिदायादप्रभुप्राप्तसमरकन्द१स्वनामहड्डपूर्वतद्यवनपुनरानीतनिवेदन२२,स्वसेवासावधानताप्रसन्नम्लेच्छपतिमिमार्गयिषितसमरकन्द१बुन्दीराज्ययाचन२३,दत्तप्रार्थितसेनाऽध्यक्षीकृतसमरकन्द१स्वयमात्तदुर्गाश्रयम्लेच्छमहीपषष्टिसहस्र६०००० सर्वसैन्यबुन्दीविजयप्रस्थापन२४,मार्गपुर१ ग्रामा२ दिप्रजाप्रद्रावकभानुपुरसमीपसमागतपरिपंथकपृतनाशुद्धिबुंदीवास्तव्यवर्गसमाकर्णन २५ मेकविंशो २१मयूखः ॥ २१ ॥ आदितोऽष्टषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

सुनि बुंदिय खित्तल्ल सचिव, इम मंडुवदल आत ॥
किय रहस्य एकत्रकारि, बिदित बंधु १ भट २ ब्रात ॥ १ ॥
सोंड १८६।५कहिय लघु सिंह १ व्है, दंती २ व्है गुरुदेह ॥
तदपि विदारै कुंभ तस, आलोचहु दृढ एह ॥ २ ॥

का कपट से क्रोध करके अपने जगायेहुए श्याम से जल मांगना, पहिले के श्याम और केशव इन दोनों नामों को छिपाकर पहिले समय में विवाह की हुई यवन पुत्री से दाऊदखां आदि पुत्र उत्पन्न करके स्वामि से पायेहुए अपने समरकंद नामवाले पहिले के हाडे उस यवन का फिर लायेहुए(जल)का निवेदन करना, अपनी सेवा की सावधानता से प्रसन्न म्लेच्छपति से मांगने की इच्छावाले समरकन्द का बुन्दी के राज्य की याचना करना, उसकी प्रार्थना को स्वीकार करके उसीको सेनापति बनाकर स्वयं किले का आश्रय लेकर म्लेच्छ महीप का साठ हजार सेना बुन्दी को विजय करने को रवाना करना, मार्ग के पुर, ग्राम आदि की प्रजा को भगानेवाली शत्रु की सेना का भाणपुर के समीप आने की बुन्दी के वीरों का खबर सुनने का इक्कीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २१ ॥ और आदि से १६८ मयूख हुए ॥

१सलाह २ समूह ॥ १ ॥ ३ हाथी ४बड़े शरीरवाला होता है तो भी ५बिचारो

द्वीपी१ लघु गुरु देहके, गवय२ गवल३ बल गंजि ॥
दुसह गजि पारत दहल, भिरतहि डारत भंजि ॥ ३ ॥
यातैं लखहु न बहु१ अलप२, सजहु इक्क१ मन सर्व ॥
अनीभवँर हम अग्ग व्है, खंडहिं दुजन अखर्व ॥ ४ ॥

॥ षट्पात् ॥

गहत इक्क१ आमगुन तानि कीट२ हु तिहिं तोरत ॥
बहुगुनजुरि बंधैं सु१ इभ२ हु मदमत्त अठोर्रत ॥
यातैं सब मनइक्क१ होहु कबहुन तो हारहिं ॥
समरकंद१ सह सेन बंदन हरि आन बिगानहिं ॥
बढि अग्ग जित्ति मालव बलन रोधकको सूर न रहत ॥
जो मिच्छ भजहिं दूथनि जनित बिनु सूथनि गूथनि बहत ॥५॥
इम न ततो हम अलस जोति सीर हु नन जानैं ॥
असन१ बसन२ की आस मनन मनन तब प्रमानैं ॥
मिलि यातैं इक्क१ मन तुरग नक्खहु तिन्ह लासहिं ॥
मथि हम बिसिखं समुद्र नियतं जयरत्न निकासहिं ॥
यहसुनत अमर माधव२ मुर्खन कियसराह तस वाह कहि ॥
जँहँ नृप१ रु जैत२ सारण३ सचिव४ चवीं चउ४ न नय एसनहि ॥

---

१ बघेरा (दोगला सिंह) छोटा होता है तोभी बड़ देहवाले २ रोझ और ३ आरण्ये (वन के) भैंसे के बल को दबाकर ॥ ३ ॥ ४ सेना के दुल्लह होकर ॥ ४ ॥ ५ कच्चे तन्तु को ६ कीड़ा भी खैंचकर तोड़ डालता है. मस्त ७ हाथी को ८ रोक लेते हैं ९ मुख १० बन्दर ११ दो स्तनवाली के जनेहुए (मरुभाषा में क्षत्रिया स्त्री को दूथणी कहते हैं जिसके जनेहुए) अर्थात् क्षत्रियों से. बिना १२ सूथनों (पाजामों) के होकर अर्थात् उनके पाजामे फट जावेंगे और १३ बिष्टा १४ करदेंगे ॥ ५ ॥ यह नहीं होवे तो हम आलसी १५ हल भी नहीं हांक जानते तब मन में वस्त्र और भोजन की आशा भी प्रमाण नहीं करें १६ बिना शिखावालों (यवनों) के समुद्र को मथ कर १७ निश्चय ही १८ आदिक ने १९ कहा यह नीति नहीं है ॥ ६ ॥

कहाँ अयुतखट६००००कटक कहाँ अप्पन छसहँस६०००किर॥
तकि भुवलोन तहाँहु आतस्पाम १ हिं बनि आसिर ॥
लाय इयन तुम लाल बीज विपदामय बाँविय ॥
यहफल तास अमोघ अबहि पक्किबेपर आविय ॥
पूगैं न लरन अप्पन परन मन्नहु इम सबको मरन ॥
को तब उपाय छितिहित करन रहहिं बंस बीजहु धर न ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

हे हड्डे अग्गे इहाँ, बीजहु गो न विलाइ ॥
करनी यहहि कथानिका, जुरहु सम्मुख तो जाइ ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

यह मंडुवपति अज्ज अखिल दक्खिन बलि ऐंचत ॥
इहिं मंडुवपति अग्ग खग्ग कोउन रुपि खैंचत ॥
मक्कैंपुब्बहि साहिप अज्ज आंब्दिक इहिं अप्पहिं ॥
यह दिल्लियबल उदधि थाहि नैंकन मन थप्पहिं ॥
आश्रये१रु द्वैध २ यातैं उभय २ अब कुल रक्खन अनुसरहिं ॥
रहिजाइ जबहि दल अल्प रिपु कदन तबहि छलबल करहिं ॥९॥

॥ दोहा ॥

भायो सुहि सत१ भूपको, सारन२ जैत३ सहाय ॥
भटन चब्बि ओठन भनिय, हरख दब्बि तब हाय ॥ १० ॥

सहाय १ बहाय २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

रचत मंत्र यह रुट्ठि तरजि गय उट्ठि चड ४ हि तब ॥

---

१ किल (निश्चय ही) २ असुर (यवन) ३ हे लाल ! तुमने बोके लाकर ४ बोए ५ खाली नहीं जानेवाली ॥ ७ ॥ ६ कथा ॥ ८ ॥ मांगने से पहिले ही ७ आर्य राजा ८ सालाना खिराज देते हैं ९ नीति के छः गुणों में से आश्रय और द्वैधीभाव से अपने कुल को रक्खो १० नाश ॥ ९ ॥ १० ॥

माधव१८६।१गंग१८६।२रुअमर१८६।३सोंड१८६।५कातरगिनि ए सव
सारन १ जैत २ रु सचिव ३ विहित लैकैं इततैं वलि ॥
वनि सु सांधि विग्रहिक मिले सम्मुह जँहँ चम्मलि ॥
उपदा निवेदि तीन ३ न अरज करिय स्याम१प्रति जोरिकर ॥
हम अनुगं सिरहिं धारत हुकम मन्नि उचित मंडहु महर ॥ ११॥
हमछन्नैं लिय हयहु सोंड १८६।५ सिसुपन हठसंग्रहि ॥
वे हाजरि सव अत्थ नैंक संतुहु नृपमैं नहिं ॥
समरकंद १ इम सुनत कह्यो छोरहु बुंदीकँहँ ॥
लहि सुभांड १८६।४ दुवलान १ तथा समुचित विलसहु तँहँ ॥
संवसंथ इतर वारह १२ सहित करि सु स्वीय सव्वहु हुकम ॥
वलि ग्राम पंच ५ सोंड१८६।५हिं वखसि व्है हैं सवन अधीस हम॥१२

॥ दोहा ॥

तवहि पटा लिखवाइ तिन्ह, सचिव १ वंधु २ लहि संग ॥
दै उँपदा पच्छेसुरहि, आये रहित उमंग ॥ १३ ॥
दिय दुराइ पुव्वहि पिहिंत, वंसु १ भूखन २ मुखं ग्रीत ॥
तजि बुंदिय दुवलान तव, पत्तो नृप कढि प्रात ॥ १४ ॥
निज गज १ तुरग २ रु नालिका ३, सवदिय बुंदिय संग ॥
मन यातैं कातँर समुझि, रच्यो जवन हितरंग ॥ १५ ॥
तोग १८६।१ अनुज जसकर्ण १८६।२ तँहँ, तारा दुर्ग तजैंन ॥
सुपहु ताहि दे निजैसपथ, आन्यों उँज्झि सु अँन ॥ १६ ॥
सोंड १८६।५ हिं गूढ विचारि सुहि, मिलि इन कठिन मनाइ ॥
पंच ५ ग्राम तग्गुर्त १ प्रमुखैं, स्वीकारित समुझाइ ॥ १७ ॥

१सन्धि करनेवाले पन कर २विग्रह करनेवालों से मिले ३सेवक ॥११॥ ४आप राय ५ग्राम ६पति ॥१२॥ ७नजराना ॥१३॥ ८गुप्त ९धन १०आदि ११ गमन ॥१४॥१२सोंपे १३कायर जानकर ॥१५॥ १४अपनी सौगन दिलाकर. बहु १५मान १६छुड़ाकर ॥१६॥ १७ताग़ला नामक ग्राम १७आदि १८ स्वीकार कराया॥१७॥

इम सु स्याम १ हुव आइकैं, पुरबुंदिय छितिपाल ॥
सूनु खानदाऊद १ सह, बुल्लै बेगस २ बाल ३ ॥ १८ ॥
बुन्दी जनपद बाहिनी, मिच्छन बिचरि महंत ॥
समरकंद१वस करि करे, सब हाजरि सामंत ॥ १९ ॥
सीमाहर सब्बहु सकल, लघु तस पयन लगाइ ॥
छिन्नी नव लिन्नी सु छिति, सासनवस समुझाइ ॥२०॥
बुंदी त्रि३ सहँस३०००रक्खि बल, मान अतुल जयमत्त ॥
करि प्रबंध खिल जो७५०००कटक, पच्छो मंडुव पंत्त ॥२१॥
बुल्लै जब ग्रहतैं सबन, समरकंद१स्वससमाज ॥
माधव१सोंड२रु गंग४मुरि, आत खिल१रु अधिराज२॥२२॥
पुनि स्वनाम लेखित पटा, अखिलन नूंतन अप्पि ॥
जे बुंदियभट पुव्व जिम, थिर रक्खे निज थप्पि ॥२३॥
सनैं सनैं तिन्ह संहरन, अवहि धीरधर एह ॥
स्वांत१अहितबाहिर१सहित२, नरन दिखावत नेह ॥२४॥

॥ षट्पात् ॥

समरकंद१लिय समुझि आत सोंड१न उनमत्त सु ॥
क्यों माधव२ जसकर्णा२पटा मम लहि न आत पसु ॥
इहिं आगसें बलबंधि अनखि तिन२ पैं उफनायउ ॥
जेत१८५१२रुजितैं तिन्ह जंपि छलन तब चलन छमायउ ॥
मिस खँनैं१अरसं२कोऊसमय दोऊ२ समय दिखाइदिय ॥
तुम जो असक्त भेजहु तनय कहि इम मिच्छहु माफकिय ॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ १८ ॥ १ देश में २ सेना ३ उमरावों को ॥१९॥ ४सीमा को हरनेवाले ५शीघ्र ६ नवीन ॥ २० ॥ ७ बाकी की सेना को ८भेजी ॥ २१ ॥२२॥ ९अपने नाम के लिखे हुए पट्टे. सबको १०नवीन देकर ॥ २३ ॥ ११ मारना १२मन में शत्रु और बाहिर से मित्र ॥ २४ ॥ इस १३अपराध से १४ रोगी होना कहकर १५ चपरोग १६ सहना (बवासीर) ॥ २५ ॥ २६ ॥

अक्खिय तिन सुत सिसु अबहि, अेहै ताहि बय अत्थ ॥
काय१बचन२मन३ करि करहिं, सेवन प्रभु हितसत्थ॥२६॥
*जरासिथिल इत अति ×जरठ, दिय जैत१८६हु तजि देह॥
स्वामी हुव तस मुख्यसुत, गैनोली निजगेह ॥२७॥
सारन१८६।१माधव१८६।१हे सबल, पै नृप दिन प्रतिकूल॥
एहु मरे बिधिवस उभय२, सोहुव सब हिय सूल ॥२८॥
वंसीपति हुव छ१समें बय, सारन१८६।१सुत सामंत१८७।१॥
बाल जदपि मतिबृद्ध बुध, इच्छैं बढन उदंत ॥ २९ ॥
भो माधव१८७।१सुत इत भरत१८७।१,निडर लाडपुर नाह॥
सोंड१८६अमर२गंग३रु सचिव४,रहे चउ४हि नृपराह॥३०॥

॥ षट्पात् ॥

खित्तल बनिक खटोर सचिव कोबिद सकुनागम॥
परि है नृपहि बिपत्ति कहिय जब भोन अतिक्रम ॥
द्रंग सु अब दुबलान रहैं सेवन पति हित रत ॥
जिहि पुव्वहिं लिय जानि बिखम परिहै दुकाल बत ॥
संवत कु वेद तिथि१५४१गत समय अक्खिय नृपहिं भतीप अह ॥
आगामि अब्द सब संहरन अब दुकाल परि है असह ॥३१॥

॥ दोहा ॥

वित्त१रु जे भूखन२बसन३, ए सब दै लै अन्न ॥
निखिल मरहु कुंट्ठार नृप, समय घोर संपन्न ॥ ३२ ॥
प्रत्यय हो अग्गहिं नृपहिं, सचिव न चवहिं असत्य ॥
हिय सोच्यो अब जानि हम,ठहे किम छमहु असत्य ॥३३॥

---

*बुढापे से शिथिल. अत्यन्त×बृद्ध ॥२७॥२८॥छ१ वर्ष की अवस्था में वृत्तान्त ॥२९॥३०॥ ३ शकुनशास्त्र में पण्डित. इस ४उपात्यय (उल्टापल्टी)के होने से पहिले ही उसने कहदिया था ५ नगर ६ दुर्भिक्ष पड़ने की वार्ता ७ उलटे ८ दिन ९ आनेवालों.१०वर्ष. सब का ११संहार करनेवाला ॥ ३१ ॥ १२कोठार. घोर समय के १३साथ ॥ ३२ ॥ १४ भरोसा. झूठ नहीं १५बोलेगा ॥ ३३ ॥

षट्पात्

छमा१दया२निधि छितिप अखिल संसृति उपकारक ॥
इम उदार३ आलोचि सबन बिपदा संहारक ॥
इतउततैं आकारि प्रचुर बानिज बिक्रयपर ॥
मंत्रीकथित प्रमान कियउ निजपुर अन्नाकर ॥
व्यय बिरचि दम्म लक्खन बहुन क्रम लक्खनमन धान्यकरि
खातिका६ खात७गहिरे खनित भवन ९कुसूल४हु दिन्न भरि।३४।

दोहा—अधिपति पुव्वहि चेति इम, मतिसंख मंत्र प्रमानैं ॥
जगहिं जिवावन जो भयो, धन १ दै धान्य २ निधान ॥३५॥
संबंधी निज तेहु सब, चतुर दये चेताइ ॥
न दयो बुंदिय भेद नृप, जानि अबहु भजिजाइ ॥ ३६ ॥
जितनैं सचिव कही जु ही, बनी अचानक बत्त॥
दुवचालीसम ४२ अब्द हव, पुहवि दुकाल सु पत्त ॥ ३७ ॥

॥ षट्पात् ॥

जिन गृह बल जान्यौं न प्रचुर तिनकैं हु पठायउ ॥
बुंदियभट करि बिभेय१३ अखिल जनपद१४ अपनायउ ॥
लघु भूपहु कति चलित सहज लिय झोलि प्रजा सह ॥
जन लक्खन यहजानि आनि नृपढिग कट्टे अँह ॥
इम जग जिवाइ करुनाउदधि धवल बह्यो अम्मीढधुर१५॥
धँनपति१६ निधान निज जत्तु धरिय पूरि नव९हि दुवलानपुर।३८।

॥ दोहा ॥

---

१ संसार का २ विचार कर ३ बुलाये ४ बेचने को ५ अन्न की खान ६ खाइयें (धन के खजाने) ७ खात (अन्न का खजाना) गहरे ८ खुदे हुए ९ कोठे ॥ ३४ ॥ १० मन्त्री की सलाह ११ प्रमाण करके १२ धन ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥
१३ भय रहित १४ देश को १५ दिन १६ अजमीढ राजा की धुर को धारण की; अथवा जिसकी बराबरी में दूसरे नहीं लगसकैं ऐसी धुर को धारण की. दुबलानपुर में मानों नव निधि सहित १७ कुबेर ने अपना धन धरा ॥ ३८ ॥

समरकंद १ तँहँ धान्यसुनि, अक्खिय बेचहु एस ॥
कछुकदयो आसानकरि, नलयो अर्घ नरेस ॥ ३९ ॥
कति सत्रुहु आसानकरि, जिनको कुकृत जताइ ॥
बखसि अन्न थंभे बिकल, प्रनतिपत्र तिन्ह पाइ ॥ ४० ॥

॥ मनोहरम् ॥

भो जैंडैल भूपैं परे तिन्हैं थंभि भिस्सा याग,
ब्याज लैन बुँब दीसे राह बहु रोहे जे ॥
याके आदिपदन चतुर्दस १४ बरन आदि,
दल दोहा पहिलीके होत सब सोहे जे ॥
पंथपंथ पृच्छक पठाइ बुलवाये व्रातें,
जातें १ तातें २ जार्या ३ जननी ४ जन ५ विछोहे जे ॥
भारमल्ल १८६१४ भूप दुबलानाँ यौं खजानाँ खोलि,
मानव मतंगज मलीदनतैं मोहे जे ॥ ४१ ॥

१मूल्य (क़ीमत) ॥३९॥ २बुरा कार्य ३ नम्रता के पत्र (अरजियें) लेकर ॥४०॥ ढ-कलों (ढेलों) के समान भूमि पर पड़े हुओं को भिक्षा के यज्ञ से भोजन करा कर थांभा और बुन्दी को पीछी लेने के मिस से बहुत मार्गों को जिसने रोके अर्थात् भूखों को नहीं जाने दिये. इस चरण के आदि पदों के आदि के चौदह अक्षरों का आधा *दोहा अर्थात् पूर्वार्द्ध होता है. मार्ग मार्ग पर ४पूछनेवालों को भेजकर ५ समूहों को बुलाये ६ पुत्र ७ पिता ८स्त्री, माता और अपने मनुष्यों से वियोग पायेहुओं को. इसप्रकार राजा भारमल्ल ने दुबलाना ग्राम में खजाना खोलकर मनुष्य रूपी ९ हाथियों को १०मलीदों से मोहित किये "यहां मलीदा शब्द में श्लेष है, अर्थात् मनुष्यों के लिये सीरा (हलवा) और हाथियों के सामान्य भोजन का नाम मलीदा है" ॥ ४१ ॥

---

*दोहा शब्द स्त्रीलिंग है परन्तु लौकिक में पुल्लिंग से व्यवहार कियाजाता है जिस कारण हम भी पुल्लिंग ही लिखते हैं इस मनहर छन्द के आदि के चरण के चौदह पदों के आदि के चौदह अक्षरों से मरु भाषा के दोहे का पूर्वार्द्ध निकलता है।जिसके निकालने का यह क्रम है कि ॥ सुप्तिडन्तम्पदम् ॥ अर्थात् सुप् तिङ् आदि विभक्ति जिसके अन्त में होवें उसको पद कहते हैं सो ये इसप्रकार हैं॥ भो, जैंडैल, भूपैं परे, तिन्हैं, थम्भि, भिस्सा, याग, ब्याज, लैनैं, बुम्ब, दीसे, राह, बहु ॥ इन उपरोक्त १४ पदों से आदि के अक्षरों से दोहे का यह पूर्वार्द्ध निकलता है "भोजै भूपति थम्भिया याले बुन्दी राव॥" अर्थ-बुन्दीके प्यारे राजा राव ने भोजन कराकर ठहराये; अथवा ठहराकर भोजन कराता है ॥

दोहा—सो दोहा नृपसमयको, मारव वानी माँहिं ॥
जँहँ लकार१८अधबिंदुजुत, अंत्य व२२दंत्य हु आँहिं ॥४२॥
सोलह १६ मासन इम सुपहु, दै लक्खन जियदान ॥
किय तटस्थ १अरि३मित्र४कुल, अबिरत जस१आसान२॥४३॥
आधे १ दूजे २ अब्दलौं, रक्खे कातिक नरेस ॥
पाथेयहु तिन्ह अर्थ पुनि, दै पठये निजदेस ॥ ४४ ॥

॥ मनोहरम् ॥

वेची स्वीयं संतति सविता १ सविता २ हू जहाँ,
पति १ पतनी २ की प्रियतापैं हरि हीनकी ॥
घाँघाँ घर घुम्मत घरट्टनको घोर मिट्यो,
चुल्लिनमैं छाई तंतुमाला मर्कटीनंकी ॥
खाल खिल सूके पंक मैंडुक मिलानैं बाग१,
बिपिन २ बिलानैं द्रुम छाँह छबि छीनकी,
देसकी गिनैं को अैसे समय सुभांड १८६।४ देखो,
पोखि परदेसकी प्रजाकों परिपीनंकी ॥ ४५ ॥

॥ षट्पात् ॥

मंगिय बहुरिहु मिच्छ कहिय तवतव नृप कारन ॥
अव खंढो बहुअन्न बढत लक्खन जन वारन ॥

सो दोहा १ मरुभाषा में राजा भारलक्ष के समय का बनाहुआ है जिसमें 'ल' तो आधे अनुस्वार सहित है और अन्तिम 'व' दन्त्य अर्थात् 'व' है ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ २ मार्ग का व्यय (रस्ताखर्च) ॥ ४४ ॥ ३ अपनी सन्तान को ४ माता और ५ पिता ने भी वेच दी. जहां पर पति और स्त्री के ६ प्यार को हरण करके हीन कर दिया, और घरों में ७ ठाम ठाम घूमतीहुई घरटियों का शब्द मिटकर ८ चूल्हों में १० मकड़ियों के ९ जाले छागये और थाकी के नाल सूखकर १२मैंडक ११कीचड़ में मिलगये, बाग और १३वन मिटकर वृक्षों की छाया की शोभा क्षीण होगई, ऐसे समय में देश की तो क्या कहैं? देखो राजा सुभाण्ड ने परदेश की प्रजा को पालन करके १४पुष्ट की ॥४५॥ १५खाँया

तदपि हजारन ताहि जानि *प्रतिघस्र जिमावत ॥
स्वीय कतिन कछु सैंन **पिहित गेहहु पहुँचावत ॥
हमकौं न देत इम सोधि हिय मारन पुव्वहिँ जास मत ॥
तिहिँ सम्मरकंद१उर बैर१तकि बाहिर हित२मंडिय ***वितत॥४६॥

दोहा ॥

आनि असूया१ ईरखा२, जानि मिले सब जत्थ ॥
वसुधा हड्डनवंसतैं, इच्छत लैंन अनत्थ ॥ ४७ ॥
अधिप१ सोंड२ गंग३ रु अमर४, मारे चाहत म्लिच्छ ॥
ते चउ४ चाहत हनन तिहिँ, अंतर प्रीति अनिच्छ ॥४८॥युग्मम्॥

॥ षट्पात् ॥

भूपहिँ खित्तल भनिय अप्प अंकिय दुकाल इम ॥
ममनामहु छितिमाँहिँ करहु कछुरीति रहैं किम ॥
सुनिनृप पंद्रहसहँस१५००० कढ्ढि रुप्पय निजकोसन ॥
बिक्खि समय सुभ बुद्धि निपुन सिल्पिन निर्दोसन ॥
दुबलानतैं जु पवमानदिस पाइ उचितथल कोस१पर ॥
कासार रचिय तसनामकरि विदित सु खित्तोलाव२बर ॥४९॥

दोहा ॥

नाम भवानीपुर नियत, अब निबसथ जँहँ आस ॥
देवी खित्तोला सदन, ताल गिनहु वह तास ॥ ५० ॥
निबसथ रचिय सुभांड१नृप, भंडाहेर१सु भव्य ॥
सुंडाहेर१ सु सोंड२ किय, निज१निज२ नामन नव्य ॥ ५१ ॥
नृपकुमार नारायन१८७१ सु, पंद्रह१५ सम बयपाइ ॥
बिद्या प्रहरन१ बाहन२न, लिन्नी सब मनलाइ ॥५२॥

---

* प्रतिदिन ** छाने *** विस्तार से ॥ ४६ ॥ १ अनर्थ ॥ ४७ ॥
॥ ४८ ॥ २ वायुकोण में ३ तालाव ॥ ४९ ॥ ४ ग्राम ५ है ६ खेतोला देवी का मन्दिर है ॥ ५० ॥ ७ सुन्दर ८ नवीन ॥५१॥ ९ वर्ष की अवस्था १० शस्त्रविद्या

त्रय३पीढिन नृप हम्म१८३।१ तैं, *आयति विधिबस एक ॥
पुत्र लहे जिन वृद्धपन, जीवनहार जितेक ॥ ५३ ॥
पाये तिमहि सुथांड१८६ पहु, जुब्बन जव हरिजात ॥
कुमर तीन३ इक्क१ सु कनी, ÷प्रथित आयुबल पात ॥ ५४ ॥
नारायन१८७।१ तिनमैं निपुन, अग्रज सूर१ उदार२ ॥
जनक पुब्ब चिंतैंसु जुरि, बुंदिपलैंन बिचारि ॥ ५५ ॥
म्लिच्छचहैं इन्ह मारिबो, पहु चहैं तिन्ह अंत ॥
दाव नलग्गौ द्वैरहि द्विस, मनकारि जदपि मिलंत ॥ ५६ ॥
आयति नृप१की अनुज२की, हुव ध्रुव बिगरनहार ॥
इच्छत बुंदिय आक्रमन, जेहि मरत जुझार ॥ ५७ ॥
जैत१८५।१ अनुज नवब्रह्म१८५।२जिम, अमर१८६।१ अलोद अधीस
पुनि गंग१८६।२हु नवगामपति, सुपहु भार जिन्हसीस ॥ ५८ ॥
अरु सेव१८६।२जु सारन१८६।१ अनुज,इन४हु लह्यो क्रम अंत ॥
तिम समाप्त अग्रज लि३कहु, इम पह होन उदंत ॥ ५९ ॥

षट्पात् ॥

समरकंद१ छलसज्जि हनन हड्डन हिंडोलिय ॥
परिगहसह खल पहुँचि पिहितँ बिस्वासघात प्रिय ॥
अंगजैं निज दाऊद२ कलित कछु मँह निमित्त करि ॥
रचिय गोठि अभिराम बिबिध ब्यंजन गन बिस्तरि ॥
सुत तीन३ इक्क१ सोदरसहित दै निमंत्र हुबलानतैं ॥
अनुगनसमेत बुल्ल्यो अधिप मिल्यो कुहकँ बहुमानतैं ॥६०॥

दोहा ॥

जद्दपि निवार्यो जात जँहँ, पँहु बहु सनिकप्रधान ॥

॥५२॥*भाग्य॥ ५३ ॥ ÷ प्रसिद्ध ॥५४॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १भाग्य २ निश्चय ही. जो बुन्दी ३लेना चाहते हैं वे ही वीर मरतेजाते हैं ॥५७॥५८॥५८॥४ इनने ५पुत्र६ विदित७उत्सव८न्यौता देकर ९ सेवकों सहित१०कपटी ॥ ६० ॥ ११राजा को,

गयो तदपि *अंतक्कग्रसित, भोरो अरि हितभान ॥ ६१ ॥
सिसु नरवद१८७१९ नरसिंह१८७१२सह, जावनलग्गो जत्थ ॥
जेठसुत१८७११ जुत सचिव जिन्ह, हठिरोके गहिहत्थ ॥ ६२ ॥
आयो सोंड१८६१५हु मिलन इत, जोहु नटयो तँहँज़ान ॥
सोहु लयो नृप दै सपथ, देखत हितहि निदान ॥ ६३ ॥

षट्पात् ॥

मिल्यो दुरहुन अतिमान समरकंद १-सु रचि संसद ॥
अवजु आँहि सरसेतु पंतिहुव तास सीमपद ॥
अक्खिय भूप १ हिं अनुज २ जवन मारौं यँहँ जिम्मत ॥
बदिय भूप खल बहुत बनत भावी नटरैं बत ॥
आपान बिरचि करि तब असन करधांवन सानुज ३ करत ॥
बहराम१ कुलब २ पति सैनबस बाहिय असि हसि विप्फुरत॥६४॥

॥ दोहा ॥

पैठो नृपके अंसपरि, आँसि उपवीत उतार ॥
तदपि हन्यौं बहराम २ तिहिं, कर निज झारि कटार ॥ ६५॥

॥ षट्पात् ॥

कुतबखान १ खग्गकरि सोंड २ उडिजात स्वीयसिर ॥
कोंटिसन कढ्ढि कृपान चंड रन रुंड रच्यो चिरं ॥
परि समाज प्रद्द्वैन जवन चढि तैरुन बचे जँहँ ॥

---

* काल का ग्रसाहुआ भोला शत्रु को हित जानकर ॥६१॥ ॥६२॥ ६३ ॥ १ सभा जहां अब तलाव की पाल २ है उसके नीचे की सीमा में पंक्तिहुई ३ पानगोष्ठी (मतवाल). छोटे भाई सहित ४हाथ धोनेलगे स्वामि के ५इशारे से ॥ ६४ ॥ ६ कन्धे पर गिरकर ७ खड्ग ८एक कन्धे पर लगकर दूसरी ओर की पसलियों में जनेऊ के आकार घाव उतार देवे उसको जनेऊ उतार अथवा उपवीत उतार कहते हैं ॥६५॥ ९ अपना मस्तक १० कमर से तलवार निकाल कर ११ बहुत समय तक १२ पलायन (भगना) १३वृत्तों

हिय अंखिन मनु हड्ड तक्कि छ ६ अराति हनैं तहँ ॥
पैंतीस ३५ भजे सहसा प्रधन पंद्रह १५ भट नृपके परे ॥
नृप१सोंड२सहितसलह१७नरन कतलमिच्छ छ६छ६गुन३६करे॥६६॥

॥ दोहा ॥

सचिव छन्न आवत सु सब, मुख्यकुमर १८७।१ सुनि मग्ग ॥
पच्छोमुरि दुबलानपुर, आलय पत्त उदग्ग ॥ ६७ ॥
दहल बढी सवदेसमैं, सुनि नृप पक्खिन सोहि ॥
कढि निवास परसीमकिय, बन्यों रहनवल कोहि ॥ ६८ ॥
सारन १ सोदर सेव२सुत, तजि वसुदारी तत्थ ॥
गो मेव १८७।१ हु खटपुर गहन, जानि रहन थिर जत्थ ॥ ६९ ॥
गिरिसकोंनँ ८ खट द्रंगतैं, मेर्ध्यासरित समीप ॥
ग्राम बिरचि अभिनव गुढा, निवस्यो परन प्रतीप ॥ ७० ॥
नृप १ सानुज २ पायो जनँन, महि बसु सकरि १४८१ मान ॥
नवति चतुर्दस १४९० पट्ट निज, बैठो उचित बिधान ॥ ७१ ॥
वेद वेद तिथि १५४४ मित बरस, बिक्रम संवत बेर ॥
हिंडोली वपुहान किय, ढाहि छतीस ३६ न ढेर ॥ ७२ ॥
वदिय अग्ग गणकन विदित, नृपको सस्त्र निपात ॥
सोहिभई सारकसठन, भेजि परे दुव २ भ्रात ॥ ७३ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोलवसुधेश्वर १ वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवं-

---

पर १ शत्रुओं को २ अचानक ३ युद्ध से ॥ ६६ ॥ ४ घर में ५ गया ।६७। ६ भय ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ खटकड़ नामक पुर से ७ ईशान कोण में ८ मेफ़ नदी के पास ९ नवीन १० शत्रुओं के विरुद्ध ॥ ७० ॥ ११ जन्म ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ १२ज्योतिषियों ने १३ मूर्खों की प्रवृत्ति ॥ ७३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं

श्यविहितव्याख्यावेलाव्याहार्यबुंदीवसुधापतिसुभाणडदेव १८६।४ चरित्रे श्रुतसीमासमीपसमरकन्दा १ भिषेणनसामन्त १ सचिव २ नृप ३ निःशलाकमन्त्रावमाननोद्युक्तशोणड १८६।५ नानालघु १ गुरु २ कृश १ स्थूल २ दृष्टान्तदर्शनसङ्ग्रामसमर्थन १, निरस्तमाधवा १ऽमरकृततदनुमोदनरणनिश्चितवंशनाशनृप १ जैत्र २ सारण ३ सचिव ४ शत्रुशासनस्वीकारसूचन २, समवज्ञातनृपा १ दि ४ सन्धिसम्मततर्जितकथितकातरीभूतसन्धिमन्त्रिकसमाजदर्शितपार्थक्याऽमर १ माधव २ गङ्ग ३ शोणड ४ स्वस्वस्थानगमन ३, निश्चिताऽनुकूलाऽवसरम्लेच्छमारणनृपा १ नुमोदितप्रगुणीकृतोपायनस्वीकृतशत्रुशासनचर्मण्वत्यवधिसमभिसृतनिवेदितोपदमानितम्लेच्छमतसारण १ जैत्र २ सचिव ३ बुन्दीविहानस्वीकरण ४, लेखितनृपा १ र्थद्वादशो १२ पवसथोपेतदुर्वलान १ दङ्गशोणडा २ऽर्थतर्ककुला १ दिग्रामपञ्चक ५ पट्टमत्यागततत्त्रय ३ वसुधेश १ बुन्दीबहिर्निःसरणोपदेशन ५, परागोचरगोपितवसु १ भूष

की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति सुभाणडदेव के चरित्र में सीमा के समीप समरकन्द की युद्धयात्रा सुनकर उमराव, सचिव और राजा के एकांत में कियेहुए मन्त्र की अवज्ञा करके उद्युक्तहुए शोणड का अनेक छोटे बडे दुर्बल और मोटे दृष्टान्तों को दिखाकर युद्ध को पुष्ट करना, माधव और अमर के कियेहुए उसके अनुमोदन का तिरस्कार करके युद्ध में निश्चय ही वंश का नाश जानकर राजा, जैत्र, सारण और सचिव का शत्रु की आज्ञा को स्वीकार करने की सूचना करना, राजा आदि चारों की सन्धि की सम्मति को न मानकर कायर कहकर सन्धि करनेवाले मंत्रिसमाज को धमकाकर पृथक् पन दिखाकर अमर, माधव, गंग और शौंड का अपने अपने स्थानों को जाना, अनुकूल समय में म्लेच्छ को मारने का निश्चय करके राजा के अनुमोदन से सरलता पूर्वक नजराना ले शत्रु की आज्ञा स्वीकार करके चामल नदी तक सन्मुख जाकर नजराना भेट करके म्लेच्छ के मत को मानकर सारण, जैत्र और सचिव का बुन्दी छोडने को स्वीकार करना, राजा के अर्थ द्वादश गामों सहित दुबलानपुर और शौंड के नाम ताकला आदि पांच ग्रामों का पट्टा लिखाकर पीछे आकर जैत्र आदि तीनों का राजा को बुन्दी से बाहर निकलने की सम्मति देना, शत्रुओं से नहीं जानेहुए धन और आभूषण के समूह को छिपाकर हाथी घोडे और

णा २ व्रातत्यक्तसगज १ तुरग २ नालिका ३ निकरबुन्दीनगरब-
लात्कारनिष्कासिततारादुर्गाऽध्यक्षनरेन्द्रदुर्बलानप्रविशन ६, सार
णा १ सचिवा २ दिप्रसभप्रबोधितशोढ १८६।५ ग्रामपञ्चक५स्वी
कारण ७, समाहूतपत्नी १ पुत्रा २ दिपरिकरसमरकन्द १ सीमा
न्तबुन्दीराज्यस्वीकरण ८, जितवशीकारितसीमासपत्नबुन्दीस्थापि
तत्रिसहस्र ३००० बलखिलसैन्यमरुड्प्रतिगमन ९, समाहूतसमाग
तमाधवा १ऽऽदित्रय ३ वर्जितनृपा १ दिसामन्तसंघार्थस्वावसरसं-
जिहीर्षुयवनपृथक्पृथङ्निजनामलेखितपट्टाऽर्पण १०, निश्चितनृ
पाऽनुजोन्मत्तभावबुन्दीशमाधव १ गंगा २ऽनागमकारणपृच्छावस
रजैत्र १८५।१ यक्ष्मा १ऽर्शो२ मिषत्कोपनिवारण ११, क्षान्तमन्तुस्व
सेवनपुत्रप्रेषणादत्तनियोगकदाचिद्दृष्टकपटाऽऽमयाविद्युग २ स्वस्व
सूनुशैशवनिवेदन १२, जैत्र १ सारण २ माधव ३ त्रय ३ स्वस्वस
मयसंस्थासमादानाऽवसरतत्पुत्रगैणाल्या १ दिस्वस्वस्थानीयस्वामी
भवन १३, स्वस्वामिसेवासावधानदुर्बलान १ वास्तव्यनीति १ नि
मित्त २ निपुणमन्त्रिराजवणिक्क्षेत्रलस्वप्रभुसमक्षाऽऽगमिष्यमाण

तोपों के समूह सहित बुन्दी नगर को छोड़कर तारागढ के किलेदार को कठिनता से निकालकर राजा का दुबलान पुर में जाना, सारण और सचिव आदि का हठ पूर्वक समझाकर शौंढ को पांच गांव स्वीकार कराना, स्त्री पुत्रादि परगह को बुलाकर समरकन्द का सीमा पर्यन्त बुन्दी के राज्य को अपने अधिकार में करना, सीमा के शत्रुओं को विजय और वश में करके बुन्दी में तीन हजार सेना रखकर बाकी की सेना का पीछा मरुद्भपुर जाना, बुलाने से आयेहुए माधव आदि तीनों को छोड़कर राजा और उमरावों के समूह के अर्थ अपने अवसर पर मारने की इच्छावाले यवन का अपने नाम से लिखकर जुदे जुदे पट्टे देना, राजा के अनुज माधव और गङ्ग के उन्मत्तभाव का निश्चय कराकर बुन्दी नहीं आने का कारण पूछने के समय जैत्रसिंह का क्षयरोग और बवासीर के मिस से कोप मिटाना, अपराध को सहन करके अपने सेवन में पुत्रों को भेजने की आज्ञा देने पर कदाचित् कपट देखकर दोनों रोगियों का अपने अपने पुत्रों का बालकपन निवेदन करना; जैत्र, सारण और माधव तीनों के अपने

वर्षदुर्भिक्षविज्ञपन१४, परीक्षाप्रतीतसचिवसावधानीकृतविहितभर्म- १ भूषणा २ दिविनिमयदयालुनरेन्द्र १ सर्वजनजीवनसमानधान्य सम्भारसञ्चयन १५, प्राप्तसूचितशकसंगतद्विचत्वारिंशा४२ऽब्दमहा- दुर्भिक्षाऽऽगमयवनयाच्यमानदत्तसम्मितधान्यमूल्यानिनीषुसुभाराड देव १८६।४ सपत्नावधिशुष्यमाणासंख्यजनतासंजीवन १६, तत्र त्यमनोहरवृत्तप्रथम १ पादादिचतुर्दश १४ शब्दपूर्वपूर्वैके १ का १ क्षरयोगतत्कालीनप्राक्तनीदोहापूर्वा १ र्द्ध १ संघटन१७, पुनर्मार्गणा प्राप्तधान्यसमरक्न्द १ सार्द्धैक१समावधिनिर्वोढसर्वजनजीवनसपरि ग्रहसुभाराड २ परस्परछद्मघातविचारणा १८, मन्त्रिक्षेत्रलप्रार्थितन रेन्द्र १ सूचितस्थानविहितपंचदशसहस्र १५००० रौप्यव्ययवणिङ नामसूचकनव्यकासारनिर्मापण १९, सुभाराड १ शोराड२ स्वस्वाऽ भिधानाऽङ्कितभाराडखेट १ शोराडखेट २ नामनवीननिवसथयुग्म२ निवासन २०, नृपहस्ता १८३।१ऽर्वाग्वैरिशल्या १८५।१ऽवधिनृपत्र

अपने समय में देहान्त होने के अवसर पर उनके पुत्रों का गैणोली आदि अपने अपने स्थानों का पति होना, अपने स्वामि की सेवा में सावधान दुब- लानपुर निवासी नीति और शकुन में निपुण मन्त्रिराज बनिया खेता का अपने स्वामि के सन्मुख आनेवाले सम्वत् में दुर्भिक्ष होने की जानकारी क रना, परीक्षा से प्रतीति कियेहुए सचिव के सावधान करने से उचित स्वर्ण और भूषण आदि देकर दयालु राजा का सब जीवों के जीवन के समान धान्य का समूह संचय करना, सूचना कियेहुए४२के सम्वत के साथ प्राप्त हुए महादु र्भिक्ष आने के समय यवन के याचना करने पर मूल्य नहीं लेकर कुछ धान्य देकर सुभाराडदेव का शत्रुओं तक शुष्क हुए असंख्य मनुष्यों को जिलाना, वहांके मनोहर छन्द के प्रथम चरण के चौदह शब्दों के प्रत्येक पद के प्रथम के एक एक अक्षर के मिलाने से उस समय के प्राचीन दोहे के पूर्वार्द्ध को रचना, फिर मांगने पर धान्य के नहीं मिलने से डेढ वर्ष की अवधि तक सब जनों का निर्वाह करनेवाले परिग्रहसहित सुभांड को परस्पर छल घात करके मारने का विचारना, मन्त्री खेत्रस के प्रार्थना करने पर राजा का जनाये हुए स्थान पर पन्द्रह हजा र रुपये खरच करके बनिये के नाम को जनानेवाले नवीन तालाव को बना ना, सुभाराड और शौराड का अपने अपने नामों से जाने जावें ऐसे भांडखेडा

य ३ वार्द्धकवयोराज्यधरप्रसूतिप्राप्तिसूचनापुरस्सरसुभाण्डदेव१८६। ४ यौवनाऽवतरणसमयसन्ततिचतुष्टया ४ऽधिगमसूचन २१, हेति१ हया २ दिविद्याविदग्धज्येष्ठकुमारनारायणदास १८७।१ पितृपरोक्ष म्लेच्छमारणविचारण २२, नृपनियतिप्रातिकूल्यपरतन्त्रम्लेच्छमार णतन्त्रोद्यतनवब्रह्मा १ऽऽदिनृपबन्धुनवक९स्वस्वसमयसमापन २३, हिराडोलीपुरप्राप्तसपुत्रसमरकन्द१ कल्पितमहान्तरगोष्ठीभोजनव्या जसमाहूतमन्त्रिवारणाऽऽग्रहन्यस्तकुमारसाहससार्थीकृताऽनुजसुभांड देव १८६।४ सूचितस्थानगमन २४, भोजनाऽवसानसमरकन्द १ सूचनासज्जिहीर्षुयवनयुगसुभाराड १८६।४ शौराड १८६।४ भ्रातृद्वय २ दलन २५, तिर्यक्कृत्तवामकरकृष्टकट्टारनरेन्द्र१स्वमारकबहराम २ संहरण २६, छिन्नमूर्धकरधृतकृपाणशोराड १ द्वेषिषट्क ६निषू दन २७, नृपपक्षीयपञ्चदश १५ परपक्षीयषट्त्रिंश ३६ तुमुलसम्मि तसमापन २८, मार्गश्रुतैतद्वृत्तान्तस्वस्थानप्रत्यागतकुमारनारायणदास

और शौराडखेड़ा नामक नवीन दो ग्राम बसाना, राजा हम्मीर से पीछे वैरि शल्य तक तीनों राजाओं के वृद्ध अवस्था में राज्य को धारण करनेवाली सन्तान की प्राप्ति होने की सूचना पूर्वक सुभांडदेव के यौवन उतरने के समय चार सन्तान होने की सूचना करना, शस्त्र और हय विद्या में पण्डित बड़े कुमार नारायणदास का पिता के परोक्ष म्लेच्छ को मारने का विचार करना, राजा के उलटे भाग्य की परतन्त्रता से म्लेच्छ को मारने के तन्त्र में उद्युक्त होनेवाले नवब्रह्म आदि राजा के नव भाइयों का अपने अपने समय पर मरना, हिराडोली पुर में पहुंच कर समरकन्द के कल्पित उत्सव की गोठ के मिस से बुलायेहुए मन्त्री के रोकने से कुमार को घर में छोडकर हठ पूर्वक छोटे भाई को साथ लेकर सुभाराडदेव का सूचना कियेहुए स्थान को जा ना, भोजन के अन्त में समरकन्द की सूचना से मारने की इच्छावाले दो य वनों का सुभाराड और शौराड दोनों भाइयों को मारना, खड्ग से तिरछा कट ने पर हाथ में कटार निकाल कर राजा का अपने मारनेवाले बहराम को मार ना, मस्तक कटे पीछे हाथ में खड्ग लेकर शौराड का छः शत्रुओं को मारना, रा जा के पक्ष के पन्द्रह और शत्रु के पक्ष के छत्तीस शत्रुओं का युद्ध में मार

१८७।१बन्धुवर्गपरजनपदपलायन२९, षट्टपुरगहनसम्प्राप्तसेव१८६। २ सूनुमेव १८७।१ नव्यनिर्मितगुढा १ रूयग्रामनिवसन ३०, सानुज १ जन्म १ पट्टप्राप्ति २ तनुत्याग ३ शकसमासङ्ख्यासूचनं ३१ द्वाविंशो २२ मयूखः॥ २२ ॥

आदित एकोनसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १६९ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

बरज्यो जावत बनिक तास करि कानि रह्यो तब ॥
पुनि नारायन १८७।१ पिहितें जोग्य अवसर हँकिय जब ॥
इक्कल १ हय आरूढ जानि न सकैं अरातिपँजिस ॥
नगर बरोदानिकट अध्व कुलनास सुन्यों इम ॥
पच्छो सु आइ दुबलाबपुर हेय१तजि२रुबिधि१करतहुव २ ॥
बैरिन सराँह बाहिय१बदत२स्वांत१निगूढ२सुभांड१८६।४ सुव ॥

॥ दोहा ॥

संतति न हुती सोंड १८६।५ कै, यातैं कुमर उदार ॥
जनक १ पितृव्यक २ कृत्य जुग २, सब्धिय बिधि अनुसार ॥२॥
कानिकरन आवैं अखिल, इम भाखैं तिन्हअग्ग ॥
करी उचित मारे कुटिल, मतिबिनु चलत कुमग्ग ॥ ३ ॥

जाना, मार्ग में यह वृत्तान्त सुनकर कुमर नारायणदास का अपने घर पर आना और बन्धुवर्ग का पराये देश में भागना, खट्टपुर के गहन वन को पाकर सेव के पुत्र मेव का नवीन बसायेहुए गुढा नामक ग्राम में निवास करना, छोटे भाई सहित राजा के जन्म, पट्टप्राप्ति और शरीर छोड़ने के विक्रम के सम्वत् की गणनासूचन करने का २२वां मयूख समाप्त हुआ।२२। और आदि से १६९ मयूख हुए॥

१ नारायणदास २ छाने. अकेला घोड़े पर ३चढकर४ सन्नी नहीं जानसके इस प्रकार ५ मार्ग में ६ त्यागने योग्य को त्यागकर. ऊपर के मन से शत्रुओं की ७प्रशंसा करता रहा ८मन में बैर को छिपारक्खा ॥ १ ॥ २ ॥ ९ मातमपुर्सी १० कुमार्ग ॥३॥

स्वामीको हनिबो *सतत, चाहतहै दुव २ चित्त ॥
सहत सहत अति **आगसन, भरि ***आमुख किय भित्त॥४॥
समरकंद काका सु पहु, अब है जनक २ उदार ॥
बेगम १ काकी माइ २ बनि, हमरे पालनहार ॥ ५ ॥
सुनि बुंदिप यहबत्त सब, जवन तिन्हैं निजजानि ॥
बेगम १ सिसु २ पठये बिहसि, करन अग्रंजल २ कानि ॥ ६ ॥
नारायेन १ सु नरायन २ हु, दीसत सब्द द्वि २ रूप ॥
इन दोउ २ न करि बिदित इम, भाख्योजात सु भूप ॥७॥

॥ षट्पात् ॥

दुमनै नरायनदास अरज बेगमप्रति अक्खिय ॥
तुम १ माता१बे१तात२मथितँ पालक निज पक्खिय ॥
उरलगाइ सुनि बहहु अभय अप्पि रु गृहआई ॥
अप्पन पतिके अग्ग बहुत किय तास बडाई ॥
कुमरहु इतैं सु सब कृत्यकरि नीतिनिपुन मिच्छन नँयो ॥
बिगनित जिमाइ दिन बारहम १२ भूपपट्ट पावत भयो ॥८॥
बुंदिप आइ बहोरि नीतिकोविदं अपुब्ब नमि ॥
समरकंद १ संसंद सु स्वांतैं गोपित बैठो संमि ॥
अंतहपुर आदेस जानि हित चहत दयो जब ॥
बेगमपास बहोरि तास नुतिंकरि आयो तब ॥

* निरन्तर ** अपराधों से *** मुख पर्यन्त ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ १ बड़े भाइयों की मातमपुर्सी करने के लिये ॥ ६ ॥ २ नारायण और नरायण ये शब्द दो रूप से दीखते हैं परंतु इन दोनों नामों से यह राजा प्रसिद्ध था इस कारण इस ग्रंथ में ऐसे लिखा है ॥७॥ १ उदास होकर; अथवा बाहिर से मित्र और भीतर से शत्रु इसभांति दो तरह के मनवाले नारायणदास ने ४ पिता ५प्रसिद्ध ६पक्ष करनेवाले ७नमस्कार किया; वा उन म्लेच्छों से नम्रता की ८ गणना रहित ॥८॥ नीति में ९पण्डित १०सभा में ११ मन को छिपाकर १२ सहन करके १३ जनाने में जाने की आज्ञा १४ स्तुति करके

उपव[1]सथ ताहि बारह १२ अधिक द्रोहमिटन मिच्छप दये ॥
जै[3]नकारि अनुग इम जानि जग भूपहिं बहु निंदतभये ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

इम बारह १२ निवे[4]सथ अधिक, पुब्ब पटासन पाइ ॥
पहु आयो दुबलानपुर, मिच्छन हितहि मनाइ ॥ १० ॥
समरकंद १ कँहँ सुत २ सहित, चाहत मारन चित्त ॥
जिम स[5]ल्लैं काका १ जनक २, घर घल्लैं बल[6]वित्त ॥ ११ ॥

॥ षट्पात् ॥

तँहँ नृप मातुलतनय[7] बग्घ[8] चालुक बीरनबर ॥
लहि अवसर दुबलान मिलनआयो हि[9]तं मंथर ॥
मनं[10] संकल्प सु महिप कह्यो ता[11]सन सहकारन ॥
बग्घ निपुन तब बं[12]दिय मि[13]त्तं न बनैं तस मारन ॥
पुच्छत निदां[14]न अक्खिय पुनिहु अंधुं[15]छाँहँजिम मंत्र उर ॥
रक्खैं सु हनैं ऐसे रिपुन धारि न सक्कैं और धुर ॥ १२ ॥
बंदिय भूप तुव बंधु १ सुहृद २ माम[16]क मामक[17]सुत ॥
हम १ तुम २ अंतर है न इम नजानैं इत २ ओ उत ॥
बग्घ कहिय व्है बंधु तदपि नकहहु अब तासौं ॥
अवसर सहहु इष्ट रक्खि व्यव[18]हित रचनासौं ॥
व्है जब अ[19]नेह बुल्लहु हमहिं देहैं मेटि कलंक दुव ॥
ह्रुनं[20] अधीस मारक हनि१रु भुग्गहु बुंदिय राज्य भुव ॥ १३ ॥

दोहा ॥

जंपि इम सु गय जाजपुर, वीर निजाल[21]य बग्घ ॥

ग्राम २म्लेच्छों के पति ने वैर मिटाने के लिये दिये ३ पिता के शत्रु का सेवक जानकर ॥ ९ ॥ ४ ग्राम ॥ १० ॥ ५सालते हैं (दुख देते हैं) ६ सेना रूपी धन ७ मामा का बेटा ८बाघसिंह सोलंखी ९ हित जनानेवाला १० मन का विचार ११तिससे १२कहा १३हे मित्र १४कारण पूछने पर १५कुए की छाया के समान मन में विचार रखनेवाला ॥ १६ मेरे १७मामा के पुत्र १८ गुप्त १९ समय होवै तब २० हाडों के पति को मारनेवाले को मारकर ॥ १३ ॥ २१ अपने घर

दुस्सह बित्ते मासदस १० अधिपहिँ निढि अनग्घँ[1] ॥ १४ ॥
पुनि नृप लग्गत ऋतुप्रसँल[2], मृगसिरमास समत्थ ॥
वग्घादिक निज बुल्लिकैँ, सत्त ७ लये तँहँसत्थ ॥ १५ ॥
जोध इतर[3] सतच्यारि ४०० जिन्ह, राजा गोपुर[4] रक्खि ॥
स्वसँह[5] अट्ठ ८ प्रबिसन प्रथम, उचित गिनैँ फल अक्खि ॥१६॥

षट्पात् ॥

चढि प्रातहि चहुवान बेग आयउ पुरबुंदिय ॥
बिरचत रन बुलबुलन[6] हसत पिक्ख्यो निर्भय हिय ॥
गोल्हावापिय[7] गाह महल पच्छिमदिस मंडित ॥
तोरनबाहिर[8] तत्थ प्रथित[9] बैठो छलपंडित[10] ॥
सिसु १ पुत्र १ पौत्र२काजी३सहित परिजँन[11] अल्प प्रमोदपगि
वटछाँहँ सभा बेदिय[12] बिरचि लखत समाह्वय[13] खेल लागि ॥१७॥
अक्खय१८६।२सुत अभिधान जास संग्राम१८७१२ सोहु जँहँ ॥
खटपुरपति मिलि खलन हुतो हाजरि पापी पँहँ[14] ॥
पहु तजि हय गय पास कलितँ[15] अंजलि[16] मुजराकारि ॥
कहि१ रु पुच्छि२ हित कुसल धीर बैठो अग्गैँ धरि ॥
जुज्झत सकुंतँ[17] बुलबुल जकुटँ[18] पिक्खत जवन प्रसक्तँपन[19] ॥
दिय सैनँ[20] सत्त७बग्घा१दिकन मारन तिन्ह चल्ल्यो न मन ॥१८॥
तबहि कढि तरवारि निडर झारिय नारायन१८७१२ ॥
चकित [21]अंखि चकचुंधि घरन नँट्ठे[22] बिनु धायन ॥

१आघ रहित ॥१४॥ २हेमन्त ऋतु ॥१५॥ ३अन्य वीर ४ शहरके द्वार पर रख कर ५ अपने सहित ॥ १६ ॥ ६ बुलबुल पक्षियों को लड़ाताहुआ ७गोल्हा बावड़ी के स्थान पर पश्चिम दिशा में महल बनता था उसके ८ बाहिर के दरवाजे से बाहिर ९ प्रसिद्ध १०छल करने में चतुर ११अपने थोड़े लोगों सहित. बट वृक्ष की छाया में१२चबूतरी बनाकर१३पक्षियों के युद्धके खेल में लगा ॥ १७ ॥ उस पापी के १४पास १६ हाथ १५ जोड़कर १७पक्षियों का१८जोड़ा १९आसक्त होकर २० इशारा ॥ १८ ॥ २१ नेत्रों में २२ भागे.

समरकंद१ अरि अंस चक्खि तिरछो कढिचल्ली ॥
सघन मेघ असि असित[2] बाढ चमकत घन[3]बल्ली ॥
उढिपरिय तास कर्तित अवनि मुंड बिसिख भ्रमि चक्र मग ॥
कुट्ट जँनु कुलाल खरतंति करि उडत चक्रसँन किय अलग॥१९॥
इतर सत्रु आयुधिक अट्ठ८ जुज्झे गहि आउधँ॥
भंजे खट६ नृप भटन उभय२अप्पहि बढ्ढे बुध ॥
अंदर गिनि दाऊद२चल्यो महलन सीढी चढि ॥
सु लगि पिट्ठि संग्राम१८७१ वेग नृप हनन गयो बढि ॥
पहु राजमहल सीढीन पर पहुँचत जानि कुबंधुपर ॥
झुकिपलटिझारि उलटोहिअसि धँकिडारिय सिर तासधर॥२०॥
उदासीन गिनि याहि जवन कट्टत न हन्यौं जब ॥
पै बनि सत्रुनपुत्त आत मारन पिक्ख्यो अब॥
पलटि खग्ग इम[14] प्रबल कंठ झारिय उलटकर ॥
कट्टि सु दक्खिन कुंडय[15] प्रखर[16] पैठो लगि पत्थर ॥
सिर१ रुंड२ उभयरसंग्राम१८७१के गये अँरर[17]लगि बेग गुरि[18]॥
पहुँच्यो महीप अंगनअवधि जँहँ बीबिन किय प्रस्न जुरि॥२१॥
जबलग तिन जानी न सौधँ[19] हक्कहि केवल सुनि ॥
इम नृपसम्मुह आइ कूककारन पुच्छिय पुनि ॥
बदिय अप्प हनि बंधु मियाँ मोकँहँ अब मारत ॥
दुरिहौं[20] जँहँ दाऊद२ रहैं बिनु मंतु[21] बिदारत ॥
उनकाहिय गयो फजरहि वहै बहरी१ बाज२ सिकार बन ॥

१कन्धे को चखकर २श्याम ३बिजुली ४कटाहुआ ५बिना शिखावाला ७मानों ८कुम्हार ने ९तीखी तांत से ६घट को फिरतेहुए १०चाक से उतारा ॥१९॥११ शत्रु १२ छोटे भाई संग्रामसिंह पर १३ क्रोध करके ॥ २० ॥ १४ इसकारण से. दाहिनी ओर की१५दीवार में१६तीक्ष्ण १७किवाड़ तक१८गुड़क (लुढक) कर ॥२१॥ १९महल में केवल हाका होना ही सुना२०छिपूंगा, बिना२१अपराध

रहि तू[1] अरोहि[2] अधिरोहिंनी बनत हर्म्य[3] तँहँ भय अब न ।२२।

रवन१ अबन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

सुत१ नत्ती[4]२ लखि इतर सिसु, अधिप दया तिन्ह आनि ॥
हर्म्य नव्य[5] जँहँ होतहो, पत्तो तँहँ असिपानि[6] ॥ २३ ॥
जन्मदिवस मह[7] होत जँहँ, राजमहल नृपराम[8] २०३ ॥
सौध बनितहो तास सिर, लघु[9] तिनदिनन ललाम[10] ॥ २४ ॥
तँहँचढि निश्रेनीहु तस, अँची उप्पर अप्प ॥
रुचिर गोख ठट्टोरह्यो, दलि कुलघातक[11] दप्प[12] ॥ २५ ॥
निजभट मुख्यप्रकोष्ठ[13] नृप, बेग लये सब बुल्लि ॥
कह्यो बिडारहु[14] खलनकँहँ, खीजहि जिततित खुल्लि ॥ २६ ॥
अज्ज[15] मिल्ले नृपमैं अखिल, मिच्छ२ रहे खिल मानि ॥
निखिल निकासे नैरतैं[16], तर्जन१ ताड़न२ तानि ॥ २७ ॥
पुरढिग भट चउसत४०० पिहितैं[17], आयो रक्खि अधीस[18] ॥
आये ते मंडत अमर्ल, सेसैन[19] खंडत सीस ॥ २८ ॥
सिसु १ महिला[20]२दिक सत्रुके, जन कट्टे बिनु जान ॥
भिल्ल१ जवन२ तँहँ दुव २ भये, सज्ज रचन घमसान ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

महा धनुर्द्धर मिच्छ दास १ अरु डल्ल[21] २ भिल्ल दुव २ ॥
कर चउ४टंकैं[22] कमान पिट्ठि द्वि २ कलाप[23] धरैं ध्रुव ॥

---

१ चढकर २ नीसरनी पर ३ महल बनता है तहां ॥ २२ ॥ ४ पोता ५नवीन ६ हाथ में खड्ग लिये गया ॥ २३ ॥ जहां पर अब जन्म दिन का७उत्सव होता है८ हे राजा रामसिंह ९ शीघ्र १०सुन्दर ॥२४॥ ११अपने कुल को मारनेवाले का १२ दर्प ॥२५ ॥ १३ सिरे ड्योढी पर १४ निकालो ॥२६॥ १५ आर्यलोग सब राजा में मिलगये १६ नगर से ॥२७॥ १७ छिपाकर १८ अधिकार १९ बाकी के लोगों के ॥२८॥२०स्त्री आदि ॥२९॥ एक तो म्लेच्छ का चाकर और दूसरा २१ डालिया नामक भील २२चार टंक की कमान हाथ में लिये (कमान की ताकत का एक तोल है. पूर्ण ताकतवाली कमान १८टंक की होती है) २३भाथा

वोध्यं सु द्रुम चल १ वेधि अचल २ गुंजाहु उतारत ॥
सद्द ३ श्रवनअनुसार पृदर तनु सार प्रहारत ॥
अज १ अद्व १/२ दलित १/२ आढक २ असन चित्त प्रसन मल्लन चहैं॥
रहि इत्थ इमर परदेस रचि रित्थ अमर लावत रहैं ॥ ३० ॥
मंडुवपति करि म्लिच्छ अग्घ १ आदर २ जिन्ह अप्पिय ॥
अरिगन पाहुन इंठ घिठ काहु न रन धप्पिये ॥
पहिलैं इनहिं कुपाइ बेर अनुसरि कछु बोली ॥
मन असोक प्रामार बहैं साध्वस विंझोली ॥
मंडुवमहीस जिन्हकरि जवन बहुदिन रक्खि स्वपासँ वलि ॥
दिय समरकंद १ संगहि हुसह बुंदिय दव्वन करन केलि ॥३१॥

दोहा ॥

हसन १ चंदखाँ २ नामहुव, जिनके विदित जिहान ॥
गो त्रिसहँस ३००० दल सोहु गृह, पराखि जिन्हैं अतिमान ।३२।
इहाँ समर १ रक्खे इतर, कति १ ते हनि २ कति १ कढि २॥
इम बुंदिय लिन्नी अधिप, द्विपंअरि केहरि दढि ॥ ३३ ॥
भिल्ल १ जवन २ तँहँ द्वै २ हि भट, हुव नन निमकहराम ॥
निजगृहतैं बुँल्ल्यो नृपहिं, लिडर चंदखाँ १ नाम ॥ ३४ ॥

---

१ पीपल (यहां लक्षणा से पीपल का पत्ता जानना चाहिये) २ हिलते हुए निसाने में पीपल के पत्ते को और ठहरे हुए निसाने में ३ चिरमी को भी उतार देते हैं ४ शब्द सुनने के अनुसार ५ तीर से शरीर को बेधने का प्रहार करते हैं. आधा ६ बकरा और आधा ७ आढक (बत्तीस सेर का नाम द्रोण है और द्रोण के चतुर्थांश अर्थात् ८ सेर को आढक कहते हैं अर्थात् ४ सेर भोजन करते हैं) ८ यहां रह कर पर देश में लूट करके. कभी नहीं खूटे ऐसा ९धन लाते रहते हैं ॥३०॥ १० यहां उन धीठों को युद्ध में किसीने तृप्त नहीं किये. बीझोलियां का पति अशोक नामक प्रमार मन में ११ भय मानता है १२ अपने पास १३ युद्ध करने को ॥ ३१ ॥ १४ अत्यन्त बलवान् ॥३२॥ १५हाथी रूपी शत्रुओं को उस१६सिंह ने खाकर ॥३३॥ १७ बोला ।३४।

बुंदिय जो लिय भाग्यबल, तो झेलहु इक तीर ॥
निहचै हम मरिहैं नतो, बक्कन[1] पिल्लहु बीर ॥ ३५ ॥
बचिजैहो इक १ बानतैं, तो हम आयुध तोरि ॥
व्है फकीर तुमरे रहहिं, जुग २ आश्रित करजोरि ॥ ३६ ॥
गोलीअंतर[2] ताहि गिनि, भूप कुतूहल भाइ ॥
बदिय खान इक १ बान तू, चंद १ हु लेहु चलाइ ॥३७॥

षट्पात्

चाप बिसिख[3] धरि चंद १ करखि कुंडलकिय आक्रमि ॥
लायो एडिय लपन नटी मानहु उलटी नमि ॥
कठिन तानि आकरन[4] तज्यो गोलिय इक १ अंतर ॥
कढि सु सव्य भुज १ कंख २ संधि पर थंभ लग्यो सर ॥
कछु ग्राव[5] सकल[6] जिहिं भिन्न किय सकल[7] भये बिस्मित स्वजन
बचिगो सु पिक्खि चंद१ हु बदिय पिक्खहु अब कमनैतपन ।३८।
जोरि करन इम जंपि संधि धनुगुन द्वितीय २ सर ॥
गन छागिन[8] बामगिरि तक्कि चउ ४ बुरज दुर्गतर ॥
मत्त छगल[9] तिन्हमध्य इक्क १ सतिलक[10] हगआवत ॥
प्रकर लंबि पल्लवन[11] खरो दु २ पयन रहि खावत ॥
तस गोधि[12] तिलक कहि बेध्य[13] तब बिसिख[14] बिसिख[15] दूजोरदयो
अजलेत[16] कुलट महलनअवधि भुवप्रदेस[17] आवतभयो ॥

---

[1] मारने को वीर १ भजो ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ २ बन्दूक की गोली के एक टप्पे पर (यहां तोड़ादार बन्दूक की गोली का टप्पा समझना चाहिये ॥३७॥ ३ बिना चोटीवाले चांदखां नामक यवन ने धनुष को खींचकर कुण्डलाकार किया और एडी के समीप मुख लाया ४ कान तक ५ पत्थर का ६ टुकड़ा ७ सब ॥ ३८ ॥ बुन्दी के बांई ओर के पर्वत पर चौबुरजे के नीचे ८ बकरियों का समूह चरताहुआ देखा. मस्त ९ बकरा १० तिलकवाला. हाथों (अगले पैरों को लंबे करके ११ पत्तों को. उसके १२ ललाट के तिलक को १३ निसाना कह कर. उस १४ यवन ने दूसरा १५ बाण मारा. वह १६ बकरा कुलांचें खाताहुआ १७ भूमि पर

॥ दोहा ॥

इम सु मिच्छ वह मारि अज, अरज करतहुव एह ॥
वचि मोतैं प्रभु भाग्यबल, अब भुग्गहु भुव एह ॥ ४० ॥

॥ सौराष्ट्रीदोहा ॥

इमकहि दोउ २ न आइ, *हेतिनतोरि फकीर१है ॥
प्रभुता नृपकी पाइ, आश्रय लिय जीवित अवधि ॥४१॥
नृप तिन दोउ२न नाम, चोकी धरिरक्खे अचल ॥
इक१ सिवंदिस अभिराम, दूजी२ इत मंडूकदर॥ ४२ ॥
इम बुंदिय अपनाइ, समरकंद१ मारयोसुनत ॥
सुत दाऊद२ रिसाइ, मृगयातजि आयो मरन ॥ ४३ ॥

पट्पात् ॥

इषुधि पिट्ठि१ कटि२ उभय३ प्रगुर्न४ दुव२ बाँजि५ दुँ६पासन ॥
इम दु२ओर दुव२आस सज्ज कर इक१ सरासन ॥
कटि जहरी आसि१ कदर२ बाज१ बहरी२ विहाइ वन ॥
पयचंपत जिम पुच्छ पलटि पन्नग फुलाइ फन ॥
आयो सु रहत त्रि३मुहूर्त अह वैरचहत अतिमद वहंत ॥
दृग कोप महत मानहु दहत कोन जनकं११मारक कहत ॥ ४४ ॥

दोहा ॥

गोपुर जिततित रुद्धं१२ गिनि, सहहयँ१३ व्है गिरिसानु१४ ॥

॥ ३९ ॥ ४० ॥ * शस्त्रों को तोड़कर फकीर होकर १ जीवन पर्यंत॥ ४१ ॥ ४२ ॥ २ शिकार छोड़कर ॥४३॥ पीठ और कमर पर दो ३ भाथे और५घोड़े के६दोनों ओर ४ प्रकृष्ट गुण (विशिष्ट प्रत्यंचा) वाले दो ७ धनुष और हाथ में एक सजा हुआ (चढ़ाहुआ) ८धनुष और कमर में विष के पानीवाली जहरी तरर और छुरेंवाला बाज और बहरी (शिकारी पक्षि विशेष) को वन में छोड़कर पैर से दबेहुए सर्प के समान फण को फुलाताहुआ छः घड़ी९दिन बाकी रहते बड़े कोप से जलताहुआ अत्यन्त मद को १० धारण करताहुआ मेरे ११ पिता को मारनेवाला कौन है ? यह कहताहुआ वह (दाऊद) पलटकर आया ॥४४॥'शहर के दरवाजों को सब ओर से१२बंद जान कर१३घोड़े सहित१४पर्वतके शिखर

उत्तरि पुर ढिगगो सु इम, भिंटन हड्डनभानु ॥ ४५ ॥

षट्पात् ॥

निकट चतुर्भुजनाथ सदन जँहँ अब *शृंगाटक ॥
आवत तँहँ अटक्यो सु छोहउद्धत मदके छक ॥
भट **रोधक चउ४ भंजि लंघि गोल्हाबापी लग ॥
आत कहाई अधिप मरहु अबही न लेहु मग ॥
मंडुव पुकारि लै दल महत पुहवि लेहु पुनि हमहिँ हनि ॥
दाऊद२बदियजत्थसु***जनक१तत्थहिसुत२करतव्यतनि ।४६।
काहू भट इमकहत तुपक झारिय छन्नैं तकि ॥
सिर गोलिय लगि दुसह छोनि हयतैं सु परयो छकि ॥
जँहँ मारे चउ४ जोध घाय खट६ तँहँ लग्गे घट ॥
बलि सिर गोलिय बिद्ध भुव सु परि तदपि उट्ठि भट ॥
असिकढ्ढि आत तोरनअवधि उज्झि परयो दाऊदअ२सु ॥
किय तुपकघात ताकँहँ तरजि पहु निंद्यो बहु आकिख पसु ।४७।
अच्युत चउभुज अग्ग कबर तिन दुहु२न कहावत ॥
समरकंद१ दक्खिन१ सु उदग्ग२ दाऊद२ गोरगत ॥
समरकंद१ सुंदरिय२ नाम निज करन धाम जुत ॥
बिरच्यो बबिनबाई१ जारि निर्वसथ बापी२जुत ॥
इत लहि गई सु पच्छी अवनि राजमहल संसदँ बिरचि ।
पहिलैं सु पट्टबैठो सुपहु महर१तूर२न अभिसेक मचि ॥ ४८ ॥
सत्रह१७ समँ नृपसीस सौधँ जिहिँ हुव अभिसेचनँ ॥

पर होकर ॥ ४५ ॥ जहां अब *चौहट्टा बजार (चौराहा) है, **रोकनेवाले चार वीरों को मारकर जहां***पिता मारागया है तहां पर ही ॥ ४६ ॥ महलों के बाहिर के १ दरवाजे तक २ छोडकर ३ प्राण ॥ ४७ ॥५चतुर्भुज४विष्णु भगवान् के आगे ६ उत्तर दिशा में ७ कबर में गया ८ ग्राम ९ बावड़ी सहित १० सभा ११ उत्सव १२ नगारे बजवाकर ॥ ४८ ॥ सत्रह १३ वर्ष की अवस्था में जिस १४महल में १५ अभिषेक हुआ

तबतैं नृप तँहँ करत पर्व हायन दल[1] पूजन ॥
उम्मेद१९८१५हु अभिसिक्त[2] तत्थ प्रभुके[3] प्रपितामह ॥
भद्रासन तँहँ भजत[4] अप्प इम अब्दगंठि[5] अह ॥
दुरवाइचमर१ तँहँ छत्र२धरि पुर फेरिय निजआन पहु ॥
संग्राम१८७११कट्टि पैठो जु सिल आसि तस ऽहै अर्चन अबहु ॥४९॥

दोहा ॥

जननीजुगर अनुजातजुत२, परिजन१ सचिवउपेत ॥
बुंदीपुर दुबलानतैं, बुल्ले सब समवेत ॥ ५० ॥
नारायन१८७११तैं नरबद१८७१२ सु, जुगर हायन लघुजात ॥
नरबद१८७१२तैं नरसिंह१८७१३लघु, अंतर बरस छ६आत ॥५१॥
नृप१ नरबद२ सोदर स्वसा[11], कन्या मदनकुमारि१८७११ ॥
सो लघुबय नरसिंह१८७१३तैं, पंच५ समा[12] बिच पारि ॥ ५२ ॥
बलि अवसर नृप व्याहिहै, याकौं गढ सुमियान ॥
निरखि भामंता[13] उचित नृप, कमध्वज[14] कल्यान १॥ ५३ ॥
निज इम राज्य जमाइ नृप, स्वजन गये परसीम ॥
जे सब बुल्ले प्रीतिजुत, भासि अरातिन[15] भीम ॥ ५४ ॥
रायमल्ल १ इत रान मृत, सुत नृप हुव संग्राम ॥
पट्ट बग्घ१को जोधपुर, लिय सुत गंग[16] २ ललाम ॥५५॥

वर्ष भर में १दो बार पूजन होता है. उम्मेदसिंह का२अभिषेक वहीं कियागया ३ रावराजा रामसिंह के प्रपितामह. आप सिंहासन पर४बैठते ही५वर्षगांठ के दिन. संग्रामसिंह को काटकर जो खड्ग ६ पत्थर में घुसा उसका अब भी७पूजन होता है ॥४९॥ दोनों८छोटे भाई९शामिल ॥५०॥ १०वर्ष ॥५१॥ ११ बहिन १२ वर्ष ॥ ५२ ॥ १३ बहिनोईपन के उचित १४ राठोड़ ॥ ५३ ॥ १५ शत्रुओं को भयंकर दीखकर ॥ ५४ ॥ १६ गांगा* ॥ ५५ ॥

*सं१५४४में नारायणदास का बूंदी की गद्दी पर बैठना लिखकर। चित्तोड़ पर महाराणा सांगा, जोधपुर पर राव गांगा और आमेर पर राजा भगवंतदास का उसी समय में गद्दी बैठना लिखा सो ठीक नहीं है क्यों कि इन राजाओं के गद्दी बैठने के सम्वतों में जो कुछ अंतर है वह निम्न लिखित लेख से स्पष्ट सिद्ध है और ये संवत् अपने अपने राज्यों के इतिहासों से स्पष्ट कियेहुए हैं जिनमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है

भारमल्ल १ भूपालके, अंगज इत भगवंत २ ॥
पट्ट लहिय आमेरपुर, अवसर स्वजनक अंत ॥ ५६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानवेलाव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रहड्डाधिराजनारायणदास१८७।१ चरित्रे मार्गश्रुतपितृद्वय २ निपातसत्वरप्रतिनिवृत्तदुर्बलानप्रत्यागतविख्यापितस्वयङ्गर्हितस्वपक्षसापराधत्वसाधितपितृ१ पितृव्यौर २ ध्र्वदैहिकमनोनिगूढमन्तव्यबहिर्दर्शितयवनानुकूल्यकृतकप्रेममातृभावमतसद्मागतयवनयोषित्कनारायणदास १८७।१ पितृपट्टपापण १, स्वस्त्रीकृतश्लाघास्निग्धसमरकन्द१ समाहूतबुन्दीगतसूचितस्वाऽसहनस्वामित्वप्रह्वताप्रगुणासंसत्सम्मिलितोपविष्ट - नारायण १८७।१ सपत्नीकसपत्नप्रसादग्रामद्वादशक १२ पुनःप्रापण २, स्वसद्मायातनिजमातुलपुत्राऽग्रम्लेच्छमारणमनोमतप्रका

॥५६॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र हड्डाधिराज नारायणदास के चरित्र में मार्ग में काका और पिता दोनों का माराजाना सुनकर शीघ्र पीछा फिरकर दुबलान पुर में आकर उनकी स्वयं निन्दा करके अपने पक्ष को अपराधवाला विख्यात करके पिता और काका की औध्र्वदैहिक क्रिया करके अपराध को अपने मन में छिपाकर बाहिर यवन से अनुकूलपन दिखाकर घर पर आईहुई यवन स्त्री के साथ बनावटी प्रेम से माता भाव दिखाकर नारायणदास का पिता के पाट को प्राप्त करना; अपनी स्त्री की कीहुई प्रशंसा से स्निग्ध समरकन्द के बुलाने पर बुन्दी में आकर जनाई हुई अपनी असह स्वामिभक्ति और नम्रता के विशेष गुण से सभा में शामिल बैठकर नारायणदास का स्त्री सहित शत्रु की प्रसन्नता से बारह गामों को फिर प्राप्त कर

महाराणा सांगा विक्रमी संवत् १५६५ में चित्तौड़ की गद्दी पर बैठे हैं; रावगांगा सं १५७२ में जोधपुर की गद्दी पर बैठे हैं; आमेर के राजा भगवंतदास संवत् १६३० में जयपुर के राज्यासन पर बैठे हैं इसकारण उपरोक्त तीनों राजाओं की और बुन्दीके राव नारायणदास की गद्दीनशीनी एक ही समय में नहीं बनसकती

शनप्रतीपचालुक्यव्याघ्रदेव १ कार्याऽवधितन्त्रमूकीभावोपदेशन ३, मासदशका १० नन्तरसहायसार्थीकृतसमाहूतव्याघ्रदेवा १ दिविश्वस्तबन्धुसप्तक ७ गोपुरसमीपगूढस्थापितस्वभटचतुःशतक ४०० बुन्दथाऽऽगतनरेन्द्रनारायणदास १८७१ स्वल्पसार्थसंसत्स्वास्थ्यसमुपविष्टपक्षिप्रधनप्रेक्षमाणयवनसमरकन्द १ संहरण ४, दाऊद २ गवेषमाणराजसौधश्रेढीसमारूढगतपृष्ठागतमिमारयिषुबान्धवाधमसङ्ग्रामकन्धरनृपखड्गदक्षिणकुड्यप्रस्तरप्रभेदन ५, परिपन्थिपत्नीपृच्छाप्रतीतमृगव्यगतदाऊद २ दयोज्झितशत्रुशिशुवर्गसमारूढनव्यनिर्मीयमाणहर्म्यमूर्द्धभूमसमाकृष्टनिःश्रेणीकबुन्दीशसमाहूतस्वसुभटसङ्घसन्त्रस्तपरपक्षिजननिष्कासन ६, पुरप्रविष्टगोपुरबहिर्वर्तिशूरशतचतुष्क ४०० नृपाज्ञाप्रवर्तनपुरस्सरम्लेच्छमतमात्रनिःसारणसमयशवरपूर्वयवनबन्धुद्वय २ मुमूर्षण ७, मण्डूपतियवनीकृतदत्तसादरसामन्तभावविरोधविक्षोभितविन्ध्यावलीप्रमारमहाधनुर्द्धरबहुधाविप्लुतपरप्रान्तसमरकन्द १ सहायबुन्दीवास्तव्यमृधमुमूर्षुहस-

ना, अपने घर पर आयेहुए अपने मामा के पुत्र के आगे म्लेच्छ को मारने का विचार प्रकाश करने के विरुद्ध सोलंखी व्याघ्रदेव का कार्य करने की अवधि पर्यन्त सलाह को गुप्त रखने का उपदेश देना, दश मास के पीछे सहाय के लिये बुलायेहुए व्याघ्रदेव आदि विश्वासवाले सात बान्धवों को साथ लेकर शहर के दरवाजे पर अपने चार सौ वीरों को गुप्त रखकर बुन्दी में आयेहुए राजा नारायणदास का अपने अल्प साथ के साथ सभा में स्वस्थता पूर्वक बैठकर पक्षियों के युद्ध को देखनेवाले यवन समरकन्द को मारना, दाऊद को हेरने के लिये राजमहल की सीढी पर चढेहुए पीठ लगेहुए को मारने की इच्छावाले अधम बान्धव संग्रामसिंह के गले को और दक्षिण दीवार के पत्थर को राजा के खड्ग का काटना, शत्रु की स्त्री से पूछने पर दाऊद के शिकार जाने की प्रतीति होने पर दया से शत्रु के बालकों को छोडकर नवीन बनतेहुए महल पर चढकर निसरणी को ऊपर की छत पर खींचकर बुन्दीश का अपने सुभटों के समूह को बुलाकर डरेहुए शत्रु के पक्ष के लोगों को निकालना, पुर में प्रवेश करके शहर के दरवाजे से बाहिरवाले चार सौ वीरों का राजा की आज्ञा प्रवृत्त करने से पहिले म्लेच्छ मत के सम्पूर्ण लोगों को निकालने के समय पहिले के भील

न १ चन्द २ यवनयुग २ स्वैकाऽऽशुगशरव्यताशौभाग्डि १८७१ स्वीकारण ८, ज्ञातनृपकक्षासन्धिनिःसृतच्युतस्वसहायक १ द्वितीयश्मदरविद्धसव्यसानुमच्छिखरचरन्मञ्जागणमध्यस्थवर्करगोधितिलकचन्दस्वधानुष्कताविख्यापन ९, नरेन्द्रत्रोटितशस्त्रकाषायवस्त्रस्वशरणागतयवनयुग २ तन्नामनिर्मितसूचितस्थानस्थापन १०, श्रुतजनकमारणोत्पथागतनिपातितभटचतुष्कमहामनोदावूद २ राज्यस्थानतोरणतनुत्यजन ११, यवनयुग २ निखातपातनसूचनासहितयवनीनिवासितवापीविशिष्टग्रामविशेषविख्यापन १२, राजसौधविहितसमाजसमभिषिक्तसमाहूतस्वजननारायणदास १८७१ यथापूर्वबुंदीराज्यसमाचरण १३, प्रतिवर्षसमाप्तितद्वंश्यतत्सौऽधाभिषेचनसूचना१सहितनृपखड्गप्रभिन्नप्रस्तरपूजनरूढिप्रज्ञापन२पुरःसरनृपा१दिभ्रातृ३भगिनी१चतुष्क ४ ब

यवन के दो बंधुओं का मरनेकी इच्छा करना, सरदूपतिके यवन कियेहुए और आदर सहित उमरावपन दियेहुए विरोध से बीजोलियां के प्रसार को क्षोभ देनेवाले महाधनुर्द्धर बहुत करके शत्रुओं के देश को लूटनेवाले समरकन्दकी सहायता पर बुन्दी में रहनेवाले और युद्ध में मरने की इच्छावाले सहन और चांदखां नाम दो यवनों का अपने एक बाण से निशाना मारने का सुभाणदेव के पुत्र नारायणदास को स्वीकार कराना, राजा की कांख की संधि में से बाण का निकलजाना जानकर अपने सहायक दूसरे बाण से बाएं हाथ के पर्वत के शिखर पर बकरियों के मध्य में चरतेहुए बकरे के ललाट के तिलक में चांदखां का अपनी धनुर्विद्या को प्रसिद्ध करना, शस्त्रों को तोड़कर भगवां वस्त्र पहनकर अपने शरण आयेहुए दोनों यवनों को राजा का उनके नाम से सूचना कियाहुआ स्थान बनाकर उस स्थान में स्थापन करना, पिता का मारना सुन उलटे मार्ग (कपरवाड़े) से आ चार वीरों को मारकर बड़े मनवाले दाऊद का महलों के बाहिर के द्वार पर शरीर छोड़ना, दोनों यवनों को कबर में गाड़ने की सूचना सहित यवन की स्त्री के बसायेहुए बावड़ी सहित ग्राम विशेष के बसाने की प्रसिद्धि करना, राजमहल में कीहुई सभा के लोगों से अभिषेक कियेहुए नारायणदास का अपने लोगों को बुलाकर पहिले के समान बुन्दी का राज्य करना, प्रति वर्ष की समाप्ति (वर्षगांठ) पर उसके वंशवालों की उस महल में अभिषेक

र्षान्तरविवेचन १४, शीषोंदसंग्राम १ कबन्धगङ्ग २कूर्मभगवतसिंह ३ नृपत्रय ३स्वस्वपितृपट्टमापणं १५ त्रयोविंशो२३ मयूखः ॥२३॥

आदितः सप्तत्युत्तरैकशततमः ॥१७० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

नृप वरसिंह१८४१ १ अनेहं लौं, अक्खे दिल्लिय ईस ॥
भये बहुरि अव भाखियत, साह अज्ज[2]भुव सीस ॥ १ ॥

षट्पात् ॥

मुगल अग्ग तैमूर २२ प्रतपि दिल्लिय दिन पन्द्रह १५ ॥
श्रुति सर चउ ससि१४५४साक सदनं[3] पुनि गो सु बिजयसह॥
प्रतिमाजिम[4] आइ पुर साह महमूद २१ रह्यो सिटि ॥
विभव खानइकबाल[5] गंजि जिम कवल[6] लयो गिटि[7] ॥
तनुतजिय साह महमूद२०तव विनु रोधक सठ अभय वहि ॥
इकबालखान स्वच्छंद इम लग्गो रहन अभीष्ट लहि ॥ २ ॥

दोहा ॥

किते सिकंदरनाम करि, कहत साह याकौंहु ॥
बदत किते गद्दी बिनाँ, अधिप होत कहुँ यौंहु ॥ ३ ॥
हाकिम जिम अप्पन हुकम, इम दिल्लिय सुनि याहि ॥
खिजरखान२३ तस सीस खिजि, आयो हनन उमाहि ॥ ४ ॥

षट्पात ॥

होने की सूचना सहित राजा के खड्ग से कटेहुए पत्थर के पूजन की रूढ़ि की सूचना के आगे राजा आदि तीन भाई और एक बहिन चारों के वर्षों के अन्तर का विवेचन करना, शीशोदिया संग्रामसिंह, राठोड़ गांगा, कछवाहा भगवन्तसिंह इन तीनों राजाओं का अपने अपने पिता के पाट पाने का २१ वां मयूख समाप्त हुआ ॥ २३ ॥ और आदि से १७० मयूख हुए ॥

१ समय से २ आर्यावर्त पर ॥ १ ॥ ३ घर (ईरान) ४ मूर्ति के समान ५ इकबालखां ६ ग्रास के समान ७ निगल गया ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

सूबापति सय्यद जु हुतो मुलतान[1] रट्ट हद ॥
सुलैमानसुत सज्जि सजव आयो सु दुरासद ॥
वदत हनन[1] इकबाल कतिक कीलन[2] भज्जन[3] कति ॥
पै दिल्लिय जयपाइ प्रबलहुव खिजर[23] पट्ट पति ॥
बीरत्व[1] दया[2] सहना[3]दि बहु पावत गुन जाके प्रचुर[4] ॥
वह खिजरखान[23]हुव साह इम धरि दिल्लिय भुवभार धुर ॥ ५ ॥

गिर्वाणभाषा ॥ पथ्यावक्त्रमनुष्टुप् ॥

तवारीखफिरस्ता[1]दिम्लेच्छितेभ्यो विनिश्चितम् ॥
तथाऽकबरनामा[2]दियवनानीभ्य उद्धृतम् ॥ ६ ॥
दिल्लीशानां प्रतिग्रन्थमायाति महदन्तरम् ॥
अद्भुतं यन्मतैक्ये[1]ऽपि गीरैक्ये[2]ऽप्युरुधा लिपिः ॥ ७ ॥
प्रभूतमतमासाद्य दिल्लीराड्यवनावली ॥
उद्देशेनोदिताप्याहो ह्यापरालम्बनं क्वचित् ॥ ८ ॥
इंग्रेजैर्निश्चितापीयं संशेते ह्यन्तरान्तरा ॥
सर्वेषां स्वस्ववृत्तान्ते वास्तवी स्याद्विवेचना ॥ ९ ॥
इंग्रेजैर्वृत्तमार्याणामार्यावर्तनिवासिनाम् ॥

मुलतान[1]देश की सीमा में. कितने ही [1] कैद करना कहते हैं और कितने ही भगना कहते हैं [3]सहनशीलता आदि [4]अत्यन्त ॥५॥ मैंने "तवारीख फिरस्ता" आदि म्लेच्छों के ग्रंथों से निश्चय किया है; तैसे ही 'अकबरनामा' आदि जो यवनों की भाषा में ग्रंथ हैं उनसे भी लिया है ॥ ६ ॥ दिल्ली के बादशाहों के हरएक ग्रन्थ में बड़ा अन्तर (फर्क) आता है, यह आश्चर्य है कि एक मत और एक भाषा होने पर भी नाना प्रकार का लेख है ॥ ७ ॥ बहुतों की सम्मति लेकर मैंने निर्णय के साथ दिल्ली के यवन बादशाहों की पीढियों का निर्णय किया है, तो भी आश्चर्य है कि कहीं सन्देह ही है ॥ ८ ॥ अङ्गरेजों ने यवन वंशावली का निश्चय किया है तो भी बीच बीच में सन्देह ही है. अप ने अपने वृत्तान्तों में सब की खोज सत्य होती है ॥ ९ ॥ जैसे—अङ्गरेजों ने आर्यावर्त (भारत वर्ष) के रहनेवाले आर्य लोगों का वृत्तान्त राजाओं की पीढियों के साथ निर्णय करके लिखा है परन्तु उसमें भी बहुत से वृत्तान्त

सराजावलि निर्णीतं याथातथ्यपच्युतं बहु ॥ १० ॥
तथैव यवनोद्देशे सन्देग्धि स्वीकृतौ मनः ॥
आर्यवृत्ताद्दततत्वं स्यात्तत्र सामीप्यतोऽधिकम् ॥ ११ ॥
तथापीङ्गूजलोकैर्या निर्णीता यवनाऽऽवली ॥
तेषां धीमत्त्वमान्यत्वाद्ग्राह्याबहुमता हि सा ॥१२॥
यावनीगी१र्लिवि२ग्रन्थेषूक्तेषु यवनैरपि ॥
दिल्लीभुङ्म्लेच्छवृत्ता१ऽऽख्या२सङ्ख्या३सु न सदृक्क्रमः ।१३।
केचिन्निगडितं १ केचिद्धतं २ केचित्पलायितम् ३ ॥
दिल्लीशं ४ मन्वते केचित्त्रयोविंशं २३ सिकन्दरम् ॥१४॥
नैवाल ब्रुवतेऽन्ये तु समूलं हि सिकन्दरम् ॥
नापीङ्ग्रेजैर्मतोऽत्रासौ महमूदा२१त्सिकन्दरः ॥ १५ ॥
वृत्तान्त १ नाम २ सङ्ख्या३दि यद्यथाभूत्तथास्तु तत् ॥
ख्यापितं मतबाहुल्यं पक्षोऽस्माकं न कुत्रचित् ॥ १६ ॥
बहुभिः खिजरः२३प्रोक्तो महमूदा२१दनन्तरम् ॥

यथार्थ नहीं हैं ॥१०॥ तैसे ही यवनों का क्रम मानने में भी मन को सन्देह हो ता है, तहां पर आर्यों के वृत्तान्तों से अधिक सत्यता होती है; क्योंकि आर्यों का वृत्तान्त यवनों के वृत्तान्त से अधिक समीप है ॥ ११ ॥ तो भी अङ्गरेजों ने जिस यवन वंशावली का निर्णय किया है, अङ्गरेजों की बुद्धिमानी के कार ण वह बहुमान्य है इससे, उसीको मानना चाहिये ॥ १२ ॥ यवनों की भाषा में और यवनों की लिपि में यवनों के बनायेहुए ग्रन्थ हैं तो भी उनमें दिल्ली को भोगनेवाले म्लेच्छों के वृत्तान्त, नाम और संख्या में एक सा क्रम नहीं है ॥ १३॥ सिकन्दर को कितने ही तो कैद हुआ मानते हैं कितने ही मरा मानते हैं, कितने ही भगाहुआ मानते हैं और कितने ही दिल्ली का २३ वां बादशा ह मानते हैं ॥ १४ ॥ और अन्य लोग तो सिकन्दर का होना समूल ही नहीं कहते; अङ्गरेजों ने भी महमूद के पीछे सिकन्दर को नहीं माना है ॥ १५ ॥ इ नके वृत्तांत, नाम और गिनती आदि जो जैसा हुआ है वह वैसा रहै हमने केवल मतभेद कह दिया है. हमारा पक्ष किसीमें नहीं है ॥ १६ ॥ बहुत लोगों ने महमूद के पीछे खिजर को कहा है, तिस कारण से २३ वीं संख्या खिजर

तत्त्रयोविंश२३ता नीता खिजरं२३ न सिकन्दरम्॥१७॥
प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
॥ वैतनामयावनीवृत्तम् ॥

भयेनाँ सिकंदर१किते यों भनैं,हन्यौं२के भज्यो३केगह्यो४के*सनैं॥
भनी जो रहो बात क्योंहूभई,खिजरखान२३÷पैं पातसाही लई॥१८॥
यहै नीति १ईमान २ नेकी३ भरयो, बिनाँ कंत दिल्ली सुनेता बरयो॥
यहै दूरदर्सी सबर३ आनिकैं,रख्यो साहरुख१कों जबर जानिकैं॥१९॥
तनै साहरुख१नाम तैमूर२२को, दंडैं मस्त जाकों गिनैं हूर कों ॥
करैं पातसाही अटक पार जो, हरैं सत्रुहू जंग हुसियार जो॥२०॥
खिजर२३संक ताकी गिनी स्वाँमसौं,न सिक्का चलायो स्वयं नामसौं॥
सदा साहरुख१दास हम यों कहैं,मिलैं नोकरी सोहि करते रहैं॥२१॥

॥ दोहा ॥

नियत साहरुख १ नामको, रुप्पय सिक्का रक्खि ॥
उर१ स्वतन्त्र२ बाहिर१ अनुग२, अप्पहिं तस बस आक्खि॥२२॥
बनत साह दिल्लिय बिभव, पुरजन १ सुभट २ प्रधान ३ ॥
आनैं नन मन ईरखा, जिम किय खिजर२३ सुजान ॥ २३ ॥

॥ युग्मम् ॥

उपदा पुनिपुनि भेजि इहिं, पाइ साहरुख १ प्रीति ॥
मोहितकरि निजजनन मन, रचिय राज्य नयरीति ॥ २४ ॥
कर न प्रजासन लिय कठिन, उत सब करि आबाद ॥
रीति बिमुख सासक रह्यो, मेटत नरन प्रमाद ॥२५॥
बैरिसल्ल १८५।१ बुंदीसके, समय हुतो यह साह ॥
ताहीछत गय छोरि तनु, लहि उदर्क अयं लाह ॥ २६ ॥

की है सिकन्दर की नहीं ॥१७॥*मानते हैं ÷परन्तु॥१८॥१पति २ श्रेष्ठ हुकूमत करनेवाला ३ सन्तोष ॥ १९ ॥ मस्तों को ४ दण्ड देता है ५ कौन ६ सावधान ॥ २० ॥ ७ कचाई से ॥ २१ ॥ ८ सेवक ॥२२॥ २३ ॥ ९नजराना ॥ २४॥ १०शासन ॥ २५ ॥ ११ शरीर १२ आनेवाले समय के १३ शुभ कर्म फल का लाभ लेने को, अर्थात् यह बादशाह नेक था इस कारण स्वर्ग भोगने का लाभ ले

सक हय मुनि चउ ससि१४७७समय, खिजरखान२३वपु खोइ॥
पावत गति *अर्जित प्रजा, रहिय हारि सब रोइ ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

साह मुबारिक २४ खिजर२३सूनु हुव स्वभुव दुक्खहरि ॥
जग जिहिँ मोजुद्दीन २४ कहत दूजी २ अभिधा करि ॥
सुघर यहहु सुलतान भयउ रन परन भयंकर ॥
जनकसोँहु बढि जास बिदित फैल्लिय जस बिस्तर ॥
ससि अंक बेद भू१४९१मान सक स्व सचिव निमकहराम सठ ॥
मारयो जु साह चाहत मुलक होतहि पापिन पाप हठ ॥२८॥

दोहा ॥

पहिल्लिबरस सुभांड १८६।५पहु, छितियभयो धरि छत्र ॥
बरस द्वितीय२ मुबारिक२४ सु, पत्तो अनसु परत्र ॥ २९ ॥
दया१ छमा२ रु वदान्यता३, रनपाटव४ बीरत्व५ ॥
नयपटुता६ इतिमुख गुनन, तक्यो मुबारिक२४ तत्व ॥ ३० ॥
बल१ सूबा२पति जे बिमुख, तिनहु लह्यो तस त्रास ॥
बहु बिमुखहु नृप पहु स्ववस, किन्ने स्वजय प्रकास ॥ ३१ ॥
पगधरि अग्ग पिताहुसोँ, सबन दयो सुख साह ॥
रोइ प्रजा ताके मरत, इम किय सोक अथाह ॥ ३२ ॥

षट्पात् ॥

साह मुबारिक२४ सूनु मीरहुव खानमुहुम्मद२५ ॥
सो इहिँ हनिय समर्थ बप्पमारक मंत्री वद ॥

ने के लिये शरीर छोड़ा ॥ २६ ॥ * जैसा संचय किया था तैसी गति पाने लिये ॥ २७ ॥ दूसरे १ नाम से २ विस्तार ॥२८॥ ३ विना प्राण होकर ४ परलोक गया ॥ २९ ॥ ५ अधिक उदारता ६ युद्ध की चतुरता ७ नीति की चतुरता ८ इत्यादि ॥३०॥ ३१ ॥ ३२॥ ९ पिता के मारनेवाले बुरे मन्त्री को

इक लोदी अफगान इमहि बहलोल१नाम इत ॥
हुवसु साह लाहोर देस पंजाब *बलोदित ॥
सरहिंदमुल्लक याको वतन सो पठान यह इहिंसमय ॥
बलपाइ साह लग्गो वजन अटक१सत्तद्रू२बिच अभय ॥३३॥

दोहा ॥

तजिय मुहम्मदसाह२५ तनु, मही ख तिथि१५०१ सक मान ॥
तनय अलावुद्दीन२६ तस, स्वपुर भयो सुलतान ॥ ३४ ॥
रचिय अलावुद्दीन२६ इहिं, नगर बदाऊँ१ नाम ॥
बरस पंच५ दिल्ली सु बसि, धर्षित गय तिहिं धाम ॥ ३५ ॥

षट्पात् ॥

सक रस नभ तिथि१५०६ समय बीर लोदी बहलोल सु ॥
हंक्किय तजि लाहोर बंटि बीरन अभीष्ट२ बसु ॥
अतिजव दिल्लिय आइ गंजि सय्यद लिय गढ्ढिय ॥
दुमन अलावुद्दीन२६ कढ्ढि खिल सब अधीन किय ॥
निज रचित बदाऊँ१ नवनगर रह्यो सु सय्यद२६ आमरन३ ॥
बहलोल२८साह दिल्लीसबनि कज्ज दुक्कर४ लग्गो करन ।३६।
जोनपुर१हु जिहिं जित्ति किय
उ निजतंत्र फतैकरि ॥
सरित अटक१ सन सीम बंग२ जनपद३लग बिस्तरि ॥
अर्ज्ज१ जवन२ नृप और निखिल पयलाइ नमाये ॥
मालव१ गुज्जर२ मीर द्वै२ हि प्रतिभट९ दरसाये ॥
जे बढिग अग्गहीसौं जवर पातसाह बज्जत प्रबल ॥
उनतैं उदीचिदिस१० जो अवनि तिंहिं लोदी लिय अप्पतेंल११ ।३७।

---

*बल से उदय पाया हुआ; अथवा सेना से प्रकाशित ॥३३॥३४॥
१धमकाया हुआ(डरकर) ॥३५॥ वांछित२धन देकर३मरण पर्यंत ४दुष्कर(कठिनतासे बनै ऐसा)कार्य करने लगा ॥३६॥ अटक नदी५से६बंगाला७देश तक८आर्य ९मुकाबिला करनेवाले(शत्रु)१०उत्तर दिशा की भूमि को११अपने नीचे ली॥३७॥

दोहा ॥

तनु सुभांड१८६।४ नृप जब तजिय, वाहि वरस अफगान ॥
तजिय साह बहलोल२७ तनु, नियति उदर्क[1] निदान ॥ ३८ ॥
बेद बेद तिथि१५४४ सक वरस, दिल्लिय इम उद्दाम[2] ॥
साहभयो बहलोल२७ सुत, निपुन सिकंदर२८ नाम ॥ ३९ ॥
अभिधाकरि[3] महमूद२८ इत, जो अहमदकुल जात[4] ॥
पुर अहमद आबाद१ पहु, गज्जैं धर गुजरात ॥ ४० ॥
बाजबहादुर सुत बिदित, दृढ इत मंडुव[5] द्रंग[6] ॥
नाम मुदाफर जो निडर प्रतपैं स्वबल प्रसंग ॥ ४१ ॥

पादाकुलकम् ॥

धीरसाह बहलोल २७ पट्टधर, सासन दिल्लिय करत सिकंदर२८॥
याहि[6]अनेहँ[6]नृपतिनारायन१८८।१,हन्यौंसमरकंद१सुजिहिँ[7]हायन ४२
मनकिय तबहि बिचार नीतिमत, करहिं पुकार सत्रुजन कुक्कत॥
पृतना[8] जो पिल्लहिँ[9] मंडूपति, समर दुरघाँ नबनैं तब संगति ॥४३॥
यातैं जाइ करहिं आराधन[10],मुरहिँ कदापि मुदाफरको मन ॥
मुरहिंजोन तो तँहँ तिहिं मारौं,निखिल[11] सलेष[12] मैं मारिहु निकारौं॥४४॥
द्वैरहीओर मरन जब दीसैं, जो को रिपुहिं तजैं तब जीसैं ॥
करत सहाय न साह सिकंदर२८, दोउ२न इन्हैं प्रत्युत[13] मन्नैं दर[13]।४५।
इमबिचारि परिकर[15]१अनुजात[16]२न,गदियँ[17] अभीष्ट[18] कबहु थिर गात न
सब तुमबुध[19]अवसरपरहितसह,मदनकुमारि१८७।१बिबाहहुअतिमह[20]
आयुसेस जो तो ध्रुव ऐहौं, जोधन[21] पै न संग लेजैहौं ॥

---

१ आनेवाले समय के भाग्य फल भोगने के कारण ॥ ३८ ॥ २निरंकुश ॥ ३९ ॥ ३ नाम से ४ उत्पन्न ॥ ४० ॥ मण्डू ६ पुर में ॥ ४१ ॥ इसी ६ समय में ७ वर्ष ॥ ४२ ॥ ८ सेना ९ भेजेगा ॥ ४३ ॥१०सेवन११सब को१२ साल ॥ ४४ ॥ १३ उलटा १४ भय ॥ ४५ ॥ १५ परगह १६छोटे भाइयोंको१७कहा१८ शरीर स्थिर नहीं है १९पण्डित. अत्यन्त २० उत्सव से ।४६।परंतु २१ वीरों को

इक्कल१जावन भटन अटक्किय,सादी सत१००तब हठन सत्थलिय।४७।
मंडूपुर इम पत्त महीपति, पठई नम्र साहप्रति बिन्नति ॥
जवनराज संवाहक[2] इकजन, धीसख[3] किय ताकौं कछु दै धन।४८।
ताके कर पहुँची सु अरज तँहँ, कहिय मुदाफर बंचि अनुगकँहँ[4] ॥
बद्हुतासआसय१बल२बिक्रम३, समुचितअनुगकहेतबमनसम।४९।
जबहो करत मुदाफर भोजन, बुल्ल्यो तबहि असस्त्र धराधन[5] ॥
पिहित[6] इक्क१छुँरिका[7] धरि भूपति, मंडूपति ढिग पत्त[8] महामति ॥५०॥
दै उपहार[9] पुरटमुंद्रा[10] दस१०, तिम सक्किय करतव्य उचित तस ॥
भनिय साहक्यौं हमहिं भुल्लिमनि,हमरो समरकंद१डारयो हनि।५१।
बदिय नृपहु पहु हमहु बिपन्नहु[11], मन१बच२काय३रावरे मन्नहु ॥
परैं काम तँहँ मरन पठावहु, लहि जय दुलभ महर इत लावहु।५२।
समरकंद१मम जनक हन्यौं सठ,हन्यौं कुहक[12] काका२हु छंद्म हठ[13]॥
बाहुजकुल[14] यहरीति रही बनि,हनैं जनक तिहिं लंघुहु[15] रहैं हनि॥५३॥
कुल कुपुत्र नहनैं सु कहावत, गतपुरुखन अघ१गारि२गहावत ॥
जाति अंगुलिन ताहि जतावैं,पुनि समकुल[16] न सुता[17] परिनावैं ॥५४॥
ताहि न देत अंग संगहु तिय[18], जंपि वंझ[19] जननीहु जरैं जिय ॥
यातैं समरकंद१मारयो अरि, पुत्र२तँदीय[20] मरयो चहि हठ परि॥५५॥
इच्छित व्है सु करहु हजरत अब, सासनबस[21] हाजरि ह्वै सब ॥
बदियसाह मम जनक हनैंबिनु,बदि तू सुत किम तैंस परनैं बिनु।५६।

साथ नहीं लेजाऊंगा १ सवार ॥ ४७ ॥ २ अंग मर्दन करनेवाले को ३ मन्त्री किया ॥ ४८ ॥ ४सेवक को ॥ ४९ ॥ ५राजा को ६छिपी हुई ७ छुरी ८ गया ॥ ५० ॥ ९ नजराना १० सोने की मुहरें ॥ ५१ ॥ ११ विपद्ग्रस्त ॥ ५२॥ १२ जालसाज ने १३ छल के हठ से १४ क्षत्रियों के कुल में १५ शीघ्र ही मारकर रहते हैं ॥ ५३ ॥ १६ समान कुलवाले १७ पुत्री को नहीं व्याहते हैं ॥ ५४ ॥ १८ स्त्री भी अंग का स्पर्श नहीं करने देती १९ बांझ कहकर २०उसका पुत्र ॥ ५५ ॥ २१आज्ञा के अधीन. बादशाह ने कहा कि मेरे पिता ने तुम्हारे दादा को मारा था सो मेरे पिता को मारे बिना २२ उसका विवाह कैसे हुआ

हनैंबिनु १ रनैंबिनु २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सुपहु कहिय हजरत*असुरस्वामी, इतर सकल प्रभुके+अनुगामी
तुम प्रभु रीझ१खीज२छम तातैं, खल को चिंतहिँ बैर खुदातैं॥५७॥
कोउन दै प्रभु दंड कलंकहु, परनैं इम जुग३व्याह पितापहु ॥
मनप्रसन्न हसि सु सुनि मुदाफर,कहिय तुमहु हमरे जो हितकर५८
आवहु समरकंद१जिम तो अब, सहभोजनकरि हरहु भ्रांति सब ॥
॥ ५९ ॥

जान्यौं नृप गाहक यह जीको, जुत पुनि मरन धर्मपर नीको ॥
हैतो सहमरिबो जसहीको, छिप्रं खलहिँ करि इक्क१ छुरीको ॥६०॥
जातजात ढिग अरि बरजैं तो, भली तबहु असु यहहु भजैंतो ॥

रजैंतो१भजैंतो२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इमगिनि बिरचि बाँहपट ऊँचे, पानिन मोरि परस्पर पूँचे ॥ ६१ ॥
जावत निकट जवन बरज्यो जो, तब गोपितँ नृप हठहु तज्यो जो ॥

रज्योजो१ तज्योजो२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

साहमुदाफर स्वकहि सराह्यो, चित्त समरकंद१हिंसम चाह्यो॥६२॥

दोहा ॥

पुनि लिखाइ बुंदिय पटा, नृपहिँ अप्प जवनेस ॥
सिक्ख मरावत१ द्विरद२ सह, दिय आवन निजदेस ॥ ६३ ॥
बिगरीबत्त सुधारि सब, नृप नारायनदास१८७११ ॥
इम बिलसे पुनि आइकैं, बुंदिय बिभव बिलास ॥ ६४ ॥
सुपहु रचिय निजनामसह, नारायणपुर१ नाम ॥
पुरतैं पच्छिम३ दुव२ रु दल३, गव्यूतिनँ नवग्राम ॥ ६५ ॥

और उसके विवाह हुए विना तू पुत्र कैसे हुआ?॥ ५६ ॥ *प्राणनाथ+सेवक ॥५७॥ ॥५८॥५९॥ १ लेनेवाला २स्तुति योग्य ३साथ मरना ४शीघ्र ही इस दुष्ट को भी एक ही छुरी से मारलूंगा ॥६०॥५ प्राण ६धारण करैं ॥६१॥७छिपाहुआ८अपना कह कर ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ९ भोगे॥६४॥ ढाई १० गव्यूति (पांच कोस) पर॥ ६५ ॥

अध रवास अनुचित यह१८७।२हि, रन दुक्खद तजि राज ॥
गिरिनितंब निवस्यो दुगम, सजि नव सौध समाज ॥ ६६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीज्यंवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल१५५वंश्यानुवंश्यविहितवर्णनाऽवसर०याहार्यबुन्दीभूभुजंगनारायणदास१८७।१चरित्रे मुगलतैमूर २२ प्रतिगमनानन्तरमर्जितम्लेच्छराजमहमूद २१ मरणाऽर्वाक्खिजरखाना २३ दिसिकन्दरा २८ न्तषड् ६ यवनराड्दिल्लीशासनसूचन १, परमतवृत्ताऽल्पज्ञसर्वजनस्वस्वमतवस्तुविवेचनायाथातथ्यविख्यापन २, प्रत्यन्तराजतैमूरिशाहरुख १ सेवकायमानसय्यदखिजरखान २३ तन्नामाङ्कमुद्राप्रवर्तन३, मन्त्रिमारितयवनेन्द्रमुबारिक २४ पुत्रदिल्लीशमुहम्मद २५ स्वसवितृसंहारकधीसखाऽधमध्वंसन ४, निष्कासिततत्तनूजदिलीशाऽलावुद्दीन २६ प्राप्ततत्पट्टजितजोनपुरादिजनपदलोदिपठानबहलोल २७ करतोया १ वङ्गा २ऽन्तरादिल्लीसीमाशासन५, तत्पुत्रसिकं

१नीचे के महलों में रहना २ पर्वत के शिखर पर. नवीन ३ महलों का समूह रचकर रहा ॥ ६६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी की भूमि के पति नारायणदास के चरित्र में मुगल तैमूर के पीछा जाने के अनन्तर बादशाह महमूद के मरने से इधर खिजरखां को आदि लेकर सिकन्दर तक इकट्ठे ही छः बादशाहों का दिल्ली की हुकूमत करने की सूचना करना, दूसरों के मत के वृत्तान्त में थोड़ा ज्ञान होने के कारण सब लोगों की अपने अपने मत से वस्तु के विवेचन में सत्यता न होने की सूचना करना, म्लेच्छराज तैमूर के पुत्र शाहरुख का सेवक होकर सय्यद खिजरखां का उसके नाम का सिक्का जारी रखना, मन्त्री के मारेहुए यवनेन्द्र मुबारिक के पुत्र दिल्लीश मुहम्मद का अपने पिता के मारनेवाले अधम मन्त्री को मारना, उसके पुत्र को निकाल कर दिल्लीश अलाउद्दीन का उसका पाट पाने पर जौनपुर आदि देशों को जीतकर लोदी पठान बहलोल का अटक नदी से बङ्गाल तक दिल्ली की सीमा का शासन करना, उसके पुत्र

दर २८ नरेन्द्रनारायणदास १८७।१ युग्म २ सूचितैक १ स
मास्वस्वस्वामितासमासादन ६, तत्समयदिल्लीपतिप्रत्यनीकपृथ
ग्यवनेन्द्रीभूतपूर्वपरपुरुषमालवमशहू १ पुरराजधानीकम्लेच्छरा
जमुदाफर १ गौर्जराहमदाबादस्थानीयस्कन्धावारकद्वितीय २
यवनराण्महमूद २ यवनेशयुग्म २ भिन्नाभिन्नशासकता
सामर्थ्यसङ्कथन ७, निपातितसपुत्रसमरकन्दसमाक्रान्तस्वरा
ज्यनिश्चितनिखिलार्यशल्यनिष्कासनमशहूप्राप्तपरिकरपिहितैक १
छुरिकबहिरशस्त्रदृश्यमानमुमूर्षुनरेन्द्रनारायणदास १८७।१ भोजनस
मयम्लेच्छराण्मुदाफरसविधसङ्गमन ८, दत्तपक्षापराधव्यावर्त्तको
त्तरसहभोजनाकारकम्लेच्छमारकीभूतनिकटायान्तनृपनिवारणा-
ऽनुकूलसमर्पितप्रतिलेखितपृथ्वीपट्ट १ पीलु २ प्रभृतिसहन्मान्यत
पार्थिवप्रागल्भ्यप्रसन्नमशहूपरिवृढम्लेच्छराजमुदाफरबुन्दीन्द्रप्रतिप्र
स्थापन ९, सद्मसमायातबुन्दीशनिजनामैक १ नवीननिवसथनिर्मा

सिकन्दर और बुन्दी के राजा नारायणदास इन दोनों का जनाहुआ एक सं
म्वत् में अपने अपने स्वामिभाव को ग्रहण करना; उस समय, पहले समय में
जिनके पुरुषा बादशाह थे और जिनकी मालवे में मशहूपुर राजधानी थी ऐसे
दिल्ली पति के शत्रु बादशाह मुदाफर और गुजरात की अहमदाबाद नामक
राजधानी में दूसरे बादशाह महमूद दोनों यवनेशों की जुदी जुदी हुकूमत और
ताकत का कथन, पुत्र सहित समरकन्द को मार, अपने राज्य को ले, सम्पूर्ण
आर्य लोगों के शल्य को निकालने का निश्चय करके मशहूपुर में पहुंच, परग
ह के छाने एक छुरी ले, बाहर से बिना शस्त्र दीखते हुए मरने की इच्छावा
ले नरेन्द्र नारायणदास का भोजन के समय बादशाह मुदाफर के समीप जा
ना, मदन के अपराध को मिटानेवाला उत्तर देकर, साथ भोजन करने को बु
लानेवाले म्लेच्छ को मारने को तय्यार हुए समीप आतेहुए राजा के समीप
आने से अनुकूल होकर भूमि का पट्टा पीछा लिखाकर हाथी आदि देकर ब
डे आदर के साथ राजा की बुद्धिमानी से प्रसन्न मशहूपुर के पति म्लेच्छराज
मुदाफर का बुन्दीन्द्र को पीछा भेजना, घर पर आकर बुन्दीश का अपने ना
म का एक नवीन ग्राम बसाने के साथ तारागढ के पर्वत के शिखर पर महल

णा १ सहिततारादुर्गादिनितम्बप्रणीतप्रासादावस्थान २ सूचनं १० चतुर्विंशो २४ मयूखः ॥ २४ ॥

आदित एकसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७१ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

रायमल्ल इत रान मृत, अक्खिय पुव्व उदंत[1] ॥
कहियत तत्थ बिसेस कछु, जीवन तस परजंत[2] ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

रायमल्लकै कुमर प्रथित[3] हुव त्रय ३ हि बलीपन ॥
जेठो पृथ्वीराज १ अपर २ नामक सुहि उड्डन[4] १ ॥
जिहिं अनेह[5] इकजवन लल्ल[6] अभिधाकरि लंपट[7] ॥
दिल्लीपति दर्पिता सु भेदि[8] पातुरि लायो भट ॥
तिहिं आइ नगर टोडा तबहिं बेढिं[9] बिरचि तोपन बिकल ॥
दै त्रास कढ्ढि चालुक दरित[10] बिजित किन्न गढ अप्पबल ॥२॥
तिहिं उड्डन १ रानसुत बंस चालुक सहायवनि ॥
पहुँचि वेग प्रतिमल्ल[11] हल्ल लल्लसु पठान हनि ॥
करि टोडा जय कलह सु पुनि अप्पिय सोलंखिन ॥
उड्डन बज्जिगो[12] अप्प पाइ अतिजव[13] मतिपंखिन ॥
इम जित्ति सिरोहीपुर अधिप स्वीयस्वसा[14] दुख संहरिय ॥
नृप[15] सुनहु बैरकारन निखिल कुमर कुप्पि जिम यह करिय॥३॥

नाकर निवास करने की सूचना करने का २४ वां मयूख समाप्त हुआ ॥२४॥ और आदि से १७१ मयूख हुए ॥

१ वृत्तान्त पहिले कहा. जीवन २ पर्यन्त ॥ १ ॥ ३ प्रसिद्ध. जिसका दूसरा नाम ४उडना था ५समय ६लल्ला नामक ७व्यभिचारी ८प्यारी ९घेर कर १० डरेहुए सोलंखियों को निकालकर ॥ २ ॥ ११शत्रु. यहां से आप उडना १२प्रसिद्ध हुआ. पक्षियों के समान अत्यन्त १३वेग पाकर १४ अपनी बहिन का दुःख मिटाया १५ हे राजा रामसिंह ॥ ३ ॥

रायमल्ल करि रान सुता[1]संबंध सिरोहिय ॥
वरन देवरा[2] बुल्लि कथित विधि सह विवाहकिय ॥
जत्थ दत्त[3] गुरुजनन मिलित दंपति कर[4]मोचत ॥
हमसु सिरोही दत्त कहिय उड्डन[5] अति उद्धत ॥
बरकहिय मम सु उड्डन १ बदिय[6] लेतो मैं वह छिन्नि लहु[7] ॥
अब मैं दई सु लैहों न इम बिलसि सिरोही नृपबजहु ॥ ४ ॥
यहै सुनत धर्कि[8] असह तोरि अंचल[9] बंधन तब ॥
दुलही लैगय दुलह स्वपुर प्रतिकूल सद्धि सब ॥
उरधरि मंचक[10]अंघ्रि दैनलग्गो सु तियहिं दुख ॥
पिहित[11] बंचि तस पत्र रुट्ठि उड्डन अंतक[12]रुख ॥
निसजाइ छन्न भगिनी निलय[13] सोवत भाम[14] जगाइ स्वक ॥
बुल्ल्यो कटार उरधरि बदहु तव भगिनी१प्रभु२ मैं१भृतक[15]२॥५॥
तुंग[16]महल लै ताहि दंग[17] हेलाहु दिवायउ ॥
अर्ज[18]अवधिलग अम्हे[19] प्रान ईस्वरबल पायउ ॥
राणकुमर करि करुणां[20] अप्पि मोकहँ अबतैं असु[21]१ ॥
सहर२ सिरोही सहित बिदित बखसे नृपता३ बसु[22]४ ॥
इम बहु पराई[23] हेला रु इहिं छोरयो जियत कुमार छम[24] ॥
बहिनिहिं न दुक्ख अब देहु बदि करिजय आयो बिजयक्रम ॥६॥

---

१ पुत्री का सम्बन्ध २ देवड़ा शाखा के चहुवाण को. जहां बडे लोग ३ देते हैं ४ हथलेवा छूटते समय ५ पृथ्वीराज ने कहा कि हमने सिरोही दी. तब दुल्लह ने ६कहा कि वह तो मेरी ही है तिस पर पृथ्वीराज ने कहा कि मैं ७ शीघ्र छीन लेता ॥ ४ ॥ ८ क्रोध कर के ९ गठजोड़ा तोड़ कर १० मांचे का पाया छाती पर रखकर ११ छाने १२ यमराज की भांति. बहिन के १३ घर. अपने १४ बहिनोई को जगाकर. तब बहिन के पति ने कहा कि मैं आपका १५ चाकर हूं ॥ ५ ॥ उसको १६ ऊंचे महल पर ले जाकर १७ नगर में आवाज दिलायी १८ आज पर्यन्त १९ मैंने २० करुणा करके. २१ प्राण २२धन. आवाज २३दिलाकर २४समर्थ कुमार ने ॥६॥

दोहा॥

पृथ्वीराज१ कुमार पहु, उड्डन१ पैर२ अभिधान॥
कुमरपनहिँ बपु हान किय, जिहिँ जिम नियति निदान॥७॥
उड्डन१ सोँ हे⁴ दुव२ अनुज, मध्यम तँहँ जयमल्ल२॥
अरु संग्राम३ कनिष्ठ इम, सोदर रिपुकुल सल्ल॥८॥
मरयो प्रथम१ उड्डन१ कुमर⁵, रायमल्ल पुनि२ रान॥
जयमल्ल१ रु संग्राम२ जँहँ, घुमँडि भिरे घमसान⁶॥९॥
हनि अग्रज जयमल्ल१ ह्वै, सुपहु अनुज संग्राम२॥
प्रतप्यो गढ चित्तोरपर, अँय१ नय२ जय३ उद्दाम॥१०॥

षट्पात्॥

इत नारायन १८७१ अधिप द्रंगबुंदिय दुर्जनदम॥
बेदकथित बिधि निबहि कियउ उपयँम¹¹ चतुष्क४ क्रम॥
तँहँ संग्राम पितृव्य¹² जेष्ठ उड्डनतनुजाई¹³॥
चंपा१८७१ गढ चित्तोर प्रथम१ ह्वहिँ परिनाई॥
तिम राजकुमरि १८७२चंद्रावतिसु मल्लयसुता दूजी२सुमति॥
परनैं बहोरि दुँव¹⁴२ जोधपुर पहु बुंदिय१ चित्तोर२पति॥११॥

दूसरे १नाम से २ भाग्य के ३ कारण॥७॥४ थे॥८॥५ कुमर पृथ्वीराज पहिले मरा ६ * युद्ध॥९॥७ प्रारब्ध ८ नीति और जय में ९ निरंकुश॥१०॥१० शत्रुओं को दण्ड देनेवाला ११ विवाह १२काका संग्रामसिंह (सांगा) ने. बडे भाई पृथ्वीराज की १३ पुत्री को. बुन्दी और चित्तोड़ के पति १४ दोनों राजा जोधपुर व्याहे॥११॥

*यहां कुमर पृथ्वीराज का पहिले मरना और संग्रामसिंह का वडे भाई जयमल्ल को मारकर राजा होना लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि इन तीनों भाइयों की लड़ाई कुमर पृथ्वीराज की विद्यमानता में पहले ही होचुकी थी जिसमें घायल तो हुए परन्तु कोई भाई मारा नहीं गया और कुमर जयमल्ल राव सुल्तान सोलंखी के साले सांखला रत्नसिंह के हाथ से मारागया इस पीछे कुमर पृथ्वीराज़ ने लल्ला पठान को मारकर टोडा विजय किया जिसका सविस्तर वृत्तान्त देखना होवे तो 'वीरविनोद' नामक मेवाड़ के इतिहास और 'टॉड राजस्थान' में देख लेवैं. और लल्ला पठान को मारने के कारण वडी शीघ्रता के साथ टोडे पहुँचे इसीकारण उसी दिन से कुमर पृथ्वीराज का नाम उडना पृथ्वीराज प्रसिद्ध हुआ था॥

दोहा ॥

कन्या वग्घ कवंधकी, भ्रात गंग भूपाल ॥
नाम धना१ खेतू२ निपुन, ब्याही दै स्वनिसाल ॥ १२ ॥
धना१ रान *संग्रामधन, आयो परनि उमाहि ॥
नारायन१८७१खेतू१८७३सु निज, बलि किय तीजी३ब्याहि॥१३॥
क्रम लक्खाउत १ चुंडर२ कै, सुत३ सुत४ कर सुताहु ॥
सरहकुमरि १८७४ चुंडाउति सु, ब्याहिय चोथे४ब्याहु ॥१४॥
जाई गुज्जर२ जास जुग२, नत्थी १ लालाँ२ नाम ॥
भूप भुजिष्या३ करि भवन, रक्खी यह अभिराम ॥ १५ ॥
कन्या गुज्जर चंदकी, अतिबल जानी एह ॥
तस जनक४हिँ करि तुष्ट५ तिम, गिनि अनूढ६ लिय गेह ॥ १६ ॥

षट्पात् ॥

जोध१ नृपति जोधपुर रचिय तससुत हुव बारह १२ ॥
तिनमैं पंचम ५ रतन२ तास सुत रायसिंह३ तह ॥
तनुज रायमल्ल ४ तस तास कल्लयान ५ वीर७तम ॥
गिनि गृहको लघुग्रास८ वढ्यो मन तास दुष्टदम९ ॥
तृनसम न साह दिल्लीस तकि गंजि समर सुमियानगढ ॥
घुम्मैं सु लुट्टि दिसदिसन धन रावनवारी इक्क१ रढ१० ॥ १७ ॥
दिल्लियदल बहुबेर भंजि कल्ल्यान भजाये ॥
मिच्छनमन प्रतिमल्ल११ सल्ल तसगुन न समाये ॥
रारिरसिक रट्ठोर दोरि दिल्लिय दावायत ॥
सुनि बुंदिय जससोर ओर तस चुनि हित आयँत१२ ॥

॥१२॥*युद्ध ही जिसके धन है ॥१३॥महाराणा १.लाखा के पुत्र चूंडा के पोते की बेटी ॥१४॥ २गूजर(शूद्र जाति विशेष)३पासवान ॥१५॥ उसके ४पिता को ५ प्रसन्न करके ६ कुमारी जानकर ॥ १६ ॥ ७ अत्यन्त वीर ८ घर की जीविका छोटी समझ कर ९ दुष्टों को दण्ड देने को १० हठ ॥१७॥ ११ शत्रु १२ बड़ा.

निज जामि[1] मदनकुमरी१८७।१निपुन तास बिरचि संबंध तँहँ ॥
लरतहु सु बुल्लि[2] बुंदिय दई ब्याहि बहिनि कल्ल्यानकँहँ ।१८।
जबहु कल्ल जवनेस कटक[3] वेष्टित[4] गढतैं कढि ॥
परन्यौं बुंदिय पहुँचि बीर साहस दुरूह[5] बढि ॥
नव९दिन सालक[6]निलय दै सु धन कविन लक्खदुव२०००००
सहदुल्लही हठसंग हंकि निजगढ प्रविष्टहुव ॥
दिन्नैं भजाइ पुनि गंजि दल पुनिपुनि लग्गे आइ पँर ॥
बिझुरन गयो न कल्ल्यान बय धकि घुम्मत दिल्लीस धर ।१९।
जिम आयउ जगमाल हम्म १८३।१ भूपति दुहिताहित ॥
कल्लहु तिम इककाल अप्प रमनिय[9] पठाइ इत ॥
घेरापर रचि घात पटकि रतिवाह पाइपथ ॥
सावनतीज ३ निसीथ[10] अप्प आयउ बुंदी अथ ॥
लै तियहिं जाइ सुमियान लहु[11] किंकर नापित[12] द्वेसकरि ॥
खग्गन सु कल्ल तिलतिल खिरचो जिम हड्डी गय संग जरि।२०।

दोहा ॥

सूनु सिकंदर २८ साहको, जेठे १ अनुज जलाल १ ॥
अबके रनहो मुख्य यह, सेनाबिच रिपुसाल ॥ २१ ॥
सजल १ भुम्मि सुमियानढिग, ऊसर निर्जल २ ओर ॥
दिल्लीदल जलबिनु दहैं, घेरारचि दुखघोर ॥२२॥
नापितहो जु नरेसको, संबाहक[13] सविसास ॥
किल्लापति वह कल्ल[14] किय, जानि धर्ममति जास ॥ २३ ॥

अपनी १ बहिन ॥१८॥ उस समय२कल्याणसिंह. यवनों की३सेना से४घिरेहुए गढ से निकल कर५कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसे साहस को बढाकर. साले के६घर में७शत्रु ॥१९॥ राजा हामा की ८ पुत्री के लिये. अपनी९पत्नी को१०आधीरात को११शीघ्र१२नाई के द्वेष से ॥२०॥२१॥२२॥ १३ अङ्ग मर्दन करनेवाला १४ कल्याणसिंह ने ॥ २३ ॥

किल्ला सुहि तिहिँ दैनकहि, महुर छप्पि फरमान ॥
खल नापित भेद्यो[1] खलन, प्रबलन छलन प्रधान ॥ २४ ॥
नापित अधम निसीथ निस, सत्रुन गढ प्रविसाइ ॥
स्वामि कटाइ कृतघ्न सठ, पीछैँ फल लियपाइ ॥२५॥
बंधि कुतुपै[2] बारूदके, जवनन भुंज्यो जोहु ॥
कल्ल महिप हनि मिच्छकुल, सतिय[3] बस्यो दिव[4] सोहु ॥२६॥
जीवनलग निजजामिकोँ[5], नगर बरोदा नाम ॥
नृप नारायनदास १८७।१दिय, आय बृद्धि अभिराम ॥ २७ ॥
सिखरबंध श्रीहरिसदन[6], मदनकुमरि १८७।१जा माँहिँ ॥
बिरचि बरोदा किय बिदित, अबहु नाम तस आँहिँ[7] ॥ २८ ॥
कल्लमरन भावीकथा, बर्तमान अब बत्त ॥
परिनाये बुंदीस पुनि, अनुज उभय २ अनुरत्त ॥ २९ ॥
अखैराज कछवाहकी, कनी[8] समर्थकुमारि १८७।१ ॥
परिनायो भूपति प्रथम, नरबद १८७।२ सबय निहारि ॥ ३० ॥
हरि जद्दव तनया बहुरि, सुगुनुकुमारि १८७।२ सनाम ॥
परिनायउ नरबद १८७।२ सु पहु, इम द्वै २ ही उपयाम[9] ॥ ३१ ॥
कनी स्याम सीसोदकी, बल्लभकुमरि १८७।१ बिबाहि ॥
किय इक१ब्याह नृसिंह१८७।१को,नृप हित महित निबाहि॥३२॥
अधिक नसाँ[10] अहिफेनको[11], नृप नारायनदास १८७।१ ॥
क्रम बढिबढि लग्गो करन, त्वरितैं[12] भयो बस तास ॥ ३३ ॥
अतिअफीम करि अंगतैं, बिनस्यो दर्पक[13] बोध ॥
परिगो चिरहिँ[14] प्रसूतिको[15], रानिनकै इम रोध[16] ॥ ३४ ॥

उस नाई को १ फोड़ कर अपने में मिला लिया ॥ २४ ॥ २५ ॥ बारूद के २ पीपे से बांध कर ३ स्त्री सहित ४ स्वर्ग में ॥२६॥ अपनी ५ बहिन को ॥ २७ ॥ ६ विष्णु भगवान् का मन्दिर ७ है ॥२८॥२९॥ ८ कन्या ॥३०॥ ९ विवाह ॥३१॥ ॥ ३२ ॥ १०मद ११अमल का १२शीघ्र उस नशे के आधीन होगया ॥ ३३ ॥ १३कामदेव का ज्ञान १४बहुत समय तक १५बालक जनने का १६रोक ॥३४॥

संतति न हुव नृसिंह १८७१३ कैं; निज प्रारब्ध निदान ॥
नलयो[1] जिहिँ भूभाग निज, मन संतुष्ट प्रमान ॥ ३५ ॥
निवसथ[2] इक्क नृसिंह १८७१३ नैं, नव्य[3] रचिय निजनाम ॥
पट्टनि प्रांत नृसिंहपुर, अबहु विदित अभिराम ॥ ३६ ॥
नरवद १८७१२ कौं भूभाग नृप, दिय माटुंदा ढंग ॥
ताकै संतति पंच ५ तिम, प्रकटिय[4] बैंसर प्रसंग ॥ ३७ ॥

षट्पात् ॥

भये अर्जुन१८८।१ रु भीम१८८।२ उभय२ कछवाही औरस ॥
कन्या कर्मवती१८८।१रु पूर१८८।३ मुक्कल१८८।४जाहिरजस॥
भगिनी इक१ दुव२भ्रात त्रिक३हि जद्दोनि जन्यौं तिम ॥
नृप पहिलैं नारवद[5] प्रजा[6] पंचक ५ उपज्यो इम ॥
हड्डेस रान संग्राम हित कर्मवति१८८।२ सु ब्याही कुमरि ॥
याकेहि प्रसव बिक्कम१ उदय२कुमर[7] भये लघुकाल करि।३८।

दोहा ॥

कुमर धना१ रट्ठोरिकैं, भोज१ रतन२ दुव२ भ्रात ॥
इनपीछैं विक्कम३ उदय४, जुगल२ कर्मवति२ जात ॥ ३९ ॥
ब्याह्यो भोज१कुमार बलि, मीरौं[9] मेरतनी सु ॥
कुमरपनहि पति मृत्युकरि, बिभुंहरिभक्त[10] बनी सु ॥ ४० ॥
तकि इकत१ संबंध तिक३, चहि बुंदिय१ चित्तोर२ ॥
नारायन१ संग्राम२ नृप, इक१ मन दुरतन दुरओर ॥ ४१ ॥

षट्पात् ॥

अग्रजजा पति[11]१ एँह प्रथित[12] वह२ अनुजसुतापति२ ॥

---

१ भूमि का बंट नहीं लिया ॥ ३५ ॥ २ ग्राम ३ नवीन ॥३६॥४ समय पर ॥३७॥
५ नरवद की ६ सन्तान ७ विक्रमादित्य और उदयसिंह इसके ही हुए ८थोड़े
समय में ॥ ३८ ॥ ३६ ॥ ९ मीरां बाई नामक मेड़तनी को १० व्यापक विष्णु
भगवान् की ॥ ४० ॥ ४१॥ ११बड़े भाई की पुत्री का पति १२नारायणदास

जुगरहि स्वसुर२ जामात२ मन्नि इतरेतर सम्मति ॥
हालीवर१इत१ हड्ड१बहुरि उत२ रान२ कुलीबर२ ॥
सगपन त्रय३ सम्मेल१ तिमहि मनमेल२ अधिकतर ॥
सीसोद१ गिनत बुंदिय२ सदन हड्ड१ तिमहि चित्तोर२ चहि ॥
आह्वानविनुहु आवत उभय२ गदितरीति ऐकत्व१ गहि ॥४२॥
सुरभिसमय संग्राम कबहु बुंदिय आगमकिय ॥
तत्थ विसद मधुतीज३ माहिप दोउ२न महमंडिय ॥
दियउ पातुरिन द्रविन अयुत इक१००००इक१००००इतरेतर॥
आयउ ढकुव अत्थ सभा सकलहि उठ्ठिय अर ॥
उठ्ठयो न भूप पललागि इहाँ तकि ढक्कुव अपमान्न तँहँ ॥
भनि मृतकँ नर्म किय रानभट तिंहिँ दब्बिय खिजि रान तँहँ ॥४३॥
मानतँहँ१ रानतँहँ२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

चेतत पुनि निजकवि चविय; नृप ढक्कुव कटु नर्म॥
भ्रातसमहु अरितम भनिय, बनिय अप्प जयबर्म ॥ ४४ ॥
नारायन१८७१ अक्खिय निजहु, भ्रात नजानत भाव ॥
विनासमय बल बाहुजन, दुरघोरहत खय दाव ॥ ४५ ॥

षट्पात् ॥

और नारायणदास के छोटे भाई की पुत्री का पति प्रसिद्ध संग्रामसिंह,इस प्रकार दोनों ससुरा और १ जमाई २ परस्पर ३ साली का पति तो हाडा नारायणदास और उधर ४ बडसासू (स्त्री की बडीबहिन) का पति महाराणा सांगा ५अत्यन्त. बुन्दी को अपना ६घर जानते हैं. विना ७बुलाये ही ८कही हुई रीति से ९ एकता ग्रहण करके ॥४२॥ १० वसन्त ऋतु में ११ शुक्लपक्ष १२ चैत्र मास १३ उत्सव १४ धन१५परस्पर१६मेवाड़ के उमराव कोठारिया के पति पूरबिया चहुवाण का नाम है१७यहां१८शीघ्र१९राजा नारायणदास क्या२०मरगया? यह कह कर२१हँसी की॥४३॥२२कहा २३राजा को २४ भाई के समान है तो भी २५ अत्यन्त शत्रु के समान कहा. आप २६ विजय का कवच पहननेवाला बना ॥ ४४ ॥ २७क्षत्रियों का २८अग्नि ॥ ४५ ॥

रठ दरकुच सोहुमुनि बढ़िय जो तुन वेसंदेर ॥
साहिनसभा पैट सवन अंग किनकरहु भाग्य घेर ॥
रान जानि इम निम्न सुंदि उट्टि ज उच्कृसुख ॥
सिबिर दई तिहिं सिक्ख रक्खिय भट संग प्रबलरुख ॥
सोहा रच्यो जु बिल्हन सुकवि काव्य बिरुद पुनि श्रवनकिय॥
ताकँहँ प्रसन्न दुर्वास तब हुव रुसासनँइकलक्ख१००००दिय॥४६॥
लसलसुन रालोर धीर दुर्वास द्युतिधर ॥
रानाविनकलप रचिय हठु चतुर्मत लोहठहर ॥
दिय सुनाइ गोरिपि४ बिन सोहु कविता सोसोदहिं ॥
सुनर सासिन लक्खकुल१००००० रानदिय मनि प्रमोदहिं ॥
लग्गो न लेन जिन्ह धीर जब पिक्खि बिमर्न चित्तोरपति ॥
संकुनि निहोरि भाखत सुपहु सन्निय लिहि उदारमति ॥४७॥
तदनंतर चित्तोर नृपहु राम राह नारायन १८७१२ ॥
मिलो उभय १ महिपाल करन सिच्छन कारायन ॥
सद्गुरु१पुन संपेद मिथहि स्वसुर २ क जामाई ३ ॥
रानी हैम रह्मोपि महुरें माहिलानि पठाई ॥
द्विनह्नप गान संदेह सदन अनुरागन धित सुप हुव २ ॥
दुर्वीस तत्थ चहिकैयम भँवि पठन हिंदुलुहुव ॥४८॥

दोहा ॥

पुनिबैठ्ठा कुछारपति, नद ठकु नहुवान ॥

---

१ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible] के राबत [illegible] के ५ [illegible] ॥ ४३ ॥ और [illegible] लालोर वाला [illegible] दुर्वा के ६ [illegible] ७ [illegible] में ८ [illegible] ॥ ४६ ॥ [illegible] को ९ कैद करने के लिये १० [illegible] की बहिन का पति) [illegible] ११ [illegible] १२ [illegible] १३ [illegible] १४ [illegible] १५ [illegible] १६ [illegible] १७ [illegible] १८ [illegible] ॥ ४८ ॥ १९ [illegible]

चिंततभो नृपकोवचन, करि रस विरस कथान[1] ॥ ४९ ॥
तबसु बहुकरी[2] केर तृन, मंगि फरासन मूढ ॥
पिहित गयो नृपपिट्ठिपैं, गदि अग्गिन[3] कहुँ गूढ ॥ ५० ॥
प्रभुँ[4] मामक कुल परपुरुख, उहाँ भानुअभिधान ॥
बरज्यो सठ ढक्कू बहुत, सो न रुक्यो अवसान ॥ ५१ ॥
तब रानहु ताकौं तरजि, उट्ठयो अटकन[6] अप्प ॥
जोलौं तिहिं ढिगजातही, दिय सिर तृन अतिदप्प[7] ॥ ५२ ॥

॥ षट्पात् ॥

बरजनके सुनि वचन हड्ड मन सावधानहुव ॥
पैं करि कपट प्रमाद अधिक उंघिय सुभांड १८६१ सुव ॥
बैठि पिट्ठि इहिंबीच सत्रु तृनकुंच[8] धरयो सिर ॥
बुल्ल्यो को यह वन्हिं[9] कांडं इक्क १ हु जरैं न किरं[11] ॥
सैंचेहिहगन[12] ढिग तुल्लिसन उलटेकरदिय झारि असि ॥
वसु ८ खंड कट्टि चहुवानवपु धारा कछु गय थंभ धसि ॥५३॥

दोहा ॥

अँचे दुव २ पक्खिन असिनें[12], रान पिधान[13] कराइ ॥
कहिय अँनय[14] ढक्कहिकिय, पाप फलहु लिय पाइ ॥ ५४ ॥
वन्यों सभा रस १ में विरस२, परि हित१माँहिं प्रतीपैं[15] २ ॥
पिसुन[16] नैर कुट्टारपति[17], मारचो इम सु महीपैं[18] ॥ ५५ ॥

ठिकाने का पति १ कथा ॥ ४९ ॥ २ बुहारी (मार्जनी) के तृण. इस राजा में छिपाहुआ ३अग्नि कहते हैं सो अग्नि होवेगा तो ये तृण जल जावेंगे यह कहकर छिपकर पीठ पर गया ॥ ५० ॥ ४ हे प्रभु रामसिंह! मेरे कुल का ॥ अन्त में ॥ ५१ ॥ ६ रोकने के लिये ७ अत्यन्त घमण्ड से ॥ ५२ ॥ ८ तृणों का कूंचा (संग्रह). यह कैसा ९ अग्नि है कि जिससे निश्चय ही १० एक तृण भी नहीं जलता ११ किल (निश्चय ही) ॥५३॥ दोनों पक्षवालों ने १२ तलवारें खेंचीं. महाराणा ने १३ म्यान करा दीं १४ अनीति ॥ ५४ ॥ १५ उलटा (विरोध) १६ चुगल १७ कोटारिया नगर का पति. बुन्दी के १८ राजा नारायणदास ने ॥जैसे

परि ठक्कुरूंकी[1] पिंडुरिन, खग्ग अष्ठ ८ अरिखंड ॥
किय धरके जुग २ द्वै २ करन, चउ ४ चरनन इम चंड ॥ ५६ ॥
आवनलग्गो रुठ्ठि यह, नारायन १८७१ अवनीस ॥
हत्थजोरि रक्ख्यो हठन, रान समावत[2]रीस ॥ ५७ ॥

॥ षट्पात् ॥

नृपहिं रक्खि बहुदिनन करत मृगया[3]दिक क्रीड़न ॥
विविध गोठि व्यंजनन असनसह होत सई[4]ड़न ॥
विजन[5] भूप दुव २ बैठि मंत्र इकदिन इम मंडिय ॥
पच्छिम १ दक्खिन २ पहुन[6] खलन अज्जन[7] मदखंडिय ॥
वदि तृनसमान दिल्लीसवल जुग २ हि साह लग्गे वजन ॥
प्रतिअब्द[8] लेत लक्खनप्रमित[9] धरहिं भेट कवलौं सु धन ॥५८॥
इक्के वीर अनेक रहत जिनके जयरक्खन ॥
प्रतिहाय[10]न प्रतिपानि[11] लेत वेतन[12] बहु लक्खन ॥
सत१००सर[13] चउ४चउ४सरधि[14] धनुख त्रय३त्रय३जे धारत ॥
त्रय ३ गोलिन अंतरहु वेधि परबलहिं[15] बिडारत ॥
कैसो उपाय रोकन करहिं जाइ जवन परिभूत[16] जिम ॥
अज्जन[17] प्रजाहु लुट्टत अटत[18] पत्थिनरन[19] पारथ[20] प्रतिम[21] ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

हद्दकहिय बुल्लहु हमहिं, सासन अलस सहाय ॥

---

१ ऊकड़ू (दोनों पगों के बल बैठने को मरुभाषा में ऊकड़ू बैठना कहते हैं) बैठे हुए की पींडियों पर पड़ कर ॥ ५६ ॥ २ क्रोध को शांत करता हुआ ॥ ५७ ॥ ३ शिकार आदि ४ स्तुति सहित ५ एकान्त में ६ राजाओं के ७ आर्यों के ८ सालाना ९ लाखों के प्रमाण से ॥ ५८ ॥ १० सालाना ११ एक एक भुज प्रति अर्थात् दोनों भुजों के दो लाख रुपये १२ तनख्वाह पाते हैं. सौ सौ १३ तीरों के चार चार १४ भाथे और तीन तीन धनुष धारण करते हैं १५ शत्रुओं की सेना को बिखेर देते हैं १६ अनादर के साथ १७ आर्य प्रजा को लूटते १८ फिरते हैं १९ पार्थों के युद्ध में २० अर्जुन के २१ सदृश हैं ॥ ५९ ॥

फिर करिहैं कछुरीति करि, इक्के जग्गैन उपाय ॥ ६० ॥
दोउ२न किय यह मंत हठ, रहि कछुदिन अनुरत्त ॥
करि सगोल ढक्कू कदैन, पहुँ भुंदिय इम पत्त ॥ ६१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रचतुर्बाहु १ मद्वीज्यवर्णानवीजहड्डाधिराजास्थिपाल १५५वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरविख्यापनीयहड्डकुलकोटीरबुन्दीवसुधेश्वरनारायणदास१८७१ चरित्रे संहृतलल्लनामयवनप्रवीरराणारायमल्लज्येष्ठकुमारोड्डयनपृथ्वीराजटोडापुरपुनश्चालुक्यकुलायत्तीकरणा १, विजितशिवपुरीनरेशनिजजामिजानिसोचितदत्तभगिनीकष्टविद्यमानवप्तृकप्राप्तयौवनकुमारपृथ्वीराजतनुत्यजन २, निपातितनिजाग्रजराणासंग्रामसिंहपितृपट्टप्रापणा ३, परिणीतशैर्यादी १ प्रभृतिपत्नीचतुष्क ४ स्वीकृतैक १ भुजिष्यनरेन्द्रनारायणदास १८७१ स्वभगिनीमदनकुमारी १८७१ तिरस्कृतदिल्लीशसमाक्रान्तसुमियाणादुर्गराष्ट्रकूटराजकल्याणकरग्रहणा ४, श्वाशुर्यनिवे

१ निश्चय ही २ विजय करने का ॥ ६० ॥ ३ प्रीति सहित. अपने गोअवाले ढक्कू का ४ नाश करके ५ राजा ६ पहुँचा ॥ ६१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चार हाथवाले (चहुवाण) के वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में प्रसिद्ध करने योग्य हाडा कुल के मुकुट बुन्दीन्द्र भूपति नारायणदास के चरित्र में लल्ल नामक यवन का नाश करके बडे वीर राणा रायमल्ल के ज्येष्ठ कुमर उडना पृथ्वीराज का टोडापुर को फिर सोलंखियों के कुल के आधीन करना, सिरोही के राजा को जीतकर अपनी बहिन के पति के दियेहुए दुःख से बहिन को छुडाकर पिता की विद्यमानता में यौवन प्राप्त होकर कुमर पृथ्वीराज का शरीर छोडना बडे भाई को मारकर राणा संग्रामसिंह का पिता का पाट प्राप्त करना, सी.दनी आदि चार स्त्रियों से विवाह करके एक पासवान करके नरेन्द्र नारायणदास का अपनी बहिन मदनकुमारी का दिल्ली के पादशाह का अनादर करनेवाले सुमियाणा गढ को दबानेवाले राठोडराज कल्याण से विवाह करना, श्वसुराल में दो लाख रुपये लाग में देकर हठ के साथ स्त्री सहित घर में आ

शनवितीर्णद्रम्मलक्षद्वय २००००० समसमसपत्नीकसभागतपुनः पुनःपराजितयवनानीकाविप्लावितादिल्लीशकर्मध्वजनरेशकल्याणप्रतीपीभूतस्वसंवाहकनापितदुर्गप्रवेशितपरपृतनाप्रधनसहगामिनीसहितपुङ्खलप्रहाण ५, बुन्दीशनिजानुजनरबद १८७।१ कौर्मी १ यादवी २ दयिताद्वय २ नृसिंह १८७।३ शैषोदी १ पत्न्येक १ परिणायन ६, वर्द्धितातिमात्रसमभ्यस्ताऽहिफेनवशीभूततन्मदमत्तमनस्कनरेन्द्रसन्ततिसंरोधचिरसम्भवन ७, विधिवशालब्धसन्तानानङ्गीकृतवसुधाविभागनृपाऽनुजनृसिंह १८७।३ निजनाम्नऽन्यनिवसथनिर्माण ८, भूभागप्राप्तमाटुन्दाख्यनगरनरबद १८७।२ दयिताद्वय २ सञ्जातसुतैक १ सहिताऽर्जुना १८८।१ दिसुतचतुष्क ४ समुद्भवन ९, नरेन्द्रनारायणदास १८७।१ स्वानुजनरबद १८७।२ सुताकर्मवती १८८।१ चित्रकूटेशराणासंग्रामसिंहपरिणायन १०, राणौरसधानेय भोज १ रत्न २ कार्मवतेयविक्रमो १ दय २ कुमारचतुष्क ४ समुद्भवन ११, जीवज्जनकज्येष्ठकुमार भोज १ मरणानन्तरतत्पत्नी

कर यवन सेना को बारम्बार जीतकर दिल्ली के बादशाह के उपद्रव करनेवाले राठोड़ नरेश कल्याण का शत्रु बने हुए अपने शरीर के मालिस करनेवाले नाई से गढ में प्रवेश कराई हुई शत्रु सेना के साथ युद्ध करके अपने साथ गमन करनेवाली स्त्री सहित शरीर छोड़ना, बुन्दीश का अपने छोटे भाई नरबद का कछवाही और यादवी दो स्त्रियों से और नृसिंह का एक स्त्री शीषोदिनी से विवाह करना, अत्यन्त मात्रा बढजाने के अभ्यास से अमल के वशीभूत उसके नशे में मस्त मनवाले राजा के सन्तान का बहुत समय तक रुकना, दैव वश से सन्तान न पाकर, पृथ्वी के विभाग को न लेकर राजा के छोटे भाई नृसिंह का अपने नाम से नवीन ग्राम बसाना, पृथ्वी के बंट में माटूंदा नामक नगर पानेवाले नरबद के दो स्त्रियों से एक पुत्री के साथ अर्जुन आदि चार पुत्रों का होना, नरेन्द्र नारायणदास का अपने छोटे भाई नरबद की पुत्री कर्मवती को चित्तोड़ के पति राणा संग्रामसिंह को व्याहना, राणा के धना के उदर से भोज और रत्नसिंह तथा कर्मवती के उदर से विक्रमादित्य और उदयसिंह इन चार औरस कुमारों का जन्म होना, पिता के जीवित समय में ही बड़े कुमार भोज के मरे पीछे उसकी स्त्री राठोड़ी मीरां का जीवन पर्यन्त

राष्ट्रकूटीमीराँयावज्जीवहरिभक्तिसमासादन १२, नरेन्द्रनारायणदास १ राणासंग्रामसिंह २ सम्बन्धत्रय ३ स्निग्धस्वान्तैक्य १ परस्परप्रीतिप्रकटन १३, सुरभिसमयबुन्दीसमागतसभासमुपविष्टदत्तद्वि १ पक्षपण्यस्त्रीगणार्थद्रव्यायुत१०००० राणास्वकीयभटढक्कूकृतबुन्दीशाहिफेनप्रामाद्यदुर्वचनवारण १४, श्रुतस्वगर्हणसावधानसूचिताकाण्डक्षात्रसत्वकालाग्निगोपनौचित्यबुंदीशविल्हणार्थमुद्रालक्ष १००००० शासनोपवसथद्वय २ विश्राणन १५, प्रसभप्रतारणाप्टतनाप्रपातप्रेषितस्तब्धताप्रागल्भ्यकुत्सकृतावमतबुन्दीशवलवैश्वानरत्वस्वशठभटढक्कूकराणाद्वितीय २ दिनावसरबुन्दीशकविधीरार्थसमुद्रालक्षयुग २००००० शासनयुग२ सप्रसभसमर्पण १६, स्नेहोत्कर्षसोत्कण्ठचित्रकूटप्रयातप्राप्तज्येष्ठश्वश्रूप्रेष्यसमज्यासङ्गतविभक्तार्द्धभद्रविष्टरोपविष्टसौभाण्डकृपाणप्रत्यक्प्रहारस्वमूर्द्धखटक्षेपकढक्कूचाहुवाणवपुरष्ट ८ धाकर्तन १७, प्रव्हताप्रतिनिवर्त्तितकियत्कालकृतनिवाससमर्थितराणारहस्यस्वीकृतसमयसहाय

ईश्वर भक्ति ग्रहण करना, राजा नारायणदास और राणा संग्रामसिंह का तीन सम्बन्धों के कारण स्निग्ध मन से एकता करके परस्पर प्रीति प्रकट करना, वसन्त समय में बुन्दी में आ, सभा में बैठकर दोनों पक्ष की ओर से वेश्याओं को दश दश हजार रुपये देने पर राणा का अपने उमराव ढक्कू के किये हुए बुन्दीश की अमल के नशे की असावधानी के दुर्वचनों को मिटाना, अपनी निन्दा सुनकर सावधान हुए विना समय क्षत्रियों के पराक्रम रूपी कालाग्नि को छिपाना उचित सूचित करके बुन्दीश का विल्हणा नामक चारण के अर्थ एक लाख रुपये और दो गाम उदक देना, घमंड की प्रबलता से बुन्दीश के बलरूपी अग्नि की निन्दा करके अवज्ञा करनेवाले अपने उमराव मूर्ख ढक्कू को बलत्कार से ताड़ना करके डेरे भेजकर राणा का दूसरे दिन बुन्दीश के कवि धीर नामक चारण के अर्थ दो लाख रुपयों के साथ दो उदक ग्राम हठ पूर्वक देना, बड़े स्नेह से उत्कण्ठा सहित चित्तोड़ में जाकर बड़सासू की भेजी हुई महिमानी पाकर सभा में आयेहुए आधे आसन पर बैठेहुए सुभाण्ड के पुत्र का तलवार के उलटे प्रहार से अपने मस्तक पर तृण रखने वाले ढक्कू चहुवाण के शरीर के आठ टुकड़े करना, नम्रता से निवर्तन हुए

नरनाथनारायणदास १८७१ बुन्द्यागमनं १८[illegible] पञ्चविंशो २५ मयूखः ॥ १२५ ॥

आदितो द्विसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पैसे[1] नव ९ मित लेत पहु, फलरोधक[2] अहिफेन[3] ॥
जाकेजय निकस्यो बिजित, स्मॅर[4] पुरतैं सहसेन ॥ १ ॥
बाढ जदपि नृप कायबल[5], अतिबल तदपि[6] अफीम ॥
रक्ख्यो श्रम आहारपैं, स्मर नट्ठो[7] तजि सीम ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

अच्छोर्टन[8] दिनइक्क १ हड्डनृप रमि इक्कल १ हय ॥
आवत पुर अति अमल मिचेनैंनन प्रमादमय ॥
इक्क धूंसरितिय[9] अँध्व[10] कछुक गिनिसुप्त नेर्मकिय[11] ॥
कर तस आर्यस[12] कुसँ[13] सु लोलहय[14] फैंकि छिन्निलिय ॥
गहि द्रुत नमाइ ताकेहि गल करि डारी नृप कुंडली ॥
गुरु निगॅड़[15] तुल्य भॅर[16] बस सु ग्रह चिर बिश्रॅमिबिश्रमि[17] चली ॥

दोहा ॥

कंठीरॅव[18] गहि बसकरन १, सिंधुर[19] रोकन २ सीम ॥

कुछ समय निवास करके राणा की सलाह का समर्थन करके समय पर सहाय करने का स्वीकार करके राजा नारायणदास के बुन्दी आने का २५ वां मयूख समाप्त हुआ ॥ २५ ॥ और आदि से १७२ मयूख हुए ॥

१ नौ पैसे भर २ संतान रूपी फल को रोकनेवाला ३अमल ४कामदेव, शरीर रूपी पुर से सेना सहित निकलगया ॥ १ ॥ ५ शरीर का बल ६ तो भी ७ भ गा ॥ २ ॥ ८ शिकार ९ धूसर जाति की स्त्री ने १० मार्ग में ११ हँसी की १२ लोहे की १३ कुस(भूमि आदि खोदने का शस्त्र)१४चपल घोड़े को १५वडे बंध न (तोख) के बराबर के१६भार से१७बहुत ठहर ठहर कर; अथवा बहुत श्रम से विश्राम करके ॥ ३ ॥ १८ सिंह को १९हाथी को

पैसे इक१के प्रमित[1] अमल रानी पति आन्यों ॥
दर्वीकर[2] गर[3] द्वि२ गुन जोस[4] वढतो मद जान्यों ॥
सरंधि[5] इक१ करि सून्य तीर अन्यल[6] बंधि तस ॥
कौलि[7] सु उरग[8] कलाप लग्यो हय चढन गतालस[9] ॥
आयुधिक[10]१अनुगं२जोलों आखिल जिमतिम पहुँचि चमूह जुरि ॥
सूकर लिवाइ छुरि इम सुपहु घरआयउ गैर[11] अमल घुरि ॥१४॥
सिक्ख अप्पि निज सवन अप्प गो जब अवरोधन[12] ॥
हो वासक[13] रहोरिकोहि मन्नि सु अनर्थमन[14] ॥
अमलसमय अतिवार त्रासित[15] सब सुरन[16] मनावत ॥
तब पिक्ख्यो वह तोर अजिर[17] घुम्मत नृप आवत ॥
इहिंकहिय कोन मोविनु अभय अज्ज प्रभुहिं जिहिं दिय[18] अमल
नृपकहिय मिल इक मिलि निपुन द्वि२गुन दयो तुमदेत दल ।१५।
रुट्ठि कहिय रहोरि मोहि भुल्लि रु को मित्र सु ॥
सरंधि[19] खुल्लि तब सर्प कस्यो कुट्टिम[20] चल चित्रसु ॥
लागिभय रानी लखत अमलतजिवे ढिगआन्यों ॥
हसि ससोंह[21] नृपकहत पुनिसु गर अभय प्रमान्यों ॥
तिहिं अमल[22] रत्ति[23] आधान[24] तिहिं धरिय भावि[25] रविमल्ल १८८।१ धन[26] ॥
पुनिहुव सु जोग अवसर प्रसव[27] जगि प्रमोद जनपद[28] जनन।१६।

दोहा ॥

विप्रन धन लक्खन वितरि[29], मह[30] किय अतुल महीप ॥

---

१ प्रमाण २ सर्प का ३ विप ४ नशा. एक ५भाथा खाली करके ६ कैद करके ७ सर्प को ८ भाथे में ९ आलस रहित होकर १० सेवक ११ विप के अमल से छुट कर ॥ १४ ॥ १२ जनाने में १३ वारी १४ उल्लंघन १५ डरतीहुई. सब १६देवताओं को मना रही थी १७ चौक में. तुम १८आधा देती थीं ॥१५॥ १९ भाथे से खोलकर २० भीत पर २१ सौगन सहित. उस २२नशे से २३रात्रि में २४ गर्भ २५ आगे होनेवाले रविमल्ल का २६ स्त्री ने २७जन्म २८ देश के मनुष्यों को ॥ १६ ॥ २९ देकर ३० उत्सव किया

बसु८ गुन घट्टत *अफीम विधि, दये कुमर कुलदीप ॥ १७ ॥

षट्पात् ॥

मुख्यकुमररविमल्ल १८८।१ अनुजहुव रायमल्ल १८८।२ इम ॥
लघु तासन[1] कल्लयान १८८।३ त्रिक[2] इहि रट्ठोरि प्रभव[2] तिम ॥
भुजिष्या[3] जु इक १ भनिय सहँस १ सत्तल २ द्वै २ तससुव ॥
पुत्र द्विरविध इम पंच ५ हङ्ङ नृपकै प्रवीर हुव ॥
पट्टप कुमार तिनमैं प्रबल सिसुहि बेध्य सद्दँ सरन ॥
पहिलो[4]कि पत्थ[5]अवको[4]कि पुनि पित्थ[6]कुमर यह धन्विपन[7]।१८।
अति सिसुहो जब एह कुमर तब कबहु रुदित[8] किय ॥
रानी मंजनकरत[9] दासिजन स्तन[10] काहूदिय ॥
अटकत रोदन आइ पुच्छि दासी सु प्रतारिय ॥
प्रसू[11] भ्रामि[12] सिसु पयन सु पय रुधिरांत[13] निसारिय ॥
अहिस्याम[14] गरल[15]मद जात[16] यह रुचिहु स्याम इम हास्यरहि ॥
माता लडाइ उरलाइ मम कारो[17] अतिगर[18] नाग[19] कहि ॥ १९ ॥
इत लोदी अफगान साह दिल्लीस सिकंदर १८ ॥
सक गुन हय तिथि १५७३ समय कियउ तिहिँ हान कलेवर[20] ॥
अंगज इब्राहीम २९।१ बडो पट्टप हुव बय बल ॥
दुख निजभ्रातन दैन छिप्र[21] लग्गो सु भरयो छल ॥
जानैँ जलाल २ अप्पन अनुज कालित[22]करि मारयो कुगति ॥

---

*अमल के आठ गुना घटने पर अर्थात् नौ पैसे भर लेता था सो एक पैसे भर रहने पर ॥ १७ ॥ १ उससे छोटा २ उत्पन्न ३ पासवान ४ मानों पहिले समय का ५ अर्जुन ६ पृथ्वीराज ७ धनुषविद्या में ॥ १८ ॥ ८ रोया ९ स्नान करती थी १० स्तन से दूध पिला दिया ११माता ने. बालक के पैर पकड़कर १२ भ्रमाया सो वह दूध १३रुधिर है अन्त में जिसके वहां तक निकाल दिया१४काले सर्प के १५जहर के मद से१६जन्मा था इस कारण यह बालक भी श्यामरंगवाला हुआ यह हास्य की बात है. मेरा १७काला १८ अत्यन्त जहरीला १९सर्प कहकर ॥१९॥२०शरीर का २१शीघ्र २२कैद करके ॥२०॥

अरु भ्रात अलाउद्दीन३इक गो कावल भजि लखि दुगति॥२०॥

॥ दोहा ॥

कुल संतति तैमूर २२को, इत बाबर अभिधान ॥
कावल जय तिहिंकाल करि, स्वबल भयो सुलतान ॥ २१॥

॥ षट्पात् ॥

अंदजान १ पति अग्ग यहहि हुव जनक अनंतर ॥
दब्बि समरकंद १ पुनि बढ्यो सवसिर जव बाबर ३० ॥
भ्रातनविच परि भेद छोनि यातैं सब छुट्टिय ॥
पै बहुरिहु बलपाइ किन्न भुवबस रिपु कुट्टिय ॥
इम पुनि तातारी उजबकन समरकंद १ जव जित्तिलिय ॥
तब अंदजान१दल सज्जि तिहिं कावल२दब्बि अधीनकिय॥२२॥

॥ दोहा ॥

अंदजान १ कावल २ उभय २, सासैत बाबर ३० साह ॥
इब्राहीम २९।१ सु दुष्ट इत, हुव तब दिल्लियनाह ॥ २३ ॥
अधिकारी दुर्म्मन अखिल, भये तास लहि भीति ॥
तिम टरिटरि बिस्वासतजि, पावत कहुँन प्रतीति ॥ २४ ॥
मारयो अनुज जलाल २ जव, द्रविंत अलाउद्दीन ३ ॥
कावल बाबर ३० साहको, लयो सरन भयलीन ॥ २५ ॥

॥ षट्पात् ॥

तँहँ सूबा मुलतान खानदौलत अप्पन खतैं ॥
पठयो बाबर ३० पास स्वीय पक्खिन लिखि सम्मत ॥
खानाँ भयउ खराब इहाँ लोदी अफगानन ॥
इब्राहीम २९।१ हिँ अखिल हमहु चाहत अब हाननं ॥
तुम प्रबल आइ इत सुख बितरि हितधरि सब संकटहरहु ॥
यह स्यार कनकगिरितैं अलग करि दिल्लिय अप्पन करहु॥२६॥

॥२१॥पिता के१पीछे यह अंदजान नामक शहर का पति हुआ ।॥२२॥२हुकूमत करता था ॥ २३ ॥ ३ उदास ॥ २४ ॥ ४ भगाहुआ ॥ २५ ॥ ५ पक्ष६ घर ७ मारना. सुख ८देकर. इस गीदड़ को ९स्वर्ण के पर्वत से दूर करके

बाबर ३० तब इम बंचि खानदोलत*प्रेसित**खत ॥
आयउ जब तरि अटक हुलसि दिल्लियसिर हंकत ॥
सबदल पंद्रहसहँस १५००० ***तंत्र ताके कहियत॰तब ॥
जित्ति तदपि पंजाब सजब आयो नमात सब ॥
स्वक[1] बय[2] दुर२अग्गचालीस४२ समें[3] जुब्बन बय निजपुत्रजुत ॥
पहुँच्यो सु आनि पानीपथहि दब्बत दिल्लियदेस द्रुत[4] ॥ २७ ॥
इब्राहीम२९।१ अमीर बदलि तामाँहिं मिले बहु ॥
दल खिल[5] सहदिल्लीस लरन इततैं पहुँच्यो लहु[6] ॥
पानीपथ भुव प्रधन[7] भयउ चलि सस्त्र भयंकर ॥
हनि सुहि इब्राहीम २९।१ बिजय सासकहुब बाबर ३० ॥
लोदी रह्यो सु बर्सु८अब्दलग संवत ससि बसु तिथि१५८१समय ॥
तैमूर२२ बंस प्रभुता बितत अब दिल्लिय मुगलन उदय ॥ २८॥
पहिलैं गोरिन५ पाइ भुम्मि दिल्लिय बहु भुग्गियं॥
तिम खलजी२ कुल तुरक तुरक तुगलक३ इम उग्गिय ॥
सय्यद४ लोदि५न सहित साह बजिबजि नट्ठे सब ॥
दुलही दिल्लिय दुलह मन्नि मुगलद्दन आई अब ॥
जोलौं सु साह बैठो न जमि सूबा कछु पलटे सबल ॥
मालव अधीस१ गुज्जर[10]महिप२ पाये दुव२ प्रतिभट[11] प्रबल ॥२९॥
बदल्यो दिल्लिय बेस पिक्खि गुज्जर१ मालव२ पति ॥
गंजत जितजित गढन बढे दिसदिस अति उन्नति ॥
बसु आब्दिक[12] कछुबरस चढयो चित्तोर भरन भनि ॥
अतिबल इक्के उभय२ बिदित पठये स्वामीबनि ॥
पहुँचे प्रबीर दुव२ रानपुर[13] बिबिध फैल१ बानाँ२ बहत ॥

---

*भेजाहुआ **पत्र ***आधीन १ अपनी २अवस्था ३वर्ष की ४ शीघ्र ॥२७॥ ५ बाकी की सेना के सहित ६ शीघ्र ७ युद्ध ८आठ वर्ष तक ९ बीतने पर ॥२८॥ १० गुजरात का राजा ११ शत्रु॥२९॥ १२ सालाना खिराज १३ चित्तोड़ में

करमंगि* अनय **इच्छित करत रान उर न मावत रहत ॥३०॥

दोहा ॥

कहि[१]रूप्पय इक्कत करत, रक्खि स्वपाहुन रीति ॥
छन्न लिख्यो बुंदिय छदनें, आवहु लखहु अनीति ॥ ३१ ॥

षट्पात् ॥

बलसह दल[२] वह बंचि सुपहु चितोर सिधारिय ॥
गंजन इक१इक१ गढन सूर इच्छित अनुसारिय ॥
मोहिल्ला[३]मगरी सु छेकि रानहु हितमैं छकि ॥
आयो सम्मुह अप्प तुरक इक्के२हु रह्यो तकि ॥
मिलि मग्गतैंहि आचरि[४] उचित प्रासादन[५] गय रान१ पहु ॥
नृप२हुव प्रविष्ट[६] निज पटनिलय[७] बितरत रंकन बित्त बहु[८] ॥३२॥
पठई[९] कहि रानपति मत्त उद्धत दुवश मिच्छन ॥
इहुन बुल्लि सहाय अब कि देनन कर[१०] इच्छन ॥
बलि[११] चढाइ बहुवरस बलिहु[१२] चैपकरन[१३] बिलंबहु[१४] ॥
प्रधन[१५] सहेपरिहै न वजत साहन जय बंबहुं[१६] ॥
अह अठ ८ अवधि कै[१७] सोचि अब कर चढ्यो सु हैंमकरकरहु१[१८]॥
यह जो न द्वार समुचित अटकि धन लुट्टहिं२ कोसनें[१९] धरहु ॥३३॥
बुंदिय १ इत २ संबंध चउ ४ सु साहहु पहिचानत ॥
तुम सहाय कहि तदपि आन १ जानहु २ भ्रम आनत ॥

*अनीति**इच्छानुसार॥३०॥बुन्दी को छाने १पत्र लिखा॥३१॥ २पत्र ३दसराहा पर सेना की हाजरी की जावे उसको मोहोला कहते हैं (इस नाम की मगरी हमने चित्तोड़ में नहीं देखी परन्तु सम्भव है कि उन दिनों में किसी टेकरी का नाम होवेगा. ४उचित ४ व्यवहार करके ५ महलों में ६ प्रवेश. अपने ७डेरों में रङ्कों को बहुत धन ८देताहुआ ॥ ३२ ॥ ९ दोनों म्लेच्छों ने कहलाया क्या? १०खिराज देने की इच्छा नहीं है? ११खिराज? १२फिर भी १३ इकट्ठा करने को १४ देरी करते हो सो १५युद्ध में १६विजय के नगारे बजते हुए तुमसे सहन नहीं होवेंगे ॥ ३३ ॥आठ १७दिनकी अवधि में १८ हमारे हाथ में दो१९खजाने नहीं धर सकोगे

पाहुन आतहु परत सतन सहँसन *व्यय संगत ॥
वसु ८ दिन जँहँ तुम वदत मास इक१ तँहँ हम मंगत ॥
इमरान कथन मिच्छन उफानि अक्खिय अट्ठ८हि अवधि **अह॥
इक१मास अवधि तुम तो अवहि अटिअटिपुर लुट्टहिं असह।३४।
लुट्टत रंक लुकाइ हमहिं जो लेहु दगा हनि ॥
तोहु सुगति हम तकहिं तुमहिं कालहि ग्रसिहै तनि ॥
तँहँ पहुँच्यो नृप तदिन इत १ रु उत २ बाद रह्यो इम ॥
जुग २ घटिका निसजात तक्कि सगपन वरोध तिम ॥
रट्ठोरि धना कहियत कुली करि बहुधन जिहिं नाम क्रम ॥
लघुबहिनि पतिहिं पठयो ललित सब आतिथ्य सनेह सम।३५।
सर्पडसन भय संकि तज्यो रानिय अफीम तँहँ ॥
अमल त्रिगुन वढि अधिक जात मन बढि अटक्यो जँहँ ॥
पैसे त्रय ३ मित जदपि अमल रहिगो अधिपतिकै ॥
तंद्रित हग मिलि तदपि मोहँ आवतहुव मतिकै ॥
चित्तोरराज रानिय निचिंत स्वागत आयउ पटसदन ॥
दीस्यो सु तबहु नृप मींचिदृग १ वहुउंघत २ व्यादित बदन ।३६।
नृपको यहहि निदेस आइ कोऊ खिन उंघ न ॥
तो मुहिं तिमहिं बताइ जबहि चेताइदेहु जन ॥
सबनिदेस बस स्वजन मरन न करन भयमानत ॥
जिन अंतहपुरजनन जवहु जावन दिय जानत ॥
कोउन हरैंहिं तिनमें कहिय किम इनवल इक्कन १ कंदन ॥
इन्ह राहलखत पहु रान इन्ह दृग१ खुलैंन२ नमिलैं बदन ॥३७॥
यहहु लई सुनि अप्प होइ अवहित तदनंतर ॥

* स्वर्ण। ** दिन की ॥ ३४ ॥ १ सम्बन्ध जानकर जनाने से २ बडसालू ॥३५॥ ३ ऊंघ से ४अचेताई ५युक्त ६ डेरों में ७फटाहुआ ८मुख ॥३६॥ ९आज्ञा. १०किसी ११समय १२धीरी आवाज से १३नाश ॥३७॥ १४सचेत होकर १५जिसपीछे

हसि वडसस्सू *पहितैं सहित सब रक्खि प्रीतिपर ॥
पहु रुप्पय सतपंच ५०० उचित सोदर तिन्ह अप्पिय ॥
मिलि इक्कन २ पुनि गमन +थानसंसद मन थप्पिय ॥
निसरहत जाम१ अप्पहिं ÷नियत अक्खि जगावन अनुचरन ॥
करिचैन असन१ सुखसैन २ किय सूरधर्म रक्खत सरन ॥३८॥
रहतजाम१खिलरत्ति जंग्गि१ सुचि २ करि संध्या ३ जप ४ ॥
विविध सद्धि व्यायाम तुलंन मल्लन असह्य तप ॥
मनछै ६ लोह मुद्गर१न उछटि हनि अंस उडावत ॥
विविध झंप दंड २ बहु अैंचि अतिवल्ल उफनावत ॥
सत्वरैं कसाइ हय साजि सल्लह बिजय पट्ट वाहुन बिलसि ॥
मनअद्ध संगि अयमय महिप करझल्लिय सब हेति कसि३९
भटनरोकि प्रभुभाव नलिय इक्क १हु सहाय नय ॥
इक्कन २ उप्पर इक्क १ हड्ड हंक्किय आरुहि हय ॥
उत निमाज १ मुखं उचित सद्धि व्यायाम २ वनावत ॥
दूतन अक्खिय दोरि इक्क १ इक्कल१हय आवत ॥
सत्थके जवन लग्गे सजन तिन्ह निवारि अतिमद धरत ॥
इक१भयउ सज्ज तउ इक१अभय करत हो सु रहिगो करत॥४०॥
कछुक विंब रवि कढत इक्क १ पिक्खिय नृपआवत ॥
कबहु कुब्जबेपु १ कबहु लहरि हाँनैं सिर २ लावत ॥
कहिय मिच्छ सिसु कोन इतसु मरिबे किमआवैं ॥
वदिय चरनैं बुंदीस उंघि इम अमल उगावैं ॥
तब जानि दम्मैं दैन१ न तक्किय रान कुहकैं छल तक्किय रन२॥

* भेजेहुए + सभा में ÷ निश्चय ॥ ३८ ॥ १ कसरत २ छः मन के तोल का ३ कन्धे की टक्कर देकर ४ शीघ्र. आधे मन की ५ साङ्ग (बरछी) ६लोहे की. सब ७ शस्त्र कसकर ॥ ३९ ॥ निमाज ८ आदि ॥ ४० ॥९ कुबड़ा शरीर. कभी झोका खाकर घोड़े के १० हाने पर मस्तक लगाकर ११ हलकारों ने कहा. १२रुपये देना नहीं चाहकर १३छली ने

पै इक१सवार आगम*पधन किम इम चिंतिय मिच्छमन।४१।
पहिचानिय दृगपरत निकट आवत नारायन १८७१ ॥
इक्का १ चढि +खिल अटकि ÷हुत्त हंकिय मत्ते मन ॥
सोर१ नकीबन सुनत हेस२ तानत सम्मुह हय ॥
पहुमन१ बुद्ध२हु प्रकट१ भान२ मंडिय तँहँ निर्भय ॥
क्योंआत मरन१ ताके कहत भनिय रान रुप्पय भरन२ ॥
बिसिख१न किधौं कि सँगि२न बदहु रुचत बिसिख तव कोनरन।४२।
भरन१नरन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
गदियं मिच्छ तव सुगम कलह सुहि लेहु वारकरि ॥
प्रथमवार पाहुनन भूप अक्खिय साहसभरि ॥
तुरगफैंकि तब तुरक हड्डउर कुंत प्रहारिय ॥
भिदि तनुत्र कछुभाग बाहु१ उर२ संधि बिदारिय ॥
मानहु अप्माप अहिफेनमद होन चेत यह वारहुव ॥
मैंआत सम्हरि इमकहि मुदित सज्जिय संगिं सुमांड१८८।४सुवं।४३।
सरभव१ कर संग्रहिय हनन जनु क्रौंच२ केकिहय ॥
कै अमोघ कर करिय करन१ जनु आत घडुक्कय२ ॥
जातु मनहु इंद्रजित१ पानि पक्करिय लक्खन२पर ॥
पिथ भट कि पुंडीर१ खंभ२ बेधन लिन्नी खर ॥

---

*युद्ध में +बाकी के लोगों को रोककर ÷ होम होने को चला ॥ ४१ ॥ १ हीसना फैलाते हैं २ चेत हुआ ३बाणों से वा ४बर्छियों से ५ हे बिना शिखावाले(यवन) ॥ ४२ ॥ ६ कहा ७भालों ८ कवच फूटकर ९ अमल के नशे में १० बर्छी उठाई, सुभाराड के ११ पुत्र ने ॥ ४३ ॥ १३ मानों १४ क्रौंच पर्वत का नाश करने को १५ मयूर के वाहनवाले १२ स्वामिकार्तिक ने बर्छी ग्रहण की. अथवा १६ घटोत्कच के आने पर कर्ण ने अमोघ शक्ति हाथ में ली. मानों राक्षस इन्द्रजित ने लक्ष्मण पर शक्ति हाथ में ली १८ किधों १७ पृथ्वीराज के सामन्त पुण्डीर ने खम्भे को बेधने के लिये तीक्ष्ण शक्ति ली. इस प्रकार बुंदी के राजा नारायणदास ने गरुड़ के वेग से घोड़े को दौड़ाकर घोड़े के मलंग लेते

गहि संगि दपटि हयरय गरुड़ उडत फाल बाहिय उसासि ॥
तस१उर२तुरंग१त्रिक२बेधि तिम निकासि बर्त्ति३गय धरनि धसि४४
असनि१ अटकि मिच्छउर अग्र२ इक१कर धर अंदर ॥
पैठत हय चउ४ पयन खरोरहिगो सह पक्खर ॥
अतिबल बाहत अस्व भयउ नृपकोहु भिन्नकटि ॥
अपर५२ इक१ सवउज्झि लखत सहसत्थ गयो लटि ॥
तसतुरग सज्ज थित ठान तकि चढितिहिं नृप पुरसंचरिय ॥
बललखन रान परिगह बलिन असिसन संगि न उद्धरिय॥ ४५ ॥
अरिहय नृप आरूढ आइ मतिरान कहाइय॥
इक१ अनसुकिय अपर२ जवन सवतजि लैगोजिय ॥
अनसुंहु पिक्खन उचित सु चलि पिक्खहु परिगहसह ॥
सुनत चढिग सीसोद मचिग चित्तोर महामह ॥
तुरगहु तज्यो न सुनि आत तिंहिं अब बल निजनिज जुत उभय२ ॥
मिलिचलिय चढत छ६घटिय मिहिर, मिच्छलखन जय मोदमय।४६।
दूरहिंसन तिहिं देखि सहय ठह्यो रविकीरुख ॥
कहिय पिसुन ढक्कूज मरन आनैं अरिसम्मुख ॥
नृप सहसपंथ निराइ जथा प्रत्ययं लैगो जब
बदिय वाह बुंदीस अभय तवभुजन करे, अब ॥

समय उठाकर बर्छी चलाई जो इक्के के हृदय को और घोड़े की १ कमर की हड्डी को वेधकर २काछे (अण्डप्रदेश) में निकल कर वह बर्छी भूमि में घुसगई ॥ ४४ ॥ ३ बर्छी. राजा के घोड़े की भी४कमर टूट गई ५ दूसरा इक्का पहिले इक्के को ६मुरदा छोडकर देखते ही साथ के लोगों सहित ७ भगगया ८ पुर में गया. बर्छी को नहीं ९ निकाली ॥ ४५ ॥ १० शत्रु के घोड़े पर ११ चढकर राजा ने एक इक्के को बिना प्राण करदिया और १२ दूसरा यवन १३ मुरदे को छोडकर जीव लेकर भगगया. वह १४ मुरदा देखने योग्य है १५ सूर्य ॥४६॥ १६ सूर्य के साम्हने १७ चुगल १८ ढक्कू के पुत्र ने १९सौगन सहित. समीप जाकर जिस प्रकार २० विश्वास आवै तिसप्रकार

संभर स्वसंगि कह्हन कहत रहे करंखि[1] थकि रानके[2] ॥
संग्रामचविय कह्हहु सुपहु प्रतिबल[3] न तुम प्रमानके ॥४७॥
सु सुनि कहिय संभरिय बाजि मम मृत इहिं बाहत ॥
मिच्छतुरग तउ मिलत हानि नगिनी सु जथा हत ॥
बाहत१थाहत२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
इतर[4] हय न ऐसोहु अन्य यातैं हय आनहु ॥
सुनि रानहु दिय सप्ति[5] चढिय निजतजि चहुवानहु ॥
तिरछो सु फैंकि ठेकन तुरग कह्हिय झटकि संगि कर ॥
कटिभंग[6] वहहु[7] मृत१[8]कतिकहत परि घुटनन गो थकि१अपर[9] ॥४८॥

दोहा ॥

इक्कनके द्वै२ हय अपर[10], बल निज उचित बचाइ ॥
कह्ही संगि सु रानके, चढि हय झंप रचाइ ॥ ४९ ॥
अक्खिय तिन्ह उपहार[11] यह, थप्पहु अब निजथान ॥
अर्ब[12] उभय लिय हम उचित, रीझ सु मन्नहु रान ॥ ५० ॥
रान कहिय ए अरु इतर, गज१ हय२ हेति[13] ३ स्वगेह ॥
वत्त कतिक चित्तोर४ बलि, इहिं आसान[14] अनेह ॥ ५१ ॥

षट्पात् ॥

न आसान नृप कहिय आदिधर्महि अप्पन यह ॥
अक्खोहिनि[15] मृत अग्ग ओर दुवरकारि अट्ठारह १८ ॥
मिहिकावति बहु महिप गोग[16]   १हित आत अबूफर२ ॥
कंगुरपति१के कज्ज समय केदार२ सिकंदर३ ॥

१खींचकर २राणा के सुभट ३ दूसरा बलवान् तुम्हारे समान बलवाला नहीं है ॥४७॥ ४अन्य ५ घोड़ा ६ कमर टूट कर. वह भी ७ मरगया ८ कितने ही कहते हैं कि घुटनों के बल गिरकर थकगया. यह ९अन्य लोगों का मत है ॥४८॥ १०दूसरा ॥४९॥ यह घोड़ा ११निजर है १२घोड़ा ॥५०॥ १३शस्त्र १४समय ॥५१॥ आगे दोनों ओर की अठारह १५अक्षौहिणी मरी थीं और अबूफर आया तब १६गोगा चहुवाण के लिये मिहिकावती में बहुत राजा मारेगये थे और कांगड़ा के

जिम बहु परेहि आवत जवन प्रपितामह गोपाल१५३हित ॥
मुहम्मद१आत गजनीमुकुट बहु भूपन निपतन बिदित ॥ ५२ ॥

दोहा ॥

जवन सहाबुद्दीन२जब, गोरी जिततित गंजि ॥
आवत इत रन बहु रहे, भूप जवन बहु भंजि ॥ ५३ ॥
अज्जन[1] मंडल अग्गमि[2] रु, बनिबैठेहु बहोरि ॥
पुनिपुनि दक्खिन१ उदग[3]२पहु, मरत१ देत कै मोरि२ ॥ ५४ ॥
अबहि रावरे गढ अधिप, चउरासिय८४ चित्तोर ॥
रहिय अलाउद्दीन११ रन, इत१ उत२तिम बहु ओर ॥ ५५ ॥

षट्पात् ॥

कर नृपके इम कहत जोरि संग्राम चविय जँहँ ॥
आसानहिँ किय एह तकहिँ कोउ न सहाय तँहँ ॥
पहु दुव२ इम संलपत[4] मिलबाजिन[5] आये मुरि ॥
सहहि[6] रान प्रासाद जाइ बिष्टर[7] बैठे जुरि ॥
बुंदीस भुजन अर्चन[8] बिहित संभृत[9] सब उपहार सह ॥
मुत्तिय चढाइ अक्खिय महिप अप्प भुजन चित्तोर यह ॥५६॥
स्व१पर२ भटन तँहँ सबन रचिय नृप नजरि१ निछावरि ॥
पूरन[10] ढक्कुवपुत्र[11] दुमन साह्निय निदेस डरि ॥
सुतो१ कुलिय[12]२संस्सू३ हु इम हिँ उपदा[13]१ उत्तारन[14]२ ॥

पति केदार का कार्य करने को सिकंदर आया था तब रुरे प्रपितामह गोपाल का हित करने के अर्थ भी बहुत राजा मारेगये थे ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ १आर्य मण्डल को २ दबाकर ३ उत्तर दिशा के राजा ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ इस प्रकार ४वार्तालाप करतेहुए ५ घोड़ों को मिलायेहुए ६साथ ही राणा के महल में जाकर ७ गद्दी पर बैठे ८ पूजन करके ९पूर्ण सामग्री सहित मोती चढाकर ॥ ५६ ॥ १० पूरणमल. नारायणदास के छोटे भाई की ११पुत्री जो महाराणा सांगा को विवाही थी १२वडसासू ने १३निजराना १४न्योछावर (यहां यथा क्रम समझना चाहिये अर्थात् बेटी ने नजराना और वडसासू ने न्योछावर)

सह पठये संसदहि[1] नृपहु किय आदि[2] १ निवारन ॥
बलि तत्थ असन उभय२हि बिरंचि संभर नृप आयउ सिबिर ॥
अहिफेन समय पुनि लिय अमल चितवत पातुरि नटन चिर ।५७।
पननारिनसह सिक्ख रीझि सतसत१०००० दिय रुप्पय ॥
संध्या१ दिक सब सद्धि समय किय असन महासय ॥
द्विरद इक्क१ बाजि दुव२ मुट्ठि मनिजटित इक्क१ असि ॥
सरधि[3]१ चाप१ सिरुपाव१ पट्ट१ इक१ इक१सु अंत्यससि[4] ॥
अतिप्रीति रान उपहार इम हड्ड सिबिर[5] पठयो हुलसि ॥
पठई कहाइ यह अब्दप्रति बुंदियपुर भेजहिं बिकसि[6] ॥ ५८ ॥

दोहा ॥

अक्खिय भूपति वाँरि[7] यह, पट्टिस[8]१ खड्ग२ पिधान ॥
पठवहु जुग२ इहिं नर्मपर[10], रुचिर तेहु दिय रान ॥ ५९ ॥

षट्पात् ॥

दिय चउसत ४०० तिन्ह दम्म रान अनुगन[11] अतिहित रत ॥
आइ रान दिन अपर[12]२ मंत्रकिय सिबिर नीतिमत ॥
मालव१ गुज्जर२ मंतु[13] सुनंत ऐहैं दुव२ सत्थहि ॥
भनिय रान तब भूप उचित आगम निज अत्थहि ॥

---

१ सभा में साथ ही भेजी जिनमें २ प्रथम (निजराना) को राजा ने माफ करदिया ॥ ५७ ॥ ३ भाथा. एक शिरपेच और ४ अन्त में एक चन्द्रमा. हाडा के ५ डेरे भेजा. और यह कहला भेजा कि इसी मा फिक ६प्रसन्न होकर सालियाना बुन्दी भेजाकरैंगे ॥ ५८ ॥ राजा नारायणदास ने इस सामग्री को ७ निवारण करके कहा कि ८ कटार और खड्ग का ९ म्यान दोनों भेजो. यह १०हसी(मस्करी)करने पर महाराणा ने वे भी दिये ॥५९॥ राणा के ११सेवकों को १२ दूसरे दिन डेरे में सलाह की कि १३ * अपराध सुनते ही मालवा और गुजरात के दोनों बादशाह साथ ही आवेंगे

---

* यहां पर खिराज के रुपये लेने को दो इक्कों का चित्तोड़ आना और उनमें से एक इक्के का बुन्दी के राव नारायणदास के हाथ से माराजाना लिखा सो सत्य नहीं है क्योंकि प्रथम तो यह इतिहास कि

बुंदिय जु काम पहिलैं बनैं तो मम आगम होहि तहँ ॥
इम थप्पि नियत सबदिन उभय२ करत रहे दृढप्रीति कँहँ ॥६०॥
पुनिपुनि नृप१ प्रासाद २ नगर३ खुरली ४ हु निहारिय ॥
इम मृगव्य१ आँरामर नगर ३ खुरली ४ हु निहारिय ॥
मास १ अवधि महिपाल रहिय चित्तोर निरंतर ॥
सदन पधारन समय सुता पठवन कहि संभर ॥
कर्मवति१८८१नाम नरबद१८७२कुमरि आयउ लै बुंदिय अडर ॥
इक्का हन्यौं सु नृप जस अतुल बढि हुव दिसन प्रकास बर ॥६१॥
दोहा—गहत पट्ट दिल्लिय मुगल, सुनि यह बाबर ३० साह ॥
जान्यौं ढिग ऐसे जुरैं, लभैं तब जयलाह ॥ ६२ ॥
सुपहु गंग इत बग्घसुव, किय गोचर जब काल ॥

१जो२निश्चय ॥६०॥ राव नारायणदास ने एक मास पर्यंत चित्तोड़ में रहकर, वारंवार ३ राजा (चित्तोड़ के महाराणा संग्रामसिंह) को ४ महल, पुर और ५ खुरली "खुरः लीयते यस्यां सा खुरली" खुर जिसमें लय हो उसे खुरली कहते हैं, अर्थात् हयशाला को देखा और इसीप्रकार ६ शिकार के स्थान ७बाग ८नगर "नगाः वृक्षाः पर्वता वा सन्ति यस्मिंस्तन्नगरम्" अर्थात् वन और ९शस्त्रविद्या को भी वारंवार देखा १० चहुवाण ने पुत्री को भेजने के लिये कहा और कर्मवती नामक नर्बद की कन्या को लेकर निर्भय बुन्दी आया ११ श्रेष्ठ १२ मिलें ॥ ६१ ॥ काल ने १३दृष्टि दी (मरा)

सी अन्य पुस्तक में देखने में नहीं आया इसके अतिरिक्त महाराणा साँगा ने कभी किसी बादशाह को खिराज नहीं दिया किन्तु कर्नल टॉड के मतानुसार तो दिल्ली के बादशाह बाबर ने उक्त महाराणा को स्वयं खिराज देना चाहा था सो स्वयं बाबर ने अपनी किताब 'तुजकबाबरी' में भी लिखा है जिसको महाराणा ने स्वीकार नहीं किया क्योंकि वे यवनों को आर्यावर्त्त से निकाल देना ही उचित समझते थे और मांडू के बादशाह को तो उक्त महाराणा ने अपनी कैद में रक्खा था फिर खिराज किसको देते, इससे मालूम होता है कि यह कल्पित इतिहास बुन्दी के बड़वा भाटों का लिखाया हुआ है, और महाराणा साँगा के समय में ही जोधपुर के राव गांगा की मृत्यु लिखी सो भी ठीक नहीं है क्योंकि राव गांगा की विद्यमानता में महाराणा सांगा का देहान्त होचुका था; क्योंकि उनका देहांत बादशाह बाबर के साथ 'बनाना' की लड़ाई हुए पीछे संवत् १५८४ में हुआ था और राव गांगा को राज्य के लोभी उसके बड़े पुत्र मालदेव ने झरोखे से गिराकर संवत् १५८८ में मारा था ॥

जनक पट्ट लिय जोधपुर, मालदेव महिपाल ॥६३॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रचतुर्बाहुम १ द्वीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याख्यायनीयबुन्दीनरेन्द्रनारायणदास १८७१चरित्रे हयद्वितीय२क्रीडिताच्छोटनप्रत्यागम्यमानतावदहिफेनमदमीलितनेत्रबुन्दीशनर्मोपहसिततैलितरुणीकण्ठातिभरलोहकुशकुण्डलीकरण १, तावन्मादकमत्तमहीपमल्ल१मातङ्ग २ मृगेन्द्र ३ संरोधशासनसमर्थबलविख्यापन२, बुन्दीपुरप्राप्तचाक्रिकप्रार्थ्यमानपृथ्वीशतैलिनीकण्ठकुशबन्धनविमोचन३, हेमन्तक्षणलघुशौचाऽऽचरणाऽऽसीनमादकपारवश्यमीलितदृक्प्रातःप्रबुद्धपृथ्वीपरिवृढतदवधिसमात्तसलिलस्वर्णपात्रसपर्यासावधानस्थितप्रार्थनाप्रेरितराज्ञीराष्ट्रकूटीयाचिततद्धस्ताऽहिफेनाऽऽदानाऽभ्युपगमन ४, स्वसहधर्मिणीनिजयुक्तिह्रासरक्षिताऽष्टादश१८मासकमितमात्रामादकमत्तमृ

तब पिता का पाट जोधपुर में मालदेव ने लिया ॥ ६३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में विख्यात करने योग्य बुन्दी नरेन्द्र नारायणदास के चरित्र में घोड़ा ही है दूसरा जिसके अर्थात् इकले शिकार खेलकर पीछे आतेहुए अमल के नशे से मिचेहुए नेत्रोंवाले बुन्दी नरेश की मसकरी(हँसी) करने के कारण तेली की स्त्री के कण्ठ में अति भारवाली लोहे की कुस का कुण्डली करना, उस नशे में मस्त राजा का मल्ल, हाथी और सिंहों को रोकने और शासन करने में समर्थ बल की प्रसिद्धि करना, बुन्दी पुर में गयेपीछे तेली की प्रार्थना से राजा का तेली की स्त्री के कण्ठ से कुस का बन्धन छुड़ाना, हेमन्त ऋतु के समय लघुशंका करने को बैठेहुए नशे के परवश नेत्र मिचजाने से प्रभात समय में जगनेवाले राजा का उस समय तक स्वर्णपात्र में जल लिये सेवा में सावधान खड़ी और प्रार्थना से प्रेरणा कीहुई राणी राठोड़ी के मांगने से उसके हाथ से अमल लेना स्वीकार करना, अपनी विवाहिता स्त्री की युक्ति से घटाकर अठारह मासों रक्खीहुई अमल की मात्रा के नशे से शिकार खेलने में

गयारमसाणदंष्ट्रिदलनदूरदोद्रूयमाणकृतकार्यसमागतमादककाला
तिक्रमतमसमास्तीर्णासप्त्यासनसौभाण्डिकरीरकारस्कराधःशयन
५,क्रकरकाण्डच्छायासमपसरणसमयनिःसृतैककालकाकोदरच्छ
त्रोचितोपरिच्छत्रीकृतफणच्छायाप्रबुद्धपृथ्वीशनिगृहीतनागपुनःपुन
र्दशन ६, तद्विषवर्द्धितद्वि २ गुणमदमोदमानसम्मिलितसर्वसैन्यस्क
न्धावारसमागतप्रभुपृच्छायाथातथ्याऽवबुद्धराज्ञीस्वंहस्तमादकदाप
नसमुत्सर्ज्जन ७, महीशशपथदूरीकृततद्गरदरस्वास्थ्यसङ्गतराज्ञीराष्ट्र
कूटीतद्रात्रिरविमल्ल १८८।१ गर्भधारण ८, वसु ८ बण्टाहिफेनन्हास
कुम्भिनीकान्तकुमारराष्ट्रकूट्यौरससूर्यमल्ल १८८।१ राजमल्ल १८८।
२ कल्याणमल्ल१८८।३त्रय३ भौजिष्येयसहस्रमल्ल १ सप्तल २ द्वय
२ सङ्कलितपञ्चक ५ समुद्भवन ९, प्राक्कालोत्तानशयत्वशालिशैशवस
मयसमवगतकृतरोदनकुमारार्कमल्ल१८८।१दासीस्तनपानोदन्तकृत
तत्किङ्करीताडनगृहीतपोतपादभ्रामयन्तीराज्ञीरुधिरान्ततत्पोतसर्व

सूवर को मारने के लिये दूर जाकर सूवर को मारने पर अमल खाने का सम
य निकल जाने से घोड़े का गदैला बिछाकर सुभाण्ड के पुत्र का करीर
वृक्ष के नीचे शयन करना, उस करीर वृक्ष की शाखाओं की छाया
निकल जाने के समय बाहिर निकले हुए एक काले सर्प का छत्र के योग्य
ऊपर छत्र किये हुए फण की छाया करने पर उस छाया से जगेहुए रा
जा के पकड़े हुए सर्प का वारम्वार डसना, उसके विष से दुगुने बढ़ेहुए नशे से
प्रसन्न राजा को सब सेना मिलने पर राजधानी में आयेहुए राजा से रानी के पूछने
पर यथार्थ वृत्तांत जानने के पीछे राणी का अमल देना छोड़ना, राजा के सौगन खा
ने से उस सर्प के विष का भय दूर होने पर स्वस्थता सहित रानी राठोड़ी का
उसी रात्रि में सूर्यमल्ल को गर्भ में धारण करना, आठ हिस्सा अमल घटाने पर
भूपति नारायणदास के राठोड़ी के उदर से सूर्यमल्ल, राजमल्ल और कल्याणमल्ल
तीनों और पासवान के पुत्र सहसमल्ल, सातल दोनों मिलाकर पांच कुमरों
का जन्म होना, पहले समय में सीधे शयन करनेवाले अत्यन्त बालकपन के स
मय में रोने से कुमर सूर्यमल्ल को दासी का स्तन पान कराने का वृत्तान्त जान
कर उस दासी को धमकाकर बालक के पैर पकड़ कर भ्रमानेवाली रानी का
अन्त में रुधिर आया वहां तक उस दासी के दूध को निकालना, सदैव अन्त

दुग्धनिष्कासन ९, सदैवस्नेहसातिरेकसवित्रीतत्कुमरलालनकाल सर्पसाम्यसम्बोधन १०, सूचितसंवत्समयकृतकायहानदिल्लीपतिलोदिपठानसिकंदर १८ सूनुज्येष्ठेब्राहीम २९।१ पितृपट्टप्राप्त्यानन्तरं स्वानुजजलाल २९।२ मारणासन्त्रस्तकनिष्ठालावुद्दीन २९।३ कावलपलायन ११, जनकानन्तरप्राप्तान्दजान १ राज्यस्वदोर्जितसमरकंद १ परस्परभ्रातृजनद्रोहभावपरिभ्रष्टपुनःप्राप्तराज्यद्वय २ पुनस्तातारियुजबकसमाक्रान्तसमरकन्द २मुगलतैमूर २२ वंशीयतदन्दजानाधीशबाबर ३० कावलराज्यसमासादन १२; दिल्लीशसर्वाधिकारिदौर्मनस्यसमयमुलतानसूबाध्यक्षदौलतखानप्रेषितपत्रपूर्वशरणप्राप्तालावु द्दीन २९।३ समाक्रान्तकावलमत्यन्तपतियवनेन्द्रबाबरा ३०र्थं दिल्लीसमाक्रमणावसरसूचन १३, सज्जपञ्चदशसहस्र १५००० सैन्यद्विचत्वारिंशद् ४२ वर्षवयस्कयुवावस्थस्वसूनुसहितदिल्लीजिनीषुसमुत्तीर्णकरतोयसमायातसम्मिलिताऽनेकपरपक्षीयपानीयपथप्रधनव्यापादितेब्राहीम २९ म्लेच्छमहेन्द्रबाबर ३० दिल्लीपट्टप्राप्तिशक

करण के अत्यंत स्नेह से माता का उस कुमर का लाड करने में कालेसर्प का संबोधन करना, जनायेहुए सम्वत् में दिल्ली के बादशाह लोदी पठान सिकन्दर का देहान्त होने पर उसके बड़े पुत्र इब्राहीम का पिता का पाट पाये पीछे अपने छोटे भाई जलाल को मारने से डरकर छोटे अलाउद्दीन का काबुल भागना पिता के पीछे अन्दजान का राज्य पाकर अपने भुजों से समरकन्द को जीतने पर परस्पर भाइयों के द्वेष से राज्य भ्रष्ट होकर दोनों राज्य प्राप्त होने पर फिर तातारी और उजबक दोनों के समरकन्द दबा लेने पर मुगल तैमूर वंशवाले उस अन्दजान के स्वामी बाबर का काबुल राज्य को लेना, दिल्ली के बादशाह के मुसाहिबों के उदास होने के समय मुलतान के सूबा के पति दौलतखान के भेजे हुए पत्र से पहिले अलाउद्दीन का शरण आना और काबुल को दबानेवाले म्लेच्छदेश के पति बादशाह बाबर के अर्थ दिल्ली लेने के समय की सूचना करना, पन्द्रह हजार सेना सजकर ४२ वर्ष की अवस्था में युवावस्थावाले अपने पुत्र सहित दिल्ली लेने की इच्छा से अटक नदी को उतरकर आये हुए अनेक शत्रुओं के पक्ष के लोगों के मिलने पर पानीपत के युद्ध में इब्राहीम को मारकर बादशाह बाबर के दिल्ली के पाट पाने के संवत् की सूचना

सूचन१४, दिल्लीभोक्तृयवनभेदसूचनापुरस्सरनानासूबापतिसंभेदक मालव १ गौर्जर २ म्लेच्छराजद्वय २ दिल्लीशप्रतिभटभावसाम्यसूचनासंकथन १५, चित्रकूटाधिराजराणासंग्रामसिंहसम्बन्धिप्रत्यब्द सर्वावशिष्टधनरूपीभूतवार्षिककरसमादानार्थमुदाफर १ महमूद २ युग्म २ प्रतिवर्ष १ प्रतिभुज १ लक्षशोणायकसाहस्रिक दुर्द्धर्षस्वयमिक्रोपनामप्रसिद्धिकाकित्वप्रसिद्धयवनवीरैके १ क १ चित्रकूटप्रेषण १६, कथितरूप्यसञ्चयविलम्बप्राघुणाकर्षणिसत्कृतम्लेच्छशीर्पोहप्रच्छन्नाकारितसैन्यद्वद्वेन्द्वचित्रकूटगमन १७, समुल्लङ्घितस्वदेशसम्मुखागमनसीमशीर्पोहससत्कारबुंदीशसमानयन १८, ज्ञापितस्वसहायकक्षात्रवाह्वानकरद्रम्मानर्पणकृतादिनाऽष्टकावधिमत्तम्लेच्छद्वय २ मर्यादातिक्रमचित्रकूटपुरलुण्ठनप्रतिश्रवण १९, तिरोहितसूचितसम्बन्धित्वहेतुबुंदीशागमनराणामार्गितमासैका १ऽवधियवनयुग्मप्रातःपत्तनविप्लावयिपाप्रादुष्करण २०, नृपगमनदिनभूतेतन्म्लेच्छ १ शीर्पोह २ छुच्छो १ तर २ प

करना, दिल्ली के भोगनेवाले यवनों के भेद की सूचना करने के साथ अनेक सूबापतियों के भेदनेवाले मालवा और गुजरात के दोनों यवन बादशाहों का दिल्लीश के शत्रुभाव की बराबरी की सूचना का कहना. चित्तोड़ के पति राणा संग्रामसिंह के हर वर्ष के चढ़ेहुए सब खिराज से बाकी होने के कारण खाजाना खिराज लेने को मुदाफर और महमूद दोनों का भाखाना करके प्रत्येक भुज के एक एक लाख रुपये लेनेवाले हजार मनुष्यों से लड़नेवाले दुर्द्धर्ष इसी प्रकार पदवीवाले प्रसिद्ध एक एक यवन वीर को चित्तोड़ भेजना, कहेहुए रुपयों को इकट्ठा करने में विलम्ब होने से प्रीति पूर्वक उन यवन पाहुनों का सत्कार करके शीर्पोहदिया के छाने बुलायेहुए सेना सहित बूंदी के राजा का चित्तोड़ जाना, स्वदेश की सम्मुख जाने की सीमा को लांघकर शीर्पोहदिया का सत्कार सहित बूंदीश को लाना, अपनी सहाय के लिये क्षात्रों को बुलाने में राणा का खिराज के रुपये नहीं देना जानकर आठ दिन की अवधि देकर मर्याद [illegible] जाने पर दोनों मस्त म्लेच्छों का चित्तोड़ पुर को लूटने की प्रतिज्ञा करना, सम्बन्धी होने के कारण बूंदीश के छाने आने को छिपा कर के राणा के एक मास की अवधि मांगने पर दोनों यवनों का प्रभात ही नगर लूटने की इच्छा प्रगट करना. २०

श्चात्तत्त्वणादात्तत्त्वणबुन्दीशज्येष्ठश्वश्रूराणाराज्ञीराष्ट्रकूटीधनाप्रहित-स्वागतसहचारिजनान्तरशनैररतिमादकतन्द्रानवहितव्यादितवक्त्रघूर्णमानसौभाग्डिकुत्साकरण २१, सहास्यस्वीकृततत्स्वागतप्रापकपरिजनार्थदत्तद्रम्मपञ्चशती ५०० कसमयसमनुष्ठिताशनसूचितयामिनीयाम १ शेषावसरजागरणहड्डेन्द्रशयनसेवन २२, समयप्रबुद्धविहितसन्ध्या १ व्यायाम २ साहससंरुद्धस्वसर्वसुभटसन्नद्धसादीभूतसमात्तशक्तिकैकाकिहड्डाधिराजयवनयुग्मो २ परिप्रस्थान २३, दूतविज्ञापितैका १ऽश्ववारागमविधीयमानव्यायामनिवारितसपरिग्रहद्वितीयस्वसहधर्मसन्नद्धसप्तिसमारूढयवनैक १ सम्मुखागमसमयस्वान्तसावधानजनादिकोलाहलप्रकटप्रबुद्धमत्सरिराजप्रत्यनीकप्रेष्टप्रधनप्रियत्वपृच्छन २४, यवनातिवीरकुन्तकृत्तसकङ्कटकत्त्वान्तरवेधिसवाहवैरिवपुष्कबुन्दीशकालायसकार्मुकोणाकर १ मात्रपृथ्वीप्रविशन २५, यथातथास्थितीकृतससाप्तिकपरासुप्रत्यन्तिप्रवीरत्यक्तातिबलव्याघातभग्नकटिनिजाश्वनरेन्द्रससार्थपलायितापर २ यवनोचि

के जाने के दिन म्लेच्छ और महाराणा के प्रश्नोत्तर हुए पीछे रात्रि के समय बुन्दीश की बडसासू और महाराणा की राणी राठोड़ी धना के महमानी के लिये भेजेहुए मनुष्यों में से किसीका धीरे बोलकर नशे की ऊँघ से फटे मुख वाले और घूमते हुए सुभाराड के पुत्र (नारायणदास)की निन्दा करना, हास्य पूर्वक उस सत्कार को स्वीकार करके उसके साथ के लोगों को पांच सौ रुपये देकर समय पर भोजन करके एक प्रहर रात्रि बाकी रहते समय जगाने की सूचना करके हाडे का शयन करना, समय पर जगकर सन्ध्या और कसरत करके हठ से सब सुभटों को रोक कर सज्ज होकर घोड़े पर सवार होके बर्छी लेकर इकले हड्डाधिराज का दोनों यवनों के ऊपर जाना, दूत से एक असवार का आना जानकर कसरत करते हुए और अपनी परगह सहित अपने समान धर्मवाले(इके) को रोककर सन्नद्ध, घोड़े पर सवार हुए इके के सन्मुख आते समय मन में सावधान मनुष्यों के कोलाहल से जाहिरा सचेत होकर चहुवाणराज का शत्रु के प्रिय युद्ध को पूछना, उस अतिवीर यवन के भाले से कवच सहित कांख कटने पर वेधनेवाले वाहन सहित शत्रु के शरीर को

ताऽश्वसमारोहण २६, नोद्धृतस्वशक्तिप्रत्यागतसमाहूतस्वसैन्यसङ्ग्रामसम्मिलितसौभाण्डिशक्तिसंस्थितस्थितद्वेषिदर्शनार्थपुनारङ्गस्थलागमन २७, दूरदृष्टसजीवसन्देहकससप्तिस्थितसंस्थितसपत्नढक्कूपुत्रपूर्णमल्लमेदपाटमहीपमारणाच्छलख्यापनावसरहड्डेन्द्रयथाप्रत्ययसमीपसमानीतसर्वस्वान्तसन्देहसमपाकरण २८, दृष्टशक्त्युद्धरणाऽसमर्थस्वसामन्तशीषोंदसश्लाघाविज्ञप्तमार्गितराणासप्तिसमारूढशाक्म्भरस्वशक्तिसमुद्धरणाऽवसरतत्तुरगव्यसुत्व १ वैकल्य २ विचिकित्साविख्यापन २९, समात्तस्वबलोचितयवनयुगाश्वऽश्वयुग्मास्नङ्गीकृतराणाढौकितसर्वस्वसौभाण्डिशेषशत्रुसर्वोपहारशीषोंदपस्त्यप्रस्थापन ३०, मेदपाटपतिमहोपकारसूचनाऽवसरदर्शि न तिदर्शनसमुपकारलेशशून्यपुष्टीकृतसहायधर्महड्ड १ शीषोंद २ जगतीजानिजकुट२ प्रत्यागमन ३१, सौधसभासहसमागतसिंहासनाऽऽ

फाड़कर बुन्दीश की लोहे की बर्छी की नोक का हाथ भर पृथ्वी में प्रवेश करना, पहले था उसी स्थिति में घोड़े सहित यवन वीर को मृतक करके अतिबल के आघात से टूटीहुई कमरवाले अपने घोड़े को छोड़कर साथ सहित भगेहुए दूसरे शक के घोड़े पर चढना, अपनी शक्ति नहीं निकाल कर पीछे आकर अपनी सेना को बुलाकर सङ्ग्रामसिंह से मिलकर सुभाण्ड के पुत्र का शक्ति से म. हुए और ठहरे हुए शत्रु को दिखाने को फिर युद्ध स्थल में आना, घोड़े सहित खड़े मरेहुए शत्रु को दूर से देखकर जीवित होने के सन्देह से अपने शत्रु ढक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल का मेवाड़ के महीप को मारने का छल जनाने के समय हड्डेन्द्र का जिसप्रकार विश्वास आवे तिसप्रकार समीप लाकर सब के मन का सन्देह मिटाना, अपने उमरावों को बर्छी पीछी निकालने में असमर्थ देखकर शीषोदिये के प्रशंसा सहित विज्ञप्ति करने पर राणा से घोड़ा मांग कर उस पर चढेहुए चहुवाण के शक्ति निकालने के समय उस घोड़े के मरने अथवा विकल होने के सन्देह की सूचना करना, अपने बल के उचित दोनों यवनों के दो घोड़े लेकर राणा के भेट कियेहुए सर्वस्व का अस्वीकार करके सुभाण्ड के पुत्र का शत्रु की बाकी की सब सामग्री शीषोदिये के घर में भेजना, मेवाड़ के पति के इस बड़े उपकार की सूचना करने के समय पहिले के अनेक राजाओं के दृष्टान्त दिखाकर उपकार के लेश रहित सहायता करने में धर्म की पुष्टि दिखाकर हाडा और शीषोदिया दोनों राजाओं

सनाऽवसरराणामुक्ता १ दिमहोपहारमत्सरिमहीपदोर्दण्डसपर्या साधन ३२, वप्तृवैरविज्वलितस्वान्तासंश्रुतस्वामिसाध्वसबहि र्वरिवस्याविधित्सुपौर्विक १ पूर्णमल्लोपेतपक्षद्वय २ परिषत्प्रवी रप्रगुणप्राभृतप्रढौकनपुरस्सरपारियात्रप्रान्तपार्थिवोपरिसमुचितस्वा पतेयसमुत्तारण ३३, स्वानुजसुता १ ज्येष्ठश्वश्रू २ श्वश्रू ३ समुचि तोपदो २ त्तारण २ पर्षत्प्रेषणक्षणसुतास्वापतेयवार्जितस्वीकृतस- र्वसमुचितसम्भारसहभुक्तशिबिरागतबुंदीशवारवारविशिष्टाविद्यावि लासवेलाद्रम्मायुत १०००० वितरण ३४, समनुष्ठितसायंसन्ध्या दिकबुन्दीस्वामिसमीपराणाप्रत्यब्दप्रतिज्ञातप्रोक्तप्रमाणपीलु १ प्र थि२ कृपाणो ३ पासङ्ग ४ मदरासन ५ पट ६ पट्ट ७ प्राभृतप्रेषण ऽवसरनिर्मितनर्मावनीशकृपाण १ कट्टार २ रिक्तप्रत्यागारयुग २ याचन ३५, स्वीकृतश्रुतैतदुदन्तसंग्रामप्रेषितप्रोक्तप्रहरणापिधानयु ग्म २ प्रापकपरिजनार्थदत्तद्रम्मशतचतुष्क ४०० सौभाण्डश्वःशि विरागतराणासहनिःशलाकमन्त्रणामतमन्तुम्लेच्छराजयुग्मा २ ग

का पीछा आना, महलों की सभा में साथ आकर दोनों के सिंहासन पर बैठ ने के समय राणा का मोती आदि बड़ी सामग्री से चहुवाण के भुजों की पूजा करना, पिता के वैर से भीतर से जलते हुए और बाहर से स्वामी के भय से शुश्रूषा करते हुए पूरबिया पूर्णमल्ल सहित सभा के दोनों पक्ष की सभा के वी रों के विशेष गुणवाला नजराना अर्पण करने पर बुन्दी के प्रान्त के राजा के ऊपर उचित न्योछावर करना, अपने छोटे भाई की बेटी और बड़सासू तथा सासू के सभा में उचित नजराना और न्योछावर भेजने के समय बेटी के धन को निवारण करके अन्य सब उचित सामग्री स्वीकार करके साथ भोजन करके डेरे में आकर बुन्दीश का विद्या विलास के समय विशिष्ट वेश्या को दश हजार रुपये देना, सायंकाल की सन्ध्या किये पीछे बुन्दी के स्वामि के पास राणा का सालियाना भेजने की प्रतिज्ञा सहित हाथी, घोड़ा, खड्ग, भाथा, धनुष, वस्त्र और शिरपेच आदि भेट भेजने के समय राजा का हँसी करके खड्ग और कटार से खाली दो म्यान मांगना, इस वृत्तान्त को सुनकर संग्रामसिंह के भेजेहुए ऊपर कहेहुए शस्त्रों के दो म्यान लानेवाले लोकों के अर्थ चार सौ रुपये देनेवाले सुभाण्ड के पुत्र का अपने डेरे पर आयेहुए राणा के साथ एकान्त में सलाह करके इस अप

मपरस्परसहायस्वीकरण ३६, विहितविविधवर्करविलासाचित्रकूटव्यतीतैक १ माससौभाग्डिसौदर्यसुतासंग्रामसहधर्मिणीसहितस्वस्थानीयसमागमन ३७, विज्ञातविरोधिवीरविध्वंसवृत्तान्तप्राप्तेन्द्रप्रस्थपुरपट्टप्रत्यन्तपरिवृढयवनेन्द्रबाबर ३० सौभाग्डिसदृशस्वसैन्यसहायसाधनसोत्कण्ठीभवन ३८, योधपुरपार्थिवराष्ट्रकूटराजगाङ्गतनुत्यागानन्तरतत्तनूजमालवमरुस्वामित्वसमासादनं ३९ षड्विंशोऽ२६ मयूखः ॥ २६ ॥

आदितस्त्रिसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

नृप पहिलैं नरवद १८७।१ अनुज, पाई संतति पंच५ ॥
तिनमैं चउ४ सूचित तनुज, रन देर न जिन्ह रंच ॥ १ ॥
निज कुमरन सिसुपन नृपति, जुब्बन वय तिन्ह जानि ॥
ब्याहे च्यारि४हु नारबैद, पहिलैं उचित प्रमानि ॥ २ ॥

षट्पात् ॥

क्रम गुहिल्लपुत्र कुल दास१ अर्जुन२ अभिधा दुव२ ॥
तनयातस जयवतिय१८८।१ हड्ड अर्जुन१८८।१ ब्याहतहुव ॥
सूर कबंध सुताहु ऊढ मीराँ१८८।२ दूजी२ यह ॥

राध से दोनों बादशाहों के आने पर परस्पर सहाय स्वीकार करना, नाना प्रकार के परिहास के विलास से चित्तोड़ में एक मास बिताकर सुभाग्ड के पुत्र का अपनी पुत्री और महाराणा सांगा की राणी हाड़ी सहित अपने स्थान पर आना, अपने शत्रुओं के वीरों का नाश होने की सूचना मिलने पर दिल्ली के बादशाह म्लेच्छराज बाबर का नारायणदास के सदृश राजा का अपनी सेना के सहायक होने की उत्कण्ठा करना, जोधपुर के राजा राठोड़राज गांगा के देहान्त हुए पीछे उसके पुत्र मालदेव का मारवाड़ के स्वामिपन को लेने का २६वां मयूख समाप्त हुआ॥२६॥ और आदि से १७३ मयूख हुए॥
१कदेहुए ॥१॥२उन नरबद के पुत्रों का३नरबद के पुत्र॥२॥ दो४नामवाला५ब्याहा

*सीसउद संग्राम सुता केसरकुमरि१८८।३ सह ॥
भगवंतसिंह **कूरम कनी नाम आयोध्या१८८।४जुत निपुन॥
क्रिय चउ४बिबाह अर्जुन१८८।१कुमर नरवद१८८।२सुत÷पाटवप्रगुन३

दोहा ॥

भीम१८८।२ कुमर दूजौ२ भन्यौं, ×चवहिं ब्याह तसच्यारि ४॥
दुजनसिंह तोमर सुता, पहलीकुसलकुमारि१८८।१ ॥ ४ ॥
भोजाउत चालुक सुभट, अखयसिंह तनया सु ॥
क्रम ब्याह्यो अनुपमकुमारि १८८।२, उपयम दूजे २ आसु ॥५॥
कन्या कूरम भीमकी, या १८८।२ हीके अभिधान ॥
ब्याह्यो अनुपमकुमरि१८८।३ बलि, ब्याह तृतीय३ बिधान॥६॥
लालसिंह तनया ललित, ब्याहि चतुर्थ ४ विवाह ॥
अखयकुमरि १८८।४ पामारि इम, लिन्नौं नृप जसलाह ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

तीजो ३ नरबद१८७।२ तनय जुग२ हि अभिधान बिदित जस॥
पूरनमल्ल १८८।३ रु पूर १८८।३ त्रय ३ हि उपयम किन्नैं तस ॥
अखयराज सीसउद कनी पहिलैं १ राजकुमरि १८८।१ ॥
सदाकुमरि १८८।२ सोलंखि मान तनया बलि लिय बरि ॥
सुंदर कबंध तनया सुघर तीजी ३ फुल्लकुमारि १८८।३ तिम ॥
मुकल१८८।४चतुर्थ४ब्याह्यो महिप उपयम चउ४सुनियेबइम॥८॥

॥ दोहा ॥

कर्मध्वज सेदू कनी, उदयकुमारि १८८।१ बरि आसु ॥
बरि सृंगारकुमारि १८८।२ बलि, चालुक ढोल्ल सुता सु ॥ ९ ॥

---

* शीषोदिया **कछवाहे की पुत्री ÷ चतुराई ॥ ३ ॥ × कहेंगे ॥ ४ ॥
१ विवाह २ शीघ्र ॥ ५ ॥ उसी ३ नामवाली (अनोपकँवर) ४ फिर ॥ ६ ॥ ७ ॥
दो ५नाम ६ विवाह ७ शीषोदिया ८ पुत्री ९ मानसिंह की पुत्री १०चतुर ११
अब ॥ ८ ॥ १२ कर्मध्वज (राठोड़) ॥ ९ ॥

जद्दव[1] मदन सुताहु जिम, रूपकुमरि १८८।३ अभिरूप[2] ॥
वर मुकल१८८।४ तीजी३ बरिय, भ्रातृज[3] मद्द किय भूप ॥१०॥
उग्रसेन सुत कुम्म[4] इम, अक्खयराज जु आहि[5] ॥
कन्या तस सुंदरकुमरि १८७।४, वर चोथी४ लिय ब्याहि ॥११॥
सब ब्याहे पहिलेसमय, नरबद १८७।२ सुत नरनाह ॥
मुख्यकुमर[6] रविवल्ल[7]१८८।१के, बलि[8] किय च्यारि४विबाहि ॥१२॥
नृप झल्लो[9] पुरनिंबड़ी, किरं[10] कल्लयान कनी सु ॥
प्रथम१ समर्थकुमारि १८८।१ पट्ट, पट्टकुमर१८८।१परनी सु ॥१३॥
सुपहु उदय कूरम सुता, केसरकुमरि १८८।२ कुमार ॥
दूजे २ उपयम यह दुलह, परन्यों सुमँह[11] पसार ॥ १४ ॥
सुता रामपुर ईसकी, नाम समानकुमारि १८८।३ ॥
चंद्रावति तीजी ३ चतुर, ब्याह्यो सुजस विथारि ॥ १५ ॥
उदयसिंह १ सारंग २ इम, जुग[12] २ अभिधाँ स्फुटं[13] जास ॥
नृप प्रमारकुल श्रीनगर, तनया दुव २ हुव तास ॥ १६ ॥
रान[14]कुमर पट्टप[15] मरत, भोज २ जु प्रथम भन्यों सु ॥
रतनसिंह २ पट्टप रह्यो, श्रीनगरहु परन्यों सु ॥ १७ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुता बडी सारंग रानकुमरहिं परिनाई ॥
राजकुमरि रविमल्ल १८८।२ परानि अनुजा[16] तस पाई ॥
पंच ५ हि कुमरन सुपहु महँन[17] एकोनबीस १९ मित ॥
विरचे रुचिर विबाह अनुज[18] सिरको भँर[19] लै इत ॥
बाबर ३० अधीस दिल्लिय बन्यों उपयंम[20] तासों पुब्बं[21] इम ॥

१यादव२सदृश३भतीजे का ॥१०॥४कछवाहा५है ॥ ११ ॥६पाटवी कुमर७सूर्यमल्ल के८फिर ॥ १२ ॥९झाला१०किल (निश्चय) ॥ १३ ॥११श्रेष्ठ उत्सव फैलाकर ॥१४॥ १५ ॥दो१२नाम१३स्पष्ट॥ १६ ॥१४महाराणा का१५पाटवी कुमर ॥१७॥ १६छोटी बहिन१७उत्सव१८छोटे भाई के मस्तक का१९भार लेकर२०विवाह. बाबर बादशाह दिल्ली का स्वामि बना जिससे२१ पहले

आये न स्मरन व्हाँ तव इहाँ जंपिय मूत१प्रवृत्त२जिम ॥१८॥

॥ दोहा ॥

सक२ हायन पैंसट्ठि ६५ तैं, कढत लग्नहित केर ॥
अर्जुन१८८।१ अरु त्रय३ तस अनुज, व्याहे निजनिज बेर३ ।१९।
सक इकऊन असीति ७९ लग, सोलह १६ सम अरिसल्ल ॥
क्रम इम च्यारि४विवाह किय, मुख्य कुमर रविमल्ल १८८।१।२०।
किते कुमर रविमल्ल१८८।१के, बरनत पंच५ विवाह ॥
चालुकजा५ तँहँ पंचमी५, ते मन्नत नरनाँह ॥ २१ ॥
इम सहस्रमल्ल१रु अनुज, सप्तत्न२ समय विसेस ॥
सुता नृपन तिन्ह वर्षासम, व्याही हुव२ वसुधेस ॥ २२ ॥
संतति अब कहियत सबन, कति हुव१ पूरवकाल ॥
कतिक होत२ व्है हैं३ कतिक, पै सब सुनहु नृपाल ॥२३॥
कुमर खट६ रु इक१ कन्यका, सप्त७हि कुल संतान ॥
क्रम पाये जेठेकुमर, अर्जुन१८८।१ प्रधन९ अमान ॥२४ ॥

षट्पात् ॥

सुर्जन१८९।१अक्खयराज१८९।२राम१८९।३जेठी१८९।१कुमरानिय
जिम मीराँ१८८।१ रह्रौरि जनत खांधिल१८९।४ इक१ जानिय ॥
जुग२हि जनैं सीसोदनी१८८।३कुसरन१८९।५रु लवनकरन १८९।६
कछवाही१८९।४भव कुमरि इक१ गौरी१८९।१लघु सब सनैं॥
पहिलेकुमार कुलधर १०थित तीन३ भये प्रभु१२ राम २०३।४तँहँ ॥
खिल१३ चउ४अपत्य१४ लघुवय खंपिय करहु श्रवन खिल वंसकँहँ।२५।

यहां याद नहीं आयें इस कारण से १ गयाहुआ वृत्तान्त कहा ॥ १८ ॥
२ विक्रम के शक के ३ समय ॥ १९ ॥ ४ उनासी का सम्वत्. सोलह
५वर्ष की अवस्था में शत्रुओं के साल ६ सूर्यमल्ल ने ॥२०॥ ७ हे राजा ॥२१॥
८ राजा ने ॥ २२ ॥ २३ ॥ ९ युद्ध में ॥ २४ ॥ १०से ११मसिद्ध १२हे प्रभु रामसिंह १३ बाकी के १४ सन्तान १५ मरगये ॥ २५ ॥

दोहा ॥

जे गद्दीपतिके अनुज, वदे सबन तिन्ह व्याह ॥
भेदमात्र कुलके भनैं, तिन्ह पुत्रन *नरनाह ॥ २६ ॥
अब नारायन१८७।१ कुल इहाँ, व्है हैं गद्दिप हीन ॥
सुर्जन१८९।१ यह सुरतान१८९।१ **सन, पैहैं राज्य प्रवीन ।२७।
यातैं नरबद१८७।२ ***अंगजन, वरनैं सबन बिवाह ॥
प्रभुको यह कुलपरपुरुख, रचि स्वधर्म निर्वाह ॥ २८ ॥

पादाकुलकम् ॥

अर्जुन१८८।१अनुजभीम१८८।२जोजानहुप्रभु[1]तसपुत्रहिपंच५प्रमानहु
सिंह१८९।१अमान१८९।२नामतँहँद्वै२सुतजनैंपूबीरतोमरी १गुनजुत
इक१सुतकन्ह१८६।३चालुकी[2]औरसतीजी३सुत्तिय१८९।४जगन्नाथ१८९।५तस
मरे[3]अनूढअनुजचउ४मानियतिनमैंज्येष्टसिंह१८९।१कुलतानिय[4]।३०।
अभिधा[5]अपर[6]२अर्जुन१८९।१हुयाकी,तिमजगअवबहुकीर्त्ति[7]ध्रुवताकी
अर्जुन१८८।१कुल०हैहैंप्रभु[9]यातैं,मुख्यसिंह१८६।१नरबद१८८।२कुलतातैं
नाम जैतगढ ताहि निवेसन[10], दायभाग दिन्नौं धरनीधन[11] ॥
सिंहोलाव१स्वनाम[12]सरोवर,बिरच्योतत्थसिंह१८९।१जगहितबर।३२।
अरु प्रासाद२ जैतगढ अंतर, बिरंच्यो अद्रिकटक[13] सह विस्तर[14] ॥
इहनतसकुलभेदसोलहम१६सिंह१भीम२पोते१६काहियत सम।३३।
है यहकुल चर्म्मलि[15] परतट हद, अब हतोर१ बिल्लहैंडि२उकावद३
भीम१८८।२अनुज[16]पूरन१८८।३जोभाखियकहियजथाउपयम[17]त्रय३जिसिकिय
जाकैमान१८९।१कुमरहुवगुनजुतसीसोदनि१औरसइक१हिसुत ॥

---

*हे राजा ।२६। सुलतान **से ।२७। नरवदके***पुत्रोंके ॥२८॥ १हे प्रभु ॥२९॥ २सोलंखिनी के उदर से ३विना विवाहे४कैलाश ॥३०॥५नाम ६दूसरा ७कीर्ति ८निश्चय ९ बुन्दी का स्वामि होवेगा इस कारण से ॥ ३१ ॥ १० रहने के लिये ११राजा ने१२अपने नाम का तालाव ॥३२॥ १३ पर्वत के शिखर पर१४विस्तार से ॥ ३३ ॥ १५ चामल नदी के उस पार १६ छोटा भाई १७ विवाह ॥३४॥

जब कुंदिय पाई नृपसुर्जन१८९।१, पुरकोटालियभंजिपठानन ॥३५॥
तँहँ सह वीरमान १८९।२ पूरन १८८।३ सुत,
व्है जय *हेतु भयो **हेतिन *** हुत ॥
पातें मान१८९।१कुल सु विरुदायत, कोटारन जयकार कहावत॥३६॥
हम्मीर१९०।१हिंदु१मान१८९।१तनयहुव, दान१कृपान२वहीजिहिंधुरदुव
॥ ३७ ॥
जब सुपुत्र कुलमैं निपजैं जो, वंसहि सब तस नाम बजैं जो ॥
पूराउत१७उपपद धारक धुव, हड्डन भेद सत्रहम १७ जो हुव ।३८।
ता कुलके तबतैं छक्क छज्जत, बलि हम्मीरके१७हि सब बज्जत ॥
पायउपुरहिंडोलियपूरन१८८।३बिरचेहंम्म१९०।१महल१सर२उपवन३
तत्थहिमर्युअबराम२०३।४वंसतस, रन१वितरन२अनुपमचक्खनरंस
पूर१८८।३अनुजचोथो४मुक्कल१८८।४पटुकियाबिवाहचउ४जिहिंसंपत्नकटु
दायँ द्रंगँ जिहिं जक्खमूल दिय, पुत्र बिदित ताकै खट६प्रकटिय ॥
रायमल्ल ८९। पित्थल१८९।२विजयीरन,सुतदुव२हुवरढोरि प्रसवसन
इक१गोपाल१८९।३चालुकी२ओरस,तीजी३चउभुज१८९।४राजसिंह१८९।५तस
इक१हम्मीर१८९।६ जन्यौं कछवाही४,हुव इम खट६द्राहिनें रनदाही
॥ दोहा ॥
कुल पित्थल१८९।२ गोपाल१८९।३ के, उभय२चले अवनीस॥
च्यारि४नके वंस न चले, अैसे स्थल बिधि ईस ॥ ४३ ॥
प्रसिधा मुकलपौत्र १८ पद, कुल सब तास कहात ॥

॥ ३५ ॥ विजय का *कारण ** शस्त्रों से *** होम हुआ १कोटा के युद्ध का २ विजय करने वाला ॥ ३६ ॥ ३ पुत्र. धुर ४ धारण करी ॥ ३७ ॥ ५ पदवी ॥ ३८ ॥ ६ कहलाते हैं ७ नाम ॥ ३९ ॥ ८हे प्रभु रामसिंह ९दान में १० छोटा सार्ह ११शत्रुओं को कडुआ लगनेवाला ॥ ४० ॥ १२ दाय भाग में १३ नगर ॥४१॥ १४ चतुर्भुज १५ शत्रुओं को युद्ध में जलानेवाला ॥ ४२ ॥ १६हे राजा १७ ब्रह्मा ईश मालिक है ॥ ४३ ॥ १८ नाम

हड्डनमैं अट्ठारहम १८, यह साखा स्फुट आत ॥ ४४ ॥
मुक्कल १८८।४ को नत्ती सुमन, बैरिसल्ल १९०।१ हुव बीर ॥
बैराउत्त १८ हु इम बजत, साखा यह समसीर ॥ ४५ ॥
बहु देवालय बापिका २, सौध ३ बेल ४ पथ सत्थ ॥
किय मुक्कल १८८।४ अरु तास कुल १८, जक्खमूल पुर जत्थ ॥ ४६ ॥
संतति इम नरबद्द १८७।१ सुतन, बरनी प्रभु सबिबेक ॥
सुनिये अब रविमल्ल १८८।१ सुत, अधम बंसअरि एक ॥ ४७ ॥
कुमरानी तीजी ३ कहिय, चन्द्राउति ३ क्रम चाहि ॥
कुमर इक्क १ रविमल्ल १८८।१ कै, हुव तामैं तँहँ दाहि ॥ ४८ ॥
जानैं को को लग्न १ जँहँ, को खिन २ कौन कुजोग ३ ॥
किन्हबल हाँ प्रबिसैं जठर, रानिन असे रोग ॥ ४९ ॥
कुमर कुमर रविमल्ल १८८।१ कै, तस अभिधा सुरतान १८९।१ ॥
जैहैं बुंदिय जाहिसौं, ह्वैहैं प्रभुता हान ॥ ५० ॥
सर हय तिथि १५७५ सक हुव सुमति, सुर्जन १८६।१ अर्जुन १८८।२ सून ॥
नभ गज तिथि १५८० नृपसूनुकैं, इत सुरतान १८९।१ सु ऊन ॥ ५१ ॥
सक मिति एकासीति ८१ सौं, इत्यादिक बहु आदि ॥
उपजे १ अरु कछु हौरहिं अब, सूचित क्रम संपादि ॥ ५२ ॥
तिहिं अवसर दिल्लिय तखत, बाबर ३० मुगल बइट्ठ ॥
ताही अवसर हड्ड १ तँहँ, इक्क २ हनिय रन इट्ठ ॥ ५३ ॥
बइट्ठ १ नइट्ठ २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
सो ससि बसु तिथि १५८१ सकसमय, इत लग्गत अवनीस ॥

१ प्रसिद्ध ॥ ४४ ॥ २ पोता ३ श्रेष्ट मनवाला ४ बराबर हिस्सेदार ॥ ४५ ॥ ५ बावड़ी ६ महल ७ बाग ८ खरच से ॥ ४६ ॥ ९ हे प्रभु १० विचार पूर्वक ११ सूर्यमल्ल का १२ नीच १३ वंश का शत्रु ॥ ४७ ॥ उसको १४ जलानेवाला ॥ ४८ ॥ १५ कौन जाने उस समय कौन लग्न था और किस समय में किस खोटे योग में १६ किनके बल से १७ खेद है कि १८ पेट में प्रवेश होते हैं ॥ ४९ ॥ जिसका १९ नाम सुरतानसिंह था ॥ ५० ॥ २० राजा के पुत्र सूर्यमल्ल के २१ क्रम ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ २२ इष्ट (अनुकूल) ॥ ५३ ॥ २३ हे राजा रामसिंह ॥ ५४ ॥

हड्डन जयमय विदित हुव, सुजसछत्त भुवसीस ॥ ५४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रचतुर्बाहुमद् १ बीजयवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरविख्यापनीयबुन्दीवसुधावरहड्डाधिराजनारायणदास १८७।१ चरित्रे सूचितसम्वत्समयपूर्वबुन्दीशस्वसन्ततिपाणिपीडनपूर्वस्वानुजनरबद १८७।२ प्रौढपुत्रचतुष्क ४ परिणायन १, ज्येष्ठकुमाराऽर्जुन १८८।१ गुहिलपुत्रीजयवत्या १८८।१ दिपत्नीचतुष्टय४ द्वितीय२ भीम १८८।२ तोमरी १८८।१प्रभृतिजायाचतुष्क ४ तृतीय ३ पूर्णमल्ल१८८।३ शैषोदी १८८।१ प्रमुखजायालिक ३ चतुर्थ ४ मोकल१८८।४ राष्ट्रकूटी १८८।१ पुरोगभार्याचतुष्टयी ४ सानुक्रमपरिणायन२, तदनन्तरहड्डाधिराजसमयप्राप्तयुवजयस्करस्वकीयपट्टपतिकुमारसूर्यमल्ल१८८।१मंकुवाणी १८८।१ प्रभृतिसहधर्मिणीचतुष्क ४ पाणिग्रहण ३, तत्पञ्चम५ विवाहसन्देहसूचनापुरस्सरभोजिष्येयसहस्रमल्ल १ सप्तल २ सोदरद्वय

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में प्रसिद्ध करने योग्य बुन्दी के भूपति नारायणदास के चरित्र में जनायेहुए सम्वत् के पूर्व बुन्दीश का अपनी सन्तान के विवाह करने से पहले अपने छोटे भाई नरबद के बलिष्ट चार पुत्रों का विवाह करना, बडे कुमर अर्जुन को गुहिल पुत्री जयवती आदि चार स्त्रियें, तीसरे पूर्णमल्ल को शीषोदिनी आदि तीन स्त्रियें और चौथे मोकल को राठोड़ी आदि चार स्त्रियें अनुक्रम से व्याहना, जिस पीछे हड्डाधिराज का समय पर युवावस्था प्राप्त होने पर अपने पाटवी पुत्र सूर्यमल्ल को झाली आदि चार स्त्रियें व्याहना, पांचवें विवाह में सन्देह की सूचना करने के साथ पासवान के पुत्र सहस्रमल्ल और सातल को अपने अपने वर्ण की कन्या विवाहना, नरबद के जेष्ठ कुमर अर्जुन के औरस पुत्रों की प्रत्येक माताओं की प्रतीति के साथ उनमें प्रथम हुए और आगे होनेवाले सुर्जन करण आदि बडे तीन कुमरों

स्वसवर्णकन्यायुग२करग्रहणात्४, नारवदज्येष्ठकुमाराऽर्जुनो१८८।१
रसप्रत्येक १ प्रसूप्रतीतिप्रथमोपेतभूत १ भावि २ सुर्जन १८९।
१ कर्णा १८९।१ दिज्येष्ठकुमारत्रय ३ वंशप्रवर्तिष्यमाणत्व १ शि
ष्टचतुष्टय ४ निस्सन्ततिसंस्थास्यमानत्व २ शंसनसहितमाप्स्यमा
नपुत्रपार्थिवत्वनिदानककुमारार्जुना १८८।१ऽनुजत्रय ३ प्रत्येक१
पाणिपीडनसंख्यासमर्थन५, दायप्राप्तजैत्रदुर्गाद्वितीय २ नारवदभी
म १८८।२ सुतसिंह१८९।१ सन्तानसिंहभीमपुत्रो १६ पटंकिहड्डकु
लषोडश१६ भेदभाविताभाषणा६, वराटविभक्तहीराडोलीनिवेशतृ
तीय ३ नारवदपूर्णमल्ल १८८।३ वंशतत्पुत्रहम्मीर १९०।१ हेतुकह
म्मीरको१७ पटंकिहड्डकुलसप्तदश१७ भेदप्रवर्तिष्यमाणत्वप्रकट
न७,वसुधाविभागाप्तयात्तमूलचतुर्थ४नारवदमोत्कला१८८।१ऽन्वय
स्वान्तर्भूतभविष्यद्भेदान्तसहितमोत्कलपौत्रो१८ पपदकहड्ड१ वंशा
ष्टादश१८भेदभविष्यमाणतांख्यापन८,हड्डाधिराजमुख्यकुमारसूर्य
मल्लौ १८८।१ रसैक १ कुमाराऽधमसुरत्राण१८९।१ हड्डवतीराज्य

के वंश की प्रवृत्ति और बाकी के चारों के निस्सन्तान जाने के कथन के साथ
इसका पुत्र राज पावेगा इस कारण कुमर अर्जुन के तीनों भाइयों के प्रत्येक
विवाह की गणना का समर्थन करना, जैत्रगढ पानेवाले नरवद के दूसरे पुत्र
भीम के पुत्र सिंह के सन्तान का 'सिंहभीमपोता' इस पदवी से आनेवाले
समय में हाडों के कुल में सोलहवें भेद का कथन, बंट में हिंडोली पानेवाले
नरवद के तीसरे पुत्र पूर्णमल्ल के वंश में उसके पुत्र हम्मीर के कारण 'हम्मीर
का' इस पदवी से हाडों के कुल में सत्रहवें भेद की प्रवृत्ति प्रकटना, भूमि के
विभाग में जड़खमूल पानेवाले नरवद के चौथे पुत्र मोकल के वंश में अपने भीतर
आगे होनेवाले भेद सहित 'मोकलपोता' इस पदवी से हाडों के वंश में अठा
रहवें भेद की सूचना करना, हड्डाधिराज के पाटवी कुमर सूर्यमल्ल के एक और
अधम पुत्र सुरताण से आगे आनेवाले समय में हाडोती के राज्य की हानि दिख
ना, कथा के सम्वत् से पहले समय में जनायेहुए अपने अपने सम्वत् में उत्प
भिन्न अवस्था के अन्तर से सुर्जन का सुरतान से पहले होना और बाकी सन्ता
का सुरताण के जन्म सम्वत् से पीछे जन्म होने का समर्थन करना, बुन्दीश के ३

हानोदर्कदर्शन ९, कथाऽवधिशकप्राक्समयसूचितस्वस्वशकसमु
कृतविविक्तवयोन्तरसुजन१८९११ सुरत्राणा १८६१२ दिप्राथम्यपूर्व
कखिलसन्ततितच्छकार्वाचीनकालसमुद्भवनसमर्थन १०, बुन्दीश
कुमारकुमारसुरत्राण १८९११सम्भवशकानन्तरवर्षयवनेन्द्रमुगलबा
बर ३० दिल्लीपट्टप्रापणासमकालहड्डराडिक्कोपटंकियवनप्रवीरशति
घातनं ११ सप्तविंशो २७ मयूखः ॥ २७ ॥

आदितश्चतुःसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

सूचित सक १५८१ लग्गत समय, बैरिन कारि द्दहबट्ट ॥
माधवऋतु बाबर ३० मुगल, पायो दिल्लिय पट्ट ॥ १ ॥
तदनंतर ग्रीखम तपत, सुनि मिच्छन बल सोर ॥
हड्ड१ नृपति इक्का १ हन्यौं, चढि इक्कल[3]१ चित्तोर ॥ २ ॥

घनाक्षरी ॥

अनुजसुता जो रान रानी नाम कर्मवति १८८१२,
व्हाँही ताहि बुंदिय लिवाइआयो चहुवान ॥
ताके आनिवेकौं बीच पाउस[4] बिताइ सबैं,
सारद[5] सहस्रपंच ५००० पृतना[6] पठाई रान ॥
अर्द्धपति अंगीकृत[8] कीनौं उपहार सोहू,
संगहि पठायो गजे १ तुरग २ असि ३ प्रधान ॥

मर सूर्यमल्ल के कुमार सुरताण के जन्म के सम्वत् से पीछे यवनों के बादशा
छ मुगल बाबर का दिल्ली के पाट पाने के समय में हड्डराज का इक्का प
दवी वाले यवन वीर को मारने का २७ वां मयूख समाप्त हुआ ॥२७॥ और
आदि से १७४ मयूख हुए ॥

१ बरबाद २ वसन्त ऋतु में ॥ १ ॥ ३इकल्ले ने चढकर इक्के को मारा ॥ २ ॥
४वर्षा ऋतु बिताकर ५शरद ऋतु में ६ सेना ७सालाना ८स्वीकार किया ९नि
जराना तलवार का १०म्यान

सामंत १ रु सचिव २ सु लैकैं इहाँ आये बिजै-
दसमी१० के दिवस निवेद्यो सबै सनमान ॥ ३ ॥
आयो संग रानको सनाभि बंधु सूर सोहू,
रीझत रमायो मृगया १ दिक घनैं प्रकार ॥
पच्छ इक १ राखि प्रिय पाहुनैं प्रचुर प्रेम,
दीनी सखि अनुजसुताकों दै बिभव बार ॥
ओरओर जोर जवननको निरखि घोर,
दीनों संग सोदरकोअर्जुन१८८।१ बडो कुमार ॥
बिक्रम १ उदय २ दो २ हू दोहिते लगाइ उर,
चित्रकूट पठये चमू प्रसर मंदचार ॥ ४ ॥
राखिकछु बुंदीकी चमूकों सीखदेत सारो,
अर्जुन १८८।१ कुमार राख्यो नीठिन निहोरि रान ॥
रायपुर पत्तनसों पैंसठिसहँस ६५००० पटा,
हठन भिलायो स्वीयं सौंहँ प्रतिभू प्रमान ॥
बिन्नतिलों बुंदिय कहाइ नृपसम्मतिसों,
ताको अवरोधहु बुलायो चित्रकूटथान ॥
सुर्जन १८९।१ प्रमुख च्यारि ४ पहिले निवारि प्रजा,
अर्जुन१८८।१कै इतर तहाँही भई हढदान ॥ ५ ॥
इक्का एक १ मार्‌यो दूजो २ प्रान दै प्रतार्‌यो सुनि,
उरतैं उभैरही जवनेस लायं लाय लाइं ॥
साजिदलव्हलबिताइबरखाकोंनीठि,चालेमहमूद१रुमुदाफर२धरेंधुजाइ

१उमराव॥३॥२सपिंडभाई३पन्द्रह दिनतक४बहुत स्नेह से५समूह६सेना७फैला कर८धीरे चलनेवाली अर्थात् युद्धमें नहीं भगनेवाली॥४॥रायपुर नामक९नगर देकर१० अपनी११ सौगनों की १२ जमानत देकर १३ राजा की सलाह से उसके१४जनाने को भी चित्तोड़ बुलाया. सुर्जन १५आदि पहिले की चार १६ सन्तानको छोडकर १७अन्य॥५॥दूसरे इक्के को प्राण देकर १८निकाला सुनकर हृदय में १९ अग्नि अग्नि २० लाकर २१ भूमि को धुजातेहुए

तोपनतैं गैल गढ लोपन करत दोहू २,
आवत मिले यों पंच५ जोजनपैं प्रीतिपाइ ॥
मोतिके खजानाँ खोलिवेकों महिमान होइ,
चित्रकूट १ बुंदी२के चलाये छूमें छोनीछाइ ॥ ६ ॥
मानों आयो चित्रकूट१ लखि पाहुनैं प्रथम१पंथ,
लैन महिमानी पहिले १ की पहिलैं१ कैं ख्यात ॥
बुंदी२कों वहोरि देखिवेकहि अहोरि ओघ,
जोरि जिह्वगावृत्त प्रसार्यो पृतनाको पात ॥
अहमदनैर१ मंडूर२ अर्णव उभय२ फूटि,
आये मेदपाट भर भीकर भ्रमन भातें ॥
ज्वाला जैरदायो दुर्ग रानको बिहानें वेढ्यो,
मानों गरदायों मेरु दैत्य १ दनुजात २ जात ॥ ७ ॥
आतेज़ानि अरिन बुलायो चहुवान १ रान २,
पाइ कछु कारन बिलंबि सोंपे नरनाह ॥
अद्ध १/२ बल बुंदीराखि अनुज बडे १८७१२ सहित,
नीठि निजपुत्र रविमल्ल १८८११ हि अति उछाह ॥
दल १/२ दल सज्जि गो इतेमें नृप नारायन १८७१२,
थप्पि वीर बाहिर कितेक देन रतिबाह ॥
झारि तरवारि बारि वैरिनकी फारि पूगो,
जैसें जुग २ सिंहनमें बिक्रम बली बराह ॥ ८ ॥

१मार्ग के गढ़ों को मिटाते हुए २ समर्थ ३ पृथ्वी को छाकर ॥ ६ ॥ ४ सर्प के समान पलेटा लगाकर५सेना का पड़ाव फैलाया६ अहमदाबाद और मांडू रूपी दोनों ७ समुद्र फूट कर ८मेवाड़ में ९ भयङ्कर भ्रमियों से १० शोभा पाते हुए. ज्वाला से११जड़े हुए अर्थात् अग्नि रूपी कवच को धारण करनेवाले राणा के गढ़ को १२ प्रभात में ऐसा घेरा मानों दैत्य और दानव सुमेरु पर्वत को घेरें ॥७॥ १३राजा नारायणदास ने. आधी १४सेना सहित१५आधी सेना सझकर १६ पाड़ को तोड़कर १७ सूवर ॥ ८ ॥

दिल्लीदल दैबो कह्यो संभर १ सहाय हित,
भाख्यो रान २ उचित नहीं जय जवन जोर ॥
स्वीकरि सबन सोही जंत्रन[1] जमायो जुद्ध,
ज्वाल बिकराल छायो संतत[2] सिलागि सोर ॥
राति १ मैं हवाई माहताव ज्यौं दिखात दिन २,
नैंन चकचौंधैं उल्का[3] अँर्चिनतैं[4] ओरओर ॥
प्रानवाद रान १ तुरकान २ कैं मँडानौं तोपैं,
एक १ मास ऐसैं घुमडानौं घमसान[5] घोर ॥ ९ ॥
दिल्ली पातसाह सुनि बाबर ३० समर एह,
उरमैं अमाये प्रतिमल्लनपैं[6] रचि रीस ॥
अज्जं[7] अपनावन चल्यो चढि सु सुनि तासौं,
पुव्व[8] लरिबेको मत मंति[9] उभै २ अवनीस ॥
सेनासह पिहितैं[10] पदाति[11] रजनीमैं काढि,
सोवत प्रमत्त परे सत्रुन सिबिरैं[12] सीस ॥
द्वै २ दलैं[13] अचानक अचाह्यो अँवमर्द[14] होत,
चौंकुपरे काय कपिकच्छू[15] ज्यौं कसत कीसैं[16] ॥ १० ॥
पैठत अचानक कपोतकुल[17] स्येनैंनसे[18],
हेतिनैं[19] मच्यो झर झुकावत झकट[20] झुंड ॥
प्रचुर प्रहार मंडि मृत्युके बजार वार,
पार अति धार लसैं लोहितैं[21] कलित[22] कुंड ॥
चीरऽहै हयन धीर बीरऽहै वयन टूक,

---

१ तोपों से २निरन्तर ३अग्नि की४ज्वाला से ५ युद्ध ॥ ९ ॥ ६ शत्रुओं पर ७ आर्यों को ८ प्रथम ९ सलाह करके १० छाने ११ पैदलों को. शत्रुओं के १२ डेरे पर. दोनों१३सेनाओं से. बिना चाहा १४घोर युद्ध होते ही१६चन्दर अपने शरीर पर१५कैंचच की फली की रगड़ लगते ही चिमके इस प्रकार चौंक पड़े ॥१०॥१७ कपोतों के समूह में १८शिकरे(बाज)पच्छी घुसें तिस प्रकार घुसते ही १९शस्त्रों का झड़ मचगया२०युद्ध में२१रक्त के२२प्रसिद्ध कुण्ड शोभा पाते हैं

चीरन्है चलैं कर मतीरन्है उडत मुंड ॥
स्वासन समेटैं चंद्रहासनके भेटैं भिन्न,
लंबे गज लेटैं पोगैंरनमैं पलेटैं रुंड ॥ ११ ॥
बाहिर अनीक अर्द्ध राख्यो रतिबाहकाजैं,
सहायकन्है सोहू इतेबिच उलटि आइ ॥
बुंदी सीम भूलौं बढि आयो इतैं बाबर ३० हू,
साम्हैं गज १ तुरग २ निवेदे नरबद १८७१२ जाइ ॥
आधी राति यौं इत अचानकही कट्टा होत,
सत्यसंध बानांबंध सस्त्रन सजे सम्हाइ ॥
बीर उतहूके काचचूरीलौं झरे पै इहाँ,
अंज्जनको पुण्य यौं रहे ए खरे खेतपाइ ॥१२॥
दस १० दस १० द्वार सज्ज तुरग तितेकन लै,
बैठि महमूद १ रु मुदाफर कढे लै प्रान ॥
तदपि घरीद्वै २ नग्गी लग्गी तरवारि भूत—
नकी भंग्गी लग्गी कालिका किलकिलान ॥

घोड़ों की चीरें होती हैं और वचनों पर धीर वीरों के टुकड़े होते हैं और चीरें हो कर हाथ चलते हैं जिनके मतीरों(तरबूजों)के समान मुंड उडते हैं और श्वासों को समेटकर१खड्गों से मिलकर२कटेहुए३लम्बे लटेहुए रुण्डों को हाथी अपनी४सुण्डों के अग्रभागों में पलेटते हैं ॥११॥ आधी फौज को रतिवाह देने के लिये वाहिर रक्खी थी वह भी आमिली, इधर बुन्दी की सीमा की भूमि तक बादशाह बाबर भी आया बुन्दी से जिसके सन्मुख जाकर नरवद ने हाथी और घोड़े नजर किये और इधर आधी रात्रि को कतल होते ही ५ सत्य प्रतिज्ञा वाले ६ वीरों के वेष को धारण करनेवाले; अथवा युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा के चिन्ह को रखनेवाले ७ सम्हलकर शस्त्रों से सजे उधर के वीर भी काच की चूड़ी के समान टुकड़े होगये परन्तु यहां ८ आर्यों का पुण्य था ९ इस कारण युद्ध का खेत पाकर ये ही खड़े रहे ॥ १२ ॥दश ही दिशाओं का मार्ग लेकर इतने ही(दश दश)घोड़े लेकर महमूद और मुदाफर प्राण लेकर निकले तो भी दो घड़ी तक नंगी तलवार वजी जिससे भूतों की१०भूख भगी

अर्जुन १८८।१ कुमार घाय अष्टादस १८ पाय मारि,
मंडूकेंवजीरहिं परचो जो आयु बलवान ॥
ढकूसुत*पूरन बिचारचो चूक व्हाँ सो जानि,
पूरन८८।३ कुमार लीनौं कीनौं नृप सावधान ॥ १३ ॥
मालिक कढेंहू मीर प्रथित प्रबीर केही,
बानैंकी त्रपासौं खग्ग खेरत खिरत खेत ॥
साकिनिन सूर्ड मह्मूदके चमूपति व्हाँ,
बुंदीभट मारे सोढा संकर दहर नेत२ ॥
अनुज नरेसके नृसिंह८७।३सौं भिरचो सो पुनि,
सोये सूर दोहूर टूकटूकव्है रननिकेत ॥
आली गन जोगिनि कपाली उपहार आनैं,
लोहितकी लाली लीन काली नचैं ताली देत ॥१४॥
रान पंच५ मारे तँहँ गुज्जर अमीर उभैर,
मालवके बीर असुहीनें दये तीन३ डारि ॥
सीसउद अमर२ गिराये खट६ बानैंबंध,

और कालिका कोलाहल करनेलगी * कोठारिया के राव ढक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल ने नारायणदास पर वहां चूक करना विचारा था सो कुमार पूर्ण मल्ल ने जानकर राजा को सावधान करदिया ॥ १३ ॥ मालिक बादशाही के निकल जाने पर भी २ प्रसिद्ध कितने ही बीर ३ बीरों के बिलास धारण करने की लज्जा से खड्गों को खेरतेहुए खेत में खिरपड़े शाकिनियों के ४ र सोईदार रूपी मह्मूद के सेनापति ने वहां पर बुन्दी के भट सोढा वंश के क्षत्रिय शङ्कर और ५ दहड़ वंश के क्षत्रिय नेत को मारा, फिर राजा के छोटे भाई नरसिंह से आकर भिड़ा सो दोनों बीरे युद्ध के स्थान में कटकर गिरपड़े जोगिनियों के गण की ६ पङ्क्ति; अथवा योगिनियों की सखियों का समूह बीरों के मस्तक ७शिव की८भेट लाती है और९रक्त की ललाई में लीन होकर कालिका ताली देकर नाचती है ॥ १४ ॥ महाराणा ने पांच शत्रुओं को मारे जिनमें दो मीर १० गुजरात के और तीन मालवा के ११ प्राण रहित कि ये. छः १२ बानाबंध बीरों को

चुंडहर भीम३ सुनैं तैसे पंच५ लिय मारि ॥
दासीशिव रानके पितृव्य वनवीर४ वीर,
मिच्छ नव९ वानैके विदार सुनैं फौजफोरि ॥
बुंदीपति१ तैसैं तीन३ गाजि रु गिराये दृढ,
हेरही दल दलत मुहूर्त्त१ चली तरवारि ॥ १५ ॥
सारन१८६।१तनैं१कें घाय च्यारि४जिहिं रारि लागे,
जानैं जसकर्ण१८६।२के तनै२कै दिपे दुव२ देह ॥
सेव१८६।२ सुन२ वारे औरैं एक१ असि लागो नव-
रंग१८३।२हर माधव १८६।१तनैं४सो भो नव९न नेह ॥
लागे हरपाल१८३।२हरदेव१८६।१के तनैं५कें तीन३,
मेवारेहु भटन लहे इम छत अछेह ॥
हेरही जवनेस भजिजात विनु मालिक यौं,
मिच्छन मचायो मंडलाग्रन महत मेह ॥ १६ ॥
लज्जित उभैरही पुनि आवनको मंत्रकरि,
सेनाके स्वकीयन बुलात भये जातघर ॥
जान्यौं अब घेरा रच्च विगारि बनैं न रुपि,
रहन मनैं न मन वावर३०को आनि डर ॥
औरैं कहिपठई मुदाफर१ महीपति२ सौं,
मंडू कारि कपट गयो वचि तू पापपर ॥
बुंदीधर राखि छत्र१चामर चलाये फेरि,
चढिहौं बहादुर धरेरनमैं धूर्त्ततर ॥ १७ ॥
खोजि रनखेत पर घायल पठाये उत,
लाये निज घायल उठाइ सबै नरजान ॥

१दासी के उदर से उत्पन्न हुए वनवीर नामक राणा के काका ने थाना धारण करनेवाले नौ म्लेच्छों को उस फौजफाड़ (डिङ्गल भाषा में फौजफाड़ वीर का विशेषण है) ने मारे सुने ॥ १५ ॥ सारन के १पुत्र के २कन्धे पर ४तलवारों का ॥ १६ ॥ ४ अपने लोगों को ९ तुरन्त ७ राजाओं में ८अत्यन्त धूर्त ॥ १७ ॥ १पालखियों में

आतहि ठहरि साह बाबर३० पठाये रीझि,
दोउ२नकों खिलत१ उपेत खास फरमान२ ॥
सँभरनरेस१ सह आदर लये जे जिम ॥
लाये तिन देखतही अनादर दियो रान२ ॥
बिदित कहे ए एक१जातिके समान सब,
अवसर देखैं दुष्ट अज्जनके लैन थान ॥ १८ ॥
सोही सुनि अंतर सकोप मग्गहीसौं मुरि,
होइ अजमेर कीनौं पच्छोही प्रयान साह ॥
अर्जुन१८८।१ कुमार न्हान उच्छव अवधि रह्यो,
चित्रकूट अतुल उदार हड्ड नरनाह ॥
स्वानुज नृसिंह १८७।३ मर्‌यो अप्रज तदीय अर्थ,
है२अयुत२०००० द्रम्म बंटे बिप्रन बिहित राह ॥
बुंदी बलि आइ बीर निखिल निवाजे बंब,
बिजयके बाजे लाजे ओदकि अरि सिपाह ॥ १९ ॥
दिल्ली जब जाइ कछुकालहि बिताइ साह,
चित्रकूट अहदी पठाइ मंगे करदाम ॥
सीसउद भाख्यो हम देचुके तुमहु तीजे२,

---

१ सहित २ चहुवाण राजा ने आदर सहित लिया और महाराणा ने लानेवालों का देखते ही अनादर किया ३ आर्य लोगों के स्थान लेने को ॥ १८ ॥ नैरोग्यता का ४ स्नान करने के उत्सव की अवधि तक. हाडों का ५राजा चित्तोड़ में रहा ६ अपना छोटा भाई ७ विना सन्तान मरा ८ उसके अर्थ ९ रुपये १० फिर ११ सब को १२ नगारे १३ भय खाकर ॥ १९ ॥१४ शीघ्र १५ * खिराज के रुपये

---

* यहां खिराज के लिये बाबर बादशाह का अहदी भेजना लिखा सो ठीक नहीं है; क्योंकि महाराणा सांगा ने कभी किसीको खिराज नहीं दिया किन्तु कर्नेल टॉड के लिखने अनुसार स्वयं बाबर ने महाराणा को खिराज देना चाहा जिसको महाराणा ने स्वीकार नहीं किया यदि इस युद्ध के होने का कारण देखना होवे तो 'टॉडराजस्थान' और 'तुजकबाबरी' आदि इतिहासों में देखैं ॥

बंटिलेहु राखि मंडू१ अहमदनेर२ साम[1] ॥
चौंकि[2] चल्यो सो सुनि बडेदल मुगलराज,
साम्हैं देन स्वागतं[3] सज्यो यों समादिकं[4]ग्राम१ ॥
नारा[5]दिकअयन२ नरसहु स्वरित[6] ओडि,
दिल्लीपति कोप रानसीरी भो कलहकाम ॥ २० ॥
बुंदीसहिं वरज्यो जुरीकों जिन तोरो कहि,
तोहु मरिबेके मत नेहहि भयो निदान ॥
भाये बिनु सीस बाहिबेमैं विरुदाये छाये,
[10]ठाये रसबीरमैं चलाये रान१ चहुवान२ ॥
परिखार अंकितं[11] प्रदेस सविसेस साम्हैं,
सेससिर दे पय असेसन[12]के अवसान ॥
स्वागतं[13] समैंही खग्ग खूब खुलि खेल्यो प्रलै,
पावकं[14]सो पेल्यो झेल्यो सीमापर सुलतान ॥ २१ ॥
मिलत अनीनं[15] धूजि दूरनके[16] बोल सहि,
भाजे दूर दूरन के[17] कूरनके[18] ओघइम[19] ॥
रारिरथ जूरनके[20] धवल धुरीन जुरे[21],
हूरनके[22] लोभ संघ सूरनके अप्रतिम[23] ॥

१ मिलाप करके २ क्रोध करके ३ आये का आदर करने के लिये ४ सम् है आदि में जिसके ऐसा ग्राम अर्थात् महाराणा संग्रामसिंह ५ नार है आदि में जिसके ऐसा अयन अर्थात् नारायणदास राजा भी ६ शब्द में निष्ठा करनेवाले धर्म को अर्थात् क्षत्रिय धर्म को शिर पर रखकर दिल्लीपति के कोप में राणा का सीरी हुआ ॥ २० ॥ ७ कारण. विना ८ मस्तक प्रहार करना ही अच्छा लगा ९ शोभायमान हुए. वीर रस में १० ठहरे हुए. पील खाल से ११ पहिचाना जावे ऐसे प्रदेश में विशेपता पूर्वक सन्मुख जाकर शेपनाग के मस्तक पर पग देकर १२ सम्पूर्णों का अन्त करने को १३ आये हुए का आदर करने के समय खड्गों से खूब खुलकर खेला; और प्रलय की १४ अग्नि के समान ॥२१॥ १५ सेना मिलते ही १६ दूर के वचन सहने से ही १७ कितने ही १८ कायरों के १९ समूह दूर दूर भगे और युद्ध रूपी रथ के २० जूडों में धुर के धारण करनेवाले धवल (बैल) २१ जुपे. इसी प्रकार २२ अप्सराओं के लोभ से वीरों के २३ असदृश (अपने

रान १ चहुवान २ पहु पानि पान पूरनके,
चाले चमू चूरनके कौरक व्है कुंठकिम ॥
मुंड मुगलनके महंर्घ मुगलानिनके,
चूरनके साथी भौंरै सूरनके पिंड जिम ॥ २२ ॥
चाले चंद्रहास चहुँ ४ ओर चपलासे चल,
कादंबिनी कटक दुहूँ २ दिस दिखावैं द्योत ॥
को के दूत कज्जनके सज्जन भिराय भूत,
तज्जनके त्रास मंडैं मज्जन सोनित स्रोत ॥
अर्जुन असि१नैं छिन्न मोथित गदा२न गज,
लोटे लखि कुंत ३ कासूं ४ पट्टिस ५ पैंदर ६ पोतैं ॥
के तजि कवादे वृथा वाहु भर लादे मुरि,
मादे मन मोतिसौं खुसादे खानजादे होत ॥ २३ ॥
चामीकर वंगर विरचित गजदंत भौंरै,
मानहु मुसल लंब सवन सह सुहात ॥

सदृश कोई अन्य नहीं ऐसे) वीरों के समूह जुड़े; अथवा आर्यों के सदृश यवन नहीं हैं ऐसे वे वीरों के समूह जुड़े. राणा और चहुवाण दोनों राजाओं के १ हाथ २ पूर्ण पराक्रम से चले सो सेना के चूर्ण के ३ करनेवाले होकर कैसे ४ रुकैं. मुगलों के मस्तक ५ महँगे मुगलानियों के ६ चूड़ों के साथी होकर गिरते हैं जैसे वीरों के पिण्ड भी, अर्थात् इधर तो मुगलों के मस्तक और वीरों के शरीर गिरते हैं और उधर मुगलानियों के महँगे चूड़े गिरते हैं ॥ २२ ॥ चारों ओर ७ तलवारें बिजुली के समान ८ चपल होकर चलीं सो ९ मेघमाला रूपी सेना में दोनों ओर १० प्रकाश दिखाती हैं. कोई कोई और कितने ही दूतों का कार्य करके भूत परस्पर सज्जनों को भिड़ाकर ११ ताड़ना के भय से १३ रक्त के प्रवाह में १२ डूबजाते हैं अर्थात् डुबकी मारजाते हैं. १४ आर्यों की १५ तलवारों से कटेहुए १६ घोड़ों को और गदा से लोटे हुए हाथियों को देखकर और १७ भाला, १८ बर्छी, १९ कटार और २० तीरों के २१ प्रवेश होने से कितने ही खानजादे कवचों को छोड़कर भुजों को वृथा भार से लादेहुए मरेहुए (मुर्दा) मन से मुड़कर मृत्यु से खुशादा होते हैं, अर्थात् मृत्यु के कारण उपरोक्त भार से छूटजाते हैं ॥ २३ ॥ २२ स्वर्ण के

ऊँधे झुकि झंडे खेर खंडे के प्रहारपैं,
सैल[2]के सिखरसौं ज्यौं[3] तुंग ताल[4]तरु पात ॥
सीसोद[1]न हड्ड[2]न सम्हारे सत्रु सीमापर,
हत्तिनके मारे मतवारेलौं तँवारे खात ॥
बाबर ३० के बिदित बहादुर सिपाह चीते,
काबल जे जीते इहाँ रीते बल बीतेजात ॥ २४ ॥
चोरैं चाहि चिंतत झकोरैं असि रानभट,
ओरैंगे अंहोरैं दोरैं बाबर ३० के भोरैंभीर ॥
जोर जब जोरैं बढि आतन बिछोरैं केक,
लाघव के छोरैं वार तोरैं सिर मोरैं मीर ॥
मोदन बलापतिको ओदन उजेरि इत,
तोदन तुरक्कन बिनोदन धरतधीर ॥
होदनमैं कदि के निसादिनके गोदनमैं,
मोदनमैं मलपि कटार हनैं हाडे वीर ॥ २५ ॥
जोरको जमत घमसान घोर दोहूँओर,
जातजात टिकत जिहाज जैसैं चक्रबात[1] ॥

पंगड़ सहित आश्चर्यकारी हाथियों के दन्त गिरते हैं सो मानों श्यामों सहित लम्बे मूसल शोभा देते हैं १ तीक्ष्ण शस्त्रों के प्रहार से कितने ही झण्डे ऊंधे होकर हाथियों से गिरते हैं सो मानों २ पर्वत के शिखर से ३ लम्बे ४ ताड़ के वृक्ष गिरते हैं ५ शस्त्रों के मारे ॥ २४ ॥ राणा के वीर चौड़े खेत चाहकर तलवारें झकोलते हैं और बाबर के भ्रम से अन्य उमीरों के हाथियों को दौड़कर रोकते हैं बहुत शीघ्रता करते हैं और जो बढकर आते हैं उनको बिखेरते हैं, कितने ही शीघ्रता से वार करते हैं सो मीरों के मस्तक तोड़ते हैं और उनको पीछा मोड़ते हैं ६ प्रसन्नता से आंडावळा नामक पर्वत के पति का ७ अन्न उजालते हैं और ८ क्रुद्ध हुए तुरकों को वीर लोक प्रसन्नता से धारण करते हैं, कितने ही होदों में कूदकर हाथियों के सवारों की गोदों में हर्ष पूर्वक मलफ लगाकर हाडे वीर कटार मारते हैं ॥ २५ ॥ इस प्रकार जोर का भयङ्कर युद्ध जमने में दोनों ओरवाले जाते जाते खड़े रहजाते हैं जैसे १ बगूले

द्वै २ ही मार मचत गता१गत रचत मानूँ,
ओघके उफान २वंदिनीपति हिलो रैंखात ॥
मैंचिमैंचि हगन पलावत पकरि केक,
ऐंचि ऐंचि आनैं ३अवमर्दके असह्यघात ॥
थहरिथहरि थू छी भहरि प्रहरि फौजैं,
लहरि लहरि पुनि ठहरि ठहरिजात ॥२६॥
उच्चतम ४अंस आइ रुकत इनै मैं अर्क,
जोर जवननको बढ्यो अति ५प्रथित मान ॥
रानकह्यो चित्रकूट लैकैं लरिये बरहैं,
सबके मरत मिटैं मनतैं बिजय मान ॥
हड्डनृप भाख्यो आपसेको भजिबो न नीक,
जैहैं ठहैं अनृत पद बजिबो स्वयं दिवान ॥

(चक्राकार) पवन से डूबता हुआ जहाज बच जाता है और दोनों सेनाओं के मार मचने में जाना आना रचते हैं सो मानों उफान के समूह से; अथवा समूह के उफान से १ समुद्र हिलोरें खाता है नेत्र मीच मीच कर कितने ही भगेहुओं को खींच खींच कर २ युद्ध के असह्य घात में लाते हैं सो धूज धूज कर थुः थुः छिः छिः आदि अवज्ञा के वचन कहते हैं और प्रहार कर करके फौजें झुक झुक कर फिर ठहरती जाती हैं ॥२६॥ जिस समय ३अत्यन्त ऊंचे ४भाग पर आकर अर्थात् मध्यान्ह समय में सूर्य रुका तिस समय अत्यन्त५प्रसिद्धबलवाले यवनों का जोर बढा. राणा ने कहा कि चित्तोड़ में जाकर लड़ना ठीक है यहां सब के मरजाने से आगे विजय करने का मान मिटजावेगा तब हाडा राजा ने कहा कि आप जैसों का भगना उचित नहीं है क्योंकि फिर आपका*दीवान

*मेवाड़ देश के राजा एकलिंगेश्वर महादेव और महाराणा दीवान(प्रधान) माने जाते हैं वह दीवानपन बुन्दी के राव नारायणदास को देकर महाराणा सांगा का भागने का विचार लिखा सो असत्य है; क्योंकि प्रथम तो इस युद्ध में मेवाड़ के इतिहास 'वीरविनोद, टॉड राजस्थान और तुजकबाबरी' आदि इतिहासों से नारायणदास का होना ही नहीं पायाजाता परन्तु उस समय बुन्दी का राज्य चितोड़ के मातहत था जिसकी पुष्टि 'तुजकबाबरी' से भलीभांति होती है इस कारण यदि नारायणदास इस युद्ध में गया होवे तो आश्चर्य नहीं परन्तु महाराणा का भागने का विचार लिखा सो सर्वथा असत्य है; क्योंकि लड़ाई के प्रारम्भ में ही महाराणा के ललाट पर एक तीर ऐसा लगा कि जिससे महाराणा मूर्छित होगये जि

रानकह्यो कहू यह राखहु सुनत चहु—
वान बढ्यो अग्र पीठिदीनों दै अभय रान ॥ २७ ॥
रानके प्रधान[1] भट भाखी मंकुआन[2] सोही,
चामर लजैंगे ए भजैंगे जब भूमिधनें[3] ॥
सोहु सुनि रान ताहि चामर दुव २ हि दैकैं,
भाख्यो आपही अब निबाहहुगे चामरन ॥
सीसोदन ईस ऐसैं कढन बिचारयो तहाँ,

पद झूठा है. राणा ने कहा कि यह दीवानपन आप रक्खो यह सुनते ही चहुवाण आगे बढा और राणा को पीठ पीछे लेकर अभय दिया ॥ २७ ॥ महाराणा के मुख्य १ उमराव २ झाला ने कहा कि ये चमर ३ बुन्दी के राजा पर होवेंगे तब लज्जा पावेंगे, यह सुनकर महाराणा ने दोनों चमर उस झाला को देकर कहा कि इन चमरों का निर्वाह आप करो, इस प्रकार शीषोदियों के पति ने निकलना चाहा तहां बुन्दी के भूपति और

नको मूर्छित दशा में ही जोधपुर का राव गांगा और आमेर का राजा पृथ्वीराज युद्धभूमि से ले निकले जिस पीछे स्वामी के विना सेना का लड़ना असम्भव समझकर मेवाड़ के उमराव सिरदारों की सम्मति से हलवद के झाला अज्जा ने छत्र चमर आदि महाराणा के राज चिन्ह लेकर हाथी पर चढकर युद्ध किया जिससे मेवाड़ की सेना अपने स्वामी को युद्ध में स्थित जानकर बाबर की सेना से लड़ती रही. इस युद्ध में बाबर का पराजय होना और महाराणा का विजयी होना लिखा सो भी सत्य नहीं है क्योंकि युद्ध के प्रारम्भ में ही रायसेण का राजा सिलहदी तवँर ३५००० सवारों से महाराणा की फौज से निकल कर बाबर से जा मिला और जिस पीछे महाराणा के मूर्छित होकर निकल जाने से बहुधा राजा और मेवाड़ के सिरदार महाराणा के साथ निकल गये इस कारण अन्तिम फतह बाबर की हुई और यह युद्ध चित्तोड़ के समीप होना लिखा सो भी ठीक नहीं क्योंकि यह युद्ध विक्रमी सम्वत् १५८४ में चैत्र शुक्ला पूनम के दिन आगरा से २५ कोस के अन्तर पर बयाना के मुकाम पर हुआ था और इस भगेहुए बाबर से बुन्दी के समीप पाटण ग्राम में नारायणदास के भाई नरबद का युद्ध करके माराजाना लिखा सो भी सम्भव नहीं होसक्ता, क्योंकि यह युद्ध ही आगरा के समीप हुआ था तो भागी हुई सेना के मार्ग में बुन्दी का देश आना कैसे सम्भव होसक्ता है? इसके अतिरिक्त बाबर का विजय और महाराणा का पराजय होना बहुत इतिहासों से सिद्ध है तो इस ग्रन्थ में लिखाहुआ यह इतिहास सत्य नहीं माना जासक्ता और इस युद्ध के थोड़े ही दिन पीछे अर्थात् सम्वत् १५८४ के वैशाख में बसवा नामक ग्राम में इन महाराणा का देहान्त होगया इस पीछे इन महाराणा का मांडू और अहमदाबाद के बादशाहों से युद्ध होना लिखा सो भी ठीक नहीं है क्योंकि वे युद्ध इस युद्ध से पहले हो चुके थे जिसका वृत्तान्त आगे लिखा जावेगा ॥

बुंदी वसुधेस सेस मेवारेहु वीर गन ॥
झारि तरवारि मारि रोके निगमारि सो,
निहारि भय टारि ठहरानी रारि रान मन ॥ २८ ॥
पूरो पछितावो लै दिवानपद १ चामर २ दै,
देखि रिपु रोके रुकि रानाँ रह्यो पीठिपर ॥
लीनौं मारि तेगन दिवान पद तादिनतैं,
ओटभो अधीस बाँधि अंघ्रिनसौं आडधर ॥
सुनियत त्यौंही बोल बॅलापैं उँचारिबेमैं,
सादरीके झल्लनपैं तबतैं चलैं चमर ॥
केतेकहैं कढन बिचारि रहिगो यौं रान,
केते कहैं याही इक १ बेरभज्यो चित्रकर ॥२९॥
रान बहुविक्रम बिचारत सुकवि स्वाँत,
भाजिबो न भावत दृढावत रुपान रारि ॥
बाबर ३० के बारनलौं बढत बलापतिकी,
खंडखंड खेरत चलानी चंड तरवारि ॥
गंजि पखरालन करालन गिराये रत्ति,
तालन तिराये सह ढालनं गजन ढारि ॥
मारत मुगल भूत १ भावी २ सब या रनमैं,

मेवाड़ के बाकी के वीरों के समूह ने तलवार चलाकर १ वेद के विरोधियों (यवनों) को मारकर रोके सो देखकर भय छोड़कर राणा का मन युद्ध में ठहरा ॥ २८ ॥ २ चरणों से ३ आडावला नामक पर्वत को बान्धकर ४ समय पर वचन ५ बोलने से सादड़ी के झालों पर तब से चमर चलते हैं ॥ ६ आश्चर्य करके ॥ २९ ॥ महाराणा का अत्यन्त पराक्रम विचार कर ग्रन्थकर्ता श्रेष्ठ कवि सूर्यमल्ल के ७ मन में उनका भगना नहीं जचता, किन्तु युद्ध में खड़ा होना ही दृढ होता है, बाबर के ८ हाथी तक, बुन्दी के ९ आडावला पर्वत के पति की १० पाखरवाले हाथी घोड़ों को मारकर ११ पटे निसानों सहित हाथियों को गिराकर मुगलों के मारने में दीवान पद पाने से पहिले और पीछे

संभरधनीके लागे *लोह चालीस रु च्यारि ४४ ॥ ३० ॥
बीररस घल्ले छल्ले **अंबुद अनीक उभै २,
वग्गन अचल्ले ऐंचि खग्गन मचल्ले खेत ॥
कल्लेस्वर कातरे दहल्ले दूरहोत ठल्ले,
ठामठाम गिनत गिरे भटन लग्गे प्रेत ॥
पल्लेछेह मल्ले नाकनारिन नवल्ले नेह,
पैठें तोपलल्ले गति राग रस भल्ले चेत,
छाती धरि हल्लेमैं मुसल्ले १ मग्रकात इन्हैं२,
भल्ले हथचल्ले ए १ डिगात तिन्हैं २ टल्ले देत ॥ ३१ ॥
काली हास करिकरि मृडहिं मनावैं मोज,
आली तास गावैं त्यों उताली रास करिकरि ॥
डाकिनि विरूप त्रास करिकरि ताकैं भीरु,
बीरन रिझावैं बीर बीरनास करिकरि॥
जास बिसवास लै हुलासैं धरि आसपास,
कंकादिक क्रीडत पलासैं आस करिकरि ॥

सब मिलाकर इस युद्ध में चहुवाण राजा नारायणदास के चवालीस * शस्त्र लगे ॥ ३० ॥ वीर रस से भरी हुई **मेघ के समान दोनों सेना यहीं तहां चलायमान नहीं होनेवाले वीर वागें खैंचकर तलवारों से युद्ध खेत में मचले (यहां वागें खैंचने के संबंध से वीरों का ग्रहण है) १ कलराये हुए स्वर से २ कायर डरकर दूर होते ही ठाम ठाम गिरेहुए वीरों के समूह को प्रेत गिनते हैं. वीर परले छेह (अपार) अप्सराओं के नवीन स्नेह में मिले और बडे राग के रस में झिलेहुए चित्त से तोप के गोले की भांति घुसे, आगे लेकर मुसलमान इनको हटाते हैं और अच्छे हाथ चलानेवाले ये (आर्य) टल्ले लगा कर उनको डिगाते हैं ॥ ३१ ॥ काली हास्य कर करके ३ शिव को आनन्द मनाती (देती) है और इस काली की दासियें शीघ्रता से घूमर लगा लगा कर गाती हैं और डाकिनियें भयङ्कर रूप से भय देकर कायरों को देखती हैं और ४ पावन वीर वीरों का नाश कर करके वीरों को रिझाते हैं जिस का विश्वास करके ५ उत्साह धरकर आसपास ६ मांस की आशा कर करके मां

होदनमैं पूरि चहुँ ४ कोदनमैं भूखे १भूत,
ओदनमैं गोदन गिनावैं ग्रास करिकरि ॥ ३२ ॥
टारे पंचसहस्र ५००० प्रबीरन सहित सूधे,
डारे बाजि बूंदीपति ब्यूह बिधिके बनाव ॥
पानिपकी पोत लै पधारे आजि अर्णवमैं,
जवन जे जारे कोप बाडव दुसह दाव ॥
झारत प्रतलैं तेग बेग यौं बढत आगैं,
भागैं गज१ गंडक२ बराह३ न सहत घाव ॥
जोरि खासबारा सिंह संभरके पूगतही,
पूगो डरपैं डर जो बाबर ३० पैं बघवांव ॥ ३३ ॥
रान १।१ रु दिवान २।१ ए कुटुंबी१ आधइसीरी उभैं२,
सीसोदे१।१ रु हाडे२।१ हठी हालिकर२ बड बिधान ॥
हेति११ १ हल २ राजी बाजी १ बैल२न गरिष्ठ गदा १,
कोटिसैं२न कीनैं सिर १ डैलै२न कचरैघान ॥
लागैं लेत खेत नर १ खेत २ प्रेत १ टीडी टार २,
बोइ रजपूती १ बीज २ सोनित १ सलिल २ थान ॥

म भक्षी गिद्ध आदि पक्षी क्रीड़ा करते हैं होदों में भरकर चारों १दिशाओं में क्षुधुचित भूत २ अन्न में ३ मस्तिष्कों (भेजों) को गिनाकर ग्रास करते हैं, अर्थात् उन भेजों को ही अन्न गिनकर खाते हैं ॥ २२ ॥ ४ पराक्रम रूपी नाव लेकर ५ युद्ध रूपी ६ समुद्र में गये. खड्ग रूपी ७ हाथल का प्रहार करते इसप्रकार शीघ्रता से आगे बढने पर हाथी, गैंडे और सूअर घाव नहीं सहकर भागते हैं ८ चहुवाण रूपी केसरिसिंह के पहुँचते ही ९ सिंह के शरीर की गन्ध को मरुभाषा में बघवाव कहते हैं ॥ ३३ ॥ अब आगे रूपक अलंकार से कहते हैं कि राना और बुन्दी का राजा तो आधे आधे पांतीदार हैं और शिसोदिये और हाडे १० हाली हैं ११ शस्त्र हैं सो ही हल हैं १२घोड़ों की पंक्ति है सो बैल हैं १३ बडी गदा है सो १४ चाँवर हैं. कटेहुए मस्तक रूपी १५ ढकलों (ढेलों) का १६नाश किया अर्थात् पीस डाले और युद्धक्षेत्र ही क्षेत्र है जिस में मनुष्य रूपी लागत लेते हैं और उस खेत में प्रेत रूपी टीडियों को

पीतखार १ कुल्यां २ सन सींचि निपजाये नीकैं,
कत्त१नके दत्त२न चकत्त१नके खलहान २ ॥ ३४ ॥
अैसे घोर समय कठोर आसि बाढ भारि,
ओरओर रोर यौं मचात अति जोरदार ॥
तोरि खासवारा द्रुम दुर्जन बिछोरि वेग,
जोरि तेगधारा ज्यौं बघूल प्रतिकूल पार ॥
दैकैं पीठि रान मान दैकैं[२] अवसानहीकौं,
पहुँच्यौ दिवान भुज[३] पौंन पवमान[४] चार ॥
देखत व्है दीन बहराम १ सेख कादर २ से,
बांदरसे[५] विद्रुत[६] बिलानैं द्रुत[७] दिल्लीवार ॥ ३५ ॥
कादर १ कमाल २ बहराम ३ से भजत भज्यो,
बाबर ३० करी तजि बिडौजा १ सन जैसैं जंभ २ ॥
मंदर १ व्है[११] अर्णव २[१२] अनीकमथिडार्यो रत्न १,
विजय निकार्यो मुख मिच्छन उतार्यो अंभ[१३] ॥
आगैं लै अनीक यौं अनीक कर्यो अर्जुनलौं,
बितर्यो सहस्रपंच ५००० बीबिनको विप्रलंभ ॥
रान बिरुदायो आनि दुस्सह दिवान छक्यो,

टाल कर रजपूती का बीज बोया गया है जिसमें जल के स्थान में रक्त है सो पील खाल रूपी १ नहर से सींचकर उत्तमता से निपजाये हैं वहां खड्ग रूपी दांतलियों से काटकर चकत्ता के वंश के यवनों को खले (कटेहुए धान के समूह) किये हैं ॥ ३४ ॥ ऐसे घोर समय में कठिन खड्ग का बाढ झाड़कर चारों ओर इस प्रकार भय मचाया खास वाड़ा रूपी वृक्षों को तोड़कर दुष्टों को बिखेर कर वेग को जोड़कर खड्ग धारा रूपी बगूले से प्रतिकूलता करके राणा को पीठ और मान देकर २ अन्त करने को पहुँचा ३ भुजबल रूपी ४ पवन की चाल से ५ बादल के समान ६ भगकर ७ शीघ्र दिल्लीवाले विलागये ॥३५॥ बाबर ८ हाथी को छोडकर भगा. ९ इंद्र से जैसे १० जम्भासुर ११ मंदराचल होकर. सेना रूपी १२ समुद्र को मथकर १३ पानी (तेज). अपनी सेना को आगे लेकर अर्जुन के समान युद्ध किया और पांच हजार यवनों की स्त्रियों

घुम्मत जो पायो * रनअंगनको जयखंभ ॥ ३६ ॥
निम्म १८५।३ हर तारागढनाह जो नृसिंह १८७।१ सूर ॥
सोयो सूरसज्जा सूर संत्रह १७ के मानहरि ॥
रंग हरपाल १८२।२ हर भीम १८७।१ दस १० पारि नव—
रंग१८३।२ हर गो भरत१८७।१ सोलह १६ कों संगकरि ॥
डुंगर १८२।४ के बंस अवतंस यों खजूरीपति,
अमर १८९।१ अमीर आठ ८ खंडे खेल खेत परि ॥
गंग १८८।१ थिरराज १८३।३ बंसी बारह १२ बिदारि नाक[2],
पहुँच्यो निसंक नाक[3] नाक[4]बाम बाम धरि ॥ ३७ ॥
गोर गिरधरको तनूज १ तैसे तीन ३ हनि,
देवसुत चौवोरा नृसिंह २ पर्‍यो बीस २० पारि ॥
कूरम प्रताप ३ पर्‍यो एकादस ११ भंजि सुत,
सल्हको प्रमार बलराज ४ मर्‍यो नव ९ मारि ॥
संकर अनुज सोढा भक्खर ५ छ ६ सांधि सूतो,
नेतसुत दहर मुकुंद ६ भर्‍यो दस १० भारि ॥
रठउर धीरसुव बीरम ७ चउ४न चूरि,
चालुक बिहारी ८ पर्‍यो दुर्जन दसक १० दारि ॥ ३८ ॥
भीमनाती स्याम ९ प्रतिहारहु बहुन बाढि,
जद्दव सुमेरुनाती अर्जुन १० अनेक हनि ॥
चालुक समाननाती सूर सिवराज ११ गिर्‍यो,
बारह १२ विनासि बिनुसीसहु कृतांत बनि ॥
संहरि कितेक सूर सूरनेंसयन सूतो,

को पतियों का वियोग दिया * युद्धक्षेत्र का विजयस्तम्भ ॥ ३६ ॥ डूंगरसिंह के वंश का १ मुकुट २ स्वर्ग गया ३ दुःख में निःशंक रहनेवाला ४ अप्सरा को बाएं अंग में धारण करके ॥३७॥ ५ चावड़ा ६ विदारण करके ॥३८॥ भीमसिंह का ७ पोता ८ यमराज बनकर ९ शूरशय्या पर सोया

विक्रम १२ भदोरें ६ चहुवाननको मूर्द्धमनि ॥
दहिया प्रताप १३ सरवहिया करन १४ एते १९,
बुंदीके प्रवीर रहे खेत रसवीर खैनि ॥ ३९ ॥
बंसीपति सारन १८६।१ तनैं १ कैं छंत छक्क ६ लगि,
सेव १८६।२ सुत मेव २ के सरीर लगे छत च्यारि ४॥
नाँरइंद अर्जुन ३ नैं घाय चउ ४ पाये ताके,
भ्रात लघु भीम ४ नैं पचीस २५ गज इक्क १ पारि ॥
तासौं लघु पूरन ५ प्रघातें पंच ५ पाये तिम,
कासीसुत सम्रल बच्यो वपु छ६छतं धारि ॥
चुंड१८६।२वारे नाती नगराज७रु उदय१८६।३ वारे,
नाती कुंभकर्ण८पाये छ६छ६हि बिजय बिथारि ॥ ४० ॥
सीसउद अमर पिनाती हरि१ कैं छ६ छंत,
पित्थल बघेल नाती संभु २ कैं घट छ६ घात ॥
संकरके नाती भट्टी भीम ३ कैं प्रहार पंच५,
लागे नव ९ बंसीधर नाती कूर्म नंद ४ गात ॥
सैंगर त्रिबिक्रमके नाती दीप५ देह दुव२,
पाये गोर गोवर्धन६ सुंदरके सूनु सात७ ॥
दहिया प्रतापसुत स्याम७ हुकैं सात७सर—
वहिया करन भ्रात दीप८कें दस१० दिपात ॥ ४१ ॥
ऐसैंही सपिंड१ असपिंड२ असगोत्र३ बीर,
रानके मरे१ त्यौं परे२ घायन घनैं घुमाइ ॥
अज्जें दल द्वैरहू असि झारि थकिहारे पैं,
दयो जय दुलभ धर्म इतहि सहाइ आइ ॥
कादर१ कमाल२ बहराम३ से भजंत भज्यो,

---

१ मुकुट. वीररस का २ खांन ॥ ३९ ॥ ३ घाव ४ नरचंद के पुत्र ५ घाव ६ घाव ७ पोता ॥४०॥ ८ पुत्र ९ शोभायमान ॥४१॥ दोनों १०आयां का सेना ११परंतु

बाबर३० बलापतिसौं[1] लै हय१ गय[2] बिहाइ ॥
सिबिरकी सामग्री गईरहि अनेक यातैं,
बाबर३०के बाजे बजे रान दरवाजे जाइ ॥ ४२ ॥
इतके सहस्रच्यारि४०००सोये सूरतल्प[3] तहँ ॥
पंद्रहसै१५०० रान१के दिवाँन[4]२के सतपचीस२५०० ॥
पातसाह वारे पंचसहस्र५००० प्रवीर भ्परे,
बुंदीपति विजय निदान कीनौं जगदीस ॥
बंधव सपिंड१ पंच५ सुभट चउद्दह१४,
रहे रन बलापतिके बीर इक१ ऊनबीस१९ ॥
याहीक्रम आठ८ आठ८ घायन घुमाये आप[6]१,
सप्ति२सह पाये त्यौं प्रहार च्यारि औ चालीस४४ ॥४३॥

दोहा ॥

क्रममोहन१८०।११कुलजैत१८२।३कुल,वेव१८८।१रुराघवदास१८७।१
आये भजि हड्डे उभय२, या रनतैं जियआस ॥ ४४ ॥

षट्पात् ॥

घुम्मत छकि घमसान नृपहिं नरजान रान धरि ॥
सब घायल तिम सोधि स्वगृहं[10] लैगो हित अनुसरि ॥
हायन१ प्रति उपहार किय जु दैनौं सु द्वि२गुन किय ॥

---

१ बुंदी के आडाबला पर्वत के पति से. बाबर बादशाह हाथी छोडकर घोड़े पर चढकर २ भगा ॥४२॥ ३ शूरशय्या ४ बुंदी के राजा ५. परमेश्वर ने इस विजय का ५ कारण बुंदी के पति को किया ६ चौंसठ घावों से घोड़े सहित आप घूमे [नारायणदास के पहले चवालीस घाव लगना लिखा. इस कारण यहां जानना चाहिये कि बीस घाव७घोड़े के लगे उनको मिलाकर चौंसठ गिने हैं] ॥४३ ॥४४॥८ युद्ध में ९ राजा नारायणदास को पालखी में धर कर १० अपने घर

पाटव आयेँ प्रभुहिँ ढंग सहसत्थ सिक्खादिय ॥
पठयो न कुमर अर्जुन१८८।१तदपि बाबर३०सन हुव इम बिजय॥
निजभटन आइ बुंदिय नृपहु हुलसि दिन्न गज१गाम२हय३ ।४५।

दोहा ॥

कति नव९ दिन यह रन कहहिँ, जंपहिँ कति नव९ जाम ॥
चयारि४ जाम कति जन९ चवहिँ, कोहु होहु रनकाम ॥ ४६ ॥
गो लुट्टत भजतहु मुगल, बुंदिय देस बिगारि ॥
तट चम्मलि नरबद११७।२ तहाँ, रहिय खेत रचि रारि ॥४७॥
अहमदपुर१ मंडू२ अधिप, अतिप्रसन्न सुनि एस ॥
दिय बाबर३० प्रति संधिदल दब्बन अज्जं प्रदेस ॥ ४८ ॥
पठयो उत्तर मुगलपति, दै दोउ२न दलदूतं ॥
आवहु तुम चित्तोर१ अब, पावहु कटक प्रभूतं ॥ ४९ ॥
बुंदिय२गढ पुनि करहु बस, हैं अब हमहु सहाय ॥
उभय२ बंटि तुम लेहु इक१, इक१ हम जो घन आय ॥५०॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे पञ्चमराशौ वीतिहोत्र वसुधेश्वर १ वीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधेश्वरहड्डाधिराणनारायणदास १८७।१चरित्रेबाबर३०दिल्लीग्रहणादानहड्डाधिराडिक्काभिधयवननिपात२समयशकसूचन१,पुनःस्वपत्नीसमाचिकारायिबुराणास्वीकृताद्दि

[चित्तोड़] १ प्रसन्न होकर ॥४५॥ नौ २ पहर ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ३ मिलाप करने के पत्र ४आर्यों के देश दबाने के लिये ॥४८॥ ५ पत्र ॥४९॥ ६ बहुत सेना लेकर ७ अधिक आमदनी का देश होवेगा सो एक हम लेवेंगे ॥५०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति नारायणदास के चरित्र में बाबर का दिल्ली नगर लेना और हड्डाधिराज का इक्का नामक यवन को

कोपायनसामग्रीसहितपञ्चसहस्र ५००० पृतनाप्रधानस्वसनाभिशूर बुन्दीप्रस्थापन २, प्रतिश्रुतोपायनाकियद्दिनदर्शितानेककौतुकदत्तोचितदेयनरेन्द्रसहायीकृतकुमारार्जुन १८८।१ सार्थसदौहित्रद्वय २ सुताप्रतिप्रस्थापन ३, सशपथसाहसदत्तराजपुरपत्तनप्रधानपञ्चषष्टिसहस्र ६५००० मुद्रायपट्टसगौरवसाधितबुन्दीशानुमतसमाकारिततदीयसर्वजनराणातदर्जुन१८८।१ कुमारस्वाश्रितीकरण ४, समभिषेणितमालव १ गौर्जरमहीशम्लेच्छद्वय २ चित्रकूटवेष्टन५,शीर्षोद्दसमाहूतसप्रसभसार्धसैन्यबुन्दीस्थापितमध्याऽनुजनरवदो १८७।२ पेतस्वीयकुमारसूर्यमल्ल १८८।१ सौप्तिकसनिदानवाहिर्व्यस्तवलदल युद्ध्यमानसौभाण्डिचित्रकूटप्रविशन ६, समवमतदिल्लीशसहायनृपद्वये २ क १ मासाऽवधिनालीयन्त्रप्रघातप्रणायन ७, श्रुतस्वसहायदिल्लीशाभिषेणनपदीकृतपक्षद्वय २ प्रवीरशीर्षोद्द १ शाकम्भर २ ज्याजानिजकुट २ सपत्नयुग २ सैन्योपरिसौप्तिकसम्पात

मारने के समय के संवत् की सूचना करना, फिर अपनी स्त्री को बुलाने की इच्छावाले राणा का अपने स्वीकार कियेहुए वार्षिक नजराना की सामग्री सहित पांच हजार सेना के प्रधान अपने सपिण्ड भाई शूर को बुन्दी भेजना, नजराने को स्वीकार करके कितने ही दिन अनेक उचित्त कौतुक दिखाकर राजा का सहाय के लिये कुमर अर्जुन को देकर दोनों दौहितों सहित पुत्री को भेजना, अपनी सौगन के साथ हठ पूर्वक रायपुर नगर के साथ पैंसठ हजार रुपयों का पट्टा देकर बुन्दी के राजा की सलाह से उसके सब लोगों को बुलाकर उस अर्जुन कुमर को राणा का अपना आश्रित बनाना, युद्धयात्रा करके मालवा और गुजरात के बादशाह दोनों यवनों का चित्तोड़ को घेरना, शीर्षोद्दिये के बुलाने पर हठ पूर्वक आधी सेना सहित अपने विचेट भाई नर्बद सहित अपने कुमर सूर्यमल्ल को बुन्दी में रखकर रतिवाह के लिये आधी सेना बाहिर रखकर युद्ध करते हुए सुभाण्ड के पुत्र का चित्तोड़ में जाना, दिल्ली के बादशाह की सहायता की अवज्ञा करके दोनों राजाओं का एक महीने तक तोपों की घात से युद्ध करना, अपनी सहाय के लिये दिल्लीश की युद्धयात्रा सुन कर अपने दोनों पक्षवाले वीरों को पैदल लेकर शीर्षोद्दिया और चहुवाण दोनों भूपतियों का दोनों शत्रुओं की सेना पर रतिवाह पटकना,

न ८, समवगतस्वसीमावधिसमागतदिल्लीशाभिमुखप्रस्थितनिवेदितोचितोपहारनृपाऽनुजनरवद १८७।२ तद्गौरवसाधन ९, सहसासौप्तिकसमरपरास्तस्तोकसार्थसादीभूतयवनयुग २ पलायन १०, निपातितमण्डूपतिसचिवप्राप्ताऽष्टादश १८ प्रघातसायुर्बलकुमाराऽर्जुन १८८।१ रङ्गपतन ११, नारवदपूर्णमल्ल १८८।३ ढक्कूसुतपूर्णमल्लप्रारब्धप्रच्छन्नच्छलबुन्दीशमारणोपायनिष्फलीकरण १२, प्रतिघातितबुन्दीभटद्वय २ गौर्जरसेनानी १ सहसंहतानेकसपत्नबुन्दीशानुजनृसिंह २ द्रोहिद्वय २ परस्परप्रहारपरासुमहानिद्राविधान १३, परलोकप्रहितपरसङ्ख्यासहितकियत्प्रवीरप्राणप्रहाण १ कियद्भटप्राप्तप्रहार २ प्रख्यापन १४, दत्तनृपोपालम्भसमाहूतस्वसैन्यसहमहमूद १ मुदाफर २ गमनानन्तरप्रेषितसजीवितपरप्रभिन्नसमानीतसप्रहारस्वीयनृपद्वय २ निमित्तसरणिश्रुतजयप्रसन्नबावर ३० पट १ पत्र २ प्रेषण १५, शाकम्भर १ तत्समादानसहशीर्षोद्दारनादरणश्र

दिल्लीश को अपनी सीमा तक आया हुआ जान, सन्मुख जाकर उचित नजराना करके राजा के छोटे भाई नरबद का उसका बड़प्पन रखना, अचानक रतिवाह युद्ध से हार कर थोड़े साथ से घोड़ों पर चढ कर दोनों यवनों का भागना, माण्डूपति के सचिव को मार कर अठारह घाव पाकर आयुष्य के बल से कुमार अर्जुन का युद्ध में पड़ना, नर्बद के पुत्र पूर्णमल्ल का ढक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल के प्रारम्भ किये हुए गुप्त छल से बुन्दीश के मारने के उपाय को निष्फल करना, बुन्दी के दो वीरों को मारनेवाले गुजरात के सेनापति और अनेक शत्रुओं को मारनेवाले बुन्दी के राजा के छोटे भाई नृसिंह इन दोनों शत्रुओं का परस्पर के प्रहार से माराजाना, परलोक भेजे हुए शत्रुओं की संख्या सहित कितने ही वीरों के मारेजाने और कितने ही वीरों के घायल होने की सूचना करना, बुन्दी के राजा को उपालम्भ देकर अपनी सेना को बुलाकर महमूद सहित मुदाफर के गये पीछे शत्रुओं के घायलों को भेजकर अपने घायलों को लानेवाले दोनों राजाओं के लिये मार्ग में विजय सुनकर प्रसन्न हुए बाबर का खिल्लत और फ़रमान भेजना, उनको चहुवाण का ग्रहण करना और शीपोदिये का अनादर करना सुनकर भीतर क्रोधित हुए बाबर

वणान्त:मरुष्टबाबर ३० दिल्लीप्रतिगमन १६, कुमाराऽर्जुन १८८।१ पाटवावधिचित्रकूटस्थितानिष्प्रजमृधमृतस्वानुजनृसिंह १८७।३ निमित्तद्विजदत्ताऽयुतद्वय २०००० द्रम्मसगौरवस्वपुरसमागतसौभाण्डिजयसाधकसुभटसत्करण १७, विज्ञातराणाकृतनर्मसूचितवार्षिकवसुमार्गणातिरस्कारससैन्यसन्नद्धसीमावधिसमागतबाबरा ३०ऽभिमुखवर्जनविपरीतबुन्दीन्द्रसहायसङ्ग्रामसोत्कराठराणासङ्ग्रामसमभिषेणन १८, पीतकुल्याप्रदेशसम्मिलितार्य १ म्लेच्छ २ वरूथिनीजकुट २ समाघातसमारम्भण १९, बाबर ३० बलवारिधिविक्रमवेलावृद्धिवेलादुर्गाश्रयचिकीर्षुप्रदुद्रूषुराणादीवानोपपदप्रधनप्रष्ठीभूतहड्डपार्थिवप्रतिश्रवण २०, शीर्षोद्दस्वसूचकचामरझल्लजातीयस्ववीरवर्यविशेषार्थवितरण २१, प्रद्विितबुन्दीपुरपृथ्वीपुरन्दरप्रणीतपरपृतनाप्ररोधराणापलायना १ पलायन २ द्वापरपुरस्सरपरीक्षितपञ्चसहस्र ५००० प्रवीरोपेतयुद्ध्यमानबुन्दीपति १ दिल्लीपति २ सिन्धु

का पीछा दिल्ली जाना, कुमर अर्जुन के नैरोग्य होने तक चित्तोड़ में रहकर बिना सन्तान युद्ध में मरेहुए अपने छोटे भाई नृसिंह के अर्थ ब्राह्मणों को बीस हजार रुपये देकर बडप्पन सहित अपने नगर में आकर सुभाण्ड के पुत्र का विजय करनेवाले वीरों का सत्कार करना, सालाना खिराज मांगने पर महाराणा के किये हुए हँसी पूर्वक अनादर को जान कर अपनी सेना को सज्ज कर सीमा तक आये हुए बाबर के सन्मुख बुन्दीश को मना करने पर भी उसके विरुद्ध बुन्दीश का सहाय होना और उसकी सहाय से युद्ध की इच्छावाले राणा संग्रामसिंह का युद्धयात्रा करना, पील्याखाल (नाल) के प्रदेश में आर्य और म्लेच्छों की दोनों सेनाओं में युद्ध का आरम्भ होना, बाबर की सेना रूपी समुद्र की पराक्रम रूपी लहरों के बढने के समय गढ का आश्रय लेने के लिये भागने की इच्छावाले दीवान पदवी का धारण करनेवाले महाराणा का युद्ध में हाडा राजा के पीठ पीछे होने के लिये हाडा राजा का प्रतिज्ञा करना, शीषोद का अपनी सूचना करनेवाले अर्थात् राजा के चिन्ह रूप चमरों को झाला जातिवाले अपने श्रेष्ठ विशेष वीर के अर्थ देना, बुन्दी के राजा से शत्रु की सेना को रुकी हुई देख कर राणा का भागने औ र नहीं भागने के सन्देह करते समय परीक्षा कियेहुए पांचहजार वीरों सहित युद्ध करते हुए बुन्दीपति का दिल्लीश की सवारी के हाथी के समीप व्यूह रच

रसमीप०यूढवाटमुख्यम्लेच्छमण्डलमर्दन २२, दर्द्दकादर १ कमाल २ बहराम ३ प्रमुखपृष्ठप्रवीरप्रद्रवत्यक्तसर्वशिबिरसम्भारसप्तिसमारूढबाबर ३० विद्रवण २३, समीपसमागतराणासघोटकचतुश्चत्वारिंश ४४ दूघातघूर्णमानमोहपूर्वरूपमत्तबुन्दीवासवविरुदविबोधन २४, सौभाण्डिसनाभिबान्धवपञ्चक ५ सामन्तचतुर्द्दशक १४ वीरस्वापविधान २५, बान्धवाऽष्टक ८ सामन्ताष्टक ८ पुद्गलप्रघातसङ्गतिसङ्ख्यान २६, मेदपाटाधिराजबन्धु १ भट २ वर्गमरण १ क्षतप्रापण २ नाम १ सङ्ख्या २ ज्ञानानिदानसामान्यकल्पनासूचन २७, समरसंस्थितबुन्दी १ चित्रकूट २ दिल्ली ३ भटसङ्ख्यानिगदनमोहन १८०।१२ वंशीयदेवराज १८८।१ जैत्र १८२।३ वंशीयराघवदासहड्डद्वय २ प्रधनचाकित्यपलायनप्रकटन २८, नृपसहायोपकारनम्रशीर्षोद्दसप्रसभस्वस्थानीयसमानीतसर्वप्राप्तप्रहारप्रवीरपाटवसाधनानन्तरनियतपूर्ववार्षिकवस्तुजातद्विगुणोपहारप्रेषणप्रतिज्ञान २९, अर्जुन १८८।१ वर्जितस्वस्थानीयसमागतबुन्दीवसुधेन्द्रमृधमृतशूरसन्त

हुए मुख्य म्लेच्छों के समूह का मर्दन करना, कादर, कमाल और बहराम आदि पीठ के वीरों का भागना देखकर डेरों की सब सामग्री को छोडकर घोडे पर चढकर बाबर का भागना, घोडे सहित चवालीस घावों से घूमते हुए मूर्च्छा के पूर्वरूप वाले मत्त बुन्दी के राजा के समीप आकर स्तुति करके राणा का राजा को बोध कराना, सुभाण्ड के पुत्र के पांच सपिण्ड भाई और चौदह उमरावों का माराजाना, आठ भाई और आठ उमरावों के शरीर पर घाव लगने की गणना करना, मेवाड़ के स्वामी के भाई और उमरावों के समूह के मरने और घायल होनेवालों के नाम और संख्या नहीं जानने के कारण सामान्य कल्पना की सूचना करना, युद्ध में बुन्दी, चित्तोड़ और दिल्ली के वीरों की संख्या कहकर मोहन के वंशवाले देवराज और जैत्रसिंह के वंशवाले राघवदास दोनों हाडाओं के युद्ध से चकित होकर भागने को प्रकट करना, सहाय करने के उपकार से शीशोद का नम्र होकर हठ पूर्वक राजा को अपने स्थान पर लाकर सब घायल वीरों का इलाज कराने से नैरोग्य हुए पीछे प्रथम नियत कियेहुए सालाना वस्तुओं को दुगुना करके भेजने की प्रतिज्ञा करना, अर्जुन को छोड़कर अपने स्थान पर आयेहुए बुन्दी के भूपति का युद्ध में

तिसहसर्वसामन्तसत्करण ३०, त्रिधालेखज्ञाननिदानसङ्ग्राम समयसीमासन्देहसमर्थन ३१, पलायनपथप्राप्तबुन्दीवशवर्त्तिवसुधा विभागविप्लवविदधानबाबर ३० वरूथिनीविग्रहनृपाऽनुजनरबद १८७।२ निपातसङ्क्षेपसूचन ३२, श्रुतैतदभीष्टप्रसन्नगौर्जर१ मालव २ म्लेच्छराजजकुट २ सन्धिदलदिल्लीपुरप्रेषण ३३, स्वीकृतसन्धि ५ साहाय्य २ प्राप्तप्रतिपत्रबाबर ३० यवनयुग २ राज्यद्वय २ विप्लवविधित्सनमष्टाविंशो २८ मयूखः ॥ २८ ॥

आदितः पञ्चसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

रन तजि पीरे[1]खारतैं[2], मुरि बाबर ३० प्रतिमग्ग ॥
लुट्टे नृपके आढ्यलखि, आये जे पुर अग्ग ॥ १ ॥
प्रथम १ मुकामहि पथ प्रजा, होत लूट लखि हानि ॥
नरबद १८७।२ प्रति बुंदियनगर, आँ[3]क्रंदन किय आनि ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

प्र[4]चुर प्रजा पुक्कार स[5]रन रवि[6]मल्ल १८८।१ कुमर सुनि ॥
काकाप्रति इम कहिय प्रथम नृप संग न लिय पुनि ॥

मरेहुए वीरों की सन्तान और सब उमराओं का सत्कार करना, तीन प्रकार के लेख जानने के कारण युद्ध के समय की मर्यादा में सन्देह का समर्थन करना, भागते समय मार्ग में आईहुई बुन्दी की भूमि में उपद्रव करनेवाली बाबर की सेना के युद्ध में राजा के छोटे भाई नरबद के मारेजाने की संक्षेप से सूचना करना, यह अनुकूल वृत्तान्त सुनकर प्रसन्नता से गुजरात और मालवे के दोनों यवनों का मिलाप का पत्र दिल्ली भेजना, उस मेल को स्वीकार करके सहाय के लिये बाबर का उत्तर का पत्र पाकर दोनों यवनों का चित्तौड़ और बुन्दी दोनों राज्यों में उपद्रव करने की इच्छा करने का अट्ठाईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २८ ॥ और आदि से एक सौ पचहत्तर १७५ मयूख हुए ॥ १७५ ॥

१ पील्याखाल से २ धनवान् नगर को ॥ १ ॥ ३ पुकार (रोदन) ॥ २ ॥ ४ बहुत ५ मार्ग में ६ सूर्यमल्ल

सल्ल[1] यहहु संहि रहहिँ प्रथित[2] तोतो कातरपँन[3]॥
अप्पन दोउ २ न अधिप गिनहिँ जिन्ह टारि लयो गन ॥
हैँ बीर जदपि[4] काका कहिय गढरच्छक नृप रक्खिगय ॥
तुम लाल रहहु पट्टप[5] तरुन हम रन हेरत बृद्धवय ॥ ३ ॥
तुम सुपुत कुलतिलक पाइ तरुनत्व[6] पूर्वसहि ॥
विनुनृप सासन बीर उचित चढन न नय[7] एसहि ॥
कारोभुजंग कुमार तदपि सज्ज्यो नरबद १८७१२ तब ॥
प्रजावती[9] ढिग पहुँचि सोहु बुल्ल्यो निवेदि सब ॥
ओवरे मध्य कछु मिस अटकि करि प्रतिभू[10] रट्ठोरि कँहँ ॥
दे धर्म सपथ[11] कुमरहिँ बिदित तिम नरबद१८७१२ हुव सज्जतँहँ॥४॥
रोकि जननि रट्ठोरि गदित[12] निज सौँहँ द्वार गत ॥
कारो अतिगँर[13] कुमर रहिय फनपटकि कोप रत ॥
सज्जि सबय[14] भट सत्थ कलह नरबद१८७१२ प्रयान किय ॥
सहँसमल्ल१ जिहिँ सजत दासिकुमरहु निवारिदिय ॥
जनु[15] लियउ जानि निहचै निधन[16] इम नरेस[17] मध्यमँ[18]२ अनुज
गढलज्ज अप्पि तरुनन[19] गयउ भिरि रन परन दिखान भुज।
पट्टनि सन दिस पुब्ब बार चम्मलितट आवत ॥
कुसक घट्ट उपकंठ[20] परयो बाबर३०दल[21] पावत ॥
समय रत्ति तस सीस दुसह नरबद१८७१२ सौप्तिक दिय ॥
गरद छबीनाँ भंजि परयो उप्पर संगरप्रिय[22] ॥

---

१ साल २ प्रसिद्ध ३ कायरपन ४ तो भी ५ पाटवी कुमर और युवावस्था होने के कारण ॥ ३ ॥ ६ युवापन. यह ७ नीति नहीं है. सूर्यमल्ल काले सर्प के अंश से हुआ, इसकारण उसको काला ८सर्प कहते थे ९ माता के पास १० जामिन ११ सौगन ॥ ४ ॥ अपनी सौगन १२ कहकर १३ अत्यन्त जहरीला १४समान अवस्थावाले १५ मानों १६ नाश १७ राजा का १८ विचेट भाई १९ जवान अवस्थावालों को गढ की शर्म देकर ॥ ५ ॥ २० समीप २१सेना २२ युद्ध का प्यारा; अथवा युद्ध ही है प्रिय जिसको

वज्जिग कृपान सहसा विखम अद्धी रजनि अनेहं इम ॥
मंडिय वजार खुल्लि मृत्युके जगरी इत अतिकोप जिम ॥ ६ ॥
भिरत छवीनाँ सुभट प्रथम छकि लोह गये पर ॥
मरत हनत धसिमाँहिं परे जुज्झत बढि पद्धर ॥
जानि परिधिदल जुरत सत्रु पुब्बहि सचेतहुव ॥
त्रिसहस्र३०००न चढि तुरग समुह झेल्यो सुभांड१८६।४सुव ॥
भटपंचसत५००ननरबद१८७।२अभयपुब्ब१हिछकितहँ२झरिपरयो ॥
बिनुसीस बरस बावन बयहु कलह अद्ध१ घटिका करयो ॥ ७ ॥
कियउ पुब्ब संकेत पुरी पट्टनि हाकिमप्रति ॥
सैरिभ बहु रनसमय आनि ढिग तुम सचेत अति ॥
बँलि तिन्ह शृंगर्न बंधि देहु प्रजराइ पलित्ते ॥
जोहि करत जवनेस बिमन जानिय अब बित्ते[10] ॥
परदल असेस नरबद१८७।२परत चिंति बहुरि भय चढि चलिय
मुगलान नतो इतकौं मुररि बुंदिय ध्रुवं बेढैं बलिय ॥ ८ ॥
इहिं रन नरबद१अडर परयो हनि जवन पचीस२५न ॥
बिनुसिर पुनि खटदवहि पत्ते सुरपुरं निबाहि पन ॥
हत्थाउत३।१ हम्मीर२ परयो संहरि अरि पंद्रह१५ ॥
तिम घुग्घल१८।१ हर तेज३ मिच्छनव९ मारि महामह ॥
लक्खव४रु कुबेर५हलू१८२।१कुलजतिम अनुपम६क्रम बंधु त्रय३
करि छक्क६त्रिक३रु दसक१०न कदन भये सुरन सिलि बीतभय९
खज्जूरीपति७ खेम परयो खट६ गेरि कदन मँहि ॥

आधी रात्रि के १ समय. इस प्रकार उस रात्रि के २ जागरण करनेवाले ने; अथवा जगर (कवच) धारण करनेवाले ने ॥ ६ ॥ ३ सीधा ४ छवीना (चौकीदार) सेना को युद्ध करते जानकर. सुभाण्ड के ५ पुत्र को ॥ ७ ॥ ६ भैंसों को युद्ध के समय लाकर ७फिर उनके ८ सींगों से पलीते जलाकर बांध देना ९ उदास होकर १०मारेगये (मरे). बुन्दी को ११ निश्चय घेरते ॥ ८ ॥ १२गया १३स्वर्ग में ॥ ९ ॥ युद्ध रूपी १४कूप में गिराकर.

रन लालाउत१०।६।१राम१८।१।१बच्यो वपु घाय अठ्ठ८बहि ॥
सुक्कल२नरवद१८७।२कुमर समर उबरयो इक१छत सहि ॥
पीछैतैं यँहँ पहुँचि बन्यौं बंटक२ दस१० अरि दहि ॥
तोमर प्रताप१झल्ला रतन२ उभय२ मुख्य अरि प्रान३ अहि ॥
सतपंच५००परे बुंदिय सुभट रन सह छतसत१००जियत रहि।१०।

दोहा ॥

अक्खय१८६।१कुल खटपुर अधिप, नरवद१८७।२वैर निहारि॥
स्वांत३ मुदित संग्राम१८७।१सुत, भो किखिं१मरत इभारि॥११॥
रक्खत हौंसहि६ राज्यकी, प्रथम जिहँ७१ पन पाइ ॥
पहु८ मारयो२संग्राम१८७।१ पुनि, यह वैरहु अधिकाइ ॥ १२ ॥
जनकवैर१ गुरुता१० जुग२हि, उर सल्लहिं जिम एस ॥
हनन नृपहिं चिंतत रहत, इक्खत छिद्र असेस ॥ १३ ॥
सो इम नरवद१८७।२ निधन११ सुनि, बलि घायल२ बुंदीस ॥
होत अभीष्ट प्रहृष्ट१२ हुव, संचत अघ भर१३ सीस ॥ १४ ॥
निरखहु हाहा राम१४२०३।४ नृप, ऐसी वत्तन अज्ज१५ ॥
वरतैं मिच्छन हुकमबस, अचिरज बढत अकज्ज ॥ १५ ॥

षट्पात् ॥

नरवद१८७।२को इत निधन१६ सुनत बुंदियपुर सोचहिं ॥

१घंट करानेवाला. शत्रुओं रूपी पवन के लिये २सर्प(सर्प का नाम ही पवनाशन है इस कारण यह उपमा दी है) ॥ १० ॥ ३मन में ५ सिंह के मरने से ४ बन्दर प्रसन्न होवे इस प्रकार प्रसन्न हुआ ॥११॥ पहिले ही ७ पाटवी होने के कारण राज्य की ६ चाहना रखता था फिर ८ राजा नारायणदास ने संग्रामसिंह को मारडाला इससे वैर अधिक होगया ॥ १२ ॥ ९ पिता का वैर और १०बडा होने से दोनों कारण ॥ १३ ॥ नरवद का ११ मरना सुनकर १२प्रसन्न हुआ. मस्तक पर पाप का १३ भार संचय करके ॥१४॥ १४ हे राजा रामसिंह १५ आर्यलोग इन्हीं वातों से यवनों की आज्ञा में रहते हैं इसमें आश्चर्य करै सो निकम्मा है ॥ १५ ॥ १६ नाश

कारि कुमरहिँ कछु न रम्य भोगहु मन रोचहिँ ॥
माता चउ४ सह कुमर५ मंत्रि६ सुभट७न यह मंत्रियँ ॥
स्रवते घायन सुपहु१ तिमहि बत भट२ छत तंत्रियँ ॥
परिहैं जु सुद्धि चित्तोरपुर असुभ ततो भावी अटल ॥
यातैं बिगुप्त रक्खहु सहै नृप आवनलग बुद्धिबल ॥ १६ ॥
दोहा—यह प्रबंध जनपद अखिल, भयो प्रजाप्रति भाखि ॥
सुहि कहाइ उत रान सन, रन सु गूढ लिय राखि ॥ १७ ॥
अर्जुन१८८१लग घायल इम सु, रक्खी गोपित रान ॥
किय सुकल१८८४इक१ छतं बिकल, बुंदिय प्रेतबिधान ॥१८॥
स्वपति अंत बुंदिय सुनत, नरवद१८७१की जुगरनारि ॥
कछवाही१ जद्दोनि२ किल, ज्वलन दये वपु जारि ॥ १९ ॥
अखिल होत पटुकल्प उत, भूप त्वरी करि भौन ॥
आवनल[illegible] याहितैं, जबहु असुभ जान्यौं न ॥ २० ॥
यहहि हेतु गिनि अर्जुन१८८१हिं सिक्ख न दिय सीसोद ॥
इक१ छत चिर रहि याहुकैं, मिट्यो निट्ठिकरि मोद ॥ २१ ॥
नगर आइ जान्यौं सु नृप, वल्लभ अनुज विनास ॥
जुगर भ्रातनके सोक जुत, भो बिसिनी हिमभास ॥२२॥
द्विज अयुत१००००हिं भोजन दयो, अयुत१००००हिं रुप्पय अप्पि

---

१ कुमर सूर्यमल्ल को २ सुन्दर ३ सलाह की ४टपकते हुए घावों से ५ राजा है और इसी प्रकार उमराव भी घावों के ६ आधीन हैं सो यह ७खबर ८विशेष गुप्त रक्खो ॥१६॥ सब ९देश में १०प्रजा से कहकर, एक ११ घाव से विकल ॥ १८ ॥ १२ अपने पति का अन्त सुनकर १३निश्चय१४अग्नि में शरीर जला दिये ॥ १९ ॥ सब के १५नैरोग्य होने पर १६शीघ्रता ॥ २० ॥ एक घाव १७ बहुत समय तक रहा ॥ २१ ॥१८ प्यारे भाई का *नाश हुआ जाना. हेमन्त ऋतु की १९ कमलनी की २० शोभावाला हुआ अर्थात कुम्हलागया ॥ २२ ॥

---

*यहां महाराणा सांगा से भगेहिंइ बाबर की सेना से युद्ध करके नरबद का मारा जाना लिखा सो ठीक नहीं है इसका कारण ऊपर के नोट में लिख दिया गया है अतएव यह युद्ध किसी अन्य कारण से किसी अन्य के साथ हुआ होवेगा।

प्रजावतिन हित तिन्ह तियनं, मंडनं१ सिचयं२ समप्पि ॥ २३॥
बादिय कुमर अवरोध३ बिच, सिसकरि अटक्यो मोहि ॥
काका लै सबयं४न कियउ, जुज्झि मरन रन जोहि ॥ २४ ॥
मुगल५राज रन मोरिकैं, भानुराज १५५ कुलभानं६ ॥
आयो इम जय उल्लसत, हढ जस वाजि दिवान ॥२५ ॥
जोगी इक १ कोउक जवन, यह उपपद दिय अग्ग ॥
जिमहि रान आये बजत, सिद्धन बचन निसग्गं७ ॥ २६ ॥
सत्थ नृपतिके हड्ड सब, सज्जि गये रनसूर ॥
बुंदिय कातिक निदेसबस, प्रथित रहे बलपूर ॥ २७ ॥
चुंड१८६।२उदय१८६।३कुल अवधि चढि,सबहि मरन गय संग॥
पै खटपुर८ पलटे प्रतिमं९, रह्यो पृथक रुचि रंग ॥ २८ ॥
नरबद १८७।२ को यातैं नृपति, अधिक पटा सु उतारि ॥
कछु ग्रामन खटपुर गयउ, वाके वस अनुसारि ॥ २९ ॥
छिद्र तकत पुब्बहि छली, अब अनिष्ट हुव एह ॥
सो परवस जात न सह्यो, इक्खत अहित अनेहं१० ॥ ३० ॥
छतं११नजुत्त १ अरु हीनछत१२ २, मृतन१३ तनय ३ सनमानि ॥
ग्राम१बिभूखन२बाजि३गज ४, अधिप दये हित आनि ॥३१॥
क्रम मोहन१८०।११कुल जैत्र१८२।३कुल, देव१८८।१रु राघवदास।
बच्छोला १ कोटा २ बसंतिं१४, आये भजि जिय आस ॥ ३२ ॥
बच्छोला १ कोटा २ सु बिसुं१५, बुंदी आतहि बेर ॥

भाई की स्त्रियों ने उन(ब्राह्मणों)की स्त्रियों को१भूषण२वस्त्र॥२३॥३जनाने में४ अपने समान अवस्थावालों को लेकर॥२४॥५बादशाह बाबर को युद्ध से भगाकर. भानुराज नामक चहुवाण के कुल का६सूर्य ॥२५॥ आगे किसी यवन फकीर ने यह खिताब दिया था इस कारण सिद्ध के वचन के७स्वभाव से(राणा दीवान बजते आये हैं. राणा के दीवान बजने का सत्य कारण ऊपर के नोट में लिखदिया है, यहां लिखा सो सत्य नहीं है)॥२६॥२७॥८खटकड़ पुर का पति ९ सदृश ॥२८॥२९॥१०समय ॥३०॥११घायलों का१२विना घायलों का और१३मरेहुओं के पुत्रों का सन्मान करके ॥३१॥ अपने१४निवास स्थान से ॥३२॥१५वैभववाले

छिन्नैं हुव २ हि महीप *छम, दंडयन नीति न देर ॥ ३३ ॥
अर्जुन १८८।१ भ्रातहि करि अरज, पीछैं अवसर पाइ ॥
नृपतैं दोउ२न धाम निज, दिन्ने बहुरि दिवाइ ॥ ३४ ॥
अर्जुन १८८।१ के सोदर अनुज, पाये घाय पचीस २५ ॥
जो चिर[1]करि हुव स्वस्थ[2] जब, सुपहु किन्न बखसीस ॥ ३५ ॥
करउर १ पुर गज जय[3]कलस २, निज तुरंग मृगडान ॥
खास पट्ट ४ इक १ मनिखचित, अप्पिय मिलि चहुवान॥३६॥
पुनि मुत्तिन भुज पुज्जिकैं, बहुत सिराह्यो बीर ॥
कहिय भीम १८८।२ मो लखत किय, चंद्र[6]हास गज चीर ।३७।
अर्जुन १८८।१ सुनि उल्लाँघ उत, करि जनकोचित कर्म ॥
बुंदिय आयउ रीतिबस, धारत लौकिक धर्म ॥ ३८ ॥
महिप ताहि हिय लाइ मिलि, मैं नरबद १८७।२ इम अक्खि॥
पूजे भुज गौरव प्रथित, रीतिक[10]थित हित रक्खि ॥ ३९ ॥
दिय पट्टनि १ पुर अरु द्वि[11]रद, निज दलथंभन २ नाम ॥
खासबाजि३ पट४ भूखन५ रु, इक १चामर६ अभिराम॥४०॥
कर मुत्तिन पुज्जि रु कहिय, अब रहिये सुत अत्थ ॥
लहिये राज्य बिलास बहु, बहिये सुख भरि बत्थ ॥ ४१ ॥
दल[12] रानाँ पठयो तद[13]नु, जँहँ सपथ[14]न लिखि जाल ॥
इक १ बेर पुनि अर्जुन १८८।१ हिं, भेजहु मिलन भुवाल ॥४२॥
जो परबस चित्तोर जब, अर्जुन १८८।१ पठयो ईस ॥
न दयो रान सु आन पुनि, सपथ १भार २ धर सीस ॥४३॥

---

*समर्थ राजा ने ॥३३॥३४॥१बहुत समय से २नैरोग्य ॥३५॥ ३जयकलश नामक हाथी४मृगडाण नामक खासा घोड़ा५मणियों का जड़ाहुआ शिरपेच और करउर नगर दिया॥३६॥ ६ खड्ग से हाथी की चीरें कर दी ॥३७॥७ नैरोग्य ८पिता के उचित कार्य करके ॥ ३८ ॥ ९प्रसिद्ध१०ऊपर कहीहुई रीति से स्नेह रखकर ॥ ३९ ॥ ११ हाथी ॥ ४० ॥ ४१ ॥ १२पत्र १३जिसपीछे १४सौगनों के समुदाय

जवनागम *ध्रुव जानिकैँ, उचित भीर हिय आनि ॥
नृप सम्मति लै अर्जुन१८८१सु, तत्थ रहिय जस तानि॥४४॥
प्रबल वध्यो इत जोधपुर, मालदेव महिपाल ॥
लिन्नैं जिहिं अजमेर१लग, बहु गढ कटक बिसाल ॥ ४५ ॥
इत चालुक रैवत२ अचल, सरवहिया रन१ सूर ॥
करन नाम बितरन३२ करन, कविन करन दुखदूर ॥ ४६ ॥

षट्पात् ॥

याके कुल हुव अग्ग जई जसराज१ अतुल जस ॥
दुर्जनसल्ल२ उदार तिमहिं बिक्रांत४ भयउ तस ॥
बिजय३ तास हुव वीर धीर रन१ दान२ धुरंधर ॥
वाके हुव नृप एह करन४ जग कित्ति बिसद५ कर ॥
कैवर्त्त५ बिदित याके कुमर ताकै नवघन६ होहि तिम ॥
ए भूप खट६ हि रैवत अचल जुरन१ दैन२हुव कर्ण जिम ।४७।

दोहा ॥

इनमैं अनुपम कर्ण४ यह, हुव इहिं समय महीस ॥
जगदेव६ पीछैं जसहिं, सहभट जिहिं दिय सीस ॥ ४८ ॥
सत्तसई७०० मिलि कविनकी, कहुँ जावत इक१काल ॥
बालेसा९ संभर बिजय, भिंट्यो१० सरनि११ भुवाल ॥ ४९ ॥

षट्पात् ॥

वासर कछु नृप बिजय सुकवि रक्खेअति हितसह ॥

लिखकर ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ यवनों का आना * निश्चय जानकर ॥ ४४ ॥ बडी १ सेना से ॥ ४५ ॥ २ रैवत नामक पर्वत ३ दान में कर्ण के समान ॥ ४६ ॥ ४ वीर ५ उज्ज्वल कीर्ति करनेवाला ॥ ४७ ॥ ६ जगदेव ने कंकाली नामक भाटनी को मस्तक दे दिया था जिसपीछे यश के लिये जिसने ७ वीरों सहित; अथवा अपने उमरावों सहित मस्तक दिये ॥ ४८ ॥ किसी समय में सात सौ ८ चारण मिलकर कहीं जाते थे जिनको विजय नामक वालेसा ९ चहुवाण ११ मार्ग में १० मिला ॥ ४९ ॥

ब्याह[1]संनहु अति बढत मन्नि अभिमत[2] किन्नौं मह[3] ॥
दुव२ दुव२ निज पटु[4] दास पास रक्खिय इक१ इक१ प्रति ॥
थुक्कहिं[5] ओडत हत्थ किन्न स्वागत अनेह[6] कति ॥
जिनमाँहि रत्ति कति मूढ जगि बुल्ले कत्थनबीर[7] व्है ॥
मच्छरी[8] माँहिं भासत मनहुँ सरबहियनको सीर[9] व्है ॥५०॥
विजय अग्ग यह बत्त दई प्रातहि कहि दासन ॥
संभर कुप्पि रहस्य[10] जबहि बिस्वस्त[11] बुल्लि जन ॥
अक्खिय ताहि उदंत[12] सुनत्त सुत्तन[13] इम अक्खहु ॥
देवी कँहँ बलिदैन पुष्ट इन्ह करत अहो[14] पहु ॥
असो न कोहु भासत[15] अधिप सिर इन्ह सट[16] सत्तसत७०० ॥
अप्पि रु उबारि चारन इते रक्खहिं नाम दयानुरत[17] ॥ ५१ ॥
इमहिं बत्त तिहिं अनुग कपट तंद्रित[18] निस किन्नी ॥
जगत हुते तिन्ह जोहि लीन मंचन सुहिलिन्नी ॥
इम अभीष्ट[19] आदरहु बननलग्गो सब दुर्बल ॥
राजद्वार तब रुद्द[20] छितिप तिन्ह किय कृत्रिम छल ॥
हुव बत्त प्रकट तव इम कहिय सटि[21] देहु जन सत्तसय७०० ॥
तजिदैहिं जियत तोतो तुमहिं भनित[22] बिनाँ सु टरै न भय ॥५२॥

विवाह१से२वांछित३उत्सव. एक एक के पास अपने४चतुर दो दो सवक रक्खे जिन्होंने उन चारणों के५थूक को हाथों में झेल कर कितने ही६समय पर्यन्त स्वागत किया७कथा कहने में वीर होकर कहा कि इस८चहुवाण में मानों सर वहियों का९भेव दीखता है॥५०॥१०एकान्त में११विश्वास के लोगों को बुला कर कहा कि१२वृत्तान्त. वे १३सोये होवें तब १४आश्चर्य है कि देवी को बलि दान देने के अर्थ राजा इनको पुष्ट करता है ऐसा कोई राजा नहीं१५दीखता कि इनके १६ बदले में सात सौ मस्तक देकर इन चारणों को१७दया में प्रीति करके बचावै ॥५१ ॥ कपट की१८ऊंघ लेते हुए. इस १९अनुकूल(इच्छानुसार) आदर के होने पर भी राजद्वार २० बन्ध करके २१ बदले में२२ऊपर कही हुई वार्ता के बिना

सुनत बज्र बच सबन पाइ भय मंत्रि[1] परस्पर॥
कढ्ढिय निकासहु कातिक नियत[2] जे भ्रमि आनैं नर॥
हे बहु पुत्रन सहित रक्खि तिनके सुत संकट[3]॥
बाहिर कढ्ढे बिजय खुल्लि खिरकी चारन खट६॥
सुव बलय तेहु हारे भटकि मिले तदपि न इत७०० मरन॥
दस१०बीस२०मिलैं जिनतैं सु दुख न टरैं बिनु तितनैं७००नरन॥५३॥
हेरत नर बारहठ इक्क१ जूँनाँगढ आयो॥
रैवतपति नृप करन४ पुच्छि कारन सब पायो॥
भाखिय चालुक भटन लखहु बालिस बालेसन॥
हुनत चारनन छाइ उचित भूपन अघ एस न॥
जो रचत भनत अछय[5] सुजस सब अप्पन बलिदैहिं सिर॥
आश्रय करैं जु अधिपति उहाँ को न करैं बसबर्ति[7] फिर[8]॥५४॥
सरबाहिया सतसत्त ७०० टारि भट तब पैत्तो[9] तँहँ॥
बसुधांग्रह[10] बालेस पिहित[11] थप्पिय कालीकँहँ॥
इक्क १ इक्क १ तँहँ आनि बढ्ढि अज[12] सकल बचाये॥
नमिले जोलौं लिखिल[13] अँधर[14] मृत्युहि गिनि आये॥
चालुक बचाइ इम सत्तसत ७००व्याहि रैवसा करन४हि बिजय[15]
दिय सिक्ख सदन सह चारनन नृप संभर निर्ख्यात[16] नय॥५५॥
॥ दोहा ॥

---

१ सलाह करके २ निश्चय ३ कैद में ॥ ५३ ॥ ४ मूर्ख बालेलों को ५ अक्षितीय यश कहै तो. जहां मालिक ६ अवलम्ब लेवे तहां ७ सेवक ८ निश्चय ही कौन नहीं कर सक्ता है ॥ ५४ ॥ ९ गया १० भूगृह (तहखाने) में ११ गुप्त काली देवी को स्थापन करके. एक एक सरवहिया क्षत्रियों के बदले में एक एक १२ बकरे को मारकर सब को बचाये जब तक १३ सप्त शालिका नहीं हो लिये तबतक अपनी मृत्यु जानके ही १४ नीचे आये. विजय नामक बालेसा ने क्षत्री सरवहिया को अपनी १५ बहिन ब्याह कर उस नीति १६ प्रख्यात चहुवाण ने चारणों सहित सीख देकर घर भेजा ॥ ५५ ॥ ५९ ॥

सरबहिया ऐसी असह, करन ४ करी इहिँकाल ॥
द्वार पताका दानकी जास तन्यौं जस जाल ॥ ५६ ॥
काय तज्यो जब इहिँ करन ४, ईस्वर कवि तँहँ आइ ॥
महाभक्त इष्टहिँ सुमिरि, जो लिय बहुरि जिवाइ ॥ ५७ ॥
कैवर्त्त ४ हु याको कुमर, हुव जब सुपहु समत्थ ॥
सठ कोकिलपुरपति सचिव, तिहिँ लैगो छलि तत्थ ॥ ५८ ॥
कुल प्रमार संखुल कुमति, नाम अनंत नरेस ॥
करि मच्छर कारा दयो, इम बुल्लि रु तिहिँ एस ॥ ५९ ॥
उर्केनाम केवट्ट ५ के, बहिनीसुत कुलबाल ॥
निज मातुल आन्यौं निलय, कलि संखुल कुल काल ॥ ६० ॥

इस कर्ण ने शरीर छोडा तब १ * ईसरदास बारहठ ने ॥ ५७ ॥ २ केवाट ना मक ॥ ५८ ॥ ३ कैद में ॥ ५९ ॥ ४ ऊका नामक ५ केवाट के ६ भानजे ने. अपने ७ मामा को ८ युद्ध में ॥ ६० ॥

---

* इस कर्ण को ईसरदास ने जिलाया जिस समय का ईसरदास का कहाहुआ मरुभाषा का गीत नाम क एक छंद राजपूताना में प्रसिद्ध है सो नीचे लिखाजाता है ॥ गीत—

धानंतर मयंक हणूं सुक्र धाओ, नरपाळगर रिख निवड़ ॥ एकवारगी करन उठाड़ो, जन खटतणों प्रयागवड़॥१॥
ओ जो आज नहीं जीवाडो, सरवहियो दीनाचो साम ॥ तूझतणा ओपध धानंतर, केहै पछैं आवसी काम॥२॥
करन जीवसै मनसै कव गुण, किता जगतरा सरसै काज॥ इमरत केहै काम आवसे, आवो नह जो ससहर आज॥३॥
आणों मूळी करन उठाड़ो, जगसह मानै साच जिम॥ हणवंत लखणतणी प्रभुता हव, कुण जाणसै स हुई किम॥४॥
सधरी गये अंस थारे सुक्र, नीपण जंपै अंक लिलाड़।अपकज लाभा असुरउठाया, अमकज एको करन, उठाड़॥५॥
सुर थे सह जीवाडण समरथ, सगळां भेळां काज सरै॥ धावो रे कोय काज धरमैर, करन मुवां कव साद करै ॥६॥
सुत सायर सुत पवन भ्रगू सुत, आपण पणों धरे अधकार॥आया चारों करन ऊठियो, सुतबिकमलखटमनसाधार
धानंतर मयंक हणूं सुक्र धाया, गुण सांभळ सारण गरज॥ आया खेड़ कियां आवाहण, ईसरची सांभळ अरज॥८॥

---

(१) मारवाड में ब्राह्मण १ चारण २ सन्यासी ३ जैनमत का साधु ४ फकीर (मुसलमान साधु) ५ देवताओं के क्षत्रिय जाति के पुजारी (जैसे रामदेवजी के पुजारे तवँर वंश के क्षत्रिय हैं) ६ इन छहों को खटमन अथवा खटदर्शण(छहों दर्शन करने योग्य)कहते हैं. ये बारहठ ईसरदास कब हुए ये जिसका प्रमाण आगे दिया जावेगा ॥

हन्यौं अनंतहु जिहिँ पिहित, जिम हल्लू तिम जाइ ॥
सो विस्तर छोर्‌यो सु पहु, प्रथित कथा सब पाइ ॥ ६१ ॥
केवट्ट ५ हु हनि जवन कलि, वपु तजि किय दिवे बास ॥
नवघन ६ हुव तस सुत नृपति, यहहु ख्यात इतिहास ॥ ६२ ॥
सरवहिपनकौ सो सुजस, को करिहै छितिकंत ॥
जो पिक्खहु प्रभु राम २०३।४ जग, अर्क प्रथम उग्गंत ॥६३॥
इत जड्डेचक्क भुज अधिप, याहि समय ढिग आंस ॥
सो जद्दव नृप भार९सुव, जसा १ नाम जग जास ॥ ६४ ॥
तासहु बीर उदारता १, अखिल दच्छि हुव अग्ग ॥
जगप्रसिद्ध नृप राम २०३।४ जस, अबलग सुजस उदग्ग ॥६५॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रचतुर्बाहुसद्१ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहित०पाख्यानाऽवसर०पाहार्यबुन्दीनरेन्द्रनारायणदास १८७।१चरित्रे पलायमानबाबर ३० विलुण्टितप्रजापूत्कारप्रकुपितामिषावरोधावरुद्धकुमारसिंहिरमल्ल १८८।१ सज्जितसवयस्कसुभटबाबर३० वाहिनीविहितसौप्तिककृतघटिकाऽर्द्ध १ रुराडरणमहीपमध्यमा २ नुजनरबद १८७।२ वीरतल्पस्वपन १, मृधम्रियमाणबुन्दीशसोदर्य १

---

१ हे राजा रामसिंह यह कथा प्रसिद्ध होने के कारण यहां इसका विस्तार छोड़ दिया है. ॥ ६१ ॥ २ स्वर्ग में ॥ ६२ ॥ ३ हे प्रभु रामसिंह सूर्य से पहिले ४उदय होता है ॥ ६३ ॥ ५जाड़ेचा ६हुआ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र नारायणदास के चरित्र में भागेहुए बाबर से लूटीहुई प्रजा की पुकार से कोपेहुए कुमार सूर्यमल्ल को सिंह से जनाने में बन्द करके अपनी समान अवस्था के वीरों को सजकर बाबर की सेना से रात्रियुद्ध करके आधी घड़ी तक घड़ से युद्ध करके राजाके बिचले भाई नरबद का माराजाना, युद्ध में मरनेवाले बुन्दीश के सगे और सपिण्ड भाई नरबद्द

सनाभिश्वान्धवनरवद१हम्मीर२तेजसिंह३खानधीर४कुबेरा५अनुपम६खेमराज७प्रभृतिप्रहृतपतिपक्षप्रवीरसङ्ख्यान २, निपातितानेकबाबर३०वीरतोमरप्रताप१मडूकुमारत्नसिंह २विशिष्टबुन्दीवीरपञ्चशती ५०० महानिद्रासमादान ३, सनाभिभ्रातृरामसाहि १पश्चात्प्रधनप्राप्तकुमारमोकल२मुख्यशूरशतक१००पुष्कलप्रहारप्रापण४, पूर्वप्रेरणाप्रबुद्धपट्टनिपुरप्रधानप्रमुखप्रकृतिजनसंगरसमीपसमानीतसैरिभवृन्दविषाणबद्धप्रदीप्तप्रकाशमिथ्यामनीषानिश्चितनिकटागतप्रत्यनीकानीकिनीनिर्भरसम्पातसाध्वससंत्रस्तसैन्यबाबर ३० विद्रवण ५, प्रभुपुष्कलप्रभूतप्रहरणप्रहारप्राप्तिपुरस्सरनिर्दारितनरवद १८७१२ निधनन्यसनाभिपट्टपुरनाथनरवद १८७१२ महत्त्वमात्सर्यानुमोदन ६, सबुन्दीवास्तव्यविशिष्टविदितैतदुदन्तसमनुष्ठिततच्छोकमातृचतुष्टय ४ सम्मतिसङ्गतसचिव १सुभट २समुपेतपट्टपतिकुमारसूर्यमल्ल १८८१२ परिकरोपेतप्रभुप्राप्तपिशुनघातप्रचुरपीडाप्रसारस्वरोधप्रयोजनकहड्डवती १ मेदपाटजनपदजकुट २ म

हम्मीर, तेजसिंह, खानधीर, कुबेर, अनुपम और खेमराज आदि से मारे हुए शत्रु के वीरों की गणना, बाबर के अनेक वीरों को मारकर तँवर प्रताप, झाला रत्नसिंह आदि बुन्दी के पांचसौ वीरों का माराजाना, सपिंड भाई रामशाह और पीछे से युद्ध में प्राप्त हुए कुमर मोकल आदि सौ वीरों का घायल होना, पहिले की प्रेरणा से चेतेहुए पाटण के हाकिम आदि राज्य के लोगों के युद्ध के समीप भैंसों के समूह को लाकर उनके सींगों से मशालें बांधकर जलाने से प्रकाश होने के कारण बुद्धि के भ्रम से शत्रु की सेना को समीप आई हुई जानकर पूर्व प्रहार के भय से डरीहुई सेना और बाबर का भागना, स्वामि नारायणदास के शरीर में पहिले ही बहुत शस्त्रों के घाव लगने से और फिर नरवद के मारेजाने से राजा के सपिंड भाई पाटण के पति नरवद का अपने पद होने की मत्सरता के कारण प्रसन्न होना, बुन्दी के निवासी लोगों के साथ यह शोक का वृत्तान्त जानकर सचिव और उमरावों के साथ चारों माताओं की सलाह से पाटवी कुमर सूर्यमल्ल का परगह सहित स्वामि के बहुत घावों से पीड़ित होने के कारण काका के मारेजाने का वृत्तान्त हाडोती और मेवा

घवापितृव्यकपरलोकप्राप्तिमधानबुन्दीस्थक्षतैक १ विकलचतुर्थ ४ कुमारसोत्कल १८८।४स्वपितृपरासुतामवोयसपर्याप्रयायन७,कामौ १ यादवी २ नरबद १८७।२ दयिताद्वन्द्वदेहदहन८, प्रहारपीडापटुकल्पबृहन्नारबद १८८।१ वर्जितपरिवारोपेतानिजनगरागतनिशामितनरबद १८७।१ निपातनरेन्द्रनारायणदास १८७।१ निजानुजनिधननिमित्तप्रत्येक १ द्रम्मैक १ दक्षिणादानसहितसम्भोजितायुत १०००० महीसुरमिथुन २ पट १ परिष्कार २ प्रसादन ९, कुमारमिहिरमल्ल १८८।१ पितृव्यकपटप्रापिताऽवरोधस्वावरोधसमर्थन१०, राणाकुलपूर्वपुरुषात्युत्तमदीवानोपपदप्राप्तिनिदानयाथार्थ्यसूचन११, हड्डाधिराजस्वसपर्यापर्याप्रतीपपट्टपतित्वमृधाभिमानशाठ्यपृथग्भूतपट्टपुरेशसांग्रामिनरबद १८७।१ वशवर्तिसगौरवग्रामादिप्रत्यब्दप्रवर्द्धमानस्वापतेयाऽऽयप्रचुरग्रान्तपरिच्छेदन१२, सौभाग्यिडसम्पराग्रस्वजयसाधकसक्षता १ऽक्षत २ संस्थितसन्तान ३ संवस

इन दोनों देशों में नहीं फैलने देकर उस वृत्तान्त को बाहर के द्वार पर ही रोकना और बुन्दी में एक घाव से विकल चौथे कुमर सोकल का अपने मरेहुए पिता की कर्तव्य सेवा करना अर्थात् उत्तरक्रिया करना, कछवाही और यादवी नरबद की दोनों प्यारी स्त्रियों का सती होना, घावों की पीड़ा से नैरोग्य होकर नरबद के बड़े पुत्र को छोड़कर परिवार सहित अपने नगर में आयेहुए राजा नारायणदास का नरबद को मरा सुनकर अपने भाई के मरने के निमित्त प्रत्येक स्त्री सहित ब्राह्मण को एक एक रुपया दक्षिणा और वस्त्र भूषण देना, कुमार सूर्यमल्ल का काका के कपट से जनाने में कैद होने का समर्थन करना, राणा के पुरुषाओं में से किसी पुरुषा को अति उत्तम महात्मा (फकीर) से दीवान पद प्राप्त होने का कारण जैसा सुना वैसी सूचना करना, हड्डाधिराज का अपनी सेवा के विरुद्ध पट्टपति होने के मिथ्या अभिमान की मूर्खता से जुदेहुए खटकड़ पुर के पति संग्रामसिंह के पुत्र नरबद के आधीन के बड़प्पन के साथ ग्राम आदि में सालाना बढ़तेहुए धन की पैदाइशवाले बहुत प्रान्तों का छीनना, सुभावड के पुत्र का युद्ध में विजय करनेवाले घायल और बिना घायल तथा मरेहुओं की सन्तान का ग्राम, हाथी आदि सामग्री

थ १ सिन्धुरा २ऽऽदिसामग्रीसत्कारणा१ पुनरर्ज्जुन१८८।१ दासाप सानपलायितदेवसिंह १८८।१ राघवदास १८७।१ बन्धुयुग्मरथा मवत्सोला १ कोटा २ समाहरणा २ समयपुर १ पीलु २ प्रमुखो पहारप्रसादितग्रामपाटवनारवद १८८।२ भुजाऽर्चन १३, तथैवप्राप्त पाटवबुन्द्यागतचामरा १ धिक्प्राक्सूचितसामग्रीप्रसादितनारवद ज्येष्ठकुमारार्जुन १८८।२ पाणिपूजन १४, मिलनमिषदत्तदलराणा स्वसहायार्थपुनरर्जुन १८८।१ चित्रकूटप्रत्याव्हान १५, योधपुरराज राष्ट्रकूटमालवदेवस्वविक्रमबलाजमेर १ दङ्गाद्यनेकप्रान्तपरिच्छेद न १६, कथितस्तोककुलपुरुपक्रमवीर १ वदान्य २ त्वशारवधिक चालुक्यरैवतराजकर्णवालेश १४ चाहुवाणविजयस्कन्धावारद्वारह ठसन्दोहसंरुधास्थानस्वसमेतस्वकीयप्रभटसप्तशती ७०० शिरःप्रदा न १७, संरक्षितसर्वजीवितवितरणवीरताविशेषविस्मितवालेश १४

के सत्कार करने और फिर अर्जुन की सेवा करनेवाले भगेहुए देवसिंह और राघवदास दोनों भाइयों के ग्राम वत्सोला और कोटा छीनने के समय ग्राम हाथी आदि सामग्री देकर घाव मिटने पर नरबद के पुत्र के भुजों को पूजना, इसी प्रकार घाव मिटने पर बुन्दी में आयेहुए नरबद के पुत्र अर्जुन को चमर आदि देकर ऊपर सूचना कीहुई सामग्री देकर उसके भुज पूजना, मिलने के मिष से पत्र देकर अपनी सहाय के अर्थ फिर अर्जुन को चित्तोड़ बुलाना, जो धपुर के राजा राठोड़ * मालदेव का अपने पराक्रम और सेना से अजमेर न गर आदि अनेक प्रान्तों को अपने आधीन करना, थोड़ीसी पीढियें कहकर वीरता और दातार पन से रैवत गिरि के राजा सरवहिया सोलंखी करण का वालेसा जाति के विजय नामक चहुवाण की राजधानी में आकर चार णों के समूह के नाश के स्थान में अपने सहित अपने सात सौ वीरों के मस्तक देना, उन सबको जीवित रखकर दान और वीरता की विशेषता से विस्मित होकर वालेसा विजय का धैर्य की परीक्षा करके करण को अपनी बहिन वि-

---

* मारवाड़ के इतिहास में राव मालदेव का विक्रमी सम्वत् १५९९ के ज्येष्ठ मास में जोधपुर की गद्दी बैठना लिखा है सो यह समय चितोड़ के महाराणा सांगा का नहीं होसक्ता क्योंकि महाराणा सांगा का देहांत १५८४ में होचुका था जिसके चार वर्ष पीछे मालदेव गद्दी बैठे थे ॥

विजयपरीक्षितसत्त्वशरवधिककर्णार्थभगिनीविवाहन १८, तन्मरण समयसमागतकलिकालभागवतमूर्द्धमणिबारहठसुकवीश्वरकर्णम त्युज्जीवनमथन१९, कोकिलपुरपतिशङ्खुलप्रमारानन्तराजस्वस चिवकपटानायितनिगडित१वालवंश्यतद्भागिनेयोक्कसमुद्धृतसमानी त २ कर्णिकैवर्तभाविम्लेच्छमृधमरणसहिततन्नन्दननवघनभावि तासूचन २०, तत्समयसमीपसम्भूभुजनगरभूपजड्डेचकयादवभारम ल्लतनयपशोराजासाधारणरण १ वितरण २ वीरताविख्यापन २१ मेकोनत्रिंशो मयूखः ॥ २९ ॥

आदितः षट्सप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इक रन हुव आनर्त इत, याही समय समीप ॥
जौंमिज १ मातुल २ जुज्झि जुग २, परे सुनहु अवनीप ॥१॥

॥ षट्पात् ॥

अल्पहि ग्रामन अधिप इक्क १ हल्ला जसवंतह १ ॥
जिहिं ब्याहिय निज जौंमि मक्षिप फल्लहिं अतीव मह ॥

वाहना, उस करण के मरने के समय आयेहुए कलिकाल के हरिभक्तों में शिरो मणि बारहठ चारण ईसरदास का करण को पीछा जिलाने का विस्तार कर ना, कोकिलपुर के पति शांखला शाखा के प्रमारराज अनंत के सचिव का करण के पुत्र केवाट को कपट से लेजाकर कैद करने पर वाल वंशवाले उस के भानजे ऊका का उसको छुडाकर पीछा लाना और करण के पुत्र केवाट का आगे आनेवाले यवनों के युद्ध में मरने के सहित उसके पुत्र नवघन के आ गे आनेवाले समय में होने की सूचना करना, उसी समय के समीप होनेवाले भुज नगर के राजा जाड़ेचा यादव भारमल्ल के पुत्र पद्मराज का जन्म और उसके समान अन्य की वीरता और दान नहीं होने की सूचना करने का उन्तीस वां मयूख समाप्त हुआ ॥२६॥ और आदि से एक सौ छहत्तर मयूख हुए ।१७६।

इधर एक युद्ध १काठियावाड़ में हुआ, २ भानजे और मामा परस्पर लड़कर मरे सो ३ हे राजा रामसिंह सुनो ॥१॥ ४बहिन

ताकै हुव इक १ तनय अयउ सोंपै जब भूपति ॥
मातुलगृह तब मिलन गयउ संबंध रक्खि रति ॥
बनिजार कहत निज सीस बिच दुंदुभि सुनि पित्थल२बदिय॥
चर जाहु सुद्धि आनहु चपल किहिं सठ यंब बिराव किय॥२॥
सुनि मातुल जसवंत १ अनुज पित्थल २ निदेस पइ ॥
जुज्झनबस जासेंव अनखि पुच्छिय सह आग्रह ॥
अक्खिय पित्थल २ अत्थ बंब अप्पन इक १ बज्जत ॥
कै बज्जत करदापि सत्थ ब्यापारि१न सज्जत ॥
हसि झल्ल१कहिय बज्ज्यो ममहु कहिय हल्ल२तुम१हम२इक१हिं
भानेज भनिय बर्जहु चलि न निबैहं क्यों तव पैंज नहिं ॥३॥
प्रसर्भ वाद बढिपरिय वदत इम बत्त दुन्न २ हि दिस ॥
अक्खिय जामिज भ्रात मैंहु जुज्झन १ न अन्य २ मिस ॥
बज्जत अँहँ बंब रुद्धं तुम करहु जित्ति रन ॥
जंपि इम रु गृह जाइ सज्जि आयउ साहस सन ॥
बरज्यो सु भ्रात इल्लन बहुत बोलिस न रुक्यो मत्तबय ॥
कौलि करन नास मातुलकुलहिं गजेंसिर दुंदुभि देत गय ॥४॥
कति दिन पुब्बहि स्वकुल निपुन नारिनके निरखन ॥
उच्चतुंग[13] इक १ अट्ट रचिय इल्लन आगम रन ॥

सम्बन्ध में १ प्रीति रखकर. हे दूत! जाकर २ खबर लाओ कि किस ३ मूर्ख ने नगारे का ३ शब्द किया है अर्थात् हमारी सीमा में नगारा किसने बजाया ॥ २ ॥ ४ भानजे ने ५ यहां पर एक अपना ही नगारा बजता है; अथवा ६ हासिल देनेवाले बनजारों का बजता है इस पर झाला ने कहा कि मेरा नगारा भी बजा था इसके उत्तर में राजा पृथ्वीराज ने कहा कि तुम और हम एक ही हैं, फिर भानजे ने कहा कि बलवानों को मना नहीं करते तब तुम्हारी ७ प्रतिज्ञा क्यों नहीं निभै ॥ ३ ॥ इस ८ हठ से युद्ध जीतकर ९ रोकना १० मूर्ख ११ युद्ध में १२ हाथी के ऊपर रखकर नगारा बजाता गया ॥ ४ ॥ १३ अत्यन्त ऊंची बुर्ज बनाई (यहां अधिक ऊंचाई दिखाने के कारण उच्च और तुंग दोनों एकार्थवाची शब्द कहे हैं) कि जिस पर बैठ कर अपने

एकादसि ११ उपवास १ लघुहि पारन २ प्रभात लहि ॥
॥
जसवंत १ अनुज पित्थल्ल २ जहाँ हल्ल अपारन संग हुव ॥
तिहिँ जानि मग्ग अग्रज १ तरजि पठये पच्छो भोज्य भुव ॥ ५ ॥
अट्ट तियन इम चविय इक्खि ताकहँ सुरिआवत ॥
कोन सुहागिनि कहहु पोत १ चूरी २ वल पावत ॥
पुनि जब गोचर परत देखि भाउज १ निज देवर २ ॥
अक्खिय भलभल इक्क १ राम रच्छक रक्खिय घर ॥
सो असह सुनत पित्थलप्रिया अवधि गम्य आई उतरि ॥
बुल्लिय कठोर अब कति बरस कहुन मन कुल नासकरि ॥ ६ ॥
पारन कारन पित्थ बुल्लि आवन १ जावन २ बलि ॥
भामिनि कर कछु भोज्य जिम्मि जावत संहअंजलि ॥
अग्रज १ तिय प्रति अरज किन्न जग जस हमरो करि ॥
जग्गिग्नि पीछैं जरहु अप्प हल्लनकुल उद्धरि ॥
दे इष्टसपथ तिहिँ देवर सु कथित सु अग्रजको हु कहि ॥
पहुँच्यो प्रबीर निज सत्थ पहँ लेन असिन कर बेर लहि ॥ ७ ॥
दुंदुभि झल्लहु द्विरद रक्खि दल अर्द्ध तिहिँ रक्खन ॥

कुलकी । अर्थ गुरुदेवैं. प्रभातमें १शीघ्रही पारणा करके २विना पारणा किये ३भोजन करने के स्थान पर धमकाकर पीछा भेजा ॥ ५ ॥ ४बुर्जपर बैठीहुई स्त्रियों ने परिहास करकेकहा कि किस सुहागिनके ५चोड अर्थात् तिमणियां (तिमणियां और चूड़ा स्त्रियों के सुहाग के चिन्ह हैं) और चूड़ा ने बल किया कि जिससे एक पुरुष पीछा युद्ध से आता है ६ निजर आने पर अर्थात् पहिचानने पर भोजाई ने कहा ७ जहां तक जाने की अवधि थी वहां तक सन्मुख जाकर ॥ ६ ॥ ८ फिर ९ स्त्री के हाथ से कुछ भोजन करके पीछा जाते समय १० हाथ जोड़कर ११ भोजाई से अरज की कि संसार में हमारा यश किये पीछे १२ अग्नि में जलना और १३ आप हालों के कुल का उद्धार करना १४ इष्ट के सोगन दिलाकर तलवारें हाथों में लेने के १५ समय ॥ ७ ॥ झाला ने भी नक्कारे को १६ हाथी पर रखकर १७ आधी १८सेना उसकी रक्षा के लिये रक्खी और आधी सेना

अप्पन रच्छक अह्द² पिल्लि³ चाहिय परपक्खन ॥
जंपिय तँहँ जसवंत १ बंब मैं जाइ बिदारत ॥
पित्थल २ अक्खिय प्रभुहिं निजन⁴ छत क्यों⁵ सु निहारत ॥
जसवंत १ चविय जामेयको⁶ बंब मिलत फुट्टो बजैं १ ॥
तो होइ सफल मिलिबो२न१तो लिय सु लाल⁷ संधाँ⁸ लजैं२ ।८।
स्वीकरि पित्थल सोहि अप्प दुंदुभिपर⁹ आयउ ॥
अह्द² भटन जसवंत चहत भानेज चलायउ ॥
तकत अट्ट कुलतियन खिखग धाराहं¹⁰र वज्जिय ॥
पहुँचत मातुल¹¹ पहिल गहिल¹² दुंदुभि ध्वनि गज्जिय ॥
क्रम करत हल्ल१ झल्लन२कतल गंजि कटक जब गम्यगय¹³ ॥
भानेज१अनिय मातुल२ मिलत बंब सुनहु सूचत¹⁴ विजय ॥ ९ ॥
इती कहत अंतरहि बंब पित्थल उत बेधिय ॥
समनंतर¹⁵ कहि सुनहु सु जय जसवंत निसेधिय ॥
इम द्वै २ ही दिस आसिन भये बटके बटके भट ॥
वंब सु भिन्न बताइ हल्ल झल्लहु लिय संकट¹⁶ ॥
बचिगो सु झल्ल कतिजन वदहिं¹⁷ कहहिं द्वै२हि कुल नास कति
अट्टतैं उतरि जे पुनि जरे प्रमदाजन¹⁸ पहिचान पति ॥ १० ॥

अपनी रक्षा के लिये रखकर उसको आगे१बढाकर२शत्रुओं को हठाना चाहा उस समय जसवंत ने कहा कि मैं जाकर नगारे को ३ फोड़ता हूं. अपने सेवकों के ४होते हुए आप ऐसा क्यों करते हैं ५भानजे का ६हे लाल ७प्रतिज्ञा लाजती है ॥ ८ ॥ ८ स्वीकार करके ९ बुर्ज के ऊपर कुल की स्त्रियों के देखते हुए १० खड्ग चले ११ मामा के पहुंचने से पहिले १२ गहरा नक्कारे का शब्द हुआ. १३ जिस के पास जाना था वहां गये जब भानजे ने कहा कि नगारा विजय की १४ सूचना करता है सो सुनो. इतनी कहते ही पृथ्वीसिंह ने उस नगारे को फोड़डाला ॥९॥ उस नगारे को फोड़े १५ पीछे जसवंत ने कहा कि यह विजय का निषेध करता है सो सुनो अर्थात् वह नगारा फूटा हुआ बजता है १६घेरे में. कितने ही१७कहते हैं कि झाला बच गया और कितने ही कहते हैं कि दोनों कुलों का नाश होगया १८ स्त्रियें बुर्ज से उतर

जरी तव न जसवंतनारि १ वह बैन निवाहन ॥
बिपति बाहुजा बेस गूढ अभिमत अवगाहन ॥
रोहड़िया बारहठ धन्व हरिभक्ति धुरंधर ॥
ईस्वर कवि तस ऐन आइ सेये जिम अनुचर ॥
तस परखि सत्व चिरकरि चतुर कुल१थल२मन३गुन४आनि कवि।
कविता सुवृत्त सतसत्त७००करि छिति[10] रक्खियकुलहल्ल छवि११

मालदेव इत महिप माढ धर जानि कन्नीमनि[12] ॥
मह[13] सह जैसलमेर वरन तिहिं पत्त मत्त बनि ॥
उमानाम छवि अतुल सुपहु भट्टिय तनुजा सो ॥
ब्याहिय निरंत[14] कबंध सुनत तस सुजस कथा सो ॥
जासो१ थासो२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
भट्टी नरेस बुल्ल्यो भवन दूजी२ निस आगम दुलह ॥
आति पान करि सु गो तँहँ अबुध स्मर[15] बढाइ कछु[16]विधि असह।१२।

गो कबंध रतिगेह जात अल्पहि कछु[17] जामिनि ॥
एक रसन मधुअंध[18] कमंन[19] चाहत ढिग कामिनि ॥
स्वसुरसद्म सुंदरिन लाल बहुकाल लडायउ ॥
कांनि[20] तिन्हहु तजि कूर गान ऊढागम[21] गायउ ॥

कर ॥ १० ॥ जसवंत की स्त्री उस देवर के वचन को निवाहने के लिये उस समय नहीं जली और १क्षत्रियों की स्त्रियें विधवापन में रखती हैं उस वेस को धारण करके अपने २छिपेहुए वांछित को ३थाहने के लिये ४ बारहठ सं ५ धुर को धारण करनेवाला ६ ईसरदास चारण के ७घर में ८ चाकर के समान ९ श्रेष्ठ * छन्दों में १० पृथ्वी पर हालों की ११ शोभा रक्खी ॥ ११ ॥ इधर राजा मालदेव ने जैसलमेर (जैसलमेर के राज्य को माढ कहते हैं) में १२ कन्यारत्न को जानकर १३ उत्सव सहित उसको विवाहने गया १४ प्रीति युक्त १५ कामदेव को १६ किसी प्रकार से असह बढाकर ॥१२॥ थोड़ी १७ रात्री जाने पर ही १८ मद्य से अन्ध १९ सुन्दर. ससुर के घर की स्त्रियों ने दुलह को बहुत समय तक रमाया परन्तु उनकी२०शंका छोडकर२१दुलहन

*बारहठ ईसरदास के कहेहुए "हालों झालों के कुंडालये" राजपूताना में इस समय भी बहुत प्रसिद्ध हैं

उलटी सलज्ज वे तिय उठिय मालई मन घेरयो मयने[2] ॥
ऊढा[3] समीप बहुजन उचित[4] सजव भेजि बुल्लिय सयन ॥१३॥
बर६हिँ कहाइय बरनि७ आधिक न विलंब नाथ अब ॥
सजि आवत सृंगार सोहु कछु खिल्ल बनिगो सब ॥
तिहिँ न परत कल तदपि जानि भजत जनपैँ जन ॥
अंतरंग अनुचरिय धरन धीरज पठई धन ॥
जिहिँनाम भारमल्लिय जुवंति सो दासिय गुन१ रूप२ सह ॥
न विलंब आत दुलही नृपहिँ इम बुल्लिय करजोरि यह ॥१४॥
बो[11] बो करि जिम बस्त[12] जोहि पकरिय कबंध जहँ ॥
संवेसन[13] बिधि समय तास दुलहीहु गई तहँ ॥
निज दासी१ सह निरत[14] बरहिँ२ लखि गहि कटु बानिय ॥
याहि उचित अब अप्प[15] भनिय सिंहनि भटियानिय ॥
चढिबो जु आतसज्जा उचित तो चढिहौ ताव[16]के तलप[17] ॥
किंकरीरमन[18] विनु मोहि कढि कपोंन जाहु अगनित कलप ॥१५॥
इम भटियानिय आक्खि मुरी सिंहनि पतिमंदिर[19] ॥
बिक्खि सु दुल्लह बिरस चकित कामुक[20] रहिगो चिर ॥
सिक्खि समय कुमरी सु लगी नैन[21] जान धवालय[22] ॥
बहु बासर[23] रहि बाढ़ माल[24] मन किय बिखाद लय ॥

के आने की ही वार्त्ता करता रहा १मालदेव के मन को २कामदेव ने घेरा ३ दुलहन के पास ४ नाजर आदि जनाने में जाने योग्य ५ शीघ्र ॥ १३ ॥ ६ दुलहन ने कहलाया ७ खानगी ८ दासी को ९ स्त्री ने १०तरुण की ॥ १४ ॥ ११ यह कामी बकरा की बोली का अनुकरण है १२ बकरे १३ मैथुन (प्रवेश) करने के समय में अपनी दासी के साथ वर को १४नियुक्त देखकर १५ अब आप इसीके योग्य हो १६तेरी १७शय्या पर १८ दासी के पति के बिना ॥ १५ ॥ १९पीछी अपने महल में चली आई वह २०कामी बहुत समय तक चकित होगया २१ नहीं जाने लगी २२पति के घर बहुत २३ दिनों तक २४ ।मा०

बलि आसकरन निज बारहठ ईस्वर सुकवि पितृव्य यह ॥
अवरोध बॅलज पठयो अधिप समुझावन नय१धर्म२ सह।१६।
बदिय उमा बारहठ अप्प आये समुझावन ॥
अब स्वीकृत तो अवस जोधद्रंगहु सहजावन ॥
पै मैं किय जो सपथ सो न लोपैं नृप संतंत ॥
चलिबो तब धुव उचित बदहु तुम इष्टसपथ बंत ॥
सुनि आइ सुकवि१नृपरलिय सपथ अप्प१सपथ दिय जाइ उत।
चुक्किहो धर्म तो तिहिं चविय देहों तुमसिर प्रान द्रुत ॥ १७ ॥

दोहा ॥

बदिय उमाप्रति जनक बॅलि, गमन करेहु पतिगेह ॥
हे पुत्री नहिं तो हमहिं, अब हनिहै नृप एह ॥ १८ ॥
उमा कहिय मरिबे उचित, भट्टीकुल मम भ्रात ॥
संगदेहु जो पंचसत५००, तो जैहों उत तात ॥ १९ ॥

षट्पात् ॥

स्वकुल तिमहि लहि सत्थ पत्त दुलहोहु जोधपुर ॥
दुलह कछि कति दिवस धर्म लुप्पन धारी धुर ॥
जिमहि अचानक जाइ नारि छलबल नियराई ॥
गोखद्वार बपु गेरि उमा लखताहि भुव आई ॥
बहु घेर गिरत अंकुस बिथारि बचि बैठी लब आयुबल ॥
चढि गोख लखि सु रहिगो चकित छेत्री पकट दिखात छल।२०।

---

१ ईसरदास बारहठ का २ काका था ३ जनानी ४ ड्योढी पर राजा ने भेजा ५ नीति ॥ १६ ॥६ स्वीकार है ७ जोधपुर ८ साथ जाना परन्तु मैंने ९ सौगन किये हैं सो १० निरन्तर ११ निश्चय १२ कहा १३ शीघ्र ॥ १७ ॥ १४ फिर ॥ १८ ॥ १५ मरने योग्य १६ भाटी वंश के ॥ १९ ॥ १७ गई १८ समीप ली. झरोखे में होकर १९ भूमि पर गिरगई. गिरते समय बड़े घेर वाला २० घाघरा फैलाकर २१ छत्री ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

उद्ध निरखि बुल्लिय उमा, स्वामी गिरते संग ॥
तो कहुँ हठ छुटतोहु तकि, अपर २ जन्म दुहुँ २ अंग ।२१।

॥ षट्पात् ॥

प्रतिसारादिक प्रसरि उमा महलन पुनि आइय ॥
अवहित तबरन अधिक लगी रहिबे भय लाइय ॥
बलि पठाइ बारहठ सपथ अघलैन सिखायउ ॥
अघ झेलत छल इक्खि नृप १ रु चामर २ निकसायउ ॥
पति जानि इम सु केरै परयो तकि पिउहर जैबोहि तब ॥
किंकरी सोहि बुल्लि रु कहिय इक करि चलनैं उपाय अब॥२२॥
अप्पन कथन अधीन सूर भट्टिय पंचहिसत ५०० ॥
यातैं कोउक अत्थ लखहु रट्ठोर मरन मत ॥
जिहिं मगै सु जितोहि अत्थैं अप्पहिं सखि अप्पन ॥
जु इक संग व्है जाइ सरनि निबहैं अविघ्नसन ॥
मिलि पिहितें स्वामि सामंत मन कस लखिहारिय किंकरिय॥
कुल जैत१कुंप२चांपा३दिकन रोकि खोभ नृपतैं डरिय॥ २३ ॥
नगर कोटरानाह तुरग पंचास ५० अधिप तहँ ॥

१ऊपर को देखकर उमा बोली कि २ हे स्वामी! मेरे साथ ही गिरते तो मेरा हठ छूट जाता अब तो दोनों शरीर ३ दूसरे जन्म में मिलेंगे॥ २१॥ ४ कनातें आदि ५ फैलाकर ६ सावधान. राजा को और पाप झेलने में ७ चोरी करनेवाले उस आशा बारहठ को निकाल दिया.(इसकी कथा यह है कि राणी ने पाप झेलने का संकल्प राजा के हाथ में डालना चाहा तब छल करके राजा के हाथ के स्थान में उक्त बारहठ ने अपना हाथ जाने दिया जिसको देखकर राणी ने कहा कि यह हाथ तो राजा का नहीं है राजा का हाथ आवेगा तब संकल्प डालूंगी इससे बारहठ की वह चोरी पकड़ी गई जिससे चोर का विशेषण दिया है)पति को ८पीछे पड़ा हुआ जानकर ९उसी (भारमली) दासी को बुलाकर जैस लमेर १०चलने का ॥ २२ ॥११धन १२मार्ग में निर्विघ्नता से निर्वाह होजावे १३ छानें. स्वामि के १४उमरावों को १५जैतावत १६कूंपावत १७चांपावत आदि॥२३॥

*वग्ध कबंधज वीर कहिय **अभिमत दासीकँहँ ॥
मंगों सुहि दै मोहि जोहि ***रानीवस जानत ॥
तो अविघ्न मग तुमहिं मुरौं पहुँचाइ प्रमानत ॥
स्वीकार किय सु रानी हु सुनि कछु मिस बाहिर वेग कढि ॥
संक्रमिय[1] सज्ज परिकर[2] सहित चलिय वग्ध तस भीरं[3] चढि॥२४॥

॥ दोहा ॥

रोध किये निहचें मरन, मन्न्यों नृप तसमांत[4] ॥
सबन प्रबोधित[5] सहिरह्यो, जो न निवारिय जात॥ २५ ॥
इत जैसलमेर सु उमा, बिसन[6] लगी तँहँ वग्ध ॥
नृप हुव जिहिं दासी निरत[7], वह मंगिय अति अग्घ ॥ २६ ॥
अक्खि अदेयहु[8] सुहि उमा, अप्पिय संधा[9] इक्खि ॥
गृहलौं तँहँ मुरि वग्घगय, सवलन सन रन सिक्खि ॥ २७ ॥
करि इम जातहि कोटरा, आयु वग्ध निज अल्प ॥
मन्निलग्यो धन उक्कमनं[10]. करि धौटिन[11] निधि[12] कल्प ॥ २८ ॥
रन१ जस भारमल्लिय २ सहित, गायकं[13] जनन गवाइ ॥
जो नृपसन चाहत जुरन, जोधपुर न मन जाइ ॥२९॥
करन १ अन्यों वितरन कविरन, सरन १ मरन सव२ कोहि॥

---

* वाघा राठोड़ ** अपना विचार *** रानी के वश में है सो १ चले २ परगह सहित ३ सहाय ॥ २४ ॥ राजा ने जाना कि रोकने से निश्चय मर जावेगी ४ इस कारण से. सबके ५समझाने से सहन करके रहगया और उमा को जाने से नहीं रोकी ॥ २५ ॥ ६घुसने लगी तहां बाघा ने जिस दासी से राजा मालदेव७प्रीतियुक्त हुआ था उसीको अत्यन्त आग्रह के साथ मांगी ॥ २६ ॥ ८ नहीं देने योग्य कहकर. अपनी ९प्रतिज्ञा देखकर दी ॥ २७ ॥ धन १० उडाने लगा ११ धाड़ा पटकने से १२ धन इकट्ठा करके ॥ २८ ॥ भारमली के साथ अपना यश १३ ढोलियों से गवाकर ॥ २९ ॥ कवियों को दान देने में कर्ण बनकर और मरनेवाले भसी का शरण होकर अर्थात् राजा के सब खूनियों को शरण में रखकर राजा के दल को बहुत प्यारा पाहुना जान

पहु दल बहु प्रिय पाहुनैं, जानि लखत मग जोहि ॥ ३० ॥

॥ षटपात ॥

पतनी उत पहुँचाइ सोहि दासिय लैगो सुनि ॥
मालदेव महिपाल धक्यो अति रीस सीस धुनि ॥
चिंतत चढन बिचारि किन्न बिन्नति आसकरन ॥
जो बुल्लत आजाइ रचहु क्यों तस नास करन ॥
महिलागई सु कविकेहि मत कविहि सहायक बग्घ किय ॥
याकेहि भेद हुव सर्व इम लंपट नृप दृढ जानिलिय ॥३१॥
वितथ३हिं ऋत४गिनि बदिय पापि दूखन चामर पर ॥
बग्घ जु आत बुलात ब्रजहु बुल्लन अप्पहि६ अर७ ॥
वह१ दासी२ सह आनि करहु मम हुकम तंत्र८ किर ॥
नतो रहहु मरु९ नाँहि चहहु अन्यत्र बास चिर ॥
बिपरीत समुझि इम नृप बदत बारहठ लु गो तँहँ बिलन ॥
सुनि बग्घ आइ ताके सम्मुख आदरि लैगो आपतंन ॥ ३२ ॥

दोहा ॥

बग्घहिं अक्खिय बारहठ, मरुधर रक्खिय मोहि ॥
तो दासीजुत चलहु तँहँ, कथित [illegible] नृपकोहि ॥ ३३ ॥
परि पायन दंपति ११ पनमि, अक्खिय आये अप्प ॥
तो चलिहैं हम मरन तँहँ, देहैं तजि रन दप्प१२ ॥ ३४ ॥
सुघर भारमल्ली सहित, क्रीडा सुख कहुकाल ॥

कर मार्ग देखता रहा ॥ ३० ॥ १क्रोध में जला २स्त्री (उमादे) उसके पीहर गई सो चारण आशकरण को सलाह से ही गई और बाघा ने भी इसी चारण को सहायक बनाया है ॥ ३१ ॥ ३ झूठ को ४ सत्य समझकर ५ पाप के लने में चोरी करनेवाले आशा बारहठ पर दोष लगाकर. बाघा बुलाने से आजावे तो बुलाने को आप ही ६जाओ ७ शीघ्र. निश्चय ही मेरे हुकम के ८ आधीन करो ९ मारवाड में. अपने १०आश्रम ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ११ स्त्री पुरुष ने नमस्कार करके १२ दर्प अर्थात् युद्ध का घमंड छोड़ देवेंगे ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

करनदेहु वग्घहिँ सुकवि, मन्नि काल महिपाल ॥ ३५ ॥
इहिँ आनैँ हुव मास इक१, पुनि हुव२ घाटि निपात ॥
अब आवत गुनगोरि१ इम, तीज२दसेरा३ तात ॥ ३६ ॥

गीति ॥

इढ इम बितवत दिष्टहिँ३, कमधँवज४ भूप दुहु५न सुनि कुप्यो ॥
उत रक्खयो कवि इष्टहिँ, पाँनिहु थुक्कत प्रसारि दंपति६ही ॥३७॥
कतिक कहत मासहि कति, अक्खहिँ कति६ सार्द्धअब्द६कछु अग्गैँ॥
गत होत काल निज गति, तनु७ छोरिय बग्घ मृधमुमूर्षु८ तहाँ ॥३८॥
मरतहि सु भारमल्ली, चल्लन तससत्थ गोखचढि चल्ली ॥
बिटपीतैँ किंख९ बल्ली, मरि बिरहभीरु१० महिलन११ मतल्ली१२ ॥ ३९ ॥
सज्जत सज्जत सेना, भो बहुहेतुन बिलंब भूपतिको ॥
वह बारहठ अनेनाँ१३, मरतहि सो बग्घ गो न पुनि मरुमेँ१४ ॥ ४० ॥
जब मालदेव मरिहै, जैसलमेरहि उमा सु सुनि जरिहै ॥
कुल दोहु१अँनघ१५ करिहै, तस अंसुकँ१६ गह्नि तथा धवहुँ१७ तरिहै ॥४१॥

दोहा ॥

अग्गैँ कवि कुल परपुरुख१८, निपुन पिठ्ठव१५७१ नाम ॥
कुंभरानकी कोटि१००००००० तजि, धीर चलिय जब धाम ॥४२॥

१इस भारमली को लायें. दो२घाड़े पटके हैं ॥३१॥ इस प्रकार ३समय बिताते हुए सुनकर ४ राठोड़ों का राजा मालदेव. आशा बारहठ थूकता था जिसको बाघा और भारमली दोनों पति पत्नी ने५हाथों में झेलकर ॥३७॥ कितनेक तो कितने ही महीने कहते हैं और कितने ही ६ डेढ वर्ष बीतना कहते हैं तहां काल की अपनी गति से ८ युद्ध की इच्छावाले बाघा ने ७ शरीर छोड़ा ॥ ३८ ॥ उसके मरते ही भारमली उसके साथ जाने के लिये झरोखे से गिरी; जैसे वृक्ष से ९ सूखी हुई बेल गिरै तैसे वह १० वियोग से डरनेवाली ११ स्त्रियों में १२ स्तुति योग्य मरी ॥३९॥ १३ निर्दोषी १४मारवाड़ में नहीं गया ॥४०॥ १५पापरहित. उसका १६वस्त्र पकड़कर १७पति भी ॥ ४१ ॥ ग्रंथकर्ता कवि (सूर्यमल्ल) के १८ पुरुषा ॥ ४२ ॥

आधिप गोरें अजमेरके, वच्छराज सुनि वत्त ॥
वाधनवारे सह विदित, तिनहि अब्ज[2]१००००००००० दिय तत्त ॥४३॥

षट्पात् ॥

पाइ अब्ज१००००००००० पिठ्ठहव१५७१वरस छनवति९६जारठ[3]वय
रहि वाधनवारेहि दियउ तजि देह महार्दय ॥
सुत तस हुव शृहसूर१५८०१सुकवि महसूर१५९०१ तासुत ॥
जुग रहि पिठ्ठहव१५७१जियत हुव सु तिन्ह काल अनल हुत ॥
आनंद१६०१जवहि महसूर१५९०१सुव किय प्रपितामह[6]मृत्यु कृत ॥
सुत हुव तदीय मिश्रन सुकवि कर्मानंद१६११ बिसिष्ट[9] वृत ॥४४॥

दोहा ॥

उभय २ महा हरिभक्त ये, भये जनंक[10] १ सुत २ भूपं[11] ॥
बिहित भक्ति जिनकी बिदित, अज्जहु जग अनुरूप ॥ ४५ ॥
कोटि १०००००००० तजी सुनि जनककी, रायमल्ल जब रान ॥
बुल्लिय कविआनंद १६०१ वलि, दै दल[12] प्रीति निदान ॥४६॥
तबहु न गय आनंद १६०१ तँहँ, पुत्र निजहु पठयो न ॥
तिमतिम आग्रह अधिक तकि, भूपहु बिरत[13] भयो न ॥ ४७ ॥

षट्पात् ॥

इष्ट सपथ लखि उचित दियउ जब रायमल्ल दल[14] ॥
इक्खि सु तब आनंद १६०१ निकिख सीसोद प्रसभ[15] बल ॥
निज सुत कर्मानंद१६११तनय अभिधान[16] लुंब१६२१ तस ॥
सो पठयो वय सिसुहि जानि रानहिं आग्रह जस ॥
अति अग्घ सिसुहु रक्ख्यो अधिप जिहिं पुरउंटोलाव १ जुत ॥

१गौड़राजा२अड़वपसाव दिया॥४३॥ ३वृद्ध अवस्था में४बड़ी दयावाला. ५काल रूपी अग्नि में५होम होगये६परदादा की उत्तरक्रिया की७उसके८मिश्रण शाखा के९विशेष चरित्रवाला ॥४४॥ १०पिता११हे राजा ॥४५॥१२पत्र ॥४६॥ राजा १३विरक्त नहीं हुआ अर्थात् प्रीति नहीं छोडी ॥ ४७ ॥ १४पत्र १५हठ १६नाम

छव्वीस सहँस२६०००कर दम्म छमै पहु सासन अप्पिय प्रनुतं।४८।

सौराष्ट्री दोहा ॥

गहत पट्ट संग्राम, लुंब १६२।१ सुकवि जुब्बन लहत ॥
आस महत उपयाम, पहँत पाप आये पितर ॥ ४९ ॥

गीतिः ॥

सुत कर्मानंद१६११सहित, नत्ती लुंब१६२।१हि बिबाहिबे नव बै ॥
मग महिपन करत महित, आनंद१६११हु भक्ति सावे हित आये।५०।
जयमल्ल भ्रात हनि जब, लघुसुत संग्राम जनक पट्ट लयो ॥
तेहु पिता१ सुत२ दुव२तब, कहि पापी रानतैं मिले न कृती ॥ ५१ ॥
लुंब१६२।१हिं बिबाहिकैं लहुं, उभय२हि सर्वस्व दै द्विजन अपनौं॥
पुनि साप१अनुग्रह२पहु, बिचरन लग्गे सतीर्थ सुभ बसुधा ॥५२॥
अवधूत बेस अैसैं, तनुतनु करत हुव कष्टतर तप कैं ॥
जुग२ कर धारत जैसैं, तात१रु तनुजात१सावै हित तुलसी ।५३।
मग्ग गति सतत प्रनमत, प्रथम१ उदीची१ दिसाहि दुव२ पत्ते ॥
देह१करन२स्वांत३दमत, बदरीप्रभु१ बिक्खि पुब्ब२ओर बले ।५४।
दखि जुग२हि जगदीस२हिं, पत्ते दक्खिन३परिक्रमंत पुहवी ॥

१समर्थ २ स्तुतियोग्य ॥ ४८ ॥ ३ विवाह. पाप का ४ नाश करनेवाले ५ पिता ॥ ४९ ॥ ६ पोता ७नवीन अवस्था में ८ पूजित ९ पुत्र की भक्ति के कारण ॥ ५० ॥ १० पण्डित ॥ ५१ ॥ ११ शीघ्र. फिर राजा संग्रामसिंह को भाई मारके गद्दी बैठने के कारण१२आप देकर और अपने पुत्र लुंब को ऊंटोलापुर उदक मिलने के कारण अनुग्रह करके१३पृथ्वी के शुभ तीर्थ करने को फिरने लगे ।५२। १४शरीर को कृश किया१५बहुत कष्टवाला तप करके पिता और पुत्र दोनों, हाथों में तुलसी के१६पोधे लगाकर॥५३॥ मार्गमें१७निरंतर प्रणाम करते हुए.१८उत्तर दिशा में१९गये. शरीर और २० इंद्रियां, अथवा हाथ (हाथों में तुलसी के पोधे लगाने के कारण यहां हाथ का दमन करना लिखा है) २१मन को दमन करतेहुए२२पूर्वदिशा को२३फिरे ॥५४॥ पृथ्वी की२४परिक्रमा

इम रामेस्वर३ईसहिँ, अर्चि प्रतीची४दिसाहु मुरिआये ॥ ५५ ॥
प्रभु द्वारकेस४ पिक्खन, जनपद३ आनर्त गोन किय जबही ॥
ईस्वर१कवि समइक्खन, तिन्हपथ१परिगहसहितमिले तीजे३ ॥५६॥
प्रभु मम पूर्व पितामह, दुस्सह तप कष्टमैं बढैं द्वै३ही ॥
इक्खन सब सम आमह१, आसोक२बढैं अनिच्छ ईस्वर१ही ॥५७॥
सुंडा१ पैला२दि संगति, ईस्वर१कै इक्खि करि तस अवज्ञा ॥
मेटि मग सहगमन मति, अग्गैं१पीछैं२ चले रहत बेरहू ॥ ५८ ॥
द्वारावति घटिकादुव२, पहिलैं मिश्रन पिता१ रु सुत२पहुँचे ॥
हित बाहनकारि गत हुव, तदनंतर ईस्वर१हु सभोगैं तहाँ ॥ ५९ ॥
सुनि प्रभु अवसर मिश्रन२, द्रुत मनमत प्रथम दरसहित दोरे ॥
निजमंदिर पहुँचत नन, अब अवसर नाथको सुनी ऐसैं ॥ ६० ॥
जो सुनि दुव२ मुरिजावत, आवत ईस्वर१ मिले समुह इनकों ॥
बुल्ले न अब बतावत, अवसर यातैं चलहु बहुरि ऐहैं ॥ ६१ ॥
ईस्वर१ अक्खिय आवहु, दोउ२न दरसन कराइ हम दैहैं ॥

देते हुए १ पूजकर २ पश्चिम दिशा को ॥ ५५ ॥ ३ देश ४ काठियावाड़ में ५ समान दृष्टि (छोटे बड़े सब को बराबर जाननेवाले, अथवा कर्मानंद के समान दर्शन करनेवाले चारण ईसरदास बारहठ अपनी परगह सहित मार्ग में तीसरे मिले ॥ ५६ ॥ ६ हे प्रभु रामसिंह ७ उत्सव प्राप्त होने और ८ शोक प्राप्त होने में समदृष्टि थे, अर्थात् सुख दुःख को समान माननेवाले थे परन्तु अनिच्छा अर्थात् किसी वस्तु की इच्छा नहीं रखने में ईसरदास बढता था ॥५७॥ ईसरदास के ९ मद्य १० मांस की संगति देखकर उसकी अवज्ञा करके मार्ग में ११ साथ चलना छोडकर मीशण शाखा के चारण दोनों पिता पुत्र आगे पीछे चलते रहे ॥ ५८ ॥ १२ द्वारका में दो १३ घडी पहिले मीशण शाखा के दोनों पिता पुत्र पहुंचे और स्नेह से वाहन छोडके पैदल होगये जिस पीछे ईसरदास भी १४ भोगते हुए गये ॥ ५९ ॥ वहां प्रभु के दर्शनों का समय सुनकर प्रथम दर्शन करने के लिये प्रणाम करतेहुए शीघ्र दौड़े सो निजमन्दिर में पहुंचकर सुना कि अब द्वारकानाथ के दर्शनों का समय नहीं है ॥६०॥६१॥

चल्ले त्रय३ तब*चावहु, दुहुँ२भक्तन विनुसमै लखन द्रढभो॥६२॥
पहुँचत खास बलज[1] पर, दरसन प्रभु देहु ईस्वर १ कहतयौं ॥
उग्घरि अहो[2] अरं[3] अरर, हुव दरसन सबन तबहि श्रीहरिको ॥६३॥
इम इक्खि सु आनंद १६०।१रु, कर्मानंद१६१।१दुव२ईरखा करिकैं ॥
तनु[4] अपनी छुट्टैं तिम, गाध[5] दुल्लभ सिंधु झंपि झंपि गिरे ॥६४॥
जलनिधि[7] अंतर जावत, दोउ२न इक द्वारका तहाँ दीसी ॥
मधु[8] १ दै सूल्यं[9]२जिमावत, ईस्वर१कों मूर्ति सुहि तँहँहु इक्खी॥६५॥
पवन डुरावत पंखा[10], ताहि व्यजन कर लियैं निहारि तहाँ ॥
श्री दुग्धोदधि[11]सखा[12], आसव १ उपदंस[13] २ देत अवधारे[14] ॥ ६६ ॥
मच्छरता१रु भजनमद २, तप कष्टसंहत्व[15]३ छोरि दुव तबही ॥
प्रभु दंपति २ पंकजपद[16], परे सजातीय[17] १ को हुलसि[18] प्रनमैं ॥६७॥
जंपिय प्रभु दंपति २ जहँ, मिश्रन तुम द्वै २ हि भक्त प्रिय मेरे ॥
किन जानहु ईस्वर कँहँ, नरत्व[19] मति उज्झि मोसन न न्यारो॥६८॥
याहीको कुल अबतैं, दहनतपी[21] छाप इह जनन दैहैं ॥
ते जात्रा फल तबतैं, लहि जैहैं भक्तलोक मम तुमलौं ॥ ६९ ॥

तीनों *उत्साह पूर्वक चले ॥ ६२ ॥ १ खास द्वार पर पहुंचने पर ईसरदास ने कहा कि हे प्रभु * दर्शन दो २ आश्चर्य है कि ३ शीघ्र ४ कपाड़ खुलकर ॥ ६३ ॥ ५ शरीर ६ जिसका थाह मिलना दुर्लभ है ऐसे समुद्र में ॥ ६४ ॥ ७ समुद्र के भीतर ८ मद्य देकर ९ सूला जिमाता हुआ ॥ ६५ ॥ १० लक्ष्मी को पंखा हाथ में लिये पवन करती देखी ११ चीरसमुद्र है १२ घर जिसका १३ खारभँजना १४ देखे ॥ ६६ ॥ १५ कष्ट सहना १६ चरणकमलों में १७ अपनी ज्ञातिवाले ईसरदास को १८ प्रसन्न होकर नमस्कार किया ॥ ६७ ॥ १९ मनुष्यपन की बुद्धि २० छोडकर ॥ ६८ ॥ २१ अग्नि में तपीहुई छाप इस (ईसरदास) का ही वंश देवेगा ॥ ६९ ॥

---

*इस समय का ईसरदास का कहा हुआ एक दोहा राजपूताने में प्रसिद्ध है सो यहां पर लिखाजाता है. दोहा ॥ ईसर ईसर सों कहै, खोलपड़दा यार । दिलकी दुरमत दूरकर, दिखलादै दीदार ॥ १ ॥

त्वंता १ हंता २ हित सन, तवतां ३ मम्मता ४ कहाँ कहि इतीसी ॥
इन २ कौंहु कराइ असनें, दंपति २ सुतलौं बिसासि सिक्खदई ।७०।
तँहँ ईस्वर १हु कतिकहत, बुल्ले वास्तविक १मायिक २न बिरचे ॥
मुद्रा निजनाम महत, दे कर तिनकौंहु सिक्ख प्रभु दिन्नी ॥७१॥
चहुवान पिप्प १ खिच्चिय १३, आनी तिम छाप ईस्वर १हु आनी ॥
मध्य जलधि दृग मिच्चिय, उग्घारत त्रप३हि बाहिर अविक्खे ।७२।
पहुराम २०३१४ तत्थ पँर्या, ईस्वर १ कुल्ल छाप दैनकी अबहू ॥
चिंतहु भक्तन चँर्या, इष्ट सपर्या कहाकरैं न अहो ॥ ७३ ॥
दे पातसाह दरहीं, मंगहि जब लक्ख १००००० चारनन मुद्रा ॥
सहिहै यह ईस्वर १ ही, बँहि तबसों दंड जातिके बदलैं ॥ ७४ ॥
अवधि नवचंद वारी, टारीहु जिहिं रोकि चंदहिं नटारी ॥
जो दम भरैंहिं जारी, होनदयो चंद्र तास बलिहारी ॥ ७५ ॥

१तू और २मैं ३तेरा और ४ मेरा, यह ईसरदास के कहाँ है सो हित के साथ इतनी सी कहकर ५भोजन ६परमेश्वर और लक्ष्मी दोनों ने जोड़े सहित ॥७०॥ परमेश्वर ने ईसरदास को ७सद्रूप बुला लिया था ८माया से रचाहुआ नहीं था ।७१। खीची शाखा के ९पीपा चहुवाण ने १०समुद्र के मध्य में ११बिना दीखे ।७२। हे प्रभु रामसिंह ! तहां १२ पीढियों से ईसरदास के कुलवाले अब भी छाप लगाते हैं भक्तों के १३आचरण को स्मरण करो कि इष्ट की १४सेवा क्या नहीं कर सक्ती है? अर्थात् सब कुछ करसक्ती है ॥७३॥ १५ भय देकर. वह दंड आप १६ धारण करके सहन करेगा ॥ ७४ ॥ १७ * नवीन चन्द्रमा उदय होने की

* राजपूताने में यह कथा प्रसिद्ध है कि सिन्ध में व्यापार करनेवाले चारणों पर गुजराती बादशाह ने हासिल के एक लाख रुपये लेने चाहे जिनकी अमानत ईसरदास बाहरठ ने देकर नया चांद (मुसलमान लोग द्वितीया के चन्द्रमा को नया चांद कहते हैं) की अवधि की थी, परन्तु रुपये पास नहीं होने के कारण उक्त अवधि में रुपये जमा नहीं होसके तब ईसरदास ने चन्द्रमा का उदय होना रोक दिया सो रुपये भरे पीछे चन्द्रमा का उदय होना जारी हुआ यह ईसरदास कब हुए थे और द्वारका कब गये इस समय का निर्णय करने के लिये ईसरदास के कहेहुए मरुभाषा के गीत नामक दो छंद नीचे लिखे जाते हैं. गीत॥ कहिसां तूझ भलो करुणाकर, वप एकण सोह धरे बिचारा।रावळजाम सरीखो राजा, बळे घड़िस जोड़ूजीवार पूरणप्रभत प्रकट प्रजपाळग, दळपत दियण होपियांदात्र॥भुवण घड़िस तो भलो भाकसां, रावळ जाम सरीखोराव

जयमल्ल १ हिं हनि मदजुत, प्रभुहुव संग्राम २ रान तव पीछैं ॥
संभव खिन अटत ससुत, पत्त द्वारवति मिश्रन २ तपस्वी ॥ ७६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे १ पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वरवंश्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ बीज्यानुवीज्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रनारायणदास १८७।१ समयसामीप्यचरित्रेवयोबलविपरीतसमात्तसपत्नभावभागिनेयझल्लस्वमातुलहल्लस्यशोवन्तसिंह१पृथ्वीसिंह२ सीमाबलात्कारदुन्दुभिवादनप्रतिश्रवणा१,स्वसद्मसमागतसज्जीकृतसर्वसैन्यवारणपृष्ठविद्यमानदुन्दुभिविशिष्टमातुलकुलजिघांसुजामेयमंकुवाणमहीपतत्सीम-

अवधि का ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र नारायणदास के समय के समीप के चरित्र में अवस्था के बल से बिपरीत शत्रुभाव ग्रहण करके भानजे झाला का हाला वंश के चत्रिय मामा यशवन्तसिंह और पृथ्वीसिंह की सीमा में बल पूर्वक नगारा बजाने की प्रतिज्ञा करना, अपने घर आकर सब सेना को सजकर हाथी की पीठ पर नगारा रखकर मामा के कुल को

लीला विलासजिसो लाखावत,जुगत किसी हुव माणिसजोड़। भागो एकण निमषभांजतां,करतांकलप आवसोकोड़
जो पिव घड़िस जुगे जावंतां, भांजणवहुण समय भगवान। सकस नहीं कोई वाहिलो सरजे, राजा सुवर रीतरा जान

यह गीत जामनगर के रावल जाम के विषय में ईसरदास का कहाहुआ मरसिया है और जामनगर के इतिहास में रावल जाम का देहान्त ईसवी सन १५६२ मुताबिक विक्रमी सम्वत् १६१८ में होना लिखा है सो जानना चाहिये कि इस समय में ईसरदास विद्यमान थे ॥

भुरधर दिसा चालमन मोरा, विपत पाप ज्यों जाय दिछै। परमजोत कलियाण परसियो, मूरतवंत कलियाणमिळै।
आलम मकर धणीणां आतम, हेकहपंदहेकादिस होय। जगत नरेस्वरकमळ जोवियो, जंगळ नुपंहतणों मुखजोय।२।
वीकां दिसा हालमन विहळो, आठ महासिव मिळे इमाएकाकिसनदीटोडचितापत,जोवांद्‌जाकिसनजिम ॥ ३ ॥
सीकेर जेन मकार लिन्ज जरडी,माठा अखरहछिद्‌चामेट।मुगतादियणजळवट रायमिळियो, भुगतादियणथळवटरायभेट

द्वारका से आकर बीकानेर के राजा कल्याणसिंह से मिलने के समय ईसरदास ने यह गीत कहा था और बीकानेर के इतिहास में विक्रमी सम्वत् १५९८ से १६२८ तक कल्याणसिंह का राज्य करना लिखा है सो इन तीस वर्षों के भीतर ईसरदास का द्वारका जाना समझना चाहिये और यही समय कर्ण के जिताने का, चारणों के बदले में सरवाहियों के मस्तक देने का और हालों के युद्ध आदि का जानना चाहिये,

सङ्क्रमण २, स्वकुलस्त्रीजनसङ्गरसंप्रेक्षणार्थप्राङ्निर्मापितैक१तु-ङ्गाऽट्टालकविहितपूर्वदिनैकादश्यु ११ पवासप्रातःकृतपारणाश्रुतस्व-सीमस्वस्त्रीयद्विरदस्थदुन्दुभिदहुरसज्जितस्वसुभटसमुपेतहल्लकुलहे लिसोदरद्वय २ समभिषेणन ३, यशोवन्तसिंह १ प्रस्थानज्ञातानशन तर्जितस्वानुजपृथ्वीसिंह २ पारणानिमित्तपुनःपश्चात्प्रेषण ४, दूरदृ ष्टप्रत्यागच्छदेका १ श्ववारप्रधनप्रेक्षणाट्टसमारूढस्त्रीजनपरस्पर पृच्छापूर्वकप्रहसन ५, सामीप्यसङ्गतिप्रत्यभिज्ञानदेवरतदग्रज १जा यास्वाभीष्टानुमोदनमतापमानतदट्टावतीर्णपृथ्वीसिंह २ पत्नीपति प्रताडण ६, प्रकटितप्रत्यागमनिमित्तसन्निस्थितप्रियापाणिप्राप्तप्रत्य वसेयप्रणीतपारणाप्रतिगच्छत्पृथ्वीसिंह २ स्वाग्रज १ प्रेरणाप्रमाण निजकुलयशःप्रसारणार्थसेष्टशपथप्रजावतीपावकप्रवेशप्रतिषेधन७, प्रसभवारिताग्रज १ सार्द्धः सैन्यहल्लानुज २ दुन्दुभिदारणार्थतदने कपोपरिपतन ८, शिष्टशूरविशिष्टभिन्नभेरीस्वानसूचनासोत्कण्ठह ल्लहेलियशोवन्तसिंह १ स्वस्रीयसमाक्रमण ९, सम्मिलनसमयजामि

मारने की इच्छावाले भानजे झाला राजा का उसकी सीमा में जाना, अपने कुल की स्त्रियों के युद्ध देखने के लिये पहिले बनाई हुई एक ऊंची बुर्ज पर पहिले दिन एकादशी का उपवास करके द्वादशी के दिन अपनी स्त्रियों के स-हित पारणा करके हाथी पर रक्खेहुए नगारे के शब्द से अपने सुभटों सहित सझकर हालाओं के कुल के सूर्य दोनों भाइयों का युद्धयात्रा करना, यशव-न्तसिंह का चलने के समय अपने छोटे भाई पृथ्वीसिंह को बिना पारणा कि-येहुए जानकर धमकाकर पीछा घर को भेजना, पीछे आतेहुए इकल्ले सवार को दूर से देखकर युद्ध देखने की बुर्ज पर चढीहुई स्त्रियों का परस्पर पूछने के साथ हसी करना, समीप आने पर देवर को जानकर बडे भाई की स्त्री का अपने अनुकूल अनुमोदन करने के विचार से अपमान पाकर उस बुर्ज से उ-तरकर पृथ्वीसिंह की स्त्री का पति को ताडना करना, पीछा आने का कार-ण जानकर घोडे पर चढेहुए स्त्री के हाथ से परूसेहुए भोजन से पारणा कर-के पृथ्वीसिंह का अपने बडे भाई की प्रेरणा के मुताबिक अपने कुल का यश फैलाने के लिये इष्ट की सौगन दिलाकर भोजाई को अग्नि में प्रवेश करने

शीतगप्रकूटव्याघ्रराजपितृप्रहितप्रवीरोपेतयादव्युमासप्रसभपितृप-
स्त्यप्रविशन २१, प्राप्तप्रार्थितभारमल्लीभृत्यससूलसमुत्सारितस्वामि
सवनगृहगतबद्धवल्तव्याघ्रराजस्वस्तवस्थैर्यसाधकघाटिप्रमुखप्रपत्न
पुञ्जीकृतस्वापतेयसमुत्सर्जन २२, तन्मारणप्रस्थानवारणप्रतीपका
मध्वजतदानिनीष्वासकरणप्रपण २३, वन्दिततच्चरणसमुजिष्पव्या
घ्रराजकियत्कालावधिभोगभुक्तिप्रार्थन २४, समुचितसज्जकुट २
वियोजनभीरुबारहठकथितविधितन्निलयनिवसन २५, कालक्षेपकु
पितमालदेवावमतचारणव्याघ्राभीष्टसाधन २६, कथितान्यतमावधि
भुक्तस्तोकभोगमृधमुमूर्षुव्याघ्रराज १ निकायकायहानावसरभारम
ल्ली २ झम्पापातमरणानन्तरबारहठयोधपुरसीमात्यजन २७, माल-
देव १ भाविमरणश्रवणसमययादव्युमा २ पितृगृहदेहदहनद्योतन २८,
प्राक्कालत्यक्तराणाकुम्भकर्णदत्तद्रम्मकोटि१००००००परत्यप्रस्थी
यमानसविनयसमाहूतषण्णवति ९६,वर्षवयस्ककविकुलपरपुरुषप्ट

के लिये बाघा राठौड़ को लेकर पिता के भेजेहुए वीरों के साथ यादवी उ-
मा का हठ सहित पिता के घर में जाना, प्रार्थना कीहुई भारमली को पाकर
सेवकपन को और स्वामिसेवा को सर्वथा त्याग कर घर पर आयेहुए बाघा
का बल बांधकर अपने यश को स्थिर करने वालों को भाड़ा डालने आदि उ-
पायों से इकट्ठा किया हुआ धन देना, उसको मारने के लिये राजा के गमन
को रोकनेवाले और उसको जाने की इच्छावाले आशकरण को शत्रु मालदे-
व का रोकना, उसके चरणों को नमस्कार करके पाणग्रहण सहित बाघा का कुछ
समय तक भोग भोगने की प्रार्थना करना, उचित उत्तम जोड़े का वियोग क-
रने में कायर उस बारहठ का कहीहुई अवधि तक उसके घर में रहना, समय
बिताने से कोपित मालदेव के अपमान से उस चारण का बाघा के अनुकूल
साधन करना, कहीहुई किसी एक अवधि तक थोड़े भोग भोग कर युद्ध में म-
रने की इच्छावाले बाघा के घर में शरीर छोड़ने के समय भारमली के मकान
के ऊपर से गिरकर मरे पीछे बारहठ का जोधपुर की सीमा को छोड़ना, आ-
गे आनेवाले समय में मालदेव का मरना सुनकर भटियानी उमा का पिता के
घर में सती होने को प्रकट करना, पूर्व समय में राणा कुम्भकर्ण के क्रोड़ रुप-
यों के दान को छोड़कर घर को गमन करनेवाले ९६ वर्ष की अवस्थावाले ग्र-
न्थकर्ता (सूर्यमल्ल) के पूर्व पुरुष चीड़िया को विनयपूर्वक बुलाकर उसके लिये

स्कमालदेवस्वोढासमाकारण१६,चणधैर्यधारणार्थदुर्लभाप्रेषितस्वान्त
रङ्गभृत्याभारमल्ली १सहराष्ट्रकूटराज२सप्रसभरहोरमणसमयसहसा
समागतकृतभर्तृभर्त्सनयादवीतल्पशयनशपथकरण१७,सदनागमना
वसरपतिप्रेषितद्वारहठप्रतिश्रुतपितृनिलयनिवासप्रासभ्यप्राणप्रहाण
प्रयुक्तपरिणेत्रीप्रबोधन१८,तद्गौरवाङ्गीकृतगृहगमनप्राणनपर्यन्तबाढ
विख्यापितब्रह्मचर्यसज्जीकृतस्वकुलसुभटपञ्चशती५००सार्थकविशप
थवचनविश्रब्धवरयित्रीवरवसतिव्रजन १९,विज्ञातविधेयवेलाबाला
ब्रह्मचर्यविप्लवविधित्सुवराब्जजनगवाक्षद्वारस्कंपापातितगुद्घलभूतला
गतनिजायुर्बलविस्तृतघराडातकचक्रपुष्टप्राणानस्वास्थ्यसावधानसो
पालम्भनिभालितोर्द्धभीतभर्तृसाम्मितस्वसाहसिद्धिसंतुष्टिपरियत्नम
रुद्धपतिप्रसभोपाययादवीपुनःप्रासादप्रविशन २०, शपथपापसमादा
नसमयविनिश्चितद्वारहठव्याजवरवञ्चनविधूतविश्वासवरयित्रीवरव
सतिव्रजनविनिर्णिनीषुस्वीकृतसाधकसङ्कल्पितसमर्पणसहायसमा

बुलाना, चण मात्र धीरज धरने के लिये दुलहन की भेजीहुई खानगी दासी भा-रमली के साथ राठोड़ राजा के हठ पूर्वक रत करने के समय अचानक आई हुई भटियानी का पति को धमकाकर उसकी शय्या पर शयन करने का सौ-गन करना, घर आने के समय पिता के घर में रहने और बलात्कार करने प-र प्राणहानि करने की प्रतिज्ञा सुनकर दुलहन को पति के भेजहुए बारहठ का समझाना,उस चारण का बड़प्पन रखने के लिये घर जाना स्वीकार कर-के जीवन पर्यंत अधिक विख्यात करने योग्य ब्रह्मचर्य से अपने कुल के पांच सौ वीर भाटियों को साथ लेकर कवि की सौगनों के वचनों पर विश्वास क-रनेवाली दुलहन का दुलह के साथ जाना, उचित समय जानकर उस स्त्री का ब्रह्मचर्य बिगाड़ने की इच्छावाले वर के आने पर झरोखे से झंप लेकर शरी-र से भूमि पर आईहुई अपने आयु बल से फैलेहुए गाघरे(लहँगे)के घेर से प्रा-ण और नैरोग्यता पुष्ट रहने से सावधानरहकर ऊपर देखकर डरेहुए पति को उ-लहना (ओलम्भा) देकर पति के अपने साथ पड़ने में प्रसन्नता प्रकट कर यत्न से पति के बलात्कार के उपाय को रोककर भटियानी का फिर महलों में आ-ना, सौगन का पाप ग्रहण करने के समय बारहठ का मिश जानकर पति के ठगने से विश्वास को छोड़कर उस स्त्री का पिता के घर पर जाने का निश्चय करने की इच्छा से कार्य साधनेवाले को मनवांछित देना स्वीकार करके सहाय

नीतराघूकूटव्याघूराजपितृप्रहितप्रवीरोपेतयादव्युमासप्रसभपितृप-स्त्यप्रविशन २१, प्राप्तप्रार्थितभारमल्लीभृत्यसमूलसमुत्सारितस्वामिसेवनगृहगतबद्धबलव्याघूराजस्वस्तवस्थैर्यसाधकधाटिप्रमुखप्रयत्नपुञ्जीकृतस्वापतेयसमुत्सर्जन २२, तन्मारणप्रस्थानवारणप्रतीपकाम्ध्वजतदानिनीष्वासकरणप्रेषण २३, वन्दिततच्चरणसभुजिष्यव्याघूराजकियत्कालावधिभोगभुक्तिप्रार्थन २४, समुचितसज्जकुट २ वियोजनभीरुद्वारहठकथितावधितन्निलयनिवसन २५, कालक्षेपकुपितमालदेवावमतचारणव्याघ्राभीष्टसाधनं २६, कथितान्यतमावधिभुक्तस्तोकभोगमृधमुमूर्षुव्याघ्रराज १ निकायकायहानावसरभारमल्ली २ हर्म्यापातमरणानन्तरद्वारहठयोधपुरसीमात्यजन २७, मालदेव १ भाविमरणश्रवणसमययादव्युमा २ पितृगृहदेहदहनद्योतन २८, प्राक्कालत्यक्तराणाकुम्भकर्णदत्तद्रम्मकोटि१००००००पस्त्यप्रस्थीयमानसविनयसमाहूतषण्णवति ९६वर्षवयस्ककविकुलपरपुरुषपी

के लिये बाघा राठोड़ को लेकर पिता के भेजेहुए वीरों के साथ यादवी उमा का हठ सहित पिता के घर में जाना, प्रार्थना कीहुई भारमली को पाकर सेवकपन को और स्वामिसेवा को सर्वथा त्याग कर घर पर आयेहुए बाघा का बल बांधकर अपने यश को स्थिर करने वालों को धाड़ा डालने आदि उपायों से इकट्ठा किया हुआ धन देना, उसको मारने के लिये राजा के गमन को रोकनेवाले और उसको लाने की इच्छावाले आशकरण को शत्रु मालदेव का भेजना, उसके चरणों को नमस्कार करके पासवान सहित बाघा का कुछ समय तक भोग भोगने की प्रार्थना करना, उचित उत्तम जोड़े का वियोग करने में कायर उस बारहठ का कहीहुई अवधि तक उसके घर में रहना, समय गिताने से क्रोधित मालदेव के अपमान से उस चारण का बाघा के अनुकूल साधन करना, कहीहुई किसी एक अवधि तक थोड़े भोग भोग कर युद्ध में मरने की इच्छावाले बाघा के घर में शरीर छोडने के समय भारमली के मकान के ऊपर से गिरकर मरे पीछे बारहठ का जोधपुर की सीमा को छोडना, आगे आनेवाले समय में मालदेव का मरना सुनकर भटियानी उमा का पिता के घर में सती होने को प्रकट करना, पूर्व समय में राणा कुम्भकर्ण के क्रोड़ रुपयों के दान को छोडकर घर को गमन करनेवाले ९६ वर्ष की अवस्थावाले ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) के पूर्व पुरुष पीठवा को विनयपूर्वक बुलाकर उसके लिये

ष्ठभवा १५७१ थंगौडाजमेरराजवत्सराजवर्द्धनवाटपुर १ शासनस सुपेतदशप्रयुत १००००००० द्रम्मद्र०प्रदानभूपोभरण २९, पुत्र१ पौत्र २ प्राणप्रहाणपश्चात्संस्थितप्रपितामहपृष्ठभवो १५७१ क्रुदौर्ह कतत्प्रपौत्राऽऽनन्द १६०१ प्रणयन ३०, स्वपुत्रकर्मानन्द १६११ सहिताऽऽनन्द १६०१ महाभागवतभावविख्यापन ३१, स्मृतसवि तृसमयोदन्तपुनःपुनर्लिखितश्रेष्ठशपथप्रीतिपत्रसविनयराणाराजम ल्लपुरामहाभक्तमिश्रणाऽऽनन्द १६०१ समाकारण ३२, तत्साह ससंकुचितमिश्रणाऽऽनन्द १६०१ स्वपुत्रबाल्यवयस्ककार्मानन्दिलु म्ब१६२१ प्रेषण ३३, सविनयसत्कृतलुम्बा१६२१र्थराणासोझोलाप १ पुरषड्विंशतिसहस्र२६००० वार्षिकवलिशासनवितरण३४, राजम ल्लानन्तरहताग्रजप्राप्तपट्टसंग्रामसमयलुम्ब १६२१ पाणिपीडनप्रयो जनप्राप्तमहाभक्तमिश्रणसवितृ१सुत२ युग्म २भ्रातृघातराणामिल नानङ्गीकरण ३५, कृतपौत्रोपयामपश्चात्प्रत्यागतद्विजदत्तसर्वस्वस्व शयसमात्तसाधारतुलसीकमहाभक्तमिश्रणसवितृसुतद्वय२सपूणा

अजमेर के राजा गौड़ वछराज का वाधनवाड़ा पुर का शासण (उदक) सहित अड़बपसाव देकर फिर भरणपोषण करना, बेटा पोता के मरे पीछे दादा पीठवा के मरने पर परपोता आनन्द का उत्तरक्रिया करना, अपने पुत्र कर्मानन्द सहित आनंद के बड़े भगवद्भक्त होने की सूचना करना, पिता के समय के वृत्तान्त का स्मरण करके फिर श्रेष्ठ सौगन के विनय पूर्वक वारंवार प्रीति पत्र लिखकर राणा रायमल्ल का पहले महाभक्त मीशण आनन्द को बुलाना; उस हठ से संकोच न करके मीशण आनन्द का अपने पुत्र बालक अवस्था वाले कर्मानन्द के पुत्र लुम्बा को भेजना, विनय पूर्वक सत्कार करके लुम्बा के अर्थ राणा का ऊंटाला पुर सहित छव्वीस हजार सालाना आमदनी का शासण देना, रायमल्ल के पीछे बड़े भाई को मारकर पाट लेनेवाले संग्रामसिंह के समय लुम्बा के विवाह का प्रयोजन पाकर बड़े भक्त मीशण पिता और पुत्र दोनों का भाई को मारनेवाले राणा से मिलने का इनकार करना, पोते का विवाह करके पीछे घर में आकर ब्राह्मणों को सर्वस्व देकर अपने हाथ में तुलसी के साधारण पौधे को ग्रहण करके महाभक्त मीशण पिता पुत्र दोनों का मार्ग में प्रणाम सहित तीर्थ को प्रस्थान करना, तीनों दिशाओं के तीर्थ

मसरशिसंक्रमतीर्थप्रस्थापन३६, कृतदिक्त्रय ३तीर्थप्रत्यक्प्राप्तद्वार
केशादिदर्शयिषुमिश्रणानन्द १ कर्मानन्द २ महाभक्तरोहिडकवी
श्वरदास ३ मार्गमिलन ३७, मद्य १ मांसा २ दिसर्वभोगसङ्गत्या
वमतत्यक्तेश्वरसार्थपूर्वपुरीप्राप्तप्रासादप्रतीहारप्रतिज्ञातप्रभुप्रेक्षणा
नवसरप्रतिबलितपितृ १ पुत्र २ सम्मुखागच्छदीश्वर १ प्रत्यानी
तद्वय २ द्वारकेशदर्शन ३८, तस्मात्सर्पमुमूर्षुकृतस्फूपमितद्रुमग्न
मिश्रणयुग्मस्द्वारकेशदम्पतिशुण्डा१शूल्या२दिभोज्यमानमहाभक्ते
श्वरदास१दर्शन३९,प्रभुदम्पति २ पादपद्मपतितमारितमनोमदभृत्य
भावभोजितभक्तयुग२ समाश्वासन४०, खिच्चि१३पिप्पराज १प्रतिम
द्वारहठेश्वरदास२प्रभुमतमुद्राबहिरानयनमतभेदभणन४१,तदवधिसू
चितस्वभक्तेश्वरदास १ वंश्यजननकरतलमुद्राङ्कनश्रीद्वारकेश्वर
समर्पणप्रसादितस्वभक्तत्रय३वार्धिबहिर्विसर्ज्जन ४२, तदर्वागद्याव
धिमहाभक्तेश्वरान्ववायजनपात्रासमागतजनतालप्तमुद्रांकनप्रभृ-

करके पश्चिम में जाकर द्वारकाधीश के दर्शन की इच्छावाले मीशण आनन्द और कर्मानन्द का महाभक्त रोहड़िया बारहठ ईसरदास से मार्ग में मिलना, मद्य, मांस आदि सब भोगों की संगति से अवज्ञा करके ईसरदास का साथ छोड़कर पुरी में पहिले पहुँच कर अब दर्शन का समय नहीं है, ऐसे द्वारपाल के कहने से पिता पुत्र दोनों के पीछे मुड़ने पर सन्मुख आयेहुए ईसरदास के पीछे लाने पर दोनों को द्वारकेश का दर्शन होना, उस मत्सरता से मरने की इच्छावाले समुद्र में कूदकर डूबेहुए दोनों मीशणों का जोड़ा सहित द्वारकेश के हाथ से मद्य पीते और सूला भोजन करतेहुए महाभक्त ईसरदास के दर्शन करना, जोड़े सहित प्रभु के चरण कमलों में पड़कर मन के मद को मारनेवाले दोनों भक्तों को सेवक भाव से तृप्त करके सांत्वना देना, पीपा खीची के सदृश बारहठ ईसरदास का प्रभु की इच्छा से छाप बाहर लाने के मतभेद को कहना, उस सूचना कीहुई अवधि से अपने भक्त ईसरदास के वंशज मनुष्यों के हाथ से तपीहुई छाप से चिन्हित करने को श्रीद्वारकेश्वर की प्रसन्नता से वह छाप समर्पण करके अपने तीन भक्तों को समुद्र से बाहिर निकालना, उस समय से लेकर अब तक महाभक्त ईसरदास के वंश के लोगों का यात्रा

तिपूथन४३,स्वीकृतयवनेन्द्रमार्गितस्वजातिसम्बन्धिदण्डम्मलक्ष
१००००० रूप्यनवचन्द्रोदयसम्प्रापितसमयसत्यत्वबारहठेश्वरदासस
जातीयसाहसस्वापतेयस्वयंसमर्पणाभाविताभणन४४,कविकुलपर-
पुरुषमहाभक्तमिश्रणानन्द १ कर्माणन्द २ सवितृ १ सुत २द्व-
य २ द्वारकागमनसम्भवसमयसूचनं त्रिंशत्तमो ३० मयूखः ॥३०॥
आदितः सप्तसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७७ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
दोहा ॥
मन्नि मीर बाबर ३० मुगल, मालव १ गुज्जर २ मीर ॥
चित्रकूट १ बुंदिय २ चलन, सजे बहुरि जयसीर ॥ १ ॥
नारायन १८७।१ बुंदिय नृपति, सिंहन रमन सिकार ॥
गो ग्रीखम खटपुर गिरिन, अल्पहि भटन उदार ॥ २ ॥
आवर्ता १ मेध्या २ उभय२, तटिनिन अंतर तत्थ ॥
कतिदिन रहि बन केसरिन, सातन किय बलसत्थ ॥ ३ ॥
मेटि गवादिन दुख महत, करि निर्भय कांतार ॥
बुंदिय किय प्रस्थान बलि, परिकर अल्प प्रकार ॥ ४ ॥
अक्खय १८६।१ सुत संग्राम १८७।१ वह, समरकंद१के संग॥
मारयो जब बुंदिय महिप, भक्खि विरुद्ध कुल रंग ॥ ५ ॥
सुत नरवद १८८।१ संग्राम१८७।१को, अरिपन तवसन आनि॥

के लिये आयेहुए मनुष्यों को नरसिंह छाप से चिन्हित करने आदि का प्रसि
द्ध करना, पादशाह के मांगेहुए अपनी जाति सम्बन्धि दण्ड के लाख रुपयों के
लिये नवीन चंद्रमा का उदय होना रोककर रुपये प्राप्त होने के समय सत्य-
ता पूर्वक बारहठ ईसरदास का अपनी जाति के दण्ड के धन को स्वयं देने का
कथन करना, ग्रंथकर्ता(सूर्यमल्ल)के पुरुषा महाभक्त मिश्रण आनंद और कर्मा
नंद पिता पुत्र दोनों के द्वारका जाने के समय की सूचना करने का तीसवां
मयूख समाप्त हुआ ॥३०॥ और आदि से एक सौ सतत्तर १७७ मयूख हुए
१नदी का नाम है॰ दोनों२नदियों के बीच में॰ सिंहों का३नाश किया।४वन

छिद्र लखत मारन छितिप[1], मुख्य भाव निज मानि ॥ ६ ॥

षट्पात् ॥

स्वल्पहि परिकर सहित जानि कुंदिय नृप जावत ॥
अप्पन हद आखेट[2] स्वामि क्रीडन न सुहावत ॥
गुढानाम जँहँ ग्राम भिल्ल सह रन निवासभुव ॥
खल तँहँ दुरि इक खाल[3] हद्द नरवद १८८।१ व्यवहित[4] हुव ॥
नरनाथ[5] आत सहसा[6] निकट बिकट घात तुपकन बिरचि ॥
चढि तदनु[7] अद्रिजीवन चहिय बालिस[8] रहिय पलाइ[9] बचि ॥७॥

दोहा ॥

इक१ गोलिय महिपाल उर, प्रखर[10] गई कढि पार ॥
तबहि दुरग पिल्ल्यो तुरंग[11], कुप्पि उरग[12] अनुकार[13] ॥ ८ ॥

षट्पात् ॥

सुपहु घाय छकि सुभट पिक्खि निज अष्ट ८ गये परि ॥
सहसा तुपकन सलाक इक१ करि भज्जत भीत अरि ॥
सयँ[14] धरि आयस[15] सांगि पहत[16] हंकिय नरवद१८८।१ पर ॥
वह बिहस्त[17] पिय असुन[18] उद्ध जिमतिम लग्गो अरँ[19] ॥
न निहारिय थल सु हयगम्य[20] नृप दूरहि सक्ति प्रहार दिय ॥
लखि अहित[21] निंब इक ओडि लिय कासूँ[22] दल[23] तरुवेधकिय ॥९॥
तुपक चली इततैंहु भीत नरवद१८८।१ खल भज्जत ॥
ताके संगिय तीन३ लुट्टि गोलिन गय लज्जत ॥

॥ ४ ॥ ५ ॥ अपनेको पाटवी मानकर १राजा को ॥६॥ २ शिकार. एक ३ नाले में घसकर ४ आड में होगया (छिपगया) ५ नारायणदास के समीप आते ही ६ अचानक ७ जिस पीछे ८ मूर्ख ९ भागकर बचरहा ॥ ७ ॥ १० तीक्ष्णता पूर्वक. दुर्गम स्थल में ११घोड़े को चढाया. कोप कियेहुए १२ सर्प के १३ सदृश ॥८॥ १४हाथ में १५लोहे की सांग लेकर १६ मारने को १७व्याकुल. प्यारे १८ प्राणों को ऊपर की ओर१९शीघ्र. राजा ने उस स्थल को२०घोड़े के जाने योग्य नहीं देखकर दूर से ही बर्छी का प्रहार किया २१ शत्रु ने जिसको देखकर निम्ब के वृक्ष का आश्रय लिया२२बर्छी ने उस२३आधे वृक्ष को बेध डाला॥९॥

बरछी अवहित[1] बाहि मूढ[2] हुव तदनु महीपति ॥
सिबिका धरि हयतैं सु सुभट लाये जव[3] संगति ॥
पंथहि परासु[4] हुव हड्डपट्टु तक्कहु निपति[5] प्रतीप[6] तिम ॥
गज जत्थ गिरहिं तत्थ न गिरहिं अत्थ गिरहिं छलघात इम ॥१०॥
केदारेस्वर निकट बिमन तिम रहि अपवादन[7] ॥
होत नगर हाकार सुद्धि पठई प्रासादन ॥
रानी त्रिक३ रठोरि३ रहित सज्जिय उज्जल[8] रस ॥
इक्क१ भुजिष्या[9]१ इतर दयित[10] दासी एकादस११ ॥
व्है सज्ज संग इम पंद्रह१५ हि जाइ क्षुदित नृप१लह१६जरिय॥
[11]कौरे कुमार द्वादस१२ दिनन कथित सर्व समुचित करिय ॥११॥

दोहा ॥

पट्ट पिताको समयपर, [12]कौरो पाइ कुमार ॥
हड्डन नृप रविमल्ल[13]१८८।१हुव, हड्डवती दुखहार[14] ॥ १२ ॥
सक बसु दृग पंद्रह१५२८समय, सो नारायण१८८।१ भूप ॥
ससि बसु तिथि१५८१इक्का१हानि सु, रक्खिय जस अनुरूप[15] ॥१३॥
वा१५८१हि बरस जित्ते उभय२, मालव१ गुज्जर२ सीर ॥
बाबर३०सौं दूजे२ बरस१५८१, बिजय लह्यौ प्रतिबीर ॥ १४ ॥
सक चउ बसु तिथि१५८४मित[16] समय, [17]आगम बिधि अनुसार ॥
असित जेठ तजि देह इम, गो नृप त्रिदस[18] अगार ॥ १५ ॥

षट्पात् ॥

---

१ छिपेहुए पर २ मूर्छित ३ शीघ्रता पूर्वक हाडा राजा मार्ग में ४ गत प्राण होगया सो ५ भाग्य का ६ उलटापन देखो कि जहां युद्ध में हाथी गिरते हैं वहां तो नहीं गिरा और यहां छलघात से गिरा ॥ १० ॥ राजा को मारनेवाले नरबद की ७ निन्दा करते हुए ८ शृंगार रस ९ पाशवान १० प्यारी ११ कुमर सूर्यमल्ल ने ॥ ११ ॥ १२ कुअर सूर्यमल्ल १३सूर्यमल्ल हुआ. हाडोती का१४दुःख हरनेवाला ॥१२॥ १५ अपने सदृश ॥१३॥१४॥ १६ गणनावाले सम्वत् के१७आने पर१८स्वर्ग गया ॥ १५ ॥

सु सुनि राम संग्राम कलित जय त्रय३ उपकृत्तै कहि ॥
सोधि समय हुव सुद्ध रुद्ध मंगल बादन रहि ॥
सदन रक्खि मँह सून्य अदनँ गुरु बदन अनुष्ठित॥
पुनि पुनि प्रकट पँपंपि हड्डभूपति अपुब्ब हित॥
जब लहिय गंजिदिल्लीस जय हायन प्राभृत१ द्वि२ गुन हुव ॥
सो सब पठाइ टीका३ सहित दिय बुंदिय भट भेजि दुव२ ॥१६॥
बारनं दुव२ चउ४ बाजि उभय२ असि जटित मुट्ठि इम ॥
सिरुपेच१ रु सिरुपाव२ तून२ कार्मुक२ दुव२दुव२ तिम ॥
कोसें रहित करवाल दुव२रु कट्टार रहित दुव२ ॥
द्वि२गुन उपायन विदित हड्डनृप पँहँ पठातहुव ॥
इम संग बहुरि टीका३उचित इक१इक१गज१सिरुपाव१अरु ॥
इक१मनिन भूखन रु हय उभय२पठये कहि हितमैं न पैरु॥१७॥

दोहा ॥

त्रय३ बारनं सिरुपाव त्रय३, त्रय३ भूखन छ६ तुरंग ॥
जुग२ जुग२ प्रत्यौकार२ जिम, खग्ग२ रु चाप२ निखंग ॥१८॥
सामग्री हितपत्र४ सह, यह सब नृपहिं निवेदि ॥
गये रान सामंत गृह, खल१ अहित२न मन खेदि ॥ १९॥

॥ षट्पात् ॥

महीरमन रविमल्ल१८८१ छत्र धरतहि सासन छम ॥

१ विदित२३प्रकार, मङ्गलीक ३बाजे बन्द करवाकर, घर को४उत्सव से शून्य रखकर और श्रेष्ठ५भोजन से मुख को शून्य ६ किया अर्थात् उत्तम पदार्थ भोजन नहीं किये७कहा. ॐमालाना८नजराना ॥१६॥९हाथी१०धनुष, तलवार और कटारी के११खाली म्यान, जिन में १२गांठ नहीं होती है यह कहकर भेजे॥१७॥१३हाथी१४म्यान ॥१८॥ राना के १५उमराव ॥१९॥ १६भूपति १७समर्थ

यहां १५८२ के सम्वत् में महाराणा सांगा और बाबर का युद्ध लिखा सो ठीक नहीं है, क्योंकि यह युद्ध१५८४के सम्वत् में हुआ था सो ऊपर के नोट में लिखदिया है. अब यहां१५९४के ज्येष्ठ वदि में ना रायणदास का मारजाना लिखकर महाराणा सांगा का सालियाना भेजना लिखा सो भी नहीं बन सकता क्योंकि इससे एक महीने पहिले महाराणा सांगा का देहांत होचुका था ॥

खटपुरपति सिर खुल्लि कटक केतन[1] किय संक्रम[2] ॥
भजि नरबद१८८।१ गय भौरु भूप लुट्टिय तस बैभव ॥
इक१ गज सत्तरि७०अस्व हेति[3]१ धन सहित जिताहव[4] ॥
अवसेस लेत निवसथ अखिल काकासुत अर्जुन१८८।१कथन ॥
रक्खिय सु इक्क१खटपुर रिपुहिं पुहवि छिन्निलिय खिल्ल मथन ।२०।

दोहा ॥

जंपिय अर्जुन१८८।१खलहिं जब, नरबद१८८।१मारहिं न्याय ॥
तस मनुजन भोजन तदपि, रक्खन समुचित राय ॥ २१ ॥
यातैं खटपुर रक्खि इक१, निलय आइ नरनाह ॥
परिपंथक[7] सारंगपुर, सुनि किय सज्ज सिपाह ॥ २२ ॥
पाइ जवन सारंगपुर, मखन नाम निजमित्र ॥
जाइ दुरिय नरबद१८८।१ जहाँ, चरन[8] ढुंढि किय चित्र[9] ॥ २३ ॥
पट्टपात–सिहिंमल्ल१८८।१ महिपाल सुद्धि सुनतहि हंकिय सजि ॥
बढिय हक्क दिस१बिदिस२ बंब१ मंदल[11]२नि सान[12]३बजि ॥
पहुँचत दूत पठाइ बिहित[13] नय मखन प्रबोधिय[14] ॥
हम पहिलैं तकि हितहि सिद्ध आगम फल सोधिय ॥
यातैं गहाइ तुम देहु१ अरि कै अब पगमंडहु२कलह ॥
यह सुनि कहाइ पठई जवन सरनागत मम प्रान सह ॥ २४ ॥
मखन१ रक्खि निजमित्र२ लरन आयउ इम संलपि[15] ॥
कलि[16] कराल करवाल धार चल्लिय दुर[17] ओर धँपि ॥
मिलतहि पूरनमल्ल१८८।३हह्व१बेधिय नबाब२हय ॥
गिरत बाह भजिगयउ खान छप्पन५६ पहुँचे खय ॥

१ ध्वजा २ गमन ३ शस्त्र ४ युद्ध जीतनेवाला ५ ग्राम ६ विस्तारवाली बाकी की भूमि छीन ली ॥ २० ॥ २१ ॥ ७ शत्रु को ॥ २२ ॥ ८ हलकारों ने तलाश करके ९ आश्चर्य किया ॥ २३ ॥ १० सूर्यमल्ल ११ वाद्यविशेष १२ वाद्यविशेष १३ उचित नीति से १४ समझाया ।२४। १५ कहकर १६ युद्ध १७ दौड़कर अथवा तृप्त होकर

दुव२लगिय भूप१८८।१छत्तिय प्रदरै लय३छतं पूरनमल्ल१८८।३तनु ॥
सामंत१८७।१मेव१८७।१छद्दरु चउ४सहियनव६छतलहियदलेल१८८।१ नत्तु[3]

दोहा ॥

हयतैं गिरि नृपकै असह, मर्म भिदत हुव मोह[4] ॥
आनि सम्हारत बंधु इक१, दल्यो अरिन भ्रम द्रोह ॥ २६ ॥
पंद्रह१५ भट इतकै परत, वपु छत धरत दुवीस२२ ॥
मिल१सहित भजिगो मखन२, तजिगो लखन छतीस३६ ।२७।
पुनि लुट्टि सु सारंगपुर, चढे हयन चहुवान ॥
जवन बिभव लै सब जई, आये पुर अतिमान ॥ २८ ॥
आयो बुंदिय अर्जुन१८८।१हु, सोक असह खिंन सोधि ॥
पच्छो रान सु दै सपथ, बुल्ल्यो नृप१८८।१ सु प्रबोधि ॥ २९ ॥
जवन मखन सन पाइ जय, रानाँ गौरव रक्खि ॥
पठयो अर्जुन१८८।१भ्रात पहु, उचित सहायहि अक्खि ॥३०॥
अर्जुन१८८।१जातहि देर उत, हुव मिच्छन रन होन ॥
मालव१ गुज्जर साह मिलि, गंजन पुनि किय गोन ॥ ३१ ॥

षट्पात् ॥

सजि लहि बाबर३० सैन मीर महमूद१ मुदाफर२ ॥
आये सह बल असह प्रथम चित्तोर१ लैन पर ॥
दै कुंडल लवनोद १ द्वीप जंबुव २ गरदायउ ॥
मंदर१ अग किंमु मथित प्रथित वासुकि२ पलटायउ ॥
इम वेढि दुरग अंत्यज उभय२ रचि छ६ मास तोपन रचन ॥
कछु हानि न गिनि कुहकन कियउ धुम्मन गढ बारूद धक।३२।

१ तीर २घाव ३ निश्चय ॥ २५ ॥ ४ मूर्छा ॥ २६ ॥ पुरुष के५ छत्तीस शुभ लक्षण होते हैं उनको छोड गया ॥ २७ ॥ २८ ॥ शोक का असह६समय देखकर. राजा को७स मझाकर ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ८घेरा देकर९खारसमुद्र ने जम्बुद्वीप को घेरा१०मानों मथने के लिये ११ प्रसिद्ध मन्दराचल के वासुकि नाग ने पलेटा लगाया ॥ ३२ ॥

पिहित संधिल्ला पृथुल खलन गढ अधरें खनाइय ॥
इक१बुरज तर अवधि अवनि अंदर वह आइय ॥
कुतू निकर सोरसन सघन ता विच हुत दट्टिय ॥
अवसर दिय अंगार फार फैलत गिरि फट्टिय ॥
वीथी सु गूढ गत जिहिं बुरज, सहसा वह उड्डत समय ॥
रविमल्ल१८८।१भ्रात संध्या रचत गहि असि नग्गिय गगन गय॥३३॥
ताहि बुरज सिर तबहि इक१ आयत सिल उप्पर ॥
कृत्य नियत निज करत हड्ड६१ मातहि कुल्लहन१७६।१ हर ॥
उडत अट्ट पर उडत सिला उप्पर नरबद१८७।१सुत ॥
तजि जप कड्ढिय तेग वेग बैरिन करि विद्रुत ॥
घँन धूम सघन भासत घटा१ बिज्जु२हगन मुंदत बढिय ॥
कैं रक्तबीज चट्टन कलह कालिय मुख१ रसना२कढिय ॥३४॥
नरबद१८७।२अंगज निधन उडत बारूद लहत इम ॥
पद्धर होतहि पंथ तँहँ न अट्टाल चिन्ह तिम ॥
सुनत रान संग्राम अधिक बुंदिय आसानहिं ॥
बहुल सोक सह बढिय धारि हिंगुलु१८०।९ लग ध्यानहिं ॥
अग्गैं नृसिंह१८७।३अर्जुन१८८।१अबहि हड्ड२सिर चित्तोर हुव ॥
बुंदीस आदि घायन बहुन धीर परिग बहु बंधु ध्रुव ॥ ३५ ॥
सोचि इम रु संग्राम मंडि मरनहिं स्व सत्थ सह ॥
ताही मग करि तबहि बज्र सम परिग भयावह ॥
कछुक बिंब रवि कढत मारि खग्गन बल मिच्छन ॥
गाहिय मुदाफर१ गज्जि गहिय महमूद२ भज्जि रन ॥

शुभ बडा १ सुरंग. गढ के २ नीचे खुदाया ३ पीपों (सींदडों) के समूह में सोर भर कर. अग्नि का ४ समूह फैलने से ॥ ३३ ॥ ५ चौडी शिला पर ६ भगाकर ७ बहुत धुँए रूपी घटा में ८शोभायमान विद्युत् रूपी नेत्रों को मूंदती हुई; अथवा रक्तबीज को चाटने के समय कालिका के मुख से जिव्हा कढी ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ६ भयानक

दिल्लिय सहाय न बन्यौं दुहुरन कछु आवश्यक बीजि कारि ॥
रुपि खेत रान लहि जय दुलभ पति संडुव लायउ पकरि ।३६।
जकरि१ पकरि२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
मुदाफर१ रु महमूद२ जुग२ हि पकरे कति जंपत ॥
किते कहत बहुबेर तजिय गहि गहि सु१ हि कंपत ॥
बदत किते त्रय३ बेर जुग२हि गहिगहि छोरे जिम ॥
पै संग्राम नृपाल अरिन सिर असह तप्यो इम ॥
दिल्लीस रनहि कछु भय उदय बेर इक१ जान्यौं बिदित ॥
बाहुरयो बलि न गल बाबर३०हु मन्नि घाय आहि अरं२ दमित।३७।

दोहा ॥

अनुजय बंब घुराइ इम, चढिय रान चित्तोर ॥
बरन१ बुरज२ गढके गिरे, दिय बनाइ पृथुदोर३ ॥ ३८ ॥
तजिय मुदाफर१ दंडि तिम, रीझत सुकविन रान ॥
गज१ भूखन२ धन३ ग्राम४ गन, दये बिबिध बहु दान ॥ ३९ ॥
केसरिया हरिदास कवि, मंडनसुत महियार ॥

---

१ कारण से ॥ ३६ ॥ २ शीघ्र दंडित होकर ॥ ३७ ॥ ३ विजय के साथ नगारे बजवाकर ४ कोट ५ बड़े फैलाववाले ।३८।३९। महियारिया शाखा के चारण ६ केसरिया (महियारियों की शाखा का दूसरा नाम केसरिया है)*हरिदास को

---

* यहां पर बादशाह मुदाफर को कैद करने की प्रसन्नता पर महियारिया शाखा के चारण हरिदास को चित्तोड़ का राज्य देना लिखा सो यह युद्ध चितोड़ में नहीं हुआ था किंतु विक्रमी संवत् १५७५ में गागरोन के पास माण्डू के बादशाह महमूद से हुआ था, जिसमें बादशाह महमूद को कैद करके महाराणा सांगा ने महियारिया हरिदास को चित्तोड़ का राज्य दिया था उस समय का हरिदास का कहा हुआ मरुभाषा का गीत नामक एक छन्द राजपूताना में प्रसिद्ध है उसका आधा चरण यहां पर लिख जाता है कि "सांगा चामर छत्र सहे तो, दूजे किणी न दीधो दान" यहां पर मुदाफर को पकड़ना लिखा सो ठीक नहीं है; क्योंकि मुदाफर अहमदाबाद के बादशाह महमूद का मददगार अवश्य था, परन्तु वह महाराणा की कैद में नहीं आया था और यह युद्ध बाबर के युद्ध से पीछे लिखा सो भी ठीक नहीं है; क्योंकि महमूद के पकड़े जाने वाला युद्ध सम्वत् १५७१ में हुआ और बाबर का युद्ध इसके ६ वर्ष पीछे हुआ था ॥

प्रहुं किन्नौं चित्तोरपहुं, दै नृपतादि उदार ॥ ४० ॥
कविहुं राज्य दिन तीन३कारि, चामर१ छत्र२ चलाइ ॥
कथित अर्घ लहि प्रसभ करि, पच्छो दिय भय पाइ ॥ ४१ ॥
लज्जित रान सु निट्ठि लहि, बैठो विमन बहोरि ॥
किते कहत सुहि सोक करि, छहि मासन गय छोरि ।४२।
पकरि मुदाफर१ तब सुपहु, आतहि अर्जुन१८८।१ उत्त ॥
पटा द्विगुन१३०००० दै सिसुपनहि, किय सुर्जन१८९।१जस जुत्त४३
डुंगरपुर राउल उदय१२, माहप१कुल सिरमोर ॥
रान बंधु गुरु याहिं रन, गिर्यो स्वजय जस गोर ॥ ४४ ॥
दुव२ हुव राउल उदय१२ सुव, जेठो पृथ्वीराज१३।१ ॥
तास अनुज जगमाल१३।२ तिम, जस पट तनन बिजाज ।४५।
पित्थल१३।१हुव गिरिपुरं१सुपहु, जिहिं कनिष्ठ जगमाल१३।२ ॥
इक१ बग्गड़ लहि सम भयउ, बनि प्रभु बंसबहाल २ ॥ ४६ ॥
अर्ज्ज भ्रात अर्जुन१८८।१उडन, सुनि रविमल्ल१८८।१ नरेस ॥
सुर्जन१८९।१मुखं अग्रज सिसु७न, बुल्लन विमन बिसेस ॥४७॥
इम पठयो हड्डन अधिप, प्रजावति४न प्रति पत्र ॥
मम अपजस अब मेटिये, आइ ससिसु७तुम४ अत्र ॥ ४८ ॥
युग्मम् ॥

---

१ राजा ने २ चित्तोड़ का राजा बनादिया अर्थात् चित्तोड़ का राज्य हरिदास को देकर ३राजा पद को आदि लेकर राजा पन की सामग्री देदी।४०।४हरिदास भी ५मूल्य ६हठ करके । ४१ । ७ उदास ॥ ४२ ॥ अर्जुन के ८पुत्र को ।४३ । डुंगरपुर वाले बड़े भाई माहप के वंश के और चित्तोड़ के महाराणा छोटे भाई राहप के वंश के होने के कारण रावल उदयसिंह को ९ गुरु लिखा है १० उज्ज्वल यशवाला ॥ ४४ ॥ उदयसिंह के ११ पुत्र ॥४५॥ बड़ा पृथ्वीसिंह १२ डुंगरपुर का राजा हुआ जिसका १३ छोटा भाई जगमाल समय पाकर १४ बागड़ देश लेकर १५ बांसवहाले का राजा हुआ ॥ ४६ ॥ १६ उत्तम भाई १७ आदि ॥ ४७ ॥ १८ भोजाइयों को १९ बालकों सहित ॥ ४८ ॥

चहि अर्जुन१८८।१पत्निन चउ४न, आवन किय आरंभ ॥
हठि रक्खे कहि रान है, दृढ जातहि मम दंभ[2] ॥ ४९ ॥
इक१तदपि[3] तव जयवतिय१८८।१, इष्ट सपथ अनुसार ॥
सिक्ख सहित लै सुर्जन१८९।१हि, आई स्वसुर अगार[4] । ५० ।
महिप जाइ तिनके समुह, अति मह सह गृह आनि ॥
जंपिय ज्येष्ठ प्रजावतिहिं[5], मसूं[6] प्रतिम[7] सुत जानि ॥ ५१ ॥
सुर्जन१८९।१ सह आये सदन, अनुकंपा[8] अति एह ॥
जगमुख करि कुलपति[9] कुजस, गदतं[10] बंधु परगेह ॥ ५२ ॥
पटा सहँस पंचास५००००को, हो नरबद१८७।२बस हंत[11] ॥
पायउ भ्रात तितो५००००हि पुनि, सह पट्टनि१विलसंत ।५३।
भ्रातृज[12] खट६इक१भ्रातृजा[13], चउ४ तुम सानुग[14] चाह ॥
सदन प्रजावति रहत सब, बिनु इते१०००००न निर्बाह ॥५४॥
या१०००००हूतें अब कछु अधिक, गहहु पटा रहि गेह ॥
किंकर सिर सासन करहु, ग्रासन करहु बिगेह[15] ॥ ५५ ॥

हिगेह १बिगेह २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

अग्रजको दिव[16] बास यह, मेरी हानि महंत ॥
पै पोतन[17] अग्रज प्रतिम अब दासहि वय अंत ॥ ५६ ॥
तब अक्खिय गहलोतनी, अबके सौंहँ न आन ॥
बहुरि लाल ऐहैं स्ववस, थिर कुलजन जस थान ॥ ५७ ॥
उभय२ आर्म[18] रहि कहि इम सु, पुनि चित्तोर प्रविष्ट ॥

अर्जुन की१स्त्रियों ने. मेरा२कपट दृढ होजायगा।४९। ३तो भी ससुर के४घर में ॥ ५० ॥ बडी ५ भोजाई से कहा कि ६ माता के ७ सदृश मुझको पुत्र जानो ॥ ५१ ॥ ८ दया ९ हाडों के पति को१०कहते हैं, कि भाई पराये घर में है ॥ ५२ ॥ ११ खेद है कि ॥ ५३ ॥ छः १२ भतीजे एक १३ भतीजी १४ सेवकों सहित ॥ ५४ ॥ १५ पराये घर में भोजन मत करो ॥ ५५ ॥ बडे भाई का १६ स्वर्गवास हुआ सो यह मेरी बडी हानि है, परंतु१७बालकों के लिये तो बडे भाई अर्जुन के सदृश जीवन पर्यंत मैं ही हूं ॥५६॥५७॥ दो१८मास तक रहकर

कारे अग्गैं सौंह करि, आक्खि संक्खि हरि इष्ट ॥ ५८ ॥
तदपि रह्यो पहुँचात तँहँ, मुद्रा अयुत१०००० महीप ॥
सौंह नियत चिंतन समय, देखत पथ कुलदीप ॥ ५९ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रचतुर्बाहुमद् १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यसमाचरितसूचनावसरसङ्ख्यापनीयबुन्दीनरेन्द्रनारायणदास १८७।१ चरमचरिते दिल्लीशबाबर ३० साहाय्यसमरसमुत्कमालवगौर्जर २ यवनेन्द्रयुग्म२ चित्रकूट १ बुन्दी २ विप्लवविचारण १, सांग्रामिनरबद १८८।१ छद्मघातप्रयोगनिदाघकालकृतषट्पुरपर्वतपुटप्रान्तकियत्कालनिवासहतसिंहादिहिंस्रसन्दोहबुंदीप्रतिप्रस्थितस्वल्पसैन्यहड्डा १६ धिराजगुटिकावधव्यापादन २, दृष्टतद्घातपतितस्वभटाऽष्टक ८ गुटिकाविद्धसमात्तकालायसकासूकपरिपन्थिपृष्टसमुत्फालितसप्तकबुंदीशतुरगागम्यगतसपत्नोपरिशक्तिप्रक्षेपनिंबार्द्ध१ वेधन ३, पातितपरपत्तित्रय ३ बुंदीशवीरवर्गतरुवेधानन्तरशिबिकासमानीतमूर्छितमहीपमार्गमरण ४, केदारेश्वरसमीपचराडा

सूर्यमल्ल के आगे सौगन करके अपने इष्ट परमेश्वर को साक्षी किया।५८।५९।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं के चरित्र की सूचना के समय प्रसिद्ध करने योग्य बुन्दी नरेश नारायणदास के अन्तिम चरित्र में दिल्ली के बादशाह बाबर की युद्ध में सहायता की उत्कंठा वाले मालवा और गुजरात के दोनों बादशाहों का चित्तोड़ और बुन्दी में उपद्रव विचारना, संग्रामसिंह के पुत्र नरबद का छलघात के प्रयोग से ग्रीष्म समय में खटकड़पुर के पर्वतों में कुछ समय निवास करके सिंहों के समूह को मारकर अल्प साथ सहित बुन्दी पीछे आतेहुए हड्डाधिराज को गोली से मारना, उस घात को और अपने आठ वीरों को पडेहुए देखकर गोली से घायल नारायणदास का लोह की बर्छी लेकर शत्रु के पीठ पर घोड़े को उठाकर आगे घोड़े के जाने योग्य स्थल नहीं देखकर शत्रु के ऊपर बर्छी चलाकर निम्ब के आधे वृक्ष को बेधना, तीन शत्रुओं को पटककर बुन्दीश के वीरवर्ग से वृक्ष को बेधे पीछे पालखी में लायेहुए मूर्छित राजा का मा-

कृपापात्रदासीजनैकादश ११ सहगमन ५, प्राप्तपट्टकुमारसूर्यमल्ल १८८।१ कृतौर्ध्वदैहिकहङ्के ६१ ह्न्दजन्म १ तद्धिकूवेधन २ यवनराज त्रय ३ ऋमजय ३ संहननमंहान ४ संवत्सूचन६, श्रुतत्सरिसहेन्द्र मरणानिर्महनिकायशोकशिथिलराणासंग्रामसिंहदिल्लीशजयसंश्रुत हि २ गुणा।।ब्दिकोपदोपेतनवनृपपट्टोपदिशनसम्बन्धिसिंधुरा १ दि सत्कृतिसम्भारसम्प्रेषणा ७, सद्योवप्तृवैरवालनवर्मितवरूथमहीम हेन्द्रमिहिरमल्ल १८८।१ स्वसाध्वससारङ्गपुरपलायितसंग्रामनर वद १८८।१ सर्वस्वसमादान ८, नारबदार्जुन १८८।१ विज्ञापितवीजस नाभिसपत्नस्त्रीजनादिनिधसनिर्वाहनिमित्तपत्तैक १ षट्टग्पत्तनप श्चागतश्रुतशरणाकृतपाकिवृन्दम्लेच्छमित्रवर्जितवरूथिनीविशिष्टप्रस्थो यपरिसरप्राप्तपृथ्वीमिहिरमल्ल १८८।१ म्लेच्छमित्रामित्रमार्गणा ९, सूचितस्वप्राणार्थशरणागतम्मागतसुहृत्कसनिपेक्षितशारङ्ग रेशम्ले

र्ग में मरना, केदारेश्वर के समीप चिता पर चढ़तेहुए चहुवाण राजा के साथ राठोड़ी को छोडकर तीन राणियें, एक पासवान और ग्यारह कृपापात्र दासियों का सती होना, पाट पाकर कुमर सूर्यमल्ल के उत्तरक्रिया कियेहुए हन्दु द का जन्म, इक्के को मारना, तीनों बादशाहों को जीतना और शरीर छोड ने के सम्बत् की सूचना करना, चहुवाण राजा के मरने को सुनकर अपने घ र को उत्सव से शून्य करके शोक में शिथिल राणा संग्रामसिंह का दिल्लीश के विजय आदि गुणों को सुनाकर शालियाना हुवने नजराने के साथ नवीन राजा के पाट बैठने सम्बन्धि हाथी आदि सत्कार की सामग्री भे जना, तुरन्त पिता का वैर लेने के लिये सेना को सजकर भूपति सूर्यमल्ल का अपने भय से सारङ्गपुर भागेहुए संग्रामसिंह के पुत्र नरबद का सर्वस्व लेना नरबद के पुत्र अर्जुन की अरज के कारण अपने सपिण्ड शत्रु के स्त्री जन आ दि के भोजन के निर्वाह के कारण एक खटकड़ पुर रखकर पीछे आतेहुए मा र्ग में शत्रु का म्लेच्छ के पुर में जाना सुनकर सजीहुई सेना से प्रस्थान करके पुर के समीप पहुंचकर सूर्यमल्ल का म्लेच्छ के मित्र और अपने शत्रु को मांग ना, अपने मित्र और शरणागत को प्राण के साथ देने की सूचना करके युद्ध यात्रा करनेवाले सारङ्गपुर के पति म्लेच्छ मकबूल का युद्ध में प्रवृत्त होना,

पैमल्ल१८८।१समाहूतसुर्जना१८९।३दिसर्वस्वबन्धुराणारोधन२१, पथप्रनिजातपत्यागमराणासम्मतिसानुकूलस्वसुख्यसूनुसुर्जन१८९ समुपेतततृष्टप्रसूगुहिल्लपुत्रीजयवती १८६।२ श्वशुरगेहागमन २ समभिगमनतत्कृतिसहसदनसमानीतप्रसूपतिप्रजावतीप्रतिप्रति नपूर्वा१००००धिकपट्टार्पणानरेन्द्रनिलयनिवासानुष्ठानप्रार्थन २ प्राक्तसनिदानपुनरागमनमासयुग२कृतश्वाशुर्यनिवासमुख्यसूनुसनुप गुहिल्लपुत्रीपुनश्चित्रकूटागमन२४, नरेन्द्रतन्निर्वाहार्थप्र१५०८मुन्मुनु १००००तत्पार्श्वप्रेषणाप्रख्यान२५, सैकत्रिंशत्तमो३१मयूखः ॥३१॥

आदितोऽष्टसप्ततयुत्तरैकशततमः ॥ १७८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

सर वसु तिथि१५८५मित तदनुज सक, जेठ२असित३दल३ जात ॥
तजिय रान संग्राम तनु, मिच्छन अभय सनात ॥ १ ॥
मीराँपति पुव्वहि मर्यो, कह्यो भोज १ कुमरेस ॥
रह्यो जनक गद्दिय रतन२, यातैं तदनुज एस ॥ २ ॥
रत्न हु गद्दिय किय रान लहु, पुद्गल दुव२ इक१ प्रान ॥

कपट स पत्र भेजकर महाराज सूयमल्लके बुलायेहुए सुर्जन आदि सब भाइयोंको राणा का रोकना, फिर राणा से पीछे आने की प्रतिज्ञा करके राणा की सलाह से प्रसन्न होकर अपने पाटवी पुत्र सुर्जन सहित उसकी बड़ी माता गुहिलपुत्री जयवती का ससुर के घर आना, सन्मुख जाकर उसको घर से लाकर आना के समान भोजाई को पहिले से अधिक पट्टा देना सुनाकर राजा का घर में निवास करने की प्रार्थना करना, कारण सहित कथन करके फिर आ ना कहकर दो मास ससुर के घर निवास करके बड़े पुत्र सहित गुहिलपुत्री का फिर चित्तोड़ जाना, राजा का उसके निर्वाह के लिये उसके पास दश हजार रुपये भेजने की सूचना करने का इगतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३१॥
और आदि से एक सौ अठहत्तर १७८ मयूख हुए ॥

१ जिन पीछे २आधा पक्ष ॥ १ ॥ ३ मीराँ बाई का पति कुमर भोजराज ४ ब ड़ा (भोज) का छोटा भाई ॥ २ ॥ ५ शीघ्र. ६दो शरीर और एक प्राण

पूरविया१ *कुठारपति, पूरनमल्ल प्रधान ॥३॥
जनक तास ठक्कू सु जस, वल्लि सभा बुंदीस ॥
अठ्ठ= भाग किय अंगके, सठ छुवात तृन सीस ॥ ४ ॥
पट्ट रहिय संग्राम पहु, जोलौं दाव न जानि ॥
वैर बहोरन बप्पको, पूरन अब सु प्रमानि ॥ ५ ॥
छिद्र लखत कछु सद्दि छल, मारन नृप रविमल्ल १८८१२ ॥
हन्यौं जनक न सक्यो सु हनि, हरत अब खिन हल्ल ॥ ६ ॥
आत दसेरा बिसद इम७, आब्दिक जो उपहार ॥
सबहि मेटि दुरहय१रु बसन२, प्रहित किन्न नव प्यार ॥७॥
नृप रक्खन लग्गो सु नन, प्रसू कहिय तब पुत्त ॥
भानेज न ऐसी भनैं, यह किय ठक्कू उत्त ॥ ८ ॥
जेठी वहिनी जानतहि, सुत देहैं समुझाइ ॥
यातैं सुत रक्खहु यहहु, पुनि सु रहहिं पछिताइ ॥ ९ ॥
कथित प्रसू रखारको, अधिप कारि सु उपहार ॥
रक्खिय तउ रान सु रतन, कृतघन हुव अघकार ॥ १० ॥
प्रसू धना बोधिय तदपि, मानि तासन हुव मुझि ॥
रिपु भावहिं तिहिं रक्खयो, खलपन प्रकटन खुल्लि ॥ ११ ॥
मालव १ गुज्जर२ प्रथम १ मृधँ, हनन छन्न हठ्ठ ६१ स ॥
किय ठक्कुसुत जो कपट, सो लखि त्वरित असंस ॥ १२ ॥
नरबद१८७१२सुत पूरन१८८१३निपुन, पूरनको वह पाप ॥
सब निवेदि नारायन१८७१९सु, अवहित्त किय जब आप ।१३।
युग्मम् ॥

*कोठारिया नामक पुर का पति ॥३॥ नारायणदास के मस्तक पर तृण रख के कारण नारायणदास ने ठक्कू को मारडाला था सो कथा ऊपर आचुकी है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ नवीन स्नेह से १ भेजा ॥७॥ सूर्यमल्ल की २ माता ने. य ह ठक्कू के ३पुत्र ने किया है ॥८॥९॥ ४ कियेहुए उपकार को भूलनेवाला ५पापी ॥१०॥ माता धना ने ६समझाया तो भी ।११। ७युद्ध में ।१२। ८सावधान ॥१३॥

सोहि गिनत तबतैं असह, पूरन[1] मन घन पीर ॥
पठये मारन पूरन[2]१८८।३ हिं, बुंदिय अब दुव२ बीर ॥ १४ ॥
मग हिंडोलिय जात मिलि, घाल्लि तुपक१ धनु२घात ॥
दुरे भजत निस थकि दुवरहि, प्रविसि सक्रगढ प्रात ॥ १५ ॥
नृपके चर[3] अद्भुत निपुन, वाही अह[4]के अंत ॥
गदिय[5] सुद्धि दुरि सक्रगढ, है कृतघ्न दुव२ हंत ॥ १६ ॥
इती सुनत नृप टारि अर[6], इक्क सहँस१००० असवार ॥
ताही निसके अंत तँहँ, पहुँच्यो बरन[7] प्रसार ॥ १७ ॥
पठई कहि अध्यक्ष प्रति, पहिलैं घरबिधि पूरि ॥
हित बुंदिय१ चित्तोर२ है, सो पिक्खहु जो सूरि ॥ १८ ॥
इहाँ उभय२ दुरिबे अधम, पूरन१८८।३ हनन प्रयोग ॥
करि भज्जत आये कुहक, भोगन निजकृत भोग ॥ १९ ॥
ते दुव२ देहु गहाइ तुम, इक१ पन लखि दुहुँ२ओर ॥
नतो रक्खि पबि[10]मंय निलय[11], जय सैंय[12] मंडहु जोर ॥ २० ॥
हाकिम तँहँ पहिलो हुतो, नवमंत्री[13] बस नाँहिं ॥
जिहिं भेजे निगडित जुग२हि, महिप हड्ड१ दल माँहिं ॥२१॥
इक१ कह्यो पडिहार१ अरु, सोढा२ अपर२ सु गूढ ॥
पठये दुव२ चित्तोर पहु, महा निगड गृह मूढ ॥ २२ ॥
जानैं रान१ न तस जननि२, तिम ढक्कसुत तक्कि ॥
दिय छुराइ घातक दुव२ हि, छमपनैं[15] मन घन छक्कि ॥ २३ ॥
इनहिं सक्रगढ सचिव इत, जुत दल गोठि जिमाइ ॥

---

१ कोठारिया के पति पूरणमल्ल के मन में २ पूरणमल्ल हाडा को मारने के लिये ॥ १४ ॥ १५ ॥ ३ हलकारे. उसी ४ दिन के अन्त में ५ खबर दी ॥ १६ ॥ ६ शीघ्र ७ घेरा फैलाकर ८ पण्डित ॥ १८ ॥ ९ अपने किये हुए का फल भोगने के लिये ॥ १९ ॥ १० वज्र ११ घर १२ हाथ ॥ २० ॥ १३ नवीन मन्त्री पूर्णमल्ल के वश में नहीं था १४ बन्धेहुए ॥ २१ ॥ २२ ॥ १५ समर्थपन से ॥ २३ ॥

सोपायन पठये सदन, पूरन[२] भय कछु पाइ ॥ २४ ॥
सुहि उदंत[३] पूरन सुनत, वह पटु सचिव१ उतारि ॥
स्व इतर२पठयो सक्रगढ, धक बुंदिय सिर धारि ॥ २५ ॥
गर्दिय रानप्रति सो गुनी, हित तजि हड्ड६१न हाय ॥
अब किय टीँकादोर[५] इत, विप्लव[६] पुरन बिधाय ॥ २६ ॥
रानहु बालिस मानि ऋत, उपालंभ[९] पठयोहि ॥
कछु अंतर लिपि पत्र करि, लघुं अरिभाव लयोहि ॥ २७ ॥
निज मातहिं रविमल्ल१८८।१ नृप, दिन्नौं छंदे[११] सु दिखाइ ॥
खेतू१८७।३ पूरन और लिखि, हेत पन करि हाइ ॥ २८ ॥
भगिनी१ अरु भानेज२के, पठयो सुहि छंद[१२] पास ॥
दयो न पहुँचन जो दलहु, पूरन वैर प्रकास ॥ २९ ॥

युग्मम् ॥

दुव२ सोदर विक्रम१ उदय२, वदि बुंदियपति बंधु ॥
भ्रातनबिच पटकी भिदा[१३], अधिपहिं बोरन अंधु[१४] ॥ ३० ॥
अनुजनकौं धाजैं न इम, जामिज[१५] हड्ड६१न जानि ॥
पूरन बस हुव रान पहु, अधमभाव निज आनि ॥ ३१ ॥
इत बुंदिय कारेउरग[१६], मिहिर[१७]मल्ल१८८।१ महिपाल ॥
गिनि अंतर चित्तोरगढ, जानिलयो रिपु जाल ॥ ३२ ॥
जास जहूरुद्दीन३० जग, अपर[१८]१ विदित अभिधान[१९] ॥
इत दिल्लिय बढिगो अतुल, सो बाबर सुलतान ॥ ३३ ॥

१नजराना करके॥२पूर्णमल्लका।२४।३वृत्तान्त।२५।४कहीं५पहिले समयमें राजा गद्दी पर बैठते ही शत्रुओं के देश पर धावा मारते थे उसको टीकादौड़ कहते थे. ६नगरों को लूट करके॥२६॥७मूर्ख ने८सत्य मानकर९ओलंभा भेजकर लिखावट में कुछ फरक कर दिया१०शीघ्र॥२७॥वह११पत्र दिखाया॥२८॥वह१२पत्र पूर्णमल्लने नहीं पहुंचने दिया१३भेद(फूट)१४कूए में डुबोने के लिये॥३०॥ हाडों का१५भानजा जानकर ॥३१॥ १६काले सर्प के अंशवाले१७सूर्यमल्ल ने ॥३२॥ १८दूसरा१९नाम

कहुँ अज्ज१ रु अफगान २ कहुँ, पाये हुकम प्रतीप ॥
बस किन्नों सुहि नियति बल, दिल्लीमंडल दीप ॥ ३४ ॥
इत [illegible]१ सूबा अधिप, सेरखान बल सज्जि ॥
दे[illegible]हितास२ दुव२, गहि रु बढ्यो जय गज्जि ॥ ३५ ॥
पेसावर धर जिहिं प्रभव, कहत सूर जिहिं कोम ॥
सेरखान सो इहिं समय, जबर पर्‌यो जय जोम ॥ ३६ ॥
जित्तन तिहिं बावर३०जबहिं, बल सजि कियउ बिचार ॥
जाकैं तबहिं असाध्यज्वर, प्रकट्यो जीवन पार ॥ ३७ ॥
संवत खट बसु तिथिसमय१५८६, कलिपहु बिक्रमकेर ॥
रिपु जित्तन मन हौंस रहि, बावर ३० दिय तजि बेर ॥ ३८ ॥
निधि गुन तिथि १५३९ संवत जनम, अंदजान१ लहि एह ॥
बरस सत्त चालीस ४७ बय, दिल्लिय हुव बिनुदेह ॥ ३९ ॥
निज अवसर लहि तस तनय, निपुन हुमाँयों ३११ नाम ॥
तव बैठा दिल्लिय तख्त, धरत छत्र १ बल २ धाम ३ ॥४०॥
मुलक प्रदिष्ट बिहार१मुख, सूबा जित्तन सोधि ॥
सज्जतहुव सो स्वबल, रिपुपन जुतन बिरोधि ॥ ४१ ॥
अनुजन जुत याको अनुज, निडर कामरां ३१ नाम ॥
जिहिं काबल१ पंजाब २ जुग२, दविय बल उद्दाम ॥ ४२ ॥
सुरि अग्रज १ सन कामरां ३११, भयो साह यह भिन्न ॥
तातैं प्रथम १ बिहार तजि, द्रुतप्रयान उत दिन ॥ ४३ ॥
पाइ बिजय बावर ३० प्रथम, हन्यो जु इब्राहीम २९ ॥
सुतको सुत तस इहिं समय, सुन्यौ सु दब्बत सीम ॥ ४४ ॥
पंजाबरहु इम तजि प्रथम, करि लोदी७ सिर कुम ॥

आज्ञा के १विरुद्ध २ आज्य के बल ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ जय के ३ घमंड से ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ १२ ॥ ४ कलियुग के राजा विक्रम के सम्वत् जाते समय ५ शरीर ॥ ३८ ॥ ३६ ॥ ४० ॥ ६ कहे हुए बिहार ७आदि ॥ ४१ ॥ ८ निरंकुश होकर ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥४५॥

जित्यो समर पठान५ जो अप्प मुगल६ बल उच्च ॥ ४५ ॥
गिरि रैवत जूनाँगढ जु, कह्यो नृपति *केवट्ट ॥
सो लोहि७ तस गय सरन, विखम दसा भजि †बट्ट ॥ ४६ ॥
गदत किते रैवत गये, याके संगिय आग ॥
सरबहिया रक्खे सरन, जुद्ध करन अति जोर ॥ ४७ ॥
बाबर३० सुत सन रन बहुन, जित्ति करन ‡तनुजात ॥
अंत समर सोयो अधिप, सूरन तलपे सुहात ॥ ४८ ॥
कति मत जनपद सिंधुके, साह आइ अवसान ॥
प्रधन[2] हन्यौं केवट्ट पहु, जुरि पहिलैं इत जानि ॥ ४९ ॥
सोलह१६ रानिन जरत सहँ, निछिन इक१ निहोरि ॥
प्रसव अवधि रक्खिय पिहित, कुल रक्खन विधि कारि ॥५०
बाहुज२ इक कुलपति बिदित, हलै बसु भुग्गन हार ॥
देवातू१ कुल धर्म दृढ, चावोरा हित चार ॥ ५१ ॥
तिहिं रक्खी रानी पिहित, गर्भवती सु स्वगेह ॥
ताकैं हुव नवघन तनय, आयैं प्रसव अनेह ॥ ५२ ॥
सुद्ध प्रसूता हुव समय, जिहिं मृतें जन सिस जारि ॥
तिम सिसुवारी निज तियहिं, नृप सिसु दिय निरधारि ॥ ५३ ॥
पाले तिहिं द्वरही पृथुकैं, इक१इक१ पाइ उरोजैं ॥
समय जित्ति पुनि हुव सुपहु, यह नवघन अति ओजैं ॥ ५४ ॥
जितातितैं नृप बंसि जन, ब्यवहितैं बेस बुलाइ ॥
देवातुव भुव लै दई, खग्गन जवन खुलाइ ॥ ५५ ॥

*केवाट को।मार्गमें।४६।४७।करण का‡पुत्र१शूरशय्या।४८। कितने ही लोगों का मत है कि सिन्धुदेशके बादशाहने अन्त में आकर२युद्ध करके केवाट को मारा ॥४९॥ ३साथ ॥५०॥ ४क्षत्रिय।५हल चलाकर धन भोगनेवाला ६चावड़ा वंश का क्षत्रिय ॥५१॥ ७समय ।५२। ८बालक जन्मे से शुद्ध होने के समय९मरजाने के मिष से जलाकर१०पुत्रवाली अपनी स्त्री को वह राजा का बालक दिया ॥५३॥ ११बालक१२स्तन१३बड़ा प्रतापी ॥५४॥ १४छिपेहुए वेस से बुलाकर॥५५॥

कति खोजहु लग्गो कहत, नवघन जनम निदान ॥
देवातू तँहँ स्वसुत दिय, सारँन तस प्रतिमान ॥ ५६ ॥
देवातू पीछैंहु दुख, सुनि तस तनया सील ॥
केहरि१ नवघन२ दोर करि, फास्यो सिंधुप३ फील२ ॥ ५७ ॥
जवन सोहु साहहि बजत, जनपद सिंधु जनेस ॥
देवातू दुहितेस कुल, सो तँहँ पत्त असेस ॥ ५८ ॥
तृन दुकाल हुव दिनन तिन, यातैं जुत परिवार ॥
सिंधुदेस गय बसति सह, सह गोधन संभार ॥ ५९ ॥
देवातू तनया बिदित, सुनि रूप१ रु बपर२ सोर ॥
ताहि लैन दल बेढि लिन्ह, जवनराज दिय जोर ॥ ६० ॥
भगिनी नवघन भ्रातकौं, हुत रैवत छंद दिन्न ॥
चढि इक्कहि बंचि सु चल्यो, कटक मेल मग किन्न ॥ ६१ ॥
सिंधु मुलकपति साहकौं, मृध करि जातहि मारि ॥
सह कुटुंब आनी स्वसौं, इम तस सील उबारि ॥ ६२ ॥
सुनहु राम२०३१४पहु तिहिँ समय, बनि ऐसी बहु बत्त ॥
सरबहियन भूपन सुजस, छादित हुव भुव छत्त ॥ ६३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणो पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीजयवर्णानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल ५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरमार्तण्डम

कितने ही कहते हैं कि नवघन के जन्म के कारण उसका १ पता लग गया था वहां देवातू ने अपने पुत्र२सारख को नवघन के३ सदृश (एवज में) दिया ।५६। पीछे उसकी४पुत्री के पतिव्रत में दुःख सुनकर सिंह रूपी नवघन ने ५सिन्धु देश के पति रूपी६हस्ती को चीरा ॥५७॥ सिन्धु ७देश का ८नरेश. देवातू की९पुत्री के पति का कुल वहां गया ॥ ५८ ॥ १० समूह सहित ॥ ५९ ॥ ११ घेरकर ॥ ६० ॥ १२पत्र दिया ॥ ६१ ॥ १३युद्ध करके १४बहिन को ॥ ६२ ॥ १५हे राजा रामसिंह ॥ ६३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवा ण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज आस्थिपाल के वंश और वंश की कथा

ल्ल १८८।१ चरिते राणासंग्रामसिंहतनुत्यागशकसूचनपुरस्सरप्राप्तत त्पट्टराणारत्नसिंहपौर्विकचाहुवाणढक्कूपुत्रपूर्णमल्लप्रधानप्रष्ठीकरण १, तत्कपटप्रपंचप्राप्तप्रातीप्यप्रणाश्यपितृपालितमत्यब्दोपदाप्रेषणप्र तिज्ञराणातत्प्रस्थापनावसरपरिधानतुरगयुग २ मात्रबुंदीप्रेषण २, तदुपहारानङ्गीकरणसमयज्ञापितपौर्विक १ पूर्णमल्लकुकृत्यकार्म ध्वजीप्रसवित्रीप्रबोधितमहीमहेन्द्रमिहिरमल्ल १८८।१ स्वल्पप्राभृत स्वीकरण ३, प्राप्तप्रसूप्रोक्तप्रमादोपालम्भबहिर्दर्शितबुंदीशबन्धुत्व राणारत्नसिंहद्वैधावस्थान ४, स्मृतपूर्वप्रधननारबदपूर्णमल्ल१८८।३ प्रतिहतपितृव्यपृथ्वीशप्रमथनप्रच्छन्नप्रयत्नपरिपन्थिपौर्विक १ स्वा भिधानसपत्नसंजिहीर्षासावधानच्छद्मघातकबाहुजद्वय २ बुन्दीप्रेष ण ५, रात्रिसमयबुन्दीनगरनिःसृतहिंडोलीपुरपथप्रस्थितपूर्णमल्लो १८८।३ परिप्रेरितच्छद्मप्रहारप्रयोगासिद्धमनोरथपलायिततद्घातकयु ग २ निगूढमार्गमिलत्पाटवीमासङ्गतशङ्कदुर्गपुरप्रविशन ६, दूतोक्ताव

नाने के समय के वचनों में बुन्दी भूपति सूर्यमल्ल के चरित्र में राणा संग्रामसिंह के शरीर छोड़ने के सम्वत् की सूचना के साथ उनका पाट पाकर राणा रत्नसिंह का पूर्बिया चहुवाण ढक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल को प्रधान करने की पुष्टि करना, उसके कपट की रचना से विरुद्धता पाकर अपने मरेहुए पिता की पालना कीहुई सालाना नजराना भेजने की प्रतिज्ञा में उसके भेजने के समय राणा का केवल वस्त्रों सहित दो घोड़ों को बूंदी भेजना, उस नजराने के अस्वीकार करने के समय पूर्बिया पूर्णमल्ल के कुकृत्य को जनानेवाली राठोड़ी माता के समझायेहुए महीपति सूर्यमल्ल का उस अल्प नजराने को स्वीकार करना, भूल का ओलंभा माता के कथन से पाकर बुंदीश के साथ ऊपरी मन से सम्बन्ध दिखाकर राणा रत्नसिंह का द्वैधीभाव में स्थित होना, पहिले युद्ध में नरब द के पुत्र (हाडा) पूर्णमल्ल का अपने काका राजा नारायणदास का (पूरबिया) पूर्णमल्ल का छाने मारने का प्रयत्न प्रकट करने से अपने ही नामवाले हाडा) पूर्णमल्ल को मारने की इच्छा में सावधान पूरबिया चहुवाण (पूर्णमल्ल) का दो क्षत्रियों को बुन्दी भेजना, रात्रि के समय बुन्दी नगर से निकल कर हिंडोली पुर के मार्ग में प्रस्थान करते हुए हाडा पूर्णमल्ल पर छलघात की प्रेरणा करके अपने प्रयोग से मनोरथ को सिद्ध न जानकर उन घात करनेवाले

गततदुक्तनतत्कालविविक्तपरीक्षितसुभटसहस्र १००० समुपेतप्रस्थि-तप्रातःसमयगम्यसीमसङ्गतवाहिनीवेष्टितशक्रदुर्गपुरप्रतिबोधिततदध्यक्षहड्डाधिराजाततायियुग्म २ मार्गण ७, तत्पुराध्यक्षस्वशिबिरप्रेषितपरिचितप्रातिहार १ प्रामार २ बाहुजबन्धुद्विषद्द्वय २ बुन्दीशनिगडयन्त्रणानुकूल्यचित्रकूटप्रेषण ८, ढक्कुजसप्रसू १ राणा २ परोक्षप्रच्छन्नप्रयत्नतद्द्वय २ मोचनपुरस्सरशक्रदुर्गपुराध्यक्षदूरीकरण ९, राणाग्रनिवेदितस्वागतसालम्बमृषाकल्पितत्तत्प्रधानप्रातीप्यसहितरविमल्ल १८८।१ कृतशक्रदुर्गपुरलुण्टनपूर्णमल्लस्वस्वामिबुन्दीविरोधीभावन १०, सम्मतसत्यसचिवाक्तराणागौरवह्रासप्राकट्यपूर्वकप्रेषितोपालम्भपत्रबुंदीशनिजमातृनिवेदन ११, प्रतिलिखितभागिनी १ भागिनेयो २ पालम्भजननीराष्ट्रकूटीसम्मतानुसारहड्डेशचित्रकूटपतिप्रेषिततद्राणापत्रपूर्णमल्लगोपन १२, विरोधनीयबुन्दीसम्ब

दोनों का गुप्त मार्ग से मेवाड़ की सीमा में शक्रगढ पुर में प्रवेश करना, वह वृत्तान्त दूतों के कहने से जानकर उसी समय परीक्षा कियेहुए हजार वीरों के सहित छाने प्रस्थान करके प्रभात समय जहां जाना था उसकी सीमा के साथ सेना से घिरेहुए शक्रगढ के हाकिम को समझाकर हड्डाधिराज का दोनों आततायियों का मांगना, उस पुर के हाकिम का अपने डेरे में भेजेहुओं को पहिचानकर प्रतिहार और प्रमार दोनों शत्रु और भाई क्षत्रियों का (दोनों अग्निवंशी होने के कारण यहां बन्धु लिखे हैं) बुन्दीश का कैद करने की ताड़ना सहित चित्तौड़ भेजना, ढक्कू के पुत्र का माता सहित राणा के परोक्ष छाने के यत्न से उन दोनों को छोड़ने से पूर्व शक्रगढ के हाकिम को दूर करना, राणा के आगे निवेदन कियेहुए अपने आने के आधार सहित झूठी कल्पना से उस प्रधान की विरुद्धता के सहित सूर्यमल्ल की कीहुई शक्रगढ की लूट से पूर्णमल्ल का अपने स्वामि की बुन्दी से विरोध करना, सचिव का कहना सत्य मानकर राणा का अपने बड़प्पन के नाश होने के साथ ओलंभा भेजने के पत्र को बुन्दीश का अपनी माता को दिखाना, पीछे लिखेहुए अपनी बहिन और भानजे को माता राठोड़ी की सलाह से ओलंभे का हड्डेश का चित्तौड़ के पति के प्रति भेजेहुए उस राणा के नाम के पत्र को पूर्णमल्ल का छिपाना, बुन्दी के सम्बन्ध से विरोध करनेवाले और वैमनस्यता से बन्धुबुद्धि का वियोग करनेवाले

न्धवर्धितवैमनस्यवियोजितबन्धुवुद्धिराणाविक्रमो १ दय २ स्वानु
जयुग २ सापत्न्यसम्भावन १३, पृथ्वीशपूर्णमल्ल १८८।१ प्रकारप्रा
चुर्यपरीक्षितपूर्णमल्लपारवश्यपरिवृतपूर्वप्रीतिपदचित्रकूटपतिपारिप
न्थक्यप्रमाण १४, जहूरुद्दीना ३० ऽपर २ नाममुगलयवनेन्द्रदिल्ली
शबाबरशाह ३० प्राप्तप्रतीप्यपरिभूतपरप्रान्तप्रभूतप्रतापप्रसारण
१५, पेशावरराष्ट्रकुलवसतिकसमाक्रान्तवङ्ग १ रुहितास २ देशद्वय
२ बिहार १ जनपदसबाधिकारिसूरजातीययवनसेरखान १ प्राबल्य
प्रभुतापार्थिक्यप्रतिज्ञान१६, प्रोक्तशकसमासमुद्भूतनिजिगीषाप्रतिष्ठा
सुप्राप्तासाध्यज्वरदिल्लीशबाबर ३० सूचितसंवत्समयसंस्थान १७,
प्राप्तपितृपट्टहुमायों ३१।१ नामतत्पुत्रकाबल १ पञ्जाब २ प्रभूभूत
स्वानुजकामरान ३१।२जयसाधनप्रस्थान १८, तत्समयसाधितमहो
पद्रवप्रजाभयस्वाभिमुखाभिषेणितससज्जसैन्यहुमायों ३१।१ साह
पराजितप्रवृत्तलोदिपठान १ तत्परिकरा २ न्यतमरैवतराजशरणधि
कचालुक्यनरेन्द्रकैवर्तशरणसमालम्बन१९, जितबहुधाजन्यपराजि

राणा का विक्रमादित्य और उदयसिंह दोनों अपने भाइयों से शत्रुभाव रखना, राजा का हाडा पूर्णमल्ल पर छलघात कराने आदि बहुत भेदों से परीक्षा करके पूर्दिया पूर्णमल्ल की परवशता में घिरेहुए चित्तौड़ के पति की पहिली प्रीति में शत्रुता का प्रमाण करना, यवनेंद्र दिल्ली का पति जहूरुद्दीन जिसका दूसरा नाम बाबर था उसका शत्रुओं के बहुत से प्रान्त लेकर अपने स्वामिपन के प्रताप को फैलाना, पेशावर के राज्य में बंगाला और रोहितास दोनों देशों को लेकर बिहार देश के सूबा के अधिकारी सूर जाति के यवन शेरखां का प्रबलता से जुदा मालिक होने का ज्ञान कराना, कहेहुए शक के समय तक से श्रेष्ठ प्रतिष्ठा से उठी है जीतने की इच्छा जिसको ऐसे दिल्लीश बाबर का असाध्य ज्वर से कहेहुए सम्बत् में देहान्त होना, पिता का पाट पाकर हुमायों नामक उसके पुत्र का पञ्जाब के स्वामि बनेहुए अपने छोटेभाई कामरां को विजय करने के लिये गमन करना, उस समयमें बड़े उपद्रव और प्रजाभय करके अपने सन्मुख चढ़ाई करके सेना के साथ बादशाह हुमायों से पराजित होकर भागेहुए लोदी पठान का और दूसरों के मत से उसका परग हु का रैवत के राजा सरबहिया सोलंखी नरेन्द्र केवाट का शरण लेना, बहुत

तद्दिल्लीदण्डधर्मधुरन्धररैवतराजकैवर्तपश्चिमप्रधनशूरशय्य २
२०, पञ्चदश १५राज्ञीसम्प्रज्वलनस्नानसमयषोडश्ये १६ का१गग
वर्तकान्ताचापोत्कटबाहुजदेवातूपस्त्यप्रच्छन्नप्रसवावधिकालाति
हन २१, देवात्वायत्तीकृतसमयप्रसूतपुत्रनवघनतद्राज्ञीतर्जनमृत्यु
षभस्मसाद्भवन २२, समुचितसमयसङ्गीकृतशरवधिकसन्तानदेव
स्वपत्नीपालितकैवर्तकुलधरनवघनार्थरैवतराज्यसमाक्रमण २३,
प्तनवघनशुद्धिनिश्चयम्लेच्छमारणार्थतन्मार्गणसमयदेवातूस्व
समर्पणमतभेदभणन २४, तृणादिदुर्भिक्षसमयस्वकुटुम्ब१
जन २ गोधन ३ सहसुखनिर्वाहार्थसिन्धुराष्ट्र ।मा..ङ्गत
शेषपत्नीदेवातूपुत्रीस्वशीलभ्रंशसमुद्युक्तसिन्धुराजयवनेन्द्र ... पे
ष्टनवृत्तान्तपत्रप्रच्छन्नरैवतप्रेषण २५, ... का
किप्रस्थितमार्गसम्मिलितचमूकसिन्धुसंगतमृध ... त
वघनस्वभगिनीचापोत्कटीशीलरक्षण २६, तत्समयचालुक्य १७

युद्ध जीतकर दिल्ली की सेना को पराजित करके धर्मधुरन्धुर रैवत गिरि राजा केवाट का पिछले या पश्चिम के युद्ध में माराजाना, पन्द्रह राणियों सती होने के समय सौलहवीं एक गर्भवती केवाट की स्त्री का चावड़ा क्षत्री देवातू के घर में छाने बालक होने की अवधि तक रहना, समय पर पुत्र का जन्म होने पीछे नवघन को देवातू के आधीन करके उस राणी का भय में मृत्यु के मिस से जलना, उचित समय पर सरवहिया क्षत्रियों को एकत्रित करके उस सन्तान को देवातू का अपनी स्त्री से पालेहुए केवाट के कुल को धारण करनेवा-ले नवघन के अर्थ रैवत के राज्य को लेना, नवघन की निश्चय खबर पाकर मारने को म्लेच्छ के मांगने के समय देवातू का अपने पुत्र को देने के मतभेद का कथन, तृण आदि के दुर्भिक्ष के समय अपना कुटुम्ब, प्रजा, गोधन सहित सुख के लिये सिन्धु राज्य की सीमा में गयेहुए किसी क्षत्री की स्त्री और देवातू की पुत्री का अपने शीलनाश करने को उद्युक्त सिन्धुदेश के यवन बादशाह की सेना के घेरने का वृत्तान्त का पत्र छाने रैवत को भेजना, पत्र का वृत्तान्त जानकर उसी समय अकेला गमन करनेवाले मार्ग में शामिल हुई है सेना जिससे ऐसे नवघन का सिन्ध देश में जाकर युद्ध में बादशाह को मारकर अपनी बहिन चावड़ी के शील की रक्षा करना, उस समय सोलंखी क्षत्रिय सरवहियों के बध

शरवधिकवंशसर्वाधिश्लाघासूचनं २७ द्वात्रिंशो ३२ मयूखः ॥ ३२ ॥

आदित एकोनाशीत्युत्तरैकशततमः ॥ १७९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

इत बुंदिय हड्डन अधिप, महीरमन रविमल्ल १८८।१ ॥
बढ्यो सजातीयन बली, सब खुरली[2] अरि सल्ल ॥ १ ॥
भुजन भीम कट्टार करि, मारत मत्त[3] मइंद ॥
रोहत[4] गहि धावत बिरचि, गति इतबेग गइंद[5] ॥ २ ॥
पटु सब हेतिन[6] तदपि पटु, इषुबिँद्या[7] अधिकाइ ॥
दुवर दुवर गोलिन दूरतैं, कोउ न बेध्य टिकाइ ॥ ३ ॥

धिक।इ१टिकाइ२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

षट्पात् ॥

भवन किते इक१ भल्ल स्वप्नकरि याहि दयो सिव ॥
प्रातहि सूचित[9] प्रांत अप्प सोधिय अभीष्ट इव ॥
बिनु सर भल्ल सु पिक्खि पुज्जि लिय मुदित महीपति ॥
इसहि रमत आखेट[10] कहत भल्ल सु पायो कति ॥
भूखो तदीय[11] अभिधान भनि सर संधि सु रक्ख्यो सरधि[12] ॥
बहु दूर बेध बिज्झन[13] बनत सुगम भये सब ५ थान साधि ॥४॥

दोहा ॥

की सब से अधिक प्रशंसा सूचन करने का बत्तीसवां मयूख समाप्त हुआ।३२। और आद से एक सौ उन्यासी १७९ मयूख हुए ॥

२भुदाति सूर्यमल्ल २ शस्त्रविद्या में ॥ १ ॥ मस्त ३सिंहों को मारना है ४रोकता है ५ हाथियों को ॥ २ ॥ सब ६ शस्त्रविद्या में चतुर था तो भी ७ बाणविद्या में अधिक था. कोई लक्ष्य (निशाना) नहीं रहने पाता था ॥ ३ ॥ स्वप्न में ९जनाये हुए स्थल को सोधा. कितने ही कहते हैं कि१०शिकार खेलते समय वह भाल मिला था११उसका नाम भूखा रखकर उसके तीर लगाकर उस भा ला को१२भाथे में रक्खा १३वेधन ॥ ४ ॥

सो सर रक्खैं प्रानसम, अर्यममल्ल १८८।१ अधीस ॥
सद्दैं अर्चन नित्य सह, सद्दन सत्रुन सीस ॥ ५ ॥
मृगया१ सह भोजन२ प्रमुख, रचैं कुतूहल रम्य ॥
मन महंत रीझ न रुकैं, गिनैं प्रबल सुहि गम्य३ ॥ ६ ॥
पहिलैं ब्याहे कुमरपन, संभ१ अरु सीसोद२ ॥
निलय प्रमारन श्रीनगर, बहिनी जुग२ सविनोद ॥ ७ ॥
गढबुंदिय१ चित्तोर गढ,२ घातैं सालक आइ ॥
उभय६ स्वसा लैगा अमर, पिउहर अवसर पाइ ॥ ८ ॥
पुनि आगम गुनगौरि पर, बुंदीसहिँ तँहँ बुल्लि ॥
प्रकट्यो हित सारंग पहु, खिन खिन नव महँ खुल्लि ॥ ९ ॥
मुदित स्वसुर१ जामात२ मिलि, सालक१ जामि१ सत्थ ॥
मृगया मुख बिलसे बिविध, तेरह१३ अँह मह तत्थ ॥ १० ॥

षट्पात् ॥

अंतहपुरे निस इक्क१ सुपहु लालन बडसस्सुव ॥
रान रतन रानी सु हड्ड६१ राजहिं भाखतहुव ॥
तीरनकरि लाल तुम सुनैं मारत गुरु१२ सिंहन ॥
हमकों पिक्खन हौंस१३ मन्नि असमान१४ कृत्य मन ॥
सुद्धांते१५ लखन जँहँ संभव तँह सु हलायो तत्थ हरि१६ ॥
सुनि भूप कहिय दूजी निसा अप्प लखहु हत द्विरदअरि१७ ॥ ११ ॥
दूजो२ आवत दिवस भूप लखि उचित कज्ज भुव ॥
बरजत तिन्हँ बुंदीस हठी खातहि दिवातहुव ॥

१सूर्यमल्ल॥ ॥२आदि३साध्य ॥३॥ प्रमारों के४घर ॥७॥ ५शाला. दोनों६बहिनों को अमरसिंह पीहर लेगया ॥ ८ ॥ नवीन७उत्सव करके ॥ ६ ॥ ८बहिनाई. शिकार९आदि. तेरह१०दिन तक उत्सव किया ॥ १० ॥ ११ जनाने में १२बडे सिंहों को तीरों से मारते सुने हैं सो हमको देखने की१३चाह है १४जिस के समान दूसरा कोई कार्य नहीं मानकर१५जहां जनाने लोगों का देखना हो सके तहां१६सिंह को१७सिंह का वैरी ॥ १२ ॥ १८ससुराल के लोगों के मनाक

सो इक१हि निस समय बंधि जमदाढ़२ गइढो ॥
इक१ कटार चाप इक१ द्विरगुन चउ४ सर जुत दिढो ॥
पठई निहोरि रानीहु पुनि जँहँ पति तँहँ अमदा जनन ॥
मचि संप्रयोग४ दंपति२ मिलत मकरकेतु५ छल्लिय मनन ॥ १२ ॥
कंठीरव६ तिहिंकाल हनन सैरिभ७ आवतहुव ॥
सह रति आसन सुपहु मर्द८ गोधि९ सुं पावतहुव ॥
उछटि नटीवट१० उडत परचो नाहर जिनु आनन ॥
तिम अंतहपुर१२ तियन किन्न संगति दग१ कानन२न ॥
सीसोदराज रानिय सहित समय निछावरि किय सबन ॥
आयउ बहोरि बुंदिय अधिप प्रामारिय जुत निडरपन ॥ १३ ॥

दोहा ॥

जो नृप बडसस्सूहु जब, गय अवसर निज गेह ॥
कबहु रात हनि सिंह किय, उच्छव१ दर्प२ अछेह ॥ १४ ॥
सुहि अवरोधहु रति समय, बदत विकत्थन१४ वत्त ॥
प्रामारिहु हसि रीति पटु, अक्खिय पिय अनुरत्त ॥ १५ ॥
तरु सिर रहि लै कर तुपक, सिंह हनत जन सर्व ॥
कीरति लहत विसेस करि, गहत तेहु नन गर्व ॥ १६ ॥
स्वमुख कित्ति१ अपकित्ति२सम, इम जताइहि चास ॥
सुरतासन सर सिंह बध, कह्यो सकल पतिपास ॥ १७ ॥

॥ षट्पात् ॥

करने पर बुन्दी के हाडी राजा ने अपने पहनने को चहा छुरवाया १ भैंसे को बाँधकर. दो २मत्यंचावाला ३.स्त्रियों ने वारंवार नमस्कार रानी को राजा के पास भेजी ४ मैथुन ५ कामदेव ॥ १२ ॥ ६ सिंह ७ भैंसे को मारने के लिये आया सो उस मैथुन के आसन पर स्थित हुए राजा ने १० उस सिंह ९ ललाट में ८ तीर लगाया ११ नटनी के बंद के समान; अथवा नटनी की सी उछलकर १२ जनाने की स्त्रियें सुनती थीं सो ही १ दृष्टि से दे ॥ १४ ॥ १४ झूठी प्रशंसा ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

पिंड दुव २ रु इक १ प्रान रान १ ढक्कुसुत २ रक्खिय ॥
यातैं प्रात उदंत एह सचिवहि नृप अक्खिय ॥
महिपहिँ पूरनमल्ल कहिय स्मृत जनकवैर करि ॥
बन्यौं ध्रुवहि व्यभिचार प्रकृति नारिन निलज्ज परि ॥
स्वामिनीसौं हु नटस्यो सु सठ पिक्खहु खल अपराध पहु ॥
मैं सुनी अन्य द्वारहु कुमति वृजिन हहु१८यह किन्न बहु।१

॥ दोहा ॥

जिम दे वसु नाजर जनन, प्रकटि विजन सुहि पाप ॥
अनृत किन्नौं मन रानकैं, यह मिथ्या अभिसापँ ॥ १९ ॥
वत्त जु निस रानिय बदिय, सोहि बनिय हिय सूल ॥
हित १ सिक्खहु भावी अहित २, करैं नियति प्रतिकूल ।२०।

॥ षट्पात् ॥

मारन नृप रविमल्ल १८८।१ रान तब पिहितैं बिचारिय ॥
भानु१६४।२ सुकवि सुहि भेद निपत सुनि स्वामि निवारिय ॥
कहिय रान जिन करहु भानु १६४।२ कवि तुम विरोध भ्रम ॥
जुत तिय बुंदिय जात हितहि वर्द्धन हहु १ रु हम २ ॥
जो होइ द्रोह तो स्त्रीजनन क्रमन बनैं अरिगेह किम ॥
संकहु न अप्प उलटी समुझि अग्गहु आवन१जान२इम ॥२१॥

॥ दोहा ॥

पिता का वैर१याद करके अपने२स्वामी की स्त्री से भी वह मूर्ख नहीं टला३पाप ॥१८॥*नाजर लोकों को धन देकर५एकान्त में. राणा के मन में सत्य करादिया इस७भूठे दोष को ॥१९॥ ८हित की शिक्षा को भी उलटा ९भाग्य आगे आने वाले समय में अहित कर देना है॥२०॥१०छाने. भानु नामक११चारण ने१२निश्चय सुनकर अपने स्वामि को१३मना किया. विरोध होवे तो शत्रु के घर में स्त्रियों सहित कैसे१४जाना होसक्ता है ॥ २१ ॥

---

* मेवाड़ के महाराणाओं के यहां रावल बापा से लेकर इस समय पर्यन्त कभी नाजर नहीं रक्खेगये, यह इतिहास बुन्दीवालों का कपोलकल्पित है सो आगे लिखाजावेगा ॥

ढक्कुसुत अक्खिय ढर्‌यो, कवि बय जँहँ मतिकज्ज ॥
*वार्द्धक बस तातैं बदत, इम†अलीक भ्रम अज्ज ॥ २२ ॥
प्रभु निजकवि कुल परपुरुष, इम भुलाइ अतिमान ॥
सझिय रान १ प्रमारि २ सह, पुरबुंदिय प्रस्थान ॥ २३ ॥
प्रामारिहु अक्खिय पतिहिं, बिधि कछु सुनि सु बिरोध ॥
हित जो तो लीजैं हमहिं, बढन दु २ दिस हित बोध ॥ २४ ॥
सोहु बत्त सुनतहि सचिव, मंतु सु हढहि मनांइ ॥
चूरन रानहिं लै चल्यो, पूरन छिद्रहिं पाइ ॥ २५ ॥
कहिय रान प्रामारिकँहँ, करहु न भ्रम जिम कूर ॥
ससुख मिलहिं तुम१सन स्वसा२, सहू हम१सन सूर२ ॥२६॥
इम भुलाइ प्रामारि यह, सब ध्वजिनी सजि संग ॥
आयो निज सीमा अवधि, रचि पूरन छल रंग ॥ २७ ॥
संभर आयो रान सुनि, बल समेत धनबांट ॥
लंघिं समुख गो इक्क १ लहि, घन हित नृप गिरि घाट ॥२८॥
भ्रात सहँस १ सत्तल २ उभय २, बलि पंचायन १ बेन २ ॥
भट १ रु सचिव २ ए चउ ४ भये, संगि इतर रुकि सेन ॥ २९ ॥
कोउ न आवहु नृप कहिय, ए चउ ४ तदपि अभीत ॥
पहुँचे वढि बुंदीसपँहँ, फैलावत जस फीत ॥ ३० ॥
इन च्यारि४न जुत हड्ड ६१ ईन, सो पंचम ५ निज सीम ॥
मुदित जाइ रानहिं मिल्यो, भूधव सत्रुन भीम ॥ ३१ ॥
चोरी जाजम १ चहँरि२न, प्रसरि बिछोनन पंति ॥

*बूढा होगया जिससे †मिथ्या भ्रम करता है ॥२२॥ १हे प्रभु रामसिंह ॥२३॥ ॥२४॥ उस२अपराध को राणा का३नाश करने के लिये पूर्णमल छिद्र पाकर ले चला॥२५॥ तुम्हारी ४वहिन तुम से सुख पूर्वक मिलेगी और हमसे वीर ५ साहू मिलेगा।२६। ६सेना ।२७।७चहुवाण८सेना सहित९धनबांड़ा नामक ग्राम में पर्वत और घाटे १०लांघता हुआ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ११ समूह १२ ॥ ३० ॥ हाडों का ११राजा १३ भूपति ॥ ३१ ॥ १४ चद्दर से ढकीहुई

हुलसि मिले उत्तरि हयन, भूप दुव २ हि*हित भंति ॥ ३२ ॥
रानी अक्खिय रानमति, मिलि अवसर निसमाँहिं ॥
आत सम्मुख बुंदीस इक१, निज१पर२भावकि नाँहिं ॥ ३३ ॥
क्रम जिमजिम रानीकरैं, बहिनीपति नुति वत्त ॥
तिमतिम रान बिलोम तकि, मन्नैं मंतु प्रमत्त ॥ ३४ ॥

षट्पात् ॥

सो आगम मत सोहि प्रकटि रानहु पूरन प्रति ॥
अरिपन तास न अधिक मन्नि पुनिपुनि बोधन मति ॥
सीमा पिक्खन स्वीय दिवस दुवर२ देर दिखावत ॥
आयउ बुंदिय अधिप अतुल राजस उफनावत ॥
नृप रान सीम उत्तर४ निरखि बुंदिय मग पूरब१ बलित ॥
मंगली ग्राम आवत महिप हड्ड६१धरिय पुनि मिलन हित॥३५॥

दोहा ॥

अक्खिय तँहँ सामंत१८७१२ इम, सम्मुह जाइ जिम सीम ॥
पुनि चिंतहु तो हमहिं पथ, भंजि पधारहु भीम ॥ ३६ ॥
भूपहिं इम न दयो भटन, जिमतिम सम्मुह जान ॥
आयो बुंदिय अपर२ अहँ, रचि दल बिस्तर रान ॥ ३७ ॥

षट्पात् ॥

लगि मिलान मंगलिय रत्ति प्रातहि प्रयान रचि ॥
बुंदिय आवत बेर महत मंह तब इतैंहु मचि ॥
सब अनीकैं निज सज्जि पहुँचि गोपुर बुंदीपति ॥
पुरमैं करत प्रवेस मिल्यो रानहिं उदार मति ॥

---

*स्नेह की रीति से॥३३॥ अपनी बहिन के पति की१स्तुति की वार्ता २अपराध ॥३४॥ आने की सलाह पूर्णमल्ल को कहकर ३रजोगुण बढाता हुआ पूर्व दिशा को ४फिर तब ५मांगली नामक ग्राम में ॥३५॥ हमको ६मारकर जाओ ॥३६॥ दूसरे ७दिन विस्तार की ८सेना रचकर ॥३७॥ ९मांगली में रात्री को मुकाम रहकर बडा १०उत्सव हुआ. अपनी सब ११ सेना सजकर १२ शहर के द्वार

सम हय लगाइ*उभयरहि सुपहु लखत नगर सोभा लखित ॥
†हेरंबबेल जँहँ तँहँ हुलसि किय मुकाम डेरन‡कलित ॥३८॥

दोहा ॥

आइ§निलय पठयो अधिप, सब स्वागत समुपेत ॥
अह दूजेर रानिन उचित, हुव मिलाप अति हेत ॥ ३९ ॥
रानी महलन रानकी, आवत डोढी अंत ॥
आइ समुख लिय माँहिं वह, सस्सू१ बहुरन सुमंत ॥ ४० ॥

गीतिः ॥

क्रम झल्ली१८८।१कछवाही१८८।२,तिम चंद्राउति१८८।पुत्रप्रसू तीजी३
सह प्रामारि१८८।४सराही,सस्सू१८७।३अनुगते मिलितउ४सवत्तीं४१
जोरि करन नृप जननी, स्होरि१८७।३ प्रसन्न रान रानीसौं ॥
तँहँ बुल्ली हितँतननी, पावन हुव गेह रावरे प्रविसैं ॥ ४२ ॥
निज गृह आवंत नतिही, करन सदाचार निगम१लोकर२कहैं ॥
यातैं स्वागत अतिही, बिनम्र सब्हि रु समाज सब बैठी ॥ ४३ ॥
भगिनी मंदिर भगिनी, जाइ बहुरि काल व्है बिजन जुगरही ॥
निजता१ परता२ न गिनी, कृत्य परस्पर रहस्य कहनलगी ।४४।
रतनेस रान रानी, जिहिंतिहिं बिधि हइ६१ हनन मति जानी ॥
पै इम नहिँ पहिचानी, मम सिर अभिसाप आनि यह मानी॥४५॥
अनुजा१ स्वसा सन अक्खिय जेठी१ भगिनी बिरोध बत्त जथा ॥

पर *दोनों राजा बराबर दोनों घोड़े लगाकर. जहां पर अप †गणेश बाग है तहां पर ‡विदित ॥ ३८॥ §महलों में आकर राजा ने स्वागत सहित सत्कार भेजा और दूसरे दिन रानियों का उचित मिलाप हुआ ॥३६॥४०॥ सासू के १पीछे चलनेवाली चारों २ शोकें मिलीं ॥ ४१ ॥ ३ स्नेह फैलानेवाली ४ आप के प्रवेश करने से ॥४२॥ अपने घर में आवै तब प्रतिदिन श्रेष्ठ ही आचार करना ५वेद और लौकिक दोनों कहते हैं इस कारण आने का अत्यन्त आदर करके विशेष नम्र होकर स्त्रियों की सभा में बैठीं ॥४३॥ बहिन के महल में बहिन जाकर ६ एकांत में गुप्त कार्य कहने लगी ॥ ४४ ॥ मेरे ऊपर ही ७झूठा दोष ॥ ४५ ॥ ८ छोटी बहिन से

पूरनमल्ल*बिपक्खिय, सिखये स्वामीहु बैर बुद्धि बढ़ैं ॥ ४६ ॥
यातैं लालहिं अक्खहु, ढक्कूसुत मंत्र रान बुद्धि ढर्‌यो ॥
रहि बुद्धि जतन रक्खहु, अग्ग जिम न मिलहु भुल्लि†एकाकी॥४७॥
पुनि नृप जननी पासहु,‡प्रांजलि लहि सिक्ख सिबिर यहपत्ती ॥
तिम रत्ति भेद तासहु, प्रामारी१८८।४हड्ड६१भूप१८८।१प्रति प्रकटयो
महिप सु द्रोह न मान्यौं, सूचित किय प्रात मात छल सोही ॥
जब कछु संसय जान्यौं, लखि कारन कछु न सोहु मेटि लयो ।४९।
सुर्जन१८९।१मातहु सोही, कोउक बिधि चित्रकूट जानि कथा ॥
दल पठयो छल द्रोही, भासैं सीसोद करहु न भरोसो ॥ ५० ॥
महिपति तब कछु मन्नी, पैं हेतुं बिहीन चित्त न प्रमानी ॥
छलघातिन मति छन्नी, नहिं जानैं सुर१हु तत्थ को नर२तो ।५१।
तब तीजे३ दिन सेना, महिपति प्रासाद बुद्धि रु जिमाई ॥
अप्प१हु तदनु अनेना, भोजन सह रान२ मुख्य पंति भंज्यो ।५२।
पोलीं नृप१८८।१ प्रसरावैं, भरि ताविच पललं आदि जो भावैं ॥
पुट्टलिं तस करि पावैं, रदकर्त्तित घेर सेस रहिजावैं ॥ ५३ ॥
असन करैं संभर१ इम, साधारन रीति रान२ सुहिं सद्दैं ॥
जिम्म उठे रुचि दुव२ जिम, लै१दै२ तंबोल इक्क१ पीठि लसे।५४।
सीसोद१ रु साकंभर२, जिम्मैं इक१ थाल द्वै२हि नृप जबही ॥
अंवरोध जनहु तब अर, भिरि जालिन रंध्रं गूढ लखत भये ।५५।

पूर्णमल्ल*शत्रु के सिखानेसे।४६।†अकेला ।४७।‡हाथ जोड़े हुए सीख लेकर डेरों में १गई २ रात्री में ॥ ४९ ॥ ४८ ॥ ३ पत्र भेजा ॥५०॥ परन्तु बिना ४ कारण ५ छलघात करनेवालों की छल बुद्धि को देवता भी नहीं जानैं ६ तहां मनुष्य तो क्या जानैं ॥ ५१ ॥ ७जिस पीछे ८ निर्दोषी मुख्य पंक्ति में राणा के साथ भोजन९किया ॥ ५२ ॥ राजा सूर्यमल्ल १० फुलका परुसाकर उस में ११ मांस आदि जो रुचि होवे वह भर कर उसकी १२ पोटली करके खाता है जिसका घेरा १३दांतों से काटा हुआ बाकी रहजाता है ॥५३॥ पानबीड़ी के दे कर एक१४आसन पर बैठे ॥ ५४ ॥ १५ जनाने लोक भी १६ जालियों के

लखि जिम्मत कहन लगी, रट्ठोरि१८७।३सुनाइ सब रीति*उभैर॥
जुगर असनहु भिन्नजगी, इतैं नृपति रीति१ सिंहरीतिर इतैं ।५६।
†संगति बिनु पसु जैसैं, मोसुत भोजन ‡असाधु मैं मन्न्यौं ॥
अपटु१ तजैं यहँ अैसैं, बहुदिन जो संगति रान बनैं तो ॥ ५७ ॥
कछु विधि सोहु कहानी, सिबिरागत रान रैंन सुनिलीनीं ॥
वा महलन पुनि आनी, रानी प्रामारिके जनन जानी ॥ ५८ ॥
यामैंहु भेद अैसैं, महीप रतनेस व्यंजना मन्नी ॥
कुहकनके हिय कैसैं, पैसैं अनुकूल वत्त जँहँ परधी ॥ ५९ ॥
तिहिँ निस भ्रम सु बढातहि, सह पूरनमल्ल सोहि पुनि संधाँ ॥
पक्कोठानि प्रभातहि, चढि सिंह मृगव्य हड्ड हननचह्यो ॥ ६० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे पञ्चम ५ राशौ वी तिहोत्रवसुधेश्वर ६ बीजपवर्णानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसूर्यमल्ल १८८।१ चरितेसर्वशस्त्रसाधनसातिरेकहड्डेशबाणविद्याव्यतिकरविशेषप्रशंसा प्रापणा १, सूचितशितिकण्ठस्वप्नपाक्षिकहेतुपुरस्सरबुंदीन्द्रवनविहा

छिद्रों में छाने देखने लगे ॥ ५१ ॥ *दोनों ओर की भोजन करने की रीति सबको कहने लगी कि महाराणा राजाओं की रीति से जीमते हैं और राव राजा सूर्यमल्ल सिंह की भांति जीमते हैं ॥ ५६ ॥ बिना †साथ पशु के समान मेरे पुत्र का भोजन मैंने ‡बुरा समझा है. यह १ मूर्ख ॥ ५७ ॥ २ डेरों में आकर महाराणा ३रत्नसिंह ने सुन ली ॥ ५८ ॥ इसमें भी ४व्यङ्ग्य ही समझा ५ जालसाजियों के मन में ६ पराई बुद्धि की अनुकूल बात कैसे घुसै ॥ ५९ ॥ उस रात्री में भ्रम बढाकर पूर्णमल्ल के साथ उसी ७प्रतिज्ञा को पक्की करके प्रभात ही सिंह की ८ शिकार चढकर हाडा को मारना चाहा ॥ ६० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों से बुन्दीनरेन्द्र सूर्यमल्ल के चरित्र में सब शस्त्रों के साधन के अतिरिक्त हड्डेश का बाण विद्या के व्यसन में विशेष प्रशंसा पाना, सूचना किये हुए महादेव के स्वप्न में पक्षपात वा शिकार के कार

ख्लब्धकृतखुसुखुनामशरसंहितशराधिसंरक्षितभल्लविशेषनित्यावसर सदासमर्चन २, श्रीनगरराजप्रमारसारङ्गदेवकुमाराऽमरसिंह१ चित्र कूट१बुन्दीप्राक्कालपरिणायितस्वभगिनीयुग्म२ पितृपरस्त्यप्रत्यानयन ३,राजगौरीतृतीया ३गमोत्सवनिमित्तजामातृमिहिरमल्ल१८८।१श्री नगरसमाकारण४,विविधविहारादिविनोदविलासिकुलीकाथितकौ तुकचिकीर्षुत्वश्वादात्तणमार्गणमृगेन्द्रमारणसमुद्युक्तसहधर्मिणीस हितगुप्तनिखातसमुपविष्टस्वनुष्ठितस्मरसम्प्रयोगासनसुरतसानुकू लस्थितिसमाकृष्टमौर्वीमार्गणबुन्दीशसमागतसिंहसमाहरण५,दृष्ट तदद्भुतकर्मसमस्तशुद्धान्तसम्बन्धिनीजनसम्भूतावसरजामात्रा १ दि सम्बन्धसम्बद्धपृथ्वीशोपरिमहर्घसमुचितसमुत्तारण ६, तदनन्तरस- पत्नीकहड्डाधिराजमिहिरमल्ल १८८।१ स्वस्थानीयसमागमन७, परि ग्रहप्राप्तशीर्षोद्दपत्नीरहोरमणावसरमृगेन्द्रमारणशौर्यस्वयंप्रशंसक स्वामिप्रतिषेधोपदेशपुरस्सररहोरससहधर्मिणीसमभियुक्तयथास्थि तबुन्दीशबाणावेधवनराजव्यापादनविक्रमविशेषवर्णन८,तदीर्ष्याता

ण बुन्दी के राजा का वन में फिरते हुए को खुखा नामक भाल मिला जिसके तीर लगाकर भाथे में रखकर नित्य पूजन करना, श्रीनगर के राजा पँवार सा रङ्गदेव के कुमर अमरसिंह का पहिले समय में चित्तोड़ और बुन्दी में व्याही हुई अपनी दो बहिनों को पिता के घर में पीछी लाना, प्रमारराज का गुन गौरी का उत्सव आने के कारण जमाई सूर्यमल्ल को श्रीनगर बुलाना, नाना प्रकार के विहार आदि आनन्द भोगने में कौतुक देखने की इच्छावाली वध सासू के कहने से रात्री के समय बाण से सिंह को मारने में उद्युक्त विवा हिता स्त्री के सहित गुप्त खड्डे में बैठेहुए कामदेव का अनुष्ठान करके मैथुन क रने के आसन पर सुरत में अनुकूल स्थित प्रत्यंचा खींचकर बाण से बुन्दीश का आयेहुए सिंह को मारना, यह अद्भुत कार्य देखकर समस्त जनाना सम्बंधि लोगों का समय होने पर जमाई आदि सम्बन्धों [illegible]ी समृद्धि से राजा पर बहुमूल्य उचित नजराना करना, जिस पीछे स्त्री सहित हड्डाधिराज सूर्यमल्ल का अपने घर आना, शिषोद की स्त्री का घर आकर पति के साथ रमण करने के समय सिंह को मारने की वीरता को स्वयं प्रकाश करनेवाले स्वामि के प्र तिषेध से उपदेश पूर्वक विवाहिता स्त्री के साथ रत समय यथास्थित बुन्दीश

प्रताम्यमानप्रातरुत्थितराणातदुदन्तस्वद्वितीय २ देहसचिव्यपौर्विक १ पूर्णमल्लप्रबोधन ९, सङ्गताभीष्टच्छिद्रसन्तोषितसौविदल्लादिसहायसमारोपितस्वकीयस्वामिनीस्वैरत्वढक्कसुतराणामनएतदभिशापसत्यत्वसमर्थन १०, महीपामिहिरमल्ल १८८१ मारणमनस्कबहिर्दर्शितभानु १६४१ सुकविवारणानुकूल्यसूचितसपत्नीकसमागमसौहार्दसारल्यशीर्षोदराज्यबुन्दीदङ्गागमन ११, श्रुतधनवाटग्रामतदागमप्रसभस्वपुरस्थापितसमस्तसैन्यैकाकि १ नरेन्द्रसाहससासिद्धपश्चादनुगतसुभट १ सचिव २ चतुष्क ४ सङ्गतराणासहस्वसीमसम्मिलन १२, निवेदितैकाकि १ बुन्दीशसीमागमसौहार्दसातिरेकसमार्जनराज्ञीप्रामारीत्त्वणादात्त्वणप्रबोधनप्रतीपपौर्विकपूर्णमल्लपापाकृतोपोद्वलितराणातद्वचनवेणीविचालितवेशाग्णिस्वभावसमासादन १३, बुन्दीपुरःपुरःप्रस्थापितपृथ्वीशप्रभाकर १८८१ दृष्टोदङ्गिदङ्पदेशादिलङ्घया २ नन्तरराणामङ्गलीग्रामागमसमयहङ्डेशापितृव्यसामन्त

का बाण से बेधकर सिंह को मारने के पराक्रम का विशेष वर्णन करना, उस ढ्व के ताप से तपायेहुए राणा का प्रभात में उठकर उस वृत्तान्त को अपनी द्वितीय देह हुए सचिव पूर्विया पूर्णमल्ल को कहना, इच्छा पूर्वक छिद्र मिलजाने के साथ नाजर आदि को भन देकर सहाय में खड़े करके अपने स्वामि की स्त्री के स्वतन्त्रपन में ढक्कू के पुत्र का राणा के मन में इस झूठे दोष की सत्यता का समर्थन करना, मन में राजा सूर्यमल्ल को मारने और बाहर से भानु नामक चारण के रोकने से अनुकूल स्त्री सहित सुख पूर्वक मित्रता से सरलता की सूचना करनेवाले शीर्षोद राज का बुन्दी नगर में आना, उन का धनबाड़ नामक ग्राम में आना सुनकर हठ पूर्वक अपने पुर में सब सेना को रखकर अकेले राजा का साहस बढ़ाकर पीछे से साथ जानेवाले सुभट और सचिव चारों के साथ राणा से अपनी सीमा पर मिलना, बुन्दीश के अकेले आने की मित्रता और सीधापन की अधिकता के निवेदन से राज्ञी के समग्र राणी प्रामारी के समझाने के विरुद्ध पूर्विया पूर्णमल्ल की पाप की चेष्टा से जलतेहुए राणा का उस के वचनों के प्रवाह से चलायमान होकर चलना है धर्म जिस का ऐसे स्वभाव का साधना अर्थात मन को चंचल करना, बुन्दी को प्रस्थान करनेवाले राजा सूर्यमल्ल का उत्तर दिशा को देखने के दो

१८८।१ससाहसपुनर्गमिजिगमिषुनिजनृपनिवारण॥१४,द्वितीय२दिन गोपुरमिलितपुरप्रविष्टधरणीधवजकुटरशिविरावधिसमागमसमनन्त रप्रासादप्रत्यागतधराधवमिहिरमल्ल १८८।१तत्स्वागतसमुचितसम्भा रसम्प्रेषण॥१५,द्वितीय२दिनराज्ञीजनसम्मेलसमुत्सुकप्रमारीप्रासाद प्रवेशसमयसम्मुखागतस्नुषाचतुष्क४सेव्यमानपृथ्वीशप्रसूराष्ट्रकूटी सनति१सत्कृति२शुद्धान्तसमज्यातत्समानयन१६,स्वोपरिकल्पिता भिशापबोधवर्जितसमवगतसहसहजारस्वामिसञ्जिहीर्पुस्वामिस्वान्तस म्भूतावसरकनिष्ठभगिनीभवनप्राप्तप्रमारीरहस्तदाकूतप्रकाशन१७ नृपजननीसम्मतप्रासादातिवाहितदिवादिष्टप्रमारीप्रतिगमनानन्तर- तदनुजाराजकुमारी १८८।४ तदाकूतकेलीनिलयनिशानिशलाक नृपनिवेदन १८, रहोराज्ञीकथन १ प्रातर्जननीतत्सूचन २ चित्रकूट स्थसुर्जन १८९।१ प्रसूगुहिल्लपुत्रीजयवती १८८।१ प्रेषितपत्रवाचन३

दिन पीछे राणा का माङ्गली ग्राम में आने के समय हड्डेश के काका आर्जुन तसिंह का हठ पूर्वक फिर जाने की इच्छावाले अपने राजा को रोकना, दूसरे दिन शहर के द्वार पर मिलकर पुर में प्रवेश करके दोनों राजाओं का डेरों तक बराबर के अंतर से समागम करके राजा सूर्यमल्ल का महलों में पीछा आकर उसके स्वागत के उचित सामग्री भेजना, दूसरे दिन राणियों से मिल ने की इच्छावाली प्रमारी के महलों में प्रवेश करते समय सन्मुख आईहुई पुत्र की चार स्त्रियों से सेवन की हुई राजा की माता राठोड़ी का नम्रता पूर्व क सत्कार करके जनाने की सभा में उसको लाना, अपने ऊपर कल्पना किये हुए दोष को नहीं जानकर अवज्ञा के साथ छोटी बहिन के पति को मारने की इच्छावाले पति के मन में वह इच्छा उत्पन्न हुई जानकर अपनी छोटी बहिन के महल में जाकर प्रमारी का उस चेष्टा को प्रकाश करना, राजा की माता की सलाह से महलों में दिन बिताकर आज्ञा दीहुई प्रमारी के पीछे जाने के अनन्तर उसकी छोटी बहिन राजकुमारी का उसके इशारे की क्रीड़ा करने के घर में रात्रि के समय एकांत में राजा से निवेदन करना, रत समय में राणी का कहना और प्रभात में उस बात को माता को सूचित करना और चि त्तौड़ से सुर्जन की माता गुहिल पुत्री जयवती के भेजेहुए पत्र को बांचकर

विचिकित्सितबुद्धिमर्ममृगयमाणामहीपतत्कारणाऽप्रापणा १९, तृतीय ३ दिन सहसैन्यसमाहूतशीर्षौघ १ प्रासादपङ्क्तिपरिवेशासिद्धिसमयसहभोजनासीनशाकम्भर १ कथितक्रमप्रत्यवसान २०, शुद्धान्तदृष्टहड्डाहृतान्तेमनाभ्योपपोट्टलराष्ट्रकूटीसान्तर्व्यङ्ग्यभूपद्वयरभुक्तिसङ्गता १ सङ्गत २ भावसूचन २१, शिबिरसमागतश्रुतैतदवरोधोदन्तप्रतीपसचिव १ सहितराणा २ श्वोमृगेन्द्रमृगयामिषहड्डेन्द्रहननबाढविचारणं २२ त्रयस्त्रिंशो ३३ मयूखः ॥ ३३ ॥

आदितोऽशीत्युत्तरैकशततमः ॥ १८० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

वैतालीयम् ॥

पठयो कहि रान प्रातही, सुहि मत संभरपै सिकारको॥
खेला इहिँ अद्रि रंपातही, सिंहन मारनकी सदा सुनैं ॥ १ ॥
अप्पन मिलि अज्ज याहितैं, चढि कहुँ संभव होइ तो चलैं ॥
अतिवल बहु केसरी इतैं, कुंजरदारक यों सबै कहैं ॥ २ ॥
सुनि नृप पठये सिकारकें, भेदी जन चहुं ४ ओर भाखियौं५॥
त्रिक्खहु ढिग जो अबारके, अवसर सिंह बलिष्ट व्है इहाँ ॥ ३ ॥
विचरत झरिग्राम बागमैं, त्रिकँरुघो तिन इक केसरी बली ॥

सन्देहवाली बुद्धि से मर्मको हेरनेवाले राजाको उसका कारण नहीं मिलना, तीसरे दिन सेना सहित बुलायेहुए महलों में पंक्ति में परुसगारी की सिद्धि के समय साथ भोजन करने के आसन पर चहुवाण का कहेहुए क्रम से भोजन करना, जनाने से देखेहुए हाडा से मंगाईहुई थानगियों में फुलकों की पोटली और राठोड़ी का व्यंग्य के साथ दोनों राजाओं के भोजन में सङ्गत और असङ्गत भाव की सूचना करना, डेरों में आकर उस जनाने के वृत्तान्त को सुनकर उलटा सचिव सहित राणा का अपनी सिंह की शिकार के मिष से हड्डेन्द्र को मारने के दृढ विचारने का तेतीसवां ३३ मयूख समाप्त हुआ ॥३३॥ और आदि से एक सौ अस्सी मयूख हुए ॥

१ चहुवाण को. उम रवैन में २ क्रीड़ा (शिकार खेलना) ३ प्रसिद्ध है ॥ १ ॥ ४ सिंह ५ हाथियों को मारनेवाला ॥ २ ॥ ६ देरी नहीं करके ॥ ३ ॥ देखा

रानहिँ मृगयानुरागमैँ, तकि दोरे प्रमदी करोल ते ॥ ४ ॥
कछु दिवसनतैँ सु केहरी, मनुजन चाखिख लग्योहि मारिबे ॥
तिहिँदिन लखि ताहियाँ त्वरी, उपवनमैँ रु भज उमंगसौँ ॥ ५ ॥
पठई अरज़ी नृपालपैँ, जनमारक भ्फरिवेल अज्ज जो ॥
क्रमनौँ दिनमध्य कालपैँ, तँहँ जो होइ बनैं सिकार तो ॥ ६ ॥
बुंदीसहु अप्प वाहिनी, सुनि रिपुभाव समस्तही सजी ॥
गढगढ बिजयाचगाहिनी, दुर्जन कोप कृसानु दाहिनी ॥ ७ ॥
जवही चित्तोरतैँ जथा, दल लिखि सुजन १८९१३ की प्रसूदयो ॥
तबतैँ नृप बिस्मई तथा, रानाँढिग अवधानतैँ रहे ॥ ८ ॥
यातैँ सजिकैँ अनीकिनी, पठई केहरि सुद्धि रानपैँ ॥
गरमी नहिँ जाइ जो गिनी, हरि हनिवे दिनमध्य हंकिये ॥ ९ ॥
सुनि रानहु स्वीय सूर जे, सब पृतना सह सीघ्रही सजे ॥
पन१ रन२ मन३ गाढ४पूर जे, सोलंखी भट सल्ह१सूर२से ॥१०॥
प्रामारन बंस पट्टवे, बिंझोलीस१ असोक२ से बली ॥
थित मन कुविरोध थट्टवै, मच्छरि पौर्बिक१ पूर्णमल्ल४से ॥११॥
तिम सज्जित वाहिनी तहाँ, क्रमि दुवबुन्दिय१चित्रकूट२की ॥
जुग२ धाव१वापिका जहाँ, पूरव१ पंथ मिले धराधनी ॥ १२ ॥
रविमल्ल१८८१७रु रैन२भीतिसौँ, मिलि पुच्छी कुसल माँहिमाँहि त्यौँ

राणा को १ शिकार की प्रीति से देखकर २-हर्षयुक्त ३शिकारी [शिकार की खबर लानेवाले] ॥ ४ ॥ ४ शीघ्रता करनेवाले, भ्फड़बेली नामक ५.बाग में दे खकर ॥ ५ ॥ ६ मनुष्यों को मारनेवाला ७ दिन के मध्यान्ह समय में चलना होसके तो ॥ ६ ॥ अपनी ८ सेना. गढ गढ पर ९विजय का थाह लेनेवाली कोप रूपी १० अग्नि में शत्रुओं को जलानेवाली ११पत्र लिखकर सुजन को १२ माना में दिया १३सन्देह रखनेवाला १४सावधानी से रहता था ॥८॥ १५ सेना सिंह की १६खबर राणा के पास भेजी १७सिंह को मारने के लिये ॥९॥१० १८बीजोलियां का पति १९ खोटा विरोध करनेवाला पूर्विया चहुवाण ॥११॥ २० सेना २१[illegible] [illegible] की बावड़ी के पास ॥१२॥

पगि बाहिर१ मोघ प्रीति२ सौं, अंतर१ रान धरैं अरातितां२ । १३ ।
सम बाजिन जोरि संक्रमैं, अंकित[3] चामर१ छत्र२ आदितैं ॥
दल घन फन सेसके दमैं, न सहत भार हजारही नमैं ॥ १४ ॥
रानां१ तँहँ संभरीकं२ सौं, पुच्छिय सिंह कितीक दूरपैं ॥
अक्खिय नृप या अनीक[5]सौं, थह झारिवेल त्रि३कोस थानहैं ।१५।
रीकसौं१ नीकसौं२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
वत्तैं इम होत बेगही, पत्ते द्वै२ झारिबाग पास ते ॥
गरद्दावन[6] रीति जे गही, निजनिज सासन बाहिनी उभै२ ॥१६॥

षट्पात् ॥

पहुँचत तँहँ दुव२ पहुनँ दुव२हि बेढन पठये दल ॥
अप्प रहिय इक१ ओर थप्पि निष्क्रम संभव थल ॥
भूप बिदित छल भुल्लि स्वीयं घेरन पठये सब ॥
निजन जनाई नाँहिं तकी जुहि रान सु पै तब ॥
इम पिक्खि अलप रच्छक अधिप रान१चढ्यो ससचिव[11]२द्विरद॥
स्वामि२कों सैंन दिय तँहँ सचिव२हनन हड्ड६१ यहवेर हद ।१७।
पीलु[12]१चढत पैर[13]पीलु२ कह्यो नृपसौंहु चढन क्रम ॥
अक्खिय नृप हय१ उचित तिम न इहिं खिन तंबेरम२ ॥
इच्छत रानहु यहहि बहुरि न कहिय गज बैठन ॥
सैंय[15] दब्बिय तँहँ सचिव तुपक कर गहत गान तन ॥
अरु कहिय छत्र यहवेर अत्र तव नृपदिस फेरिय तुपक ॥
तव छाँहँ परत झभ्भक्यो तुरग तक्कन पुव्वहि काल तक ।१८।

---

१ झूठी प्रीति से २ शत्रुता ।१३। चामर छत्र आदि से ३ चिन्हित होकर ।१४। ४ चहुवाणा से. इस ५ सेना से ॥ १५ ॥ ६ घेरने की रीति ॥ १६ ॥ दोनों ७ राजाओं ने ८ घेरने के लिये दोनों सेनाओं को भेजी. अपने ९ नहीं जाने योग्य और सिंह के होने का संभव जानकर आप एक ओर रहे. बुन्दी के राजा ने १० अपने सब लोगों को ११ सचिव (पूर्णमल्ल) सहित हाथी पर चढा ।१७। १२ हाथी पर चढते समय १३ दूसरे हाथी पर चढने के लिये राजा सूर्यमल्ल से कहा. इस समय १४ हाथी नहीं है. सचिव ने १५ हाथ दबाकर इशारा किया ॥ १८ ॥

हय झझकत नृप हद्द१ दिट्ठि सीसोद२ ओर दिय ॥
तुपक फेरि निज तरफ हनन तक्कहिं साधी हिय ॥
सामंत।१८।७।१दिक स्वीय हुते कछु ढिग तिन हेरिय ॥
प्रभुदिस क्यों लिय तुपक न व्है रिपुता कहुँ नेरिय ॥
तुरगहिं उडाइ तक्कहिं तती झटहि टारि लैहैं झटकि ॥
इत सावधान होतहि अधिप खलन रह्यो अंतर खटकि ॥१९॥
कछु हय झपट कराइ बाम२ टारि रु दक्खिन२वानि ॥
नृप अक्खिय अब निकट मृगप[3] आगम महिपन[4] मनि ॥
इहिं अंतर आराम[5] पिट्ठि तासे[6] बजि पद्धर[7] ॥
बिरचि हक्क रन बढत कढ्यो करिअरि[8] धुत[9] केसर ॥
प्राकार कुद्दि परतहि पुहवि दुव२ दिसलखि हुव दल दुगम ॥
त्तवँ[10] चरम[11] अंग बैठक लहि रु समुह३ अल्प जाने सुगम ।२०।
बत्तहिं[12] बदत बिलंब रान तहँ तुपक प्रहारिय ॥
उडि टप्पा मुख अग्ग उपल[13] गुटिका[14] उच्चारिय ॥
कंकर लग्गत काय धप्यो[15] अभिमुख[16] केसरधर[17] ॥
भग्गो सामज[18] भीत खाइ बलिबलि[19] अपष्ट[20] खर[21] ॥
व्है अग्ग कुंत[22] बीरन हनें तंबेरम[23] न रुक्यो तदपि ॥
धसिगो समीप गिरि घन धवन[24] जवन[25] स्रवन सह चीह जपि ।२१।

---

१ समीप २ खींचकर ॥ १९ ॥ ३ सिंह का आना ४ हे राजाओं के मुकुट ५ बाग के पीछे ६ तासे (वाद्य विशेष) बजकर ७ सीधा ८ सिंह गर्दन के केश ९ धुनकर बाग का कोट कूदकर भूमि पर गिरते ही दोनों ओर दोनों दुर्गम सेना देखी तब १० त्वचा मात्र ११ पिछले अङ्ग से बैठा रहकर सन्मुखवालों को अल्प और सुगम जाने ॥२०॥ यह १२ बात कहते बार लगती है जहां पर राणा ने बन्दूक चलाई १३ पत्थर का १४ टुकड़ा उडा, अथवा उस गोली ने एक पत्थर उडाया १५ दौड़ा १६ सन्मुख १७ सटा को धारण करनेवाला. उस भय से १८ हाथी भगा १९ बारम्बार २१ तीक्ष्ण २० अंकुश खाकर २२ भाले. तो भी २३ हाथी नहीं रुका २४ धोकड़ा (धावड़ा) नामक गहन वृक्षों में २५ वेग पूर्वक चीख मारके ॥२१॥

पैठत खर[1] तरु प्रखर[2] तुट्टि कोनन हौदे तक ॥
पूरनमल्लक पंथ[3] साख साखन बंधी स्वक[4] ॥
कुंदे फटि छुटि करन गई तुपकहु दोउ रन गिरि ॥
बचे निठ्ठि आयुबल चिपे तस पिट्ठि पिट्ठि चिरि ॥
अध्वहिं[3] मिलैं न तहँ जाइ इभ चकित रुक्यो पब्बय चढत ॥
इत भूप ठहरि दिय पुब्ब इक१ बिसिख सिंह सम्मुह बढत ॥२२॥
दंती[5] भज्जत दरित[6] पँत्ति१ सब बिकल पलाये ॥
अरु पाधुन[9] असवार२ अखिल निज प्रभु पथ आये ॥
पाइन गहन प्रवेस तरुन पैठे उत्तरि तब ॥
निठ्ठिन तिन रतनेस जियत खोज्यो संपीलु[10] जब ॥
संभरी इत सु दै इक१ सर सजि पर२ संहित[11] तुरग तजि ॥
दिय समुह पैंड इक१ इक१ दुलभ भीम१ मनहु जटै२ भेट भजि ॥२३॥
नरपल[13] रसिक निसंक नरन मारक यह नाहर ॥
तस उर लागि नृप तीर कढ्यो बिलतैं दर्वीकर[14] ॥
अधिक क्रुद्ध इत आत अग्ग प्राघुन[15] नापित१ इक ॥
पग फुलाइ व्यग्रपन[16] अफल उचकत तकि त्रासिक ॥
हरि[17] हनत ताहि तिम पिक्खि पहु स्रवन पिट्ठि दै अपर२ सर ॥
गति नट मलंगि कट्टार गहि अंतक[18]१ जिम पहुँच्यो अडर ॥२४॥
पहुँचत पुब्बहि प्रान बिकल नापित[19] हुव बिधिबस ॥
न मरन तस चहि नृपति तमकि उर दिय कटार तस ॥
ताकि ढिग प्रभु तजि ताहि मृगप मारयो प्रकोष्ठ[20] मुख ॥

१कांटोंवाले वृक्षों में घुसते ही उन२अत्यंत तीक्ष्ण वृक्षों से हौदे का कोना टूट गया३मार्ग में ४तीर ॥२२॥ ५हाथी के भागते ही६डरकर७पैदल८भागे ९पाहुणों के१०हाथी सहित. दूसरा बाण११सांधकर. मानों१२जटासुर के मिलने को भीमसेन ने पांवडे दिये॥२३॥मनुष्यों के१३मांस का रसिक. बिल से१४सर्प कढै जिस प्रकार१५पाहुणों का नाई१६व्याकुल होकर त्रास देनेवाले सिंह को देखकर कूदने में निष्फल होगया १७सिंह१८यमराज के समान ॥२४॥ १९नाई मरगया सिंह के मुख में २० कटार मारा.

दहैं बाहुल्ल दारि रूपी पलकं छुर सोनरुख ॥
दूजो२ कटार बलि बच्छ दिय जो१ कहिय तस प्रान२जुत ॥
सिंहहिं गिराइ नापित स्वसत नृप लिय भुजन उठाइ नुंता२५॥
स्वसत छुरिधरि सपन जयन आयो हे थित जँहँ ॥
मृत वह चंडिल्ल मृगहि तदपि निज ढिग रक्ख्यो तँहँ ॥
मेवारे कति मुदित१ समय कति बीर रिसाये२ ॥
सहगज १ सत्वरन सोधि इन १ हिं ससचिव २ लै आये ॥
कित हक्क १ रान२आतहि कहिय अक्खिय नृप निजमित्र इत ॥
जन चय बिछोरि घन१स्वैसन२जिम व्है ढिग कहिय समस्तहित२६
सेना दुव २ भट सबन रचिय उपदा १ उत्तारन २ ॥
कुसल परस्पर कहि १ रु पुच्छि २ हित प्रकट प्रसारन ॥
जे नृप हौरि लखि जाइ सृतहु दारुन लिवाइ मुरि ॥
पहुँचत बुंदिय पास उभय २ बिछुरे नय अंकुरि ॥
निज सिबिर रान यह वत्त निस बाँभंगी प्रति सब बदिय ॥
प्रामारि कहिय यह होत प्रभु कहा बलि१रु उपदान२किय ॥२७॥
कहिय रान किय कछु न अधिक करिबे एनि अवसर ॥
तुमहिं अबहिं जो रुचत कहहु तो करहिं प्रीतिकर ॥
अक्खिय रानिय उचित नृपन हय १ सस्त्र २ निवेदन ॥
सुपे हारि अब स्वामि धरत किय कौन महाधन ॥
महि प्रमुख देन जो होइ मन तो छितिपति नन लैन नयें ॥

के मुख में कटार मारा १ बहुत डाढ़ों को तोड़कर २ मांस में ३ तीक्ष्ण ४ रक्तमुख; या मुख को लाल करके ५ हृदय में लगाया ६ स्तुति यो- ग्य राजा ने उस सिसकते हुए नाई को हाथों में उठालिया ॥ २५ ॥ उस सिसकते हुए ७नाई को हाथों में उठाकर वह विजयी राजा पहिले खड़ा था वहाँ आया सो वह ८नाई मार्ग में ही मरगया नों ९मा. मनुष्यों के समूह को हटाकर मेघ की १०गर्जना के समान शब्द से ११मजर १२न्यौछा- वर १३ सिंह को १४ राणा ने कहा. क्या आपने १५ नजराना और १६न्यौ- छावर नहीं की ॥२६॥ हानि१७आदि राजाओं की लेने का १८ नीति नहीं है.

खिंत रक्खि कहा देहो सु खलुं जु अब दिखावहिं अप्प जय२९
बलि रानिय इम वदत पुब्ब जिम मन्नि प्रतीपहि ॥
स्वांत कुपित किय सयन कथिन तदभीष्ट प्रकट कहि ॥
इम निस वहहु अतीत होत प्राची १ लोहित हुव ॥
आयउ तजि अवरोध भूप रानहु बाहिर भुव ॥
पति प्रीति हानि रानिय परखि स्वामि सगंधि सन पंच ५ सर ॥
करि अंतरंग दासिय कर रु पठई पिहितैं उदार अंर ॥ २९ ॥
पति मर अति खर पंच ५ अप्पि दासिय कर अक्खिय ॥
भल्ल दुलभ ए ५ भेट रान भेजन कहि रक्खिय ॥
जे तु अब लै जाइ स्वामि पठये कहि सादर ॥
राजकुमारि १८८।४ ढिग रक्खि सुमति आवहु मुरि सत्वर ॥
स्वामिनी कथित सह हेतु सुनि सारिय अंतर ढंकि सर ॥
जवनिका वाट बाहिर जवहि भृत्या कढिय सलज्ज भर ॥३०॥
रदधावन तहँ रचत रानमंत्रिय विष्टर रहि ॥
जवनी बाहिर जात चकित दासिय चितयो चहि ॥
इतउग्गत रवि ओज बधि पट भल्ल बताये ॥
संपा जिम घन सघन पथिसि गोपितैं प्रकटाये ॥
दिस पुव्व १ यह रु वह चरम ३ दिस यातैं लखि चमकत इखुन॥

इनको १ बाको रखकर २ निश्चय ॥ २८ ॥ ३ उलटी मानकर ४मन में क्रोध करके, प्रसिद्ध में ५ उसके अनुकूल कहकर ६ व्यतीत ७पूर्वदिशा लाल हुई अर्थात् प्रभात समय हुआ ८ जनाना ९ भाथे से १० खानगी दासी को ११छान१२शीघ्र ॥२९॥ १३तीक्ष्ण दासी के हाथ में देकर१४कहा १५राजकुमारी नामक१६शीघ्र१७कारण सहित सुनकर१८साड़ी(ओढनेका वस्त्र)के भीतर१९कनात के मार्ग से२०दासी लज्जा के भार से निकली॥३०॥२१दातन (दतुन) करता था२२बाजोट पर बैठकर२३कनात के बाहर. सूर्य के२४तेजने वस्त्र का बेधन करके उन भालों को बताई. जिस प्रकार सघन मेघ में२५बिजुली घुसती है तिस प्रकार२६छिपे हुए बाणों को प्रकट कर दिये२७पूर्णमल्ल पूर्वदिशा में और यह दासी २८पश्चिम दिशा में थी इसकारण चमकतेहुए२९बाणों को देखकर

तिम करत*गुप्तरढक्कसुतहु गिन्यौं धुवहि कछु गूढ गुन ॥३१॥

॥ दोहा ॥

भृत्या गोपित भानुके, भानुनँ दमकत भल्ल ॥
बुल्लि सहठ लखि सब वदिय, महिपहिँ पुग्गनमल्ल ॥ ३२ ॥
नृप अति मन्नैं सोहि नर, न गिनैं गुरु १ लघु २ नैंक ॥
तक्कैं हुकम बिलंब तिन्ह, चोरैं गहि प्रभु चैंक ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

भल्लन चमकत भानु १ द्विरगुन ढंकन लखि दासिय ॥
बुल्लत होत बिलंब हठा उलटी करि हासिय ॥
तिहिँ गहि लावन तमकि पत्ति निज निडर पठाये ॥
राजा विगगत लखि रु दासि सर काढ़ि दिखाये ॥
नर तिन समेत पूरन निकट हठि ताकँह लैजातहुव ॥
सहचरी तरजि पुच्छत सचिव हेतु बिजन सब रूयातहुव ॥३४॥
जातहुव १ रूयातहुव २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
मनहु रंक हठमुट्ठ भुम्मि खोदत निधि भासिय ॥
सुनि कारन इम सकल दे रु लै सर तजि दासिय ॥
ढिग प्रभुके ढक्कन उदर पकैँ दुन आयो ॥
बिजन अप्पि ते बान हठहिं व्यभिचार दिखायो ॥
समुझ्झ कि नाहिँ अकिखय सचिव मान्न सैंतनु हइ १हिं मैंदन ॥
स्वामिनी मिलन संकेत सह सरहि पंच ५ पठये सदन ॥ ३५ ॥

---

*छिपाने से॥३१॥१दासी ने२सूर्य की ३किरणों से चमकते हुए भलकों को छिपाती हुई दासी को बुलाकर ॥३२॥४क्रोध कर के ॥३३॥५पैदल६दासी को धमकाकर, छिपा हुआ७कारण प्रसिद्ध होगया. मानों८कृपण रंक को९धन मिला१०ढक्कू का पुत्र ११पेट पकड़े शीघ्र आया॥१२एकान्त में वे बाण देकर१३शरीरधारी१४कामदेव (कामदेव अनंग अर्थात् अंग रहित होने के कारण यहां शरीर को सतनु लिखा है और कामदेव पञ्चबाण होने से व्यंग्य से मिलने का संकेत लिखा है)॥३५॥

अंतरंग अनुचरिय अमुक लौंजात गुप्त इम ॥
चीन बसन चमकात तरजि त्रिय छन्नि प्रैमभ तिय ॥
दर्पन अंबक १ श्रवन श्रवन १ अंबक २ अवनीसन ॥
हो कछु संसय हृदय सुपै मिटिगो ध्रुव धीसन ॥
मिलिगो दमंग वारूद मनु असह्य रान रिस उप्फन्यौं ॥
गिनि सत्य कुहक सूचकगदित भूप हनन निश्चय भन्यौं ।३६।
रान कहिय संमरहिं अबहि रानिय हनि आऊँ ॥
पूरन अक्खिय पुव्व बचन मम सत्य बताऊँ ॥
तरजि मोहि क्रुद्ध तुम बुल्लि दासिय बिस्वासहु ॥
जिम स्वामिनि ढिग जाइ प्रीति अनि रीति प्रकासहु ॥
महलन पधारि दंपति २ मुदित दै तहँ सखि घटीहि दुव२ ॥
निज तिय१हि लखहु अनुजा २निलय हड्ड६१महित च्युत सील हुव३७
मन्नि मनन सुहु मंत्र महिप उट्ठिय दिय मारन ॥
पूरन तब गहि पानि कहिय बैठारि सु कारन ॥
आगम जिहिं हित अत्थ किम सु बिगारहु यह करि ॥
रंचहु छिपहिंत रहै न मोधै स्वामिनि जैहैं मरि ॥
सो करहु इष्ट बाहुरि निगमहि पै पहिलैं छल मारि पर ॥
इक१ राज्य अधिक किन लेहु अब ध्रुवहि होहु यहँ नीति धर३८
कहिय रान हड्ड६१कँहँ अबहि मारन तो उट्ठहु ॥
चविय सचिव फल चहहु रहहु सब सहहु न रुट्ठहु ॥
मृगयौं छल कछु मंडि अवहि सत्रुहि हान आवहिं ॥

---

१ फलानी स्वामिनी दासी २ बारीक वस्त्र में ३ हट पूर्वक. राजाओं को ४दिखा नेवाले ५ नेत्र कान हैं अर्थात् राजाओं के कान ही नेत्र हैं ६ बुद्धि से. मानों बारूद में ७अग्नि मिल गया. ८मदजालसाज के कहने की अरज को सत्य मान कर ॥३६॥ ९छोटी बहिन के घर में ॥३७॥ कुछ भी१०छिपा नहीं रहेगा, ११निर्थक१२शत्रु को मारकर ॥३८॥ सचिव ने१३कहा१४क्रोध मत करो१५शिकार

ओजो निज जन जोग्य पुनि सु सोमो फल पावहिं ॥
जोपै निदाघ तोहु जतन हुव सु साध मृगपति हनन ॥
तजि सोहु विग्गल भट कज्ज तकि मंडहु मृगनैं मृगव्यैं मना॥३९॥
अप्पनैं साधक इष्ट बहुरि निज सुभट बुलावहु ॥
कारन पुच्छत न कहि खिज्जि इक हुकम खुलावहु ॥
स्वभट करे संग्राम जोंह त्रय पुव्व जनाये ॥
चहि प्रमार१ चालुक्य२।३ मंत्र सुहि बुल्लि मनाये ॥
अज्जलौं हुती तिन्ह छन्न यह निहिं कुमंत्र चग्मंग तव ॥
खिल गूढ रक्खि आक्खिय खलन इष्ट हनन बुंदीस अब॥४०॥
कारन पुच्छत कुप्पि कहिय सासन प्रभु कारन ॥
तिन परदेसिन तबहि नकिय हठ हेरि निवारन ॥
सल्ह१ रु सूर२ अमाक३ कथित सद्दहिं विन्नति क्रिय ॥
पुनि पूरन४ तँहँ पाप दलनैं अरि सुलभ मंत्र दिय ॥
प्रभु१मैं२रु हड्ड३तीन३हि प्रथम चहि मृगव्यैं एननैं चलहिं ॥
त्रय२तुमहु आइ मिलि पंच५तव खेल सहज मारहिं खलहिं॥४१॥
थिर पूरन मत थप्पि सु कहि पठइ सीसोदहु ॥
अधिप हड्ड६१हम अज्ज मृगन मृगया वंछत बहु ॥
रोपैं सुजस तुमरोहु मुदित श्रुति१ नयन२ मिलावहिं ॥
पैं परिकर अति अल्प रक्खि विजनन रस पावहिं ॥
सीसोद भृत्य सासन सुनि सु जाइ कहिय नृप हड्ड६१जँहँ ॥

का छल करके १ ग्रीष्म ऋतु है तोभी २ वृथा ३ अल्प भटों से कार्य देखकर ४ हरिणों की ५ शिकार में मन करो ॥ ३९ ॥ ६अपना इष्ट साधनेवाले ७ महाराणा संग्रामसिंह ने उमराव बनाये हैं उन्हीं तीनों को. ८यह खोटी सलाह का अन्तिम भाग अर्थात् राव सूर्यमल्ल को मारने का विचार कहकर ९ बाकी का वृत्तान्त छाने रक्खा ॥४०॥ १० मालिक का हुकम ही कारण है. शत्रु को ११मारने का १२ महाराणा १३ शिकार १४ हरिणों की ।४१॥ १५आपकी चित्त की प्रशंसा१६सुनते हैं सो नेत्रों से देखेंगे१७परगह १८एकांत में

रानीहु स्व*अघ पूरन रचित तिम गूढहु लिय जानि तँहँ ॥४२॥
कोउक नाजर कहिय पाप तिहिँदिन रानिय प्रति ॥
हेति[1] न दिय ढिग रहन मरन संसय दासिन मति ॥
इम पतन[2]।दिक अटकि गाढ वेढन[3] बैठी गहि ॥
अनसन[4] धरि तव यहहु रुकी संसार विरत[5] रहि ॥
तस अंतरंग[6] दासिय तिमहि पठई कहि अनुजा[7] प्रतिहु ॥
अवरोध[8] जनन जिहिँ दिन इतहु गिनी मनन भावी गतिहु ।४३।
अघ तोलों नृप एह निजन[9] बुल्लहु प्रकट्यो नन ॥
अब सुनि चउ४ आखेट मिलहिँ दुव२ दुव२ मन्नी मन ॥
सारन१८६।१सुत सामंत१८७।१ अप्पि अप्पन द्वितीय२ थिर ॥
प्रनमन[10] जननिय पयन क्रम्यों अवरोध मुदित किर[11] ॥
रट्ठोरि कहिय बंदन रचत सुत हठ तजि मंतलहु[12] सुनि ॥
मम सपथ तोहु इक१दुव२मिलि रु पावहु जिन बध१कुजस२पुनि।४४।
करि अश्रुत[13] हित कथित पुत्र दुर्गति मति पावहु ॥
गहि अय हठ१ बल गर्व२ जिन सु मम दुग्ध लजावहु ॥
एकाकी[14]१ मारि अजस२ जस१सु मारक[15] हनि२ जानहु ॥
करन जोरि नृप कहिय मरन संसय ध्रुव मानहु ॥
जो होहिँ सत्य तो सुत जसहिँ रक्खि मरहिँ सत्थिन सहित ॥
तजि पच्छ[16] सोक१मुद२हिय तनहु इम न गिनहु जीवहिँ अहित[17]४५

आनन्द पावेंगे. पूर्णमल्ल का छाने रचाहुआ अपना*पाप ॥ ४२ ॥
१ शस्त्र पास नहीं रहने दिये. इसीप्रकार २ गिरने आदि को रोककर ३ घेर कर ४ उपवास धारण करके ५ विरक्त रहकर ६ खानगी दासी को भेजकर ७ छोटी बहिन से ८ जनाने लोगों ने ॥ ४३ ॥ ९ अपने लोगों को नहीं कहा. माता के पैरों में १०नमस्कार करने को गया ११किल (निश्चय). हमारी १२सलाह ॥ ४४ ॥ हित के कहने को १३नहीं सुनकर १४ अकेला १५ मारनेवाले को मार लेने में जस होता है. शोक का १६पक्ष छोडकर. यह मत जानो कि १७ शत्रु

यह सुनि थप्पलि*अंस सिक्ख१ आप्पिय आसिख२सह ॥
†ध्वजिनी जुत‡भूधनहु सज्जि हंकियऽतासिख सह ॥
आसिख सह१ तासिख सह२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
रानहु परिखद रचिय सबल हक्क६१ हिँ आवत सुनि ॥
स्वीय सुभट१ सामंत२ चाहि समुचित बुल्ले चुनि ॥
संकेत दियउ ढक्क सुतहिँ स्व१ पर२चलन पंच५ कि छ ६ सब ॥
तजि हय प्रकोष्ट बुंदिय पतिहु तँहँ गय भटन उपेत तब ॥ ४६॥

दोहा ॥

सँनति रान आयउ समुख, अवधि लंघि कछु अग्ग ॥
नमन१ अनंतर चाप २ निँभ, मारक१ मग्गन २ मग्ग ॥ ४७ ॥
इम हड्ड१ हिँ सीसोद२ अरि, पटतोरँन प्रविसाइ ॥
सह निज निज सुभटन सभा, जुग नृप बैठे जाइ ॥४८॥
पान१अतर२ मादक ३ प्रमुख, हुव बाहिर१ मनुहारि ॥
अंतर सद्दन इष्टकोँ, रान चहत बिनु रारि ॥ ४९ ॥
सो संभरके सब सुभट, नृप अकथित जानैँन ॥
भेद सु लहि चउ४ रानभट, सोधैँ निजप्रभु सैँन ॥ ५० ॥
इम तादिँन कछु अग्गसोँ स्वागत१ नँति२ सविसेस ॥
प्रेम नेम न रह्यो प्रकटि, सद्दिय रान निसेस ॥ ५१ ॥

जीवित रहेगा ॥४५॥ *कंधा थापकर †सेना सहित ‡राजा §माता की उस शिक्षा स हित. राणा ने भी १सभा रची २सेना सहित ३उमरावों को उचित समझकर चुन कर बुलाए ४ ड्योढी पर घोड़ा छोड़कर. उमरावों ५सहित गया ॥ ४६॥ ६नम्र ता सहित राणा सन्मुख आने की अवधि को छोड़कर कुछ आगे आया. नम ने के पीछे धनुष मारता है जिसके ७ सदृश ८ मारनेवाले और ९ याचक के मार्ग से अर्थात् मारनेवाला और याचक दोनों अधिक नमते हैं ॥ ४७ ॥ १०क नात की ड्योढी में प्रवेश कराकर ॥ ४८ ॥ ११ ऊपर के मन से ॥ ४९ ॥ राजा के १२ नहीं कहने के कारण नहीं जानते थे १३अपने स्वामि का इशारा देख ते थे ॥ ५० ॥ १४ उस दिन १५ नम्रता १६ सब ॥ ५१ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम ५राशौ वीति होत्रवसुधेश्वर १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानु वंश्यविहितव्याख्यानावसरवक्तव्यबुन्दीवसुधावरामिहिरमल्ल १८८।१ चरित्रेप्रातरवबुद्धतद्राणानुमतबुन्दीपृथ्वीशप्रस्थापितमृगयमाणप्रमि तझरिग्रामाराममहामृगेन्द्रप्रत्ययायातमृगयुप्रकरपृथिवीपालयुग २प्रो त्सारण १, सज्जस्वस्वसेनसमुपेतप्रस्थितप्राप्यप्राप्तप्रदेशनखधरनि स्सारणानुकूलनियोजितानीकिनीद्वय २ भूमिभुजद्वोभय २स्वाभि मतसाधकसमुचितस्थानसमवस्थान २, गजारूढसम्बुद्धसचिवसञ्ज्ञ पनराणा १बुन्दीश २व्यापादनानुकूलानीताग्नियन्त्रछायोद्भ्रान्तो त्प्लवनप्रारिप्सुसप्तिसावधानशाकम्भरेशशत्रुदक्षिणपार्श्वपरिवर्तन ३, वाद्यादिकलकलवेल्लबहिर्निष्कासितलवकालचरमाङ्गोपविष्टस म्मुखदृष्टस्वल्पजनच्युतराणाग्नियन्त्रगुटिकाभूपातोच्छालितकर्कर कुपितमृगेन्द्रमारकवर्गोपरिधावन ४, तद्भीतिपलायितावमतनियन्तृ

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चम राशि में अग्निवंशी चहु वाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शा- खाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी भूपति सूर्यमल्ल के चरि त्र में प्रभात में राणा की सलाह जानकर बुन्दी के राजा के भेजेहुए शिका रियों के जनायेहुए झरिग्राम के बाग में सिंह के होने का विश्वास करके शि कार खेलनेवालों के समूह के साथ दोनों राजाओं का उद्योगी होना, अपनी अपनी सजीहुई सेना के साथ प्रस्थान करके प्राप्त होनेवाले प्रदेश में पहुँचकर सिंह के निकालने के अनुकूल दोनों सेनाओं को हुकम देकर दोनों भूपतियों का शिकार के योग्य स्थान पर ठहरना, हाथी पर चढकर सचिव के इशा रे से चेताये हुए राणा की बुन्दीश के मारने के अनुकूल लाई हुई बन्दूक की छाया की भ्रान्ति से कूदने की इच्छावाले घोड़े से सावधान चहुवाण का शत्रु के दक्षिण ओर जाना, बाद्य बजने आदि कोलाहल से बाग के बाहिर निकाले हुए थोड़े समय तक पिछले शरीर से बैठकर सन्मुख थोड़े मनुष्यों को देखकर राणा की बन्दूक चूकने से गोली के भूमि पर टप्पा लगने से उछ ले हुए कंकर से कुपित सिंह का मारनेवालों के समूह पर दौड़ना, उसके भय

प्रहृतांङ्कुशाग्रधवाद्यधित्यकातरुनिबिडनिवहप्रविष्टशाखावलीस
मावृत्तसचिवशिरोवेष्टनकण्टकादिविक्षितपृष्ठस्वपृष्ठन्युब्जितस्रस्त
शस्त्रस्वारोहकमारीचमातङ्गमार्गाभावमहीध्रप्रस्थप्रदेशावस्थान५, तु
रगाद्यवरूढपश्चादनुप्रविष्टशीर्षोद्दसामन्तगणनिस्सरणसानुस्थित
सिन्धुरस्थससचिव१स्वाम्य २ न्वेषण ६, वेध्यवक्षःप्रहृतैक१पृषत्क
संहितापर २ प्रोथ्यवप्लुतमहीशमिहिरमल्ल १८८१ सिंहसम्मुखाभि
सरण७, दृष्टहतवेगप्राघुणनापितमारयमाणमृगराजश्रवणपृष्ठप्रहा
रितापर २ प्रदरकरकृतनिष्कोशकट्टारहड्डा ६१ धिराजक्षुरिरक्षणा
र्थपारिन्द्रोदरपाट्टिशप्रहारण ८, तद्दंष्ट्राघातक्दीर्णबाहुलदरविक्षित
मणिबन्धद्वितीय२प्रहारत्रिपाटितवक्षोऽव्यापादितवारणवैरिस्वपाणि
युग २ समाहितम्रियमाणमुण्डकप्रत्यागतहड्डाधिराजसरणिसंस्थि
तनापितनिजनिकटन्यसन ९, स्वीयसामन्तसमन्वेषितगजारू
ढससचिव १ शीर्षोद्दराज २ मिश्रितमिहिरमल्ल १८८१ मारितमृगे
न्द्रश्लाघावसरसैन्ययुग २ सामन्तगणनारायण १८७१ नन्दनानन्द

से भागनेवाले उस महावत के अङ्कुश के मारने को नहीं मान कर धव आ-
दि वृक्षों से सघन पर्वत के नीचे की भूमि में प्रवेश करनेवाले वृक्षों की पंक्ति
में सचिव की पगड़ी लिपटकर कांटों से अपनी पीठ विन्धने से कुबड़े होकर
शस्त्र गिरकर अपनी सवारी के हाथी का मार्ग के अभाव से पर्वत के ऊपर
की सम भूमि में ठहरना, घोड़ों आदि पर सवार होकर पीछे से प्रवेश करके
शीषोद के वीरों का मृत्यु के शिखर पर चढेहुए हाथी पर स्थित सचिव सहि
त अपने स्वामि को हेरना, एक बाण से छाती बेध कर दूसरा बाण सन्धान कर
के घोड़े से कूदकर राजा सूर्यमल्ल का सिंह के सन्मुख जाना, पाहुने नाई का वेग
हत होना देखकर मारनेवाले सिंह के कान के पीछे दूसरा बाण मारकर हाथ में
नग्न कटार लेकर हड्डाधिराज का नाई की रक्षा के अर्थ सिंह के उदर में कटार
का प्रहार करना, उसकी आघात से बहुत डाढें टूटकर पूंचे सहित भय दिखा
कर छाती में दूसरा प्रहार करके सिंह को मारकर मरने योग्य नाई को दोनों
हाथों में उठाकर पीछे आयेहुए हड्डाधिराज का मार्ग में मरेहुए नाई को अप-
ने पास रखना, अपने उमरावों से हेरेहुए हाथी पर सवार शीषोद राज का

ननिमित्तनिजनिजनिवेद्योपदा१ निवेदनानन्तरसमुचितसमुत्तारण २ विधान १०, पृथमिथःकुशलसमानायितप्रशंसितपरासुपञ्चाननप्रति प्रस्थितपृतनोपेतपृथ्वीशयुग्म २ स्वस्वसदनसंविशन११, निशावसर प्रज्ञातप्रशंसापूर्वकपतिप्रोक्तपृथ्वीशसूर्यमल्ल १८८।१ पट्टिशप्रहारपञ्च मुखपरासुत्वप्रामारीप्रियोपदा १ दिपृच्छाप्रतीपराणाऽननुष्ठाननिवे न १२, प्रातःप्राबल्यप्राप्तप्रामारीप्रेष्यापाणिप्रच्छन्नप्रेषितप्रियोपास ङ्गप्रशस्तपृशत्कपञ्चक ५ पूर्णमल्लनिश्शलाकनिजनृपनिवेदन १३, पञ्च ५ बाणप्रेषणप्रत्ययनिर्णीतनिजमहिलामतमनोहरमूर्तिमदस्म दनमहाराजमिहिरमल्ल १८८।१ मिथ्याभिशप्तप्रामारीप्रमापणपारीप्सु राणापूर्णमल्लप्रोक्तपृथमृषाकल्पितवामाङ्गीशीलध्वंशवीक्षणाविलम्बा वमनन १४, निवारिततत्कालवनिता १ बुंदीश ३ व्यापादनारम्भदृढ़ ढीकृतस्वल्पसार्थमृगमृगव्यमिहिरमल्ल १८८।१ मारणमन्त्रपूर्णम ल्लप्रयुक्तराणासमाहूतप्रामार १ चालुक्य २ सामन्त ३ त्रय ३ सहि तनिश्शलाकस्वाभीष्टसिद्धिनिश्चयन १५, कारणपृच्छाप्रतीपनिज

सूर्यमल्ल से मिलकर मारेहुए सिंह की प्रशंसा के समय दोनों सेना के उमरा ओं का नारायणदास के पुत्र (सूर्यमल्ल) की प्रसन्नता के निमित्त अपनी अपनी जानकारी के साथ नजर किये पीछे उचित न्योछावर करना, परस्पर कुशलता पूछकर मरेहुए सिंह की प्रशंसा करके सेना सहित पीछा प्रस्थान करके दोनों राजाओं का अपने अपने सदन में प्रवेश करना, रात्री के समय पति के कहने से राजा सूर्यमल्ल की कटारी के प्रहार से सिंह को मारने की प्रशंसा जानकर प्रामारी के पति से नजराना आदि के पूछने के विरुद्ध राणा का नजराना क रने का निवेदन करना, प्रभात समय प्रबलता प्राप्त करके प्रामारी की दासी के हाथ से छाने भेजे हुए पति के भाथे से प्रशंसा योग्य पांच बाणों का पूर्णमल्ल का एकान्त में अपने राजा की नजर करना, पांच बाण भेजने के सबूत से अपनी स्त्री का मत निर्णय करके सुन्दर मूर्तिमान कामदेव रूप महाराज सूर्यमल्ल के मि थ्या दोष से प्रामारी को मारने की इच्छावाले राणा का पूर्णमल्ल के कथन को सत्य मानकर मिथ्या कल्पना से स्त्री का शील नाश होने को देखने के लिये विल म्ब करना, उस समय स्त्री को छोडकर बुन्दीश को मारने का आरम्भ दृढ करके थो- डे साथ से हरिणों की शिकार में सूर्यमल्ल को मारने की सलाह से पूर्णमल्ल के कहने से राणा का प्रामार, सोलंखी तीन उमराओं को बुलाकर एकान्त में अपने अनुकू

नियोगानियोजितत्रय ३ मतमन्त्रिमतमेदपाटमहीपस्वल्पतमसार्थसहितकुरङ्गाच्छोटनक्रीडाकपटस्वाभिमतसाधनार्थहड्डाधिराजसमाह्वान १६, दूरीकृतशस्त्रादिसंस्थासाधनशुद्धान्तपरिचारिकाजनतद्दिनविज्ञातसचिवहेतुकमिथ्यास्वशीलभ्रंशाभिशापविफलितवपुर्विहानोपायधृतानशनप्रामारीराज्ञीरक्षण १७, राणासम्मतसिसाधयिषुस्वल्पसार्थमृगमृगव्यपरिरंसाप्रतिष्ठासुशुद्धान्तसङ्गतनमस्कृतराष्ट्रकूटपुनःपुनःप्रबोधितस्वीकृतससपत्नसंस्थानसामन्त १८७।२ द्वितीय २ तदाच्छोटनचिक्रीडयिषुसन्नद्धसकलसैन्यसमुपेतबुन्दीशशीर्षोद्दशिबिरसमागमन १८, सीमातिक्रमसम्मुखागतबहिस्सूचितसातिरेकस्नेहधनुर्नतिधरचित्रकूटराजप्रतिसीराप्राकारप्रतोलीप्रवेशितबुंदीशसत्कृतिस्वस्वसामन्तसंघसहितसभासमुपवेशनं १९ चतुस्त्रिंशो ३४मयूखः ॥ ३४ ॥ आदित एकाशीत्युत्तरैकशततमः ॥ १८१ ॥

ल साधन निश्चय करना, कारण पूछने के विरुद्ध अपनी आज्ञा से योजित उन तीनों के मन्त्री के मत से मेवाड़ के राजा का बहुत थोड़े साथ सहित हरिणों की शिकार खेलने के मिष से स्वामि की सलाह साधने के लिये हड्डाधिराज को बुलाना, शस्त्र आदि मृत्यु के साधनों को दूर करके जनाने की दासियों का उस दिन सचिव के कारण अपने शील नाश होने के मिथ्या दोष को जान कर शरीर छोडने के लिये उपवास करनेवाली प्रामारी की रक्षा करना, राणा की संमति को साधने की इच्छावाले और अल्प साथ से शिकार रमनेवाले प्रतिष्ठा से जनाने में श्रेष्ट नमस्कार करनेवाले और राठोड़ों से बारम्बार समझायेहुए शत्रु को अपने साथ मारने को स्वीकार करनेवाले सामन्त है दूसरा जिसके उस शिकार खेलने की इच्छावाले सजीहुई सब सेना के साथ बुन्दीश का शीर्षोद के डेरे पर आना, सीमा लांघकर सन्मुख आयेहुए बाहर मे स्नेह को अत्यन्त दिखानेवाले और धनुष के समान नम्रता धारण करनेवाले चित्तोड़ के राजा का कनात के कोट के द्वार में प्रवेश करनेवाले बुंदीश के सत्कार सहित और अपने अपने उमरावों के समुदाय सहित सभा में बैठने का चौतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३४॥ और आदि से एक सौ इक्यासी १८१मयूख हुए ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

आदर हड्ड१हिँ रान२ इम, मिलि बैठत कृत मोद ॥
सचिव सैँन[1] दिय सल्ह तँहँ, प्रहसन बचन प्रतोद ॥ १ ॥
हो समुचित[2] मृगपति हनन, कल्हि२ कटक सब कज्ज ॥
इक्खहु[3] मन हड्ड६१न अहो, एनन[4] सन भय अज्ज२ ॥ २ ॥

षट्पात् ॥

मृगगन रमन मृगव्यँ[5] क्रमन[6] पुव्वहि सूचन किय ॥
चउ४ कि पंच५ धँनु[7] चतुर लैन सब रैन मैं न लिय ॥
तृनभोजिन[8] भय तदपि[9] अज्ज हढ हुव हड्ड६१न उर ॥
दुव२ जँहँ राघव१८७।१देव१८८।१धार अवसरँ[10] थंभन धुर ॥
सिखयँ सु नर्म[11] चालुक१ चवंतें[12] हसि प्रामार२ हु कहत हुव ॥
इहिँ वंस संटि[13] पुत्रिन असुनं[14] हल्लू१८२।१सम बहु लहत हुव।३।

कहतहुव१ लहतहुव२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

देव१८८।१रु राघव१८७।१हड्ड६१दुव२, आये ए२ भजि अग्ग ॥
तकि नृप संग मिलाइ तिन्ह, इम किय हास्य उदग्गँ[15] ॥ ४ ॥
सल्ह१ असोक२ कुनर्म[16] सुनि, सँचिव[17] सैन अनुसार ॥
स्मित[18]१प्रहसित[19]२ अँट्टाट्ट[20]३ सन, परपंक्खिन[21] किय प्यार ॥ ५ ॥

---

१ हसी (मसकरी) रूपी चाबुक लगाया ॥ १ ॥ सिंह की शिकार में कल सब सेना का होना २ उचित था३देखो४हरिणों से आज हाडाओं को भय है ॥२॥ हरिणों की ५ शिकार ६ जाना पहिले ही कहला दिया था ७ वाणविद्या में चतुर ८ तृण भोजन करनेवालों (हरिणों) से ९ तो भी १० समय पर११हसी १२कहते ही. इस वंश में१३बदले में पुत्रियें देकर हल्लू के समान बहुतों ने१४ प्राण लिये हैं अर्थात् प्राण पाये हैं१५उच्चस्वर से हास्य किया१६खोटी मसकरी सुनकर१७सचिव पूर्णमल्ल के सैन करने के अनुसार१८विना दांत दिखाये मंदहास्य१९हर्ष दिखाकर अधिकहसना२०उच्चस्वर से अत्यन्त हसना२१शत्रुओं ने ॥५॥

द्विजं कढ्ढत ढक्कूज १ दिय, रान २ हु बदन रुमाल ॥
तँहँ न हसे पैर अल्पतम, सूरा १ दिक परसाल ॥ ६ ॥
वच्छोला १ कोटा २ बसति, देव१८८।१रु राघवदास १८७।१॥
एह सुनत बुल्ले अनखि, बीर भुजन बल बास ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

कवहु किमहु तजि कलह न व्है कातर १ प्रबीर २ नर ॥
अतिबलता उत अप्प घत्तिरक्खिय काके घर ॥
सीसोद१न कुल सबल तेज २ राउल तो तक्कहु ॥
भिरि मंडन १६८।१ सन भजिग प्रचित बिश्वासघात पहु ॥
पुनि सेनपाल१८७।१।१मुंडिय पुरा सर करि किरनादित्य सिर॥
संटिय सुता जु तस वर सरन हुव हल्लुव१८२।१सुहु बिदित हिर।८॥

॥ दोहा ॥

कुंभ१८३।१हु तिम हल्लू १८२।१ कुमर, लक्ख रान भय लाइ॥
आयउ भजि बुंदिय अरपि, प्रधन चंकितपन पाइ ॥ ९ ॥

॥ षट्पात् ॥

जो चौलुक २ कुल अजित कहहु सूकर भुव कैसैं ॥
पृथु तुमरे परपुरुख जाइ प्रभुता १ जस २ जैसैं ॥
सद्योधारन सचिव निकट अति प्रनति निबाहिय ॥

---

१ दांत निकालने से ढक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल और महाराणा ने २ मुख में रूमाल दिये ३ शत्रु कुछ भी नहीं हंसे ४ शत्रुओं के शाल ॥ ६ ॥ ७ ॥ आपके वहां किसके घर में ५घाल रक्खी है. विश्वासघात से ६गर्जना करनेवाला राजा, वा तुम विश्वासघात में ही गर्जना करनेवाले प्रभु हो ७पहिले (यहां के सब उदाहरणों की सविस्तर कथा ऊपर आचुकी है इसकारण यहां विस्तार से टीका करना अनावश्यक है) ८ स्वर्ण के समान प्रसिद्ध है ॥ ८ ॥ ९ लाखाराणा से १० युद्ध में ११ भय पाकर (यहां राणा से युद्ध में भय पाकर कुम्भकर्ण का बुन्दी दे आना काकुभाषा से कहागया है) ॥९॥ १२सोलंखी के कुल को अजित कहते हो तो तुम्हारे१३बड़े

अधिप सुधन्वा ६ अर्थ बिभा ६।१*स्वसुता सु बिबाहिय ॥
भजि पुनि गुमाइ गुजरात भुव बिनु।नृपता पीढिन बहुन ॥
अजमेर प्रांत निबसे अखिल प्रकटिय तँहँ इक्क१हु पंहु न ।१०।

॥ दोहा ॥

प्रामार३न कुल जो प्रबल, पिक्खहु तो जसपंति ॥
अवधि असोक२००अमान१७०तैं, अब किन तपहु अवंति।११।
बंधु मोहनोत २ रु बिदित, जैताउत ६।२ इम जंपि ॥
उठे दुव २ ऐंचत असिन, चित्त हसिन गन चंपि ॥ १२ ॥
इक्क १ इक्क १ प्रति गहिय अब, इच्छामित तुम आहु ॥
भय हड्ड६१न संगर भजन, परखि स्वमत फल पाहु ॥ १३ ॥
उठि इम करत बिकोस असि, दुव २ हड्ड६१न रिस दिट्ठि ॥
जिन्ह सामंत१८७।१दलेल १८८।१ जुत,नृप१८८।१बैठारिय निट्ठि१४

॥ षट्पात् ॥

पति तारागढ प्रथम १ भनिय जसकर्ण १८६।२ निम्म १८५।३भव
अपर २ गंग १८६।२ अभिधान जु हुव जगबिदित जिताहव ॥
सुत नृसिंह १८७।१ तस सुमति रहिय हनि बहु बाबर३०रन ॥
तास दलेल १८८।१ तनूज कहिय सल्ह १ रु असोक २ सैन ॥
जय लहिय रान संग्राम जँहँ हड्ड६१न भयहि निमित्त हुव ॥
पहिलैंहु अमरगढके प्रधन भजि कुंभहिं दिय तोग १८६।१ भुव१५

॥ दोहा ॥

बिभा नामक*अपनी पुत्री को. बिना।राजापन के. वहां एक भी १राजा नहीं हुआ ॥ १० ॥ २उज्जीन पर अब राज्य क्यों नहीं करते हो ।११। ३ कह कर ४ तलवार खींच कर उठे ५ हंसनेवाले समूह के चित्तको दबाकर ॥ १२ ॥ १३ ॥ तलवार ६म्यान बाहर लेते ही ॥१४॥ ७तारागढ का किल्लादार. ८निम्मदेव का ९पुत्र ९ युद्ध जीतनेवाले १० बाबर बादशाह के युद्ध में. दलेलसिंह के११पुत्र ने. सल्ह और अशोक१२से कहा. हाडों का भय ही उस युद्ध जीतने का१३कारण हुआ था १४ युद्ध में ॥ १५ ॥

कहिय हरी १८८।१ हरपाल १८२।२ कुल, जज्जाउरपुर जत्थ ॥
मुगलराज रन भीम१८७।२मम, तात भरिग भय तत्थ ॥१६॥
*कित्तिसीह१८८।१नवरंग१८३।२कुल, बदिय लाहपुर बास ॥
पिता भरत १८७।१ मम भरिपरत, अतिभय हड्डन आस ॥१७॥
क्रम पित्थल१८९।१ थिरराज१८३।३ कुल, बदिय गंग१८८।१मम बप्प
भंजि मुगल तिलतिल भयो, यह पिक्खहु भय अप्प ॥ १८॥
खेम१९०।१अनुज सिवसिंह१९०।२ खिजि, कहिय खजूरीके७।३हु
अमर१८६।२खेम१९०।१दिय भजत अंसु,जनक१भ्रात२फुट जेहु १९

॥ षट्पात् ॥

बुंदियपति बारहठ कहिय सामोर धीर कवि ॥
भुल्लहु जिन रानभट पिहित रहत न काच १ रु पँवि २ ॥
हमरे भटन कहेहि रहे बीरन बाबर ३० रन ॥
भट इतरहुं हम भनत सुनहु मृत तुम सहाय सन ॥
नगराज १ गोर गिरिधर तनय तँहँ प्रताप २ कछवाह तिम ॥
बलराज ३ सल्ह प्रामार सुव अरु दहियाह प्रताप४इम ॥२०॥
चावोरा रन चतुर सूर नरसिंह ५ देव सुंव ॥
भक्खर ६ संकर भ्रात हेति तिलतिल सोढा हुव ॥
दहर नेल दायाद भयउ बटके मुकुंद ७ भंर ॥
अर्जुन ८ जदुकुल अडर स्याम ९ प्रतिहार पुरस्सर ॥
सिवराज १० बीर चालुक असह जोध बिहारीदास ११ जुत ॥
बीरम १२ कबंध बिक्रम १३ बहुरि संभर भरत भदोर सुत ।२१।

॥ दोहा ॥

करन १४ नाम तिलतिल कटिय, सरवाहिया अतिसूर ॥

* कीर्तिसिंह १ हुआ२पिता३आप 'ये सब वक्रोक्ति के कथन हैं' ॥१८॥ ४प्राय ५प्रसिद्ध है॥१९॥ हे राजा के उमरायो भूलोदमत. काच और७हीरा छिपे नहीं रहते ८ अन्य वीरों को ॥ २० ॥ ९ चावड़ा. देवसिंह का१०पुत्र११शाखों से१२ भट (वीर) १३ अग्रणी वा आदि १४ बहुवाच ॥२१॥

भज्जत रान सहाय भाजि, पारि मुगल्ल बल्ल पूर ॥ २२ ॥
बाबर ३० रन इत्यादि*बर, सब बुंदीस सिपाह ॥
सतपचीस २५०० सोवत समर, लहिय रान जय लाह ॥ २३ ॥
रहे जियत अब ताहि रन, घनैं सुनहु सहि घाय ॥
पाये तँहँ सह बाजि पहु, कंलि चउचउ ४४ छत काय ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

तिम नरबद१८७।२सुत त्रय३हि लहिय चउ४छत अर्जुन१८८।१लरि॥
प्रतिभट भीम १८८।२ पचीस २५ सहे तदनुज गँज संहरि ॥
पूरन १८८।३ तदनुज पंच ५ छ ६ छत सत्तल २ कुमार छेम ॥
चउ ४ छत बाँहे रन रचिय जोध मेत्र १८७।१ हु जवनन जम ॥
नगराज१८८।१चुंड१८६।२बंसियनिडरकुंभकरन१८८।१जिमउदयकुल
बंसिय अधीस सामंत११८७।१बपु इन तीन३न खट६खट६अतुल २५

॥ वस्तुबदनकम् ॥

सुभटँवर्ग अब सुनहु हरिय १ सीसोद अमरहर ॥
पित्थल नत्तिय प्रथित संभु २ चालुक बघेल बर ॥
संकर नत्तिय सूर भीम ३ भट्टिय खंडित खल ॥
गोवर्द्धन ४ तिम गोर बीर सुंदर सुव अतिबल ॥ २६ ॥
कथित नंद ५ कुम्मकुल निडर बंसीधर नत्तिय ॥
सैंगर तिक्कम सुतंज हठिय दीप ६ हु असंक हिय ॥
सरबहिया दीप ७ सह स्याम ८ दहिया मताप सुत ॥
रहे नियंत तिहिँ रारि जोधँ इत्यादि छतँन जुत ॥ २७ ॥

---

*श्रेष्ठ ॥२३॥ घोड़े सहित राजा नारायणदास ने १ युद्ध में शरीर में चवांलीश २घाव पाये थे ॥ २४ ॥ ३ उसके छोटे भाई ने ४ हाथी को मारकर ५ समर्थ ६ पाकर ॥२५॥ ७सुभटों के समूह को अब सुनो. पृथ्वीसिंह का ८पोता ९प्रसिद्ध ॥ २६ ॥ टीकम का१०पोता ११ निश्चय १२ वीर १३ घावों सहित ॥ २७ ॥

मालव १ गुज्जर २ *मीर रुपे यातैं पहिले रन ॥
दिव सहाय बुंदीस नियत हित तवहु नशायन १८७।१ ॥
जँहँ नृसिंह १८७।३ नृप अनुज पारि महमूद चमूपति ॥
संकर १ नेत २ समेत भयउ तिलतिल जु काच भंति ॥ २८ ॥
वहे घाय नारैवद अंग अर्जुन १८८।१ अट्ठारह १८ ॥
मंडू सचिव १ समेत वीर सद्दे अरि बारह १२ ॥
सारन१८६।१सुत सामंत१८७।२सेव१८६।२तनुँजातमेव१८७।२सह
निम्माउत्त१२।८।२नृसिंह१८७।१गंग१८६।२अंगज जय संग्रह ।२९।
नगर लाडपुर नाह भरत १८७।१ नवरंग पौत्र ८।४ भर ॥
भीम १८७।१ देव १८६।१ सुत भीम विदित हरपाल पौत५।१।१पर
इत्यादिन तिहिं आजि छमँन जय सद्धि लहे छत ॥
बावर ३० रन रतिवाह मृत १ रु घायल २ सुनौं बँ मत ।३०।
सुत्तो रन बिनुसिरहु सद्धि नरबद १८७।२ इकतीस३१न ॥
हत्थाउत ३ हम्मीर १८९।१ घल्लि पंद्रह १५ कचंरघन ॥
तिम घुग्घुल १८१।१ कुल तेज१८८।१मुगल नव९हरि सुत्तो महि
खज्जूरीपति खेम १९०।१ दहन पानिप छ ६ मुगल दहि ॥३१॥
हरु१८२।१हर लय३हड्ड६।१लक्ख१९०।१अनुपम१९०।१कुबेर१लरि
सुत्ते सूरनैसयन कदन खट६दस१०त्रय३क्रम करि ॥
तिम प्रताप १ तोमर रु रतन २ झल्ला आदिक रन ॥
परे सुभट सतपंच ५०० सतक १०० घायल साहस सन ।३२।
गँढ मालव १ गुजरात २ दुव २ हि लग्गे पुनि दुर्जन ॥

मालवा और गुजरात के*बादशाह. काच की १भांति२नरबद के पुत्र ने३मारे ४पुत्र ५ पुत्र. ६म६युद्ध में ७ समर्थों ने विजय करके घाव लिये थे ८ अब ।३०। ९ कचरघाण करके १० मारकर. पराक्रम रूपी ११अग्नि से छः यवनों को जला कर ॥ ३१ ॥ १२ शरसय्या में सोया ॥ ३२ ॥ १३ चित्तोड़गढ पर

तिहिं रन नरवद १८७।२ तनय परयो अर्जुन १८८।१सहाय पन॥
अग्गहु हिंगुलु १८०।९ आदि रहिय चित्तोर भीर रन ॥
तुम भय भाखत तदपि नैंक उपकृत लज्जहु नन ॥ ३३ ॥
नारायन १८७।१ जिहिं नेह असह मारिय इक्का वह ॥
तुम हड्ड६।१न भय तदपि गदत हा धर्त कदाग्रह ॥
वारू चारन वैर लियउ तैसो साहस लहि ॥
तुम हड्ड ६१ न भय तदपि बदत कृतघन कुनर्म बहि ॥३४॥
अत्थहि जो आखेट तुमहु क्यों सब संगत तब ॥
हनन गृहहु निज रीति कहहु एकाकि १ नृपन कब ॥
तदपि हास्य अति तनिय महँत चालुक १ प्रामार२न ॥
गिनि अश्रुतं कवि गदित स्वामि१सचिव२न सूचन सन ।३५।
षट्पात्–अति कुनर्म नृप अनंखि कहिय सलह१रु असोक२कँहँ॥
तँहँ हो कोन द्वितीय २ जनक १ मारिय ढकू २ जँहँ ॥
चहि हड्ड १ न चाकित्यं प्रबल सीसोद २ परक्खहु ॥
पीढिन हित प्रातीप्य रुचित तो उचित न रक्खहु ॥
मन क्रुद्ध अधिक इम कहि मिहिर१८८।१ भिन्न बिरचि निज मुख्य भट
स्व सपथ उपेत अक्खिय सबन बहुत मैंहि इक्क१हु विकट ॥३६॥
परक्खहु२नरक्खहु२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

१उपकार से लज्जित नहीं होते॥३३॥ इस समय धूर्तता ग्रहण करके२कुत्सित [खोटा]आग्रह करके कहते हो३खोटी हंसी करके॥३४॥ ४साथ अर्थात् यहां भी जो शिकार है तो तुम सब साथ क्यों हो. तुम्हारे घर में ही कहो कि राजाओं के५अकेले शिकार खेलने की रीति कहां है ६ फैलाया, सोलंखी और प्रामारों ने अधिक हास्य फैलाया. वा उपरोक्त उदाहरणों का ७नाश (मिटा) करके सोलंखी और प्रामारों ने हास्य फैलाया. स्वामि और सचिव सूर्यमल्ल की सूचना से कवि का कहना ८ अनसुना करके ॥ ३५ ॥ राजा ने ९ खोटी शस्क री से१०क्रोध करके. हाडाओं का११भय(डरपोकपन)चाहते हो तो पीढियों के १२हित में विरुद्धता रुचती है तो१३सूर्यमल्ल ने अपने मुख्य वीरों को जुदे करके अपने सोगन सहित कहा कि सब के लिये मैं अकेला ही१४अत्यंत बहुत हूं॥३६॥

दोहा–मो मारन हत्या मिलहिँ, इक्क १ हु मो ढिग आत ॥
न रुकत लैहौं छिन्नि निज, बास १ देस २*बसु ३ आत ३ ॥३७॥
द्वै द्रोहहि जो रान हिय, मरचा सुनहु जो मोहि ॥
सफल करहु तब सरता, रिपुन मग्ग[1] सब रोहि ॥ ३८ ॥
पिहित[2] वत्त जानी जु पहु, अबहु भटन अक्खी न ॥
नृप सपथहु[3] न गिने नत्ता, धँपि[4] संगहि अनधीन[5] ॥ ३९ ॥
पुब्ब कथित सुभटनं तदपि, महिप सु निछि मनाइ ॥
सूचिय मैं १ रान २ रु सचिव ३, को भय[6] अटत[7] कहाइ ॥४०॥

॥ षट्पात् ॥

निछि सु निजन[8] मनाइ आइ चल्लहु नृप अक्खिय ॥
सिबिरहु[9] व्यवहित[10] सूचि रान सज्जहि सब रक्खिय ॥
सह परिकर[11] दुव२सुपहु चलिय इम मृग मृगव्य[12] चढि ॥
तापी सरित[13] तीर पहुँचि उतरे निवास पढि ॥
व्यवहार १ मध्य आन्हिक[14] २ बिरचि आतप[15] कछु टारिय असह
तहँ रान लय३हि पठये पिहित[16] सल्ह१रु सूर२असोक३सह ॥४१॥

असह १ कसह २ अन्त्यानुप्रासः ॥

॥ दोहा ॥

तिन प्रति अक्खिय रान तुम, मिलहु हमहिँ प्रतिमग्ग[17] ॥
जानैं भ्रमहु न कोहु जन, इम जावहु त्रय ३ अग्ग ॥ ४२ ॥
ऐसैं पिहित पठाइ इन्ह, लै पूरन १ कँहँ लार ॥

---

*धन का समूह ॥ ३७ ॥ शत्रुओं का मार्ग १ रोक कर ॥ ३८ ॥ राजा ने जो २ छिपीहुई बात जानी सो अब तक उमरावों को नहीं कही नहीं तो राजा के ३ सोगन भी नहीं मानते और ४ दौड़कर ५ आधीनता रहित (स्वतन्त्र) होकर साथ ही रहते ॥३९॥ ६कैसा भय है७फिरते हुओं को॥४०॥ ८ अपने लोगों को स्वीकार कराकर ९ डेरे में १० छिपीहुई सूचना करके११ परगह सहित. हरिणों की १२शिकार. तापी १३नदी के तीर पर. मध्यान्ह की १४संध्या करके. कुछ असह १५धूप टाली १६ छाने ॥४१॥ १७ पीछे फिरते

अधिप चले बरजत उभय २,सहन त्रय ३ हि सिकार ॥४३॥
निज निज परिकर रोध नृप, जुग २ हि अतिक्रमि जात ॥
जलधर १ चर २ हयभृत्य ३ जन, संगहि क्रमिय छ सात॥४४॥

॥ षट्पात् ॥

इक १ बाहुज कछु अवम हुल जातिक कुंपाऽह्वय ॥
निज दायज नृप जननि संग लाई जुहि तासय ॥
जलधारक यह जाहि बंदे मातुल बुंदीसहु ॥
भेदी सहचर भो जु तदिन सायुध तुंदीसहु ॥
भट गिनि सु रान बिहसि रु भनिय जुग२हि बहुत इक १पास जल
बहुजनन विघन मृगया बनहिं सुनत मुर्यो संभर सबल ॥४५॥
मुरि तग्ग सम्मुह महिप मिलत अक्खिय मामा मुरि ॥
जँहँ निजभट तँहँ जाहु वहह बुल्लिय तव अंकुरि ॥
कछु अंतहपुर कलह अज्ज जाहु न प्रभु इकल १ ॥
तदपि दूर नृप ताहि मारि आयउ मन निर्मल ॥
गिनिये न निर्यंत अंतर गहन जक्खमूल१ तुलसी२ जहाँ॥
पुव्वहि दिवाइ गर्ता प्रचुरतर निम्मल१८८१रक्खिय तहाँ॥४६॥

हम से मिलना ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ अपनी अपनी परगह को १रोककर जहां दोनों राजा, दोनों राजा निडर२यात्रा करके चले तहां ३ पीने का जल रखनेवाले अपने ४चाकर ५ घोड़ों के चाकर सब छः सात जने साथ चले एक ६ क्षत्रिय कुल ७ हलकी हूल जाति का ८ कूंपा नामक जिसको राजा की माता अपने डायजे में साथ लाई थी इस जल रखनेवाले को बुन्दी का राजा९मामा कहता था वह भेद जाननेवाला१०साथ हुआ ११ आयुध सहित१२बड़े पेटवाले को. एक के पास का जल१३दोनों को बहुत है, बलवान् १४ चहुवाण पीछा फिरा ॥४४॥ १५हे मामा मुड़कर जहां अपने वीर हैं तहां चला जा१६खड़ा होकर बोला, आज१७जनाने में कलह है सो हे प्रभु अकेले मत जाओ. यहां१८निश्चय ही हरिणों का रहना जानकर १९ स्थान का नाम है. यहां पहिले ही बहुत२०खड्डे २१ सूर्यमल्ल ने खुदवा रक्खे थे ॥ ४५ ॥

विमंतहि अंतर विपिन भूप १ पूरन २ हय भेजिय ॥
रहि मृग घेरन रान १ तुरग थित रैय[2] उत्तेजिय ॥
तत्थ मिले वे त्रय ३ हि बदत मृगयाहि विहारन[3] ॥
भनिय रैंन १ संभर २ हि ए ३ हु अद्भुत धनु धारन ॥
तुम कहहु तो वे रक्खैं त्रिक३हिं कै दुव२कै इक१वा कतिक॥
रावरे भटहु बुल्लहु रमन[6] मृगया धनु कोंबिद मतिक ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

तब निश्चित छल जानि तिन्ह, आनि द्विगुन उच्छाह ॥
निजन बुलावन व्हीत नृप, वे ३ रक्खिय कहि वाह ॥ ४८ ॥
अरु चिंतिय तुपक न इहाँ, करैं जु पुव्वहि काम ॥
सरन बिद्ध हनिहौं सहज, गर्तन[9] घातक[10] ग्राम ॥ ४९ ॥
नियतिहि जो उठ्ठन न दै, संत्थी[11] इक १ तउ साध्य ॥
इम अंसोक[12] १ निजगर्त[13] नृप २, बैठन लिय बल बाध्य[14] ॥ ५० ॥
सोहु रान प्रत्युत[15] समुभ्कि, कज्ज[16] स्वमत अनुकूल ॥
बैठारे पंच ५ हि बिहसि, मंडि त्रि ३ गर्तन[17] मूल ॥ ५१ ॥

महाराणा और पूर्णमल इन १ दोनों ने सलाह करके वन में २ वेग से दौड़ातेहुए. शिकार के लिये ३ विहार करना कह कर ४ राणा रत्नसिंह ने बहुवाचक से कहा ५ अब तीनों को रखलेवें, अथवा दो को वा एक को रक्खें. और इतने ही तुमारे वीरों को भी बुला लो जो ६ शिकार खेलने में और धनुष विद्या में ७ चतुर होवें ॥ ४६ ॥ अपने लोगों को बुलाने में ८ लज्जित होकर उनकी प्रशंसा करके तीनों को रखलिये ॥ ४७ ॥ और विचारा कि बन्दूक तो यहां इन के पास है नहीं जो पहिले ही काम कर डाले और बाणों से बेधेंगे तो सहज में मार लूंगा ९ खड्डों में मारनेवालों के १०समूह को ॥ ४८ भारय ही जो उठने नहीं देवै तो भी एक को ११ साथी करने के साध्य (मारलेने योग्य) समझ कर राणा के उमराव भीफोलिया के राव १२ अशोक को राजा ने अपनी १३खोदी में बैठने के लिये अपने बल से१४मार लेने योग्य समझ कर लिया ॥ ४६ ॥ १५उलटा समझ कर अपने विचार के अनुकूल १६कार्य करने के लिये, तीन १७खड्डों के मूल लगाकर पांचों को बैठाया ॥५०॥

इक १ गर्ता थप्पे उभय २, सोदर सल्ह १ रु सूर २ ॥
तिम दूजी २ ढकूतनय, पूरन १ इक १ अघपूर ॥ ५२ ॥
उभय २ रहे तीजे ३ अवट, संभरनृप १रु असोक ॥
रान निजन अभिमत रचन, सूचिय छल साँलोक ॥ ५३ ॥
जिन कारो १८८।१ यह जानिलै, बध पहिलैं छल बत्त ॥
तिम इंगित साकूत तकि, रान चलिय छल रत्त ॥ ५४ ॥
रान चलन खिन सेनरचि, जु किय असोक जनाइ ॥
कहियत वह अग्रिम ३५ किरन, जिम नृपतैं सर जाइ ॥ ५५ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे १ पञ्चम ५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ वीज०याख्यानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवर्णानवेलाऽयाहार्यबुन्दीवसुधावासवव्रध्नमल्ल १८८।१ चरित्रेराणाकृतकप्रीतिसादरसभासमुपवेशितबुन्दीशसमक्षपूर्णमल्लप्रेरितचालुक्यसल्ह १ प्रामाराऽशोक २ हड्ड ६१ कुलमृषाचाकित्यकुनर्मकरण १, मत्पक्षश्रुतस्वपलायन०याख्यातशीर्षोद्द १ चालुक्य२प्रामार ३ वंशत्रया ३ऽनेकपूर्वपुरुषकातर्ययुयुत्सानिष्कोषितनिस्त्रिंशस

एक १ खड्डे में तो सल्ह और सूर दोनों सगे भाइयों को चिठाये और दूजी ओदी में २ढक्कू के पुत्र ३ पाप से पूर्ण पूर्णमल्ल को चिठाय ॥ ५१ ॥ तीसरे ४खड्डे में ५चहुवाण राजा सूर्यमल्ल और अशोक दोनों रहे. राणा ने अपने लोकों को ६ वांछित कार्य करने के लिये छल की ७ दृष्टि से सूचना की ॥ ५२ ॥ इस छल के वध की वार्ता को काला (सूर्यमल्ल) नहीं जानलेवे जिसप्रकार ८ चेष्टा से ९ अपने अभिप्राय को समझा कर, छल में १० प्रीति करनेवाला ॥ ५३ ॥ ११ राजा से जिसप्रकार पाण जावेंगे वह अगले मयूख में कहेंगे ॥ ५४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चम राशि में [illegible] वंशी चहुवाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की [illegible] की कथा बनाने के समय के वचनों में [illegible] की भूमि के इन्द्र सूर्यमल्ल के चरित्र में राणा के किये हुए प्रीति के आदर से सभा में बैठे हुए बुन्दी [illegible] सन्मुख पूर्णमल्ल की प्रेरणा से सोलंखी सल्ह और प्रामार अशोक का हाडों के कुल के झूठे कायरपन की खोटी हंसी करना, मत्पक्ष अपना भागना [illegible] शीर्षोद, सोलंखी और प्रामार तीनों वंश के पुरुषों [illegible] कायरपन निकाल [illegible] करके युद्ध के लिये खड्ग निकाल [illegible] वतसोला

स्फोटनसमुत्थितवत्सोला १ कोटा २ वसतिबुन्दीशबन्धुदेव सिंह १ राघवदास २ स्वस्वयोधनसमर्थशीपोदसामन्तसङ्घसप्रता रणसमाव्हान २, नृप १ सामन्त २ सहायससाहससमाश्वासना संरुद्धप्रत्युपवेशिततद्बन्धुयुग्मस्तारादुर्गाध्यक्षनिम्माउत १२।८ दले लसिंह १८८।१ बाबर ३० रणाराणासहायस्वजनकनृसिंह १८७।१ मरणसूचनापुरस्सरप्रपितामहतोगा १८६।१ ऽमरदुर्गसङ्गरवीरनिद्रा निदानकस्वकुलकल्पितभीतिपरिहासक्रमतारणा २, तत्कथनानुकृ तिप्रख्यापितपरकुलकार्तघ्न्यहरपालपौत्र ५।१ हरिसिंह १८८।१ नव रङ्गपौत्र ८।४ कीर्तिसिंह १८८।१ थिरराजपौत्र ९।१ पृथ्वीसिंह १८८ ।१ खाजूरिक ७।३ शिवसिंह १९०।१ हड्ड ६१ चतुष्टय ४ सङ्ग्रामस हायसूचितसङ्ग्रामस्वस्वसवित्तृसंस्थानसमर्थनासहेतुकव्यञ्जितवं शविजयपरिहासकपरपक्षप्रागल्भ्यप्रोत्सारणा ४, तदनन्तरप्रतिरणार राणासहायव्याख्यातबुन्दीशबन्धु १ वीर २ वर्गमरण १ क्षतप्रापण हड्डा ६१ धिराजद्वारहठकविधीरस्वजातीयबारूवैरविवालयिपुत्रेनृत्न कुमारसमरसंस्थानसूचनासहितस्वस्वामिकुलोत्कर्ष१परपक्षापकर्ष२

कोटा के रहनेवाले बुन्दीश के भाई देवसिंह और राघवदास का अपने अपने युद्ध के समर्थ शीपोद के उमरावों के समूह को ताड़ना सहित बुलाना, राजा को सामन्तसिंह की सहायता से हठ पूर्वक आश्वासन के साथ रोककर उन दोनों भाइयों का पीछा बिठाना और तारागढ के अध्यक्ष निम्माउत दलेल सिंह का बाबर के युद्ध में राणा के सहाय अपने पिता नृसिंह के मरने की सूचना के साथ दादा तोगा का अमरगढ के युद्ध में मारेजाने के कारण अपने कुल के झूठे डरने के इतिहास की ताड़ना करना, उस कथा का अनुकरण कर के शत्रु के कुल की कृतघ्नता प्रसिद्ध करके हरपाल के पोते हरिसिंह, नवरंग के पोते कीर्तिसिंह, थिरराज के पोते पृथ्वीसिंह, खजूरी के शिवसिंह चारों हाडों का संग्रामसिंह की सहायता जनाकर युद्ध में अपने अपने पिताओं के मारेजाने के समर्थन के कारण वंश की विजयता जानकर परिहास करनेवाले शत्रुओं की प्रगल्भता को हटाना, जिस पीछे प्रतिपक्ष रण में राणा की सहायता विख्यात करके बुन्दीश के सम्बन्धी वीरवर्ग के मरने और घायल होने की हड्डाधिराज के बारहठ कवि धीर का अपनी ज्ञातिवाले (चारण) बारू के वैर लेने की इच्छावाले कुमर नृसिंह की युद्ध में मारेजाने की सूचना सहित अपने

याथातथ्यसमर्थनासम्भावितचालुक्य१प्रामार २प्रभृतिमहोपहासक भर्त्सन ५, तथापि स्वामि १ सचिव २ प्रेरणाप्रवृद्धप्रागल्भ्यसल्लहा १ शोका २ हंपूर्विकोपहासैधमानमन्युमहीपमिहिरमल्ल १८८।१ ढक्कू मारणादिदृष्टान्तदृढीकृतशौर्यपरीक्षणप्रोत्साहनानन्तरनिशलाक-नीतनिजवीरवर्गस्वान्तशपथ १ शासना २ सहस्वैकाकि १ गमन स्वीकारण ६, शीर्पोद्दस्वशिविरजनसावधानसञ्ज्ञासूचनानन्तरसप रिकरप्रस्थितातपातपत्रायकतापीतटिनीतटावतरण ७, गम्यप्रदेशप्र च्छन्नप्रेषित सल्लह १ शूर २ऽशोक ३ भट्टलय ३ विहितविधेया तिवाहितातपासह्यसमयपुनःपुनरवज्ञातिकान्तस्ववीरविजनव्रजनव र्जनवाक्यरत्न १ रविमल्ल २ पूर्णमल्ल ३ त्रिक ३ मृगमृगयाप्र-स्थानावसरराणावारणानुकूलबुन्दीशससाहससङ्गीभूतसन्नद्धस्वज लधारकहुल्लक्षत्रियकुम्प १ प्रतिमोटन ८, याक्षमूल १ तुलसी २ सीमसम्बद्धमृगयामालसंक्रमसमयप्रतिप्रेपितविसार्जितवाजिपृथ्वीश

स्वामि के कुल की बडाई और शत्रु के पक्ष की हलकाई की सच्ची समर्थ ना जनाकर सोलंखी और प्रमार आदि बडी हसी करनेवालों को डराना, तो भी अपने स्वामि और सचिव (पूर्णमल्ल) की प्रेरणा से बढीहुई प्रगल्भता से सल्लह और अशोक के गर्व सहित हसने से बढा है क्रोध जिसका ऐसे राजा सूर्य-मल्ल को ढक्कू के मारने आदि दृष्टान्त को दृढ करके वीरता की परीक्षा के उत्सा ह करने के पीछे अपने वीरों के समूह को एकांत में रखने के लिये अन्त में अपने सोगन सहित आज्ञा देकर आप अकेले जाने को स्वीकार करना, शीर्पो द का अपने डेरे के मनुष्यों को इशारे से सावधान रहने की सूचना करने के पीछे परगह सहित गमन करके धूप की रक्षा के लिये तापी नदी के किनारे उतरना, जानेवाले प्रदेश में छांने भेजेहुए सल्लह, शूर और अशोक से सलाह कर के असह्य धूप को लांघकर वारम्वार अनादर करके अपने प्रिय वीरों को मना करके अकेले चलने के वचन कहनेवाले रत्नसिंह, सूर्यमल्ल और पूर्णमल्ल तीनों के हरिणों की शिकार गमन करने के समय राणा के मना करने के अनुकूल बुन्दीश का हठ पूर्वक साथ हुए अपने जल रखनेवाले हूल वंश के क्षत्रिय कुम्पा को पीछा फेरना, याक्षमूल और तुलसी की सीमा में शिकार खेलने के क्षेत्र में चलते समय में पूर्णमल्ल के भेजेहुए घोडों को भूलकर हरिणों को लाने की

१ पूर्णमल्ल २ मृगानिनीषुतुरगारूढराणा १ सहसञ्चरणसङ्केतित स्थानमृगव्यमिषपूर्वप्रेरितचालुक्य १ प्रामार २ सामन्त ३ त्रय ३ सम्मिलन ९, स्वकृततत्सङ्गीकरणराणाप्रार्थननिश्चिततच्छलघात समिद्धोत्साहसावधानबुन्दीशप्राक्प्रणायितगूढगर्तप्रदेशप्रापण— १०, प्रथमगर्तोपवेशितचालुक्ययुग्म २ द्वितीय २ गर्तप्रस्थापितपूर्ण मल्ल १ स्वान्तसंस्थानसङ्गीकृतप्रामारो १ पेतपृथ्वीशभाकर २ तृतीय ३ गर्तोपविशन ११,सम्मताऽशोकसाहित्यस्वाभिमतसाधना नुकूल्यमृगानयनप्रतिष्ठमानराणास्वकीयसामन्तचतुष्क ४ स्वाभी ष्टसाधनसंज्ञासूचनं १२ पञ्चत्रिंशो ३५ मयूखः ॥ ३५ ॥

आदितो द्व्यशीत्युत्तरैकशततमः ॥१८२॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

निजभट चउ४ हड्ढ१ हिं हनन, रक्खि सु कथित त्रि३ ओकं॥
चलिय रान तँहँ छल चतुर, सूचिय सैंन असोक ॥ १ ॥

षट्पात ॥

इच्छा से राणा का घोड़े पर सवार होकर साथ चलने के संकेत से उस स्थान में शिकार खेलने के मिस से पहिले भेजेहुए सोलंखी और प्रामार तीनों उम रावों से मिलना, उनको साथ रखने की राणा की प्रार्थना को स्वीकार करके उनकी छलघात को निश्चय जानकर युद्ध के उत्साह से सावधान बुन्दीश के पहिले खुदाये हुए छिपे खड्डों के प्रदेश में प्राप्त होना, पहिले खड्डे (ओदी) में दोनों सोलंखियों को और दूसरे खड्डे में पूर्णमल्ल को रखकर अपने नाश का साथी करके प्रामार सहित राजा सूर्यमल्ल का तीसरे खड्डे में बैठना, अशोक की संमति मिलाकर स्वामि के वाञ्छित साधन के अनुकूल हरिणों को लाने में रुकेहुए राणा का अपने चारों उमरावों से अपने अभीष्ट साधन की इशारे से सूचना करने का पैंतीसवां ३५ मयूख समाप्त हुआ॥३५॥ और आदि से एकसौ बयासी १८२ मयूख हुए ॥

ऊपर १ कहीहुई २ तीनों ओदियों में अपने चारों उमरावों को हाडा के मारने के अर्थ रखकर छल में चतुर वह राणा वहां से चला उस समय अशोक नामक पंवार ने इशारे से सूचना की ॥ १ ॥

भूखे संजुत भल्ल पिक्खि संभर ढिग पंचक ५ ॥
सूचिय रानहिं सैन रैनै पामार अलंचक्कै ॥
चलतबेर चित्तोरस्वामि १ अक्खिय बुन्दीस २ हिं ॥
देखन निज सरें देहु अप्प जे लिय भजि ईसहिं ॥
बुंदीस उठि पंच५हि बिसिख हयथिंत रिपुहिं दिखात हुव ॥
अरु कहिय लब्ध इक१ भल्लयंह भूखो भखनै पसिद्ध भुव ॥२॥

दोहा–पंच५हि सर जब पोनेतैं, बढि ऐंचिय लववंसें ॥
पहु भूखा करपल्लवन, दब्बिय रचि संदंसें ॥ ३ ॥

मनोहरम्–देखनके ब्याज बुंदीपतिसों कथनकरि,
दखतही बंचक सराहि सर तूठेलों ॥
संभरके संयतैं समस्त लैंन लागो ऐंचे,
भूखो दाबिराख्यो तब भूपहु अनूठेलों ॥
पूरब पितामह गभीरता गहन दखो,
राम २०३४ छितिपाल न जनाई रीति रूठेलों ॥
मारन जतन रावमल्ल१८८०तैं रतन रान,
लीनैं बान च्यारि४ एकलव्यकं अँगूठेलों ॥ ४ ॥

१भूखा नामक भाल सहित चहुवाण के पास पांच बाण देखकर २राणा रतनसिंह को फिर४रोककर उस प्रामार ने३इशारे से जनाया. अपना५बाण देखने को दो. आपने६महादेव की सेवा करके लिया है. पांचों७बाण८घोड़े पर चढेहुए शत्रु को दिखाये. यह एक भाल९मिला है जो 'भूखा' इस नाम से१०खाने में पृथ्वी पर प्रसिद्ध है? ११हाथ से १२रामचन्द्र के बडे पुत्र लव के वंशवाले महाराणा ने खैंचे.राजा ने भूखा नामक बाण को१३हाथ की अंगुलियों की१४संडासी रचकर दबालिया ॥ ३ ॥ १५मिष से१६ठगने१७प्रसन्न होवें जिसप्रकार. चहुवाण के१८हाथ से हे भूपति रामसिंह तुम्हारे पूर्व पितामह की१९गम्भीरता देखो कि अप्रसन्न होवें तिस प्रकार रीति नहीं जनाई २० द्रोणाचार्य ने एकलव्य का अंगूठा ले

महाभारत में एक कथा है कि एकलव्य नामक भील ने मृत्तिका के द्रोणाचार्य रचकर उसको गुरु मानकर बाणविद्या सीखी थी सो अर्जुन से बढगया इस ईर्षा से अर्जुन ने द्रोणाचार्य को सिखाकर गुरु दक्षिणा में एकलव्य का अंगूठा कटवा लिया था। इसके लिये ऐसा भी प्रसिद्ध है कि तभी से एकलव्य के वंशके भील बाणविद्या में अंगूठे का काम में नहीं लाते, और दो अंगुलियों से ही तीर [illegible] हैं।

किरीटः ॥

लै चउ४बान सराहत रान कह्यो नृप[1] राखहु जो मन ए वर[2] ॥
त्यौंहि लये लखि तून तदायहुतैं[3] करखे[4] गहि पुंख उभै२सर ॥
लेत सु जानि दब्यो पय रान तऊ चहुवान निकासिलये कर॥
रोध फलैं न बली बलअग्ग[6] इँचे[7] हयको चरमंग[8] उठ्यो पर॥५॥

बदियं जँहँ रान[9] विनुदानौं[10] लियबान तँहँ चवियं[11] चहुवान रदुव२च्यारि दैकैं
मारि मन रैन यह बैन करि सैन मृगलैन गय औनैं[12] हिय हारि दैकैं
ए४रहिय चूक खिनैं[13] हेरि तँहँ टेरि मिस रान फिरि फोरि मृग घेरि लायो
स्याम[14] द्युति देहु हनि एहु चलि गेहु अब नेहु फल लेहु[15] बच यौं लगायो ६

सदनावतारः ॥

सोहि सुनि सूर १८८१९ मृग पूर दृग दूर दिय,
हेरि तसमाँहिं सुहि आँहि कहु नाँहिं हिय ॥
मन्नि तिहिं रंग निज अंग छल भंग मन,

लिया था इसप्रकार चारों बाण लेलिये ॥ ४ ॥ १ राजा सूर्यमल्ल ने कहा. आप के मन में २ श्रेष्ठ दीखते हैं तो ये बाण रक्खो. उसके ३ भाथे से ४ खींचे ५ राणा ने पैर दबाया अर्थात् घोड़े के रान लगाई तो भी चहुवाण ने हाथ से वे बाण निकाल लिये. बलवान के बल के आगे ६ रोकना फलीभुत नहीं होता ७ खींचने से. घोड़े का ८पीछला अंग ॥ ५ ॥ राणा ने जहां ९कहा कि १० विना दिये ही बाण लेलिये. तहां चहुवाण ने ११ कहा कि चार बाण देकर दो लिये हैं. हृदय रूपी १२घर में पराजय देकर राणा के ये चार उमराव चूक करने के १३समय रहे थे १४काले को मारना और घर चलकर स्नेह का फल लेना. इसप्रकार १५वचन कहे ॥ ६ ॥ वीर सूर्यमल्ल ने यह सुनकर हरि णों के समूह से दूर तक दृष्टि दी परंतु उनमें इस रंग का हरिण नहीं होने के कार ण हृदय में अपना काला रंग मानकर छल से मारना समझ कर उस (भूखे ना १३८) बाण को सन्धान करके उस स्थान में

संधि सुहि बान हुव थान अवधान[1] सन ॥ ७ ॥

प्लवङ्गमः—ईम न तज्यो[2] सर अप्प भ्रजत[3] मृग ब्रातपैं[4],
रहिय रिपुहु तिम रुक्कि ढुक्किय[5] घन घातपैं ॥
न तजन बान निदान[6] रान इत आइकैं[7] ॥
पुच्छिय छलन प्रकार नृपहिं नियराइकैं ॥ ८ ॥

रुचिरा ॥

भूप भनिय तुम एन[8] असित कहि तीर तजन किम चित्त चहो ॥
रान कहिय मृग होहि असित इक[9] क्यों न हनिय तुम स्वमत कहो ॥
बंचि[10] कुहक नृप नैन अधम इम रैन सचिव कँहँ सैन दई ॥
पूरनमल्ल तबहि सर संहित[11] ज्यों[12] सु करखि करि कानलई ॥ ९ ॥

महाचर्चरी ॥

रैन[13] पूरन सैनकैं नृपको स्वबैन सुलात भो इम ॥
अप्पहू उत कानदै तस बान तान हरैं[14] सुन्यो तिम ॥
अंखि रानहि टारि सो सुनि मोरि पूरन[15] ओर आनत ॥
छुट्टि पूरन[16] बान गो चहुवानके हिय प्रान छानत ॥ १० ॥
चञ्चला-भेदि[17] ही चुहान १ को चुहान२ को लयंत मल्ल ॥

१सावधान होगया।७।२इस कारण ३चलते हुए मृगों के ४समूह पर. विशेष घात कर ने पर५लगे. बाण नहीं छोड़ने के ६कारण राणा ने इधर आकर. राजा को ७समीप लेकर॥८॥राजा ने कहा कि तुम काले८हरिण पर तीर छोड़ना कहकर मन में क्या चाहते हो९अपना विचार कहो उस जालसाज रत्नसिंहने राजा के नेत्र१०बचाक र सचिव पूर्णमल्ल को इशारा दिया. बाण को११संधित (सन्धान)करके उस१२ प्रत्यंचा को खींचकर कान तक ली।९। १३रत्नसिंह ने पूर्णमल्ल को सैन करके अपने वचनों से राजा सूर्यमल्ल को इसप्रकार सुलाया. आप (सूर्यमल्ल) ने उध र कान देकर उस बाण खैंचने के शब्द को १४ धीरे से सुना, उसको सुनकर राणा को छोड़कर नेत्रों को मोड़कर १५ पूर्णमल्ल की ओर लाते ही चहुवाण के हृदय और प्राण को छुदा करता हुआ १६ पूर्णमल्ल का बाण छूटा ॥१०॥ कोठारिया के राव पूर्णमल्ल चहुवाण का तीर लगते ही बुन्दी के रावराजा सूर्यमल्ल चहुवाण का १७ हृदय भेदन होकर

मर्म छिन्न होत ठहे *अगूढ †मूढ ‡मित्रमल्ल१८८॥,
चोटके समान पिट्ठि ओटकी दई चपेट ॥
भीर वीर लिन्न सो असोक किन्न कालभेट ॥ ११ ॥

दोहा चञ्चरीकर द्विर् भङ्गा १ लघुत्वे ॥
अमृतध्वनिकुण्डलिका २ संयुक्तपूर्वगुरुत्वे ॥

टिकिय छिकय हिय तोहु §टुक मोहहिँ रोकि महीस ॥
प्रामार न चाहैं प्रथम इम हुव॥डसन अहीस ॥
हीसँ स्तवन गिरीस स्मृति रु सरीस प्रभुहुव ॥
तीर प्रहत सरीर स्वकँ बल बीर प्रतिभुव ॥
टेक स्थित उरफेट स्फुरित चपेट द्रुत दिय ॥
रोक स्थल पँल ओकँ स्फुटन असोक स्फुटिकिय ॥ १२ ॥

॥ रोला ॥

भूप १ रान २ इम भनत दिट्ठि टरतहि पूरन द्रुत ॥
संधिय सर जो सोहि नृपति हिय बेधि तजिय नुँत ॥
भँदर करुत हाले पिट्ठि ऍवट तट सम असोकँ किय ॥
करि पुनि सिर धनुँकोटि छिकत हिय महिप मोहँ लिय ॥१३॥

मर्म कटते ही *प्रगट ही †सूर्यमल्ल ‡मूर्च्छित होगया सो चोट लगाने के समान पीठ को चपेट देकर उस वीर ने अशोक को दवालिया और काल के भेट कर दिया अर्थात् मारडाला ॥११॥ हृदय छिकगया तो भी वह राजा§क्षणमात्र टिककर मूर्च्छा को रोककर प्रमार पहिले प्रहार न करै इसप्रकार ॥डसने (खानें) को १ सर्पराज के समान हुआ २ हृदय के साथ महादेव की ३ स्तुति और ४ स्मरण करके वह प्रभु ५क्षोभयुक्त हुआ. वह वीर तीर से हतहुए शरीर को और ६ अपने बल को ७जामिन (जमानतदेनेवाला) करके तट में स्थित होकर छाती की फेट देकर ८ स्फुरणा के साथ, वा शीघ्र उद्धत चपेट देकर ओदी के स्थल में ९ क्षणभर में उस ११ खोदेहुए १० घर में उस अशोक नामक प्रामार को १२ फूटीहुई ककड़ी के समान कर दिया ॥ १२ ॥ १३ स्तुतियोग्य १४ तीर १५ नाड़े के किनारे पर १६ राना अशोक को अपने समान कर दिया १७ धनुष की कोटि से मस्तक लगाकर राजा (सूर्यमल्ल) १८ मूर्च्छित होगया ॥१३॥

॥ हरिगीतम् ॥

लखि झुकत भूपहिँ सिद्धफल गिनि रान१पूरन २ सौँ कह्यो ॥
दिय ताहु बुंदिय सोहु सुनि चल भीरु व्हाँ बचिबो चह्यो ॥
न उठ्यो तहाँ गहि बाहु चालुक द्वै २ उठे क्रम नीरज्यौँ ॥
मुरि बैन बुंदिय दैन सुनि त्रिक ३ हड्ड बेधिय तीर ज्यौँ ॥ १४ ॥

अमृतध्वनिकुण्डलिका१संयुक्तपूर्वगुरुत्वे ॥
कलोनदोहा १ चञ्चरीक २ द्वि २ भंगी२तद्भावे ॥

प्रतिभट लखि भान प्रगुनँ, हाँन ध्रुव असु हल्ल ॥
व्याँन प्रम पुनि बाहुरयो, मान क्रम रविमल्ल १८८।१ ॥
मान क्रम रविमल्ल प्रतिमँ रु काँन श्रमथित ॥
प्राँनंथयय भुवदान श्रवन निदान प्रकुपित ॥
कान प्रमिति समान क्रमन बितान ज्य बिकट ॥
बान प्रखर कमान च्युत किय रान प्रतिभटँ ॥ १५ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

सल्ह १ सूर २ दोउ २ न उठाइ गहि बाहु दुत्र २ ,

उस १चलायमान कायर ने. पानी के २समान लेगये [नीची भूमि में पानी को जिधर लेजावै उधर ही जाता है इस क्रम से दोनों सोलखी उसको उठाकर महाराणा की ओर ले चले, यहां व्यंग्य से महाराणा को नीची भूमि बताने के कारण जल के क्रम की उपमा दी है] बुन्दी देने का वचन सुनकर पीछा मुड़कर हाडा ने उन तीनों को तीर से बंधे ॥ १४ ॥ ३ शत्रु को देखकर ४ प्रकर्ष गुणवाले ज्ञान सहित निश्चय ही ६ प्राण की ५ हानि होते समय ८ परम [उत्कृष्ट] रीति से ७ सब शरीर में रहनेवाले वायु के पीछे फिरेहुए क्रम को मानकर (प्राणजाते समय व्यान वायु के पीछे पलटने से मनुष्य मात्र को चेत होजाता है जिसको लौकिक में 'सूनससाळा' कहते हैं. सूर्यमल्ल ने ९ सूर्य के १० प्रमाण और उसी क्रम के सदृश श्रम के साथ कबान की प्रत्यंचा को. श्वास की ११ काण [कमी] के श्रम में भी स्थित होकरके १२ प्राण के जाते समय १३ अपनी भूमि का देना सुनने के १४ कारण क्रोधित होकर कान १५ पर्यंत विकट१७प्रत्यंचा को. मान सहित१६विशेष खैंचने के क्रम से कबान करके १८ तीक्ष्ण बाण से राणा के२०वीरों को१९गिराये ॥ १५ ॥

ढक्कूसुत ३ रोकितैं निकास्यो सुजरेकेकाज ॥
तीन ३ हि बरब्बर मिलान अहिपाल देखि,
भूखोभल्ल टारयो सो प्रहास्यो चहुवानराज ॥
फूटि परे तीन ३ अघलीन वे उलटि ऐसैं,
जलहीन दीन तलफत मीन पाँज ॥
देखत इन्हैं ३ यौं रविमल्ल १८७१ हि जियत जानि,
रान भजिजान व्हाँ विचास्यो मन लाईलाज ॥ १६ ॥

॥ ॥

पूरन अंतके आवत रवास यौं रानकों बैनके बान प्रहास्यो ॥
कारो कैं वंड हनाइ हमैं भजिकैं तुम जीवन बाढ विचारयो ॥
इह६१बली तजिहै न तुम्हैं जिहि इक्कहिं अत्र चतुष्टय४धारयो।
मान न प्रानन लोभ भजो तऊ रान न याहि तजो बिनुमारयो१७

॥ चूडालादोहा ॥

सुनि सुरि हंकिय इह ६१ सिर, रान रतन कर कहि कृपानहिं ॥
भूप बिहसि लखि तिहिं अनिय, जाहु अबहि तजि नाम निदानहिं १८

॥ हीरकम् ॥

रानहु तदपि सु रुक्यो न घोथिकैं पुनि प्रेरयो ॥
जब लिय नृप बान जुग २ सु इतउत हसि हेरयो ॥
पिट्ठि परत दिट्ठि सरैत निट्ठि डगत रगमो ॥

१छोटी से. राजा सूर्यमल्ल ने. तीनों पराय२शंलहुए देखकर. पानी के बाहर ३ताल पर ४ उपाय रहित ॥ १६ ॥ ५ पूर्णमल्ल को ६ वचन के बाणा से ७यह लोकोक्ति है कि काले सर्प को बांटा [पूंछकाट] कर छोडने से वह अवश्य डसता है इसप्रकार हम काले को बांटा करके हम को नष्ट कर तुमने ८ अधिक जीना विचारा है. बिना ९ जान से माणों का लोभ करते हो तो भी हे राणा इसको मारे बिना मत छोडो ॥ १७ ॥ १० . . . निकाल कर ११राजा सूर्यमल्ल ने. नाम का १२कारण छोडकर जाओ ॥ १८ ॥ १३ तो भी १४ घोडों को चढा या. दृष्टि १५चलकर पीछे को पड़ल ही अर्थात् पीछे देखते ही डरताहुआ कठिनाई के साथ हुआ था

*सहसर १ तह वह असोक २ भासिय जिय भंगभो ॥ १९ ॥
निश्शाणिका—पुनि हसि इक्क१हु बान पहुं निज पास न जान्यों ॥
नि२यरावत रानहिं निरखि बध छद्म३ बखान्यों ॥
बलि अक्खी अबहू बचे करतव्य हु किन्नों ॥
जाहु जाहु कपटी जियत हम मैं असु४ दिन्नों ॥ २० ॥

महापद्धतिः ॥

सुनि यहहु रान गिनि जियत सूर१८८१, पेरिसु हय उप्पर कुपित पूर
भूपतिके मस्तक अग्रभाग, मारिय कृपान कछु झुकि कुमार्ग ॥
अलि६कास्थि उलटि कटि हगन७ आत, पच्छो जमाइ तिहिं पेच पात॥
आवतगर्तातट९ आहत अंध, बुंदीस गहिय हय जेरबंध ॥ २१ ॥
चामरः—आत पाँ१०नि जेरबंध रानअश्व औ११झक्यो ॥
तास जोर उट्ठि ताहि सत्थ लैंन त्यौं तक्यो ॥
बस्त्र जो कटी१२तटी सु ऐंचि बाहुकैं बल्यो ॥
चाहुवान१ गर्त१३मैं उतारि रान१ पैं चल्यो ॥ २२ ॥

नाराचः पञ्चचामर इत्येके॥

कटार टेकि बीर कंठ१ चीर नाभि२ लौं करी ॥
इतेक बीच नीर१४पान बानि रान उच्चरी ॥
कटार कोन१५ तास मोन१६ लुप्त हान लै कही ॥
यहैंहि बाँ१७रि और क्यों च१८हैं डस्यो बि१९सैं अही ॥ २३ ॥

वह राव अशोक * बाण सहित भंग हुआ दीखा अर्थात् सूर्यमल्ल के पास दूसरा बाण था वह पीठ के बल लगने से अशोक के साथ टूटगया ॥ १९ ॥ १ राजा ने २ समीप आतेहुए ३ छल से मारेहुए ने कहा. मैंने ४ प्राण दान दिया ॥ २० ॥ ५ कुरीति से ६ ललाट की हड्डी कटकर ७ नेत्रों पर आते ही ८पगड़ी के पेच लगाकर ९ओदी के किनारे ॥ २१ ॥ १० हाथ में जेरबंद आते ही राणा का घोड़ा ११ चमका १२ कमरबंधा खींच कर १३ खड्डे में गिराकर ॥ २२ ॥ राणा ने १४ पानी पीने का वचन कहा. कटारी की १५ नोक से उसीका १६ रक्त लेकर. यही १७ पानी है १८अब तुम्ह १९ सर्प के डसेहुए को दूसरा पानी क्यों ॥ २३ ॥

चर्चरी ॥

नीर पीवन१ दूर *मंगन२मैं हु †चित्र निहारिये ॥
बाल्य जो दिय दासि पै तस गंध हेतु बिचारिये ॥
तास ‡अस्रहि आक्खि यौं रु कटारतैं मुख तासदै ॥
व्है रह्यो चढि छत्तिपैं जम भखवादिन हासदै ॥ २४ ॥

हरिपदम् ॥

कछु चेतन जुत भूप१ रान२को, लोहित मुच्छन लाइ ॥
तस धरपरहि रह्यो झुकि जो तब, रिपुसिर१सिर२हिं लगाइ।२५।

मोहिनीबरवतीत्येके ॥

शुद्ध कनकम१ संखल, प्रभु जुग२पाय ॥
नायक पँवि बिच निर्मल, सुरुचि सहाय ॥ २६ ॥

राजसवतिका ॥

पूरन बान छिद्रत हिय जब पहु मारि चपेट असोकहिँ मारि ॥
अवयव फुटित मोहि भजि अप्पहु टिकिय अवटतट बोधबिसारि ॥
देखत कछु अनुचर दुरि दूरहि भाजि तिन भनिय हनिय निज भूप ॥
पुनि त्रिक३मारि रान४तल पारत अनुचर तसहु भजे अनुरूप ।२७।

सौराष्ट्री दोहा ॥

अनुचर तिनमैं एक१, रान कृपापात्र जु रहैं ॥
बलि जिहिँ हीनबिबेक, च्युतअसु गिनि भूखन चहैं ॥२८॥

आर्या गाथा वा ॥

तिहिँ आइ अवट अंतर भृंखल कढ्ढनैं छुपो चरन प्रसरयो ।

पानी पीना तो दूर है परन्तु इस*मांगने का भी †आश्चर्य देखा. मुझको बालपन में दासी ने दूध पिलाया था सो यह उसके दूधका कारण विचारना चाहिये. उसका ‡रक्त।२४।१रक्त॥२५॥सुवर्णके२लंगर३हीरा४कान्ति।२६।५पूर्णमल्लके बाण से६मूर्छित होकर७आंदी के किनारे८बेचेत होकर९उस राणा का सेवक भी।२७। १०मूर्ख११मराहुआ जानकर।२८।१२खड्डे के भीतर आकर१३लंगर निकालने को

स्वांत भनिय तब संभर, तिक³मैं इक¹ बचि छुवत तनुकौं।२९।

गीतिः ॥

ऊँधेहि रान उप्पर, भरनदसा ज्यौं चरन निज समेट्यो ॥
तँहँ वहि छुवत कृपनतँर, बंच्छहि लत्तौ प्रहार करि वेध्यो । ३० ।

आर्यागीतिः

पादाग्र¹ उर पइट्ठो, अंगुट्ठरकठ्यो सु तोरि वंस उतैं यौं ॥
दुर्जन पर जिम दिट्ठो, रन ढुड्डर पाय घत्ति संभर नामी ॥ ३१ ॥

उद्गीतिः ॥

अद्ध घरी वितयैं इम, रानपरहिं प्रान छोरि रह्यो ॥
जावत इक १ घटिका जिम, सह नृप¹सत्तर¹⁰हिं डरेरहे सूनैं ।३२।

---

२ चहुवाण ने ¹मन में कहा. परन्तु तीनों अवस्थाओं में से ३ शरीर को स्पर्श करता है ॥ २९ ॥ ४ अत्यन्त कृपण ५ हृदय को ६लात के प्रहार से ॥ ३० ॥ ७ पैर का अंगूठा छाती में घुसगया ८ पीठ की हड्डी को तोड़ कर ९ युद्ध के विजय का लंगर पहन कर १० *शत्रु

---

*सूर्यमल्ल के मारेजाने में जो कारण बुन्दीवाले वताते हैं वही कारण उदयपुरवाले महाराणा अरिसिंह के मारेजाने में वताते हैं जिसका वृत्तान्त तो इस ग्रन्थ के अष्टमराशि के अजितसिंह चरित्र की टीकामें लिखा जावेगा, परन्तु व्यभिचार के दोष से राव सूर्यमल्ल और महाराणा अरिसिंह के छलघात से मारेजाने में हम उक्त दोनों राज्यवालों के कथन मिथ्या और अनुचित समझते हैं क्योंकि बडे राजाओं पर बराबर वालों की स्त्रियों से व्यभिचार करने [महाराणियों पर व्यभिचारणी होने] का दोष लगाना ग्रामीणलोकों का कार्य है बीकानेर का नैणसी महता इस समय से दो सौ वर्ष पहले अपनी किताब में लिखता है कि महाराणा सांगा ने रणतभँवर का गढ अपने पुत्र विक्रमादीत को दे दिया था जो रत्नसिंह रखना नहीं चाहते थे और राव सूर्यमल्ल अपने भानजे विक्रमादीत की पक्ष पर थे इसकारण से सूर्यमल्ल को छलघात से मारा जिसमें राणा रत्नसिंह भी मारे गये यही बात मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद में कविराज श्यामलदास ने लिखी है जिसीको हम सत्य मानते हैं ॥

इस कथा में जहां तहां जनाने के भीतर स्त्री पुरुष में हुई गुप्त वार्ता और ओदी में सूर्यमल्ल के मारेजाने में जो प्रश्नोत्तर लिखे हैं वहां परमेश्वर के अतिरिक्त कोई देखने और सुननेवाला नहीं था फिर ऐसी गुप्त वार्ता को जानने में देवता भी समर्थ नहीं हैं तो मनुष्य की तो क्या चलाई इसमें हम सूर्यमल्ल के सत्यवक्तापन में दोष नहीं लगाते परंतु बुन्दी की ख्यात जो ग्रन्थकर्ता को मिली वह कपोल कल्पित जान पड़ती है, जिसका प्रमाण स्वयं ग्रन्थकर्ता के इस लेख से स्पष्ट होता है कि सूर्यमल्ल आदि एक घड़ी तक मरेहुए सूने पड़े रहे, तो फिर वहां की बातें कैसे जानीजासकती हैं ॥

॥ उपगीतिः ॥

एका कि १८८१२ मरनवारी, पहुँची इत सुद्धि जब पहली १ ॥
मन्नि जरन मामारी १८४१४, उठी सु सस्सू खिजि अहोरी । ३३ ।

॥ वैतालीयम् ॥

रट्ठोरि कह्यो बहू रहो, न कु रजपूत सु संगहोनको ॥
इहिं पयमैं सिंहनी अहो, पालिय ताहि लजाइ जो परयो ॥३४॥

॥ औपच्छन्दसिकम् ॥

दीसत रहिगो जु दुद्ध दासी, पायो तासहि अंस पोर्ततामैं ॥
कहि इम निज दुग्धकी निकासी, धारा कुट्टिम ग्रांवमैं गडीजो३५

॥ आपातलिका ॥

पहु मातुल कुंप कह्यो जो, पहिलैं उत पहुँच्यो नृपपैं सो ॥
रिसबस गिनि दूर रह्यो जो, लखि अरिपैं बिरुदावन लग्गो ३६

॥ मामत्राकम् ॥

जब बुंदीस अंनसु दृढ जान्यौं, तब ढिगजाइ रुदन घन तान्यौं ॥
स्वप्रभु अरिउरपरहि सुहायो, इम थुरमाँ तिहिं छबिहिं उढायो ३७

॥ विश्लोकः ॥

इहिं अंतर परजंन कति आये, रानहि गहि भजिबे बतराये ॥
हुल्ल कहिय यह छबि खिन हैहीं, इतके सबैहु इहाँ लखि लैहीं३८

॥ वानवासिका ॥

रुकत न तदपि सु गहि असि रुट्ठो, बपु तिलतिल करि प्रहंनन बुठ्ठो॥

हुए पड़ेरहे; अथवा विना संभाले हुए पड़े रहे ॥ ३२ ॥ सूर्यमल्ल के १ अकल मरने की २ खबर ३ सासू ने क्रोध करके ४ रोकी ॥ ३३ ॥ ५ कु रजपूत नहीं है इस ६ दूध से ॥ ३४ ॥ ८ बालपन में दासी ने ७ दूध पिलाया था उसका अंश रहगया दीखता है, यह कहकर दूध की धार निकाली सो ९ दीवार के १० पत्थर में घुसगई ॥ ३५ ॥ ११ राजा सूर्यमल्ल का १२ मामा ॥ ३६ ॥ निश्चय ही १३ मराहुआ जाना १४ इसकारण दुशाला ओढादिया ॥ ३७ ॥ १५ शत्रु लोग कूपा नामक १६ हूल जाति के क्षत्री ने कहा ॥ ३८ ॥ १७ तलवार लेकर क्रोधित हुआ १८ शरीर १९ शस्त्रों की वर्षा करी

रन कुंप परत उठाइ रानाँ, खलजन बहु भजिगये खिसानाँ ।३९।

॥ चित्रा ॥

सिबिर[1]जनहुइतभजतहिसुनिकैं,लुटि[2]गेयकतिकति[3]खलखियलुनिकैं
रान तियहु जँहँ जरन बिचार्यो, नगर जनन तस बिघन बिचार्यो॥

॥ सामान्योपचित्रा ॥

अक्खिय निज सस्सू १ हिँ बहूर्यौं, जेठी भगिनी इष्ट बनैं ज्यौं ॥
जिम पुरजन ढिग तास न जावैं, रक्खिय इम रु उच्छाह रचावैं ॥

॥ विशेषोपचित्रा ॥

जतन कियउ रट्ठोरिहु जैसैं, निजसुत नास सुन्यौं तँहँ तैसैं ॥
सब मृति सुद्धि[4] यहै जब आई, बंटिय बहु रट्ठोरि बधाई ॥४२॥

॥ सामान्यकुलकम् ॥

सह खट[5] रिपु सुत १ मरत सुनतही,
अन्य निजहिँ गिनि सीस धुनतही ॥
तनयबधून[6] अविय खेतू १८७१३ तब ॥
इच्छहु संग सु होहु भली अब ॥ ४३ ॥

॥ विशेषपादाकुलकम् ॥

पै हम लखहिँ जरहु ह्याँ पुत्री, तुम पिय१छह[6]आरि हनैं अतंत्री[6]॥
क्रम इम पुनि शृंगारहु कीजै, दइत[7]रु निजरहित यह सब दीजै४४

॥ त्रिभङ्गी ॥

सस्सू वच यौं सुनि प्रासादहि[8] पुनि दारु[9] चिता चुनि कूट[10] करी ॥
चंद्राउति१८८१३टारिय यह सुतवारिय जँहँ पहु[11] प्यारिय त्रय३हि जरी॥
जँहँ जग जस तारन प्रचुर[12] प्रकारन बहुद्विज बारन[13] दान दयो ॥

---

१ डेरा के लोक. कितने ही २भागगये कितनों ही को ३ काट डाले ।४०।४१। जब सब के मरने की ४ खबर आई तब ।४२। ५ पुत्र की स्त्रियों से कहा ।४३। ६ बिना कवचवाले ने ७पति के और अपने लिये यह सब है सो दान करो ॥४४॥ ८महलों में ही ९काठ की चिता का १०समूह करके ११राजा की प्यारी तीनों स्त्रियें सती हुई १२बहुत प्रकार से १३हाथी

तिनही*तदनंतर|जन्म१८८१ |मल्लू§वर पुत्र बिरह परलोक लयो।

॥ तोमरः ॥

कलि तापिका नदि कूलं, सुनि भो इतैं छिय सूल ॥
रन रानके बहु बीर, भिरि त्हाँ रहे पति भीर ॥ ४६ ॥

॥ हनुमत्फालः ॥

सामंत१८७१कीरतिसीह१८८१२,इमहरि१८८१३दलेल१८८१४अबीह
इन चउ४न लाहि घन पाप, किय मृतक बहु अरि काप ॥४७॥

॥ उक्कुरः ॥

दुव२तँहँदेव१८८१।१राघवदास१८७१।२, निजबलरानभटकरिनास
तिल तिल अंग धारन तुट्टि, लिय दिव जाइ सुरँ सुख लुट्टि ॥४८॥

॥ वेतालः ॥

इन्ह१२ आदि बारह १२ बीर बुंदियके रहे रनरंग ॥
इक १ देव १८८१ बीर जयंतिका किय त्हाँ अमस्तक अंग ॥
दिल्लीस ३० के रन दग्ग लग्गिय सो असेस उडाइ ॥
रन देव १ राघव २ यौं रहे खल केक खग्गन खाइ ॥ ४९ ॥

॥ कलहंसः ॥

भट रानके इक्कीस २१ प्रान बिनाँ भये ॥
पहु १८८१ रान १ संजुत पंच त्हाँ पहिलैं हँये ॥
जुग २ सेनके नृप नास जानतरी जुरे ॥
मृत तत्थ सत्रह १७ रानके भजतैं मुरे ॥ ५० ॥

॥ कलापिनी ॥

सामंत १८७१२ आदि चतुष्क संजुत बीस २० जे ॥

---

*[illegible] |[illegible] की|माता ने§अष्ट पुत्र के विरह से परलोक लिया ॥[illegible] नदी के२पार ॥४६॥४७॥३स्वर्ग में४देवताओं का सुख लूटा [illegible] शब्द स्त्रीलिंग है परन्तु लोक रूढी से पुल्लिंग लिखा है, ॥४८॥ ५विजय. दिल्ली के बादशाह बाबर के युद्ध में भागजाने का ६दाग लगा था सो सब उड़ाया ॥ ४९ ॥ ७मारे ॥ ५० ॥ ५१ ॥

वपु घाय पाइ वचे वली विजई वजे ॥
गत प्रान नृप जँहँ सुभट बुंदियके गये ॥
भल रीति दाहन भपको करते भये ॥ ५१ ॥
सजे १ वजे २ अन्त्यानुप्रासः ॥

झम्पातालः ॥

इक १ दास चउ ४ भट जे अरी, तिनकीहु दहनाक्रिया करी ॥
सह कुंप१तेरह१३सत्थ[1] के, अरिदहिय सत्तह१७अंत्थके[2] ॥ ५२ ॥

सम्प्लुता ॥

रनभू छुराइ रु रान१ कौं, कति लै भजे गतप्रानकौं ॥
जिन्ह चम्मली तट[3] जातही, चुनि कट्ठ[4] दाहनकी चही ॥ ५३ ॥

किरीटिनी ॥

परँ[5]२ तीर राघव १८७१ की प्रजा तिनकी तुपक्कन ॥
जँहँ दाहतेहु दये भजाइ धुजाइ धक्कन ॥
जिन भज्जि चम्मलि १ नानते २ बिच रान जारिय ॥
हठि चित्रकूट गये सबै इम धर्म हारिय ॥ ५४ ॥

कर्पूरः ॥

इत हुव गनेस आराम[6] अब, जँहँ सु रान रानिय जरिय ॥
समर प्रसूँहि[7] उपहार[8] सब, क्रमसह तँहँ प्रेपित[9] करिय ॥ ५५ ॥

कुंकुमः ॥

पहिलैं कहीहु नृपकी प्रिया त्रय३ हि जरी महलन तिम ॥
जिन्ह लखि मरी सु नृपकी जननि, गोखतैंहि गिरि वह इम। ५६ ।

चतुष्पदी ॥

चिति[10] परँ तिन्ह चौरों[11]१प्रासादहि, प्रभु राम२०३।४वन्यौं इम राजैं ॥

---

१ साथ के २ यहां मरेहुओं को जलाये ॥ ५२ ॥ ३ चामल नदी के किनारे पर ४ काठ चुनकर ॥ ५३ ॥ ५ परले किनारे ॥ ५४ ॥ जहां अब गणेश ६ बाग हुआ है वहां राणा की राणी जली. चहुवाण की ७ माता ने ८ सामग्री ९ भेजी ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ उनकी १० चिता पर महलों में ही ११ मंदिर बना

जिहिं पत्थर२पय१ पटक्यो नृपजननी छवि तँहँ तासहु छाजैं ॥
अवसर३पर अर्चन३ अबहु प्रथित४ पन हड्ड६१न इन तिन व्हैही ॥
जब ऊढजनी६ जन७निवासतँ निलयन८ दुहुँ२न नमत तबद्वै२ही५७

उपदोहा ॥

सबन नृप सु रविमल्ल१८८।१सुत, किय सुरतान१८९।१जु कुमति॥
जान्यौं सिसुपन जाँहिं जब, सद्धहिं कुल क्रम सुमति ॥ ५८ ॥

वसन्ततिलकम् ॥

सो चित्रकूट सुनि अर्जुन१८८।१अंगनाहू ॥
श्रीसुर्जना१८९।१दि सुत सप्तक७ लै रु साहू ॥
छन्नैंहि निष्क्रासि सबै तिहिं सोक छाई ॥
बुंदीहि आवत भई वह भू बिहाई ॥ ५९ ॥

इन्द्रवज्रा ॥

पाई नहीपट्टनि१ही लही जो, मातुंद२तैं पुब्ब पटा५००००मही जो ॥
सोही मिली तोहु इहाँ सुहायो, पृथ्वीस तैसो सुरतान१८९।१पायो ६०

उपेन्द्रवज्रा ॥

विमात बंधू उत रानवारो, नरेस भो विक्रम नीतिन्यारो ॥
धनैं न जासौं महिपत्व वत्तैं, घनौं नसौं देह प्रमाद घत्तैं ॥ ६१ ॥

उपजातिः ॥

भानेज जो अर्जुन१८८।१को अभागी, रहै सदामत्त अफीमँ रागी॥
सु रान व्है ऊँघनकौं सराहैं, चित्तोरको राज्य न जाहि चाहैं ॥६२॥

जिस पत्थर पर राजा की माता ने १ दूध डाला था उसकी शोभा भी वहाँ पर है, जिसका अब भी २समय पर ३पूजन होता है ४प्रसिद्धपन से हाडाओं का ५राजा होता(गद्दी बैठता) है तब पूजन करता है ६विवाहिता बींदणी और बींद ७निवास करने को ८घर में आते हैं तब दोनों नमस्कार करते हैं॥५७-५८॥ अर्जुन ९की १०साधु [श्रेष्ठ]. छाने ११ निकल कर ॥ ५९॥६०॥ १२ दूसरी माता से उत्पन्न हुआ भाई विक्रमादित्य १३अनीतिवाला हुआ १४ राजापन की बातें जिससे नहीं होतीं और शरीर में १५अमल आदि का नशा और १६ आलस्य; अथवा उन्मत्तपन बहुत रखता था ॥ ६१॥ १७ अमल में प्रीति करनेवाला ॥ ६२॥

मञ्जुभाषिणी ॥

जिहिँकाल भूप रविमल्ल१८८।१ जन्मभो,
गुन तर्क पंद्रह१५६३ प्रमान साक भो ॥
श्रुति नाग भूत ससि १५८४ भूपता भई ॥
गज अष्ट बान महि १५८८ पैं तनू गई ॥ ६३ ॥

कोकिरवम् ॥

बय अब्द चोबीस२४भयो जबैही, सुरतान१८९।१ बैअष्ठ८समोसबैही ॥
सह रान व्हाँ सो अरि पंच५सत्थी, हनि यौं पऱ्यो हड्डमइंद हत्थी ॥६४॥

सुदन्तम् ॥

इत नैर आमेर कुलोभ अग्रनी, भगवंतसिंहाभिध आँहि भूधनी ॥
मुगलेस सेवीसुत भारमल्लको, भगिनी१सुता२आदिनई सुभल्लको ६५

द्वितीय २ रुचिरा ॥

धरैं यहै कथितपुरी अधीसता, कुलोभमैं मनहिं लगाइ कीसता ॥
अजोग्यहू बढन उपाय आदरैं, कहैंहिंगे अवसर जो यहैं करैं ॥६६॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे पञ्चम ५ राशौ वी तिहोत्रवसुधेश्वर १ बीजप्रख्यानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवर्णनवेलाख्याहार्यबुन्दीवसुधावासवव्रघ्नमल्ल१८८। १ चरित्रे राणाकर्तृकसूर्यमल्ल १८८।१ प्रतापणप्रयोजनकराणाय-

१ देहान्त हुआ ॥ ५३ ॥ सुरताणसिंह की अवस्था आठ २ वर्ष की थी शत्रु रूपी पांच हाथियों को मारकर ३ सिंह रूपी हाडा गिरा ॥ ५४ ॥ भगवन्तसिंह नामक ४ भूपति ४ हुआ ६ बादशाह की सेवा करनेवाला, बहिन और पुत्रियों आदि की भलाई नहीं ७ चाहनेवाला अर्थात् यवनों को बहिन बेटियें ब्याहने वाला ॥ ५५ ॥ ८ कही हुई [आमेर] पुरी का अधीशपन, खोटे लोभ में मन करके ६ बन्दरपन लगाकर अथवा मन से नागाई (निर्लज्जता) करके जो यह करता है सो समय पर कहेंगे ॥ ६६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चम राशि में बुन्दी के भूपति

वीरचतुष्टयगतस्थापनपूर्वकहरिणाकालनार्थगमनारंभः सूर्यमल्लीय १८८।१ पञ्चबाणेभ्यो राणस्य च्छलेन बाणद्वय २ लाभः, राणाकर्तृकवारद्वयहरिणानयनेपि कृष्णहरिणाभावात्सूर्यमल्लस्य १८८।१ बाणामोचनम्, राणेंगितप्रेरितपूर्णमल्लबाणेन सूर्यमल्ल १८८।१ वक्षोभेदनम्, सूर्यमल्ल १८८।१ कर्तृकट्टारीप्रजिहीर्षुपृष्ठस्थराणीय भटाऽशोकप्रमारप्रमापणम्, मूर्च्छितोत्थितसूर्यमल्ल १८८।१ कर्तृकस्पेकबाणेनसल्हसूरेत्याख्यचालुक्यद्वय २ मारणपूर्वकपूर्णमल्ल मूर्छनम्, पूर्णमल्लप्रेरणाद्राणेनमूर्छितसूर्यमल्लखड्गप्रहारः, मूर्च्छितोत्थितसूर्यमल्लकर्तृनिपातनपूर्वकंसानुचरराणप्रमापणम्, सूर्यमल्ल १८८।१ राणमरणश्रवणात्तद्राज्ञीनां सूर्यमल्ल १८८।१ मातुश्च मरणम्, सूर्यमल्लराणादाहश्चेत्याख्यानयुक्तःषट्त्रिंशो ३६ मयूखः ॥ ३६ ॥

आदितः त्र्यशीत्युत्तरैकशततमः ॥ १८३ ॥

सूर्यमल्ल के चरित्र में राणा को मारनेवाले सूर्यमल्ल को मारने के प्रयोजन मे राणा के चार वीरों को ओदियों में बिठाने आदि हरिणों का निकालने के लिये राणा के जाने का आरंभ करना १ सूर्यमल्ल के पांच बाणों में से राणा को छलकर दो बाण लेना २ राणा को मारनेवाले सूर्यमल्ल का दो बार हरिणों के लाने पर भी काले हरिण के नहीं होने के कारण बाण नहीं छोडना ३ राणा के इशारे से पूर्णमल्ल के बाण से सूर्यमल्ल का हृदय भेदन होना ४ सूर्यमल्ल को कटारी से मारने की इच्छावाले पीछे बैठेहुए राणा के उमराव अशोक प्रमार को मारना ५ मूर्छा से उठकर कटेहुए सूर्यमल्ल का एक बाण से सल्ह और शूर नामक दो सोलंखियों को मारना ६ पूर्णमल्ल की प्रेरणा से राणा का मूर्छित सूर्यमल्ल पर खड्ग का प्रहार करना ७ मूर्छा से उठकर मारनेवाले को पटकने आदि अनुचर सहित राणा को मारना ८ सूर्यमल्ल और राणा का मरना सुनकर अपनी अपनी राणियों और सूर्यमल्ल की माता का मरना ९ सूर्यमल्ल और राणा के दहन करने की कथा का छत्तीसवां ३६ मयूख समाप्त हुआ ॥ ३६ ॥ और आदि से एक सौ तियासी १८३ मयूख समाप्त हुए ॥

इतिश्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलिन्दमुखरितचरणचिन्हिताऽऽरातिचूडबुन्दीपूर्विलासिनीविलासिचाहुवाणचूडामणिभारतीभागधेयहड्डोपटङ्किमहाराजाधिराजरावराजेन्द्र श्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञप्तगीर्वाणगिरादिषड्भाषावेशसुभ्रूभुजङ्गकाव्याऽकूपारकर्णधारवीरमूर्तिचक्रिचरणारविन्दचञ्चरीकचारुचमत्कृतचेतनचारणचक्रचण्डांशुचण्डीदानात्मजमिश्रणसुकविसूर्यमल्लविहित वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे रावसूर्यमल्ल १८८।१ चरित्रसमयसमानाऽधिकरणकोदन्तवर्णनं पञ्चमो ५ राशिस्समाप्तः ॥ ५ ॥ अनुष्टुपूछन्दांसि ॥ ६२५० ॥

श्रीमान् सब राजाओं के मुकुटों में रहेहुए मोगरे के पुष्प सम्बन्धी मकरन्द (पुष्परस) रूप मद्य से मस्त हुए भ्रमरों से शब्दायमान चरण करके चिह्न युक्त किये हैं शत्रुओं के मस्तक जिन्होंने, बुन्दी पुरी रूपी स्त्री के विलासि; चहुवाणों के शिरोमणि, सरस्वती है भाग्य में जिनके; अथवा सरस्वती से करलेनेवाले अर्थात् पूर्ण विद्वान्, जीवन्मुक्ति मार्ग में चलनेवाले, हाडा पदवीवाले चहुवाण महाराजाधिराज महारावराजेन्द्र श्रीरामसिंहदेव की आज्ञा से संस्कृत भाषा आदि छः भाषा रूपी गणिकाओं के पति, काव्य रूपी समुद्र के कैवर्तक (खेवटिये) शरीरवाले, चारण वंश के सूर्य, विष्णु भगवान् के चरणारविन्द के भ्रमर, सुन्दर चमत्कारिक बुद्धिवाले चारण गण के सूर्य चण्डीदान के पुत्र मिश्रण (मीशण) शाखा के श्रेष्ठ कवि सूर्यमल्ल के रचेहुए वंशभास्कर नामक महाचम्पू के पूर्वायण में राव सूर्यमल्ल के चरित्र के समान समयवाले वृत्तांत वर्णन का पंचम राशि समाप्त हुआ ॥ ५ ॥

इतिश्री नीतिनिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपरायण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदाबारहठ-चारणकुलाऽवतंस-शाहपुराप्रतोलीपात्र-सुयोग्यपितुरऽवनाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याःशृङ्गारनामजनन्याः प्राप्तप्रसवपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैराऽऽज्ञाकारिभिराऽऽत्मजैः केसरीसिंह-किसोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगतभाव्याऽऽधिना, कविकोविदनिजमातुलकविराजश्यामलदासादाऽऽप्तकाव्यशिक्षेण, सन्तोषाऽऽदिसद्गुणसम्पन्न-विद्वच्छिरोमणिपरमवैष्णव-रामानुजसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्य-सीतारामाऽऽह्वयगुरोराऽऽसादितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भव-रघुवंशीय-राणोत्त-शाहपुराधिप-राजाधिराजोपटङ्किनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकर-रविकुलशिरोरत्न-रघुवंशीय-गुहिलोत्त-मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराधीशसज्जनतादिसद्गुणसम्पन्न-महाराणा सज्जनसिंहवर्म्म, तथैव तदुत्तराधिकारि-महाराणा फतहसिंहवर्म्म, भानुवंशभूषण-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरु

भाषानुवाद

श्रीयुत नीतिनिपुण–बुद्धिविशारद–सज्जनशिरोमणि–हरिभक्ति परायण धर्ममूर्ति वीर–उदार–सोदाबारहठ शाखा के चारणकुल के मुकुट शाहपुरा के पोलपात सुयोग्य पिता ओनाड़सिंह के पुत्र, पंडिता सिणगार बाई नामक माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केसरीसिंह, किसोरसिंह, जोरावरसिंह से मिटगई है आगे के समय में होनेवाली मन की चिन्ता जिसकी, पंडित और कवि अपने मामा श्यामलदास से पाई है काव्य शिक्षा जिसने, संतोष आदि गुणों से युक्त–विद्वानों के शिरोमणि–परमवैष्णव–रामानुज संप्रदायी श्रीमत् आचार्य सीताराम नामक गुरु से पाई है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में पैदा हुए रघुवंशीय राणाउत्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिलराजा के वंशवाले मेवाड़देश के पति उदयपुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गुणों की समृद्धिवाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फतहसिंह वर्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट, मारवाड़

धराधिप-जोधपुरेश-राजराजेश्वर-महाराज यशवन्तसिंहवर्म्मभ्यो लब्धाऽतीवदान-मान-स्वर्णरचितपादभूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथा तदुत्तराधिकारि-तत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपालक-मरुधराधीश श्रीसरदारसिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफलयितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भि र्निजमित्रैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवर-बारहठ कृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां पञ्चमो ५ राशिः समाप्तः ॥

भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा जशवंतसिंह वर्मा से पाया है दान बड़प्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक प्रतिपालक मरु धराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा के आश्रित, मिलगया है पढ़ीहुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि बारहठ कृष्णसिंह की रचीहुई उदधिमन्थनी नामक टीका में पंचम राशि समाप्त हुआ ॥



